भाषा, विचार और वास्तविकता

[LANGUAGE, THOUGHT AND REALITY]

भाषा
विचार
और वास्तविकता

बेंजमिन ली व्होर्फ की महत्त्वपूर्ण रचनाओं का संकलन

सम्पादक तथा भूमिका लेखक
जॉन बी० करोल

प्राक्कथन
स्टूअर्ट चेज

अनुवादक
डा० रामनिवास शर्मा
भाषा-विज्ञान विभाग
कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र

हरियाणा हिन्दी ग्रन्थ अकादमी

This book is the Hindi translation (of the sixth paperback Printing, June 1971) of the original English book entitled—Language, Thought and Reality—by Benjamin Lee Whorf and published by Massachusetts Institute of Technology Cambridge, Massachusetts. The translation rights were obtained by the commission for Scientific and Technical Terminology. It has been brought out under the scheme of Production of University level books sponsored by Govt. of India, Ministry of Education and Social Welfare.

प्रथम संस्करण	:	1975
प्रतियाँ	:	1100
मूल्य	:	सत्ताईस रुपये पचास पैसे (Rs. 27.50)

मुद्रक : लीडर प्रेस, इलाहाबाद।

प्रस्तावना

बैंजमिन ली व्होर्फ भाषाविज्ञान जैसे अपेक्षाकृत नए विज्ञान के परम विद्वान थे। वे बुद्धिजीवी, अध्ययनशील तथा विचारशील थे। उन्होंने भाषा-शिक्षण कहीं प्राप्त नहीं किया था, आन्तरिक प्रेरणा के अनुरोध ने उन्हें शब्दों और भाषा के अध्ययन के लिए बाध्य किया। उन्होंने दो प्रकार के बिल्कुल विभिन्न कार्यों इन्जीनियरी और भाषाविज्ञान में श्रेष्ठता प्राप्त की। व्होर्फ के अनुसार भाषा मनुष्य का सर्वोत्तम अलंकरण है, जिसे वह धारण करता है तथा भाषाविज्ञान का वास्तविक उद्देश्य भाषा के गहन अन्धकार को आलोकित करना है।

वे समस्त विश्व के लिए एक पद्यति पर आधारित एक ऐसी सामान्य भाषा की रचना करना चाहते थे जिसमें हमारी सभी भाषाओं का सर्वांगीकरण हो सके। उन्होंने माया लोगों की लुप्तप्राय: लेखन-प्रणाली, मैक्सिको के अज़्तेक लोगों और अरिज़ोना के होपियों की भाषाओं के विभिन्न क्षेत्रों का सूक्ष्म अध्ययन किया, जो लगभग पूर्णतया उपेक्षित था।

प्रस्तुत पुस्तक जॉन बी० कैरोल द्वारा व्होर्फ की चुनी हुई रचाओं का संकलन है। इसका प्रकाशन पहली बार 1956 में हुआ। इसमें व्होर्फ के भाषा संबंधी ज्ञान, सर्जनात्मक कल्पना तथा भाषायी सापेक्षता के विचार आदि विलक्षण गुणों का एक साथ समावेश है। इस पुस्तक में व्होर्फ के प्राय: वे सभी लेख सम्मिलित हैं जो उनके भाषायी सापेक्षता सिद्धान्त के अनुरूप हैं।

व्होर्फ ने अर्थ का विश्लेषण करने के लिए भाषाविज्ञान को उपकरण के रूप में प्रयोग करके भाषाविज्ञान के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने दो प्रमुख परिकल्पनाएँ की हैं, पहली यह कि चिन्तन के सभी ऊँचे स्तर भाषा पर आश्रित हैं, और दूसरी के अनुसार एक व्यक्ति द्वारा स्वभाववश प्रयुक्त की जानेवाली भाषा की संरचना उसके उस दृष्टिकोण को प्रभावित करती है, जिसके माध्यम से वह अपने वातावरण को समझता है।

एक वस्तुनिष्ठ विद्वान होने के कारण व्होर्फ ने ऐसी कोई भी तदर्थ संरचना प्रस्तुत नहीं की जिसका परीक्षण न किया जा सके या जिसका सामान्यीकरण न हो सके। यही कारण है कि भाषायी सापेक्षता का सिद्धान्त उन लोगों के लिए भी रोचक है, जो भाषा विशेषज्ञ नहीं हैं। इस प्रकार व्होर्फ ने जो सुयोग्यता सामान्य भाषाविज्ञान तथा भाषा क्षेत्र-पद्यतियों में अपने प्रशिक्षण रहित अध्ययन के बल पर प्राप्त की, वह असाधारण थी।

प्रस्तुत पुस्तक स्नातकोत्तर विद्यार्थियों, भाषाविज्ञान के अनुसंधाताओं तथा उन अध्यापकों के लिए उपयोगी है जो भाषाविज्ञान पर मनन चिन्तन कर रहे हैं। **भाषा, विचार और वास्तविकता** अपने विषय की राजरचना है।

शिक्षामन्त्री, हरियाणा एवं अध्यक्ष,
हरियाणा हिन्दी ग्रन्थ अकादमी

निदेशक,
हरियाणा हिन्दी ग्रन्थ अकादमी

अनुवादक की ओर से

प्रस्तुत पुस्तक बैंजमिन ली व्होर्फ के लेखों के, जॉन बी० कैरोल द्वारा संकलित एवं संपादित रूप Language, thought & Reality, का हिन्दी रूपान्तर है। प्रस्तुत शीर्षक का विधान स्वयं व्होर्फ ने एक ऐसी पुस्तक के लिए किया था जिसे वे कालिज स्तर की पाठ्यपुस्तक के रूप में लिखना चाहते थे। उस पुस्तक की रूपरेखा मात्र देखने से यह स्पष्ट हो जाता है कि यदि भाग्यवश वह पुस्तक लिख दी गई होती तो आज का भाषाविज्ञान अर्थ-विश्लेषण की दिशा में बहुत पहले प्रगति कर चुका होता। जॉन बी० कैरोल ने प्रस्तुत संस्करण के लिए यही शीर्षक उपयुक्त समझा और इसमें व्होर्फ के लगभग वे सभी लेख सम्मिलित किये जो उनके भाषायी-सापेक्षता सिद्धान्त के अनुरूप थे, या जिन्हें मध्य अमरीकी भाषा-विज्ञान तथा सामान्य भाषा-विज्ञान के क्षेत्र में सर्वाधिक रोचक तथा उपयोगी माना जाता है।

व्होर्फ अत्यन्त प्रतिभासम्पन्न विचारक तथा शोधकर्त्ता थे। साधारण से साधारण तथ्यों एवं घटनाओं पर गम्भीरतापूर्वक चिन्तन करना उनका स्वभाव था। भाषाओं का वर्णनात्मक विवरण देने में वे अत्यधिक कुशल थे, परन्तु विवरण मात्र देने से वे सन्तुष्ट नहीं होते थे। उनका प्रयत्न भाषा के मूलभूत तत्त्व अर्थात् 'अर्थ' के अन्वेषण की दिशा में होता था। उन्होंने 'ओलिगोसिन्थीसिस' तथा बायनरी ग्रुपिंग जैसे सिद्धान्तों को विभिन्न भाषाओं में खोजने का प्रयत्न किया। उनका विचार था कि इन तत्त्वों की सहायता से मानवजाति के लिए एक मूलभूत सामान्य भाषा की रचना की जा सकती है। वे एक ऐसी भावी सामान्य भाषा की कल्पना कर रहे थे जो ध्वनियों के मूलभूत मनोवैज्ञानिक अर्थों से रचित एक ऐसी आदर्श, परन्तु स्वाभाविक भाषा हो जिससे सभी विभिन्न भाषाएँ उस एक भाषा के नियमों में ढल सकें। व्होर्फ स्वयं मानते थे कि इस समय उनकी बात अत्यन्त कल्पनाशील प्रतीत हो सकती है परन्तु उनका यह दृढ़ विश्वास था कि वे ऐसे सिद्धान्तों की खोज में प्रयत्नशील हैं जिनके द्वारा यह कल्पना साकार हो सकती है। उनके उपरोक्त सिद्धान्त अतिरंजित भले ही प्रतीत हों परन्तु उनका प्रस्तुतीकरण अत्यन्त मौलिक एवं विचक्षण था। खेद है कि वे इन सिद्धान्तों का प्रौढ़ विवरण स्वयं प्रस्तुत नहीं कर पाए।

अर्थ के प्रति व्होर्फ की रुचि इस बात से स्पष्ट हो जाती है कि उन्होंने भाषा-विज्ञान को तत्वतः **अर्थ की खोज** बताया है। यही कारण है कि "भाषा-विज्ञान चिन्तन के सिद्धान्त के लिए अथवा अन्ततोगत्वा सभी मानव सम्बन्धी विज्ञानों

के विश्लेषण के लिये आधारभूत है।" व्होर्फ के अनुसार, "किसी भी सामान्य व्यक्ति को भाषा-विज्ञान ध्वनि प्रभेदों की बाल की खाल निकालने में अत्यधिक व्यस्त तथा जटिल व्याकरण लिखता हुआ प्रतीत हो सकता है, परन्तु सच्ची बात तो यह है कि इसका वास्तविक ध्येय भाषा के गहन अन्धकार को प्रकाशित करना, तथा उसके द्वारा अधिकांश विचार को, संस्कृति को या किसी समाज के प्रति दृष्टिकोण को प्रकाशित करना है—उस किसी स्वर्णिम पदार्थ के प्रकाश से जिसे मैंने अर्थ के रूपान्तरकारी सिद्धान्त के नाम से पुकारा जाता सुना है।"

अर्थ की उपेक्षा करने के कारण मनोविज्ञान के विभिन्न सम्प्रदायों की कटु आलोचना करते हुए व्होर्फ महोदय ने उन सब को अभावग्रस्त तथा सामान्य मन के सुविचरित वैज्ञानिक सूक्ष्म परीक्षण करने में असमर्थ पाया। उसका एक-मात्र कारण यह है कि, "किसी भी सम्प्रदाय ने एक सत्य पर बल नहीं दिया जिसे हम सिद्धान्त का महान तथा सम्भवतः मूलभूत तत्त्व MEANING (अर्थ) शब्द से अभिहित करते हैं।"

व्होर्फ के सभी लेखों में अन्ततोगत्वा अर्थ के गम्भीर विशलेषण के दर्शन होते हैं। माया शिलालेखों में माया लोगों की लुप्तप्रायः लेखन पद्धति को पढ़ने का विषय हो, अथवा मैक्सिको के अज़्तेक लोगों या अरिज़ोना के होपियों की भाषा के विशलेषण की जटिल समस्या हो; आग लगने के भाषायी कारणों का विवेचन हो, अथवा आदिम समाजों में चिन्तन की परिचर्चा; मानव तथा उसकी संस्कृति का सहसम्बन्ध दिखाने का प्रसंग हो, अथवा भाषा का सम्बन्ध संज्ञान से, चिन्तन से, या बाह्य जगत् की वास्तविकता के साथ दिखाने का संदर्भ हो; भाषा-विज्ञान को सुनिश्चित विज्ञान सिद्ध करने का विषय हो अथवा होपियों की वास्तुकला का भाषायी विशलेषण हो, हम व्होर्फ को मन की गहराईयों में, भाषा की जटिल प्रक्रियाओं में, मानव की विचित्र संस्कृतियों तथा उनके अभ्यासगत व्यवहारों में, एक ही तत्त्व की खोज में प्रवृत्त पाते हैं और वह है उनका मौलिक तत्त्व—"अर्थ"। स्टूअर्ट चेज़ के शब्दों में "व्होर्फ ने अर्थ का विश्लेषण करने के लिए भाषा-विज्ञान को उपकरण के रूप में प्रयुक्त करके अर्थ-विज्ञान के क्षेत्र में एक महत्त्वपूर्ण योगदान किया है। संचार एवं अर्थ का कोई भी विद्यार्थी उनकी उपेक्षा नहीं कर सकता। या यूं कहिये कि कोई भी दार्शनिक प्रवृत्ति वाला वैज्ञानिक अथवा वैज्ञानिक प्रवृत्ति वाला दार्शनिक उनकी उपेक्षा नहीं कर सकता। व्होर्फ बड़े विश्वास के साथ घोषणा करते हैं, कि भाषा-विज्ञान चिन्तन के सिद्धान्त का मूलाधार है तथा सभी मानव विज्ञानों के अन्तिम विश्लेषण के लिए इसका ज्ञान आधारभूत है।"

व्होर्फ की चिन्तन प्रणाली अत्यन्त वैज्ञानिक थी। शुद्ध वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाने के लिए किसी भी वैज्ञानिक को आत्मनिष्ठता के बन्धनों से मुक्त होकर वस्तुनिष्ठता के क्षेत्र में आना पड़ता है। परन्तु यह कार्य प्रत्यक्ष रूप में सरल प्रतीत होते हुए भी अत्यन्त दुष्कर है। आत्मनिष्ठता के कुछ बन्धन इतने अदृश्य

तथा दृढ़ होते हैं कि उनका पता लगाने और उनसे मुक्त होने के लिए एक विशेष प्रकार के मानसिक प्रशिक्षण एवं अभ्यास की आवश्यकता है। वास्तव में किसी भी व्यक्ति का चिन्तन उस भाषा-विशेष की दया पर निर्भर करता है जो उस समाज में अभिव्यक्ति का साधन बन चुकी है। चिन्तन प्रणाली को निर्धारित करने वाली भाषायी अभिरचनाओं की जटिल व्यवस्थाएँ व्यक्ति की आलोचनात्मक चेतना से, तथा उसके नियन्त्रण से बाहर होती हैं। अतः यह धारणा कि हम अपने विचारों को व्यक्त करने में पूर्णतया स्वतन्त्र हैं, "एक बहुत बड़ा भ्रम है।" यह तथ्य वस्तुनिष्ठता का गर्व करने वाले आधुनिक विज्ञान के लिए बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। "क्योंकि इसका अभिप्राय यह हुआ कि कोई भी व्यक्ति प्रकृति का पूर्णतया निष्पक्ष भाव से वर्णन करने में समर्थ नहीं है। अपितु विशेष प्रकार के अर्थ प्रतिपादन से उस समय भी नियन्त्रित होता है जबकि वह अपने आपको सर्वथा मुक्त मानता है।" व्होर्फ के अनुसार इन विषयों में स्वतन्त्रता के निकट केवल वह भाषा-विज्ञानी हो सकता है जो बहुत सी विविध भाषायी व्यवस्थाओं से परिचित हो।

व्होर्फ ने भाषाओं की नैसर्गिक भिन्नताओं की खोज में विभिन्न भाषा वर्गों की भाषाओं का गम्भीर अध्ययन किया और उस प्रसिद्ध धारणा की स्थापना की जिसे आज **भाषायी-सापेक्षता सिद्धान्त** के नाम से अभिहित किया जाता है। इस सिद्धान्त के अनुसार भाषायी अभिरचनाएँ स्वयं यह निश्चित करती हैं कि कोई व्यक्ति इस विश्व को किस प्रकार गोचर करता है तथा इसके विषय में किस प्रकार सोचता है। अतः भिन्न भाषायी व्यवस्थाओं का प्रयोग करने वाले विभिन्न वर्गों के लोगों का गोचरण एवं चिन्तन भिन्न होने के कारण उनका "विश्व-स्वरूप" भी भिन्न होगा। प्रत्येक प्रेक्षक के समक्ष संसार एक विचित्र बहुदर्शी संस्कारों के प्रवाह की भाँति उपस्थित होता है जिसे प्रेक्षक अपने मस्तिष्क में विराजमान भाषायी व्यवस्थाओं द्वारा ही व्यवस्थित करता है। वह प्रकृति का विभाजन करता है, उसे धारणाओं में व्यवस्थित करके उन पर महत्त्वों का आरोपण कर देता है; अधिकतर इसलिये कि उन्हें इस प्रकार व्यवस्थित करने की सहमति समस्त भाषा-भाषी जन-समुदाय से प्राप्त होती है, तथा उनके भाषायी ढाँचे के अनुसार ही नियमबद्ध की गई है। यह सत्य है कि सहमति अप्रत्यक्ष एवं अनभिव्यक्त है परन्तु सभी शर्तें पूर्णतया आबन्धक हैं। हम तब तक विचारों को वाग्व्यापार द्वारा अभिव्यक्त नहीं कर सकते जब तक कि इस सहमति से निर्दिष्ट शर्तों का पूरी तरह पालन न करें। इसका अभिप्राय यह हुआ कि प्रत्येक भाषा की अपनी विशिष्ट अभिरचनाएँ हैं तथा इन अभिरचनाओं का सांस्कृतिक प्रक्रियाओं के साथ महत्त्वपूर्ण कारण-कार्यात्मक सहसम्बन्ध है। ये अभिरचनायें यह निश्चित करती हैं कि किसी एक संस्कृति में पला व्यक्ति वास्तविकता का विश्लेषण किस प्रकार करे। दो भिन्न संस्कृतियों में पले दो प्रेक्षक उसी एक वास्तविकता का नितान्त भिन्न परन्तु मान्य विश्लेषण प्रस्तुत कर सकते हैं। यही

भाषायी सापेक्षता सिद्धान्त है जिसके अनुसार "सभी प्रेक्षक एक ही भौतिक प्रमाण के द्वारा विश्व का वही रूप नहीं देख पाते जब तक कि उनकी भाषायी पृष्ठ-भूमियाँ या तो समान न हों या उनका किसी प्रकार से आशंकन न किया जा सकता हो ।" भाषा अनुभव की सूचना मात्र देने का कार्य नहीं करती अपितु उस भाषा को बोलने वाले लोगों के अनुभवों को परिभाषित करने का अधिक महत्त्वपूर्ण कार्य भी करती है । भाषा न केवल विचारों को अभिव्यक्त करती है अपितु उन्हें रूप भी प्रदान करती है । दार्शनिक जगत् के लिए भाषायी सापेक्षता सिद्धान्त सर्वथा नया नहीं है । योरोप में इस सिद्धान्त के लक्षण अठारवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में James Harris, Johann George, Hamann, Johann Gott fried Von Herder प्रभृति विद्वानों की कृतियों में परिलक्षित होने लगे थे, परन्तु सबसे पहले Wilh elmlvon Humboldt के लेखों में इस सिद्धान्त ने प्रमुख महत्त्व प्राप्त किया । हम्बोल्ट पहले व्यक्ति थे जिन्होंने अपने पूर्ववर्ती दार्शनिकों के बिखरे विचारों को एक स्पष्ट तथा व्यवस्थित रूप प्रदान किया तथा भाषायी सापेक्षता को एक प्रौढ़ सिद्धान्त के रूप में प्रस्तुत किया । योरोप के अनेक विचारकों पर हम्बोल्ट का प्रभाव पड़ता रहा है । बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में जर्मनी के अनेक विद्वानों ने जिन्हें HUMBOLDTIAN भी कहा जाता है, हम्बोल्ट के सिद्धान्तों को पुनरुज्जीवित किया । इनमें Earnst cassirer, Johan Leo weisgerber, Jost Trier, Gunter Ispen प्रभृति विद्वानों के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं ।

अमरीकी जगत् को इस सिद्धान्त से परिचित कराने का श्रेय फ्रेन्ज बोआस एडवर्ड सपीर तथा बैंजमिन ली व्होर्फ को है । आज इन सिद्धान्तों को मुख्यत: सपीर-व्होर्फ परिकल्पना के नाम से अभिहित किया जाता है । यह सत्य है कि भाषायी सापेक्षता से सम्बन्धित परिकल्पना पर व्होर्फ से पहले भी अनेक दार्शनिकों ने अपने विचार प्रकट किए हैं परन्तु व्होर्फ ऐसे दार्शनिक भाषिक थे जिन्होंने अनेक अकाट्य तर्कों द्वारा अपने दृष्टिकोण को प्रौढ़ एवं रोचक ढंग से प्रस्तुत किया । व्होर्फ ने अनेक लेखों के माध्यम से इस परिकल्पना की पुष्टि की । इनके ये लेख अमरीकी विद्वानों में चर्चा के विषय बन गए । कुछ विद्वान इस मत के पक्ष में रहे तो अन्य विद्वानों ने इसकी कटु आलोचना की । परिणामस्वरूप मार्च 1953 में शिकागो विश्वविद्यालय के नृतत्व विभाग में एक सम्मेलन हुआ जिसमें भाषा-विज्ञान, नृतत्वविज्ञान, मनोविज्ञान, दर्शनशास्त्र, इतिहास तथा अन्य विषयों के उन विद्वानों ने भाग लिया जो अर्थ की समस्याओं तथा भाषा और संस्कृति के अन्य पक्षों के साथ सम्बन्धों में समान रूप से रुचि रखते थे ।

हैरी होयेर (Harry Hoijer) के अनुसार उस सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य "व्होर्फ के लेखों द्वारा प्रस्तुत की गई भाषायी-सापेक्षता परिकल्पना के सन्दर्भ में उठाई गई उन समस्याओं को स्पष्टतया परिभाषित करना था जो कि भाषा तथा संस्कृति के अन्य पक्षों के पारस्परिक सम्बन्ध को प्रकट करने का प्रयत्न

करती हैं, साथ ही इन समस्याओं के अध्ययन एवं विश्लेषण के बारे में जो कुछ हुआ है या किया जा रहा है उन सब का पर्यालोचन करना, तथा इस क्षेत्र में भविष्य में किए जाने वाले शोधकार्य की योजना का विवेचन करना और यदि सम्भव हो सके तो इस क्षेत्र से सम्बन्धित शोधकार्य को समन्वित करना था *।" इस सम्मेलन में व्होर्फ के पक्ष एवं विपक्ष में अत्यन्त लाभकारी चर्चाएँ हुईं। शोध की वे दिशाएँ प्रस्तावित की गईं जिससे भाषा और संस्कृति के सहसम्बन्ध पर महत्त्वपूर्ण कार्य किए जा सकें। इस सम्मेलन के पश्चात् अनेक विद्वानों ने व्होर्फ के लेखों में रुचि दिखाई। जॉन० बी० कैरोल ने तीन वर्ष पश्चात् 1956 में व्होर्फ के लेखों का प्रस्तुत संकलन Language, Thought and Reality शीर्षक के अन्तर्गत सम्पादित किया। इस पुस्तक के प्रकाशित होने पर व्होर्फ के सिद्धान्तों को लक्ष्य करके विद्वानों में एक विवाद सा खड़ा हो गया। अनेक भाषिकों, मनोवैज्ञानिकों, नृतत्वविज्ञानियों तथा दार्शनिकों ने इस विवाद में भाग लिया। अनेक लेख प्रकाशित किए गए, सम्मेलन हुए, तरह तरह की योजनाएँ बनाई गईं, और परीक्षण किए गये। भाषाविज्ञान के क्षेत्र में व्होर्फ के विचारों का व्यापक प्रभाव पड़ा। इसके परिणामस्वरूप व्यतिरेकी भाषा-विज्ञान (Contrastive Linguistics), मनोभाषा-विज्ञान (Psycholinguistics), समाज भाषाविज्ञान (Sociclinguistcs) नृतत्व भाषा-विज्ञान (Anthropological Linguistics) तथा प्रयोगात्मक भाषा-विज्ञान (Applied Linguistics) जैसी नई शाखाओं का सुव्यवस्थित विकास हुआ। इन सभी शाखाओं पर अनेक महत्त्वपूर्ण शोधकार्य किये जा रहे हैं।

व्होर्फ के विचार अत्यधिक सूक्ष्म, गम्भीर, विद्वत्तापूर्ण तथा तकनीकी भी हैं, अतः उनकी विचार संवाहिनी भाषा भी सामान्य स्तर से उठकर कहीं कहीं सुबोधता की कोटि को भी लाँघ जाती है। विद्वत्ता के साथ सुबोधता भी बनी रहे यह सम्भव नहीं। प्रस्तुत अनुवाद करते समय यह प्रयत्न अवश्य किया गया है कि भाषा यथासम्भव सुबोध ही बनी रहे, परन्तु फिर भी यदि अनेक स्थलों पर भाषा में जटिलता के दर्शन हों तो इसमें अनुवादक के सामर्थ्य की अपनी परिसीमाओं के साथ साथ मूलग्रस्थ की भाषायी जटिलता भी एक महत्त्वपूर्ण कारण है। वैसे भी प्रत्येक भाषा की अपनी चहेती शाब्दिक तथा व्याकरणिक प्रविधियाँ होती हैं जिनका प्रयोग सूचना देने; विश्लेषण करने तथा अनुभव का वर्गीकरण करने के लिए किया जाता है। इसलिए एक भाषा के विचार दूसरी भाषा में पूर्णतया सफलतापूर्वक व्यक्त करना अत्यन्त कठिन कार्य है। व्होर्फ का भाषायी-सापेक्षता सिद्धान्त इस तथ्य पर आधारित है। उनके अनुसार भाषा में परिवर्तन हमारे ब्रह्माण्ड के मूल्यांकन को परिवर्तित कर सकता है। अतः एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद बिना अर्थक्षय के नहीं किया जा सकता। यह सत्य है कि एक कुशल अनुवादक दोनों भाषाओं की मूल प्रवृत्तियों को समझ कर

---

*Hoijer Harry ; Language in Culture, pp. viii.

अनुवाद को मूल के निकटतम ले जाने का प्रयत्न कर सकता है। जिन विद्वानों को इस पुस्तक का मूल अंग्रेजी रूप पढ़ने का अवसर मिला है वस्तुतः वे ही प्रस्तुत अनुवाद की कठिनाईयों का सही मूल्यांकन कर सकते हैं। अमरीका के एक मेधावी दार्शनिक एवं भाषा-मर्मज्ञ के विचारों को हिन्दी भाषा-भाषियों के लिए सुलभ बनाने के उद्देश्य से यह प्रयास किया गया है। व्होर्फ के विचारों का किस मात्रा में सही प्रतिनिधित्व हो पाया है इसका निर्णय केवल सुविज्ञ पाठक ही कर सकते हैं।

आभार प्रदर्शन

मेरा सौभाग्य है कि आदरणीय डा० देवीशंकर द्विवेदी (उस समय अध्यक्ष भाषा-विज्ञान विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र) ने प्रस्तुत अनुवाद करने का कार्य मुझे सौंपा। उनकी स्नेहमयी प्रेरणा के लिए, जो मुझे सदैव मिलती रही, तथा समय समय पर मिलने वाले अनेक उपयोगी सुझावों के लिए मैं उनका हृदय से आभारी हूँ। साथ में आदरणीय डा० रमेशचन्द्र मेहरोत्रा, अध्यक्ष, भाषा-विज्ञान विभाग, रायपुर (म० प्र०) के प्रति भी मैं कृतज्ञ हूँ, कि उन्होंने अनूदित पाण्डुलिपि के कुछ अंशों को बड़े मनोयोग से पढ़ा तथा अनेक उपयोगी सुझाव देकर मुझे प्रोत्साहित किया।

मैं अपने अनुज डा० राजेन्द्र निवास गोड़ (शिक्षा विभाग, कुरुक्षेत्र विश्व-विद्यालय, कुरुक्षेत्र), तथा परिवार के उन सभी सदस्यों के प्रति सस्नेह आभार प्रकट करना अपना कर्त्तव्य समझता हूँ जिन्होंने प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से मेरी सहायता की, तथा गृहस्थ के अनेक दायित्वों से मुझे सर्वथा मुक्त करके इस कार्य को सम्पन्न करने का अवसर प्रदान किया।

हरियाणा हिन्दी ग्रन्थ अकादमी के निदेशक डा० कृष्ण मधोक के प्रति हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करना मैं अपना कर्त्तव्य समझता हूँ, उनसे मुझे सौजन्यपूर्ण व्यवहार के साथ साथ सदैव स्निग्ध सहयोग मिलता रहा जिसके बल पर इन दिनों कुछ अस्वस्थ रहते हुए भी इस दुष्कर कार्य को अपनी सुविधानुसार सम्पन्न कर पाया हूँ। श्री मदनमोहन गोस्वामी, डा० पृथ्वीराज कालिया तथा उन सभी व्यक्तियों का मैं आभारी हूँ जिन्होंने इस पुस्तक के प्रकाशन में व्यक्तिगत रुचि लेकर इस कठिन दायित्व को कुशलतापूर्वक निभाया।

रामनिवास शर्मा

विषयसूची

प्राक्कथन

अद्यावधि नितान्त भिन्न प्रतीत होने वाली घटनाओं के पारस्परिक सम्बन्ध के ज्ञाता महापुरुष का जन्म कभी-कभार ही होता है, जो मानवीय ज्ञान को नए आयाम प्रदान करता है। दिक् और काल की सापेक्षता का निरूपण करने वाला आइंस्टाइन एक ऐसा ही व्यक्ति था। एक अन्य क्षेत्र में तथा कुछ विराट् स्तर पर बैन्जमिन ली व्होर्फ (Benjamin Lee Whorf) एक ऐसे ही व्यक्ति थे, जिनकी गणना सम्भवत: एक दिन फ्रैन्ज बोअस (Franz Boas) तथा विलियम जेम्स (William James) जैसे समाज-शास्त्रियों की श्रेणी में की जाएगी।

भाषा हमारे अन्तरतम विचारों को किस प्रकार एक रूप प्रदान कर सकती है, यह जानने के लिए उन्होंने मानवभाषा एवम् मानवचिन्तन-पद्धति के पारस्परिक सम्बन्ध को अच्छी तरह समझा।

इस प्रकार हमारा परिचय सापेक्षता के एक नए सिद्धान्त से कराया जाता है, जिसके अनुसार सभी प्रेक्षक एक ही भौतिक प्रमाण के द्वारा विश्व का सही रूप नहीं देख पाते; जब तक कि उनकी भाषायी पृष्ठभूमियाँ या तो समान न हों अथवा उनका किसी प्रकार से अंशांकन न किया जा सकता हो।

भारोपीय भाषाओं का मोटे रूप में अंशांकन इस प्रकार किया जा सकता है: अंग्रेज़ी, फ्रैन्च, जर्मन, रूसी, लैटिन, ग्रीक तथा शेष भाषाएं। परन्तु व्होर्फ का कथन है कि चीनी, माया तथा होपी भाषाओं का अंशांकन संरचनात्मक दृष्टि से यदि असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य है। चीनी भाषा बोलने वाले प्रकृति तथा विश्व का विभाजन पाश्चात्य भाषाभाषियों से भिन्न प्रकार से करते हैं। अमरीकी-इण्डियनों, अफ्रीकियों तथा बहुत-सी अन्य भाषाएं बोलने वालों के द्वारा प्रकृति तथा विश्व का विभाजन बिल्कुल ही अलग ढंग से किया जाता है।

व्होर्फ भाषाविज्ञान जैसे अपेक्षाकृत नए विज्ञान के परम विद्वान थे। मेरा विश्वास है कि उनके इतने प्रभावशाली होने का एक कारण यह था कि उन्होंने इसका प्रशिक्षण कहीं प्राप्त नहीं किया था। उन्होंने एम० आई० टी० (MIT) में रासायनिक इन्जीनियरी की शिक्षा प्राप्त की, जिससे उन्हें प्रयोगशालीय शोध-विधि एवम् निर्देश-पद्धति की उपलब्धि हुई। भाषाविज्ञान की उपलब्धियाँ तो उनमें से मानो निचोड़कर निकाली गई थीं। किसी आन्तरिक प्रेरणा के अनुरोध ने ही उन्हें शब्दों और भाषा के अध्ययन के लिए बाध्य किया। यदि आप यह समझते हों कि उन्हें विदेशी भाषाओं पर आधिपत्य प्राप्त करने की भावना ने

बाध्य किया होगा, तो मैं कहूँगा कि नहीं, अपितु किसी भाषा के क्यों और कैसे जैसे प्रश्नों एवम् उसकी अर्थ-वहन करने की क्षमता ने ही, उन्हें ऐसा करने के लिए प्रेरित किया था।

एक लेखक के नाते मेरी रुचि बहुत समय से अर्थ-विज्ञान में रही है, जिसकी परिभाषा कभी-कभी 'अर्थ का व्यवस्थित अध्ययन' कह कर दी जाती है। मेरे विचार में जिस विषय पर लेखक बात कर रहा है, उस विषय को उसके द्वारा अच्छी तरह जान लेने में कोई हानि नहीं। व्होर्फ ने अर्थ का विश्लेषण करने के लिए भाषाविज्ञान को उपकरण के रूप में प्रयोग करके अर्थविज्ञान के क्षेत्र में एक महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। संचार एवम् अर्थ का कोई भी विचारशील विद्यार्थी उनकी उपेक्षा नहीं कर सकता। इस कथन में हम यह भी जोड़ सकते हैं कि कोई भी दार्शनिक प्रवृत्ति वाला वैज्ञानिक, अथवा वैज्ञानिक प्रवृत्ति वाला दार्शनिक उनकी उपेक्षा नहीं कर सकता। वे बड़े विश्वास के साथ घोषणा करते हैं कि 'भाषाविज्ञान' चिन्तन के सिद्धान्त का मूलाधार है, तथा सभी मानव-विज्ञानों के अन्तिम विश्लेषण के लिए इसका ज्ञान आधारभूत है। सम्भवतः उनका कथन ठीक है। विज्ञान की प्रत्येक पर्याप्त प्रगति, जैसे कि परिमाणवाद (Quantum Theory) आदि, में संचार सम्बन्धी संकट उपस्थित हो जाता है। उपलब्धि के सम्बन्ध में अन्वेषकों को पहले अपने-आपको समझाना पड़ता है और फिर वैज्ञानिक जगत् को इस विषय में जानकारी देनी होती है।

जैसा कि मैं समझ पाया हूँ व्होर्फ ने दो प्रमुख परिकल्पनाएं की हैं :

पहली, कि चिन्तन के सभी ऊँचे स्तर भाषा पर आश्रित हैं ;

दूसरी, कि एक व्यक्ति द्वारा स्वभाववश प्रयुक्त की जाने वाली भाषा की संरचना उसके उस दृष्टिकोण को प्रभावित करती है, जिसके माध्यम से वह अपने वातावरण को समझता है। विश्व का चित्र एक भाषा से दूसरी भाषा में बदल जाता है।

II

प्रथम परिकल्पना को पर्याप्त मात्रा में समुचित वैज्ञानिक समर्थन प्राप्त है। उदाहरण के लिए जीव-विज्ञानी जूलियन हक्सले (Julian Huxley) का कथन है कि शब्द सम्बन्धी धारणाओं के विकास द्वारा ही मानव के चिन्तन की समस्त आगामी उपलब्धियों के लिए द्वार खुला है। व्होर्फ के अनुसार भाषा मनुष्य का सर्वोत्तम अलंकरण है, जिसे वह धारण करता है। दूसरे प्राणियों ने अपरिष्कृत संचार-व्यवस्था का विकास किया है, परन्तु वास्तविक भाषा का नहीं। मानव-जाति को पाल पोषकर जवान करने में, मानव-सम्प्रदायों को संगठित करने, तथा संस्कृति के प्रवाह को पीढ़ी-दर-पीढ़ी अविच्छिन्न बनाए रखने में भाषा एक प्रमुख कारण है। हक्सले तो यहाँ तक कहने का साहस करते हैं कि संस्कृति के माध्यम से रूपान्तरण ,जो निस्सन्देह भाषा पर आधारित है, विकास की जैविक प्रक्रियाओं का सम्भवतः विस्थापन करता है। उदाहरण के लिए, जब

आगामी हिमयुग आएगा तो मानव-प्राणी (Homo Sapians) फर पैदा करने की अपेक्षा वातानुकूलित-संयन्त्रों का उत्पादन बढ़ा देगा ।

दार्शनिकों एवम् जीवविद्या-विशेषज्ञों की दृष्टि में तर्क करने की शक्ति ही 'मनुष्य की विलक्षणता' का कारण है । पंजों, दाँतों, मोटी खाल, पैरों की द्रुतगति या शारीरिक शक्ति द्वारा ही सुरक्षित न रह पाने के कारण मानव-प्राणी को आपत्ति के कठिन क्षणों में निकल भागने का मार्ग झाँकना पड़ता है । यही चिन्तन अपना अस्तित्व बनाए रखने के लिए उसका सबसे बड़ा शस्त्र बना रहा है ।

सम्भवतः प्रत्येक व्यक्ति विचारों के इतने तीव्र बवण्डर का अनुभव करता है कि उसे शब्दों द्वारा व्यक्त नहीं किया जा सकता । लिखते समय प्रायः मेरे साथ ऐसा ही होता है । परन्तु विचारों के इन आकस्मिक बवण्डरों से निपटने से पहले, मैं उन्हें शब्दों में अभिव्यक्त करता हूँ तथा उन शब्दों को शान्तिपूर्ण चिन्तन या बहस के लिए लिख लेता हूँ । विचारों के ऐसे बवण्डर जो शब्दबद्ध नहीं हो पाए, लिखित रूप में कभी भी उपलब्ध नहीं हो सकेंगे।

सम्भवतः व्होर्फ की प्रारम्भिक परिकल्पना का 'कार चलाने' के साथ एक अच्छा सादृश्य दिखाया जा सकता है। सीधी सड़कों पर चालक के चालन-चक्के पर रखे गए हाथ का मार्ग-निर्देशन करने के लिए प्रकाश की लहरें तथा ध्वनि की लहरें पर्याप्त रहती हैं। परन्तु घास के भरे चौराहों के बीच से गुज़रने के लिए, अथवा सड़कों के नक्शे पढ़ने के लिए, सहज क्रिया से कुछ अधिक ध्यान की आवश्यकता पड़ेगी । एक बहुत चतुर वनमानुष (चिम्पैन्ज़ी) पहला कार्य करना तो सीख सकता है, परन्तु दूसरा कार्य सदा ही उसके सामर्थ्य के बाहर रहेगा ।

III

प्रेक्षण स्थल एवम् प्रयोगशालाओं[1] में परिश्रम करने से जी चुराने वाले यूनानी लोग, जोकि मानसिक रूप से बहुत ही सक्रिय थे, तर्क तथा विवेचन के क्षेत्र में प्रवेश करने वालों में प्रथम थे । अपने प्रतिवादी को वाद-विवाद में तथा कानूनी बहस में किस प्रकार हराया जा सकता है तथा राजनीतिक आन्दोलनों में सर्वाधिक प्रभावशाली नारे किस प्रकार चुने जाते हैं—युवकों को यह सब सिखाने वाले कूटतार्किक (Sophist) प्रकटतः एजियन के मेडीसिन एवेन्यू ब्वायज (Madison-avenue boys of the Aegean) ही थे । अरस्तू ने हेत्वनुमान का आविष्कार किया, तथा तादात्म्य के नियम से आरम्भ करते हुए विचार के तीन नियमों (Three Laws of Thought) का निर्माण किया, जिसके अनुसार ए, ए है, ('A' is 'A') अब भी, और सदा के लिए भी—जिसके विरुद्ध कभी-कभी हम अर्थविज्ञानी, विरोध भी प्रकट करते हैं ।

1. इतिहासकार जेम्ज हार्वे राबिन्सन (James Harvey Robinson) बहुत अधिक संख्या में दासों की उपस्थिति को इसका कारण बताता है।

यूनानी यह मान कर चलते थे कि भाषा का आधार एक सार्वलौकिक तर्क का अदूषित सार है, तथा यह तत्त्व सभी प्राणियों में समान रूप से मिलता है, कम-से-कम सभी चिन्तनशील व्यक्तियों में तो अवश्य ही। उनका विश्वास था कि शब्द वह माध्यम है जिससे यह गूढ़तर दीप्ति अभिव्यक्ति प्राप्त करती है। इसका अभिप्राय यह हुआ कि किसी भी भाषा में अभिव्यक्त की गई विचारधारा का अनुवाद, अन्य भाषा में बिना किसी अर्थक्षय के किया जा सकता है।

विशेष रूप से शैक्षिक केन्द्रों में यह मत 2500 वर्षों तक निरन्तर बना रहा है। व्होर्फ अपनी दूसरी मुख्य परिकल्पना में इसे स्पष्ट रूप से चुनौती देते हैं। उनका कहना है कि भाषा में परिवर्तन, हमारे ब्रह्माण्ड के मूल्यांकन को रूपान्तरित कर सकता है।

संयुक्त-राष्ट्र के कुशल अनुवादकों का प्रतिदिन का अनुभव भी पर्याप्त मात्रा में उनका समर्थन करता है। उदाहरणार्थ, रॉकफेलर फाउण्डेशन (Rockefeller Foundation) के अनुदान से सहायता प्राप्त राज्य विभाग के एडमण्ड एस० ग्लेन (Edmund S. Glenn) ने भाषा[2] के कारण धारणाओं में भेद का रहस्य जानने के लिए संयुक्त राष्ट्र की ढेर सारी अनूदित लिपियों की जाँच-पड़ताल की। श्री ग्लेन ने जो दृष्टान्त एकत्रित किए उनमें एक अंग्रेज़ी भाषी, 'I assume' **'मैं मानता हूँ'** कहता है, तो फ्रांसीसी दुभाषिया 'I deduce' **'मैं अनुमान करता हूँ'** कहता है जबकि एक रूसी दुभाषिया 'I consider' **'मैं विचार करता हूँ'** कहता है—परन्तु तब तक 'धारणा' का भाव ही समाप्त हो चुका होता है।

लगभग एक से 20 उदाहरणों को अलग करके, श्री ग्लेन ने यह निष्कर्ष निकाला कि अनुवाद तकनीक जबकि प्रकट रूप में बिल्कुल सहज प्रतीत होता है, किन्तु रूसी और अंग्रेजी बोलने वाले प्रतिनिधियों के बीच ऐसी स्थितियों में संचार की मात्रा शून्य प्रतीत होती है। इन दृष्टान्तों के सम्बन्ध में यदि भारोपीय परिवार की विभिन्न भाषाओं को बोलने वाली पाश्चात्य जातियों में कुछ इस प्रकार की कठिनाई हो सकती है, तो यह आश्चर्य की बात नहीं है कि बिल्कुल भिन्न परिवारों की भाषाओं में इससे कहीं अधिक चौड़ी दरार मुँह फाड़ती प्रतीत होती है, जैसे होपी इण्डियनों की भाषा तथा अंग्रेजी के बीच। यही वह क्षेत्र है जिसे व्होर्फ ने अत्यधिक परिश्रम से विकसित किया, और जिसे उसने मुख्यरूप से अपनी भाषायी सापेक्षता की धारणा का आधार बनाया।

अंग्रेज़ी भाषा में हम कहते हैं 'Look at that wave' (उस लहर को देखिए), परन्तु प्रकृति में लहर कभी एकल तथ्य के रूप में घटित नहीं होती।

2. Peter T. White, 'The Interpreter : Linguist plus Diplomat' New york Times Magazine, November 6, 1955.

एक होपी भाषी कहता है 'Look at that slosh'। होपी का वह शब्द, जिसका अंग्रेज़ी निकटतम पर्याय Slosh है, जलराशि में गति का द्योतन करने वाली लहर की गति की भौतिकता के अधिक अनुरूप है।

हम अंग्रेज़ी भाषा में कहते हैं 'The light flashed' (एक रौशनी चमकी)। एक चमक उत्पन्न करने के लिए यहाँ किसी चीज़ की आवश्यकता अनिवार्य है। Light (रौशनी) उद्देश्य है, और Flash (चमकी) विधेय। आधुनिक भौतिकी की प्रवृत्ति, जिसका मुख्य बल क्षेत्र पर है, उद्देश्य-विधेय आदि तर्क वाक्यों से दूर है। इस प्रकार एक होपी-इण्डियन अधिक अच्छा भौतिक-विज्ञानी है, जब वह पूरी घटना के लिए केवल एक शब्द *Reh-pi*—flash बोलता है, न उद्देश्य, न विधेय, और न ही कोई काल-तत्त्व। प्राय: हम प्रकृति में अदृश्य इकाइयों का अनुमान करते हैं, जो अचानक प्रकट होती हैं, और अन्य चमत्कार दिखाती हैं। क्या हम उन्हें इस लिए प्रस्तुत करते हैं कि हमारे कुछ क्रियापदों को अपने से पहले कुछ संज्ञाओं की आवश्यकता पड़ती है ?

एक होपी के विचारों में घटनाओं के विषय में स्थान (स्पेस) तथा काल दोनों ही सम्मिलित रहते हैं, क्योंकि उसके जगत् सम्बन्धी विचारों में इन दोनों में से कोई भी अकेला नहीं होता। इस प्रकार उसकी भाषा क्रियापदों के लिए कालों के बिना ही सुचारु रूप से चलती है और स्वभावत: उसे स्पेस-काल के अर्थों में सोचने की अनुमति देती है। आइंस्टाइन (Einstein) की सापेक्षता को पूरी तरह समझने के लिए एक पाश्चात्य व्यक्ति को अपनी बोलचाल की भाषा को छोड़ना पड़ता है, तथा 'कलन' की भाषा को अपनाना पड़ता है। परन्तु व्होर्फ के कथन का अभिप्राय यह है कि एक होपीभाषी ने अपने अन्दर एक प्रकार का कलन (Calculus) बना रखा है।

"अंग्रेज़ी, जर्मन, फ्रांसीसी या इटालियन में भावों का रूपात्मक व्यवस्थीकरण उस समय अपर्याप्त एवम् नीरस प्रतीत होता है"—जब विशेष प्रकार के तथ्यों के वर्गों का विवेचन करने के लिए उनका मुकाबला अमरीण्डियन भाषाओं के लचीलेपन एवम् ऋजुता से किया जाता है। व्होर्फ हमें पाश्चात्य लोगों के सम्मुख आने वाली पुल्लिग तथा स्त्रीलिंग की, लिंग सम्बन्धी कठिनाई का निर्देशन देते हैं, तथा हमारे अन्दर स्वभावजन्य 'द्विमूल्य परक' 'either-or' (या 'यह'—या 'वह') तर्क का निरूपण करते हैं।

क्या यहाँ होपी भाषा हमारी अभ्यसित अंग्रेज़ी भाषा से अधिक ऊँचा चिन्तन-स्तर एवम् परिस्थिति का अधिक विवेकशील विश्लेषण प्रस्तुत करती है ? हाँ, यह करती है। इस क्षेत्र में तथा अन्य बहुत से क्षेत्रों में अंग्रेज़ी भाषा होपी की तुलना में ऐसे है, जैसे एक लाठी तलवार की तुलना में।

अन्य प्रपंच-वर्गों के विषय में अंग्रेज़ी तलवार हो सकती है और होपी **भाषा** लाठी। दोनों ही भाषाएं अपने-अपने बोलने वालों के अनुभवों एवम् **समस्याओं**

के निमित्त सदियों से, मुख्यत: अचेतन रूप में विकसित होती आई हैं, और हम इनमें से किसी एक को अधिक ऊँची अथवा अधिक परिष्कृत नहीं कह सकते; क्योंकि मानव-समाज, सामग्रियों की प्राप्ति तथा उपभोग के विषय में जबकि अत्यधिक भिन्न है, तो भाषा में परिलक्षित होने वाला मानव-मन, आदिम ढंग से कार्य करने के कोई दृष्टांत प्रस्तुत नहीं करता...... "अमरीकी-इण्डियन भाषाओं एवम् अफ्रीकी भाषाओं में कारणता, गति, परिणाम, गतिशील या ऊर्जायुक्त गुण, अनुभव की प्रत्यक्षता, चिन्तनकार्य के सभी विषय, निस्सन्देह विवेकशीलता का सार आदि के सूक्ष्मतया रचित, सुन्दर ढंग से तर्कसंगत प्रभेदों का बाहुल्य है।"

जैसा कि आप श्री कैरोल (Caroll) द्वारा लिखित उत्कृष्ट जीवन-चरित में देखेंगे कि व्होर्फ ने अमरीकी-इण्डियन भाषाओं के अध्ययन के प्रारम्भिक चरणों में ही कुछ माया शिलालेखों तथा तेपोज़्त्लान (Tepoztlan) के एक अज़्तेक मन्दिर के शिलालेख में समानता का पता लगा लिया था। मैं भी उस चट्टानी मन्दिर पर उसी वर्ष सन् 1930 में चढ़ा था, भले ही मेरा उद्देश्य चित्रलिपियों को पढ़ना नहीं था। अज़्तेक के साथ-साथ उन्होंने माया का अध्ययन भी जोड़ लिया और फिर होपी भाषा भी सम्मिलित कर ली। उन्होंने इन तीनों में से अन्तिम को सर्वाधिक सूक्ष्म एवम् अभिव्यंजक पाया तथा होपी भाषा के शब्द-कोश का सम्पादन भी किया, जो आज तक अप्रकाशित है। यदि वे अपनी इण्डियन भाषाओं के प्रति नीरस वैज्ञानिक होने की अपेक्षा कुछ अधिक स्नेह-शील हैं, तो उन्हें क्षमा कर देना बहुत आसान बात है।

IV

ऊपर दिए गए उद्धरणों में से बहुत से उद्धरण मैंने एक ऐसे निबन्ध से लिए हैं, जो अब तक अप्रकाशित था तथा जिसे व्होर्फ ने 1936 में लिखा था। यह निबन्ध इस पुस्तक का छठा अध्याय है। इसमें आदिम जातियों की विचार-प्रक्रियाओं का विवेचन किया गया है। उन्होंने इसे एच० जी० वेल्स (H. G. Wells) एच० एल० मेनकेन (H. L. Mencken) तथा सपीर (Sapir) जैसे कुछ अन्य विशिष्ट भाषा-वैज्ञानिकों के पास भेजने की योजना बनाई थी। अच्छा होता यदि उन्होंने ऐसा कर दिया होता क्योंकि इस निबन्ध में उनके ज्ञान, सर्जनात्मक कल्पना, भाषायी सापेक्षता का विचार, तथा उनकी भविष्य के लिए आशाएं इत्यादि सभी विलक्षण गुणों का एक साथ समावेश है। मुझ जैसे साधारण व्यक्ति की समझ में निबन्ध का सार इस प्रकार है :

सार्वभौमिक मानव-विचार का कोई एक तात्विक संग्रह नहीं है। विभिन्न भाषाओं के बोलने वाले विश्व को विभिन्न प्रकार से देखते हैं, विभिन्न प्रकार से उसका मूल्य आँकते हैं —कभी बहुत कम, और कभी बहुत अधिक। चिन्तन सीखी गई भाषा से सापेक्ष होता है। आदिम भाषाएँ कोई नहीं हैं।

बहुत सी अज्ञात भाषाओं के विश्वसम्बन्धी रूप को खोजने के लिए शोधकार्य की आवश्यकता है। इनमें से अब कुछ भाषाओं के लुप्त हो जाने का भय है।

किसी समय एक पद्धति पर शायद कभी एक वास्तविक अन्तर्राष्ट्रीय भाषा का विकास करना सम्भव हो जाए। किसी दिन सभी जातियाँ भाषा की पूरी क्षमता का प्रयोग करेंगी और हमसे अधिक स्पष्ट रूप में मननचिन्तन कर सकेंगी।

सिद्धान्ततः इसका अर्थ भाषायी सापेक्षता का अन्त हो सकता है, परन्तु इसका अभिप्राय यह नहीं है कि पहाड़ लाँघ लिया गया है। अगला महान कार्य भाषा के ऐसे नए रूपों को गढ़ना होगा जो हमें वास्तविकता के अधिक समीप ला सकें, तथा हमारी क्षमता की ऊर्जा बढ़ा सकें। "जहाँ तक हम भविष्य का पूर्वाभास कर सकें, उसे हमें मानसिक विकास के अर्थों में ही करना चाहिए।"

हम सब के लिए यह दुर्भाग्य की बात है कि बैन्जमिन ली व्होर्फ के मानसिक विकास का असमय ही अवच्छेद हो गया।

स्टूअर्ट चेज

जार्जटाऊन कनैक्टीकट
23 नवम्बर, 1955

भूमिका

बैन्जमिन ली व्होर्फ (Benjamin Lee Whorf) के जीवन का विवरण, एक ओर तो विशिष्ट प्रतिभासम्पन्न व्यापारी के रूप में दिया जा सकता है। वे उन कतिपय व्यक्तियों में से एक हैं जो सामान्य प्रशिक्षण तथा ज्ञान के प्रयोग, लगन एवं सूक्ष्मदर्शिता के योग से किसी भी प्रकार की व्यावसायिक संस्था के लिए अत्यधिक उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं। दूसरी ओर उनके जीवन का विवरण असाधारण रूप से योग्य तथा अध्यवसायी शोधकर्ता के रूप में दिया जा सकता है, जिसने माया लोगों की लुप्तप्राय: लेखन-प्रणाली का तथा मैक्सिको के अज़्तेक लोगों और अरिज़ोना के होपियों की भाषाओं के विभिन्न क्षेत्रों का अध्ययन किया, जो लगभग पूर्णतया उपेक्षित थे। इनमें से कोई भी एक विवरण जीवनकथा लिखने के उद्देश्य से व्होर्फ को विशेष रोचक बना सकने में असमर्थ है तथापि, जब इस बात की पूरी अनुभूति हो जाती है कि उनमें दोनों ही जीवन-वृत्तियों का समानरूप से योग है, अर्थात् एक ओर तो उन्होंने व्यापारिक गतिविधियों में मान्यता प्राप्त की, और साथ ही वे विद्वत्ता के क्षेत्र में प्रतिष्ठा के उच्च शिखर पर जा पहुँचे (यह प्रतिष्ठा उन्होंने किसी उच्चतर प्रमाणपत्र द्वारा प्रमाणित होने वाले औपचारिक प्रशिक्षण के सामान्य प्रारम्भिक ज्ञान को प्राप्त किए बिना ही प्राप्त की; इसके अतिरिक्त 'मानव तथा उसकी संस्कृति' पर चल रहे समसामयिक वाद-विवादों में उन्होंने 'भाषा का चिन्तन तथा संज्ञान के साथ सम्बन्ध' के विषय में चुनौती देने वाले परिकल्पित सिद्धान्तों के एक वर्ग का समावेश कराया) तो उनका जीवन-चरित साधारण दिलचस्पी से कहीं अधिक रुचि का विषय बन जाता है।

उनका जन्म 24 अप्रैल 1897 में मेसाच्यूसेट्स (Massachusetts) में विन्थ्रोप (Winthrop) में हुआ था, तथा वे हेरी चर्च (Harry Church) और साराह इडना ली व्होर्फ (Sarah Edna (Lee) Whorf) के पुत्र थे। वे पुरानी अमरीकी जाति के वंशज थे, तथा यात्रियों के उतरने के तुरन्त बाद ही उनके पूर्वज इंग्लैंड से प्रोविन्स टाऊन (Province-town) तथा बे-कालोनी (Bay-Colony) के अन्य भागों में बसने के लिए आए थे। इंग्लैण्ड में व्होर्फ नाम योर्कशायर के वेस्ट राइडिंग (West Riding) में पर्याप्त रूप से पाया जाता है, तथा उस प्रदेश में बहने वाली व्होर्फे (Whorfe) नदी के नाम के साथ शायद इस नाम का कोई अस्पष्ट सम्बंध हो।

बेन्जमिन और उनके दो छोटे भाई अपनी व्यक्तिगत विशिष्टताओं के होते हुए भी बहुत मिलते-जुलते थे। बेन्जमिन बुद्धिजीवी, अध्ययनशील तथा विचार-शील थे। जॉन (John) जिनका जन्म 1903 में हुआ, एक प्रसिद्ध कलाकार बने। विशेष रूप से वे जलरंगों की चित्रकारी के क्षेत्र में प्रसिद्ध हुए। रिचर्ड (Richard) जिनका जन्म 1906 में हुआ, ने चलचित्रों तथा रंगमंच के अभिनेता तथा निर्देशक का वैशिष्ट्य प्राप्त किया।

उनके बुद्धिजीवी पिता कलाकार तथा नाटककार थे। मेसाच्यूसेट्स की शिल्प-विज्ञान संस्था में उदासीन से विद्यार्थी के रूप ,में थोड़ा-सा जीवन बिताकर, (ऐसा कहा जाता है, कि उन्होंने इन्जीनियरी के अध्ययन में प्रवृत्त होने की रुचि प्रकट नहीं की) हेरी चर्च व्होर्फ (Harry Church Whorf) ने वाणिज्य-कला में, जिसे वे डिज़ाइनिंग कहते थे, अपने को प्रवृत्त किया। डिज़ाइनिंग एक ऐसा व्यवसाय था जिसमें उन्होंने अपनी नक्शानवीसी की प्रतिभा तथा उर्वर कल्पना का सदुपयोग किया। इस कार्य में वे बहुत अधिक सफल रहे। धुलाई पाउडर के कनस्तरों के चारों ओर अंकित डच कन्याओं की शृंखला का प्रसिद्ध मार्का उनकी शेष कृतियों में आज भी उपलब्ध है। उन्होंने पत्थर पर फोटो उतार कर, उससे छापने की तेज़ी से विकसित होने वाली कला में स्वयं को प्रवीण कर लिया। परन्तु वे अपने व्यवसाय की सीमाओं के भीतर ही बँधे रहने में सन्तुष्ट नहीं थे। उन्होंने अपने कलात्मक गुणों का बहुत से साहसी कार्यों के लिए प्रयोग किया। इन कार्यों में रंगमंच तथा डिज़ाइनिंग अग्रगण्य थे। उन्होंने गिरजाघरों तथा धर्मार्थ संस्थाओं के लिए भी नाटक लिखे तथा उनका निर्देशन भी किया। उन्होंने बॉबी शैफ्टो (Bobby-Shafto) के लिए एक संगीतात्मक सुखान्त नाटक लिबरेटो (Libretto) भी लिखा था जो एक बार बोस्टन (Boston) में खेला भी गया। उन्हें विविध विषयों पर सजीव एवं सचित्र भाषण देने में बहुत आनन्द आता था तथा स्पष्ट ही वे श्रोतागण का मनोरंजन करने में बहुत दक्ष थे। 1934 में अपनी मृत्यु के समय भी वे मेसाच्यूसेट्स के तटवर्ती क्षेत्र के भू-विज्ञान, इतिहास, जीव-जन्तु तथा वनस्पति आदि से सम्बन्धित एक पाण्डुलिपि पर काम कर रहे थे।

अपनी प्रथम सन्तान के जन्म से पूर्व भी हेरी व्होर्फ तथा उनकी पत्नी, विन्थ्रोप के एक साधारण से मकान में रह रहे थे, जो उत्तर में बोस्टन बन्दरगाह के पास ही प्रायद्वीप पर स्थित एक आवासक्षेत्रीय उपनगर था। घर में पिता द्वारा किए गए आरेखण-चित्रों, पुस्तकों, पाण्डुलिपियों, रसायनों, चित्रकला सम्बन्धी उपकरणों तथा कुछ फुटकर सामग्री के संग्रह द्वारा असाधारण रूप से कुतूहली तथा जिज्ञासु तीनों लड़कों को एक प्रेरक वातावरण प्राप्त हुआ। तीनों ही लड़के इस सामग्री से लाभ उठा सकने वाली प्रतिभा से सम्पन्न थे। अपने छोटे भाइयों के समान बेन्जमिन ने शीघ्र ही ड्राइंग में पर्याप्त कौशल प्राप्त कर लिया, परन्तु रसायनों, रंगों तथा फोटोग्राफी के उपकरणों ने उन्हें सबसे अधिक आकृष्ट

किया। उन्हें ऐसे प्रयोग करने बहुत अच्छे लगते थे, जैसे एक ही पात्र में विभिन्न रंगों से विभिन्न तहें बनाना। रसायनों से सम्बन्धित इन प्रथम अनुभवों ने ही बेन्जमिन को बाद में मेसाच्यूसेट्स शिल्प-विज्ञान संस्था में रासायनिक इन्जीनियरी का अध्ययन करने के लिए प्रेरित किया होगा।

वे हाई स्कूल के पश्चात् विन्थ्रोप के पब्लिक स्कूल में गए, जहाँ बताया जाता है कि उन्होंने अच्छा काम किया। हमें यह भी बताया जाता है कि उन्होंने अपनी एकाग्रता की शक्तियों का विकास इसी समय किया, यहाँ तक कि यह एकाग्रता कभी-कभी स्पष्ट अन्यमनस्कता की सीमा तक पहुँच जाती थी। एक बार कोयले की टोकरी भरने के लिए उन्हें कोठड़ी में भेजा गया, उन्होंने इसे भरा और रसोई में अंगीठी के पास उसके स्थान पर न ले जाकर उसे वे सीधे अपने कमरे में ले आए। (उनके बाद के जीवन में, उनके मित्र प्रायः कभी-कभी यह शिकायत करते थे कि गली में वे पहचानने का आभास तक न देकर पास से गुज़र जाते थे।) यद्यपि वे विशेष सबल नहीं थे तो भी आसपास के छेड़खानी करने वाले लड़कों से अपने छोटे भाइयों को बचाने के लिए उन्हें अपनी शारीरिक शक्ति पर काफी विश्वास था। उन्हें विशेष रूप से जॉन के साथ जो उनसे 6 वर्ष छोटा था, बौद्धिक खेल खेलना बहुत भाता था। गूढ़ संकेतिकी का खेल उनका प्रिय खेल था। बेन्जमिन अपने भाई के द्वारा बनाई गई जटिल से जटिल समस्या-लिपियों का समाधान कर लेते थे। इसी बीच, जब अकेले होते तो बेन्जमिन अत्यन्त उत्सुकता से पढ़ते और विनोदपूर्ण पदों की रचना करके अपना मनोरंजन करते।

सन् 1914 में विन्थ्रोप हाई स्कूल से स्नातकीय उपाधि ग्रहण करने के पश्चात् उन्होंने रासायनिक इन्जीनियरी (कोर्स 10) को मुख्य रूप से ग्रहण कर मेसाच्यूसेट्स शिल्प-विज्ञान संस्था में प्रवेश प्राप्त किया। वहाँ उनकी शैक्षिक प्रगति केवल सामान्य स्तर की प्रतीत होती है। उनके रिकार्ड से यह पता चलता है कि उन्हें सर्वोच्च कोटि के अंक कभी प्राप्त नहीं हुए, (यहाँ H साधारणतया आजकल के A से मिलता है)। यहां तक कि अंग्रेज़ी अथवा फ्रेंच निबन्ध-लेखन में भी उन्हें कभी अच्छे नम्बर नहीं मिले। निस्सन्देह, यह उस सन्दिग्ध सम्बन्ध पर एक टिप्पणी है जो कालेज में आँकी गई योग्यता तथा बाद के जीवन की वास्तविक योग्यता के बीच रहता है। अपने अन्तिम वर्ष के शरत् सत्र में आर० ओ० टी० सी० (ROTC) के ग्रीष्मकालीन कैम्प में एक रहस्यमय रोग के लग जाने से व्होर्फ को कक्षा से अनुपस्थित रहने के लिए बाध्य होना पड़ा, तथा उन कमियों को पूरा करने की आवश्यकता ने आगामी ग्रीष्म ऋतु में रासायनिक इन्जीनियरी में विज्ञान के स्नातक की उपाधि की प्राप्ति को अक्तूबर 1918 तक के लिए स्थगित कर दिया।

हम नहीं जानते कि जब वे एम० आई० टी० (M I T) में विद्यार्थी थे तो व्होर्फ ने अपने लिए किस प्रकार के व्यावसायिक जीवन की योजना

बनाई थी। सम्भवत: वे किसी प्रकार के रसायन-उत्पादन-केन्द्र अथवा किसी कारखाने में इन्जीनियर के रूप में नौकरी पाने की आशा रखते थे। उनका व्यावसायिक जीवन अत्यन्त असाधारण सिद्ध होना था, क्योंकि वे ऐसे विषय में विशेषज्ञ के रूप में उभरे, जो उस समय उनके स्कूल के द्वारा भी इन्जीनियरी का एक अलग क्षेत्र बड़ी मुश्किल से माना जाता था, और इस विषय में उन्होंने एम० आई० टी० के विद्यार्थी-परिषद् को एक पत्र में शिकायत भी की थी। सन् 1919 में एम० आई० टी० से स्नातकीय उपाधि ग्रहण करने के कुछ ही समय बाद एक कम्पनी ने उन्हें अग्नि-रक्षा इन्जीनियरी में प्रशिक्षार्थी के रूप में चुना तथा मृत्यु पर्यन्त 22 वर्ष तक उन्हें नियुक्ति पर रखा। हर्टफोर्ड अग्नि बीमा कम्पनी (Hartford Fire Insurance Company) की समिति के अध्यक्ष सी० एस० क्रेमर (C. S. Kremer) के द्वारा तैयार किए गए ब्यौरे के अनुसार उनका चुनाव कम्पनी के एक अधिकारी श्री एफ० सी मूर (Mr. F. C. Moore) द्वारा किया गया था जो स्वयं भी एम० आई० टी० का स्नातक था, तथा जिस पर स्वत: चालित फव्वारों से युक्त इमारतों के बीमे करने एवं उनका प्रबन्ध करने का उत्तरदायित्व था। मूर के द्वारा अग्नि-निवारक इन्जीनियरों के लिए चलाए गए कम्पनी के स्कूल से स्नातकीय उपाधि ग्रहण करने के पश्चात् व्होर्फ को देश के उत्तर-पूर्व भाग में कम्पनी के द्वारा बीमा की गई सम्पत्तियों के अग्नि-निवारक-निरीक्षण-कार्य में सहायता करने के लिए हर्टफोर्ड में कम्पनी के गृह-मन्त्रालय में नियुक्त किया गया। कम्पनी एक ऐसे कार्य का विकास करना प्रारम्भ कर रही थी जो उस समय व्यापार के क्षेत्र में एक नया विचार था, अर्थात् सम्पत्ति-स्वामियों तथा पालिसी-धारकों की सेवा के रूप में अग्नि-निवारक इन्जीनियरी निरीक्षण। इस कार्य के लिए उन्हें निरन्तर यात्राएं करनी पड़ीं, और वे इस कार्य में अत्यन्त कुशल हो गए। उनके सम्बंध में क्रेमर लिखते हैं, 'मेरे विचार से वे बहुत थोड़े समय में ही इतने दक्ष एवम् विचक्षण अग्नि-निवारक-निरीक्षक बन गए, जितना कि आज तक कोई भी न बन सका। वे अत्यधिक व्यावहारिक थे। तथ्यों के रूप में वे जो कुछ जानते थे, उसे उन्होंने कुछ विभिन्न उत्पादक व्यापारों के इन्जीनियरों तथा कुशल व्यक्तियों को सिखा दिया।" उन्होंने उन संयन्त्रों के निरीक्षण में अधिकाधिक विशिष्टता प्राप्त की जो उत्पादन में रासायनिक प्रक्रियाओं का प्रयोग करते थे।

एक बार जब वे एक रासायनिक संयन्त्र का निरीक्षण कर रहे थे, तो उन्हें किसी विशेष इमारत में अन्दर जाने से इस आधार पर रोक दिया गया कि इसमें एक गोपनीय प्रक्रिया है। यहाँ तक कि उस संयन्त्र के अध्यक्ष ने भी, जिसके लिए वे पत्र भी लाए थे, आग्रह किया कि कोई भी बाहरी व्यक्ति इस इमारत को नहीं देख सकता। व्होर्फ ने कहा—क्या आप ऐसी ऐसी चीजें बना रहे है? उत्तर 'हाँ' में था। इस पर व्होर्फ ने एक कागज़ उठाया, जल्दी से एक रासायनिक सूत्र उस पर लिखा, तथा वह कागज़ उस संयन्त्र के अध्यक्ष को यह कहते हुए सौंप दिया—"मेरे विचार में आप यही कुछ कर रहे हैं?" आश्चर्य-चकित निर्माता ने उत्तर दिया, "मि०

व्होर्फ आप यह सब कैसे जान गए ?" इसका उत्तर व्होर्फ ने बड़ी शान्ति से दिया : "आप अन्य किसी प्रक्रिया से इसे बना ही नहीं सकते थे।" यह कहने की आवश्यकता नहीं कि तब उन्हें उस इमारत में प्रवेश कराया गया जिसमें वह गुप्त प्रक्रिया चालू थी।

रासायनिक निर्माताओं में उनका इतना अधिक सम्मान होता था कि उनकी सलाह बड़ी उत्सुकता से ली जाती थी। कनेक्टीकट (Connecticut) में एक बहुत ही पेचीदे रासायनिक संयन्त्र के निरीक्षण में उन्होंने प्रबन्धकों को सुझाव दिया कि किसी विशेष प्रक्रिया को तब तक छोड़ दिया जाए जब तक कि उसे अधिक सुरक्षित न बना लिया जाए, तथा यह भी संकेत दिया कि यह कैसे किया जा सकता है। सुझाए गए सुधार को कार्यान्वित कर लेने के कुछ समय पश्चात् प्रबन्धकों ने उस प्रक्रिया को तब तक रोके रखा जब तक कि व्होर्फ वहाँ वापिस न लौट आए, और उन्होंने कार्य को आगे बढ़ाने की अनुमति न दे दी।

जो लोग व्होर्फ के केवल भाषा-वैज्ञानिक कार्य को ही जानते हैं, उनको यह बड़ा अजीब लगेगा कि व्होर्फ की प्रशंसा न केवल उनके तकनीकी कौशल के लिए ही की जाती थी, बल्कि अपनी कम्पनी के लिए व्यापार को बढ़ावा देने की उनकी योग्यता की भी प्रशंसा की जाती थी। एक बार उनसे कुछ पब्लिक स्कूलों के अग्नि-निवारक-निरीक्षण के लिए कहा गया जिनसे कम्पनी को मामूली सी रकम मिल सकती थी। उनके द्वारा प्रस्तावित सुझावों ने विद्यालय के प्रबन्धकों को इतना प्रभावित किया कि उन्होंने व्होर्फ की कम्पनी को, अपने बीमे के लेखे-जोखे का प्रबन्धक नियुक्त करने का निर्णय किया। यह स्थानीय कार्यकर्ता के लिए बहुत आश्चर्य की बात थी, क्योंकि उसे इस विशेष विद्यालय के प्रबन्धकों तक पहुँच पाना सदा कठिन लगता था।

व्होर्फ के नियोजकों द्वारा उनकी सेवाओं के महत्त्व की विशिष्टता, सन् 1928 में उनकी विशेष कार्यकर्ता के रूप में नियुक्ति तथा 1940 में कम्पनी के सहायक-सैक्रेटरी के रूप में चुनाव से प्रकट हो जाती है। ऐसा रहा होगा कि कम्पनी को उनके भाषा-विज्ञान तथा मानव-विज्ञान के क्षेत्र में कार्यों पर गर्व था, तथा हम जानते हैं कि कम्पनी इन गतिविधियों[1] को जारी रखने के लिए उन्हें आकस्मिक अवकाश देने में बहुत उदार भी थी। परन्तु प्रमुखतया उनका मूल्य अपने नियोजक के लिए की गई वास्तविक सेवाओं के लिए समझा जाता था, जो अवश्य ही साधारण न होकर बहुत उच्च श्रेणी की रही होंगी। यह निस्सन्देह अनोखी बात है कि उन्होंने बिल्कुल विभिन्न दो प्रकार के कार्यों में श्रेष्ठता प्राप्त की। यद्यपि उनके जीवनकाल

---

1. फिर भी, इन यात्राओं पर व्होर्फ प्रायः व्यापार को विज्ञान के साथ जोड़ लेते थे। सन् 1930 में मैक्सिको की क्षेत्रीय यात्रा के दौरान उन्होंने कम्पनी की मैक्सिको शहर की एजन्सी का भी निरीक्षण किया तथा अपनी उपलब्धियों एवम् प्रस्तावों की एक विस्तृत रिपोर्ट भी लिखी।

की कुछ विशेष अवधि में किया गया पाण्डित्यपूर्ण कार्य, जीवन-पर्यन्त काम करने वाले अन्य बहुत से रिसर्च प्रोफेसरों के काम की बराबरी करने के लिए काफी था, तो भी वे अपने व्यापारिक कार्यों के लिए काम के प्रत्येक दिन लगभग आठ घण्टे लगाया करते थे। उनके मित्र प्रायः इस विषय में अन्दाज़े लगाया करते थे कि उन्होंने इस व्यवसाय में ही रहना क्यों चुना। यद्यपि उनके जीवन के अन्तिम वर्षों में कुछ शैक्षिक शोध-संस्थानों पर कार्य करने का प्रस्ताव उनके सामने रखा गया, परन्तु उन्होंने निश्चित रूप से यह कह कर उन्हें अस्वीकार कर दिया कि उनकी वर्तमान व्यापारिक स्थिति उन्हें अधिक सुखकर जीवन तथा अपने ढंग से बौद्धिक अभि-रुचियों को विकसित करने के लिए अधिक स्वतन्त्र अवसर प्रदान करती है।

बीमा कार्य, भाषायी अध्ययन तथा विस्तृत अध्ययन मानो उनको व्यस्त रखने के लिए काफी न थे। वे कुछ एक सामाजिक कार्यों जैसे हर्टफोर्ड चैम्बर ऑफ कामर्स (Hartford Chamber of Commerce) की अग्नि-निवारक- कमेटी की सेवा आदि के लिए समय निकाल लेते थे। लगभग 1928 के पश्चात् वे 'मेन्ज़ क्लब' (Men's Club), ऐतिहासिक सोसायटियों, तथा इसी प्रकार की कुछ अन्य संस्थाओं के समक्ष एक व्याख्याता के रूप में बहुत अधिक प्रसिद्ध हो गए।[2]

सन् 1920 में उन्होंने सेलिया इनेज पेखम (Celia Inez Packham) से विवाह किया, और उनके तीन सन्तानें हुईं—रेमण्ड बेन (Remond Ben), राबर्ट पेखम (Robert Packham) तथा सेलिया ली (Celia Lee)। लगभग कुछ उसी ढंग से जैसे कि उनके पिता ने उनके लिए किया था, उन्होंने भी मानों चुम्बकीय प्रतिष्ठान के द्वारा अपनी आनन्दप्रद कौतुहल तथा निर्बाध कल्पना को उन बच्चों में प्रवेश कराया।

उनके अपने ही कथनानुसार व्होर्फ की सन् 1924 तक भाषाविज्ञान में कोई रुचि नहीं थी, परन्तु कोई भी व्यक्ति उन बौद्धिक उमंगों की तरंगों की परम्परा को देख सकता है, जिन्होंने व्होर्फ को भाषाविज्ञान में रुचि के लिए प्रेरित किया। किशोरावस्था में ही रासायनिक प्रयोगों में व्यस्त रहने के साथ-साथ वे पढ़ने के लिए बहुत लालायित रहते थे। हमें पता चला है कि प्रेसकॉट (Prescott) की 'मैक्सिको की विजय' (Conquest of Mexico) कई बार पढ़कर उनकी रुचि मध्यकालीन अमरीकी प्राग्-इतिहास (Middle American Pre-history) में हो गई थी। एक बार उनके पिता एक माया राजकुमारी के विषय में

---

2. व्होर्फ से मेरा परिचय उस भाषण के सुनने के परिणाम-स्वरूप बढ़ा, जो उन्होंने हर्टफोर्ड के बाल-संग्रहालय में 1 दिसम्बर 1929 को दिया था। उस भाषण का शीर्षक, जैसा कि Chalk talk में घोषित किया गया—"मैक्सिको के अज्तेक व माया-इण्डियन" था।

लिखे गए नाटक के लिए रंगमंच की रचना करने में लगे हुए थे। इस सम्बन्ध में उन्होंने माया पुरातत्त्व से सम्बन्धित सभी प्रकार की पुस्तकों का संकलन किया। युवा बेन में रंगमंच अभिरचना के उस परिणामी प्रदर्शन से बहुत कौतूहल जागृत हुआ, जिसमें निश्चय ही माया मन्दिरों के अलंकृत अग्रभाग चित्रित थे तथा सम्भवत: यहीं से उन्होंने माया चित्रलेखों के अर्थ के विषय में जिज्ञासा करनी आरम्भ की होगी। जैसा कि पहले बताया गया है, उनकी कूटलिपि में अभिरुचि ने ही इस कौतूहल को प्रबल किया होगा। परन्तु यदि ऐसा ही था, तो बहुत समय तक यह कौतूहल प्रसुप्त रहा। इसके स्थान पर उन्होंने विभिन्न वैज्ञानिक विषयों पर काफी समय बिताना आरम्भ कर दिया। उनकी रुचि वनस्पति-विज्ञान में हो गई तथा उन्होंने हज़ारों पौधों और वृक्षों के लिए अंग्रेज़ी तथा लैटिन भाषा के नाम सीख लिए। (यह उनकी स्थायी रुचि थी। सन् 1930 में अपनी मैक्सिको की यात्रा पर उन्होंने मैक्सिकन वनस्पति पर विस्तृत टिप्पणियाँ लिखीं और सन् 1936 में अपनी भाषायी नोटबुक के पृष्ठों पर हम उन द्वारा वनस्पतिशास्त्रीय शब्दावली तथा कौतूहलों पर प्रश्न-चिह्न लगे देखते हैं।) इसके विरोध में कुछ समय के लिए उनकी रुचि ज्योतिषशास्त्र में बहुत अधिक हो गई तथा अपने मित्रों के लिए जन्म-पत्रियाँ बनाकर वे अपना मनोरंजन किया करते थे। किशोरावस्था में ही वे ऐसे लक्षण प्रकट करने लगे थे जिन्हें लेखन सनक का रोग (Pathalogical-graphomania) कहा जा सकता है, क्योंकि 17 वर्ष की आयु में ही उन्होंने दैनन्दिनी लिखना प्रारम्भ कर दिया था। यह एक ऐसा अभ्यास था जिसे उन्होंने आजीवन बनाए रखा। उन्होंने एक प्रकार की गुप्त-लेखन-विधि का आविष्कार किया, जिसका प्रयोग वे यदाकदा अपनी दैनन्दिनी के कुछ अंशों को छिपाने के लिए किया करते थे, एवम् जिसका प्रयोग 'स्वप्नग्रन्थमाला' के लिए अपने स्वप्नों को लिखने के लिए भी करते थे।

हर्टफोर्ड में बस जाने के कुछ ही समय बाद विज्ञान एवम् धर्म के तथाकथित विरोध के विषय में व्होर्फ अधिकाधिक चिन्तन करने लगे। ऐसा प्रतीत होता है कि वे गिरजाघरों के पादरियों द्वारा दिए गए संस्कारों के रूढ़िवादी विचारों से अत्यन्त प्रभावित थे, जो कभी-कभी विज्ञान के आधुनिकतम सिद्धान्तों का विरोध करते हुए प्रतीत होते हैं। इस विषय में वे इतने लीन हो गए कि उन्होंने इस विषय पर 1,30,000 शब्दों की एक पाण्डुलिपि लिखी, जिसे उपन्यास के रूप में धार्मिक दर्शन की एक पुस्तक कहा जाता है। यह पाण्डुलिपि जो 1925 में सम्पन्न हुई, प्रकाशकों के पास भेजी गई, और व्होर्फ के विरोध करने पर भी इसे सभी प्रकाशकों द्वारा अस्वीकार कर दिया गया। एक अन्य संक्षिप्त पाण्डुलिपि लगभग इसी समय पूरी हुई, जिसका शीर्षक था, 'Why I have discarded Evolution' (मैंने विकास को क्यों नकारा)। उत्पत्तिशास्त्र के जिस प्रसिद्ध विद्वान को यह पाण्डुलिपि समीक्षार्थ भेजी गई, उसने व्होर्फ के प्रत्येक तर्क का क्रमानुसार विनम्रतापूर्ण खण्डन करते हुए उत्तर दिया कि यद्यपि यह पाण्डुलिपि पहले-पहल तो किसी सनकी व्यक्ति

की रचना प्रतीत हुई किन्तु शीघ्र ही इसके कौशल एवम् बोधात्मकता ने इसे अन्यथा सिद्ध किया।

इसी बीच व्होर्फ के अध्ययन ने उसे यह विश्वास करने के लिए प्रेरित किया कि विश्वोत्पत्ति और विकास सम्बन्धी बाईबल तथा वैज्ञानिक लेखे-जोखों के बीच स्पष्ट असंगति शायद 'ओल्ड, टेस्टामैण्ट' के पैने भाषायी भाष्य में निहित है। इसी कारण सन् 1924 में उन्होंने अपना मन हिब्रू भाषा के अध्ययन की ओर लगाया।

कुछ लोगों को शायद यह बहुत आश्चर्य की बात लगे कि भाषाविज्ञान में व्होर्फ की रुचि उनकी धर्म में रुचि से उत्पन्न हुई थी। प्रसंग वश पाठक को उस महत्त्वपूर्ण सम्बन्ध का भी स्मरण कराया जा सकता है, जो बहुत समय से भाषायी एवम् धार्मिक प्रयत्नों में रहा है—जैसे Septuagint में प्रतिनिधित भाषा-विज्ञान सम्बन्धी कार्य में, तथा लिखित गॉथिक की उलफिलास की रचना में, जिसमें उसने बाईबल का अनुवाद किया था, ये सम्बन्ध मिलते हैं; साथ ही 17वीं तथा 18वीं शताब्दी में धमार्थि नियुक्त व्यक्तियों के द्वारा सैकड़ों यूरोपीय भाषाओं के अध्ययन में, और समकालीन भाषायी प्रतिनिधियों द्वारा किए गए पूर्णतया वैज्ञानिक अन्वेषणों में ये सम्बन्ध स्पष्ट रूप से मिलते हैं। साधारणतः व्होर्फ की रुचि बाईबल के किसी भी अनुवाद में नहीं थी, वे गम्भीरतापूर्वक विश्वास करते थे कि बाईबल के अर्थविज्ञान के नए दृष्टिकोण से ही मौलिक मानवीय तथा दार्शनिक समस्याओं का समाधान हो सकता है। हम नहीं जानते कि वे इस निष्कर्ष पर स्वतन्त्र रूप से ही पहुँचे थे, या नहीं। हमें इतना पता है कि सन् 1924 के आसपास एक पुस्तक उनके ध्यान में आई जो उनके विचारों को पुष्ट कर सकी होगी, तथा जिसने कम-से-कम उन्हें भाषाविज्ञान के अधिक सन्निकट खींच लिया होगा। वे अब तक अप्रकाशित परन्तु प्रस्तुत संग्रह में छपे एक लेख में स्वयं इस बात का प्रमाण देते हैं। यह पुस्तक जिसका ज्ञान समकालीन विद्वानों को भी बहुत कम था, एक फ्रांसीसी नाटककार तथा भाषावैज्ञानिक एवं 19वीं शताब्दी (1768–1824) के पूर्वार्द्ध के रहस्यवादी एण्टोइने फेब्रे डी ओलिवेट (Antoine Febre d' Olivet) की रचना थी। इसका शीर्षक *La Langue he braique restituee* था। यह पेरिस से 1815-16 में 2 जिल्दों में प्रकाशित हुई थी। सम्भवतः व्होर्फ ने इस दुर्लभ कृति का अंग्रेजी अनुवाद पढ़ा था, क्योंकि इसके अनुवादक नयां लुइस रेडफील्ड (Nayan Louise Red-field) का नाम उनके नोट्स में आया है।[3]

Grand dictionnaire universal du xix siecle) के अनुसार फेब्रे डी ओलिवेट की मृत्यु हो गई "alice le reputation d'un

---

3. कुमारी रेडफील्ड ने, जो कई वर्षों तक हर्टफोर्ड में रहीं, फेब्रे डी ओलिवेट की कई कृतियों का अनुवाद किया था।

fou ou d'un visionnaire" । वे एक उदासीन नाटककार थे तथा अपने जीवन के उत्तरकाल में वे गहन भाषावैज्ञानिक पाण्डित्यपूर्ण रचनाओं की ओर प्रवृत्त हुए । अपनी पुस्तक *La langue hebraique* में, जो कि इस क्षेत्र में उनकी महान कृति है, उन्होंने यह दिखाने का प्रयत्न किया है कि *Book of genesis* के गूढ़ार्थ को हिब्रू त्रिव्यंजन धातु की संरचना के आमूल विश्लेषण से स्पष्ट किया जा सकता है । उनके अनुसार हिब्रू वर्णमाला के प्रत्येक वर्ण में एक अन्तर्निहित अर्थ है:—उदाहरणार्थ Aleph वर्ण उनकी दृष्टि में 'विचारों की शक्ति, एवम् स्थिरता, तथा एकता का चिह्न है तथा उसको निश्चित करने वाले सिद्धान्त का प्रतीक है।' वर्ण Yodh' menifestation आविर्भूति का प्रतीक था । फेब्रे डी ओलिवेट लिखते हैं, कि "इस प्रकार आंशिक धातु, Aleph-yodh अथवा waw, उस केन्द्र का, द्योतन करती है जिसकी ओर इच्छा प्रवृत्त होती है, उस स्थान का, जहाँ वह अपने आप को स्थिर करती है; तथा क्रिया के उस क्षेत्र का द्योतन करती है, जहाँ यह कार्य करती है।" क्योंकि उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला था कि Tsadhe वर्ण 'अन्त' का द्योतन करता है, अतः उन्हें यह जानकर आश्चर्य नहीं हुआ कि त्रिव्यंजन धातु Aleph-yodh (or waw)-Tsadhe का अर्थ था 'किसी अन्त की ओर प्रवृत्त होने वाली कोई इच्छा'। यह धातु-चिह्न का सिद्धान्त हिब्रू व्याकरण के सभी भागों, तथा कई सौ हिब्रू धातुओं के अर्थ-निर्णय पर लागू किया गया था।

यह सारा कार्य अंशतः भाषा के सिद्धान्तों पर प्रकाश डालने के लिए भाषायी अध्ययन के रूप में, (उन्होंने दावा किया कि उन्हें यह चुनने में बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ा कि क्या चीनी, संस्कृत या हिब्रू उनकी योजना का आधार बन सकती हैं) तथा आंशिक रूप से, मूसा के सृष्टिशास्त्र के गूढ़ अर्थ को खोज निकालने की उनकी इच्छा की पूर्ति के रूप में प्रस्तुत किया गया था। अंग्रेजी के उस अनुवाद में, जिसे फेब्रे डी ओलिवेट ने कृपा करके प्रस्तुत किया था, बाईबल की पहली पंक्ति इस प्रकार है—"AT-FIRST-IN-PRINCIPLE (सबसे पहले-सिद्धान्त-में); उसने एलोहिम (AElohim) को उत्पन्न किया, (उसने अस्तित्व में आने के लिए प्रेरित किया, उसने सिद्धान्त-रूप में प्रादुर्भूत किया, उसने देवताओं को, भूतों के आदिभूत को उत्पन्न किया), जो स्वलोकों का स्वयं आत्म-स्वरूप, तथा भूलोक का स्वयं आत्म-स्वरूप था।" वे यह टिप्पणी भी करते हैं कि यह किसी उस व्यवस्था का 'परिणाममात्र' नहीं है, जिस व्यवस्था को उसने 'लगभग सुखद सम्भावनाओं या अटकलों' के आधार पर स्थापित किया है, परन्तु यह मूसा की 'वास्तविक भाषा' है, जिसकी मैंने उन संरचनात्मक सिद्धान्तों के अनुसार व्याख्या की है, जिन्हें सन्तोषप्रद सीमा तक विकसित करने के लिए मैंने बहुत ही परिश्रम किया है।

फेब्रे डी ओलिवेट के आश्चर्यजनक परिणामों की सन्दिग्धता के पश्चात् भी प्रतीत होता है कि उनकी पुस्तक ने व्होर्फ पर गहरा प्रभाव डाला, जिन्होंने

बाद में उसे किसी भी युग के शक्तिशाली भाषायी-प्रतिभा-युक्त व्यक्तियों में से एक बताया था। व्होर्फ का विश्वास था कि फेब्रे डी ओलिवेट द्वारा दिए गए बाईबल सम्बन्धी भाष्यों के प्रयत्नों को बहुत महत्त्व नहीं दिया जा सकता, परन्तु उनका 'धातु-चिह्न' वास्तविक रूप में उस तथ्य का पूर्वाभास था, जिसे आजकल Phoneme (स्वनिम) कहा जाता है। जिस बात ने व्होर्फ को आकर्षित किया वह थी फेब्रे डी ओलिवेट की प्रणाली। उदाहरण के लिए हिब्रू वर्णमाला के वर्णों के अर्थों का निश्चयीकरण करने के लिए फेब्रे ने, जिन-जिन धातुओं में वे वर्ण आते थे, उन धातुओं के विविध रूपों की तुलना तथा विरोध बहुत कुछ इस तरह से किया, जैसे कि कोई अंग्रेज़ी वर्ण 'एम' (M) का अर्थ निश्चित करने के लिए अंग्रेज़ी के सभी 'एम' (M) से आरम्भ होने वाले सामान्य शब्दों में इनके सामान्य अर्थ को निकालने का प्रयत्न करे। हम यह कल्पना कर सकते हैं कि फेब्रे, 'मदर' (Mother) और 'मर्डर' (Murder) जैसे विरोधी शब्दों में भी सामान्य तत्त्व पा सकें होंगे। किन्हीं सीमाओं तक ही यह प्रणाली आगे धकेली जा सकती है, परन्तु फेब्रे उन सीमाओं का भी उल्लंघन कर चुके थे। तथापि यह सत्य है कि एकल अक्षरों को पहचानने का ऐसा तकनीक सार रूप में समकालीन भाषाविज्ञान में स्वनिमों और रूपिमों को पहचानने की विधियों के समान है। जैसा कि हम देखेंगे, व्होर्फ की विधियाँ अपने कार्य के बहुत से क्षेत्रों में फेब्रे की विधियों के समान हैं। माया चित्रलेखों को पढ़ने के पूर्व प्रयत्नों और अज़्तेक की संरचना पर लिखे उनके अप्रकाशित लेख में इसका विवरण दिया गया है। एक अन्य और सम्भवतः अधिक गम्भीर विधि का, जो फेब्रे की विधियों से मिलती है, प्रतिनिधित्व उनकी आन्तरिक अर्थों के लिए साहसी और विचक्षण खोज में मिलता है। जिस प्रकार फेब्रे हिब्रू धातु के एक खण्ड में निहित महत्त्व को खोजने के लिए अपनी कल्पना को चरम सीमा तक ले गए, उसी प्रकार व्होर्फ भी कोरे भाषायी तथ्य से उसके चरम लक्ष्य का निष्कर्ष निकालने के लिए निरन्तर जूझते रहे।

फेब्रे डी ओलिवेट के कार्य की खोज ने व्होर्फ को अधिक विस्तृत तथा गहन रूप में भाषा के विषय पर पढ़ने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने वाटकिन्सन (Watkinson) पुस्तकालय के बहुत अच्छे संग्रहों का सदुपयोग किया। सन् 1857 में इस विद्वतापूर्ण शोध पुस्तकालय की स्थापना इंगलैण्ड में उत्पन्न हुए हर्टफोर्ड के एक धनी व्यापारी के वसीयतनामे के अनुसार हुई थी। उस पुस्तकालय में कभी-कभी वंश-परम्परा-विज्ञ, अथवा कला-इतिहासकार आते थे, जो उसमें पड़े सैकड़ों हज़ारों विभिन्न प्रकार के धूल भरे ग्रन्थों का अध्ययन करना चाहते थे। यह पुस्तकालय वाड्सवर्थ एथेनियम (Wadsworth Atheneum) नाम से प्रख्यात किले की तरह बने भवन के ऊपरी भागों में बना हुआ था। उस भवन में हर्टफोर्ड पब्लिक लाइब्रेरी तथा कनेक्टीकट ऐतिहासिक सोसायटी[1] (Connecticut Histo-

1. सन् 1952 में 'वाटकिन्सन पुस्तकालय' हर्टफोर्ड (Hartford) में ट्रिनीटी कालेज (Trinity college) के नए आधुनिक एवम् बड़े भवन में ले जाया गया।

rical Society) के संग्रह भी थे। व्यापार के धन्धों से निवृत्त होने के पश्चात् जब भी व्होर्फ वहाँ पहुँचते तो वहाँ का शान्त वातावरण तथा पुस्तकों की गन्ध उन्हें एकाग्रता प्रदान करती थी। इसके प्रथम पुस्तकालय-अध्यक्ष, जेम्स हैमण्ड ट्रम्बुल (James Hammond Trumbull) थे, जो अन्य विशिष्टताओं के साथ-साथ अमरीकी-इण्डियन साहित्य, संस्कृति, विज्ञान, तथा लोक-साहित्य के भी विद्वान थे। 1863 से 1893 तक पुस्तकालय अध्यक्ष के रूप में अपने सेवाकाल में ट्रम्बुल ने अमरीकी इण्डियन नृवंशविद्या, लोक-साहित्य तथा भाषा सम्बन्धी पुस्तकों का पुस्तकालय में इस सीमा तक असाधारण संग्रह किया कि वह एक बड़े विश्वविद्यालय का पुस्तकालय लगने लगा था। इस संग्रह द्वारा व्होर्फ की रुचि मैक्सिको सम्बन्धी पुरातत्वों एवम् ज्ञान में पुन: जागृत हुई जिससे उनका ध्यान विशेष रूप से अज़्तेक (नहुअत्ल) भाषा तथा बाद में माया चित्रलेखों के लिए गुप्त लिखावट की ओर आकर्षित हुआ। हम नहीं जानते कि विशेषतया अज़्तेक भाषा के अध्ययन के लिए व्होर्फ को प्रेरित करने वाला कौन-सा कारण था। सम्भवत: संयोग से उन्हें नहुअत्ल का एक विवरण मिला, जिसने उन्हें *La langue hebraique* में उपलब्ध विचारों का स्मरण करा दिया। कुछ भी हो, व्होर्फ ने अज़्तेक का अध्ययन सन् 1926 में आरम्भ किया। शायद उन्होंने माया पर गम्भीर रूप से कार्य सन् 1928 तक आरम्भ नहीं किया था। उन्होंने केवल वाटकिन्सन पुस्तकालय में ही अध्ययन नहीं किया, अपितु हर्टफोर्ड से बाहर जब भी वे व्यावसायिक यात्राओं पर जाते तो सुगमता से जिस किसी पुस्तकालय से लाभ उठा सकते थे, उठाते थे। उन्होंने शीघ्र उन्नति की और हावर्ड विश्वविद्यालय के ए० एम० तोज़र ब्रुकलिन म्यूज़ियम के एज० जे० स्पिण्डन सहित मैक्सिकन पुरातत्त्व एवम् भाषाविज्ञान के विभिन्न विद्वानों से पत्र-व्यवहार आरम्भ कर दिया। डा० स्पिण्डन के सुझाव पर उन्होंने उस मैक्सिकन पाण्डुलिपि के एक पृष्ठ के अनुवाद पर काम करने के प्रयत्नों में अपने को प्रवृत्त किया जिसकी फोटो-प्रतिलिपि हावर्ड विश्वविद्यालय के 'पीबॉडी म्यूज़ियम' (Peabody Museum) में प्राप्य थी। इस कार्य का परिणाम वह लेख था जो सितम्बर 1928 में अमरीकनों की तेइसवीं अन्तर्राष्ट्रीय कांग्रेस के सामने पढ़ा गया। इसी के समान पहला विद्वत्तापूर्ण प्रकाशन *An Aztec Account of the Period of the Toltec Decline* (1928)[5] था। व्होर्फ ने इसके सम्बन्ध में स्वयं लिखा है कि, "यह लेख इतिहास एवम् इतिवृत्त के विस्तृत वर्णन में एक प्राचीन पदार्थ संग्रहकर्ता की अभिरुचि को प्रकट करता है, तथा उस भाषाविज्ञानी के अभिमान को व्यक्त करता है, जो एक अस्पष्ट अज़्तेक शब्द के रहस्य को जबर्दस्ती खींच निकालना चाहता है।"

5. व्होर्फ की कृतियों की ग्रन्थतालिका (पुस्तक के अन्त में) देखिए। इसके पीछे उन सम्बन्धित कृतियों की एक छोटी सूची भी दी गई है, जिनका यहाँ निर्देश किया गया है।

कांग्रेस के सामने पढ़े गए इस लेख ने बहुत से लोगों का ध्यान इस युवा बीमा कार्यकर्ता के प्रति आकृष्ट किया, तथा उसका प्रचार किया। समाचारपत्रों में छपी रिपोर्टों ने उसे उन 'रहस्यों के उद्घाटनकर्ता' के रूप में अभिनन्दित किया, जिन रहस्यों ने बड़े-बड़े विद्वानों को कौतूहल में डाल रखा था। लगभग उसी समय, एक अन्य अज़्तेक अनुवाद पूरा हुआ, जो सन् 1929 में *The Reign of Huemac* शीर्षक से प्रकाशित हुआ।

ये प्रकाशन उनके अध्ययनकाल के प्रथम तथा सहज परिणाम थे। व्होर्फ भी तुलनात्मक भाषा-विज्ञान में जुटे हुए थे। सम्भवत: उन्हें अन्य किसी प्रकार की शिक्षा प्राप्त नहीं थी। उन्होंने केवल स्पिण्डन एवम् टोज़र जैसे व्यक्तियों से संक्षिप्त एवम् आवश्यक परिचय प्राप्त कर लिया होगा, तथा इसके अतिरिक्त पैन्सिलवानिया विश्वविद्यालय के जे० एल्डन मेसन से भी सम्पर्क स्थापित किया होगा, जिनसे उनकी भेंट सन् 1924 की ग्रीष्म ऋतु में हुए सर्वप्रथम लिंग्विस्टिक इन्स्टीच्यूट में हुई थी। अमरीकियों की अन्तर्राष्ट्रीय कांग्रेस में व्होर्फ ने टोल्टेक इतिहास पर लेख पढ़ने के अतिरिक्त एक दूसरा लेख भी पढ़ा था। इस लेख ने बहुत कम लोगों का ध्यान आकृष्ट किया, परन्तु यह लेख उनकी वास्तविक रुचियों के अधिक निकट था। इसका साधारण-सा शीर्षक 'अज़्तेक लिंग्विस्टिक्स' था। इस लेख ने उनके इस दृढ़ विश्वास को प्रकट किया कि अज़्तेक ओलिगोसिन्थेटिक (Oligosyn-thetic) भाषा है, अर्थात् इसके सभी शब्द अपेक्षाकृत थोड़े से तत्त्वों से बने हुए हैं, वे तत्त्व बहुत थोड़े से हैं। सम्भवत: 50 के लगभग मूल एकाक्षरिक धातु हैं, "जिनमें से प्रत्येक धातु अपने मौलिक अर्थ को खोए बिना विस्तृत स्वराघात-परिवर्तन में समर्थ, एक सामान्य धारणा को अभिव्यक्त करती है।" (अथवा, ऐसी ही बात उन्होंने लेख के प्रकाशित सारांश में लिखी है।) इस समस्या पर ध्यान देते हुए कि क्या वही धातु, जो अज़्तेक में प्राप्त हुई हैं, अज़्तेक से सम्बन्धित भाषाओं में भी मिलती हैं? इस विषय में अपने निष्कर्षों से वे एकदम सन्तुष्ट हो गए। सन् 1928 के अन्त तक वह कार्य, जो उन्होंने तेपेकनो, पिमम, तथा अज़्तेक—सभी मैक्सिकन भाषाओं के पारिवारिक सम्बन्धों पर किया था, टोज़र एवम् स्पिण्डन को इतना आशा-जनक लगा कि उन्होंने व्होर्फ को सलाह दी कि वे 'सोशल साइन्स रिसर्च कॉन्सिल' से शोध-छात्रवृत्ति प्राप्त कर लें, ताकि वे आवश्यक सामग्री प्राप्त कर सकें, तथा अधिक गहन रूप से अध्ययन कर सकें। व्होर्फ ने इस प्रस्ताव को इस आधार पर अस्वीकार कर दिया कि वे ऐसी छात्रवृत्ति का उपयोग, वाटकिन्सन लायब्रेरी के लिए 'अज़्तेक पाण्डुलिपियाँ' खोजने के निमित्त मैक्सिको की यात्रा के लिए करेंगे; क्योंकि उस पुस्तकालय के एक प्रबन्धक ने अज़्तेक सामग्री का संग्रह करने की इच्छा प्रकट की थी। टोज़र की सलाह थी कि यदि वे मैक्सिको जाना ही चाहते हैं, तो उनके लिए आधुनिक नहुअत्ल की खोज करना श्रेयस्कर होगा। इस सुझाव को व्होर्फ ने आसानी से मान लिया। 6 दिसम्बर 1928 के मेसन को लिखे गए पत्र में, उस छात्रवृत्ति के सन्दर्भ में जिसके लिए वे आवेदन-पत्र भेज रहे थे, टिप्पणी

करते हुए व्होर्फ ने कहा कि, "इसमें संशय है कि यह छात्रवृत्ति मुझे मिल पाएगी या नहीं, क्योंकि ये छात्रवृत्तियां पी० एच० डी० की उपाधि-प्राप्त व्यक्तियों के लिए होती हैं। यद्यपि कभी-कभी अपवादस्वरूप ये दूसरे व्यक्तियों को भी दी जाती हैं, पर वे अपवाद विरले एवम् कठिन होते हैं, जिनके लिए बहुत अच्छी सिफारिशों की आवश्यकता होती है।" 'सोशल साइंस रिसर्च कॉन्सिल' को दिए गए प्रार्थनापत्र के साथ एक तो उनकी पाण्डित्यपूर्ण योजना का सामान्य विवरण भेजा गया था, दूसरे, लगभग एक सम्पन्न लेख भी साथ ही भेजा गया था जिसका शीर्षक था 'Notes on the Oligosynthetic Comparison of Nahuatl, and Pimam, with special reference to Tepecano' (विशेष रूप से टेपेकनो तथा नहुअत्ल और पिमम के तुलनात्मक अध्ययन पर टिप्पणी)। इन प्रपत्रों में से पहले प्रपत्र अर्थात् पाण्डित्यपूर्ण योजना के सामान्य विवरण में व्होर्फ ने अपने-आप को निश्चित रूप से कल्पनाशील व्यक्ति सिद्ध किया। परन्तु उन्होंने छात्रवृत्ति प्रार्थनापत्र की जाँच करने वाली कमेटी का ध्यान आकृष्ट करने के लिए इसकी विषयवस्तु को उद्धृत करना भी आवश्यक समझा:

इस शोध छात्रवृत्ति की सहायता से, अगर सम्भव हो सका तो मैं 'ओलिगो-सिन्थीसिस' के सिद्धान्त को सजीव विषय बनाने के लिए मैक्सिकन भाषा-विज्ञान पर पर्याप्त काम करने तथा उसे प्रकाशित करने की योजना बनाना चाहता हूँ, तथा साथ ही एक ऐसी योजना भी बनाने का विचार है जिससे अन्य अन्वेषक 'किसी भाषा' के मौलिक आधार में रुचि विकसित कर सकें।

इसके पश्चात् जब मैं इस प्रकार कुछ और अधिक प्रसिद्ध हो जाऊँगा, तो मेरा अगला कदम उस तत्त्व में रुचि उत्पन्न करना होगा, जिसे मैं हिब्रू एवम् सेमिटिक भाषाओं में द्विचर समूहन (Binary Grouping) कहता हूँ। यह सत्य है कि मैं इस पर अब भी काम कर रहा हूँ, तथा सेमिटिक भाषाओं पर शोधकर्ताओं का ध्यान इस ओर आकृष्ट करने के लिए आगे भी इस पर काम करता रहूँगा।

द्विचर समूहन के भी एक प्रचलित विषय बन जाने पर मैं इस सिद्धान्त तथा 'ओलिगोसिन्थैटिक' के सिद्धान्त में तादात्म्य स्थापित करना आरम्भ करूँगा, और इस प्रकार हिब्रू तथा सेमिटिक भाषाओं में निहित गहन सिद्धान्त की तह तक पहुँच जाऊँगा।

मेरा अगला कार्यक्रम वाग्व्यवहार के समस्त आदिम मूलभूत आधारों के विषय में जानकारी प्राप्त करने के लिए इन सिद्धान्तों का प्रयोग करना होगा। यह एक नए विज्ञान की नींव रखने के समान होगा, तथा, यद्यपि इस कार्य का निष्पादन कुछ समय पश्चात् भविष्य में होगा, तो भी मुझे विश्वास है कि यह कार्य अवश्य ही सम्पन्न हो सकता है। इससे आगे इस विज्ञान के और

सम्भव विनियोग भी किए जा सकते हैं—जैसे मानव-जाति की मौलिक सामान्य भाषा का पुनरुद्धार करने के लिए, अथवा ध्वनियों के मौलिक मनोवैज्ञानिक अर्थों से रचित एक आदर्श स्वाभाविक भाषा का निष्पादन करने के लिए, सम्भवतः ऐसी भावी सामान्य भाषा की रचना के लिए जिसमें हमारी सभी विभिन्न भाषाओं का सवांगीकरण हो सके; अथवा, यूँ कहिए कि वे सभी भाषाएँ उसी के नियमों में ढल सकें। इस समय यह बात अत्यन्त काल्पनिक प्रतीत हो सकती है, परन्तु अन्य क्षेत्रों में जो कुछ विज्ञान ने किया है, यह कार्य उससे कम वैशिष्टयपूर्ण नहीं रहेगा, जब इसे मार्गदर्शन के लिए शुद्ध सिद्धान्त प्राप्त हो जाएँगे, और मेरा विश्वास है कि मेरा कार्य ऐसे सिद्धान्तों को खोजने की ओर प्रवृत्त है। इन खोज कार्यों के चरम विकास के साथ बाईबल में मिलने वाले ब्रह्माण्ड-विज्ञान में निहित उन मनोवैज्ञानिक, प्रतीकात्मक एवम् दार्शनिक अर्थों का स्पष्ट प्रकटीकरण होगा, जो इस अध्ययन के प्रारम्भ करने में मूल प्रेरणा हैं।

व्होर्फ के छात्रवृत्ति के प्रार्थनापत्र के साथ संलग्न दूसरे पत्र के आरम्भ के कुछ पैराग्राफों में ओलिगोसिन्थेसिस की और अधिक व्याख्या की गई है।

ओलिगोसिन्थेसिस एक ऐसी भाषा-रचना का नाम है जिसमें सभी शब्द, या लगभग सारा शब्दभण्डार धातुओं अथवा अर्थयुक्त तत्त्वों की एक छोटी सी संख्या में सीमित किया जा सके, बिना इस बात की अपेक्षा किए कि इन धातुओं या तत्त्वों को मौलिक माना जाए, जिन्हें हम भाषा के पूर्ववर्ती रूप मानते हैं, या जिनकी कभी भी स्वतन्त्र सत्ता न रही हो; क्योंकि उनकी सत्ता केवल शब्दों के ऐसे अंगों के रूप में मान ली जाती है, जो सदैव अवियोजित 'पूर्ण' रहे हैं।

लेखक ने ऐसी संरचना का मैक्सिको की नहुअत्ल या अज्तेक भाषा में पता लगाया था, जिस पर उसने बहुत से कार्य किए, और तभी उसने ओलिगो-सिन्थेसिस शब्द का प्रस्ताव किया था.....। संक्षेप में निष्कर्ष ये हैं कि लगभग सभी, तथा नहुअत्ल के सम्भवतः समस्त परिचित शब्दभण्डार का व्युत्पादन लगभग 35 धातुओं के विभिन्न संयोगों तथा विभिन्न अर्थगत विकासों से हुआ है। इन धातुओं को लेखक 'तत्त्व' के नाम से अभिहित करना अधिक उचित समझता है। इन तत्त्वों में से प्रत्येक 'तत्त्व', एक सामान्य 'भाव' का प्रतीक है जिसमें सम्बन्धित विचारों के आसपास के क्षेत्र का भी कुछ अर्थ सम्मिलित होता है, तथा जिसमें केन्द्रीय 'भाव' अज्ञात रूप से झलकता है। ये 35 तत्त्व (अब यह बहुत ही असंभावित सा प्रतीत होने लगता है कि उनकी संख्या बढ़ जाए) विस्तृत प्रातिपदिक-विश्लेषण से प्राप्त किए गए हैं, तथा प्रस्तुत लेख के परिशिष्ट में इनकी सूची दी गई है। ये तत्त्व हजारों नहुअत्ल शब्दों के अर्थ की व्याख्या करते हैं। इन शब्दों में हाल ही में सीखे गए शब्दों की बहुत बड़ी संख्या भी सम्मिलित है, तथा इन शब्दों का वही अर्थ था जो उनके तत्त्वों से प्रत्याशित था। इसके अतिरिक्त, यह मेरे लिए अधिकाधिक प्रमाणित सिद्ध

होता जा रहा है कि इन तत्त्वों को मौलिक धातु तथा प्रस्तुत भाषा के पूर्व-कालीन तथा पूर्वज माना जाना चाहिए। मेरा पहला मत कि ये तत्त्व सन्नी-करणात्मक सादृश्यमूलक व्युत्पत्ति का परिणाम हो सकते हैं—कुछ हल्का प्रतीत होने लगा है। स्पष्टतया यहाँ हमारे सम्मुख एक संरचना है, जो विचारोद्भावन के मार्ग, तथा ओष्ठ, जिह्वा, और स्वरतान्त्रिक क्रियाओं, (अर्थात् व्यंजन और स्वर) के अनुक्रमों के बीच एक पूर्णतया क्रमबद्ध अनुरूपता है, जिसका भाषायी, उच्चारण-अवयवात्मक तथा मनोवैज्ञानिक महत्त्व हो सकता है।

द्विचर समूहन ने एक ऐसे सिद्धान्त का निर्देश किया, जिसके विषय में व्होर्फ का विश्वास था कि यह सिद्धान्त हिब्रू धातुओं में अन्तर्निष्ठ है, जैसा कि एक अप्रकाशित पाण्डुलिपि के एक उद्धरण में देखा जा सकता है: "एक द्विचर वर्ग, सेमिटिक धातुओं का वर्ग है, जिसमें सामान्य रूप से दो व्यंजनों का एक विशेष अनुक्रम समान रूप से मिलता है तथा इस अनुक्रम वाली सभी धातुएँ एक भाषा में होती हैं; तथा कुछ अपवादों को छोड़कर इन सभी धातुओं का निर्धारण कुछ थोड़े से विशिष्ट अर्थों के लिए हो जाता है।"

ये उद्धरण विशेष रोचक हो जाते हैं जब हम इन्हें फेब्रे डी ओलिवेट के लिए व्होर्फ के प्रारम्भिक उत्साह के सन्दर्भ में देखते हैं। आगे टिप्पणी के रूप में यह कहा जाना चाहिए कि व्होर्फ ने ओलिगोसिन्थेसिस के सिद्धान्त का विनियोग माया सम्बन्धी अपनी प्रथम रचना में करना आरम्भ कर दिया था। माया के विषय में उन्होंने एक लेख 'Stem Series in Maya' दिसम्बर 1929 में 'लिंग्विस्टिक सोसाइटी ऑफ अमेरिका' (जिसके वे उसी समय सदस्य बने थे) के सामने पढ़ा था। लिंग्विस्टिक सोसाइटी की प्रोग्राम कमेटी को दिए गए इस लेख के संक्षिप्त सार में व्होर्फ ने यह संकेत दिया है कि *QE*-से आरम्भ होने वाले बहुसंख्यक माया प्रतिपादिकों का अर्थ है 'turn' (मुड़ना)। वे आगे लिखते हैं कि, "इसी प्रकार दूसरी श्रेणियाँ भी हैं—जैसे *QI*-'प्रकाश फेंकना', 'दीप्त होना', 'जलना', 'बिखरना', *QI-*,*QU-*, 'अन्दर की ओर' *BI*-'हिलना'; *TA*-'जोड़ना' *TZA*-'समीप आना या इकट्ठे लाना'; *MA*-गुजरना। दूसरे शब्दों में "विचारधारा ध्वन्यात्मकतावाद का अनुसरण करती है।"

उनके शोध-छात्रवृत्ति के लिए प्रार्थना-पत्र के 'एस एस आर सी' (SSRC) का उत्तर अनुकूल होने के कारण, व्होर्फ ने मैक्सिको के लिए क्षेत्रीय यात्रा के प्रबन्ध प्रारम्भ कर दिए। उन्होंने अपनी कम्पनी से कुछ सप्ताह की छुट्टी ली, तथा जनवरी 1930 में श्रीमती व्होर्फ तथा उनकी माता के साथ मैक्सिको शहर के लिए रवाना हो गए—जहाँ जाते हुए उन्होंने लुईसिआना (Louisiana) के तुलेन (Tu-lane) विश्वविद्यालय के 'मिडल-अमेरिकन-रिसर्च' विभाग के पुस्तकालय में शोध-कार्य करते हुए कुछ दिन बिताए। मैक्सिको शहर में पहुँचने पर उन्होंने अज्तेक भाषा के लिए मैक्सिकन विशेषज्ञों, विशेष रूप से मैक्सिको के नेशनल संग्रहालय के

प्रोफैसर मेरिआनो रोजस (Mariano Rojas) की सहायता ली । अंशतः उनकी सहायता से उनकी कई ऐसे उत्कृष्ट सूचकों तक पहुँच हो गई, जो अज़्तेक का एक ऐसा रूप बोलते थे जिसके विषय में कहा जाता था कि यह रूप उस बोली के इतना निकट है, जितना इन हज़ारों वर्षों में अधिक से अधिक उस रूप के निकट हो सकता है जो अज़्तेक की क्लासिकल बोली कभी मोन्तेज़ुमा (Montezuma) के समय में 'तेनोच्तित्लान' (Tenochtitlan) (अब अमेरिका शहर) में बोली जाती थी । ये व्यक्ति मिल्पा एल्टा (Milpa Alta) के रूप में ज्ञात फेबरल (Feberal) जिले के दूरस्थ उपनगर में रहते हैं, तथा यह उनकी भाषा है, जिसका व्होर्फ ने विशद भाषायी विश्लेषण किया, जो उनकी मृत्यु के बाद होयेर (Hoijer) के लिंग्विस्टिक स्ट्रक्चर्ज ऑफ नेटिव अमेरिका (Linguistic Structure of Native America) में सन् 1946 में प्रकाशित हुआ । इसी बीच व्होर्फ ने मार्गदर्शी पुरातात्त्विक सामग्री की खोज के लिए मैक्सिकन देहात में चारों ओर छान-बीन की । तेपोज़्तलन (Tepoztlan) के गाँव से ऊपर स्थित एक भग्न मन्दिर में, जहाँ उन्होंने और आगे भाषायी अध्ययन किए, उन्हें संयोगवश एक उत्कीर्ण आकृतियों का समूह मिला जो अब तक विद्वानों की पैनी दृष्टि से ओझल ही रह गया था । उनके तीक्ष्ण प्रेक्षण तथा अज़्तेक एवम् माया लेखाचित्रीय कला से अति-परिचय ने उन्हें लगभग एकदम यह पहचानने में समर्थ कर दिया कि ये आकृतियाँ अज़्तेक कैलेण्डर के 'दिवस चिह्नों' के रूप में अपने साधारण रूपों से भिन्न हैं तथा मायालिपि-चिह्नों से कुछ समानताएँ रखती हैं । नहुअत्ल चित्रलेखों तथा प्राचीन माया चित्रलेखों में निश्चित तथा स्पष्ट रूप से प्रमाणित किए जा सकने वाले सम्बन्धों की यह खोज, जैसाकि व्होर्फ इसे मानते थे, प्रस्तुत संकलन में, पुनर्मुद्रित लेखों में से एक लेख 'मैक्सिकन तथा माया दिवस चिह्नों को मिलाने वाला एक मध्य मैक्सिकन शिलालेख' (A Central Mexican Inscription combining Mexican and Maya day) का आधार थी । यह व्होर्फ की कार्य-पद्धतियों का एक श्रेष्ठ उदाहरण प्रस्तुत करता है तथा माया चित्रलेखों में उनकी बाद की गवेषणाओं की ओर संकेत करने वाला यह उनका प्रथम प्रकाशन भी है ।

मैक्सिको से अपनी वापसी के पश्चात् कई वर्षों तक व्होर्फ उस सामग्री पर काम करने में लगे रहे, जो उन्होंने अपने मैक्सिको में निवास के समय एकत्रित की थी । न केवल यह आवश्यक था कि एल्पा एल्टा नहुअत्ल (Alpa Alta Nahuatl) के भाषायी विश्लेषण की रूपरेखा प्रस्तुत की जाए, अपितु यह भी अत्यन्त आवश्यक था कि मैक्सिकन तथा माया 'दिवस चिह्नों' से सम्बन्धित खोजों द्वारा, उन प्रशस्त किए गए मार्गों का अनुसरण भी किया जाए, जिनके प्रभाव से उसके द्वारा पहले ही विकसित की गई कुछ सूझबूझों तथा विचार-पद्धतियों का सुधार सम्भव था । माया चित्रलेखों से सम्बन्धित प्रकाशनों की एक प्रमुख माला लगभग इसी समय सर्वप्रथम हावर्ड विश्वविद्यालय के 'पीबॉडी म्यूज़ियम' द्वारा प्रकाशित एक प्रबन्ध 'माया लेखन में ध्वन्यात्मक

मूल्य के कुछ लक्षण' (The Phonetic Value of Certain Characters in Maya Writing) 1933 और बाद में प्रकाशित एक लेख 'माया लेखन-पद्धति तथा इसका अर्थ-निर्धारण' (Maya Writing and its decipherment) 1935 द्वारा प्रारम्भ हुई। पहले प्रकाशन में, जिसे तैयार करने के लिए हावर्ड के प्रोफेसर टोज़र ने उन्हें प्रेरित किया था उन्होंने विस्तृत रूप में और प्रमाणों सहित अपनी तर्क अभिधारणा को प्रस्तुत किया कि माया लेखन कम से कम आंशिक रूप से स्वनिक था, और उन्होंने प्राचीन पाण्डुलिपियों में से एक से साधारण प्राचीन माया पाण्डुलिपि का नमूने के रूप में अनुवाद भी प्रस्तुत किया। क्योंकि माया लेखन में स्वनिकता की परिकल्पना कम से कम 50 वर्ष पूर्व माया विद्वानों द्वारा छोड़ी जा चुकी थी; अत: उस समय उनका प्रकाशित होना ही इस बात का प्रमाण है कि व्होर्फ के लेख अत्यधिक प्रभावशाली रहे होंगे। बाद का प्रकाशन, 'माया लेखन पद्धति तथा इसका अर्थ-निर्धारण' (Maya Writing and its decipherment) रिचर्ड सी० ई० लाँग (Richard C. E. Long) द्वारा 'माया रिसर्च' जरनल में प्रकाशित समीक्षा का उत्तर था। श्री लाँग द्वारा विस्तार में किए गए आक्षेपों का उत्तर देने के साथ-साथ व्होर्फ ने यह भी स्पष्ट करने का प्रयत्न किया कि वे लाँग की पद्धति को मौलिक रूप से ग़लत क्यों मानते हैं। उन्होंने माया पाण्डुलिपि का आदर्श अनुवाद भी प्रस्तुत किया। इस निबन्ध में इसके अतिरिक्त उन्होंने उल्लेख किया कि वे एक पाण्डुलिपि 'First step in the decipherment of Maya Writing' (माया लेखन के अर्थ-निर्धारण में प्रथम प्रयास) पर कार्य कर रहे हैं; जिसे वे थोड़े ही समय बाद प्रकाशित करने की आशा रखते हैं। इस तरह व्होर्फ के काग़ज़ों से प्राप्त यह पाण्डुलिपि अधूरी तथा अप्रकाशित ही रही; यद्यपि इसके कुछ अंश एक निबन्ध में उद्धृत हुए हैं, जिसे व्होर्फ ने सन् 1940 में वैज्ञानिक कांग्रेस के सामने पढ़ा था। यह निबन्ध प्रस्तुत संग्रह में पुनर्मुद्रित है। सन् 1933 के पश्चात् माया-विद्वानों द्वारा अपनी कृति के प्रति किए गए काफी रूखे स्वागत से व्होर्फ को बहुत अधिक निराशा हुई। उन्हें पूर्ण विश्वास था कि उनके भाषायी उपगम में ही माया चित्रलेखों के निश्चयीकरण की कुंजी निहित है। 1940 में जो लेख उन्होंने पढ़ा, वह स्पष्ट रूप से इस उपगम के लिए समर्थन पाने का अन्तिम दृढ़ प्रयत्न था।

जो व्यक्ति, भाषाविज्ञान के क्षेत्र में उनके घनिष्ट सहकर्मी बने, मैक्सिको की यात्रा से पूर्व तक उनमें से हरेक के साथ व्होर्फ के व्यक्तिगत या पत्र-व्यवहार द्वारा बहुत कम सम्बन्ध रहे थे। उनके ज्ञानक्षेत्रीय सम्बन्ध मुख्यतया मैक्सिकन पुरातत्त्व के विशेषज्ञों के एक वर्ग के साथ थे, जिनमें से कोई भी ऐसा न था जो विशेष रूप से सामान्य भाषाविज्ञान में सुयोग्य हो, अथवा उसमें रुचि रखता हो। इन सब बातों के दृष्टिगत, व्होर्फ ने जो सुयोग्यता सामान्य

भाषा-विज्ञान तथा भाषा क्षेत्र-पद्धतियों में अपने प्रशिक्षण-रहित अध्ययन के बल पर प्राप्त की, वह असाधारण थी। तथापि उनकी प्रतिभा कभी पूर्णरूप से परिपक्व न होतीं, यदि वे यथासमय एडवर्ड सपीर (1884-1939) से न मिले होते, जो उस समय के न केवल अमरीकी भाषाओं के ही, बल्कि सामान्य भाषा-विज्ञान के भी अग्रगण्य एवम् सर्वमान्य विद्वान थे। निस्सन्देह, व्होर्फ सपीर के कार्य से अवगत थे तथा निःसंशय उन्होंने वहुत अधिक रूचि के साथ सपीर की पुस्तक 'लैंग्वेज' (न्यूयार्क, 1921) पढ़ी थी। सर्वप्रथम, वे सपीर से बहुत थोड़ी देर के लिए सितम्बर 1924 की अमरीकनों की अन्तर्राष्ट्रीय कांग्रेस में मिले, उनसे खुलकर बातें 1929,, 1930 में वैज्ञानिक सोसाइटियों की उत्तरवर्ती सभाओं में भेंट के दौरान की थी। फिर भी व्होर्फ सपीर से कोई घनिष्ट सम्बन्ध उस समय तक नहीं बना सके, जब तक कि सपीर 1931 की सर्दियों में शिकागो विश्वविद्यालय से येल विश्वविद्यालय में भाषा-विज्ञान पढ़ाने के लिए, मानवविज्ञान के प्रोफेसर के रूप में अपना स्थान ग्रहण करने के लिए नहीं आए थे। व्होर्फ ने सपीर द्वारा आयोजित येल विश्वविद्यालय में अमरीकी-इण्डियन भाषाविज्ञान के पहले कोर्स में अपना नाम दर्ज कराने में कुछ भी समय नहीं लगाया। व्होर्फ के कागज़ों में एक पाण्डुलिपि मिलती है, जिसका शीर्षक है 'दि स्ट्रक्चर आफ दि अथबास्कन लैंग्वेजिज़' (The Structure of the Athabaskan Languages) यह एक ऐसा 'टर्म-पेपर' था जिसे सपीर ने प्रथम श्रेणी में रखा था तथा उसकी खूब प्रशंसा भी की। यद्यपि व्होर्फ ने अपना नाम पी-एच०, डी० की उपाधि प्राप्त करने के प्रोग्राम में दर्ज कराया था, परन्तु न तो उन्होंने कोई प्रयत्न किया, न ही कोई उच्च उपाधि प्राप्त की। वे शुद्ध बौद्धिक लक्ष्यों के लिए अध्ययन करते रहे। भाषाविज्ञान में व्होर्फ की नई औपचारिक रुचि के अध्ययन के प्रभाव स्पष्ट रूप में दिखाई पड़ते हैं। 'ओलिगोसिन्थेसिस', 'द्विचर: समूहन', तथा अन्य असाधारण भाषायी सिद्धान्तों में उनकी आरम्भिक अभिरुचि कम से कम इस सीमा तक सुसंस्कृत बन गई थी, कि उन्हें सपीर जैसे व्यक्तियों के दीर्घ अनुभव के प्रकाश में इनका पुनरीक्षण करने का सौभाग्य मिला। (1931 के पश्चात् व्होर्फ के किसी भी लेख में मैं ओलिगोसिन्थेसिस के विचार का उल्लेख नहीं पा सका हूँ।) अधिक महत्त्वपूर्ण बात यह थी कि व्होर्फ उन भाषायी सिद्धान्तों तथा तकनीकों के सम्पर्क में पहुँच गए, जो उस समय सर्वाधिक विकसित माने जाते थे, तथा साथ ही उन समस्याओं के भी सम्पर्क में आए जिनका समाधान नितान्त आवश्यक समझा जाता था। अन्त में, येल विश्वविद्यालय में पढ़ते समय उनका सम्पर्क सपीर के गम्भीर विद्यार्थियों के एक छोटे से वर्ग से हुआ, जिसमें मौरिस स्वदेश, स्टेण्ले न्यूमेन, जॉर्ज ट्रेगर, चार्ल्स वोजेलिन, मेरी हास तथा वाल्टर डिक जैसे व्यक्ति सम्मिलित थे। इन सभी ने भाषा-विज्ञान अथवा मानवविज्ञान के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। 1937-38 में व्होर्फ, येल विश्वविद्यालय में मानवविज्ञान के प्राध्यापक हो गए।

इस प्रकार सपीर के साथ व्होर्फ के साहचर्य ने, अमरीकी-इण्डियन भाषा-विज्ञान के क्षेत्र को और आगे विकसित करने की उनकी इच्छा को तीव्र करने का काम किया। माया चित्रलेखों के विषय में, 1933 में शून्यचिह्न की व्याख्या के विषय में प्रकाशित अपने एक लेख में दिए कुछ सुझावों के लिए व्होर्फ ने सपीर को श्रेय दिया। तथापि, व्होर्फ को उतो-अज़्तेकन भाषाओं (भाषाओं का एक बड़ा वर्ग जिसके सम्बन्ध सपीर ने स्थापित किए थे) तक अपने कार्य को बढ़ाने तथा विशेष रूप से अज़्तेक की दूर की सम्बन्धी होपी भाषा का अध्ययन आरम्भ करने के लिए प्रोत्साहित करने में सम्भवतः सपीर का बहुत अधिक प्रभाव था। दिसम्बर 1932 में व्होर्फ ने न्यू हेवन (New Haven) में आयोजित 'लिंग्विस्टिक सोसाइटी ऑफ अमेरिका' की सभा में 'दि करैक्टरिस्टिक्स ऑफ दि उतो-अज़्तेकन स्टॉक' (The Characteristics of the Uto-Aztecan-stock) नाम का एक लेख पढ़ा। उतो-अज़्तेकन भाषाविज्ञान (होपी से अलग) पर उनके आगे के कार्य का प्रतिनिधित्व क्रोएबर (Kroeber) के 'उत्तो-अज़्तेकन लैंग्वेज़ ऑफ मैक्सिको' (1935) की समीक्षा, तथा अन्य कुछ लेखों 'दि कम्पेरेटिव लिंग्विस्टिक्स ऑफ उतो-अज़्तेकन' (1935), 'दि ओरिजिन ऑफ अज़्तेक टी एल' (1937), तथा (जी० एल० ट्रेगर के साथ) 'दि रिलेशनशिप ऑफ उतो-अज़्तेकन एण्ड तानोअन' द्वारा किया गया है। इन लेखों में व्होर्फ ने एक वृहद् परिवार के भाषावर्ग का पता लगाया, जिसके लिए उन्होंने 'मेक्रो-पेन्यूटिअन' नाम इसलिए प्रस्तावित किया कि उसमें पेन्यूटिअन, उतो-अज़्तेकन, माया, तथा मिक्से-ज़ोक्वे-हुअवे, भाषाओं को भी सम्मिलित किया जा सके। बाद में, उन्होंने इस ढाँचे का प्रयोग सपीर के अमेरिकन-इण्डियन भाषाओं के वर्गीकरण का संशोधन तैयार करने के लिए भी किया।

यथार्थ भाषायी कार्य में, व्होर्फ अपने होपी अध्ययन के लिए प्रसिद्ध थे। सम्भवतः सपीर की कृपा से उन्होंने होपी के एक देशीय वक्ता से सम्पर्क स्थापित किया, जो काफी सुविधापूर्वक, उस समय न्यूयार्क शहर में रहने लगा था। सपीर द्वारा प्राप्त किए एक छोटे से शोध-अनुदान की सहायता से 1932 की वसन्त ऋतु के आरम्भ में व्होर्फ ने होपी के भाषायी विश्लेषण को विकसित करने पर अत्यन्त परिश्रम से कार्य किया। सपीर द्वारा दिये गये प्रशिक्षण से प्राप्त क्षेत्रीय पद्धतियों का भी उसमें प्रयोग किया। व्होर्फ तथा उनका सूचक न्यूयार्क वेदर्सफील्ड (जहाँ व्होर्फ रहते थे) में एक दूसरे के पास आते-जाते रहते थे। सन् 1938 में व्होर्फ को अरिजोना में होपी के आरक्षित क्षेत्र में थोड़ा समय बिताने का अवसर मिला। 1935 तक उन्होंने होपी भाषा का एक कामचलाऊ व्याकरण तथा शब्दकोश तैयार कर लिया था। होज़र के 'लिंग्विस्टिक स्ट्रक्चर्ज ऑफ नेटिव अमेरिका' (1946) में होपी भाषा के व्याकरण की एक संक्षिप्त रूपरेखा के अतिरिक्त, एक खाका भी व्होर्फ ने 1939 के अन्त में तैयार किया था। इन अध्ययनों का मुख्य परिणाम अप्रकाशित ही रहा। तथापि, हमें होपी भाषा के विषय में दो संक्षिप्त परन्तु प्रभावशाली लेखों

'दि पन्कच्युअल एण्ड सेग्मेण्टेटिव आस्पेक्टस् ऑफ वर्बज़ इन होपी' (1936 में प्रकाशित तथा उससे पहले दिसम्बर 1935 में 'लिंग्विस्टिक सोसाइटी ऑफ अमेरिका' के सामने एक लेख के रूप में पढ़ा गया) तथा "सम वर्बल केटेगरीज़ ऑफ होपी' (1938) के लिए कृतज्ञ होना चाहिए, जिन्हें उन्होंने अपने जीवनकाल में ही प्रकाशित किया था। इन लेखों का बहुत अधिक विकास एवम् विस्तार बाद में लोकप्रिय लेखों द्वारा हुआ। हम यह भी देख सकते हैं कि होपी का विचित्र व्याकरण, होपी भाषा के मातृभाषी को, पदार्थों को समझने तथा देखने की एक भिन्न विधि को सुझा सकता है। सबसे पहले उन्होंने यह दावा किया कि "होपी लोगों के पास व्यवहार के लिए एक अधिक अच्छी भाषा है.......हमारी आधुनिकतम वैज्ञानिक शब्दावली से भी अधिक लोचयुक्त भाषा है।" इसके पश्चात् उन्होंने 'एन अमेरिकन-इंडियन मॉडल ऑफ दि यूनिवर्स' नामक लेख भी लिखा जो सम्भवतः 1936 में लिखा गया, परन्तु 1950 तक अप्रकाशित ही रहा। यह लेख होपी भाषा की दिक्-काल सम्बन्धी धारणा के विषय में होपी क्रिया-व्यवस्था के निहित अर्थों की छान-बीन करता है। होपी भाषा पर किये जाने वाले कार्य ने लगभग उसी समय 'ए लिंग्विस्टिक कन्सीडरेशन ऑफ थिन्किंग इन प्रिमिटिव कम्यूनिटीज़' नामक लेख (प्रस्तुत संग्रह में प्रथम बार प्रकाशित) के लेखन को अवश्य प्रभावित किया होगा। 'सम वर्बल केटेगरीज ऑफ होपी' (1948) लेख में कुछ रोचक प्रभेदों पर विचार किया गया है, जिन भेदों को होपी भाषा उन घटनाओं के प्रकारों तथा रीतियों के बीच करती है, जिन्हें अंग्रेज़ी भाषा समान समझती है। 'लिंग्विस्टिक फैक्टर्ज इन दि टर्मीनॉलोजी ऑफ होपी आर्चीटेक्चर' (1940 में लिखा गया परन्तु 1953 तक अप्रकाशित) लेख में यह धारणा व्यक्त की गई है कि होपी विचारधारा सहज रूप से अधिवास, अथवा भूमि या फर्श के स्थान को अलग करती है, जिस स्थान पर अधिवास उस प्रयोग से घटित होता है जिस प्रयोग में अधिवास को रखा जाता है, जबकि अंग्रेज़ी भाषा की इन्हें मिलाने में प्रवृत्ति होती है, जैसे जहाँ 'स्कूल' एक संस्था एवम् एक इमारत दोनों ही रूपों में समझा जाता है। (निश्चय ही क्या हम सामान्य ज्ञान से महसूस नहीं करते कि एक संस्था अवश्य ही किसी प्रकार की इमारत में आश्रित होती है?) सम्भवतः व्होर्फ 1939 में लिखे गये लेख 'दि रिलेशन ऑफ हेबिच्युअल थॉट एण्ड बिहेवियर टू लैंग्वेज' तथा तीन अन्य लेखों के लिए सर्वाधिक प्रसिद्ध हैं, जो 1940 तथा 1941 में टेक्नॉलोजी रिव्यू में प्रकाशित हुए थे। ये सभी लेख काफी सीमा तक उनके होपी भाषा में कार्य पर आधारित हैं। ध्यान देने योग्य महवत्त्पूर्ण बात यह है कि पहले तो ये लेख बहुत पहले किये गये भाषायी विश्लेषण की दृढ़ नींव पर आधारित थे, दूसरे, इनमें अभिव्यक्त भाषायी सापेक्षता के विचार व्होर्फ के मस्तिष्क में नये नहीं थे; इसके विपरीत, इन विचारों के बीज पहले ही, यदि और पहले नहीं तो 1935 में तैयार की गई सामग्री में स्पष्ट थे।

एम० आई० टी० के 'टेक्नॉलोजी रिव्यू' के लिए लिखे गये तीनों लेख तथा

ब्रह्मविद्या की एक भारतीय पत्रिका में प्रकाशित 'लैंग्वेज, माइण्ड एण्ड रिएलिटी' लेख साधारण पाठकों को सम्बोधित करके लिखे गये थे। निश्चय ही व्होर्फ के मस्तिष्क में भाषाविज्ञान को साधारण जनता के सामने एक ऐसे ढंग से लाने का विचार था, जिस ढंग से भाषा-विज्ञान को प्रस्तुत करने का आज तक किसी ने प्रयत्न नहीं किया था। वास्तव में उन्हें आधुनिक भाषा-विज्ञान को लोकप्रिय बनाने वालों में प्रथम होने का श्रेय दिया जा सकता है। फिर भी उन्होंने अनुभव किया कि भाषा-विज्ञान को लोकप्रिय बनाना असम्भव होगा, तथा ऐसा करने का बहुत कम प्रयोजन होगा, जब तक कि भाषा-विज्ञान को रोचक न बनाया जाए। व्होर्फ के मतानुसार वह सन्देश यह था कि "हम 'कैसे', और 'क्या' सोचते हैं" इसके विषय में बताने के लिए भाषा-विज्ञान के पास बहुत कुछ है।

जिन कारणों से 'टेक्नॉलोजी रिव्यू' के लिए लेख लिखने को वे प्रेरित हुए, उनका यहाँ विवेचन करना रोचक रहेगा। 1932 में ही व्होर्फ तथा 'टेक्नॉलोजी रिव्यू' के सम्पादक जे० आर० किलियन जूनियर (अब एम० आई० टी० के अध्यक्ष) के बीच पत्र-व्यवहार हुआ। किलियन का ध्यान व्होर्फ के मैक्सिकन 'दिवस चिह्नों' पर लिखे लेख की ओर आकृष्ट हुआ था। किलियन ने व्होर्फ को अपनी मैक्सिको यात्रा का विवरण लिखने के लिए कहा, तथा पूछा कि क्या उन्होंने इन्जीनियरी, वास्तुकला तथा व्यावहारिक विज्ञानों के इतिहास से सम्बन्ध रखने वाली किसी सामग्री की खोज की है? व्होर्फ ने लगभग अवज्ञापूर्वक उत्तर दिया कि इस यात्रा का इन्जीनियरी, वास्तु-कला अथवा व्यावहारिक विज्ञानों से कोई सम्बन्ध नहीं है—अनुसंधान पूर्णरूपेण वैज्ञानिक शोध-भावना से किया गया था, परन्तु यह सामाजिक विज्ञानों के क्षेत्र में था, भौतिक विज्ञानों के क्षेत्र में नहीं। तथापि, बाद में वे अपनी यात्रा पर एक लेख लिखने के लिए सहमत हो गये। परन्तु लगता है कि किसी कारण से ऐसा लेख लिखा नहीं गया। इसके बाद व्होर्फ तथा अध्यक्ष कार्ल टी० काम्पटन के बीच पत्र-व्यवहार 1939 के उत्तरार्द्ध में हुआ। व्होर्फ ने पत्र-व्यवहार एक मामूली सी कठिनाई के परिणामस्वरूप प्रारम्भ किया, जो उन्हें भूतपूर्व विद्यार्थियों के रजिस्टर द्वारा भेजी गई प्रश्नावली को भरते समय हुई थी। प्रश्नावली में बीमा, बीमा इन्जीनियरी, अग्निकाण्ड-निवारण, या ऐसे ही अन्य क्षेत्रों का कोई उल्लेख नहीं था, जिनके विषय में व्होर्फ महसूस करते थे कि इन व्यवसाओं को इन्जीनियरी व्यवसायों के रूप में मान्यता मिलनी चाहिए। उन्होंने इस भूल को अध्यक्ष काम्पटन के ध्यान में लाना चाहा तथा अपने कार्य की प्रकृति के विषय में विस्तारपूर्वक लिखा। इसी पत्र में उन्हें अपनी अन्य ऐसी गतिविधियों का उल्लेख करने का अवसर प्राप्त हुआ, जो प्रश्नावली के शीर्षकों के उत्तर के रूप में ठीक नहीं बैठती थीं—उदाहरणार्थ, अमरीकी-इण्डियन भाषाओं पर उनकी खोज। उत्तर में अध्यक्ष काम्पटन ने इस बात की व्याख्या देने के बाद कि प्रश्नावली में जो भी छूटा है, वह जानबूझ कर छोड़ा हुआ नहीं बल्कि संक्षेपीकरण के कारण ही ऐसा हुआ है, व्होर्फ के व्यावसायिक कार्य में रुचि व्यक्त की तथा 'टेकनॉलोजी रिव्यू' में उनके पत्र को छापने की अनु–

मति माँगी। अनुमति दी गई तथा पत्र (बहुत संक्षिप्त रूप में) रिव्यू के जनवरी 1940 के अंक में देखा जा सकता है। रिव्यू के सम्पादक जूनियर एफ० जी० फासेट (F. G. Fassett, jr) ने परवर्ती पत्र-व्यवहार में 14 नवम्बर 1939 को व्होर्फ को लिखा : "आपके भाषायी अध्ययन, पत्रिका से सम्बन्धित किसी भी व्यक्ति के लिए रुचिपूर्ण एवं प्रेरक सम्भावना प्रस्तुत करते हैं। "क्योंकि वास्तविकता का विश्लेषण भाषा का विषय है, तथा इन विश्लेषणों की सापेक्षता का महत्त्व ऐसे अध्ययनों द्वारा दिखाया जा सकता है, जो भाषायी अभिव्यक्ति के अन्तर्गत सम्भव विभिन्नता की एक बहुत बड़ी श्रृंखला प्रस्तुत करते हैं। आगे यह भी पता चलेगा कि ब्रह्माण्ड तथा मानव को समझने के लिए, इनमें तथा विज्ञान के प्रयत्नों में सम्बन्ध है। मेरा विचार है कि आपके अक्तूबर के पत्र में दिए गए कथन में अन्तर्निहित विचारों को, रिव्यू ग्रुप के पाठकों को लक्ष्य करके परिवर्धित लेख के रूप में छापना काफी अच्छा रहेगा। क्या यह अभिरुचि के उज्ज्वल भविष्य का पूर्व लक्षण है?" वास्तव में ऐसा था, क्योंकि बहुत शीघ्र व्होर्फ ने अपना प्रथम लेख 'साइन्स एण्ड लिंग्विस्टिक्स', 30 जनवरी 1940 में प्रकाशनार्थ दिया जो शीघ्र ही रिव्यू में छप भी गया था। इस लेख का रिव्यू के नियमित पाठकों, तथा रीप्रिन्ट प्राप्तकर्ताओं की ओर से खुलकर भावभीना स्वागत हुआ जिसका तात्पर्य यह था कि उनके और लेख भी प्रकाशित किए जाएँ। दूसरा लेख 'लिंग्विस्टिक्स ऍज़ ऍन एग्ज़ेक्ट सांइन्स' 16 सितम्बर 1940 को प्रस्तुत किया गया था। व्होर्फ द्वारा तीसरा एवम् अन्तिम लेख 'लेंग्वेजिज़ एण्ड लौजिक' 14 फरवरी 1941 को उस समय दिया गया जब उनका स्वास्थ्य गिरता जा रहा था, एवम् उनकी शारीरिक दुर्बलता पहले ही उनकी लिखावट में प्रकट होने लगी थी।

उस वर्ष के दौरान जबकि वे भाषाविज्ञान पर प्रतिभा-सम्पन्न लेख लिख रहे थे और साथ ही साथ अस्वस्थता से लड़ रहे थे, उनमें एक अन्य अभिरुचि जागृत हुई। उनके सबसे बड़े पुत्र ने एक भाषण सुना तथा उसका विवरण उन्हें दिया। इस भाषण के कारण व्होर्फ का परिचय फ्रित्ज कुन्ज (Fritz Kunz) से हुआ, जो एक सुविख्यात वक्ता एवं लेखक थे, तथा 'फाउण्डेशन फॉर इनटेग्रेटिड एजूकेशन इन्कार्पोरेटड' (Foundation for integrated education Inc.) के कार्यकारी उपाध्यक्ष थे। कुन्ज तथा व्होर्फ की कई समान रुचियाँ थीं (जैसा कि कुन्ज ने मुझे लिखा है)। भारत के दर्शन एवम् तात्विकी में दोनों की रुचि थी। यही कारण था जो काफी घनिष्ठता से काम करने के लिए उन्हें एक दूसरे के समीप ले आया। इसी मित्रता के परिणामस्वरूप कुन्ज ने व्होर्फ को यह सुझाव दिया कि वे भारत में मद्रास से छपने वाली एक थियोसोफिकल पत्रिका के लिए भाषा-विज्ञान के विषय में एक लेख लिखें। 'लेंग्वेज़ माइण्ड एण्ड रिएलिटी' उनके इसी सुझाव का परिणाम था। कुन्ज एक नई पत्रिका **मेन करण्टस इन माडर्न थॉट** की स्थापना करने वाले थे। 1940 के उत्तरार्द्ध और 1941 के पूर्वार्द्ध में व्होर्फ ने इसके पहले कुछ संस्करण निकालने में उनकी बहुत सहायता की

थी। यह पत्रिका (अब तक भी प्रकाशित होती है: परन्तु एक भिन्न रूप में) बहुत रोचक तथा असाधारण गुणों वाली थी। इस पत्रिका का लक्ष्य विचारों को सुलझाने तथा प्राकृतिक विज्ञान, समाज-विज्ञान, साहित्य, गणित, तर्क तथा दर्शन आदि के सभी क्षेत्रों के विषय में सूचना देना था। इसकी सामग्री मुख्यतया अपने ग्राहकों के द्वारा लिखी जाती थी। उन दिनों अनुलिपिबद्ध रूप में प्रकाशित होने वाली इस पत्रिका के पृष्ठों की रंगीन छपाई, इसके विषय-वस्तु की परिचायक थी। वास्तव में व्होर्फ ने प्रथम ग्रन्थखण्ड में दर्जनों पृष्ठ लिखे, जिनमें पुस्तकों की अत्यधिक सर्जनात्मक समीक्षाएँ तथा इस प्रकार के विविध विषयों पर लेख सम्मिलित हैं, जैसे The Hurrians of the old Chaldea (प्राचीन चाल्दिया के हुरियन), Shrinking glass (सिकुड़ता हुआ शीशा), तथा Notes on the demonstration of Wetter Water (वैटर वाटर के प्रदर्शन पर टिप्पणी)। उनकी एक पुस्तक-समीक्षा 'आदिम समाजों के अर्थशास्त्र' की दो पुस्तकों पर आधारित है जिसका शीर्षक बहुत ही उत्तेजनात्मक है— We may end the war that is within all wars that are waged to end all war (हम उस युद्ध को समाप्त कर सकते हैं जो उन सभी युद्धों के अन्दर विद्यमान है, जिन्हें सभी युद्धों को समाप्त करने के लिए लड़ा जाता है)। व्होर्फ लिखते हैं कि "ये पुस्तकें एक प्रकार के उस अनुसंधान के उत्कृष्ट उदाहरण हैं, जो अर्थशास्त्र के पुराने ढंग के भौतिकवादी सिद्धान्त को धीरे-धीरे स्थानच्युत कर रहा है। क्योंकि, मार्क्सवादी साम्यवाद, एवम् निजी पूँजीवाद, दोनों ही अर्थशास्त्र के रुढ़िबद्ध भौतिकवादी सूत्रीकरण पर आधारित हैं, इसलिये तथ्य के ऐसे अकाट्य वैज्ञानिक प्रतिपादन, 'कि आर्थिक व्यवहार संस्कृति से अनुबन्धित होता है, यान्त्रिक प्रतिक्रियाओं से नहीं'—सम्भव है कि यह विचार एक नये युग का सूत्रपात करने वाला हो।" यह उद्धरण उन बहुत से उद्धरणों में से एक है जिनका उल्लेख व्होर्फ के विशाल मानवतावाद तथा सर्वजनहिताय उनकी चिन्ता को प्रदर्शित करने के लिए किया जा सकता है। व्होर्फ भाषाविज्ञान के अन्तर्निहित अर्थों को (Main Currents) के पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करना भी नहीं भूले। एक वैज्ञानिक सभा में कई रोचक तथ्यों के विषय में जो उन्हें अच्छे लगे थे, सूचना देते हुए उन्होंने 'A Brotherhood of Thought' नामक लघु लेख में लिखा है :

चीनी भाषा में 'शब्द' के लिए कोई शब्द नहीं है। इसकी निकटतम वस्तु 'tsz' तत्त्व है जिसका अनुवाद 'शब्द' किया जाता है, परन्तु इसका अर्थ अक्षर या 'आक्षरिक तत्त्व' अधिक उचित है। बहुत से ऐसे तत्त्व कभी स्वतन्त्र रूप में घटित नहीं होते, बल्कि कुछ संयोगों में ही घटित होते हैं जैसे *Pyr* शब्द *Pyrometer* में। शब्दभण्डार की इकाइयों के अर्थों में शब्द एक अथवा दो अक्षरों वाले होते हैं—इस तथ्य को परम्परागत चीनी-लेखन-पद्धति ने छिपा लिया है, क्योंकि इस पद्धति में प्रत्येक अक्षर को अलग-अलग लिखा जाता है। येल विश्वविद्यालय के डा० वाई० आर० चाओ ने R1 12 30/40 की लिंग्विस्टिक सोसाइटी ऑफ़

अमेरिका की एक मीटिंग में पढ़े गए लेख 'Word Conception in Chinese' (चीनी भाषा में शब्द सम्बन्धी धारणाएं) में इस तथ्य का संकेत दिया था। चीनी व्याकरण की प्रकृति को अब समझा जाना प्रारम्भ हुआ है। डा० चाओ तथा अन्य विद्वानों ने इस धारणा का पूरी तरह खण्डन कर दिया है कि चीनी एक एकाक्षरिक भाषा है। उसी मीटिंग में येल विश्वविद्यालय के ही डा० जी० ए० केनेडी ने 'चीनी भाषा में जटिल विशेषणात्मक अभिव्यक्तियों' का विश्लेषण करते हुए यह दिखाया कि चीनी भाषा में सम्बन्धवाचक उपवाक्य नहीं हैं, और यह भी निर्णय लिया कि इस प्रकार के सम्बन्धों की सर्कसंगति को भिन्न प्रकार की क्रम-व्याख्या नियन्त्रित करती है। यदि इस तर्कसंगति में प्रयुक्त तत्त्व *te* का अनुवाद *ish* किया जाये तो The house that Jack built चीनी भाषा में इस प्रकार अभिव्यक्त होगा : This is Jack–ish build-ish in-ish house अर्थात् Jack-ish build-ish in-ish lie-ish malt-ish इत्यादि।

पर्याप्त रूप में इस बात का अनुभव नहीं किया गया है कि विश्वव्यापी भ्रातृत्व एवम् सहयोग का आदर्श निष्फल हो जाता है, यदि इसमें दूसरे देशों में रहने वाले अपने बन्धुओं के साथ भावात्मक तथा बौद्धिक रूप से समाञ्जस्य करने की योग्यता निहित न हो। पश्चिम ने पूर्व का कुछ भावनात्मक ज्ञान तो सौन्दर्यपरक एवम् प्रेमपत्रों आदि की शैली के माध्यम से प्राप्त कर लिया है, परन्तु इस ज्ञान से बौद्धिक खाई भरी नहीं गई है, और हम उस तर्कसंगत चिन्तन सम्बन्धी ज्ञान के निकट तक भी नहीं पहुँचे हैं जो वैज्ञानिक विचारों के वास्तविक प्राच्य रूपों या प्रकृति के विश्लेषण में प्रतिबिम्बित होना है। इसके लिए देशीय भाषाओं के तर्कों के भाषायी अन्वेषण की आवश्यकता है, और यह अनुभूति भी आवश्यक है कि उनकी हमारे चिन्तन अभ्यासों के साथ समान रूप से वैज्ञानिक प्रामाणिकता है।

इस दीर्घकालीन रोग के कारण 44 वर्ष की आयु में ही 26 जुलाई 1941 को व्होर्फ का प्राणान्त हो गया। जितना कुछ वे जानते थे, उससे भी अधिक कार्य उन्होंने अपने जीवन में निष्पन्न किये, तथापि, जीवित रहकर वे जो कुछ कर सकते थे, यह सब कुछ उसका एक अंशमात्र है। उनकी मृत्यु का समाचार केवल स्थानीय समाचारपत्रों में सम्पादकीय निधन सूचनाओं में ही नहीं छपा, बल्कि न्यूयार्क टाइम्ज़ जैसे समाचारपत्रों ने भी इस ओर ध्यान दिया, तथा बाद में कई प्रमुख साहित्यिक पत्रिकाओं में भी यह समाचार छपा।

व्होर्फ के व्यक्तित्व तथा काम करने की आदतों के विषय में कुछ टिप्पणी किये बिना, मैं इस जीवनी-सम्बन्धी संस्मरण को समाप्त नहीं कर सकता। सबसे अधिक उल्लेखनीय बात यह है कि वे प्रत्येक कार्य में अत्यन्त गहन एवम् स्थिरतापूर्वक ध्यान केन्द्रित करने में समर्थ थे। किसी भी विषय के साथ वे उपेक्षा या असावधानी का व्यवहार नहीं करते थे। बहुत ही सुन्दर, साफ, तथा स्पष्ट लिखाई में पैन्सिल के

साथ लिखी गई पाण्डुलिपियाँ उनकी अतिसावधानी के दृष्टान्त हैं। उनकी टाइप की हुई लिपियों में गलती का मिलना बहुत ही दुर्लभ है (वे लगभग सदा विद्वतापूर्ण पाण्डुलिपियों तथा चिट्ठी-पत्री की टाइप स्वयम् ही किया करते थे)। वे अभी और अधिक काम करना चाहते थे। उनके प्रकाशित लेख उनकी हस्तलिखित सामग्री के एक छोटे से अंशमात्र का ही प्रतिनिधित्व कर पाते हैं। सचमुच उनकी पाण्डुलिपियाँ बृहदाकार हैं। आवश्यकता पड़ने पर वे बिना किसी झिझक के विशाल भाषायी सामग्री के पृष्ठों के पृष्ठ सामान्य लिपि अथवा मुद्रक लिपि में नकल करने का कष्ट भी कर सकते थे। लिखने में वे स्वयं को कलात्मक, विश्वासोत्पादक तथा सहज ढंग से व्यक्त कर सकते थे। कभी-कभी तो उनका पहला प्रारूप ही अल्पतम संशोधनों के साथ अन्तिम होता था। फिर भी, लगभग सदा ही वे टाइप से पहले पेन्सिल से प्रारम्भिक प्रारूप बनाते थे, यहाँ तक कि चिट्ठी-पत्री के लिये भी वे ऐसा ही करते थे। विद्वता के प्रति इस अथक उपासना से ही व्होर्फ की शक्ति एवं स्वास्थ्य की हानि हुई, यद्यपि प्रत्यक्ष रूप से वे कभी थके हुए प्रतीत नहीं होते थे। स्वभाववश वे रात को देर तक काम करते तथा नींद की छोटी-सी झपकी लेकर अथवा अपने यान्त्रिक बड़े पिआनो पर शास्त्रीय संगीत की कुछ धुनें निकालने के बाद आराम किया करते थे। कार्यालय में अपने कार्य के घण्टों के प्रति वे कुछ अनियमित थे। बहुत से अवसरों पर तो आने तथा जाने दोनों में ही देर किया करते थे। परन्तु जितना समय भी वे वहाँ रहते, बहुत काम करते। व्यायाम के लिए उन्हें चलना अच्छा लगता था। अपने आफिस से 'वैदर्स फील्ड' में अपने घर तक वे चार-पाँच मील की पैदल यात्रा करते तथा मार्ग में सम्भवतः वाटकिन्सन पुस्तकालय में रुका करते थे।

सामाजिक जीवन का महत्त्व उनके लिए बहुत कम था, सिवाय उन अवसरों के, जब कि इसमें उनके वे भाषाई सहकर्मी सम्मिलित होते जिनके लिए उनकी उपस्थिति सदा ही आनन्ददायक होती थी। वे अपने चारों ओर प्रसन्नतापूर्ण जिज्ञासा का वातावरण बनाये रखते थे। उनके पास बताने के लिए सदैव रोचक एवं नई बातें हुआ करती थीं।

जैसा कि मैंने किसी और स्थान पर भी चर्चा की है—व्होर्फ शान्त तथा चिन्तनशील अध्यापक थे। कुछ याद करने के लिए अपना दिमाग़ टटोलते हुए अथवा किसी समस्या के कारण सोचते हुए वे बहुत अधिक समय तक चुप नहीं रहते थे। तथापि जब कभी वे अपनी किसी नई जानकारी के विषय में, जो उन्होंने प्राप्त की होती, मुझे बताने के लिए तत्पर होते तो उनकी टिप्पणियों की सुगमता तथा स्पष्टता लगभग विस्मयकारी हुआ करती थी। उनके व्यवहार का ढंग न तो एक विद्वान जैसा था और न ही एक व्यापारी जैसा—वे केवल शान्त, अविचल, तथा सहज-प्रेरणा-स्वरूप प्रतीत होते थे। स्वार्थपरता उनके लिए बिल्कुल ही अजनबी थी, और यह उनके प्रति श्रद्धांजलि का विषय है कि वे अपने महत्त्वपूर्ण विचारों को दूसरे विद्वानों के साथ बाँटने में अत्यधिक उदार थे।

II

इस ग्रन्थ का शीर्षक *Language, Thought and Reality* उस पुस्तक का शीर्षक है जिसे व्होर्फ लिखना चाहते थे। मृत्यु के समय छोड़े गये उनके कागज़ों में से इसकी एक संक्षिप्त सी रूपरेखा प्राप्त हुई है। यह पुस्तक एडवर्ड सपीर तथा एण्टोइने फेब्रे डी ओलिवेट की स्मृति को समर्पित की जानी थी, तथा इसमें वास्तविकता के वाह्य जगत के विषय में हमारे चिन्तन के स्पष्टीकरण के लिए भाषा-विज्ञान के आशयों को प्रस्तुत करने की योजना थी। टिप्पणियों से इस बात का संकेत मिलता है कि कॉलेज की पाठ्यपुस्तक के रूप में तैयार की जाने वाली इस पुस्तक के प्रत्येक अध्याय के अन्त में उपयुक्त प्रश्नोत्तरी के साथ इसके परिशिष्ट में लैटिन, ग्रीक, हिब्रू, कोटा, अज़तेक, होपी, शॉनी, रूसी, ताओस, चीनी तथा जापानी की भाषागत रूपरेखाएं भी सम्मिलित की जानी थीं। यह पुस्तक भले ही कभी लिखी नहीं गई, परन्तु मेरा विश्वास है कि प्रस्तुत संस्करण के लिए इसका शीर्षक उपयुक्त है, जिसमें व्होर्फ के प्रायः सभी वे लेख सम्मिलित हैं जो उनके भाषायी सापेक्षता-सिद्धान्त के अनुरूप हैं। उनके इस सिद्धान्त के अनुसार मनुष्य की भाषायी संरचना, कम से कम एक परिकल्पना के रूप में, उस निधि को प्रमाणित करती है जिसके द्वारा वह वास्तविकता को समझता है तथा उसके अनुसार व्यवहार करता है। इस संस्करण में व्होर्फ के वे लेख भी सम्मिलित हैं जिन्हें मध्य अमरीकी भाषाविज्ञान तथा सामान्य भाषाविज्ञान में सर्वाधिक रोचक तथा उपयोगी माना जाता है।

व्होर्फ की समस्त लेख-श्रेणी का अध्ययन उस आधारभूत विषय-वस्तु को प्रकाशित करता है, जिसकी जड़ें भाषायी कार्य के प्रथम चरणों के साथ-साथ उनके प्रारम्भिक चिन्तन में निहित थीं। हम पहले ही देख चुके हैं कि कैसे व्होर्फ ने बहुत पहले, 1925 में ही फ्रांसीसी रहस्यवादी तथा हिब्रू विद्वान फेब्रे डी० ओलिवेट के उन सिद्धान्तों को सत्य प्रमाणित करने का प्रयत्न किया, जिन सिद्धान्तों के अनुसार हिब्रू के कुछ वर्णों तथा वर्ण-संयोगों के रहस्यपूर्ण एवं तात्विक मूलभाव थे। इनको सत्य प्रमाणित करने के लिए व्होर्फ ने स्वयं को, प्रतीयमान रूप से असम्बन्धित भावों की सूक्ष्म एवम् गहरी समानताओं के साथ खेलता हुआ पाया। शुष्क, भंगुर एवं बिखरे हुए शब्दों की मूलभूत धारणाओं को छिपाने वाले बाह्य आवरण के पीछे का रहस्य जानने का यह उनका पहला कदम था। एक छोटे से लेख में, जिसे मैंने 'On the Connection of Ideas' (भावों के सम्बन्धों के विषय में) शीर्षक दिया है, हम व्होर्फ को मौलिक मानसिक व्यापारों के विषय में चिन्तामग्न तथा भाषा द्वारा प्रतिनिधित, जकड़े हुए जाने के कारण व्याकुल होते हुए पाते हैं। यह लेख जो यहाँ पहली बार छपा है, 1927 में मनोवैज्ञानिक होरेस बी० इंग्लिश को एक पत्र के रूप में लिखा गया था। डा० इंग्लिश ने तभी मनोवैज्ञानिक शब्दों का एक शब्दकोश लिखा था। इस लेख में व्होर्फ डा० इंग्लिश से भावों के नए प्रकार के साहचर्य के लिए एक नया शब्द बताने का अनुरोध कर रहे थे। व्होर्फ किसी भी

भाषा में विद्यमान धारणाओं या शब्दों से अधिक सामान्य या अमूर्त प्रकृति की धारणाओं या शब्दों की खोज में संलग्न थे। उस समय के मनोवैज्ञानिक सम्प्रदायों में से कोई भी उनको वास्तविक सहायता देने में समर्थ नहीं था। इस विषय में व्होर्फ ने उस छोटे से अप्रकाशित नोट में शिकायत भी की थी, जिसको पूर्णतया ऐच्छिक शीर्षक 'On Psychology' (मनोविज्ञान के बारे में) देकर यहाँ छापा गया है। तो भी व्होर्फ का अधिकतर कार्य मनोविज्ञान के अत्यधिक निकट है। मूलभावों के लिए खोज ने व्होर्फ को बहुत से उपभागों पर चलने के लिए प्रेरित किया। यहाँ तक कि अज़्तेक तथा माया भाषाविज्ञान सम्बन्धी कार्यों में भी व्होर्फ ने कई उपमार्गों को अपनाया। माया चित्रलेखों पर लिखे गए दो लेख जो इस संस्करण में सम्मिलित हैं, इस तथ्य की केवल एक झलक प्रस्तुत करते हैं। परन्तु यह बात और अधिक स्पष्ट रूप से प्रकट हो जाती—यदि उनके अप्रकाशित लेख 'Stem Series in Maya and certain Maya Hieroglyphs' (माया तथा कुछ माया-चित्रलेखों में प्रतिपादिक श्रेणी) को, जिसके विषय में पहले ही संकेत दिया जा चुका है, यहाँ छापना वाञ्छनीय समझा जाता। दुर्भाग्यवश, हमें यह सन्देह होता है कि प्रायः व्होर्फ उन भावों का विन्यास करने में अपने को बहुत अधिक स्वच्छन्दता दे देते थे, जो भाव दूसरों को पूर्णतया असम्बद्ध प्रतीत होते हैं। उदाहरणतः उनके 'प्रतिपदिक श्रेणी' (Stem series) के लेख में एक स्थान पर वे माया धातुओं की श्रेणियों को उदाहरण के रूप में प्रस्तुत करते हैं, जिनके विषय में उनका विश्वास था कि उनमें परिक्षेपण या छितराव के सभी भाव थे : be dispersed (बिखरा हुआ होना), disappear (लुप्त हो जाना), spread (फैल जाना), radiate (प्रकाशित करना) shine (चमकना)। व्होर्फ ने यह पाण्डुलिपि समीक्षा के लिए सपीर को दी। सपीर ने उस पाण्डुलिपि के साथ यह टिप्पणी नत्थी कर दी : "मुझे अफसोस है, परन्तु मैं विश्वास-पूर्वक नहीं कह सकता कि मैं 'स वर्ग' की संगतता उसी प्रकार स्पष्ट रूप से अनुभव करता हूँ जैसे आप करते हैं। उदाहरण के लिए sand, white, weave cloth, much, dislocate आदि आधारभूत परिक्षेपण के आधार पर पूरी तरह आत्मपरक रचना प्रतीत होती है।"[6] व्होर्फ अर्थगत निष्कर्षों को वस्तुनिष्ठ विषय बनाने की आवश्यकता के प्रति सजग हो गए। उनके प्रकाशित कागज़ों में प्रयोग के लिए एक संक्षिप्त सा प्रस्ताव मिलता है, जिसमें किसी भी व्यक्ति को अज़्तेक शब्दों की एक ऐसी श्रेणी दी जाएगी, जिसमें सबके अंग्रेजी में अर्थ दिए होंगे तथा सभी वर्ण *ZE* से युक्त होंगे। विषयी को इन शब्दों के लिए किसी प्रकार के समूहन पर पहुँचने के लिए कहा जाना था, उसे यह भी बताया जाना था कि वह

6. **स-वर्ग की सामग्री पर निबन्ध** The Phonetic Value of certain Characters in Maya Writing (1933), p. 11 **में छपने से पूर्व पर्याप्त मात्रा में पुनः काम किया गया था।**

निर्णय कर सकता है कि (1) *ZE*-का सर्वत्र एक ही अर्थ है, अथवा (2) कि यहाँ दो, तीन या अधिक *ZE*-हैं जिनके स्पष्ट तथा बिल्कुल असम्बद्ध अर्थ हैं अथवा (3) *ZE*-का अर्थों से कोई सम्बन्ध ही नहीं है। स्पष्ट ही व्होर्फ ने ऐसा प्रयोग कभी नहीं किया।

यह भी याद रखना होगा कि व्होर्फ ने बहुत पहले इस तथ्य का अवलोकन किया अथवा वे विश्वास करते थे कि उन्होंने अवलोकन कर लिया है कि हिब्रू, अज़्टेक, तथा माया भाषा, अंग्रेजी तथा उन अन्य भाषाओं से भिन्न योजना पर रचित प्रतीत होती है जिन्हें उन्होंने बाद में SAE (Standard Average European) भाषाओं के नाम से अभिहित किया। उन्होंने इन भाषाओं को Oligosynthetic भाषाएँ कहा,—अर्थात् ऐसी भाषाएं जिनकी शब्दावली तत्त्वों की एक बहुत छोटी संख्या से निर्मित है। सन् 1924 में पढ़े गए अज़्टेक भाषाविज्ञान से सम्बन्धित एक लेख में उन्होंने कहा कि "पहले, प्रत्येक तत्त्व उच्चारण-व्यवहार का बहुत साधारण सा अंश है, और दूसरे, एक व्यापक भाव या सम्बन्धित भावों का समूह है जो इस व्यवहार के अंश के अनुरूप है।" उनका विचार था कि वे अज़्टेक भाषा के शब्द-भण्डार का विश्लेषण ऐसी कुछ धातुओं से करने में सफल हो गए हैं जिनकी संख्या 35 से अधिक नहीं है। वे आगे यह भी कहते हैं कि—"अब इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि यह Oligosynthetic तथ्य भाषा-मनोविज्ञान के बहुत कम खोजे गए क्षेत्र में कुछ नई सीमाओं का उद्घाटन करता है। इसके अन्तर्गत हम किसी भाषा के भावोद्भावना सम्बन्धी समस्त क्षेत्र को 35 प्राथमिक धारणाओं में इस प्रकार विभाजित किया देखते हैं कि यह भावों के वास्तविक क्षेत्र की एक योजना अथवा मानचित्र हमारे समक्ष पहली बार प्रस्तुत करता है। इससे पहले जब भावों का वितरण कोटियों में किया जाता रहा है, तो वे कोटियाँ किसी दार्शनिक के अन्तर्दर्शन के परिणामस्वरूप रही होंगी; परन्तु, एक भाषा का यह भाव-मानचित्र ऐसा नहीं है—हम इसकी उपलब्धि उसी तरह करते हैं जैसे हम प्रकृति के तथ्यों की, तथा इसकी अभी तक अस्पष्ट दिखने वाली समाकृति हमें चुनौती देती है कि हम इसका अनुसन्धान प्रयोगात्मक एवम् आगमनात्मक प्रणालियों से करें।" इन कुछ-कुछ साहसिक भावों में हम पहले ध्वन्यात्मक प्रतीकवाद की धारणा के प्रति एक विशेष अनुरोध देख सकते हैं। वह धारणा यह है कि ध्वनियों तथा अर्थों के बीच अन्तर्निहित सम्बन्ध (किसी भाषा में स्थापित किये गए यादृच्छिक सम्बन्धों के अतिरिक्त) हो सकते हैं; तथा दूसरे, हम देख सकते हैं भाषायी सापेक्षता के सिद्धान्त का एक धुंधला सा संकेत। ध्वन्यात्मक प्रतीकवाद की समस्या दीर्घकाल से भाषा-वैज्ञानिकों तथा मनोवैज्ञानिकों को चुनौती देती रही है। एडवर्ड सपीर ने, जो इस धारणा के प्रति सहानुभूति रखते थे, एक प्रयोग किया, जिसने एक विशिष्ट दिशा का संकेत दिया", और यह समस्या समकालीन मनोवैज्ञानिकों के समक्ष आज भी बनी

हैं कि विचारों की विषयवस्तु, 'चिन्तन की प्रक्रिया' को प्रभावित करती है, या भिन्न विषयवस्तु भिन्न प्रकार की प्रक्रियाओं को जन्म देती है, अतः विषयवस्तु पर ध्यान दिए बिना प्रक्रिया सम्बन्धी सामान्यीकरण असम्भव हो जाता है। उनका यह विश्वास भी था कि विभिन्न भाषायी संरचनाओं की तुलना से विचारों की विषय-वस्तुपरक भिन्नताओं, तथा चिन्तन-प्रक्रिया एवम् सामान्य व्यवहार पर उनके अनुरूपी प्रभावों का चमत्कारपूर्ण रहस्योद्घाटन होगा। भाषा की संरचनाओं में प्रकट तथा सूक्ष्म दोनों प्रकार के भेद खोज निकालने में वे अत्यन्त विचक्षण थे, तथा वे भेद कम से कम भाषायी स्तर पर पूर्णतया प्रदर्शनीय थे। वे यहीं पर नहीं रुके बल्कि किसी प्रकार भिन्न भाषा-तथ्यों से सम्बन्धित व्यवहारगत विभिन्नताओं के प्रमाण खोज निकालने का प्रयत्न करते रहे। यद्यपि यह प्रयत्न, सम्भव है, पूर्ण सफल न रहा हो परन्तु फिर भी सपीर अभिनन्दन-ग्रन्थ के लिए सन् 1939 के ग्रीष्म में लिखे गए लेख 'The Relation of Habitual Thought and Behaviour to Language' (भाषा के साथ अभ्यासगत विचार तथा व्यवहार का सम्बन्ध) में इसे मूर्त रूप दिया गया है। यह उनका अन्तिम लेख था जो उन्होंने मुख्यतः अपने सहयोगियों को सम्बोधित करके लिखा था। भाषायी सापेक्षता का सिद्धान्त इस संग्रह के अन्तिम चार लेखों में अत्यन्त रोचक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। ये लेख मुख्य रूप से साधारण पाठकों के लिए लिखे गए हैं।

व्होर्फ के भाषायी सापेक्षता के सिद्धान्त, या अधिक निश्चित रूप से, व्होर्फ-सपीर परिकल्पना ने, (क्योंकि इस विचार को विकसित करने में सपीर का भी योग था) यह कहने की आवश्यकता नहीं है, काफी ध्यान आकर्षित किया है। 'टेकनॉलोजी रिव्यू' में लिखे गए किसी-न-किसी लेख के पुनर्मुद्रणों (जिनका प्रारम्भ 1941 में ही Hayakawa की *Language in Action* नामक पुस्तक, जो ग्रन्थ क्लब द्वारा चुनी गई थी, में हो गया था) के माध्यम से इन लेखों का विषय साधारण जनता, भाषाविज्ञानियों, मानवशास्त्रियों तथा मनोवैज्ञानिकों की जानकारी में आया। भाषायी सापेक्षता का सिद्धान्त न जाने क्यों उन लोगों को भी रोचक लगता है जो विशेषज्ञ नहीं हैं। सम्भवतः यह उस तथ्य की ओर संकेत है कि हम अनजाने में ही, भाषा के गठन द्वारा वास्तविकता के एक विशेष रूप को देखते रहने की चाल में फँसे रहते हैं, और इस सिद्धान्त के द्वारा चाल का पता लगने पर हम संसार को एक नई अन्तर्दृष्टि से देख सकते हैं। तथापि, यह निश्चित है कि जातियों अथवा संस्कृतियों के बीच सञ्चार-व्यवस्था की विफलता के लिए भाषायी सापेक्षता को बुद्धिसंगत बनाने के किसी भी सस्ते अनरोध को क्षमा करना व्होर्फ की इच्छाओं से बहुत दूर की बात है। इसके

किसी प्रकार का साहचर्य दिखाने के लिए प्रमाण के सामान्य नियमों को लागू करना चाहिए। अन्यथा, भाषायी सापेक्षता-सिद्धान्त उलझन में डालने वाला बन जाता है; या कम से कम पुनरुक्ति-परक तो इस दृष्टि से हो ही जाता है कि 'विश्व के स्वरूप' में भिन्नताओं का एक मात्र प्रमाण अन्त में भाषायी भिन्नता ही निकलता है। सामाजिक दार्शनिक Feuer का विश्वास है कि कारण-कार्य-न्याय के आधार पर भिन्न भाषा बोलने वाली संस्कृतियों से यह अपेक्षित नहीं है कि स्पेस, काल, कारणता तथा भौतिक संसार के अन्य मूलभूत तत्त्वों का प्रेक्षण करने के उनके ढंग भी भिन्न हों, क्योंकि अस्तित्व के लिए इन तत्त्वों का सही प्रेक्षण अत्यन्त आवश्यक है।

क्योंकि इन पर, तथा अन्य तर्कमूलक प्रणाली-तन्त्र एवं मनोवैज्ञानिक कठिनाइयों पर, भाषा-वैज्ञानिकों, मानव-शास्त्रियों, मनोवैज्ञानिकों एवम् दार्शनिकों के एक विशेष सम्मेलन में पूर्णरूप से वाद-विवाद हो चुका है, (Hoijer 1954)। अत: यहाँ उनका विस्तृत वर्णन करना निरर्थक है। यहाँ पर सम्भवत: यह अपेक्षित है कि उस सम्मेलन में व्याप्त तत्वत: नकारात्मक, निराशावादी मनोवृत्ति का प्रतिकार इस तथ्य की ओर संकेत करके किया जाए कि व्होर्फ-सपीर परिकल्पना पर अब तक सही ढंग का शोधकार्य अत्यन्त अल्पमात्रा में किया गया है। Brown तथा Lenneberg (1954) ने एक प्रयोग किया था जिसने प्रदर्शित किया कि रंगों को पहचनाने तथा उन्हें याद रखने की योग्यता में भेदों का सम्बन्ध विशिष्ट रंगों के नामों की प्राप्यता से था। इस प्रयोग के अतिरिक्त ऐसे शोध-कार्य वास्तव में नहीं हुए, जिन्होंने भाषायी संरचनाओं तथा अभाषायी व्यवहार के बीच सह-सम्बन्ध का पर्याप्त परीक्षण किया हो। इस प्रकार के शोधकार्य की ओर संकेत करने वाले अनेक सुझाव Osgood एवम् Sebeok (1954) द्वारा सम्पादित प्रबन्ध में दिए गए हैं।

एक अन्य विचार भी है, जिस पर व्होर्फ-सपीर परिकल्पना से सम्बन्धित विभिन्न विचार-विमर्श करते समय पर्याप्त बल नहीं दिया गया, जैसे कि भाषायी सापेक्षता का सिद्धान्त इतना पुनरुक्तिपरक नहीं है जितना कि इसे सिद्ध करने की चेष्टा की गई है। यह कहा जा चुका है कि हम पुनरुक्ति का उल्लेख केवल तब करते हैं जब हम भाषाओं की भिन्नताओं से 'विश्व-स्वरूप' सम्बन्धी व्यवहार में भिन्नताएँ दिखाने का अनुरोध करें। यह भी कहा जा चुका है कि उन अभाषायी व्यवहारों का पता लगाना भी आवश्यक है जिनका सह-सम्बन्ध भाषायी भेदों से है। यह निस्सन्देह वाञ्छनीय होगा, परन्तु अभाषायी व्यवहारात्मक सहसम्बन्धियों से निरपेक्ष, केवल भाषायी भिन्नताओं में रुचि रखने के लिए अभी कुछ कहना शेष है। यदि हम यह मानते हैं कि अप्रकट अन्तर्निहित व्यवहार का अस्तित्व है, जिसमें मानसिक अवस्थाएँ, वर्ग, मनोवृत्तियाँ, 'मध्यस्थीय प्रक्रियाएँ' आदि हैं, तो हमें यह मानना पड़ेगा कि ऐसा व्यवहार जनता के प्रेक्षण की पहुँच से परे है, केवल शाब्दिक सूचना के माध्यम को छोड़कर। इनके पीछे इस प्रकार की मानसिक

सूचनाएँ प्राप्त करनी केवल आरम्भ की हैं, परन्तु जब हमें यह सूचना प्राप्त हो भी जाएगी तो इसका अधिकांश भाग निश्चित रूप से उन वाचिक व्यवहार एवम् पर्यावरणगत प्रेरणा-ग्रन्थियों के क्षेत्र-विषयक होगा जो इस वाचिक व्यवहार को उत्पन्न करते हैं।

भाषायी सापेक्षता-सिद्धान्त चाहे प्रामाणिक है अथवा नहीं, परन्तु इसके विषय में जिस सावधानी का उल्लेख करने की आवश्यकता है, वह यह है कि इसने जिस दिलचस्पी को उभारा है और भविष्य में भी उभारता रहेगा, उसे भाषा-सार्वभौमिकताओं के महत्त्व से दूसरी ओर ध्यान आकृष्ट करने की छूट नहीं मिलनी चाहिए। भाषा-सार्वभौमिकताएँ, अर्थात् सभी भाषाओं में मिलने वाले तथ्य, मनोवैज्ञानिक दृष्टि से इतने ही अधिक रोचक हो सकते हैं जितनी कि भाषायी भिन्नताएँ। क्या यह सच है कि सभी भाषाओं के वाक्यों में उद्देश्य-विधेयात्मक रचनाएँ मिलती हैं? क्या सभी भाषाओं में किसी-न-किसी प्रकार का संज्ञा-क्रिया विरोध मिलता है? क्रिया-काल व्यवस्था के कौन से वैशिष्टय हैं जो सभी भाषाओं में सामान्य रूप से मिलते हैं? इन प्रश्नों के उत्तर संज्ञानात्मक कार्यों के सामान्यीकृत मनोविज्ञान के विकास में सहायक हो सकते हैं।

क्योंकि व्होर्फ मुख्यतः अपने भाषायी सापेक्षता सम्बन्धी विचारों के कारण जाने जाते हैं, इसलिए इस ग्रन्थ में उनके वही लेख प्रस्तुत किए गए हैं जिनका इस विषय से संगत सम्बन्ध है। तथापि, कम से कम दो अन्य क्षेत्रों में उनके अध्ययन मान्यता प्राप्ति के अधिकारी हैं।

व्होर्फ का दुर्बोध अज़्तेक लेखों के अनुवाद करने का प्रारम्भिक कार्य निस्सन्देह शानदार था तथा मध्य अमरीकी शोध के एक उपेक्षित पक्ष के प्रति विशिष्ट योगदान था। अज़्तेक के अनुवाद करने में उनकी अभिरुचि का स्थान शीघ्र ही माया चित्रात्मक लेखों के अन-अंकीय अंशों को पढ़ने की विधियों की खोज ने ग्रहण कर लिया। कम से कम इस क्षेत्र में व्होर्फ के कार्य की प्रामाणिकता अत्यधिक विवादास्पद है। इस तथ्य से कोई भी इन्कार नहीं कर सकता कि इस क्षेत्र में उनके प्रेक्षण अत्यधिक सूक्ष्म थे, तथा उनका 'जाँच कार्य' अन्वेषी एवम् निपुण है। कोई अविशेषज्ञ यह नहीं कह सकता कि व्होर्फ को माया चित्रात्मक लेखों के अर्थ-निर्णय में वास्तव में कितनी सफलता प्राप्त हुई। उनके द्वारा प्रस्तुत की गई अनुवाद-प्रक्रिया में बहुत अधिक सत्याभास है जैसा कि इस ग्रन्थ में पुनर्मुद्रित लेख 'Decipherment of the Linguistic Portions of Maya Hieroglyphs (माया चित्रलेखों के भाषायी अंशों का अर्थ-निर्धारण) से विदित है। व्होर्फ एक अत्यन्त वस्तुनिष्ट एवम् बुद्धिमान विद्वान थे, अतः उन्होंने कोई ऐसी तदर्थ संरचना प्रस्तुत नहीं कि जिसका परीक्षण न किया जा सके या जिसका सामान्यीकरण न हो सके। तथापि व्होर्फ के जीवनकाल में ही कई माया विद्वानों, जिनमें Long (1935-36), Andrews (1938) तथा सबसे अधिक कटुतापूर्ण J. Eric, S. Thompson (1950) शामिल हैं, द्वारा आपत्ति की गई। फिर भी, Long तथा Andrews द्वारा की गई आलोचनाएँ मुख्यतः गौण विषयों से सम्बन्धित थीं। उनमें से कुछ को तो व्होर्फ ने मान भी लिया था। ऐसा प्रतीत होता है

है कि समकालीन भाषाविज्ञानियों ने व्होर्फ की गूढ़ प्ररूप सम्बन्धी धारणा के पूरे आशय को समझना अभी आरम्भ ही किया है।

व्होर्फ जब केवल ध्वन्यात्मक तथा ध्वनिमिक समस्याओं पर भी कार्य करते थे तो उनका कार्य अत्यधिक मौलिक होता था। स्पष्ट ही ये Allophone शब्द को प्रस्तावित करने वाले पहले व्यक्ति थे जो आजकल भाषाविज्ञानियों द्वारा साधारण रूप में प्रयुक्त किया जाता है। अंग्रेज़ी एकाक्षरों की उनकी रूपरेखा, जोकि 'Linguistics as an Exact Science' नामक उनके लेख में प्रस्तुत की गई है, उस समय अंग्रेज़ी ध्वनि-समूहों के बारे में तथ्यों का मौलिक समन्वय था। उन्होंने अंग्रेज़ी की अपनी बोस्टन बोली की स्वनिमिकी पर एक रोचक लेख लिखा, जो उनकी मृत्यु के उपरान्त सन् 1943 में प्रकाशित हुआ।

व्होर्फ भाषायी संरचनाओं के रोचक एवम् सूक्ष्म तत्त्वों के हर प्रकार से अत्यधिक विचक्षण प्रेक्षक थे। उदाहरणार्थ, शॉनी एक ऐसी भाषा थी जिसका उन्होंने पहले अध्ययन नहीं किया था, उसके विषय में सूचनाओं का एक बृहत् संग्रह, उनके हाथों में पड़कर आकृति-क्षेत्र सम्बन्धों पर कुछ नए दृष्टिकोणों को सुझाने में समर्थ हुआ, जिसके उदाहरण शॉनी शब्द-रचना में दिए गए हैं। यहाँ पाठक को इसी ग्रन्थ में प्रकाशित 'Gestalt Technique of Stem Composition in Shawnee' नामक लेख पढ़ने का सुझाव दिया जाता है। भाषायी संरचना में अपनी अन्तर्दृष्टियों के सभी आधारों को मानों एक ही पुलन्दे में लपेटने के लिए, व्होर्फ को एक बार एक ऐसी रूपरेखा बनाने का अवसर मिला जिसके विषय में उनका विचार था कि मानव-शास्त्र के क्षेत्र-कार्यकर्ता उसका प्रयोग नई भाषाओं के विषय में सूचना एकत्रित करने के लिए कर सकते हैं। इस रूपरेखा का Murdock के द्वारा 'Outlines of Cultural Materials' (1938) नाम के एक प्रकाशन में निर्देश किया गया था, परन्तु यह पहले कभी प्रकाशित नहीं हुई थी। इस विश्वास पर कि यह अब भी उपयोगी है, यद्यपि इसके प्रकाशन में बहुत विलम्ब हो गया है, फिर भी मैंने इसे प्रस्तुत संग्रह में व्होर्फ द्वारा दिए गए शीर्षक 'Language : Plan and Conception of Arrangement' के अन्तर्गत सम्मिलित कर लिया है। निस्सन्देह यह लेख अपने रेखात्मक स्वरूप तथा संक्षिप्त शैली द्वारा अस्पष्ट रूप से प्रायः संकेतित अर्थों को समझने के लिए पाठक से पर्याप्त मात्रा में भाषायी सूक्ष्मताओं के ज्ञान की अपेक्षा करता है। परन्तु कम से कम इस प्रकार पाठक के अन्दर कुछ उस उत्पादक कल्पना को प्रेरित करने के लिए उपयोगी हो सकता है जो प्रत्येक विषय में व्होर्फ का वैशिष्ट्य था।

विशेष नोट

पाठक को सचेत किया जाता है कि इस ग्रन्थ में होपी के लिए प्रयुक्त ध्वन्यात्मक लेखन-प्रणाली प्रत्येक लेख में प्रयुक्त विशेष पद्धति के अनुसार बदलती रहती है। इस लेखन-प्रणाली को नियमित करने के प्रयत्न के लिए बहुत अधिक भाषायी खोज की आवश्यकता पड़ती जिसे सम्पन्न करने के लिए सम्पादक तैयार नहीं था।

की हस्तलिपि प्रति Prof. Normon Mcquown से प्राप्त हुई। Prof. Herbert Hackett ने ग्रन्थ-सूची सम्बन्धी कई बातों के बारे में बताया, जो अन्यथा मुझ से छूट सकती थीं।

विशेषतः मैं व्होर्फ परिवार के कई सदस्यों—व्होर्फ की विधवा पत्नी Mrs. Celia Peckham Whorf तथा उनके भाई John Whorf, जो Province town, Massachusetts में रहते हैं, के प्रति बहुत आभारी हूँ, जिन्होंने मुझे साक्षात्कारों की अनुमति प्रदान करने की कृपा की। व्होर्फ के पुत्र Robert Peckham Whorf के प्रति मैं विशेष रूप से कृतज्ञ हूँ, जिन्होंने मुझे व्होर्फ के लेखों तथा पत्रों की जाँच करने के लिए अपने घर में कई दिन ठहरने की अनुमति दी, तथा कई पाण्डुलिपियाँ ले जाने की अनुमति दी, जिनमें से कुछ इस ग्रन्थ में पहली बार छपी हैं।

आरलिंग्टन मैसाच्यूसेट्स, जॉन बी० कैरोल
जून, 1955

शब्द के अभाव में जिसे मैं भावों का 'सम्बन्ध' कहना चाहूँगा, वह भावों के Association से बिल्कुल अलग चीज़ है। भावों को जोड़ने के प्रयोग करते समय यह आवश्यक है कि Association का निराकरण किया जाए, क्योंकि इसमें एक ऐसा सांयोगिक वैशिष्ट्य है जो 'सम्बन्धों' में नहीं मिलता। व्यक्ति को तुरन्त उस पहले भाव पर नहीं पहुँच जाना चाहिए जो उसके मन में ऐसे आता है जैसे एक 'स्वतन्त्र साहचर्य' के प्रयोग में आता है। अत: प्रयोग को एक नियन्त्रित साहचर्य के रूप में मान लिया जा सकता है, तथापि यह अपने क्षेत्र में बिल्कुल 'स्वतंत्र' हो सकता है, क्योंकि कोई भी सम्बन्ध सम्भव हो सकता है।

'सम्बन्ध' भाषायी दृष्टिकोण से महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि यह भावों के विनिमय के साथ सम्बद्ध है। 'सम्बन्ध' की कसौटियों में से एक आवश्यक कसौटी यह है कि दूसरे लोग उसे समझ सकें। अत: प्रयोग-व्यक्ति की वैयक्तिकता का प्रवेश इसमें उस सीमा तक नहीं हो सकता, जिस सीमा तक कि 'स्वतन्त्र साहचर्य' में हो सकता है, जबकि लोगों में सामान्य रूप से उपलब्ध होने वाली धारणाओं के वर्ग द्वारा इसमें अपेक्षाकृत अधिक भाग लिया जाता है। इस प्रकार की धारणाओं के एक ऐसे सामान्य वर्ग के अस्तित्व का मूल्य अभी तक भली-भाँति आँका गया नहीं जान पड़ता, जिसकी सम्भवत: अपनी निजी व्यवस्था है, यद्यपि उसका अब तक अध्ययन नहीं हुआ है। तो भी मुझे यह भाषा भावों की विनिमेयता का अपरिहार्य सहगामी प्रतीत होती है। यह इस विनिमेयता के सिद्धान्त को धारण करती है तथा एक अर्थ में 'सार्वभौमिक' भाषा है, जिसे विभिन्न विशिष्ट भाषाएँ समादिष्टकर लेती हैं।

'सम्बन्ध' के एक दृष्टान्त के रूप में down (नीचे) के भाव पर पहले विचार कीजिए और तब इन शब्दों के भावों पर भी विचार कीजिए— set (नीचे रखना, बैठाना), sink (डूबना), drag (घसीटना), drop (छोड़ देना), fall (गिरना), hollow (धँसा हुआ गड्ढा इत्यादि), depress (धसकाना), lie (लेटना)। मैं इन्हें 'क' वर्ग से अभिहित करूँगा। यह स्पष्ट है कि down तथा 'क' वर्ग के प्रत्येक भाव का परस्पर 'सम्बन्ध' है। अब 'ग' वर्ग पर विचार कीजिए जिसमें upright (सीधा), heave (साँस भरना), hoist (ऊपर उठाना), tall (लम्बा), air (वायु) uphold (उठाना या धारण करना), swell (उभार) हैं। यहाँ पर इन शब्दों के भाव तथा up (ऊपर) के भाव में सम्बन्ध है। एक सम्बन्ध-प्रयोग में किसी प्रयोग-व्यक्ति को जब down भाव की उपलब्धि होती है तो वह उसका सम्बन्ध 'क' वर्ग के किसी भी भाव से या इन्हीं जैसे भावों से जोड़ सकता है, परन्तु वह इसका सम्बन्ध 'ग' वर्ग के किसी भाव अथवा उससे मिलते-जुलते किसी भाव से नहीं जोड़ेगा। परन्तु प्रश्न यदि केवल Association का होता तो वह down का 'ग' वर्ग के किसी भाव से साहचर्य स्थापित कर सकता था। उदाहरणार्थ, हो सकता है कि कभी उसे ऐसा कटु अनुभव हो चुका हो कि जब वह भारी ज्वार के समय नाव में बैठा हुआ था और यह अनुभव कर रहा था कि वह निरन्तर नीचे

जा रहा है और इस बात की स्मृति उसके मन में वैसी ही बनी हो। परन्तु इस साहचर्य को सम्बन्ध नहीं कह सकते। इसका सम्बन्ध व्यक्तिगत अनुभव से ही होगा, उस सामाजिक या सामूहिक अनुभव से नहीं जो धारणाओं के सामान्य वर्ग में निहित है। क्योंकि उसके साहचर्य का कारण बिना स्पष्टीकरण के तुरन्त समझ में नहीं आएगा, उसके लिए उसके व्यक्तिगत अनुभव से सम्बन्धित स्पष्टीकरण की आवश्यकता रहेगी। तात्कालिक बोधगम्यता के इस अर्थ में swell का सम्बन्ध up या इसी प्रकार के किसी अन्य भाव से है, और यह भाव DOWN के भाव से स्पष्टतः अलग है। अतः 'सम्बन्ध' की धारणा की आगे व्याख्या करते हुए यह कहा जा सकता है कि सम्बन्धों को वैयक्तिक अनुभवों का संकेत किए बिना ही बोधगम्य होना चाहिए तथा उनमें तात्कालिक बोधगम्यता होनी चाहिए। अन्तवर्ती सम्बन्धों अर्थात् दूसरे सम्बन्धों के माध्यम से प्रकट होने वाले सम्बन्धों को 'सम्बन्धों की शृंखला' या 'मार्ग', या सम्भवतः 'संचार-व्यवस्था' कह सकते हैं।

यहाँ भावों के एक अन्य वर्ग 'ख' का निर्माण भी सम्भव हो सकता है जो 'क' तथा 'ग' वर्गों की मध्यस्थता करे, ताकि हम विभिन्न शृंखलाओं या सम्बन्धक संचार-व्यवस्थाओं के मार्गों के माध्यम से 'क' वर्ग से 'ग' वर्ग पर पहुँच सकें तथा साहचर्य की सहायता के बिना ही पूर्णतया सम्बन्धक ढंग से down (नीचे) से up (ऊपर) तक पहुँच सकें।

उदाहरणार्थ :

	1	2	3	4	5	6	7	8
A	set	sink	drag	drop	hollow	depress	lie	down
B	stand	heavy	pull	precipice	space	bear	extend	
C	upright	heave	hoist	tall	air	uphold	swell	up

प्रयोग-व्यक्ति down तथा up के बीच के भावों के ढेर में से अपना मार्ग बनाते हुए सदैव इन्हीं मार्गों पर नहीं चलते, अपितु प्रायः अन्य मार्ग ढूँढ़ लेते हैं। उदाहरण के लिए M. F. नामक प्रयोग-व्यक्ति ने इस प्रकार का मार्ग अपनाया—set-heavy-swell up। जब उससे set-heavy सम्बन्ध का स्पष्टीकरण करने के लिए कहा गया तो पता चला कि set के साथ स्थिरीकरण या स्थिरता की दृढ़ भावना अनिवार्य रूप से संलग्न है, तथा इससे जड़ीकरण, जमाव, कड़ापन, मोटापन या सघनता की व्यञ्जना होती है जैसे जेली (या दही) का जम जाने में (set हो जाना), जबकि प्रयोग-व्यक्ति की दृष्टि में heavy का भाव न केवल 'भार' है अपितु पिण्ड, सघनता, चिपचिपाहट या श्यानता भी है, तथा यह ऐसा भाव है जो पूर्ववर्ती set के भाव से मिलता-जुलता है। यह एक वास्तविक सम्बन्ध है, यद्यपि प्रयोगकर्ता इसे तुरन्त नहीं समझ सका, किन्तु वैयक्तिक अनुभव के संकेत के बिना इसे शीघ्र ही समझ लिया गया। heavy swell का सम्बन्ध भी तुरन्त नहीं समझा जा सका था, परन्तु पता चला कि heavy (भारी), शब्द ने तत्वतः

'मात्रा' या 'पिण्ड' के भाव को द्योतित किया है जिसमें Massiveness (महाकायता) Size (आकार) तथा वृद्धि भी सम्मिलित थी, अत: enlarge (परिवर्धन करना), expand (विस्तारित करना,) Swell (फूलना) इत्यादि, यह भी वास्तविक सम्बन्ध है। वही प्रयोग-व्यक्ति up से आरम्भ करके इस क्रम से down तक पहुँचा—up hoist-pull-drag-down । W. W. नामक प्रयोग-व्यक्ति ने यह क्रम अपनाया—down drop-heavy-hoist-up । heavy- hoist (भारी-ऊपर उठाना), सम्बन्ध का स्पष्टीकरण माँगने पर यह ज्ञात हुआ कि heavy (भारी) भार के अनुभव या धारण करने का, अथवा किसी पदार्थ के उठाने का संकेत देता है, जो तत्वत: ऊपर उठाने की क्रिया है। यदि heave उठाना, उछालना, (फूलाना) शब्द से प्रयोग-व्यक्ति अधिक परिचित होता तो उसने hoist के स्थान पर heave को ही चुना होता।

परन्तु एक भिन्न एवं असम्बन्धित प्रक्रिया उस समय प्रकाश में आई जब एक युवक ने past (अतीत) के भाव पर पहुँचते ही अगले क्रम के रूप में उसी वर्ग में प्रत्यक्ष रूप से विद्यमान before (सामने) शब्द की उपेक्षा करते हुए hiding (छिपना) शब्द चुना। यह फिर भी एक सम्बन्ध हो सकता था यदि इसका सन्तोषजनक स्पष्टीकरण मिल जाता। परन्तु सर्वोत्तम स्पष्टीकरण जो उसने प्रस्तुत किया वह यह था कि सामान्यत: हमारा अतीत अप्रिय होता है, अत: हम उसे याद न करना ही श्रेयस्कर समझते हैं, इसलिए यह hiding (छिपना) है । सम्भवत: सम्बन्ध को अभिव्यक्त करने का यह एक भोंडा ढंग था, लेकिन ऐसा जान नहीं पड़ा । उसने इस सुझाव के साथ अपनी सहमति प्रकट नहीं की कि past (अतीत) का अर्थ है receded (पीछे गया हुआ), withdrawn (निष्कासित), retired (एकान्तित), concealed (छिपा हुआ); न ही वह इस विचार से सहमत हुआ कि past (अतीत) का अर्थ है gone (गया हुआ), vanished invisible (अदृश्य), concealed (छिपा हुआ), तथा न ही इस विचार से कि past (अतीत) का अर्थ existent (in memory) विद्यमान (केवल स्मृति में), परन्तु not apparent (अप्रत्यक्ष), stored up (संचित), hoarded (गुप्त स्थान में संचित, अत: छिपाया हुआ), इत्यादि। परन्तु वह अतीत के नितान्त दूरस्थ भाव अर्थात् अप्रियता के भाव पर हठ करता रहा। अत: मैंने यह निष्कर्ष निकाला कि या तो इस व्यक्ति के अप्रिय अतीत ने इसके चिन्तन को अतिरञ्जित कर दिया है, या यह मनोविश्लेषण सम्बन्धी साहित्य पढ़ता रहा है, अथवा यह अपने-आप को मानवद्वेषी या दोषदर्शी दिखाना चाहता है। कुछ भी हो इस विषय में हमें व्यक्तिगत व्यवहार का सामना करना पड़ रहा था, जो निस्सन्देह Association तो था परन्तु 'सम्बन्ध' नहीं । जब उसे यह बताया गया कि मुझे ऐसे 'सम्बन्धों' की आवश्यकता है जिनका व्यक्तिगत अनुभवों से कोई सम्बन्ध न हो तो उसने स्वीकार किया कि यह सम्भवत: उसके साहचर्य पर लागू न हो और तब उसने before (सामने) शब्द चुना।

कभी-कभी कोई प्रयोग-व्यक्ति साहचर्य के माध्यम से एक वास्तविक 'सम्बन्ध' पर तुरन्त पहुँच जाता है, तथा बाद में उसे 'सम्बन्ध' के विषय में पता चलता है। औसत से अधिक बुद्धि से युक्त कॉलिज के एक नए स्नातक W.W. नाम के प्रयोग-व्यक्ति ने बताया कि वह drag तथा down के सम्बन्ध के विषय में इस प्रकार सोचता है : drag का अर्थ होता है खींचना, तथा चीजें नीचे की ओर जाती हैं; क्योंकि उन्हें गुरुत्व आकर्षण द्वारा खींचा जाता है। उसने कुछ दिन पूर्व ही भौतिकी की परीक्षा दी थी। मैंने उससे पूछा कि क्या वह इस सम्बन्ध को पहचान सकता था यदि उसने गुरुत्वाकर्षण का नाम न सुना होता, और उसने कहा कि सम्भवत: वह इस सम्बन्ध के विषय में नहीं जान सकता था। मैंने उसे सुझाव दिया कि यदि गुरुत्वाकर्षण किसी प्रकार के बाह्य दबाव के कारण एकत्र घनीकरण सिद्ध हो जाए तो उस सम्बन्ध का क्या होगा। एक संकेत मात्र ही उसे सही सम्बन्ध का ज्ञान प्राप्त करने में पर्याप्त रहा, जो केवल एक भाषायी अर्थ का सम्बन्ध है—अर्थात् drag-trail, dangle (घसीटना या लटकना), जो कुछ घसीटा जा रहा है वह सामान्यत: नीचे की ओर होता है, ऊपर की ओर नहीं। एक असाधारण रूप से मेधावी विद्यार्थी भी प्राप्त की गई शिक्षा के द्वारा सिद्धान्त का, तथ्यों से भेद समझने में कितना असमर्थ रहता है—यह उदाहरण उस अयोग्यता तथा वास्तविकता पर एक रोचक टिप्पणी है। (या सम्भवत: विशेष रूप से इस प्रकार के विद्यार्थी की योग्यता पर? अर्थात् यदि मेधावी (intelligent) का अर्थ है—शीघ्र सीखने वाला, सम्भवत:, इसका अर्थ ग्रहणशील भी है, अत: अत्यन्त आशु-विश्वासी भी ?)

क्या आप इस प्रकार की बन्धुता के लिए connection (सम्बन्ध) से अच्छे किसी अन्य शब्द का सुझाव दे सकते हैं। मैं यह कहना चाहूँगा कि 'सम्बन्ध' के विषय में मेरी मानसिक धारणा ऐसे विचारों की बिल्कुल नहीं है, जिन्हें उन संयोजक बन्धनों द्वारा एक साथ जोड़ दिया गया हो जो उनके पास छोटे-छोटे कुंडी-छल्लों की भाँति होते हैं। यह 'सातत्य' की धारणा अधिक है—जहाँ एक अविछिन्न माध्यम के अन्तर्गत भाव आपेक्षिक अवस्थितियों के रूप में विद्यमान रहते हैं। up जैसे एक भाव को देखिए और कहिए कि हम जिस स्थान पर हैं, उस स्थान से यह किसी विशेष स्थिति के सदृश है। अब मैं यह समझ सकता हूँ कि गति की तरह की कोई घटना हमारे साथ घट सकती है। up का भाव एक प्रकार का प्रतिवेशी सामीप्य है तथा हम उस प्रतिवेश को छोड़ रहे हैं। हम यह निश्चित रूप से नहीं कह सकते कि कोई प्रतिवेश कहाँ छूट गया है। हम यह जानते हैं कि up से सम्बन्धित भाव एक भिन्न अर्थभेद ग्रहण करता जा रहा है। यह rise (उठना) भाव की तरह विकसित हो रहा है, परन्तु जब कुछ मात्रा में परिवर्तन हो चुका है या गति हो चुकी है तब हमें पता चलता है कि हम एक भिन्न स्थल पर हैं; अब भाव निश्चित रूप से rise (उठना) है, up (ऊपर) नहीं। गति निरन्तर बनी रहती है और rise (उठना) left (छोड़ना) हो जाता है। left (छोड़ना)

अज्ञात रूप से carry (ले जाना) बन जाता है तथा वह sustain (बनाए रखना) बन जाता है। अब हम up (ऊपर) के पड़ौस से निश्चित रूप से बाहर हैं। गति की दिशा परिवर्तित करने से इनमें से कोई-सा भी भाव कोई अन्य चीज़ भी बन सकता है। sustain (बनाए रखना) nourish (पालन-पोषण करना) बन सकता है या यह continue (जारी रखना) भी हो सकता है। nourish (पालन-पोषण करना) feed (भोजन खिलाना) भी हो सकता है, एवम् continue (जारी रखना) long (दीर्घ) भी हो सकता है।

मनोविज्ञान के बारे में*

मनोविज्ञान ने शोध का एक ऐसा क्षेत्र विकसित किया है, जो स्वयं अपने लिए तो निस्सन्देह उपयोगी एवम् मूल्यवान हो सकता है, किन्तु यह सामान्य मानव-मन अथवा आत्मा की समस्याओं पर कोई प्रकाश नहीं डालता। कोई भी व्यक्ति जो आन्तरिक अथवा मानसिक जीवन के नियमों, या यूं कहिए कि आन्तरिक 'क्षेत्र-विज्ञान' के विषय में पूरी तरह जानना चाहता है उसे, उसके मत विविध कठिनाइयों द्वारा प्राप्त किए गए ज्ञान भण्डार, तथा स्वाभाविक अनुमानों, अन्तर्प्रज्ञाओं, समवेदनाओं तथा सामान्य ज्ञान के आश्रय पर ऐसे छोड़ दिया जाता है मानों मनोविज्ञान नाम के विज्ञान का अस्तित्व ही न हो। दृष्टान्त के रूप में ऐसा व्यक्ति एक अध्यापक, शिक्षक, प्रबन्धक, राजनयिक कार्यकारी हो सकता है; वह कोई भी ऐसा व्यक्ति हो सकता है जिसे मानवीय सूक्ष्मताओं की समस्याओं का विवेचन करना पड़ता हो, विशेष रूप से किसी प्रकार के नेतृत्व से सम्बन्धित व्यक्ति। यदि वह पुस्तकों की सहायता लेता है तो उसे इस विषय से सम्बन्धित कहीं अधिक सूचना उस साहित्य से मिल जाएगी जो वैज्ञानिक दृष्टिकोण से नहीं लिखा गया है, अर्थात् वह सूचना उसे किसी मनोविज्ञान की पाठ्य-पुस्तक की अपेक्षा उपन्यासकारों, नाटककारों तथा कवियों की श्रेष्ठ कृतियों से अधिक मिल सकेगी। मनोविज्ञान ने कुछ ऐसे मार्गों का अनुसरण करना अधिक पसन्द किया, जिन्होंने उसे वास्तविक मानसिक क्षेत्र से सम्भवतः सदा के लिए विमुख कर दिया है।

पहले, प्रयोगात्मक प्रयोगशाला-मनोविज्ञान के पुराने सम्प्रदाय ने निश्चित रूप से शरीर-विज्ञान की एक शाखा का रूप ग्रहण कर लिया है। इसके निष्कर्ष तथा मूल्य सभी शरीरविज्ञान को प्रभावित करते हैं। मानसिक तथ्यों के विद्यार्थी के लिए शरीर के रचनातन्त्र का ज्ञान निस्सन्देह मूल्यवान तो हो सकता है, परन्तु केवल सहायक

---

*यह नोट जो अब तक प्रकाशित नहीं हुआ था, मुझे हस्तलिखित पाण्डुलिपि के रूप में व्होर्फ के कागज़ों में मिला था। इसकी रचना की तिथि अज्ञात है, यद्यपि मैं यह अनुमान लगाने का साहस करूँगा कि यह लगभग उसी समय लिखा गया था जिस समय डा० इंग्लिश को पत्र लिखा गया था, अर्थात् 1927 में। नोट का अन्तिम भाग अत्यधिक संक्षिप्त है। सम्भवतः यह उस लम्बे लेख की रूपरेखा मात्र है जिस लेख को व्होर्फ ने लिखने का विचार किया था। मैंने इसे शीर्षक दिया है, तथा बहुत ही कम सम्पादकीय परिवर्तन किए हैं।

सूचना के रूप में न कि किसी अन्य रूप में। रक्त के ऑक्सीकरण एवम् मस्तिष्क की तन्त्रिकाओं की प्रतिक्रियाओं की विस्तृत व्याख्याएँ, इन्द्रियबोध, तथा साहचर्य कालादि सभी इसी कोटि के हैं। इसके अतिरिक्त इस विज्ञान द्वारा एकत्रित किए गए गौण तथ्यों के विशाल समूह की भयावह निष्फलता तथा एकीकरण के सिद्धान्तों के अभाव से कोई भी व्यक्ति प्रभावित (एवम् खिन्न) हो जाता है।

दूसरे, व्यवहारवादी सम्प्रदाय पुनः पुराने प्रयोगात्मक मनोविज्ञान के कुछ चुने हुए पक्षों को लेकर अपने वास्तविक स्वरूप में प्रकट होने लगा है। मेरा यह निजी विश्वास है कि इसमें पुराने सिद्धान्तों का कई प्रकार से परिष्करण हुआ है, तथा कई क्षेत्रों में इसने हमारे ज्ञान को बढ़ाया भी है। व्यवहार के दृष्टिकोण से सोचने की शिक्षा देने के कारण यह काफी उपयोगी रहा है । परन्तु सब कुछ कहने और करने पर भी यह कोई भी ऐसी बात नहीं सिखाता जो नई हो । इसने हमें बताया है कि व्यवहार को भौतिक विधियों से किस प्रकार 'अनुबन्धित' किया जा सकता है, परन्तु यह उन्हीं पद्धतियों द्वारा बताया जिन्हें हम पहले से जानते हैं, यद्यपि उनकी व्याख्या कुछ अधिक व्यवस्थित रूप में की गई है। यह सुस्पष्ट हो गया है कि हम वास्तविक वित्तीय अपेक्षाओं के या तो सहयोग से या उनके विरोध से ही 'अनुबन्धन' कर सकते हैं। इस तथ्य से हम पहले ही अवगत थे, परन्तु वित्तीय नियमों के अनुसार एवम् उनके सहयोग से 'अनुबन्धन' करने में हमारी विशेष अभिरुचि है। इसमें सन्देह नहीं कि वैज्ञानिक के रूप में अथवा उन्मत के रूप में, जनता के नेता के रूप में अथवा एक अधीर व्यक्तित्व में एक अच्छे कर्मचारी के रूप में, अथवा ऐसे व्यक्ति के रूप में जो अपनी नौकरी पर टिक नहीं सकता, प्रेरणा देने वाले एक सहायक के रूप में, अथवा प्रत्येक कार्य में बाधा उत्पन्न करने वाले चिड़चिड़े स्वभाव के व्यक्ति के रूप में, प्रेरणा एवं प्रतिक्रिया की वही प्रक्रिया एक मनुष्य को 'अनुबन्धित' करती है। परन्तु व्यवहारवाद हमें यह नहीं बताता कि मानवी सूक्ष्मताओं एवम् अमूर्तताओं के साथ वास्तविक रूप में अनुरूप होने के लिए हमें किन पद्धतियों पर कार्य करना चाहिए। व्यवहारवाद केवल उन तथ्यों की घोषणा व्यवहारवादी शब्दों में करता है जो सामान्य ज्ञान में पहले ही भली प्रकार ज्ञात हैं ।

मेरी दृष्टि में जेस्टाल्ट मनोविज्ञान ने 'मन' के विषय में एक महत्त्वपूर्ण सत्य का पता लगाया है, वह है—मानसिक क्षेत्र में समाकृतियों का महत्त्व। साथ ही मनोवैज्ञानिकों के पास बहुमुखी यान्त्रिक, प्रयोगात्मक तथा व्यक्तिगत ऐसी सामग्री है जिसकी आवश्यकता इस विस्तृत विषय को विकसित करने के लिए पड़ती है, तथा उस सामग्री का अधिकांश भाग मुख्य रूप से प्राणी स्तर पर ही लागू होता है। जब हम मानव-जीवन को समझने के लिए समाकृतिपरक सिद्धान्त का प्रयोग करने की चेष्टा करते हैं, तो हमें तत्काल सांस्कृतिक तथा भाषायी (संस्कृति का भाग), विशेष रूप से भाषायी भाग मानव-स्तर पर समाकृतिपरक के सर्वोत्कृष्ट महान क्षेत्र के रूप में प्रतीत होने लगता है। अतः जेस्टाल्ट मनोवैज्ञानिक इस विषय को यहीं छोड़ देते हैं। इस क्षेत्र का मर्म समझने के लिए न तो उनके पास समय है और न ही

अपेक्षित भाषायी प्रशिक्षण। इसके अतिरिक्त पुराने प्रयोगशाला-मनोविज्ञान से रिक्थ के रूप में प्राप्त किए गए विचार एवम् शब्दावली उपयोगी होने की अपेक्षा भारमात्र है।

मनोविश्लेषण ही एक मात्र ऐसी पद्धति है, जो वास्तविक रूप में मानसिक सामग्री का विवेचन करती है तथा यह कभी-कभी निष्कर्षों पर भी पहुँचती है। परन्तु यह पद्धति केवल 'अपसामान्य' एवम् 'विक्षिप्तता' के क्षेत्र में ही कार्य करती है और यह भी सुस्पष्ट होता जा रहा है कि अपसामान्य, सामान्य को समझने की कुञ्जी नहीं है। इसके अतिरिक्त मनोविश्लेषण अमूर्त्तताओं का विवेचन करने में इतना दृढ़ प्रतिज्ञ है कि यह बाह्य संसार को लगभग तिरस्कार की दृष्टि से देखता है, और निरन्तर मानसिक प्रतिबिम्बों के क्षेत्र में भटकता जाता है। इस पर इसके प्रवर्तक फ्रॉयड (Freud) की अत्यधिक गहरी छाप पड़ी है। फ्रॉयड को एक ऐसा सनकी प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति कहा जा सकता है, जिसमें गहरे परन्तु दुर्बोध सत्यों को देखने की प्रतिभा है, तथा जिस पर धारणा की सनक सवार रहती है, एवम् निराले सनकी सिद्धान्त के कारण जिसकी प्रतिभा अस्तव्यस्त है। यह चिकित्सालय के लिए प्रयोगाश्रित उपकरण तो कुछ समय के लिए बन सकता है, परन्तु मेरी समझ में नहीं आता कि यह सामान्य मन के सुविचारित वैज्ञानिक सूक्ष्म परीक्षण का साधन कैसे बन सकता है।

तो अब सभी सम्प्रदायों का विवेचन कर लिया गया है तथा सभी अभावग्रस्त पाए गए हैं। मानव-मन के विषय में ज्ञान के जिज्ञासु को बाध्य होकर दीर्घकाल से एकत्रित किए गए अनुभवजन्य प्रेक्षणों के उस अम्बार पर आश्रित होना पड़ता है, जिसे कभी-कभी सनातनकालीन बुद्धिमत्ता (Wisdom of the Ages) कहा जाता है, या अन्तर्दृष्टि-युक्त ग्रन्थ-रचयिताओं के ग्रन्थों पर, अपनी ही अन्तर्प्रज्ञा पर, तथा उन गिने-चुने सामान्य सत्यों पर आश्रित होना पड़ता है, जिनका वह यहाँ-वहाँ से, उपरोक्त सम्प्रदायों के सिद्धान्तों से चयन करता है।

एक सत्य, जो निष्पक्ष दृष्टिकोण के समक्ष उपस्थित होता है, परन्तु जिस पर किसी भी सम्प्रदाय में बल नहीं दिया गया है, वह है—सिद्धान्त का महान् तथा सम्भवत: मौलिक महत्त्व जिसे हम Meaning (अर्थ) शब्द से अभिहित करते है। 'अर्थ' निकटतम रूप में 'भाषा-विज्ञान' से सम्बन्धित है। इसका सिद्धान्त प्रतीकवाद है, परन्तु भाषा एक महान् प्रतीकवाद है, जिससे अन्य प्रतीकवाद मार्ग-प्रदर्शन प्राप्त करते हैं।

मैक्सिकन तथा माया के दिवस चिह्नों का संयुक्त रूप प्रस्तुत करने वाला केन्द्रीय मैक्सिको का एक शिलालेख*

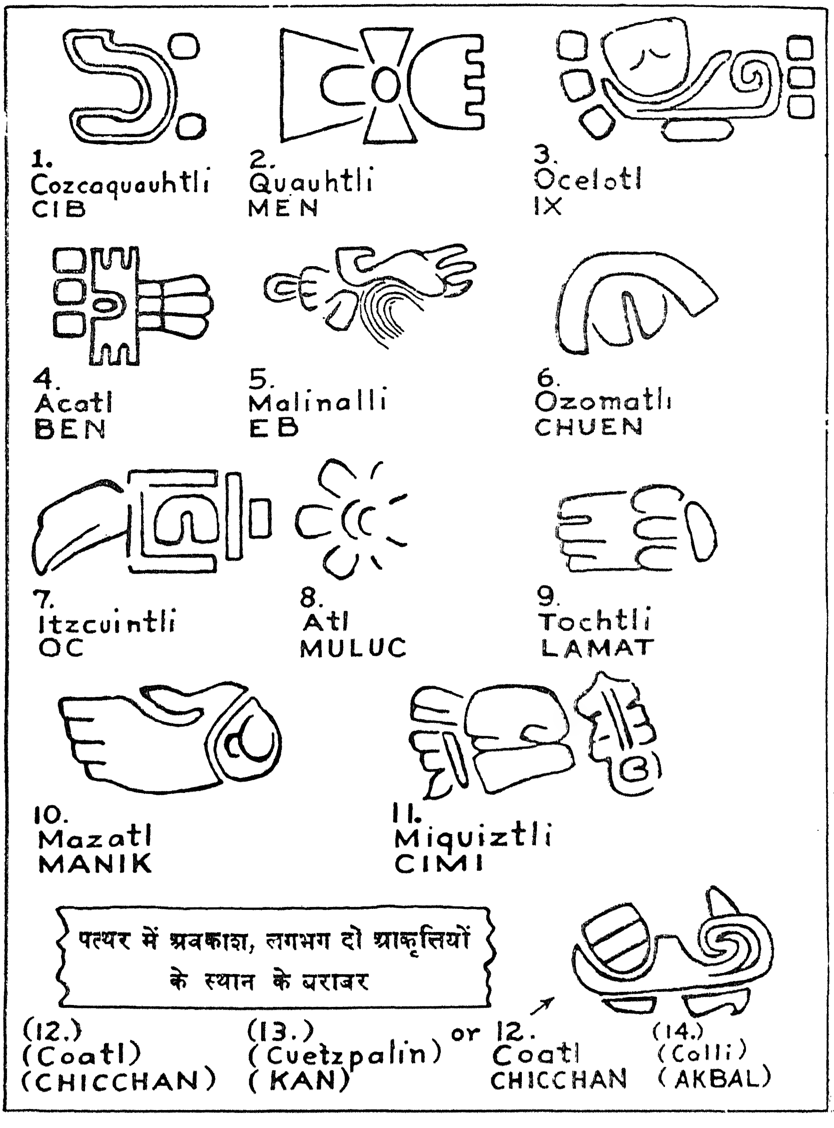
सन् 1930 की शरद् ऋतु में जब मैं मैक्सिको में नहुअत्ल भाषायी शोधकार्य में व्यस्त था, तब Morelos राज्य में Tepoztlan नाम के गाँव में जाकर मैंने शहर से बहुत ऊँचे एक चट्टानी बुर्ज पर स्थित अधिष्ठाता देवता Tepoztecatl के भग्न-मन्दिर से उत्कीर्ण आकृतियों की एक पट्टी का संलग्न रेखाचित्र बनाया। (चित्र : 1)।

मन्दिर का विवरण Saville,[1] Seler,[2] Novelo[3] ने भी दिया है, परन्तु उनमें से किसी ने कहीं भी इन आकृतियों पर विचार नहीं किया जिनका विवेचन यहाँ किया गया है। इमारत की बनावट से संकेत मिलते हैं कि ये अज़्तेक राजा Ahuitzotl जो 1502 में मरा, के शासनकाल की हैं।[4] क्योंकि विचाराधीन आकृतियाँ इससे भी हज़ार वर्ष पूर्व की आकृतियों से समानता रखती हैं, इसलिए सम्भव है कि मन्दिर बनाते समय ये आकृतियाँ या तो कलात्मक परम्पराओं के अनुरूप उत्कीर्ण की गई हों अथवा इस प्रदेश के पुराने शिल्प-विद्या सम्बन्धी कार्यों से नकल की गई हों। ये आकृतियाँ एक पट्टी की रचना करती हैं जो अन्दर के कमरे या प्रांगण की अन्दर की दीवारों पर अधिक बड़े उत्कीर्णनों की बहुत अधिक स्पष्ट चित्रवल्लरी (प्रस्तरगल) के सिरे के साथ-साथ फैली हुई है। यह खाका और टिप्पणी जो मैंने दी है, प्रांगण के आधे दक्षिणी भाग में स्थित पट्टी के स्पष्ट रूप से सुरक्षित भाग से सम्बन्धित है।

---

* *American Anthropology* **से पुनर्मुद्रित**, 34: 296-302 (1932)

1. Bull. Amer. Mus, Nat, Hist (1896); also Monum. Records, Feb. 1898
2. Bull. 28, Bur. Amer. Ethnol, 347; *Die Wands Kulpturen in Tempeldes Polquegottes Von Tepoztlan,* Gesamm. Abh., 3: 487
3. *Guia pare visitar las principalas ruinas arpueoıogicas del estado de Mareıos,* Publlioa Sec. Education, Publica, 3, (1929)
4. **देखिए** Seler, Bull. 28, Bur. Amer. Ethnol.

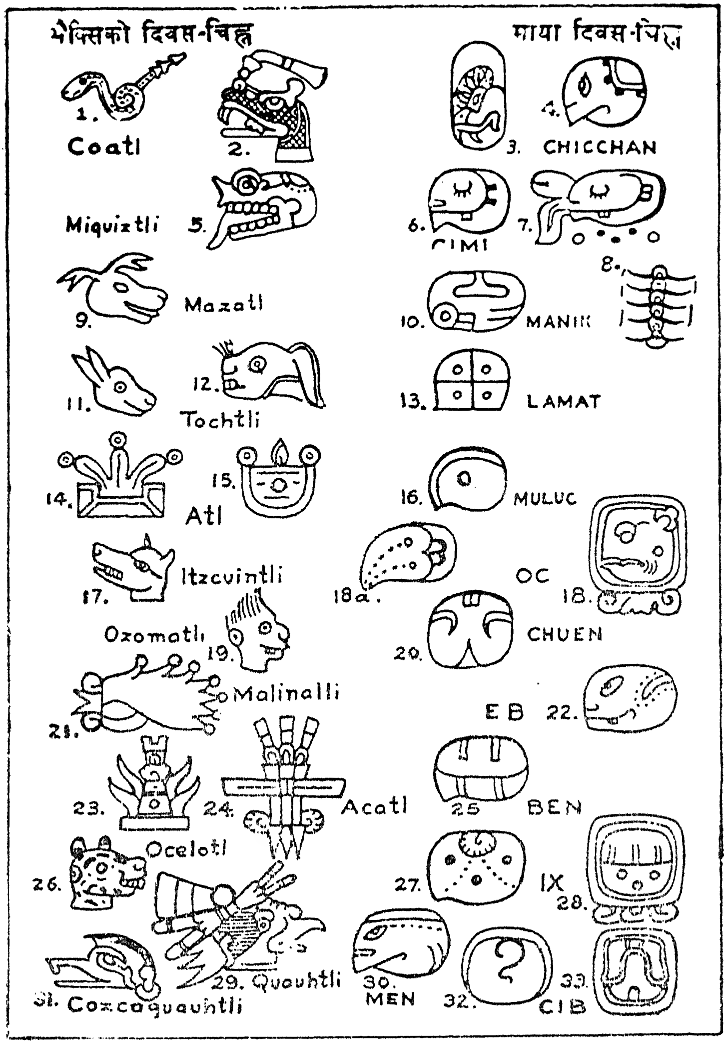


चित्र 1. तेपोज्तेकातल के मन्दिर में शिलालेख, तेपोज्त्लान, मोरेलोस, मैक्सिको

मेरा विचार है कि शैलीगत रूप से तथा साधारण सम्भावनाओं के आधार पर ये आकृतियाँ किसी भी विद्यार्थी को Tonalamatl के दिवस चिह्नों की पट्टी ही प्रतीत होगी, जैसे कि मैक्सिकन प्राचीन पाण्डुलिपियों में मिलने वाले चित्रों के साथ-साथ सतत धारावाहिक रूप में चित्रित मिलती हैं। परन्तु बहुत से चिह्न अपने उस मैक्सिकन रूप से बहुत कम समानता रखते हैं जो अज़्तेक नामों *Cipactli*, *Enecatl*, *Calli* आदि के बहुत समान हैं। तथापि, जैसा कि हम आगे देखेंगे, चिह्न *Acatl*, *Malinalli* और *Atl*, व्यावहारिक रूप से अपने नियमित मैक्सिकन रूप हैं, और इसके अतिरिक्त, विषय को अधिक अच्छी तरह समझने के लिए निश्चित रूप से अलग-अलग चिह्नों की ठीक संख्या है। परन्तु इसके अतिरिक्त यहाँ पर एक और असाधारणता मिलती है, कि ये चिह्न माया नामों *Imix*, *Ik*, *Akbal*, आदि से मिलते-जुलते मायारूपों और मैक्सिकन न लगने वाले माया रूपों से असंदिग्ध समानता रखते हैं, और ये चिह्न भी अपने उचित स्थानों पर हैं। निस्संदेह यह खण्डहर ऐतिहासिक माया क्षेत्र से बहुत दूर है, क्योंकि यह मैक्सिको शहर से 40 मील दूर Taltec तथा उत्तर Toltec के प्रभाव वाले प्रदेश में है।

जब मैंने इन आकृत्तियों का रेखाचित्र बनाया तो उनके सामान्य अज़्तेक से भिन्न रूप ने शीघ्र ही मुझे आकर्षित किया; परन्तु यह प्रथम स्पष्ट आभास कि मैं एक माया चित्रलेख बना रहा हूँ, मुझे तब हुआ जब मैंने चित्र नं० 1, चिह्न नं० 10 को नकल करना प्रारम्भ किया। एक अति सामान्य माया चित्रलेख, जिस (चित्रलेख) का अति सामान्य रूप चित्र न० 2, चिह्न नं० 10 में दिया गया है, के साथ तुलना करने पर समानता का संकेत मिलता है। यह माया चिह्न एक हाथ है जिसका वैशिष्टय् एक उदग्र अँगूठा है, जो न्यूनाधिक अँगुलियों के सामने है, और निरपवाद रूप से, जिसमें कलाई पर एक वलय है, जिसमें एक केन्द्रीय बिन्दु होता है तथा वलय से बाहर को निकली हुई एक घुण्डी होती है। अँगुलियाँ प्रायः अँगूठे की ओर झुकी हुई हैं, परन्तु माया स्मारकों पर कुछ ऐसे भी रूप हैं जिनमें अँगुलियाँ सीधी फैलाई गई हैं जैसे Tepcztlan आकृत्ति में। यह चिह्न बहुत अधिक तथा विविध रूप से प्रयुक्त होने वाला चित्रलेखात्मक तत्व है परन्तु विशेषतया यह एक लेखिम[5] है जो दिवस चिह्न Manik का प्रतिनिधित्व करती है। मैक्सिकन दिवस-चिह्न

5. Grapheme (**लेखिम**) **एक पद है जिसकी रचना** Morpheme (**रूपिम**) **तथा** Semanteme (**अर्थिम**) **के सादृश्य पर विशेष रूप से एक भाषायी तत्व के रूप में किसी लिखित प्रतीक का द्योतन करने के लिए** Idiogram (**भावलेख**) Pictograph (**चित्रलिपि**) **या अस्पष्ट वर्णों के स्थान पर की गई है। चित्रलेखों का विवेचन करते हुए एक ऐसा पद अपेक्षित है जो प्रयोग में लाई गई द्योतक प्रक्रिया के विषय में किसी प्रकार की धारणा न रखता हो।**



चित्र 2. मैक्सिको तथा माया दिवस चिह्न : कोअत्ल-चिच्छानसे दका-क्वाह्त्ली-चिह्न तक उनके क्रमानुसार दिए गए हैं। ग्रन्थ सूची सम्बन्उखप्रेश : 1, 9, 11, 15, 17, 19, 23, 26 साहागुन पाण्डुलिपि से; 1, 2 तथा पसे; 14 ाचीन पाण्डु-लिपि से; 12 तथा 31 फेयेरवारी-मायेर पाण्डुलिपि से; तेल्लेरिआनो-रेमेनिसिस से; 21, 24, तथा 29 सेलेर की aractere des inscriptions से; 3, 4, 6, 13, 16, 18, 20, 22, 25, 27 28, 30 मोरले की *Introduction to Maya hierogliphs* (3, 18, 24 शिलालेखीय रूप पृष्ठ 38 से, 33 पृष्ठ 95 से, अन्य पाण्डुलिपि रूप पृष्ठ 39 से); 7, मृत्यु के देवता की चित्रलिपि, ड्रेट्सेन पाण्डुलिपि पृष्ठ 15; 8, उक्समाल से नर-कंकाल का प्रतिनिधित्व करने वाला चित्र, स्पिण्डन के *Maya Art* से; तथा 32 पेरेसिआनस पाण्डुलिपि, स्पिण्डन के *Maya Art* पृष्ठ 94 से; 10 त्रो कोर्त्तेसिआनस प्राचीन पाण्डुलिपि से, 18 माया चित्रलिपि कुत्ते के सिर पर आधारित तथा OC (18) से सम्बन्धित ड्रेसेन पाण्डुलिपि से।

पद्धति में हाथ से जरा सी भी समानता रखने वाला कोई लेखिम नहीं है। Manik से मिलने वाले चिह्न को Mazatl कहा जाता है, और उसका लेखिम है--हिरण का सिर (चित्र 2 सं० 1)।

क्या यह हो सकता है कि यह लेखिम, Tepoztlan की हस्तआकृति के चित्र Manik-Mazatl का प्रतिनिधित्व करता हो? क्या अन्य चिह्न इस धारणा द्वारा अपेक्षित अपने उचित स्थानों पर प्राप्त हैं? आओ हम देखते हैं। दोनों दिवस चिह्न पद्धतियों में Manik-Mazatl से पहले के चिह्न को समान नाम से पुकारा जाता है—माया में Cimi और अज्तेक में Miquiztli और दोनों का अर्थ है 'मृत्यु'। दोनों पद्धतियों में इसका लेखिम है मृत्यु का सिर या मृत्यु के देवता का सिर,—पर दोनों पद्धतियों में शैलीगत रूप से यह चिह्न भिन्न है। चित्र 2 सं० 5, लेखिम का अज्तेक रूप दिखाता है--एक मांसरहित खोपड़ी, और चित्र 2 सं० 6 लेखिम का माया रूप। चित्र 2 सं० 7 में माया के मृत्युदेव का वह चित्रलेख है जो प्राचीन माया पाण्डुलिपियों में मिलता है। माया और अज्तेक लेखन की दिशा हमारे लेखन की दिशा जैसी ही है--बाएं से दाएं। हाथ के बाईं ओर की आकृति (चित्र 1 सं० 9) Miquiztli या Cimi से कोई समानता नहीं रखती। परन्तु बड़े आश्चर्य की बात है कि हाथ के दायीं ओर की आकृति (चित्र 1 सं० 11) माया के मृत्युदेव के चित्रलेख से बड़ी कुतूहली समानता रखती है। सिर के साथ जोड़े गये दो उपसर्ग इस लेखिम का वैशिष्ट्य हैं तथा अन्यत्र कहीं उपलब्ध नहीं होते। Tepoztlan चित्र चिह्न में एक ऐसा प्रत्यय है जो मृत्युदेवता के लेखिम में नहीं मिलता, परन्तु वह अन्य माया-चित्रलेखों का एक आवश्यक तत्व है। यह तत्व मास द्योतक चिह्न Kankin का वैशिष्ट्य है, तथा Seler के अनुसार नर-कंकाल का प्रतिनिधित्व करता है। यह चिह्न चित्र 2 सं० 8 में प्रदर्शित कंकालीय प्रतिनिधित्व से सम्बन्धित प्रतीत होता है, जो चित्र स्पिण्डन (Spinden) की पुस्तक *Maya Art* (माया कला) के पृष्ठ 86, चित्र 115 से लिया गया है। इस पुस्तक में स्पिण्डन ने माया लोगों के हड्डियों और मृत्यु के कलात्मक प्रतीकवाद का विवेचन किया है।

तथ्य यह है, जैसा कि शीघ्र ही सिद्ध भी किया जायेगा कि हमारे पास एक ऐसा शिलालेख है जो किसी अज्ञात कारण से उल्टे क्रम अर्थात दाएं से बाएं में लिखा हुआ है तथा यह मृत्युदेव के चिह्न Cimi—Miquiztli का प्रतीक है। एक बार इसका अनुभव हो जाने पर इस विषय का विद्यार्थी शीघ्र ही एक अन्य माया चिह्न को पूर्णतया देख पाएगा जैसे चित्र 1 सं० 1 में हाथ के बाईं ओर की नौवीं आकृति। मैक्सिकन पद्धति में Mazatl के बाद के नौवें चिह्न को Cozcaquau htli कहा जाता है और इसका लेखिम गिद्ध का सिर (चित्र 2 सं० 31) या कालर पहने हुए गिद्ध है। माया पद्धति में Manik के बाद का नौवा चिह्न Cib कहलाता है, और इसका लेखिम (चित्र 2 सं० 32, 33) प्रश्नचिह्न की तरह की एक टेढ़ी रेखा है अथवा कभी-कभी ऊपर या पीछे की ओर मुड़े हुए *C* वर्ण की तरह की रेखा होती है। यह अन्तिम लेखिम Tepoztlan आकृति का रूप है।

वक्र रेखा के पास दो बिन्दु माया Cib में नहीं मिलते, तथापि वे एकरूपता को दृढ़ करते हैं। क्योंकि Cib चिह्न शराब के वर्तनों पर पाया जाता है—इस तथ्य से Seler ने इसका सम्बन्ध एक ऐसे ही चिह्न से जोड़ दिया जो अज्तेक लोगों द्वारा अपने पीने के वर्तनों पर बनाया जाता है तथा जिसे Ometoch कहा जाता है, जिसका यह Ometoch नाम नशे के देवता Om Tochtli के कारण पड़ा है। इसका शाब्दिक अर्थ है—'दो खरगोश'। इस देवता को प्राय: Tepoztlan आकृति से मिलते-जुलते चिह्न से युक्त ढाल उठाये हुए दिखाया जाता है (उदाहरण के लिए उसके Totochtin नाम के नीचे Sahagun Madrid Manuscript)। Sahagun चित्र पर एक अज्तेक लेख के अनुसार यह देवता एक Ometoch Chimalli धारण करता है अर्थात् दो खरगोश—इस कुल-चिह्न से युक्त एक ढाल। हमारे प्रस्तुत विषय में दो बिन्दु दो खरगोश नाम के संख्या वाले भाग की केवल स्वाभाविक अभिव्यक्ति हैं। Ome Tochtli और Tepoztkcatl समान देवता समझे जाते हैं, ताकि Tepoztlan में उनका विशेष सम्प्रदाय अपने प्रतीक को दिवस चिह्न लेखिम की तरह प्रयुक्त करे, जबकि अन्यत्र कहीं यह इस प्रकार से प्रयुक्त नहीं होता। अभिप्राय यह है कि उन्हें इसका उपयोग कर लेना चाहिए था—Tochtli या खरगोश के लिए नहीं, प्रत्युत Cozcaquauhtli या गिद्ध के लिए, जो सभी चिह्नों में से माया Cib की स्थिति के समान है।

अब हम सं० 10 या Manik से Cib की ओर के पहले अन्य चिह्नों की स्थिति का निरीक्षण करते हैं। चिह्न सं० 9 बहुत अधिक कटा-फटा है तथा उसे किसी भी रूप में स्पष्ट रूप से पहचाना नहीं जा सकता। तो भी, मैक्सिकन चिह्न Tochtli (चित्र 2 सं० 12 में प्रदर्शित) के रूप के साथ तुलना करने पर यह इस रूप के कटे-फटे उत्कीर्णन के साथ मिलता दिखाई देगा।

अगला चिह्न नं० 8 परवर्ती चिह्न नं० 7 से पहले बहुत छोटे से स्थान पर बना हुआ है तथा एक ऐसे कोण पर स्थित है जहाँ पट्टी दीवार के कोने पर मोड़ खाती है। यदि इसकी तुलना चित्र 2 सं० 14 में प्रदर्शित अज्तेक चिह्न Atl (पानी) के लेखिम के साथ की जाये तो एकरूपता प्रमाणित हो जायेगी।

अगला चिन्ह सं० 7 Aztec Itzcuintli (कुत्ता) तथा माया Oc के स्थान पर है। यह एक सिर की तरह से है जो कुत्ते की अपेक्षा चिड़िया के या अन्य किसी पक्षी के समान दिखता है। निश्चित रूप से यह उस स्वाभाविक कुत्ते के सिर (चित्र 2 सं० 17) से बहुत थोड़ी सी समानता रखता है जो मैक्सिकन पद्धति में इस दिवस-चिह्न के लिए लेखिम है। अब चिड़िया का सा परम्परागत सिर (चित्र 2 सं० 18 अ में दिखाया गया) प्राचीन माया पाण्डुलिपियों में अति सामान्य चित्रलेखात्मक तत्वों में से एक है। Beyer[6] ने यह

6. Amer. Anthrop. 31 (1929)

दिखाया है कि यह रुढ़िगत ढंग से प्रस्तुत सिर कुत्ते के सिर से लिया गया है। Itzcuntli से मिलने वाला माया दिवस-चिह्न Oc कहलाता है, और इसके दो स्पष्ट लेखिम-रूप होते हैं। प्राचीन पाण्डुलिपियों के रूप की Tepoztlan से कोई समानता नहीं है। Tepoztlan रूप के साथ चित्र 2 सं० 18 में प्रदर्शित माया शिलालेखों के रूप की तुलना की जा सकती है। कुत्ते के चित्रलेख की और आगे भी तुलना की जा सकती है, क्योंकि इसमें सदैव दो कुन्दे वाली एक आकृति से युक्त प्रत्यय होता है, जबकि Tepoztlan चित्रचिह्न दो घुण्डीवाली आकृति से युक्त एक चौकोर ढांचा सिर के साथ जुड़ा हुआ दिखाता है।

चिह्न 6 की माया Chuen चित्र 2 सं० 20 के साथ विशेष समानता दिखाई देती है, तथा अज़्तेक Ozomatli (चित्र 2 सं० 19) के स्वाभाविक बन्दर के सिर से सर्वथा भिन्न है।

चिह्न 5 उसी स्थिति के लिए अज़्तेक लेखिम से मिलता है। यद्यपि यह अधिक कटा-फटा होता है तथा पत्थर में विवर इसके एक भाग से खोदा हुआ प्रतीत होता है। जिह्वा के समान पताकाओं से बनी कूचिका, जो Malinalli का वैशिष्ट्य है, पहचानी जा सकती है (देखिए चित्र 2 सं० 21 में प्रदर्शित Malinalli का रूप)। यहाँ माया रूप का कोई चिह्न नहीं है। (चित्र 2 सं० 22)

चिह्न 4 उचित स्थिति में मेक्सिकन Acat के कुछ रूपों के स्पष्ट लक्षणों को दिखाता है (देखिए विशेषतया चित्र 2 सं० 24 में दिखाया गया रूप)। माया Ben चित्र 2 सं० 25 में प्रदर्शित, बिल्कुल भिन्न है।

चिह्न 3 बड़ा विचित्र है। निश्चय ही यह मक्सिकन Ocelotl एक हिंसक जन्तु का सिर, चित्र 2 सं० 26 के समान नहीं है। न ही माया IX चित्र 2 सं० 27, 28 के साथ ही इसकी कोई बाह्य समानता है, तो भी बड़े विचित्र ढंग से इसमें IX लेखिम के दो तत्व हैं। लेखिम के, वास्तव में, आवश्यक तत्व हैं—तीन बिन्दु, तथा Tepoztlan आकृति में बड़ी प्रमुखता से तीन बड़े बिन्दु बायीं ओर तथा तीन छोटे बिन्दु दायीं ओर दिखाए गए हैं। IX लेखिम के प्राचीन पाण्डुलिपि-रूप से भिन्नता दिखाने वाली दो अभिरसिक बिन्दु-चिह्नित रेखाएं हैं, तथा Tepoztlan चिह्न एक ढाल की आकृति को धारण करता है, जिस पर समान रूप में बनाई गई दो रेखाएं हैं।

चिन्ह 2 की, न तो माया Men (चित्र 2 सं० 30) से समानता है न अज़्तेक Quauhtli (एक गरुड़ का सिर) के साधारण रूप से। परन्तु Seler[7] ने Quauhtli (चित्र 2 सं० 29) के एक रूप को चित्रित किया है, जिसमें गरुड़ सिर पर कुछ धारण करता है जो बड़े ही रोचक ढंग से विशेषताओं में Tepoztlan आकृति से मिलता है। यह हमें चिह्न सं० 1 अथवा Cib पर ले आता है, जिसका हम पहले ही विवेचन कर चुके हैं। इससे परे भी एक चिह्न है जिसे

7. Caracti'ere des inscriptions Azteques et Mayas.

मैंने दिखाया नहीं है, क्योंकि वह बहुत ही कटा-फटा तथा पहचाना जाने के लिए दुर्बोध्य है और मैं अच्छी ड्राइंग भी नहीं कर पाया। यह चिह्न अज़्तेक Olin या माया Caban के साथ कोई समानता नहीं रखता।

चिह्न 11 अथवा Cimi के दायीं ओर पट्टी क्या दिखाती है? एक खाली स्थान जहाँ कि पत्थर टूट गया है। इस स्थान से आगे एक और चिह्न सं० 12 है। निस्सन्देह हम नहीं जानते कि इस खाली स्थान पर कोई चिह्न खोदे गए थे या नहीं—अथवा, यदि खोदे गए थे तो कितने—यद्यपि मुझे यह कहना चाहिए कि इस खाली स्थान पर केवल दो चिह्न होंगे। इस स्थान पर दो चिह्न मान लेने से संख्या में बारहवाँ चिह्न (संख्या में) चौदहवाँ हो जाएगा, जो अज़्तेक Calli अथवा माया Akbal की स्थिति है, परन्तु जिनमें से एक की भी इस चिह्न से समानता नहीं है। यह चिह्न रूढ़िगत सर्प का जबड़ा है जो मध्य-कालीन अमरीकी कला का प्रेरक है। इसलिए मेरा विचार है कि उस टूटे हुए स्थान पर कोई चिह्न मानने की आवश्यकता नहीं है, तथा हमारे पास यहाँ Cimi Miquiztli से पहले एक दिवस चिह्न है जो माया Chicchan (चित्र 2 सं० 3, 4) Aztec Coatl (सर्प) (चित्र 2 सं० 1, 2) है। सामान्य अज़्तेक रूप इस चित्र की सीमा तक रूढ़ नहीं किया गया है।

शायद ये ही चित्र थे जिनका Novelo ने अपने शब्दों में संकेत किया है : hay otros jeroglificos cuya interpretacion no ha sido posible de hacer, alguno de los cuales tienen Cierta semejanza con los Mayas. माया प्रभाव का वह इन शब्दों में संकेत देता है— parece existir en los relieves de origen tlahuica (Tepoztlan y xochicalco) cierta influencia maya cuya cultura florecio, en Mexico como se sabe en los primeros siglos de la Era Cristiana.

वह यह भी बताता है कि बहुत दूर-दूर के Chiapas तथा Guatemala क्षेत्रों से, जो कभी माया संस्कृति के क्षेत्र थे, आने वाले तीर्थयात्री तेपोज़्त्लान का मन्दिर देखने के आदी थे।

तथापि, मैक्सिको शहर से कुछ दूर इस स्थान पर लेखिमों द्वारा द्योतित उन दिवस चिह्नों का मिलना निश्चित रूप से अनपेक्षित है, जो 'चिब' एवं 'मानिक' की भांति दूरवर्ती मध्य-अमरीका में प्राचीन माया साम्राज्य की उन इमारतों पर उत्कीर्ण किए जा रहे थे, जो उस अज़्तेक मन्दिर के काल से भी एक दशाब्दी तथा उससे भी कुछ अधिक पहले की हैं, जिस पर ये रूप सामान्य अज़्तेक रूपों के साथ अदल-बदल कर प्रकट होते हैं। ये चिह्न-श्रेणियाँ पीछे की ओर क्यों लिखी गई थीं? यहाँ पुनः तुलना करने योग्य एकमात्र बात जो मैं सोच सकता हूँ, माया सम्बन्धी एक तथ्य है : माया शिलालेखों में एक संख्या-श्रेणी उस समय उल्टे क्रम में लिखी जाती है जब गणना पीछे की ओर, अतीत में की जा रही हो, अर्थात् किसी दूसरी तिथि की प्राप्ति के लिए जब मूल प्रारम्भिक तिथि में

से इसका कुल जोड़ घटाया जाता है, जोड़ा नहीं जाता। क्या यह तेपोज्त्ल शिलालेख तोनालामात्ल को भूतकाल में पीछे हटता हुआ दिखाना चाहता है।

हमें, यहाँ पहली बार एक प्रमाण प्राप्त होता है जो माया-चित्रलेखों तथा नहुअत्ल के बीच सुनिश्चित, स्पष्टतया प्रामाण्य पारस्परिक सम्बन्ध दिखाता है। मैक्सिकन तथा माया लेखिमों का सम्बन्ध, जो अपने-आप को कई स्थानों पर प्रकट करता है, एक सम्पूर्ण विषय है, जिसके बारे में मैं किसी अन्य समय विस्तारपूर्वक भाषायी दृष्टिकोण से विवेचन करने की आशा करता हूँ।

होपी क्रियाओं के कालबिन्दु-निष्ठ तथा खण्डात्मक पक्ष*

होपी भाषा की क्रियाएं, अपने क्रियार्थक पक्षों तथा वाच्यों के सम्पन्न एवम् अभिव्यंजक विकास के लिए विचारणीय हैं। मैं इस लेख में नौ वाच्यों (अकर्मक, सकर्मक, निजवाचक, कर्मवाच्य, अर्धकर्मवाच्य, परिणामवाचक, विस्तारित कर्म (वाच्य), सम्बन्धवाचक तथा समाप्ति सूचक) तथा नौ पक्षों (कालबिन्दुनिष्ठ, अवधिबोधक, खण्डात्मक, काल-बिन्दु-निष्ठ-खण्डात्मक, आरभमाण, वर्धमान, स्थान-बोधक, प्रक्षेपीय, सांत्तत्य-बोधक) में से केवल दो का विवेचन करूंगा। यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि यहाँ पूर्णताबोधक तथा अपूर्णताबोधक पक्ष नहीं हैं; क्योंकि वास्तव में होपी भाषा क्रिया की समाप्ति या असमाप्ति के वैषम्य को किसी प्रकार भी औपचारिक रूप नहीं देती। होपी के पक्ष भिन्न प्रकार के वैषम्यों को औपचारिक रूप देते हैं, जैसे दृश्य सत्ता के बिन्दु-स्थान तथा विस्तार-स्थान, तटस्थ दिक् अथवा स्थान से निरपेक्ष या फिर दोनों में। होपी में तीन काल भी हैं : तथ्यात्मक या वर्तमान-भूत, भविष्यत् तथा सामान्यीकृत अथवा प्रयोगात्मक। होपी क्रियाएं सात गणों या क्रियारूपों में विभक्त हैं जिनकी विभक्ति-व्यवस्था में थोड़ा-थोड़ा अन्तर है। पहले गण में, जो सबसे बड़ा तथा सबसे अधिक उत्पादक है, कुछ ऐसी कोटियाँ हैं जो दूसरे गणों में नहीं हैं। उन्हीं कोटियों में खण्डात्मक पक्ष भी हैं।

गण-1 का सरल रूप (व्यंजन स्वर व्यंजन स्वर) (CVCV) रूप वाली धातुमात्र है, और वह अन्य पुरुष एक वचन अकर्मक वाच्य, काल-बिन्दु-निष्ट पक्ष और वर्तमान-भूत काल में है। खण्डात्मक पक्ष की रचना इस धातु के अन्त्य अभ्यास, तथा आवधिक प्रत्यय *ta* जोड़ कर की जाती है, और यह पक्ष निम्न प्रकार के वैशिष्ट्य वाली सरल धातु के अर्थ में परिवर्तन करता है: धातु द्वारा द्योतित तथ्य, कालबिन्दु निष्ठ पक्ष में एक बिन्दु के चारों ओर व्यक्त, विस्तारित खण्डात्मक चरित्र वाले एक विशाल तथ्य की पुनरावृत्त अन्त:सम्बद्ध खण्डों की श्रेणी में आविर्भूत हो जाता है। इसका विस्तार प्राय: मुख्य रूप से एक ही विमा में होता है; और वह दिक् और काल या दोनों से निरपेक्ष है। इस परिवर्तन की प्रकृति उदाहरणों द्वारा अच्छी तरह समझायी जा सकती है।

---

* *Language* 12 : 127-131 (1936) **से पुनर्मुद्रित । यह लेख दिसम्बर** 1935 **में** Linguistic Society of America **के सम्मुख पढ़ा गया था ।**

ha'ri	यह एक वृत्ताकारिक कोण में झुका हुआ है	*hari'rita*	यह एक घुमावदार रेखा में उत्तरोत्तर वृत्ताकारित कोण बनाता हुआ स्थित रहता है। (उदाहरणार्थ सजावट के घुमावदार नमूनों में प्रयुक्त)
ho''ci	यह एक तीखा न्यून-कोण बनाता है	*hoci'cita*	यह टेढ़ा-मेढ़ा है ।
pa''ci	यह दान्तेदार है	*paci'cita*	यह दान्तेदार बनाया हुआ है
pi'va	यह नाली या मोरी युक्त है	*piva'vata*	यह क्रमिक मोरियों और नालियों में फैला हुआ है (क्षेत्र के विषय में कहा जाता है)
ca'mi	यह किनारे से अन्दर की ओर कटी हुई है	*cami'mita*	यह कटावदार है, यह किनारे के साथ-साथ कटाव के रूप में कटी हुई है

इनमें, तथा ऐसे ही अन्य उदाहरणों में तथ्य कुछ इस प्रकार का है कि इसे अपने प्रकटीकरण के क्षेत्र के लिए कठोर या अर्धकटोर पदार्थ अपेक्षित है। जब यह स्थिति होती है तो काल-बिन्दु-निष्ठ अकर्मक पक्ष कुछ कर्मवाच्य[1] के वैशिष्टय वाला होता है और खण्डात्मक पक्ष तथ्य को दिक् की एक विमा के साथ-साथ बहुगुणित रूप में ऐसे दिखाता है जैसे दो शीशों के मध्य एक मोमबत्ती की लौ। दोनों ही पक्षों में, तथ्य, स्थापित प्रभाव के रूप में, तथा तत्पश्चात् कटोर पदार्थ में सुरक्षित बना हुआ, अपने को प्रकट करता है, और हमारे समक्ष इस 'प्रभाव' की प्रभावशाली झांकी प्रस्तुत कर दी जाती है, क्योंकि इसकी प्रकृति दिक् में है ।

तथापि मान लीजिए कि धातु के द्वारा द्योतित तत्व ऐसा है जिसे अपने प्रकटीकरण-क्षेत्र के लिए अकठोर या चल पदार्थ अपेक्षित है, जैसे कोई भी तरल पदार्थ या चल अणुओं का पुंज। ऐसी स्थिति में पदार्थ की यह विरूपता, जिसका निरूपण धातु के द्वारा किया गया है, एक स्थायी विरूपता नहीं होगी, परन्तु उसका परिणाम

1. यह वास्तविक कर्मवाच्य नहीं है क्योंकि यहाँ कोई बाह्य कर्ता नहीं है, यह स्थैतिक (static) भी नहीं है (कम-से-कम साधारण अर्थों में बिल्कुल नहीं), क्योंकि यह कालगत अवधि का द्योतन नहीं करता; यह वास्तविक कर्तृवाच्य भी नहीं है, क्योंकि यहाँ क्रिया तथा परिणाम दोनों को ही एक रूप में दिखाया गया है ।

पदार्थ के अन्दर तरंगात्मक या स्पन्दनात्मक आलोड़न मात्र होगा। अंग्रेजी-भाषियों के दृष्टिकोण से अकर्मक अब 'निष्क्रिय' प्रतीत नहीं होगा, परन्तु निश्चित रूप से 'सक्रिय' होगा। साथ ही कालबिन्दु-निष्ठ पक्ष निरूपता के एक स्पन्दन का, या विकार का द्योतन करेगा, जबकि खण्डात्मक पक्ष स्पन्दन के समस्त अनुक्रम या क्षेत्र को द्योतित करेगा—दोनों, स्पेस के अन्तर्गत विस्तारित रूप में एवम् काल के अन्तर्गत निरन्तरता के रूप में।

अत: उदाहरणार्थ

wa'la	यह (अर्थात् एक तरल पदार्थ) कम्पायमान करता है, एक धक्का देता है।	*wala'lata*	यह लहरों में उछल रहा है, यह समुद्र को लात मार कर उछाल रहा है।
no'sa	बहुत से बाहर आते हैं (यह व्यक्तियों अथवा विषयों के लिए कहा गया है।)	*nosa'sata*	यह निरन्तर समूहों में बाहर आ रहा है, यह बाहर फूट पड़ रहा है, या बौछार कर रहा है (जैसे, यह फव्वारे पर लागू होता है।)

यह बात नोट कर लीजिए कि तरल पदार्थीय प्रपंचों के साथ खण्डात्मक पक्ष दोनों हैं—क्षणात्मक, काल-बिन्दु-निष्ठ के वैषम्य में, काल के अन्तर्गत 'आवधिक', काल-बिन्दु-निष्ठ के निश्चित रूप से 'पता लगाया हुआ' स्थान के वैषम्य में, दिक् में विस्तारित। कुछ तत्व दोनों में अर्थात् तरल एवम् कठोर पदार्थों में प्रकट होने की सामर्थ्य रखते हैं, विशेष रूप से वे जिनकी परिभाषा किसी विशेष प्रकार के रूपरेखात्मक शब्दों में दी गई हो:—जैसे *ta'ho* (यह तरंगित घुमाव प्रदर्शित करता है), या किसी को तरंगित करता है; *taho'hota* किसी तरल पदार्थ का संकेत करते समय इसका अर्थ होता है 'यह तरंगित हो रहा है,' उदाहरणार्थ तरल सतह, एक सांप (एक हिलती हुई रस्सी), परन्तु किसी अचल पदार्थ का संकेत करते समय इसका अर्थ है 'यह शंख की तरह का है' या 'यह तरंगित नमूना बनाता है'।

परन्तु, पुन: मान लीजिए कि धातु द्वारा द्योतित प्रपंच एक ऐसी शक्ति के परिणामस्वरूप उत्पन्न हुआ है, जिसे भौतिकी में बलाघूर्ण (Torque) (घूर्णन उत्पन्न करने की प्रवृत्ति) कहते हैं और जो किसी भी प्रभाव के प्रकट होने के लिए अपेक्षा करता है कि पदार्थ एक ऐसा पिण्ड हो जिसमें कम-से-कम किसी मात्रा में कठोरता हो और फिर भी कुछ मात्रा में दूसरे पिण्डों की सापेक्ष गतिशीलता की उसमें समार्थ्य हो। इस विषय में एक अकेली विकृति या विस्थापन, काल-बिन्दु-निष्ट के द्वारा 'द्योतित की गई' की तरह या तो एक दोलन होगा या इस पिण्ड का 'एक घुमाव' होगा, और वह धातु के अर्थ में विवक्षित मात्रा के अनुसार ही होगा। जबकि यदि प्रभाव निरन्तर बना रहता है तो यह दोलनों की शृंखला में या सतत घुमावों में निरन्तर चलता रहेगा, और यह भी सम्भव है कि उस समय

यह दिक् में किसी प्रकार का विस्तार प्राप्त न करे; तब यह खण्डात्मक पक्ष का अर्थ होगा। इस प्रकार के अर्थ के प्रकार हैं :—

wa'ya दोलायमान कम्पन करता है (हिलाए गए छोटे वृक्ष की तरह)।
sa'ya एक ओर से दूसरी ओर दोलन करता है।
pi·'ya पंखों के जोड़े की तरह फड़फड़ करता है।
ta'ya झकझोरने वाला कम्पन करता है।
so··'ya घेरा बनाता है (अक्ष पर घूमना तथा एक वृत्तांश में आगे बढ़ना।)
ro'ya एक घुमाव या ऐंठन बनाता है।
ri'ya द्रुतगति से चक्कर काटता है।

इस बात पर ध्यान देना काफी दिलचस्प है कि इन बलाघूर्ण गतियों में से (यद्यपि सभी नहीं) बहुत सी *ya* में अन्त होने वाली प्रकृतियों द्वारा द्योतित हैं। इस प्रकार के खण्डात्मक पक्ष अंग्रेज़ी के उन आवधिक रूपों के समान हैं जो स्पन्दनात्मक या आवर्ती गतियों का द्योतन करती हैं, जैसे :—

waya'yata	यह हिल रहा है	*pi·ya'yata*	यह पंख फड़फड़ा रहा है।
saya'yata	यह दोलायत हो रहा है	*so·.yata*	यह चारों ओर चक्कर काट रहा है।
roya'yata	यह आवर्त्तन कर रहा है	*riya'yata*	यह फिरक रहा है, तेजी से घूम रहा है।

mi·'ma 'लुड़कना' के विषय में, जहाँ घूमने के साथ पार्श्विक गति भी होती है, वहाँ हमें आवश्यक रूप से विस्तारित गति का पक्ष *mi'ma'mata'* 'यह लुढ़कता जा रहा है' में प्राप्त होता है।

तथ्य के इस सामान्य वर्ग का एक और प्रकार है जो काल-बिन्दु-निष्ठ रूप से एक धक्के, संघर्ष या अन्य आकस्मिक परन्तु अनिवार्य रूप से क्षणिक प्रकृति वाले विघूर्णन के रूप में प्रकट होता है एवम् उस स्पन्दनात्मक तथ्य से भी सम्बन्धित है जो प्राकृतिक जगत में धक्कों के द्रुत ताँतों में घटित होता है। ऐसे स्थानों पर अंग्रेज़ी में दो भिन्न प्रकृतियों का प्रयोग होता है, परन्तु होपी भाषा एक ही 'प्रकृति' के काल-बिन्दु-निष्ठ तथा खण्डात्मक पक्षों का प्रयोग करती है। निर्जीव जगत् में से एक उदाहरण है ti'li 'इसे हल्का सा धक्का लगता है'; *til'lita* यह स्पन्दन कर रहा है' (इंजन, डिब्बा या गाड़ी की तरह)। परन्तु होपी भाषा इस प्रकार के बहुत से तथ्यों को सजीव जगत् में भी देखती है, उदाहरणार्थ :

ti·'ri·	वह अचानक प्रारम्भ करता है	*ti'ri·'ri·ta*	वह कांप रहा है, हिल रहा है।
wi'wa	वह किसी चीज़ पर लड़खड़ाता है, या उसकी टागें अचानक पकड़ ली गई हैं, जैसे फांसे में बंधा हुआ घोड़ा।	*wiwa'wata*	वह लड़खड़ाता जा रहा है या लंगड़ाता जा रहा है।

ʃaro	उसके दांत किसी कठोर या कंकरीली चीज़ पर टकराते हैं, जैसे खाने में।	*ʃaro'rota*	वह जबर्दस्ती किसी कठोर पदार्थ पर दांत मार रहा है।
hero	वह अन्दर से अचानक थोथी गर्गल ध्वनि करता है	*herorota*	वह खुर्राटे भर रहा है।

ऐसे क्रियारूपों का प्रयोग शरीर या शरीरावयवों की तालयुक्त चेष्टाओं को व्यक्त करने के लिए भी प्रायः किया जाता है।

wiki	अपने स्थान से आगे बढ़े बिना वह पग उठाता है।	*wikikita*	वह एक स्थान पर पैर पीट रहा है या एक स्थान पर नाच रहा है।
Kwi'la	वह पग बढ़ाता है	***Kwitalata***	वह आगे चलता है (यह अंग्रेजी के Walking forward 'आगे चल रहा है' के समान नहीं है, क्योंकि वह अंग्रेजी अभिव्यक्ति लगभग काल-बिन्दु-निष्ठ है)
yoko	वह एक बार सिर हिलाता है	*yokokota*	वह सिर हिला रहा है।

इसके अतिरिक्त यह तथ्य एक सूक्ष्म माध्यम के भीतर एक बिन्दु पर विक्षोभ सम्बन्धी भी हो सकता है। उसे विज्ञान के अनुसार गैसीय या ईथरीय के रूप में वर्गीकृत किया जाएगा। ऐसा माध्यम स्पेस में गति या विस्तार के विषय में बहुत कम या बिल्कुल ही सूचना नहीं देता और इन विषयों में खण्डात्मक काल के अन्तर्गत केवल स्पन्दन व्यक्त करता है:

ri''pi	यह एक चमक देता है	*ri·pi'pita*	यह झिलमिला रहा है।
[1]*i·wi*	यह एक शोला देता है	[1]*pi·wiwita*	यह शोले दे रहा है।
[1]*i·mi·*	यह विस्फोट करता है, गोले की तरह शब्द करता है।	[1]*i·mi·mi·ta*	यह गड़गड़ा रहा है।

अन्त में, घटनाओं का ऐसा वर्ग भी है जिस पर खण्डात्मक पक्ष लागू नहीं होता। यह 'मानसिक', 'भावनामय', या अन्य 'आन्तरिक' या मनोवैज्ञानिक अनुभवों पर लागू नहीं होता। इसका सम्बन्ध केवल दृष्टिगोचर जगत् से है।

इस समस्त चर्चा का, केवल एकपक्ष के रूप दिखाने के अतिरिक्त और भी महत्त्व है। यह इस बात का दृष्टान्त है कि भाषा किस प्रकार अनुभव का व्यवस्थीकरण उपस्थित करती है। भाषा के विषय में हम यह सोचने को तो तैयार हैं कि भाषा केवल अभिव्यक्ति का एक तकनीक है, परन्तु यह अनुभूति करने की ओर हमारी प्रवृत्ति नहीं है, कि भाषा सर्वप्रथम संवेदी अनुभव की धारा का एक वर्गीकरण तथा व्यवस्था है, जिसका परिणाम एक विशेष जगत्-व्यवस्था में होता है; जगत्

का एक विशेष खण्ड जो आसानी से उस तरह के प्रतीकों द्वारा अभिव्यक्त किया जाता है जिस तरह के प्रतीकों को भाषा अपने प्रयोग में लाती है। दूसरे शब्दों में, भाषा एक अपरिष्कृत ढंग से परन्तु साथ ही साथ व्यापक तथा बहुमुखी ढंग से वही कुछ करती है जो विज्ञान करता है। हम अभी देख चुके हैं कि होपी भाषा किस प्रकार एक विशेष क्षेत्र की रूपरेखा खींचती है जिसे प्राचीन भौतिकी कहा जा सकता है। हम यह भी देख चुके हैं कि किस प्रकार अत्यधिक पूर्ण संगति तथा वैज्ञानिक सुनिश्चितता सहित प्रकृति के हर प्रकार के स्पन्दनात्मक तथ्यों का वर्गीकरण साधारण सी विकृतिपरक भिन्न प्रक्रियाओं द्वारा किया जाता है। प्रकृति के किसी विशेष प्रकार के विश्लेषण का परिणाम उपयुक्त रूप से बढ़ाया जा सकता है, और कुल मिलाकर यह वास्तविक भौतिकी के साथ इतना सुसंगत है कि उसका विस्तार बड़े उपयुक्त ढंग से उन बहुविध तथ्यों से किया जा सकता है, जो पूर्णतया आधुनिक वैज्ञानिक तथा तकनीकी संसार से सम्बन्ध रखते हैं—मशीनों तथा यन्त्रावलियों की गतियाँ, लहरप्रक्रियाएं तथा स्पन्दन, वैद्युतीय एवम् रासायनिक प्रपंच—अर्थात् वे चीज़े जिन्हें होपी लोग न तो जानते थे और न ही जिनकी कल्पना कर सकते थे तथा जिनके लिए हमारे पास भी निश्चित नामों का अभाव है। वास्तव में होपी लोगों के पास एक भाषा है जो इन रचनात्मक तथ्यों का विवेचन करने के लिए हमारी आजकल की नवीनतम वैज्ञानिक शब्दावली से भी अधिक सज्जित है। यह केवल इसलिए है कि उनकी भाषा दो अनुभवों के बीच एक सामान्य वैषम्य स्थापित करती है, जो वैषम्य एक ऐसे वैषम्य के समकक्ष है जिसका हमारे विज्ञान ने पता लगाया है, और वह सर्वव्यापक तथा प्रकृति में मूलभूत है। आधुनिक भौतिकी की धारणाओं के अनुसार प्रकृति के संसार में एक कण तथा स्पन्दनों के क्षेत्र का वैषम्य दिक् और काल, भूत, वर्तमान, तथा भविष्य के उन वैषम्यों की अपेक्षा अधिक मौलिक है जो वैषम्य हमारी भाषा हम पर थोपती है। होपी भाषा का पक्ष-वैषम्य, जिसका हमने अभी विवेचन किया है, क्रियापदों में अविकल्पी होने के कारण होपी-भाषा भाषियों को स्पन्दनात्मक तथ्य पर ध्यान देने और प्रेक्षण करने के लिए लगभग बाध्य कर देता है; और इसके अतिरिक्त उन्हें ऐसे तथ्यों के लिए नाम खोजने तथा उनका वर्गीकरण करने के लिए प्रोत्साहित करता है। वास्तव में भाषा स्पन्दनात्मक प्रपंचों के शब्दों में तथा उन काल-बिन्दु-निष्ठ घटनाओं में, जिनके साथ (शब्द) सम्बन्धित है, असाधारण रूप से सम्पन्न है।

विश्व का अमरीकी-इण्डियन स्वरूप*

मैं, यह मान लेना, निराधार समझता हूँ कि एक होपी की, जो केवल होपी भाषा तथा अपने समाज के सांस्कृतिक विचारों से ही अवगत है, दिक् तथा काल सम्बन्धी वे ही धारणाएँ हैं जो हमारी हैं; जिन्हें प्राय: अन्त:प्रज्ञा माना जाता है, तथा सामान्यत: सार्वभौम भी। विशेषत: उसकी काल-विषयक कोई ऐसी सामान्य धारणा अथवा अन्त:प्रज्ञा नहीं है, जिसमें काल, अबाध रूप से एक ऐसा प्रवाह-शील सांतत्यक हो, जिसमें विश्व की प्रत्येक वस्तु एक समान गति से अग्रसर होती है तथा भविष्य से निकल कर वर्तमान से होती हुई भूत में प्रविष्ट हो जाती है; या, जिसमें, इसकी विपरीत स्थिति में, प्रेक्षक निरन्तर कालावधि के प्रवाह में भूत से दूर, भविष्य के अन्दर ले जाया जा रहा हो।

दीर्घकालीन एवं ध्यानपूर्वक किए गए अध्ययन एवं विश्लेषण के पश्चात्, यह ज्ञात हुआ है, कि होपी भाषा में ऐसे कोई शब्द, व्याकरणिक रूप, संरचना या अभि-व्यक्तियां नहीं हैं जो उस ओर सीधा निर्देश करें जिसे हम काल कहते हैं, या भूत, वर्तमान, या भविष्य की ओर, या स्थायी अथवा चिर स्थायी की ओर, या गतिशील की अपेक्षा शुद्धगतिक के रूप में गति की ओर, (अर्थात् किसी विशेष प्रक्रिया में गतिशील प्रयत्न के प्रदर्शन की अपेक्षा 'दिक्' अथवा 'काल' में एक सतत स्थानान्तरण के रूप में), या 'स्पेस' का ऐसा ही निर्देश करे जिसमें विस्तार अथवा सत्ता के उस तत्व को छोड़ दिया गया हो, जिसे हम काल कहते हैं, और इसलिए विवक्षा के कारण एक ऐसा अवशेष छोड़ दे जिसे काल के रूप में निर्दिष्ट किया जा सके। अत: होपी भाषा में 'काल' का न तो अभिव्यक्तगत और न ही कोई विवक्षित निर्देश है।

---

* कुछ महत्त्वपूर्ण भाषायी टिप्पणियों के साथ इस लेख की पाण्डुलिपि उन कागजों में मिली जो व्होर्फ ने अपनी मृत्यु के समय छोड़े थे, तथा जिन्हें जार्ज एल ट्रेगर को सौंप दिया गया था। डा० ट्रेगर तथा डा० इ० ए० कोनार्ड ने बिना कोई विशेष परिवर्तन किए प्रकाशनार्थ इस पाण्डुलिपि का सम्पादन किया, और यह लेख यहाँ पर उसी रूप में प्रस्तुत किया गया है जिस रूप में यह *Int. J. Amer. Linguistics*, 16 : 67—72 (1950) में छपा था। आन्तरिक प्रमाण एवम् व्होर्फ के पत्र-व्यवहार में प्राप्त कुछ टिप्पणियों से यह संकेत मिलता है कि लेख सन् 1936 के आसपास लिखा गया था।

तथापि होपी भाषा विश्व के समस्त दृश्य-प्रपंच का व्यावहारिक, अथवा कार्यान्वयन के अर्थ में शुद्ध रूप से विवरण देने तथा स्पष्टीकरण करने में समर्थ है। अतः मैं यह मान लेना निराधार समझता हूँ कि होपी चिन्तन में ऐसी कोई धारणा है, जैसे, कल्पित अन्तर्दर्शिता द्वारा अनुभूत काल का प्रवाह है, या यह, कि एक होपी व्यक्ति की अन्तर्दृष्टि, 'सामग्रियों में से एक' के रूप में, उसे प्रदान करती है। यह ठीक इसी तरह है जैसे उकलीदस Euclidean के रेखागणित के अतिरिक्त भी कितने ही प्रकार के रेखागणित सम्भव हो सकते हैं, जो स्पेसीय समाकृतियों का वैसा ही परिशुद्ध विवरण दे सकते हैं। अतः यह सम्भव है कि विश्व के समग्र रूप से प्रामाणिक विवरण, हमारे काल तथा स्पेस सम्बन्धी सुपरिचित वैषम्यों का प्रयोग किए बिना भी दिए जा सकते हैं। आधुनिक भौतिकी का सापेक्षतावाद ऐसे ही दृष्टिकोणों में से एक है, जिसे गणितीय भाषा में कल्पित किया गया है तथा होपी का Weltanschauung एक दूसरा दृष्टिकोण है जो नितान्त भिन्न है, अगणितीय है तथा भाषायी है।

अतः होपी भाषा और संस्कृति में तात्विकी ठीक इसी तरह निहित है जैसे हमारे काल तथा स्पेस सम्बन्धी तथाकथित साधारण विचार (एक तात्विकी) में निहित हैं, अथवा सापेक्षतावाद सिद्धान्त में निहित हैं; तथापि, यह इन सब से भिन्न प्रकार की तात्विकी है। विश्व की संरचना का विवरण होपी पद्धति के अनुसार देने के लिए, जहाँ तक सम्भव हो सके, इस तात्विकी को, जो होपी में ही उचित रूप से वर्णनीय है, हमारी भाषा में अभिव्यक्त की जा सकने वाली समानता के द्वारा 'सुस्पष्ट' करने का प्रयत्न करना चाहिए। यह सत्य है कि समानता कुछ अपर्याप्त होगी, तथापि ऐसी धारणाओं का लाभ उठाते हुए प्रयत्न करना चाहिए जिन्हें हमने होपी के विश्व-विषयक विचारों की आधारभूत व्यवस्थाओं के सापेक्ष आनुकूल्य द्वारा बनाया है।

इस होपी दृष्टिकोण में काल अदृश्य हो जाता है, तथा इस तरह बदल दिया जाता है कि वह अब अधिक देर तक हमारी कल्पित अन्तर्प्रज्ञा या श्रेण्य न्यूटिनी विधि का समरूप तथा तात्कालिक कालरहित स्पेस नहीं रहता। इस के साथ साथ नई धारणाएँ तथा अमूर्तताएँ चित्र में आ उभरती हैं, और इस प्रकार के काल या स्पेस के बिना विश्व का वर्णन करने का काम अपने हाथ में ले लेती हैं। ये ऐसी अमूर्तताएँ हैं जिनके लिए हमारी भाषा में पर्याप्त शब्दावली का अभाव है। ये अमूर्तताएँ जिनकी समानता पर हम अपने लिए होपी की तात्विकी का पुनर्निर्माण करने का प्रयत्न करते हैं, हम में निश्चित रूप से मनोवैज्ञानिक या सम्भवतः रहस्यवादी वैशिष्ट्य से युक्त प्रतीत होंगी। ये विचार वे हैं, जिन्हें हम तथाकथित जीववादी या प्राणतत्ववादी विश्वासों का अनिवार्य अंग समझने के अभ्यासी हैं, या केवल रहस्यवादी की चेतना द्वारा ही अनुभव किए जा सकने वाले उन अदृश्य पदार्थों की अन्तर्दृष्टियाँ तथा अनुभूतियों के अलौकिक एकीकरण का अंग समझने के, या उनका अंग मानने के आदी

हैं, जिनका विवरण विचारों की तथाकथित रहस्यविद्या और (या) गुप्तविद्या-व्यवस्थाओं में मिलता है। ये अमूर्तताएँ, निश्चित रूप से, होपी भाषा के स्पष्ट शब्दों में मिलती हैं, या इससे भी अधिक उस भाषा की संरचना तथा व्याकरण में अन्तर्गूढ़ है तथा होपी संस्कृति एवं व्यवहार में भी अभिलक्षित हैं। होपी भाषा तथा संस्कृति के वस्तुनिष्ठ विश्लेषण करने के मेरे प्रयत्न में, जहाँ तक मैं ध्यानपूर्वक दूर रख सका हूँ, वे दूसरी व्यवस्थाओं के प्रक्षेपण नहीं हैं। तथापि, यदि MYSTICAL (रहस्यात्मक) शब्द-संयोग आधुनिक पाश्चात्य वैज्ञानिक की दृष्टि में एक गाली हो तो यहाँ इस बात पर अवश्य बल देना चाहिए कि होपी तात्विकी की ये आधारभूत, अमूर्तताएँ एवं अभिधारणाएँ, निष्पक्ष दृष्टि में, व्यावहारिक तथा प्रयोगात्मक दृष्टि से समान रूप में (या होपियों के लिए कुछ अधिक) न्यायसंगत हैं; विशेषतः जब हम उनकी तुलना अपनी तात्विकी के प्रवाहशील काल तथा स्थिर स्पेस से करते हैं, जो मूल में उतने ही रहस्यात्मक हैं। होपी की अभिधारणाएँ सभी तथ्यों एवं उनके सम्बन्धों का समान रूप से वर्णन करती हैं, तथा होपी संस्कृति के सभी पक्षों में संघटन लाने के लिए अधिक अच्छी तरह सहयोग देती हैं।

हमारी भाषा, चिन्तन, एवं संस्कृति की आधारभूत तात्विकी (मैं यहाँ आधुनिक एवं बिल्कुल भिन्न आधुनिक विज्ञान की सापेक्षतावादी तात्विकी की बात नहीं करूँगा) विश्व पर दो महान ब्रह्माण्डीय रूपों 'स्पेस' तथा 'काल' का आरोपण करती है, स्थिर त्रिविमात्मक अनन्त स्पेस, तथा शुद्धगतिक एकविमात्मक समरूप में तथा सतत प्रवाहशील काल—जो वास्तविकता के दो नितान्त पृथक् तथा असम्बद्ध पक्ष हैं (इस परिचित चिन्तन-प्रणाली के अनुसार)। काल का प्रवाहशील साम्राज्य, पुनः, त्रिधा विभाजन का विषय है: भूत; वर्तमान तथा भविष्य।

होपी तात्विकी के भी अपने ब्रह्माण्डीय रूप हैं, जो अनुपात में, तथा विस्तार में, इन्ही के तुल्य हैं। वे क्या हैं ? यह तात्विकी विश्व पर दो भव्य रूपों का आरोपण करती है, जिन्हें शब्दावली की प्रथम निकता के रूप में हम Manifested 'आविर्भूत' तथा Manifesting 'आविर्भूत होती हुई' (या Unmanifest अनाविर्भूत) या पुनः Subjective 'आत्मनिष्ठ' तथा Objective 'वस्तुनिष्ठ' कहेंगे। वस्तुनिष्ठ या आविर्भूत वह सभी कुछ है जो इन्द्रियगम्य है ऐसा ऐतिहासिक भौतिक विश्व जो वास्तव में वर्तमान और भूत में भेद दिखाने का कोई प्रयत्न नहीं करता, परन्तु उस सब का बहिष्कार करता है जिसे हम भविष्य कहते हैं। 'आत्मनिष्ठ' या 'आविर्भूत होता हुआ' 'MANIFESTING' वह सब कुछ है, जिसे हम भविष्य कहते हैं, परन्तु इतना ही नहीं, इसमें समान रूप से तथा अप्रभेद्य रूप से वह सब कुछ सम्मिलित है जिसे हम मानसिक कहते हैं—प्रत्येक वस्तु जो मन में रहती है, या प्रकट होती है, या होपी जिसे 'हृदय में' कहना अधिक उचित समझेंगे, न केवल मनुष्यों के हृदयों में अपितु पशुओं, पौधों तथा वस्तुओं के, प्रकृति के सभी रूपों, तथा प्रतीतियों के अन्दर तथा पीछे प्रकृति के हृदय में, तथा जिसकी अनुभूति एक से अधिक मानवशास्त्रियों ने

निहितार्थता एवं विस्तारण द्वारा की है; तथापि, स्वयं किसी होपी द्वारा इसकी चर्चा नहीं की जायेगी क्योंकि स्वयं यह विचार ब्रह्माण्ड के हृदय के अन्तर्गत धार्मिक तथा जादू सम्बन्धी श्रद्धायुक्त भीति से भरा हुआ है। आत्मपरक क्षेत्र (हमारे दृष्टि-कोण से आत्मपरक परन्तु होपी के लिए अत्यन्त वास्तविक तथा जीवन, शक्ति एवं ऊर्जा से स्फुरणशील) न केवल हमारे भविष्य को समाविष्ट करता है, जिसके अधि-कांश रूप को होपी, यदि सुनिश्चित 'रूप' में नहीं तो 'साररूप' में लगभग पूर्व-निर्धारित मानता है, परन्तु सारी मनोवृत्ति, बौद्धिकता, (करण) तथा मनोभाव; जिसका सार एवं विशिष्ट रूप है ....चेतना के लक्षण से युक्त, सप्रयोजन इच्छा का आविर्भाव की ओर प्रयास'—उस आविर्भाव की ओर प्रयास, जो बहुत अधिक प्रतिरोधित एवं विलम्बित है, परन्तु किसी न किसी रूप में अवश्यम्भावी है। यह एक क्षेत्र है 'प्रत्याशा' का, कामना एवं प्रयोजन का, जीवन को सशक्त बनाने का, निमित्त कारणों का, उस विचार का, जो आन्तरिक क्षेत्र (होपी हृदय) से स्वयं चिन्तन के रूप में बाहर प्रकट हो रहा है। यह एक गतिशील अवस्था में है, तथापि यह गति की अवस्था नहीं है—यह किसी भविष्य से निकल कर हमारी ओर नहीं बढ़ रहा है, परन्तु सक्रिय एवं मानसिक रूप में पहले से ही हमारे साथ है, तथा इसकी गतिशीलता, परिणाम तक पहुंचाने में या प्रकटीकरण के क्षेत्र में सक्रिय है, अर्थात् आत्मनिष्ठ से गति के बिना क्रमशः उस परिणाम की ओर विकसित होने में सक्रिय है जो वस्तुनिष्ठ है। अंग्रेज़ी में अनुवाद करते समय एक होपी भाषी कह सकता है कि ये इकाइयां जो कारणता की प्रक्रिया में हैं 'will come' (आयेंगी) या वे—होपी 'Will Come to them' (उनके पास आयेंगे); परन्तु उनकी अपनी भाषा में कोई ऐसी क्रिया नहीं है जो हमारे Come या go के सदृश हो, जिनका अर्थ 'सरल एवं सामान्य गति' हो, हमारी निरी शुद्धगतिक धारणा। इस विषय में वे शब्द, जिनका अनुवाद Come होता है, परिणाम तक पहुंचाने वाली प्रक्रिया का निर्देश, उसे 'गति' कहे बिना ही करते हैं—वे हैं 'यहाँ परिणाम तक पहुंचाता है' (pewi), या 'इस से दूर परिणाम तक पहुंचता है' (angqo), या 'पहुंच गया' (pitu बहुवचन OKI) जो केवल अन्त्य आविर्भाव का निर्देश करते हैं अर्थात् किसी विशेष स्थान पर वास्तविक रूप में पहुंचने का, न कि इसकी पूर्ववर्ती किसी गति का।

आत्मनिष्ठ का यह क्षेत्र या आविर्भाव की प्रक्रिया का क्षेत्र जो इस विश्वव्यापी प्रक्रिया के परिणामभूत वस्तुनिष्ठ के क्षेत्र से पृथक् है, सीमान्त क्षेत्र में, परन्तु फिर भी अपने क्षेत्र में, अस्तित्व के उस पक्ष को सम्मिलित करता है जिसका समावेश हम अपने वर्तमान काल में करते हैं। यह वह है जो आविर्भूति में

---

1. **इस विचार का कभी-कभी उल्लेख 'प्राण' की आत्मा (hikwsu) तथा किसी महान शक्ति के रूप में (?a'ne himu) किया गया है। इन शब्दों का कुछ निम्न एवम् कुछ कम ब्रह्माण्डीय अर्थ भी हो सकता है यद्यपि उसमें भयावहता का पुट अवश्य रहता है।**

विकसित होना आरम्भ कर रहा है, अर्थात् कोई चीज़ जिसका किया जाना आरम्भ हो रहा है, जैसे 'सोना आरम्भ करने लगा है' या 'लिखना शुरू करने लगा है' (going to sleep or starting to write) परन्तु अभी पूरी तरह सक्रिय नहीं है। इसका निर्देश उसी क्रियारूप [होपी व्याकरण की मेरी शब्दावली में 'Expective form' प्रत्याशी रूप] द्वारा किया जा सकता है, और प्रायः किया भी जाता है, जो हमारे 'भविष्य' या 'होना', 'इच्छा करना', 'आवश्यकता होना', 'इरादा करना', 'ठान लेना' आदि का निर्देश करता है। अतः आत्मनिष्ठा का यह निकटतर छोर बाहर निकल आता है, तथा हमारे वर्तमान काल के अंश को सम्मिलित कर लेता है, जैसे प्रारम्भ का क्षण; परन्तु होपी योजना में हमारे वर्तमान का अधिकतर अंश वस्तुनिष्ठ क्षेत्र के अन्तर्गत आता है, और इस प्रकार वह हमारे भूतकाल से अप्रभेद्य है। होपी में एक अन्य क्रिया-रूप (Inceptive) आरम्भमाण भी है जो उद्गामी आविर्भूति के छोर का निर्देश उल्टे ढंग से करता है—अर्थात् वस्तुनिष्ट से सम्बन्धित के रूप में, उस छोर के रूप में जिस पर वस्तुनिष्ठता प्राप्त की जाती है; इसका प्रयोग आरम्भ करने, या प्रवर्तित करने की क्रिया अभिलक्षित करने के लिए किया जाता है, और अधिकांश दृष्टान्तों में प्रत्याशी के मिलते-जुलते प्रयोग के अनुवाद से इसका कोई स्पष्ट अन्तर नहीं है। परन्तु कुछ विशेष निर्णायक स्थलों पर महत्त्वपूर्ण एवं मौलिक अन्तर प्रकट हो जाते हैं। आरम्भमाण, जो वस्तुनिष्ठ एवं परिणाम-पक्ष का निर्देश तो करता है परन्तु प्रत्याशी की तरह आत्मपरक एवं कारणात्मक पक्ष का निर्देश नहीं करता, वह आरम्भमाण एक ही सांस में कारणता के कार्य की समाप्ति का संकेत देता है तथा आविर्भूत के आरम्भ की अभिव्यक्ति करता है। यदि क्रियापद में कोई ऐसा प्रत्यय है जो कुछ-कुछ हमारे कर्मवाची के समकक्ष माना जा सके, परन्तु उसका वास्तविक अर्थ यह हो कि कारणता 'प्रयोग-वस्तु' के ऊपर एक विशेष परिणाम उत्पन्न करने के लिए टकराती है—अर्थात् 'खाना खाया जा रहा है' तो उसमें निर्देश करने वाले आरंभमाण प्रत्यय का जोड़ना कारण सम्बन्धी 'अवसान' के अर्थ को उत्पन्न करता है। मौलिक क्रिया आरम्भमाण अवस्था में हैं; अतः जो कुछ कारणता इसके पीछे है वह समाप्त हो रही है। यहाँ कारण-वाचक प्रत्यय द्वारा स्पष्ट रूप से अभिलक्षित कारणता ऐसी ही है जिसे हम भूतकाल कहते हैं, और उस क्रिया-पद में सम्मिलित है—यह (भूत) तथा आरम्भ-माणी, तथा एककथन में अन्तिम अवस्था (आंशिक अथवा पूर्णतया खाए गए (पन) की अवस्था) का अकारणीयकरण। इसका अनुवाद होगा It stops getting eaten 'यह खाया जाना समाप्त होता है'। आधारभूत होपी तात्विकी को जाने बिना यह समझना असम्भव हो जायेगा कि एक ही प्रत्यय किस प्रकार प्रवर्तन अथवा समापन को द्योतित कर सकता है।

यदि हमें अपनी तात्विक शब्दावली होपी तकनीकी शब्दों के समान बनानी हो, तो हमें सम्भवतः आत्मपरक क्षेत्र के विषय में 'आशा का' या 'आशा करने के

क्षेत्र' के रूप में बात करनी चाहिए। प्रत्येक भाषा में इस प्रकार के शब्द हैं, जिन्हें अर्थ का ब्रह्माण्डीय विस्तार प्राप्त हो जाता है, तथा जो अपने अन्दर एक असूत्रित दर्शन की मौलिक अभिधारणाओं का क्रिस्टलीकरण कर लेते हैं या निश्चित रूप धारण कर लेते हैं, जिसमें एक जाति के, एक संस्कृति के, समाज के, यहाँ तक कि एक युग के, विचार निहित होते हैं। हमारे ऐसे शब्द हैं Reality (वास्तविकता) Substance (पदार्थ) Matter (द्रव्य) Cause (कारण) तथा Space (स्पेस) Time (काल) Past (भूत) Present (वर्तमान) तथा Future (भविष्य) आदि जिनका विवेचन हम अभी कर चुके हैं। होपी भाषा में इसी प्रकार का एक शब्द है जिसका अनुवाद प्रायः 'आशा' किया जाता है, Tunatya 'यह आशा करने की प्रक्रिया में है, यह आशा करता है; इसके लिए आशा की जाती है, यह आशायुक्त होकर सोचता है, या यह आशा सहित सोचा जाता है' इत्यादि। होपी के अधिकांश तात्विकी शब्द क्रियाएं हैं—वे योरोपीय भाषाओं की तरह संज्ञापद नहीं हैं। Tunatya क्रियापद अपने 'आशा' के भाव में हमारे Thought (विचार) desire (कामना), तथा cause (कारण) आदि शब्दों के कुछ तत्व निहित रखता है, जिन्हें कभी-कभी इसका अनुवाद करने के लिए प्रयुक्त करना चाहिए। यह शब्द वास्तव में वह 'पद' है जो होपी 'वस्तुनिष्ठ तथा आत्मनिष्ठ' के महान द्वैत सम्बन्धी विश्व-दर्शन का क्रिस्टलीकरण करता है। यह ब्रह्माण्ड के आत्मपरक, अप्रकट, मौलिक तथा कारणात्मक पक्ष का निर्देश करता है, तथा फलप्राप्ति एवं प्रकटन के प्रति उस उत्तेजक क्रिया का निर्देश करता है जिससे वह खौलती रहती है—'आशा करने की एक क्रिया'; अर्थात् मानसिक कारणात्मक क्रिया, जो सदैव आविर्भूत क्षेत्र पर तथा क्षेत्र के अन्दर दबाव डालती रहती है। जैसे होपी समाज से परिचित कोई भी व्यक्ति जानता है कि होपी इस प्रस्फुटन-क्रिया को बढ़ते हुए, पौधों में बादलों के बनने में, तथा वर्षा के रूप में, तथा उनके घनीभाव में, कृषि तथा वास्तुकला की सामाजिक क्रियाओं की सुविचारित योजनाओं तथा मनुष्य के सभी आशा करने, इच्छा करने, प्रयास करने, तथा ग्रहण करने के विचार में, तथा जैसे यह सबसे अधिक विशिष्ट रूप में प्रार्थना में संकेन्द्रित है, होपी सम्प्रदाय की निरन्तर आशान्वित प्रार्थना में, जिसका सहयोग लोक प्रचलित साम्प्रदायिक 'अनुष्ठान' एवं 'रहस्य' देते हैं। जमींदोज कीवों में गुह्य कर्मकाण्ड—ऐसी प्रार्थनाएं हैं, जो सामूहिक होपी-विचार तथा इच्छाशक्ति के दबाव का संचालन आत्म-निष्ठ से वस्तुनिष्ठ तक ले जाने के लिए करती है। tun'atya के आरंम्भमाण रूप tun'atyava का अर्थ 'आशा करना आरम्भ करता है' नहीं होकर 'आशा करने पर आशा सच हो जाती है' (अर्थात्, पूर्ण हो जाती है) होगा। तर्कसंगत रूप से इसका यह अर्थ क्यों होना चाहिए ? यह, जो कुछ पहले कहा जा चुका है, उससे स्पष्ट हो जाना चाहिए। आरंभमाण, वस्तुनिष्ठ की पहली आविर्भूति को द्योतित करता है, परन्तु tun'atya का मौलिक अर्थ आत्मनिष्ठ क्रिया या शक्ति है, अतः ऐसी क्रिया का 'आरंभमाण', उसकी समाप्ति अथवा उसकी

अन्तिम स्थिति है। तब यह कहा जा सकता है कि tun'atya 'सच' होना आत्मनिष्ठ के वैषम्य में, वस्तुनिष्ठ के लिए होपी पद है। दोनों पद एक ही धातु के रूप-रचनापरक दो भिन्न अर्थभेद हैं, जैसे कि दो ब्रह्माण्डीय स्वरूप एक ही वास्तविकता के दो पक्ष हैं।

जहाँ तक स्पेस का सम्बन्ध है, आत्मनिष्ठ एक मानसिक साम्राज्य है, वस्तुनिष्ठ अर्थों में एक 'साम्राज्य' जिसमें स्पेस है ही नहीं। परन्तु यह प्रतीकात्मक रूप में ऊर्ध्वाधर विमा से सम्बन्धित प्रतीत होता है, तथा इसके ध्रुव, शिरो-बिन्दु एवं भूगर्भस्थ हैं, तथा वस्तुओं का 'हृदय' भी है जो आलंकारिक ढंग से हमारे inner (आन्तरिक) शब्द के सदृश है। वस्तुनिष्ठ संसार में प्रत्येक बिन्दु के समकक्ष एक ऐसा ऊर्ध्वाधर तथा सशक्त रूप से आन्तरिक अक्ष है, जिसे हम भविष्य का उद्गमस्रोत कहते हैं। परन्तु होपी के पास कोई कालात्मक 'भविष्य' नहीं है, आत्मनिष्ठ स्थिति में ऐसी कोई चीज़ नहीं है जो वस्तुनिष्ठ अवस्था में मिलने वाली परिवर्तनशील भौतिक समाकृतियों तथा दूरियों से बंधे हुए क्रमों तथा अनुक्रमों के सदृश हो। प्रत्येक आत्मनिष्ट अक्ष से, जिसे लगभग ऊर्ध्वाधर अक्ष तथा पौधे के वर्धन अक्ष के समान माना जा सकता है, वस्तुनिष्ठ साम्राज्य का विस्तार प्रत्येक भौतिक दिशा में होता है, यद्यपि ये दिशाएँ अधिक विशिष्ट रूप से क्षैतिज स्तर तथा चार मौलिक दिग्बिन्दुओं द्वारा प्रदर्शित की गई हैं। 'वस्तु-निष्ठ' विस्तार का एक महान ब्रह्माण्डीय रूप है, यह अस्तित्व के सभी, निश्चित रूप से विस्तारात्मक पक्षों का समावेश कर लेता है, तथा यह सभी अन्तरालों एवं अन्तरों को सम्मिलित कर लेता है––सभी अनुक्रमीकरण एवं संख्याओं को (सम्मिलित कर लेता है)। होपी के (DISTANCE) **फासले** में वह सब सम्मिलित है जिसे पहले ही घट चुकी घटनाओं के बीच कालिक सम्बन्ध के अर्थ में काल कहते हैं। होपी लोग 'काल' तथा गति की धारणा वस्तुनिष्ठ साम्राज्य के अन्तर्गत शुद्ध रूप से व्यापारात्मक अर्थ में बनाते हैं––जो घटनाओं को मिलाने वाले व्यापारों की विशालता एवं जटिलता का विषय है––जिससे कि 'काल' का तत्व भी इन व्यापारों में भाग लेने वाले किसी भी स्पेस के तत्व से पृथक् न किया जाए। भूतकाल में दो घटनाएँ एक लम्बे 'काल' (होपी में 'काल' के समकक्ष कोई शब्द नहीं है) के अन्तर से तब घटित हुई मानी जाती हैं, जब बहुत सी आवर्ती भौतिक गतियाँ उनके बीच इस प्रकार घटित हो चुकी हों, जिससे कि वे बहुत दूर तक चल लें, या दूसरी विधियों से भौतिक प्रदर्शन का विशाल आकार संकलित कर लें। होपी तात्विकी इस प्रकार के प्रश्न कि क्या दूरवर्ती गांव में, भी पदार्थों का प्रस्तुत क्षण में इसी प्रकार अस्तित्व है जैसे कि उनके अपने गाँव में नहीं उठाती; क्योंकि इस विषय में यह स्पष्ट शब्दों में व्यावहारिक है, और कहती है कि दूरवर्ती गाँव में घटित होने वाली किन्हीं घटनाओं की तुलना अपने गाँव की किन्हीं भी घटनाओं से की जा सकती है। वह तुलना केवल एक ऐसे आकार के अन्तराल द्वारा की जा सकती है, जिसके अन्तर्गत 'काल' एवं 'स्पेस' दोनों ही के रूप हैं।

प्रेक्षक से दूरी पर होने वाली घटनाएँ वस्तुनिष्ठ रूप में ही उस समय जानी जा सकती हैं, जब वे भूत (कालिक) हों (अर्थात् वस्तुनिष्ट में रखी जा चुकी हों) तथा अधिक दूर हो चुकी हों, अधिक 'भूत-कालिक' हों (आत्मनिष्ट की ओर से जिन पर अधिक कार्य किया गया हो)। होपी भाषा, जो हमारी संज्ञा-पदों के प्रति अभिरुचि की अपेक्षा क्रिया-पदों को अधिक पसन्द करती है, हमारे वस्तु विषयक प्रस्तावों को घटना विषयक प्रस्तावों में निरन्तर बदलती रहती है। किसी दूरवर्ती गाँव में क्या घटना घटती है यदि एक अनुमान (आत्मनिष्ट) नहीं, अपितु एक वास्तविक घटना (वस्तुनिष्ठ), यहाँ केवल बाद में जानी जा सकती है। यदि वह 'इस स्थान' पर घटित नहीं होती तो वह **इस समय** घटित नहीं होती, यह **उस स्थान पर** और **उस** समय घटित होती है। 'यहाँ' की घटना, तथा 'वहाँ' की घटना दोनों ही वस्तुनिष्ठ हैं, जो सामान्य रूप से हमारे भूतकाल के समान हैं, परन्तु वहाँ घटित घटना वस्तुनिष्ठ रूप से अधिक दूरवर्ती है, हमारे दृष्टिकोण से जिसका अर्थ है कि जैसे 'यहाँ' घटित घटना से वह स्पेस में अधिक दूर है वैसे ही भूतकाल में भी हम से दूर है।

जैसे कि वस्तुनिष्ठ साम्राज्य अपने विस्तार परक विशेष वैशिष्ट्य का प्रदर्शन करता हुआ प्रेक्षक से दूर—उस अज्ञेय दूरी की ओर फैल जाता है, जो दोनों प्रकार से दूर है, अर्थात् स्पेस में बहुत दूर तथा काल में दीर्घातीत है, तब तक ऐसी स्थिति आती है, जहाँ विस्तार अपने विस्तृत विवरण में ज्ञेय होना बन्द हो जाता है तथा विशाल दूरी में खो जाता है, और जहाँ आत्मनिष्ठ मानों दृश्यों के पीछे से खिसकता हुआ वस्तुनिष्ठ में लीन हो जाता है, ताकि प्रेक्षक से—सभी प्रेक्षकों से—इस कल्पनातीत दूरी पर, सभी को अपने परिवेश में अन्तर्विष्ट करने वाला वस्तुओं का एक अन्त तथा आदि है, जहाँ पर यह कहा जा सकता है कि स्वयं अस्तित्व आत्मनिष्ठ एवं वस्तुनिष्ठ को निगल जाता है। इस साम्राज्य की सीमान्त भूमि इतनी ही 'आत्मनिष्ठ' है जितनी कि यह 'वस्तुनिष्ठ'। यह प्राचीनता का तल रहित गर्त है, 'काल' तथा 'स्थान' कथाओं की वस्तु है जिन्हें केवल आत्मनिष्ठ रूप से या मानसिक रूप से जाना जा सकता है। होपी लोग यह अनुभव करते हैं और प्राय: अपने व्याकरण में अभिव्यक्त भी करते हैं कि वे चीज़ें जिन्हें कथाओं या कहानियों में बताया जाता है, वे इसी प्रकार से प्रामाणिक एवं वास्तविक नहीं होती जैसे कि वर्तमान समय की चीज़ें तथा व्यावहारिक उपादेयता की चीज़ें। जहाँ तक आकाश की आत्यन्तिक दूरी तथा नक्षत्रों का सम्बन्ध है, उनके विषय में जो जाना जाता है, या समझा जाता है, वह सब कल्पनापरक है, अनुमानात्मक है—अत: एक प्रकार से आत्मपरक है, जिसकी प्राप्ति अवलोकन तथा संचलन (गति) की वस्तुनिष्ठ दूरियों तथा वस्तुनिष्ठ प्रक्रियाओं की अपेक्षा आन्तरिक ऊर्ध्वाधर अक्ष तथा शिरोबिन्दु के ध्रुव के माध्यम से अधिक की जाती हैं। पुराणकथाओं का धुन्धला अतीत, पृथ्वी पर (स्वर्लोक में नहीं) उसकी समकक्ष वह दूरी है जो आत्मनिष्ठ रूप से वास्तविकता के ऊर्ध्वाधर

अक्ष के द्वारा पातालीय ध्रुव के मार्ग से प्राप्त की जाती है—अतः यह पृथ्वी के प्रस्तुत तल से नीचे रखी जाती है, यद्यपि इसका यह अर्थ नहीं है कि मौलिक पुराणकथाओं का पाताल-लोक एक सूराख या कन्दरा है जैसा कि हम सामान्यतः समझने की गलती कर सकते हैं। यह Palatkwapi 'लाल पर्वतों पर' है; एक भूमि जो हमारी पृथ्वी की तरह है परन्तु जिसके साथ हमारी भूमि का सम्बन्ध एक दूरस्थ आकाश का सा है—और इसी प्रकार हमारी पृथ्वी का आकाश भी कथाओं के सूरमाओं द्वारा आक्रान्त रहा है, जिन्हें वहाँ पृथ्वी जैसा ही एक अन्य क्षेत्र प्राप्त होता है।

अब यह समझा जा सकता है कि होपियों को किस प्रकार उन पदों के प्रयोग की आवश्यकता नहीं जो यथार्थ स्पेस अथवा काल के रूप का निर्देश करते हों। हमारी भाषा में ऐसे पद हमारी विस्तार की, व्यापार की, तथा चक्रीय प्रक्रियाओं की अभिव्यक्तियों में ढाल दिए जाते हैं, बशर्ते कि वे वस्तुनिष्ठ साम्राज्य का निर्देश करते हों। उन्हें आत्मनिष्ठता की अभिव्यक्तियों में ढाल दिया जाता है, यदि वे आत्मनिष्ठ साम्राज्य, 'भविष्य', वित्तीय मानसिक, पुराणकथा काल तथा अदृश्य रूप से दूरस्थ तथा सामान्यतः अनुमानपरक का निर्देश करते हों। अतः होपी भाषा अपने क्रिया-पदों के लिए कालों के बिना ही अपना कार्य सुचारू रूप से चलाती है।

आदिम समाजों में चिन्तन का भाषायी विवेचन*

किसी जीवित आदिम संस्कृति के अध्ययन में व्यस्त नृकुलविज्ञानी ने प्राय: आश्चर्य किया होगा; 'कि ये लोग क्या सोचते हैं ? कैसे सोचते हैं ? क्या इनकी बौद्धिक तथा तर्कसम्मत प्रक्रियाएँ हमारे समान हैं या मौलिक रूप से भिन्न हैं ?" परन्तु सम्भवत: उसने इस विचार को मनोवैज्ञानिक ,पहेली समझ कर त्याग दिया है और तेज़ी से अपना ध्यान अधिक सरलतापूर्वक निरीक्षणीय पदार्थों की ओर पुन: लगा दिया। फिर भी, आदिम समाज में विचार तथा चिन्तन की समस्या शुद्ध रूप से मनोवैज्ञानिक तथा केवल मनोवैज्ञानिक समस्या नहीं है। यह बहुत अधिक मात्रा में सांस्कृतिक है। इसके अतिरिक्त यह अधिकतर सांस्कृतिकों तथ्यों के 'विशेषतया संसक्तिशील समुच्चय' का विषय है जिसे हम भाषा कहते हैं। यह समस्या भाषा-विज्ञान की सहायता से सुलझाई जा सकती है, और जैसा कि मुझे सिद्ध करने की आशा है कि इस समस्या को सुलझाने के माध्यम

---

* यह लेख मुझे बिना तारीख की हस्तलिखित पाण्डुलिपि के रूप में उनके काग़ज़ों में से प्राप्त हुआ जिन्हें व्होर्फ ने अपनी पत्नी के पास छोड़ दिया था और कुछ ही समय पहले वे उसके बेटे राबर्ट व्होर्फ को सौंप दिए गये थे। पाण्डुलिपि पूर्ण प्रतीत हुई (केवल कुछ पादटिप्पणियों को छोड़कर)। परन्तु यह लगभग अपरिष्कृत अवस्था में थी, जिस पर मेरे लिए कुछ सम्पादकीय कार्य करना आवश्यक हो गया। पाण्डुलिपि पर टिप्पणियाँ यह संकेत देती हैं कि व्होर्फ इसे प्रकाशित करने की नीयत से तैयार कर रहे थे। उसने उन व्यक्तियों के नामों की सूची भी तैयार कर ली थी जिनके पास वह अनुमुद्रित प्रतियाँ भेजने की योजना बना रहे थे, जिसमें Jung, N (Ayan) L (ouise) Redfield, Sapir, Carroll, Wayne Dennio (Claude) Bragdon, H. G. wells तथा H. L. Mencken के नाम भी सम्मिलित हैं। हम इस लेख के लिखे जाने की तिथि 1936 के अन्तिम दिनों में दो कारणों से रखते हैं: पहला, यह उसके लेख 'The Punctual and segmentatvie aspects ot verbs in Hopi' के 1936 में प्रकाशित होने के पश्चात् लिखा गया होगा जिसका उन्होंने प्रस्तुत लेख में उल्लेख किया है, और दूसरा, सम्भवत: 1937 में लिखे गए लेख Grammatical categories का पूर्ववर्ती है, क्योंकि वह 'गूढ़ प्रारूप' सम्बन्धी कारणों का प्रस्तुत लेख की अपेक्षा कुछ अधिक विकसित रूप प्रस्तुत करता है।

भाषाविज्ञान पर एक विशेष प्रकार का बल देने की आवश्यकता है जो सपीर, ल्योनार्ड, ब्लूमफील्ड तथा दूसरे भाषाविज्ञानियों की कृतियों के माध्यम से विकसित होना आरम्भ हो गया है । यद्यपि वोआस ने इसका प्रारम्भ दसियों वर्ष पहले अपने 'हैण्डबुक आफ अमेरिकन इण्डियन लेंगवेजिज' (*Handbook of American India Languages*) की भूमिका में कर दिया था ।

चिन्तन के विषय में स्पष्ट रूप में वर्णित लक्षणों में से एक लक्षण कार्ल युग का है, जिसमें चार मूलभूत मानसिक कार्यों में भेद दर्शाया गया है । संवेदन, भावना, चिन्तन, तथा अन्तःप्रज्ञा ।[1] एक भाषा-विज्ञानी के लिए यह बात स्पष्ट है कि युंग की परिभाषा के अनुसार चिन्तन के अन्तर्गत एक बहुत बड़ा भाषायी तत्व है जिसकी प्रकृति सुनिश्चित अभिरचनात्मक है जब कि भावना केवल अभाषायी है, भले ही वह भाषा के माध्यम का प्रयोग करे; हालाँकि चिन्तन द्वारा किए गए भाषायी प्रयोग से यह प्रयोग बिल्कुल भिन्न होगा। चिन्तन को भाषा की अपनी भूमि कहा जा सकता है; जबकि, 'भावना' मूल्यों की उस भावना का विवेचन

1. **उस पाठक से जो युंग के सभी विचारों को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं है, मैं कहना चाहूंगा कि ये व्यापार-विषयक उसकी धारणाएं तत्त्वतः पूर्ववर्ती मनोवैज्ञानिकों की हैं जैसे Wundt, जिनमें वह अपनी विचक्षण अन्तर्दृष्टि तथा मौलिक सिद्धान्तों का स्पष्टीकरण जोड़ देता है। युंग के दृष्टिकोण का वैशिष्ट्य यह है कि उसके द्वारा चारों व्यापारों का प्रभेद न केवल गुणात्मकता की दृष्टि से अपितु एक ऊर्जा-सिद्धांत के व्यापारों की पृथक ऊर्जा व्यवस्थाओं के रूप में किया गया है। युंग की 'लिबिडो' मननशक्ति वह वैशिष्ट्य है, जो उन्हें केवल प्रक्रियाओं एवं मनोग्रन्थियों से पृथक् प्रदर्शित करता है। (वे अपेक्षाकृत बन्द व्यवस्थाएं हैं)। दूसरे शब्दों में यदि मैं युंग को सही रूप में समझ पाया हूं तो चिन्तन के लिए प्राप्त होने वाली कोई भी (लिबिडो) मनःशक्ति या ऊर्जा, भावना या संवेदन के रूप में, या इसके उलट रूप में रूपान्तरित नहीं हो सकती, केवल एक तरह से रूपान्तरित हो सकती है वह है अचेतन में जाने से तथा उसके अन्दर इतनी दूर सरक जाने से कि वह प्राचीन अप्रभेदीकृत, या अवस्था, या समरूप अवस्था पर पहुँच जाए। यह 'लिबिडो' सम्बन्धी धारणा मनोरोग-विज्ञान के लिए उपयोगी सिद्ध हुई है और यह 'चिन्तन सम्बन्धी भाषा-विज्ञान' के लिए भी महत्त्वपूर्ण हो सकती है, यदि यह सत्य हो कि चैत्तीय ऊर्जा, जो भाषायी प्रक्रिया (चिन्तन-व्यापार में सम्मिलित) के लिए उपलभ्य है, एक भेदीकृत ऊर्जा है, जो एक बन्द व्यवस्था की गाड़ी में चढ़ी हुई है, तथा इन व्यवस्थाओं के बीच रूपान्तरणीय नहीं है। तथापि, इस प्रकार का दृष्टिकोण उन भाषायी विधियों के लिए किसी भी तरह अनिवार्य नहीं है जिनका मैं यहाँ विवेचन कर रहा हूँ;**

[ये विचार युंग के *Psychological Types* (*Baynes* द्वारा अनूदित, न्यूयार्क तथा लंदन, 1923) में मिलेंगे—JBC]

करती है जो भाषा में निहित है, परन्तु वह उसके सीमा-प्रान्त में ही होती है। ये युंग द्वारा प्रतिपादित तर्कसंगत दो मानसिक कार्य हैं, तथा वैषम्य द्वारा उसके तर्कसंगति रहित दो कार्य हैं। संवेदन तथा अन्तःप्रज्ञा को आसानी से अभाषायी कहा जा सकता है। यह सत्य है कि बात करने, सुनने, और समझने की प्रक्रिया में इनका भी योग है परन्तु यह योग उनके समस्त विस्तार के अतिलघु अंश तक ही सीमित है। अतः हम चिन्तन को उस कार्य के रूप में अलग कर सकते हैं जो बहुत हद तक भाषायी है।[2]

मूक चिन्तन का भाषायी पक्ष—बिना बोले सोचना, ऐसा पक्ष है जिसका अभी बहुत कम मूल्य समझा गया है। मूक चिन्तन जैसा कि कुछ विद्वान मानते हैं, मौलिक रूप से दमित वाग्व्यापार या अश्रवणीय रूप से बुदबुदाए शब्द या स्वर-तन्त्रियों का मूक आलोड़न नहीं है।[3] इस प्रकार की व्याख्या; भाषायी सूक्ष्मताओं से अनभिज्ञ, तथा सामान्य बोध रखने वाले व्यक्ति को ही सही प्रतीत हो सकती है। 'सामान्य-बोध', जैसे सामान्य सांस्कृतिक व्यवस्थाओं के विषय में अनभिज्ञ होता है, वैसे ही उसे इस तथ्य का बोध नहीं होता कि स्वयं बोलने की प्रक्रिया एक जटिल सांस्कृतिक व्यवस्था का प्रयोग करती है। प्रयोजन अथवा अर्थ, शब्दों तथा रूपिमों का परिणाम नहीं है, अपितु शब्दों तथा रूपिमों के अभिरचना-परक सम्बन्ध द्वारा प्रकट होता है। किसी रूपिम का पार्थक्य जैसे 'जॉन' या Come 'आ' आदि स्वयं एक उच्चस्तरीय विशेषीकृत प्रकार की अभिरचनाएँ हैं या सूत्र हैं, इकाइयाँ मात्र नहीं हैं।[4] शब्द तथा रूपिम गतिपेशीय-प्रतिक्रियाएं हैं,

2. **कुछ लोगों ने चिन्तन को पूर्णतया भाषायी मान लिया है। मेरा विश्वास है कि Watson यह विचार रखता है, या रखता था। इस सम्बन्ध में *Watson* की बहुत बड़ी खूबी यह है कि वह पहला व्यक्ति था जिसने मौन चिन्तन के अन्तर्गत एक बहुत बड़े तथा उपेक्षित, या अमान्यता-प्राप्त भाषायी तत्व को दिखलाया, तथा उसकी शिक्षा दी। उसका दोष यह है कि उसने इसे सम्पूर्ण रूप में सम्पन्न किया, सम्भवतः यह अनुभव न करने या कम से कम इस पर बल न देने में भी उसका दोष है कि चिन्तन का भाषायी-पक्ष जीव विज्ञान-परक ढंग से संगठित प्रक्रिया 'वाक्' या 'भाषा' नहीं है, परन्तु एक सांस्कृतिक संगठन है अर्थात् (a language) एक भाषा है। कुछ भाषा विज्ञानी यह मत भी रख सकते हैं कि चिन्तन पूर्णतया भाषायी है।**
3. **[इस पाद टिप्पणी के लिए कोई मूल-पाठ प्राप्य नहीं है। सम्भवतः व्होर्फ ने वाट्सन को पुनः उद्धृत करने का निश्चय किया हो, जो वाक् पेशियों की उप-मुखरित गतियों के साथ विचार का तादात्म्य मानता है। उसका लेख देखिए,** 'Is thinking merely the action of language mechanism? (V)', Brit J. Psychal., 11 : 87–104 (1920).—JBC]
4. **किसी शब्दावली सूची में शब्द के स्पष्ट पार्थक्य में भी उनका वही अर्थ निकलता है जो अभिरचनाबद्ध 'शृंखलता के सम्भाव्यों' से उन्हें प्राप्त होता है, जो उनसे**

परन्तु शब्दों तथा रूपिमों को जोड़ने वाले वे तत्व पेशीय प्रतिक्रियाएं नहीं हैं जो ऐसी कोटियाँ तथा अभिरचनाओं का निर्माण करते हैं जिनमें भाषायी अर्थ विद्यमान रहता है, और वे तत्व अपेशीय प्रकार की तंत्रिका-प्रक्रियाओं एवं अनुबन्धों के सदृश मूक, अदृश्य तथा व्यष्टि रूप में अदर्शनीय हैं।[5] ये बुदबुदाए हुए शब्द नहीं हैं अपितु शब्दों के बीच एक प्रकार की घनिष्टता है जो उन्हें किसी भी अर्थपरक परिणाम के हेतु एक साथ कार्य करने में समर्थ बना देती है। यही घनिष्टता अपने भाषायी स्वरूप में ही विचार का वास्तविक सार है; तथा अन्त में बुद-

---

शाखित होते हैं तथा भाषायी सूत्रीकरणों को जटिल अभिरचनाओं के साथ जोड़ देते हैं।

5. सुनिश्चित रूप से अधिघोषित भौतिकवादियों को यह छूट दी जा सकती है कि वे सम्बन्धों के इस उत्पत्ति-स्थान को मस्तिष्क कोशिकाओं की शृंखलाओं एवं पथों से बना हुआ या कुछ भी समझें, जो अन्य भौतिक-रासायनिक प्रक्रियाओं द्वारा अपने आप को जोड़ते हैं अथवा सम्बन्धित करते हैं। परन्तु RAP-PORT (घनिष्ठता) की प्रकृति जानने का तथा उत्पत्ति-स्थानीय सम्बन्धों की संरचना का इस विधि के द्वारा कोई सुराग़ इससे अधिक प्राप्त नहीं हो सकता, जितना कि अलग-अलग कबीले की सामाजिक व्यवस्था की रूपरेखा खींचने का सुराग़ उसके व्यक्ति विशेषों के रक्तवर्गों से मिल सकता है। जिस व्यक्ति की चिन्तन-प्रक्रिया से हमारा सम्बन्ध है केवल उसी के द्वारा बोली गई भाषा के विचक्षण अध्ययन द्वारा ही इसका निश्चयीकरण किया जा सकता है और यह उन व्यक्तियों के लिए मौलिक रूप से भिन्न होगी जिनकी भाषाएँ मौलिक रूप से भिन्न प्रकार की हैं। जैसे सांस्कृतिक तथ्यों का केवल सांस्कृतिक रूप में ही निश्चयीकरण किया जा सकता है जीवविज्ञानपरक ढंग से नहीं। इसी प्रकार भाषायी तथ्य भी जो इसी तरह सांस्कृतिक हैं, तथा विचार के भाषायी तत्व का भी समावेश करते हैं, भाषायी विधि से निश्चित किए जा सकते हैं। वे केवल भाषा द्वारा निश्चित नहीं किए जाते अपितु भाषाओं द्वारा किए जाते हैं। यदि वे सभी चिन्तक, जिनका अध्ययन किया जा रहा है, हमारी भाषा (मान लीजिए अंग्रेज़ी) बोलते हों, तो अंग्रेज़ी भाषा का वह आवश्यक विचक्षण अध्ययन उसी अनुसन्धाता द्वारा किया जा सकता है जिसने अत्यधिक भिन्न भाषाओं का अध्ययन किया हो तथा जो उनका अंग्रेज़ी के साथ वैषम्य दिखाने में समर्थ हो, क्योंकि केवल इसी रीति से उन केवल कोरे सम्बन्धों के अस्तित्व के बोध को चेतना की अग्रिम पंक्ति में लाया जा सकता है, जो किन्हीं भी शब्दीकृत धारणाओं के सदृश नहीं हैं; परन्तु तथापि रूपिमों के अनुबन्धों का तथा चिन्तन की धाराओं की आकृति का नियन्त्रण करते हैं। (यह पाद-टिप्पणी एक प्रारम्भिक प्रारूप से ली गई है, तथा इस स्थान पर व्होर्फ द्वारा अभीष्ट टिप्पणी का प्रतिनिधित्व करती है—JBC)।

बुदाने या काकलीय कम्पन आदि को अर्थपरक दृष्टि से अनावश्यक बना देती है। अपेशीय प्रक्रियाएं जो बहुत ही आवश्यक वस्तु हैं, अपनी प्रकृति के अनुसार वे किसी विशेष भाषा की संरचना के अनुरूप एक अनुबन्ध अवस्था में हैं तथा काकलीय व्यापार से परे या व्यापार-युक्त, अथवा व्यापार रहित किसी भी प्रकार इन प्रक्रियाओं तथा श्रृंखलताओं की क्रियाशीलताएं हैं। चेतना की सबसे अग्रिम पंक्ति में, या जिसे 'अचेतन मस्तिष्क व्यापार का गहरा कूप कहा जाता है,' उसमें, ये सर्वत्र ही भाषायी अभिरचनात्मक व्यापार हैं, तथा इन्हें 'चिन्तन' कहलाने का अधिकार प्राप्त है।

इसके अतिरिक्त मूक चिन्तन का पेशीय कम्पन के रूप में विश्लेषण, जो निगृहीत शब्दों तथा रूपिमों के सदृश है, तथा वह चिन्तन का उससे अधिक यथार्थ विश्लेषण नहीं हो सकता जितना कि भाषा का वास्तविक शब्दों तथा रूपिमों के रूप में विश्लेषण यथार्थ होता है। एक नितान्त अपरिष्कृत तथा सर्वाधिक अप्रौढ़ व्याकरण भी उससे अधिक प्रभावशाली विश्लेषण प्रस्तुत कर सकता है, परन्तु एक वैज्ञानिक व्याकरण तो अनिवार्य रूप से सम्बन्धों का गहरा विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

उदाहरणार्थ अंग्रेज़ी में लिंग-सम्बन्धों की ऐसी व्यवस्था है, जिसका रूपिमों में बाह्य प्रतिनिधित्व लगभग न्यूनतम है। इसकी पेशीय प्रतिक्रियाएं केवल दो सर्वनामों He तथा She के रूप में हैं।[6] पेशीय प्रक्रियाएं जो लिंग की जुड़ी हुई संज्ञाओं को कार्यान्वित करती हैं, लिंग की दृष्टि से समरूप हैं, परन्तु ऐसी पेशीय-प्रक्रिया तथा सर्वनाम He या She को कार्यान्वित करने वाली अन्य पेशीय-प्रक्रियाओं के बीच 'अनुबन्ध' (1) लिंग में भिन्न प्रकार का होता है, (2) एक अपेशीय-प्रक्रिया, क्योंकि दो पेशीय-प्रक्रियाएं पृथक् हैं और वे दीर्घकालीन विश्राम अवधि द्वारा अन्तरित भी हो सकती हैं। लिंग-संज्ञाएं जैसे Boy (लड़का), Girl (लड़की), Father (पिता), Wife (पत्नी), Uncle (चाचा), Woman (स्त्री), lady (महिला), जिनमें हज़ारों George, Fred, Mary, Charlie, Isabel, Isadore, Jane, John, Alice, Aloysius, Esther, Lester, आदि ऐसे नाम भी सम्मिलित हैं जिनमें लिंगदर्शी कोई भी ऐसे चिह्न नहीं हैं जैसे लैटिन में–*us* या–*a* प्रत्येक पेशीय प्रक्रिया में हैं; परन्तु तथापि इन हज़ारों शब्दों में से प्रत्येक का अनिवार्य रूप से अनुबन्धात्मक सम्बन्ध है जो इसे पूर्ण सूक्ष्मता के साथ या तो he शब्द के साथ या She के साथ जोड़ता है, जो फिर भी इस तरह प्रकट व्यवहारपरक चित्र में नहीं जाता जबतक कि वृत्तान्त की विशेष परिस्थितियों द्वारा अपेक्षित न हो।[7] ये हज़ारों अनुबन्धात्मक प्रक्रियाएं सर्वनाम

6. **वास्तव में उनके** his, him, her, hers **आदि रूप-रचनाओं को सम्मिलित करते हुए।**

7. **पाण्डुलिपि में सीमान्तीय टिप्पणी यह संकेत देती है कि व्होर्फ इस पादटिप्पणी**

के सामान्य केन्द्र-बिन्दु के चारों ओर परिक्रमा करती हुई तथा समान लिंग वाली हज़ारों संज्ञाओं तक ऐसी मानसिक मनोग्रन्थि से शाखा बनाती हुई (होती हैं) जिनका सम्बन्ध (1) अपेक्षीय तथा अकार्यान्वित क्षेत्र से, (2) युंग की परिभाषा में 'चिन्तन' कार्य से (3) भाषायी तथा सांस्कृतिक अनुक्रम से है।

ऐसा कोई सुस्पष्ट कारण दिखाई नहीं देता जिसकी वजह से ऐसी मनोग्रन्थि अकेले शब्दों या जिन वर्ग-चिह्नों के साथ यह सम्बद्ध है, उनकी आवश्यक रूप से सक्रियकरण की अपेक्षा किए बिना विचारों की अन्य सामग्री के साथ विभिन्न प्रकार्यात्मक सम्बन्धों में न बंध सके। किसी विशेष संस्कृति में हम, उदाहरणार्थ, लिंगों के बीच श्रम-विभाजन के विषय में सोच रहे हो सकते हैं और हमें female (स्त्रीलिंग) तथा male (पुल्लिंग) आदि किताबी शब्दों के विषय में सोचना भी न पड़े तथा ऐसे विषय पर चिन्तन करते समय हमें निरन्तर इनका उल्लेख भी न करना पड़े। जब हमें ऐसे प्रश्नों का समाधान करना पड़ता है तो हम अपने मन में सम्भवतः जो कुछ करते हैं, वह यह है कि हम तथ्यों को एक प्रकार के दो लिंग-वर्गों की अभ्यासगत चेतना के रूप में छांट कर अलग कर लेते हैं, जो हमारे विचार-संसार में एक स्थायी वर्गीकरणात्मक तथ्य के रूप में रहती है, तथा जो धारणा के रूप में 'लिंग' या भावनात्मक मूल्य के रूप में लिंग से बिल्कुल भिन्न है। किसी लिंगीय वर्गीकरण की छायात्मक, अमूर्त तथा शब्द-रहित रूपरेखा का आधार 'लिंग', (Sex) या 'महिला' आदि जैसा शब्द नहीं है। यह भाषाई (UTTERANCE) उच्चारण से भिन्न (Linguistic RAPPORT), भाषायी घनिष्ठ सम्पर्क है। अंग्रेजी में, सम्भवतः, यह भाषायी लिंगभेदीय लिंग-व्यवस्था से सम्बन्धित दो महान अनुबन्धी बन्धनों की मनोग्रन्थियों का 'पूर्णतर चेतना' की ओर उठना है। कोई भी, यह कह सकता है, कि यह George, Dick , तथा William जैसे शब्द-वर्ग का, या Jane, Sue तथा Betty वर्ग के 'सर्वनामीय-अनबन्ध' का सम्पूर्ण दबाव है जो 'चिन्तन' में कार्य करता है, और यह पुरुष, (male) या स्त्री, (female) की तरह शाब्दिक धारणा नहीं है। परन्तु चीनी या होपी की तरह लिंगीय लिंग-व्यवस्था रहित भाषा में, लिंग-वर्गीकरण सम्बन्धी कोई भी चिन्तन ऐसी प्रकृति का नहीं हो सकता। सम्भवतः, यह एक शब्द या भावना या लिंग सम्बन्धी धारणा या प्रतीक या अन्य किसी चीज के चारों ओर कार्यान्वित होगा।

अंग्रेज़ी के लिंग की तरह, कोई भाषायी वर्गीकरण, जिसका किसी वर्ग के शब्दों के साथ जोड़ा हुआ कोई प्रकट चिह्न नहीं है, परन्तु जो अनुबन्ध-बन्धनों के अदृश्य 'केन्द्रीय-मिलान' (Exchange) के माध्यम द्वारा इस प्रकार कार्य करता है जिससे

द्वारा यह स्पष्ट करना चाहता था कि लिंग द्वारा संयोजित संज्ञाओं का प्रयोग उन विशेष व्यक्तियों के जानने पर निर्भर नहीं है जिनका वे निर्देश कर सकते हैं, यद्यपि यह अनिवार्य रूप से उन व्यक्तियों का (सेक्स) लिंग की दृष्टि से वर्गीकरण करता है—J.B.C.]

कि वह वर्ग का निर्देश करने वाले अन्य शब्दों को निश्चित कर दे। इसे मैं, एक प्रकट वर्ग से वैषम्य दिखाने के लिए अप्रकट वर्ग कहता हूँ, जैसे लटिन में लिंग है। नवाहो भाषा में विषयों के सम्पूर्ण संसार का अंशत: 'सजीवता', तथा अंशत: 'आकृति' पर आधारित अप्रकट वर्गीकरण है। निर्जीव विषय दो श्रेणियों में विभक्त हैं जिन्हें भाषा-विज्ञानी 'गोलाकार' तथा 'लम्बे विषय' कहते हैं।[8] वास्तव में ये नाम उचित प्रतिनिधित्व नहीं करते; वे सूक्ष्म को स्थूल रूप में प्रस्तुत करने का प्रयत्न करते हैं, अत: विफल रह जाते हैं। स्वयं नवाहो भाषा में ऐसे कोई शब्द नहीं हैं, जो इन वर्गों का सुचारू रूप से विवरण प्रस्तुत कर सकें। एक 'अप्रकट लिंग' की तरह, 'अप्रकट धारणा' की परिभाषा की जा सकती है, तथा अपने ढंग से वह इतनी सुनिश्चित होगी जितनी 'स्त्री जाति' जैसी धारणाएँ हैं, परन्तु यह बहुत ही भिन्न कोटि की हैं; यह किसी शब्द का सादृश्य नहीं है, अपितु यह किसी घनिष्ठता-व्यवस्था का सादृश्य है तथा इसके बोध में अन्त: प्रज्ञा सम्बन्धी गुण हैं। हम यह कहेंगे कि यह 'अनुभूत' की जाती है, 'समझी' नहीं जाती। सम्भवत: यह उस कोटि का विचार या धारणा है जिसे हिन्दू दर्शन में 'अरूप' (या रूप रहित) कहते हैं। नवाहो की तथाकथित गोलाकार या लम्बी संज्ञाएँ न तो स्वयं चिह्नित होती हैं और न ही किन्हीं सर्वनामों द्वारा निर्दिष्ट की जाती हैं। उनका निर्देश केवल अत्यधिक महत्त्वपूर्ण धातु-प्रकृति द्वारा किया जाता है, क्योंकि 'गोल' या 'लम्बे' 'कर्ता' अथवा कर्म के लिए एक भिन्न धातु अपेक्षित होती है। बहुत सी अन्य धातु-प्रकृतियाँ इस भेद के प्रति उदासीन रहती हैं। एक ऐसे नये पदार्थ को, जिसके लिए नवाहो में कोई नाम नहीं है, सादृश्य के अनुसार किसी एक वर्ग में रख दिया जाता है--सादृश्य ऐसा नहीं जैसा कि हमें प्रतीत होता है, परन्तु ऐसा, जो कि नवाहों की दो मनोग्रन्थियों के सारांश द्वारा निर्दिष्ट है। यह भी संभव है कि एक अप्रकट भाषायी वर्ग पदार्थों के किसी महान द्वि-विभाजन का व्यवहार न करे और उसका बहुत ही सूक्ष्म अर्थ हो सकता है, तथा यह भी हो सकता है कि प्रकट रूप से चिह्नित कुछ रूपों से युक्त कतिपय विशिष्ट भेदक 'प्रति-घातों' को छोड़कर उसका कोई भी प्रकट निर्देश न हो। अत: यह वह कोटि है जिसे मैं Cryptotype 'गूढ-प्ररूप' कहता हूँ। यह एक प्रच्छन्न, सूक्ष्म तथा दुर्ग्राह्य अर्थ है, जो किसी भी वास्तविक शब्द के समकक्ष नहीं, तथापि भाषायी विश्लेषण द्वारा, प्रकार्यात्मक दृष्टि से व्याकरण में महत्वपूर्ण दिखाया जाता है। उदाहरणार्थ अंग्रेजी के निपात UP जिसका अर्थ है 'पूर्णतया', अन्त तक जैसे (Break it up) (इसे तोड़ डालो), 'Cover it up' (इसे ढंक दो), 'Twist it up' (इसे मरोड़ डालो), 'Open it up' (इसे (पूरी तरह) खोल दो), में, और इसका प्रयोग केवल चार विशिष्ट गूढ़-प्ररूप वाली प्रक्रियाओं को छोड़ कर किसी

---

८. (वास्तव में, नवाहो क्रियापदीय व्यवस्था निर्जीव पिण्डों की दो से अधिक श्रेणियां प्रस्तुत करती है, एक ऐसा सत्य जो व्होर्फ के दृष्टिकोण को अधिक प्रामाणिक बनाता है--J.B.C.)

भी ऐसी क्रिया के साथ हो सकता है जो एकाक्षरीय या द्वयाक्षरीय हो, तथा बलाघात आदि-अक्षर पर हो। इनमें से एक गूढ़ प्ररूप सीमा-रहित छितराव की है, अतः कोई यह नहीं कहता कि 'Spread it up, Waste it up, drain it up'[9] या 'Filter it up'। दूसरा गूढ़ रूप ऐसे दोलन का है जिसके अंग विक्षिप्त नहीं होते। हम यह कभी नहीं कहते 'Rock up a Cradle, wave up a flag, Wiggle up A finger nod up one's head' आदि आदि।[10] तीसरा गूढ़-प्ररूप अचिर-स्थायी संघात वाला है, जिसमें मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रियाएं भी सम्मिलित हैं : Kill 'मारना', Fight 'लड़ना', इत्यादि। अतः हम यह कभी नहीं कहते 'Whack it up, tap it up, state it up, stam it up, Wrestle him up, hate him up।[11] चौथा, निर्देशित गति 'हिलना', 'उठाना', खींचना', 'धकेलना', 'रखना' आदि वाला है, जिसके साथ UP का दिशापरक अर्थ है Upward (ऊपर की दिशा में) या फिर व्युत्पादित अर्थ होते हैं, यद्यपि इस अर्थ का क्रिया द्वारा विरोध भी किया जा सकता है और फलस्वरूप एक असंगत अर्थ उत्पन्न हो सकता है जैसे Drip it up। इन गूढ़-प्ररूपों के सेट से बाहर UP का प्रयोग सकर्मकों के साथ पूर्णताद्योतक-अतिशय द्योतक अर्थों में हो सकता है।

दूसरा अंग्रेजी गूढ़-प्ररूप, आच्छादन, (परिवेष्टन) घेरना तथा सतही या पृष्ठीय-संलग्नता आदि अर्थों वाली सकर्मक क्रियाओं का है जिसका प्रतिघात वह है जहाँ विपरीत अर्थ दिखाने के लिए—UN को उपसर्ग के रूप में जोड़ा जाता है। अतः हम Uncover (उघाड़ना); Uncoil (खोलना); undress (कपड़े उतारना), Unfold, (फैलाना, खोलना); Unlock (ताला) (खोलना;) Unroll (फैलाना); untangle (सुलझाना); untie (खोलना); unwind (खोलना); तो कहते हैं, परन्तु unbreak, undry, unhang, unheat, unlift, unmelt, unopen, unpress, unspill' आदि नहीं कह सकते। केवल कुछ शब्दों को छोड़कर जो अधिकतर अर्थ-प्राचीन हैं; जैसे, 'Unsay, Unthink, Unmake,), वास्तविक क्रियाओं में—UN का विपरीतार्थक उपसर्ग के रूप में

---

9. 'Burst' इस गूढ़ प्ररूप से सम्बन्धित है, बोलचाल की भाषा में प्रयुक्त होने वाला Bust गूढ़ प्ररूप नहीं है।
10. एक उपान्तीय टिप्पणी में व्होर्फ Shake up का उल्लेख करता है कि यह क्रियारूप अंगों के कम्पन को द्योतित करता है। पाठक को संयोगवश ध्यान में रखना चाहिए कि इस सारे विवेचन का सम्बन्ध सकर्मक धातुओं से है, जैसा कि पैरा के अन्त में स्पष्ट कर दिया गया है।
11. (एक उपान्तीय टिप्पणी में व्होर्फ, Strike up (a band) hit it up जैसी अभिव्यक्तियों की ओर संकेत करता है। परन्तु यह उल्लेख भी करता है कि ये वास्तविक सकर्मक नहीं हैं और इन्हें मान्यता नहीं दी जाएगी। वह Sing, Shout, Cry जैसे क्रियापदों के प्रति भी ऐसा ही संकेत देता है—J.B.C.)

प्रयोग केन्द्राभिमुखी घेराव या परिवेष्टन तथा संलग्नता के अर्थों का सम्पाती है।[12] अंग्रेज़ी भाषा में कोई भी ऐसा अकेला शब्द नहीं है जो हमें इस अर्थ की सही कुन्जी दे सके, या जिसमें हम इस अर्थ को ठूंस सकें; अत: गूढ़ प्ररूपीय अर्थों की प्रकृति के अनुरूप ही यह अर्थ, 'सूक्ष्म' है, 'अमूर्त' है। तथापि, यह अमूर्त विचार अत्यन्त सुनिश्चित शब्द वर्गों एवम् व्याकरणिक रूपों की सीमा निर्धारित करता है, तथा इसे अपने विचार-निर्माण के स्तर से खींचकर बाहर निकालता जाता है। इसे अर्ध-अन्त: प्रज्ञापरक ढंग से समझा जा सकता है। ऐसा करने के लिए हमें गूढ़ प्ररूप के अर्थ पर चिन्तन करने की आवश्यकता है, जैसे, कुछ अपने ही ढंग की क्रियाओं के अर्थ पर जिनमें UN—जोड़ा जाता है, या उस मुक्त सादृश्यीकरण की प्रणाली के प्रयोग की आवश्यकता है, जो Frued तथा Jung के Free Association 'मुक्त-साहचर्य' के समान है। अत: मैं एक नये घड़े हुए क्रियापद *Flimmick* की कल्पना करता हूं। मान लीजिए कि *Flimmick* का अर्थ 'किसी चीज में टिन का कनस्तर बाँधना है', तो यह गूढ़-प्ररूप के अन्तर्गत आ जाता है, और मैं यह कह सकता हूं जैसे '*He unflmmicked the dog*'; परन्तु यदि इसका अर्थ 'अलग ले जाना' हो तो किसी की भी प्रवृत्ति 'जोड़ने या एक साथ रखने' के अर्थ में *Unflimmick* रूप बनाने की नहीं होगी जैसे '*He unflimmicked the set of radio parts*' ऐसा रूप विचित्र तथा अस्वीकार्य प्रतीत होगा। इसी प्रकार Camouflage तथा Wangle जैसे नए शब्दों के ग्रहण करने से पहले गूढ़ प्ररूप का ज्ञान हमें यह भविष्यवाणी करने में समर्थ बना देता है कि हम uncamouflage it तो कह सकेंगे पर unwagle it नहीं।

इस गूढ़-प्ररूप से वैषम्य दिखाने के लिए मैं उस भाषायी कोटि को 'प्रकट-प्ररूप' नाम देता हूं, जिसका स्पष्ट रूप से प्रत्यक्ष वर्ग-अर्थ होता है तथा एक रूपात्मक चिह्न या रूपिम इसके साथ होता है अर्थात् प्रकट प्ररूप 'सुप्रतिष्ठित' रूपात्मक कोटि है। UP तथा UN के अर्थ प्रकट प्ररूप हैं, तथा ऐसे ही विविध काल, पक्ष, वाच्य वृत्तियां तथा अन्य निर्दिष्ट रूप होते हैं जिनका सभी व्याकरणों में

12. [एक उपान्तीय टिप्पणी से यह स्पष्ट है कि व्होर्फ Unstart Unbalance तथा undo जैसे शब्दों पर पाद-टिप्पणी में विचार करना चाहता था। व्होर्फ पाठक को कुछ कृन्दतीय अथवा विशेषण रूपों के बारे में सचेत करना चाहता है, जैसे Unbroken, Unheated, Unopen इत्यादि। जिन में Un उपसर्ग एक क्रिया का विपर्यय द्योतित नहीं करता परन्तु एक विशेषण के रूप में अभिव्यक्त अवस्था के उलट का द्योतन करता है। इस तरह की सम्भावना का अनुमान लगाना काफी दिलचस्प है कि Unsay, Unthink, Unmake जैसे शब्दों के प्रचलित हो जाने का कारण ठीक यह तथ्य है जिसके अनुसार Uncover, Uncoil, Undress जैसे शब्दों द्वारा प्रतिनिधित्व गूढ़-प्ररूपों के दबाव के कारण उन्हें अपना स्थान छोड़ना पड़ता है—J.B.C.]

अध्ययन होता है। इस समय तक व्याकरण सम्बन्धी शोध का सम्बन्ध मुख्य रूप से प्रकट प्ररूपों के अध्ययन तक सीमित रहा है। एक विशेष प्रकार का व्याकरण ऐसे विवरण देता है मानो भाषायी अर्थ पूर्णतया उन्हीं में रहते हों। किसी मानवशास्त्री को ऐसे व्याकरण से ऐसे ही सन्तुष्ट नहीं होना चाहिए जैसे उसे उस मानव-विज्ञान से सन्तुष्टि नहीं होती जो केवल सकारात्मक व्यवहारों का तो वर्णन देता है परन्तु निषेधों तथा परिवर्तनों की अभिरचना का विवरण नहीं देता। यह भी दिखाया जा सकता है, कि कम से कम कुछ भाषाओं में भाषायी अर्थ प्रकटप्ररूपों तथा गूढ़प्ररूपों के पारस्परिक प्रभावों के परिणामस्वरूप प्रकट होता है, केवल प्रकट प्ररूपों द्वारा ही नहीं होता।

अत: होपी में पक्ष तथा काल रूपों का प्रयोग गूढ़प्ररूपों द्वारा नियन्त्रित किया जाता है। उदाहरणार्थ, वे किसी क्रिया या अवस्था के आरम्भ करने की अभिव्यक्ति के ढंग को नियन्त्रित करते हैं, जैसे अंग्रेजी में 'begins to do' (करना आरम्भ करता है) या 'begins to be' (होना आरम्भ होता है।) पहले, एक भिन्न प्रकार के रूप (प्रकट-प्ररूप) का प्रयोग किया जाता है, तथा वह प्रयोग क्रिया के कर्तृवाची अथवा अकर्तृवाची (या तो कर्मवाच्य या अगति वाच्य) पर निर्भर करता है, और यह 'गूढप्ररूपी' का वैशिष्टय है, क्योंकि होपी व्याकरण की रूपात्मक सामग्री 'कर्तृ' तथा 'अकर्तृ' का वैषम्य स्थापित नहीं करती। इसके अतिरिक्त होपी भाषा (किसी के) 'अन्दर', 'पर', 'ऊपर', होने को, या किसी अन्य स्पेसीय सम्बन्ध में होने को, कर्तृ (वाच्य) के वर्ग में रखती है, परन्तु 'लाल' 'लम्बा' 'छोटा', 'सुन्दर', 'घूमा हुआ', (तीर आदि का) निशाना बने हुए, को अकर्तृ-वर्ग के रूप में रखती है। इस संदर्भ में 'प्रेरणार्थक' तथा 'अप्रेरणार्थक' वास्तव में, कर्तृवाच्य तथा कर्मवाच्य से अधिक अच्छे शब्द हैं। और, यदि क्रिया कर्तृवाचक है तो 'आरम्भ करने' का प्रकटप्ररूप इस बात पर निर्भर करता है कि तीन गूढ़ प्ररूपों में से कौन-सा अपेक्षित है। अधिकतर क्रियाओं के साथ या तो हम आरम्भमाण पक्ष का प्रयोग कर सकते हैं या भविष्य काल का। यहाँ 'विश्लेषण', यह संकेत देता हुआ प्रतीत होता है कि होपी भाषा इन क्रियाओं के कर्ता को एक गतिशील सामञ्जस्य द्वारा इन क्रियाओं में तथा इनके द्वारा कार्य करता हुआ मानती है। कर्ता अपने-आप को उत्तरोत्तर कार्य में समञ्जित करता है, तथा सारे ही कार्य-व्यापार में इस समञ्जन को बनाए रखता है, या तो प्रभाव के विकास के लिए, या उसके स्थिरीकरण अथवा उस कार्य की निरन्तरता के लिए। होपी भाषा[13] इसमें सोना, मरना, हँसना, खाना तथा बहुत से आंगिक कार्यों तथा बहुत से परिवर्तक व्यापारों, जैसे काटना, झुकना, ढकना, रखना, तथा हज़ारों दूसरों को भी

13. उपान्तीय टिप्पणी में व्होर्फ लिखता है कि "यह पहले-पहल विचित्र भले ही लगे, परन्तु प्रकाश डालने वाला है"।]

सम्मिलित करती है। दूसरा गूढ़ प्ररूप प्रारम्भ अभिव्यक्त करने के लिए केवल भविष्य काल का प्रयोग करता है तथा सरल रेखा, समान गति की क्रियाओं, दौड़ना, भागना, जाना, आना, किसी स्थान में, या स्थान पर, या अन्य स्पेसीय सम्बन्ध में होना, खोलना, बन्द करना, तथा कुछ अन्य क्रियाओं को भी सम्मिलित करता है। विश्लेषण से लक्षित होता है कि यहाँ पर कर्ता पूर्ण रूप से एक नयी पदवी को तत्क्षण प्राप्त करते हुए के रूप में वर्गबद्ध किया गया है, किसी प्रक्रिया में या प्रक्रिया के अन्दर से गतिशील होकर कार्य करते हुए के रूप में नहीं। तीसरा गूढ़ प्ररूप प्रारम्भ को प्रक्षेपी पक्ष के माध्यम से व्यक्त करता है जो एक प्रकट प्ररूप है तथा अन्य स्थानों पर प्रयुक्त होने पर जिसका अर्थ है––'अग्रसरी क्रिया द्वारा करता है।' इस गूढ़-प्ररूप का अर्थ होता है कि कर्ता किसी प्रभाव के क्षेत्र में पकड़ा गया है तथा समन्वित हो गया है, या मानो उसके द्वारा प्रवाहित कर लिया गया है, तथा इसमें गुरुत्वाकर्षणात्मक एवम् गतिशील-जड़तापरक प्रपंच सम्मिलित हैं, जैसे गिरना, लुढ़कना, बिखरना, कूदना, चक्कर काटना आदि, तथा चाहे हमें अजीब लगे, परन्तु इसमें बाहर जाना, अन्दर आना भी सम्मिलित है। होपी भाषा-विज्ञान के तर्कानुसार कोई व्यक्ति घर में प्रवेश करते समय या घर से बाहर जाते समय अपने को फेंकता है या अपने-आपको एक नए प्रभाव के हाथों-सौंपता है, जैसे कि कोई 'गिरता हुआ' या 'कूदता हुआ' सौंपता है।

उस मानवशास्त्री के लिए, जिसने बहुत अधिक सीमा तक अपने मन में यह धारणा बना ली है कि भाषा-विज्ञान मानव-विज्ञान के कारखाने के किसी एकान्त कोने में एक अत्यधिक विशेषीकृत तथा जटिल रूप से तकनीकी 'कोष्ठ' है, यह बात स्पष्ट समझने की आवश्यकता है कि भाषा-विज्ञान तत्वत: अर्थ की खोज है। किसी भी बाह्य व्यक्ति को, भाषा-विज्ञान, ध्वनि प्रभेदों की बाल की खाल निकालने में अत्यधिक व्यस्त, ध्वन्यात्मक व्यायाम करता हुआ, तथा एक जटिल व्याकरण लिखता हुआ प्रतीत होता है जिसे केवल वैयाकारणिक ही पढ़ सकते हैं। परन्तु सच्ची बात यह है कि इसका वास्तविक ध्येय भाषा के गहन अन्धकार को प्रकाशित करना है, तथा उसके द्वारा अधिकांश विचार को, संस्कृति को, या किसी समाज के जीवन के प्रति दृष्टिकोण को प्रकाशित करना है। उस, 'किसी स्वर्णिम' पदार्थ के प्रकाश से जिसे मैंने 'अर्थ के रूपान्तरकारी सिद्धान्त' के नाम से पुकारा जाता सुना है। जैसा कि मैंने दिखाने का भी प्रयत्न किया है कि यह 'भाषा को बोलना सीखने तथा समझने' आदि के उन ध्येयों से कहीं बढ़ कर है, जिन्हें एक व्यावहारिक भाषा-शिक्षक ध्येय मानता है। संस्कृति के अनुसन्धाता को, भाषा-विज्ञान का आदर्श, मनोविज्ञान की समस्याओं के प्रति उस स्वत: शोधप्रणाली के रूप में अपनाना चाहिए जिन्हें वह अब तक एक ऐसी दूरबीन मानने में संकोच करता रहा हो, जिसे यदि सही संकेन्द्रित किया जाए तो उसमें से उन सभी शक्तियों के वास्तविक रूप दिखाई देंगे जिन्हें वह अब तक अदृश्य तथा अशरीरी-विचार का अबोधगम्य शून्य मानता रहा है।

II

मनोवैज्ञानिक अन्तर्धाराओं का बोध, भाषायी ज्ञान पर विजय-प्राप्ति के निमित्त पहुंचने वाली अन्तिम वस्तु है, दोनों में—अर्थात् 'व्यक्ति' में तथा 'इतिहास' में। किसी विदेशी को अपनी भाषा पढ़ाने के प्रयत्नों का परिणाम कुछ प्रकट रूपात्मक अभिरचनाओं के बोध के रूप में होता है : जसे रूपावली तथा रूपरचनाकृत प्रकृतियां। प्राचीनतम ज्ञात व्याकरण, इस प्रकार की कीलाक्षर शब्द-सूचियां है, जो एक समानार्थकता प्रस्तुत करती हैं, जैसे सुमेरी तथा सामी अक्कादी के बीच। इससे अगला कदम उस समय तक नहीं रखा गया, जब तक कि भारत तथा ग्रीक दोनों में, दर्शन ने भाषायी अभिरचनाओं तथा तर्कणा में सम्बंध का पता नहीं लगा लिया। इसका परिणाम दर्शनशास्त्र के लिए तर्कशास्त्र के रूप में हुआ, तथा व्याकरण के लिए प्राचीन भारोपीय भाषाओं की अधिक उत्कृष्ट व्याकरणिक कोटियों के रूप में हुआ। सामी संसार में व्याकरण मुख्यत: रूपात्मक रहा, श्रेण्या हिब्रू तथा अरबी व्याकरणों ने, जो अधिकतर ऐसी रूपावली से बने हुए थे जिन्हें केवल कूट नामों द्वारा ही जाना गया था, इन भाषायी वर्गों के अर्थों में प्रवेश करना तो अलग रहा इनके वैशिष्ट्य बताने की भी चेष्टा नहीं की। लैटिन व्याकरण भी अपनी आदि शब्दावली सहित तुलना की दृष्टि से मनोवैज्ञानिक था। उन्नीसवीं शताब्दी के आरम्भ में योरोपीय विद्वानों द्वारा, प्राचीन हिन्दू व्याकरण की खोज ने, इन विद्वानों को उस व्याकरण की रूपात्मक पूर्णता से बहुत प्रभावित किया। परन्तु इसने कुछ मनोवैज्ञानिक सूक्ष्मताओं को भी प्रकाशित किया, जैसे शब्दों की समास-रचना-विधि के अन्दर भिन्न अप्रकट विचारों की मान्यता, तथा तत्पुरुष, द्वन्द्व, बहुव्रीहि इत्यादि के रूप में समासों का वर्गीकरण।[14]

उन्नीसवीं सदी के बड़े से बड़े विद्वाम भी रूपात्मक तथा प्रकट संरचनाओं से अधिक परे नहीं जा सके, सिवाय इसके कि वे श्रेण्य व्याकरण तथा दार्शनिक धारणाओं पर सवार होकर केवल उन्हीं भाषाओं की अवधि तक यात्रा करते रहे जिनका वे अध्ययन करते थे। इस कथन का महान अपवाद भी है,—वह उन आश्चर्यजनक प्रतिभाशाली व्यक्तियों में से एक हैं, जो अपने समकालीन विद्वानों को विस्मय-विमूढ़

---

14. **तत्पुरुष समास वे हैं जिनमें एक पद दूसरे पद की विशेषता प्रकट करता हो जैसे अंग्रेजी के** Self-made, foot soldier **आदि; द्वन्द्व समास वे हैं, जिनमें पद एक दूसरे के साथ सामानाधिकरण में हो, अंग्रेजी में निकटतम उदाहरण के रूप में** bread and butter **जैसे उपवाक्य हैं जिन्हें संस्कृत में एक ही समस्त पद में परिणत किया जा सकता है। बहुव्रीहि समास विशेषणात्मक समास है जिसका सम्बन्धवाचक अर्थ होता है और एक संस्कृत के शब्द द्वारा दृष्टान्त दिया जा सकता है, जिसका अर्थ है सूर्य की कान्ति रखने वाला 'सूर्यकान्त'। देखिए**—William Dwight whitney, Sanskrit Grammar (Harvard University Press, 1931, chapter XVII J.B.C.]

करते हैं तथा अपना कोई उत्तराधिकारी नहीं छोड़ते । इन विचारों, जैसे घनिष्ठता व्यवस्था, अप्रकट कोटियां, गूढ़ प्ररूप मनोभाषायी अभिरचन, तथा भाषा, संस्कृति का अभिन्न अंग है, आदि का प्रवर्त्तक, जहाँ तक मुझे पता है, उन्नीसवीं शती का एक फ्रान्सीसी वैयाकरण Antoine Fabre d' Olivet (1768-1825) है,[15] जिसने सामी भाषाओं पर, विशेष रूप से हिब्रू पर, अनुसन्धान कार्य किया, यद्यपि उसके कार्य ने Mendel के भाषोत्पत्ति-मूलक कार्य की तरह अपने काल के विचारों को बिल्कुल प्रभावित नहीं किया । दुर्भाग्यवश, यह कार्य उस समय भी दुर्बोध था, और अब भी है । इसका रचयिता रहस्यवादी तथा धार्मिक तत्वमीमांसक था जिसने अपने इस स्वभाव को किसी भी काल के सर्वश्रेष्ठों में से एक, तथा शक्तिशाली भाषायी प्रतिभा के कार्य के साथ मिश्रित कर दिया । इसके परिणाम-स्वरूप उसने Genesis का रहस्यवादी तथा गूढ़-ज्ञानवादी अनुवाद प्रस्तुत किया, या यूं कहिये, कि यह एक औपनिषदिक व्याख्या थी, जो ब्रह्माण्ड का एक स्तम्भित करने वाला दृश्य था, तथा वह दृश्य भयंकर सजीव चित्र-लिपियों से भरा हुआ था। इस दृश्य ने शीघ्र ही अपने-आप को आलोचना तथा परित्याग का विषय बना लिया। रूढ़िवादियों द्वारा किए गए उसके इस परित्याग से वह उग्र वामपक्ष की प्रशंसा भी प्राप्त न कर सका, क्योंकि उसके बाइबल सम्बन्धी विचार एक साथ इतने अधिक रूढ़िभंजक तथा लोकोत्तर थे कि वे किसी भी धर्मग्रन्थ-भाष्य-पद्धति को सन्तुष्ट नहीं कर सके। परन्तु Fabre d' Olivet के कार्य का सुनिश्चित भाषावैज्ञानिक कार्य जो 1815-16 में प्रकाशित होने वाले *La langue* he'braique Restituce में मिलता है,[16] यदि Genesis सम्बन्धित अलौकिक उपनिषद् से अलग कर के देखा जाए तो आज भी शुद्ध भाषायी मापदण्ड पर आधारित पाया जायेगा, तथा वह एक महान मनोवैज्ञानिक विलक्षणता एवं विचारों से युक्त मिलेगा जो उसके काल से बहुत अग्रिम माने जा

---

15. (मैंने वे तिथियाँ दे दी हैं जिन्हें व्होर्फ देना चाहता है वे *Grand Dictionnaire Universal du xixe Siecle* के अनुसार हैं। ध्यान रखिये कि उपनाम Fabre d' Olivet है, d' Olivet नहीं—J.B.C.]

16. [मैंने वे तिथियाँ अपनी ओर से दी हैं जिनके लिए व्होर्फ ने पाण्डुलिपि में रिक्त स्थान छोड़ दिया था । इस दूर्लभ ग्रन्थ का पूरा शीर्षक *La langue he'braique restiue'e, et le ve'ritable sens des mots he'breux re'tabliet prouve' par leur analyse radicale* है । इसकी प्रतियाँ Library of Congress Cornell University Library में तथा कतिपय अन्य अमरीकन पुस्तकालयों में मिल सकती हैं । यह भी सम्भावना है कि व्होर्फ ने इस ग्रन्थ का परिचय Nayan Louise Redfield द्वारा किए गए इसके अनुवाद *The hebraic tongue restored* (New York and London, G. P, Putnamas Sons 1921). से प्राप्त किया हो J.B.C.।]

सकते हैं। इस संदर्भ में यह भी कहना उचित होगा कि यद्यपि वह कार्य Jacob Boehme, या William Blake की कोटि तक रहस्यवादी है, तथापि Fabre d' Olivet उस गुप्त विद्या तथा संख्या सगुनौती की बाजीगरी से मुक्त था जिससे हिब्रू की प्राचीन यहूदी परम्परा लदी हुई थी। और, जबकि उसने व्याकरण की समस्त रूढ़ीवादी Hiphil- Hophal धारणा को परे फेंक दिया, उसने साथ-साथ लैटिन तथा ग्रीक के अभिरचनों को हिब्रू पर लादने से भी इन्कार कर दिया। उसकी हिब्रू पूरी तरह अपने कदमों पर ऐसे खड़ी है जैसे बोअस की चिनूक भाषा। उसने क्रिया-पदावली का मनो-भाषायी आधार पर विवरण देने की पद्धति को मान्यता दी, अलग-अलग उपसर्ग तथा प्रत्ययों पर उनके कार्य एवं अर्थ की दृष्टि से विचार किया, स्वर अभिरचनों की अर्थमीमांसा, तथा स्वरों की अर्थगत रंजना का विवेचन किया, तथा यह प्रदर्शित किया कि कितनी हिब्रू प्रवृत्तियाँ अर्थयुक्त अंशों में खंडित की जा सकती हैं जैसे अंग्रेज़ी के शब्द flesh, flicker, clash click, clack, crack, crash, lick, lash आदि खण्डित किए जा सकते हैं। हिब्रू लेखन-पद्धति के अक्षरों की वास्तविक ध्वन्यात्मक तत्वों के साथ एकरूपता को अस्वीकार करते हुए तथा यह देखते हुए कि ये तत्व केवल ध्वनि नहीं हैं अपितु रूढिबद्ध, संहिता बद्ध, तथा अभिरचनाबद्ध अर्थपरक ध्वनियां हैं, वह शब्दावली के साथ संघर्ष करते हुए परन्तु भाषायी तथ्यों में वास्तविक अन्तर्दृष्टि का परिचय देते हुए *Phoneme* स्वनिम की धारणा तक पहुंच गया जिसे उसने 'Sign' (चिन्ह) या 'Vocal Sign' (मौखिक चिन्ह) नाम दिया। उसने शब्दों तथा चिन्हों के बीच जटिल घनिष्ठता के तथ्य पर बल दिया। इस घनिष्टता के भाग के रूप में 'फोनीम' निश्चित अर्थगत कार्य ग्रहण कर सकती है। अंग्रेजी में ð स्वनिम (*th* का घोषरूप) अंग्रेजी के गूढ प्ररूपी निश्चय-वाचक निपातों आदि में आती है (The This There Then आदि)। अतः *th* ध्वनि के घोष रूप को नए तथा काल्पनिक शब्दों में स्वीकार करने के विरुद्ध मानसिक दबाव उपस्थित रहता है जैसे *thig, thag, thob thuxzle* आदि में निश्चयवाचक अर्थ न होने के कारण। यदि किसी नए पृष्ठ पर हमें एक नया शब्द (जैसे *thob*) मिल जाए तो हम सहज-प्रवृत्तिवश उसे अघोष ध्वनि प्रदान करेंगे जो think शब्द में *th* को प्राप्त है। परन्तु यह कोई 'सहज-प्रवृत्ति' नहीं। यह, पुनः वही हमारा पुराना मित्र भाषाई घनिष्ठता है। किसी शब्द को आप निश्चयवाचक अर्थ प्रदान कीजिए, उदाहरणार्थ *Thag* को 'बाड़ के ऊपर' के समान मानिए और हम तुरन्त There वाली ð घोष ध्वनि को यहाँ प्रतिस्थापित कर देंगे। Fabre d' Olivet को ऐसी सभी बातों के विषय में पता था।

इसके अतिरिक्त, *Fabre d' Olivet* केवल व्याकरणिक ढंग से ही नहीं अपितु मानवशास्त्रीय ढंग से सोचता था। उसकी दृष्टि में भाषा एक ऐसी 'क्षमता' नहीं है जो केवल अपने ही स्थान पर उदात्त है, अपितु एक ऐसी चीज़ है, जिसे उस मानविक व्यापार तथा संस्कृति के प्रकाश में समझा जाना चाहिए, जिसका यह एक

भाग है। यह विशेषीकृत भाग भले ही हो परन्तु इसके सिद्धान्त शेष सभी से भिन्न नहीं हैं। मुख से उच्चरित चिह्न (Phoneme) एक अत्यधिक विशेषीकृत चेष्टा है अथवा प्रतीकात्मक कार्य है, और भाषा एक सम्पूर्ण कायिक व्यापार का विकास है, जो प्रतीकात्मक होकर, फिर, अपनी प्रतीकात्मकता को अधिकाधिक मौखिक माध्यम की ओर मोड़ती रहती है—आधुनिक भाषा में इस प्रकार अभिव्यक्त की जाने वाली उसकी ऐसी ही शिक्षा है।

इसके पश्चात हमें आयरलैंड के James Byrne (1820–97) तक पहुंचने से पहले, चिन्तन का भाषायी माध्यम से विवेचन करने वाला कोई भी महत्त्वपूर्ण व्यक्तित्व दृष्टिगोचर नहीं होता। उसका अध्ययन संसार भर की ज्ञात भाषाओं के व्याकरणिक संरचना सम्बन्धी सर्वेक्षण के अत्यधिक मूल्यवान विचार पर आधारित था। उसका 'महान' ग्रन्थ,—कम-से-कम, 'धारणा में महान' ग्रन्थ कहलाने योग्य है—यद्यपि इसे दो खण्डों में प्रस्तुतीकरण की दृष्टि से, सम्भवतः, महान नहीं कहा जा सकता, जिसे उसने *General Principles of Structure of Language* नाम दिया, तथा जो 1885 में प्रकाशित हुआ।[17] इसका उल्लेखनीय वैशिष्ट्य था, 'होटेण्टोट' से लेकर 'चीनी' तक भूमण्डल पर मिलने वाली सभी भाषाओं की व्याकरणिक रूपरेखाओं का संक्षिप्त रूप में प्रस्तुतीकरण। अमरीका से बाहर के लगभग सभी भाषायी परिवारों का तथा अमरीका की बहुत सी भाषाओं को उसके ग्रन्थ में प्रतिनिधित्व प्राप्त है। इस सर्वेक्षण पर Byrne ने अपना मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त स्थापित किया है; और मुझे तो कम-से-कम यह महत्त्वपूर्ण प्रतीत होता है कि Byrne ने भाषा-संरचना के आधार पर उन दो मौलिक मनोवैज्ञानिक प्रकार के वैषम्यों का पता लगाया, बहुत दिन बाद, जिन्हें युंग ने मनोरोग-विज्ञान के माध्यम से प्राप्त किया तथा उन्हें extraversion (बहिर्मुखता) एवं introversion (अन्तर्मुखता) के प्रकार नाम दिया। युंग ने यह भी दिखाया कि किस प्रकार सारे इतिहास में इन दो प्रकारों के विरोध के परिणाम-स्वरूप उत्तरोत्तर दर्शन तथा धर्म के क्षेत्र में मौलिक विवाद तथा विच्छेदकारी सम्प्रदाय उत्पन्न हुए। Byrne ने स्वतन्त्र रूप से पता लगाया, या वह समझता था कि उसने पता लगाया—कि भाषायी संरचना तथा दो प्रकार की मनोवृत्तियों में पारस्परिक सम्बन्ध है—एक तेज प्रतिक्रिया वाली, तेजी से चिन्तन करने वाली तथा चंचल मनोवृत्ति, दूसरी मन्द प्रतिक्रिया वाली, मन्दगति से चिंतन करने वाली परन्तु अधिक गहन एवं शान्त (मनोवृत्ति)। मन्दगति से चिन्तन करने वाली मनोवृत्ति के विषय में, जो उसकी अन्तर्मुखी वृत्ति का संकेत देती है, युंग का मत था कि यह उन संश्लिष्ट भाषाओं के साथ विद्यमान रहती है जिनमें प्रकट कोटि की जटिल रूप-प्रक्रिया होती है, तथा अत्यधिक

17. [तिथियों की आपूर्ति मैंने की है, Byrne के जीवनकाल की तिथि भी मैंने ही दी है। यहाँ पर तथा इससे आगे व्होर्फ अपनी पाण्डुलिपि में Thomas Byrne नाम लिखता है परन्तु ऐसा स्मृति-दोष के कारण हुआ होगा—JBC]

व्युत्पत्ति, तथा शब्द-रचना होती है, और उनकी पराकाष्ठा बहुसंश्लेषणात्मक भाषाओं के रूप में मिलती है। उसके द्वारा प्रतिपादित तेज चिन्तन वाली (बहिर्मुखी) मनोवृत्ति, कुल मिलाकर, सरल रूपप्रक्रिया, संश्लेषण के अभाव, विश्लेषणात्मक या चरम-सीमा के रूप में अयोगात्मक भाषाओं के साथ विद्यमान रहती है।

परन्तु, जबकि मैं इस प्रकार के निष्कर्ष की सम्भावना के प्रति सहानुभूति रखता हूं, जो निस्सन्देह एक महान उपलब्धि हो सकती है, तथा Byrne द्वारा युंग के सिद्धान्त के पूर्वानुमान से प्रभावित भी हूं, परन्तु मुझे Byrne का सामान्य मत युक्ति युक्त एवं प्रत्यायक इसलिए प्रतीत नहीं हुआ क्योंकि मैं अच्छी तरह अनुमान लगा सकता हूं कि Byrne नितान्त अपर्याप्त सामग्री से अपना काम चला रहा था। इतना अवश्य है कि यह कार्य अपने ही ढंग के बौद्धिक स्तर वाले मनुष्य के ज्ञान के लिए सबसे बड़े महत्त्व की चीज है, विशेषत: भविष्य के लिए, क्योंकि Byrne द्वारा शीघ्रता एवं असावधानीपूर्वक किए गए उस वास्तविक महान कार्य का सम्पादन, यथासम्भव, सुचारु रूप से किया जा सकता है। ऐसा करने के लिए Byrne द्वारा प्रयुक्त की गई भाषाओं के अतिरिक्त, न केवल, बहुत सी अन्य भाषाओं का, विशेषत: अमरीकी भाषाओं का सर्वेक्षण अपेक्षित है, अपितु, प्रत्येक भाषा के उसके अपने अभिरचन तथा वर्गों पर आधारित, वैज्ञानिक रूप से बनाए गए, ऐसे व्याकरण की भी आवश्यकता है जो व्याकरणिक तर्क तथा सामान्य पूर्वानुमानों एवं पूर्वाग्रहों से यथासम्भव मुक्त हो। Byrne ने अपनी सामग्री पुराने ढर्रे के ऐसे व्याकरणों से प्राप्त की जो औपचारिक तथा श्रेण्य ढंग के थे। ये व्याकरण, किसी भी अवसर पर, पराई भाषा की अभिरचनाओं तथा विचारों की फौज की फौज किसी बेचारी बदकिस्मत भाषा पर लाद सकते हैं। न ही तो इन व्याकरणों में से कोई, और न स्वयं Byrne ही, किसी भाषा का अपने ही ढंग का ऐसा अद्वितीय विवरण दे सका जैसा कि Fabre D' Olivet ने दिया था; वास्तव में वह योग्यता मर चुकी थी। परन्तु जब तक वह योग्यता पूर्णतया विकसित वैज्ञानिक तकनीक के रूप में पुन: जीवित नहीं की जाती, तथा इसका प्रयोग दूसरे विश्व-सर्वेक्षण तथा तुलना के लिए नहीं किया जाता, तब तक मनुष्य अपने बौद्धिक जीवन के मूलाधार से अनभिज्ञ रहेगा। वह भूमण्डलीय स्तर पर 'मानव-विचार'' से सम्बन्धित यह विवेचन करने में असमर्थ रहेगा कि मानव जाति के विषय में उसका स्वरूप क्या है।

बोअस द्वारा अमरीकी इण्डियन-भाषाओं पर किए गए आक्षेपों के काल में, तथा उसके बाद भी, वह योग्यता पुन: जीवित होकर रहने लगी; विशेष रूप से उसकी पुस्तिका[18] की उचित रूप से प्रख्यात भूमिका के अन्तर्गत, सिद्धांतों के आदर्श

18. Boas, Franz (ed): *Hand book of Indian American Languages* (Parts 1 and 2), Washington, D. C. Government Printing Office, 1911–22 (Bull. 40, Bur. Amer. Bthnol. Sithsonian Institution,—JBC

तथा प्रणालियों के विवरण के बल पर उस योग्यता में एक नए प्राण का संचार हो गया। बोअस के साथ, यह आधुनिक वैज्ञानिक रूप में, तथा स्वीकार्य विज्ञान-सम्प्रदाय के रूप में, प्रकट इस तरह नहीं हुई, जैसे कि पहले रहस्यात्मकता लिए हुए प्रचुर उत्पादक-कल्पना के रूप में प्रकट हुई थी। बोअस ने इतिहास में दूसरी बार, परन्तु, वैज्ञानिक ढंग से पहली बार, यह दिखाया कि 'भाषा', अपने ही अद्वितीय ढंग से, तथा 'श्रेण्य-परम्परा' की कोटियों को बलपूर्वक लादे बिना, किस प्रकार विश्लेषित की जा सकती है। इस नए दृष्टिकोण के तकनीक का पर्याप्त विकास रुक-रुक कर होना था। जब बोअस की देखरेख में अमरीकी भाषाओं ने अपनी विचार-कोटियों की अद्वितीय सूक्ष्मताएं तथा जटिलताएं प्रकट करनी आरम्भ कीं, तो उस समय तक स्वनिमिक कलन (Phonemic Calculus) अभी पैदा भी नहीं हुआ था। अमरीकी क्षेत्रीय भाषाविज्ञान, Fabre की तरह कल्पनात्मक अन्तर्ज्ञान के शानदार बुद्धिकौशल में स्वनिम 'रूपस्वनिम' सम्बन्धी अन्तर्दृष्टि प्राप्त नहीं कर सका। पहले उसे आधुनिक भाषाओं के क्षेत्र में कार्य करने वाले स्वनविज्ञान-विशेषज्ञों द्वारा विकसित की जाने वाली इन धारणाओं की उसे प्रतीक्षा करनी पड़ी, तथा पहले-पहल उसमें मनोवैज्ञानिक विचक्षणता का भी अभाव था।

रंगमंच पर सपीर के प्रकट होते ही, नया युग दूसरे अंक में प्रविष्ट हुआ—एक वास्तविक आधुनिक भाषायी दृष्टिकोण के क्षेत्र में—विशेषतः उस समय जबकि 1921 में उसकी *Language*[19] नामक कृति प्रकाशित हुई। चिन्तन के प्रति भाषायी उपगम के प्रयोग का आरम्भ करने तथा उसे वैज्ञानिक प्रामाणिकता देने तथा इसके अतिरिक्त मनोविज्ञान तथा मानव-विज्ञान के लिए भाषा-विज्ञान का महत्त्व प्रदर्शित करने के लिए सपीर ने किसी भी अन्य विद्वान की तुलना में अधिक कार्य किया है। इस दृष्टिकोण के एक बार आरम्भ हो जाने पर कि 'भाषाविज्ञान चिन्तन के सिद्धान्त के लिए, तथा अन्ततोगत्वा सभी मानव-सम्बन्धी विज्ञानों के विश्लेषण के लिए आधारभूत है; इस उदीयमान अनुभूति तथा विकासशील विचार के प्रत्येक सहयोगी का नामोल्लेख करना एक कठिन काम है। दिलचस्पी रखने वाले पाठकों को, आंशिक एवं अत्यन्त अपूर्ण संलग्न ग्रन्थ-सूची देखने का सुझाव दिया जाता है।

III

चिन्तन विषयक विवेचन, जो प्राचीन समाज पर लागू होता है, मानवशास्त्र के लिए दो प्रकार से महत्त्वपूर्ण है। पहले, उसी प्राचीन समाज में सांस्कृतिक तथा मनो-वैज्ञानिक-भाषायी अन्तर्दृष्टियों की प्राप्ति के लिए, विशेषतः यदि एक ही अनुसंधाता द्वारा कार्य किया गया हो तो एक दूसरे पर बहुत ही लाभप्रद प्रभाव पड़ने की आसानी से आशा की जा सकती है। हमारे पास सपीर की तथा अन्य विद्वानों की जानकारी

19. **तिथि की आपूर्ति मैंने की है। पूरा संकेत इस प्रकार है :** Sapir, Edward. *Language : An Introduction to the Study of Speech* New Yorkt Harcourt Brace Co., 1921, VII, 238 pp.–JBC—

देने वाली शिक्षा तथा ऐसे प्रमाण हैं जो सिद्ध करते हैं कि यह एक सत्य है। भाषा-विज्ञान का मौलिक तत्व 'अर्थ की खोज' है, तथा जैसे-जैसे विज्ञान इसकी प्रणालियों को सुधारता जाता है, तो इस खोज के कारण यह अनिवार्य रूप से अधिक मनोवैज्ञानिक तथा सांस्कृतिक होता जाता है, जबकि वह 'कथन' की लगभग गणितीय सुनिश्चितता को भी बनाए रखता है, जिसे वह तथ्यों के भाषायी क्षेत्र की सुव्यवस्थित प्रकृति से प्राप्त करता है।

आइए, हम यह मान लेते हैं कि एक नृकुल-विज्ञानी इस बात का पता लगाता है कि होपी लोग अपनी वर्षा-सम्बन्धी प्रार्थनाओं में बादल के विषय में इस प्रकार बात करते हैं मानो वे सजीव हों। वह यह जानना चाहेगा कि यह कोई रूपक है, अथवा कोई विशेष धार्मिक या (अनुष्ठान सम्बन्धी) औपचारिक अलंकार है, या यह उनका बादल के विषय में सोचने का साधारण एवं सामान्य ढंग है। यह ऐसी समस्या है जिसका अत्यधिक अर्थयुक्त उत्तर भाषा दे सकती है, और हम तुरन्त ही यह देखने के लिए मुड़ पड़ते हैं कि क्या इस भाषा में ऐसी लिंग व्यवस्था है जो निर्जीव को सजीव से भिन्न रूप में प्रदर्शित करती है, और यदि ऐसा है तो बादल को किस श्रेणी में रखती है। हमें पता चलता है कि होपी में लिंग है ही नहीं। परम्परा-पद्धति के, बोअस से पूर्वकालीन, व्याकरण इस स्थान पर आकर रुक जाएंगें, और यह समझ लेंगे कि वे एक उत्तर दे चुके हैं। परन्तु सही उत्तर उसी व्याकरण द्वारा दिया जा सकता है जो अप्रकट तथा प्रकट संरचना एवं अर्थ का विश्लेषण करता है क्योंकि होपी भाषा-संज्ञाओं की सजीव श्रेणी को गूढ़-प्ररूपों और केवल गूढ़-प्ररूपों के रूप में भिन्न मानती है। निर्णायक प्रतिघात बहुवचन बनाते समय उपस्थित होता है। जब बाँसुरी समाज (Flute Society) के सदस्य, जिन्हें Flutes 'बाँसुरियाँ' भी कहा जाता है, तो इस (अप्रकट-रूप से) निर्जीव संज्ञा (बांसुरी) का बहुवचन सजीवन संज्ञाओं के बहुवचन की तरह बनाया जाता है। परन्तु ʔo.'maw 'बादल' शब्द सदैव का बहुवचन, सदैव सजीव संज्ञाओं की भांति बनाया जाता है, इसका कोई अन्य बहुवचन नहीं होता, यह निश्चित रूप से 'निर्जीवता' के गूढ़-प्ररूप से सम्बन्ध रखता है। अत: इस प्रश्न का उत्तर मिल जाता है कि क्या बादलों की सजीवता एक अलंकार है, या भाषा की औपचारिकता है; या इस बात का उत्तर मिल जाता है कि यह किसी विचार की गहरी एवं सूक्ष्म रूप से व्यापक अन्तर्धारा से विकसित होता है; और कुछ नहीं तो कम-से-कम एक नए अर्थ की बाढ़ तो आ ही जाती है।

अत: तथाकथित प्राचीन मानव तथा आधुनिक मानव की मनोवृत्तियों के सभी नहीं तो कम से कम कुछ भेदों का—चाहे वे वास्तविक हों अथवा काल्पनिक—विश्लेषण करने में भाषा को समर्थ होना चाहिए। क्या प्राचीन मानव-समाज आधुनिक सभ्य मानव की मनोवृत्ति से भिन्न एक ऐसी इकाई श्रेणी बनाते हैं जो उनकी और इसकी सभ्यता की भिन्नताओं से अतिरिक्त है, तथा जिसका संकेत Levy

Bruhl की Participation Mystique[20] की धारणा में मिलता है, तथा 'आदिम-मानव' की 'अबोधशैशव' के साथ समानता में मिलता है, जिसका प्रयोग Freud और युंग ने किया है, या (पुन: सामान्य संस्कृति से अलग) क्या सभ्य आधुनिक मानव मनोवृत्ति का एक इकाई वर्ग है क्योंकि सभी आधुनिक सभ्य भारोपीय भाषाओं में महान समानताएं हैं, जबकि इसके विपरीत भाषा-संरचना के सम्पन्न वैभिन्य को प्रतिबिम्बित करने वाली मनोवृत्ति की बहुत सी भिन्नताएं हैं। यह महान मनोवैज्ञानिक जगत-व्यापक प्रश्नों में से केवल एक है जो भाषाविज्ञान के क्षेत्र में आता है, तथा एक निष्पक्ष एवं सकारात्मक सुनिश्चित उत्तर की अपेक्षा करता है, जिसका केवल भाषा-वैज्ञानिक अनुसंधान कर सकता है। हम इस प्रकार की मनोवृत्ति के विषय में, Participation Mystique के निर्दिष्ट अर्थ में सोचने के अभ्यस्त होने के कारण उसे अपनी चिन्तन की मनोवृत्ति से कम, तथा कम तर्कसंगत मानते हैं। तथापि, बहुत सी अमरीकी इण्डियन तथा अफरीकी भाषाएं सुचारु रूप से गठित, सुन्दर रूप से तर्क संगत कारणता, क्रियाशीलता, परिणाम, गतिशील तथा ऊर्जा-गुण, अनुभूति की प्रत्यक्षता, इत्यादि से सम्बन्धित प्रभेदों के प्राचुर्य से युक्त हैं,—उनमें चिन्तन-कार्य के सभी विषय हैं, निस्सन्देह, तर्क-संगति के सार हैं। इस विषय में वे योरोपीय भाषाओं से बहुत आगे बढ़ी हुई हैं।[21] सबसे

20. [Levy–Bruhl, Lucien. Les *Fonctions mentales dones les societies inferieures*, Paris 1912. Participation Mystique **विषय के साथ विशेष प्रकार के मनोवैज्ञानिक सम्बन्धों का निर्देश करता है, जिनमें व्यक्ति अपने तथा विषय के बीच पार्थक्य को स्पष्ट रूप से नहीं देख सकता**—JBC]

21. **उदाहरणार्थ, मेरे लेख** 'The Punctual and Segmentaaive aspects of verbs in Hopi' **में आवृत्तिपरक तथा स्पन्दनात्मक तथ्यों का विवेचन देखिए, या** [Lacuna **(अन्तराल)**] **के उदाहरण** Watkins' Chichewa **में देखिए।**

[सम्भवतः व्होर्फ क्रियापदीय व्यवस्था का निर्देश करना चाहता था, जो कार्यों के प्रेरणार्थक पक्षों का बहुत सूक्ष्म विवेचन करती है। उदाहरणार्थ, उसमें कई भूतकाल हैं जिनका प्रयोग न केवल संकेतित भूतकाल (पिछली रात से, या रात से पहले) की परोक्षता पर निर्भर करता है, अपितु इस बात पर भी, कि क्या कार्य वर्तमान को प्रभावित करना जारी रखता है या नहीं। उसमें सात 'वाच्य' भी हैं जो उद्देश्य, क्रिया तथा विधेय में भिन्न प्रकार के सम्बन्धों की अभिव्यक्ति करते हैं। देखिए pp. 49-57, 72-81. 'A Grammar of Chichewa, a Banty language of British Central Africa, by Mark Hanna *Watkins, Languaga Disertation* no, 24, 1937. **व्होर्फ द्वारा अपने लेख** 'Language, Mind. and Reality' **में किए गए विवेचन में देखिए** (p. 265 f.) –JBC]

अधिक प्रभावोत्पादक ढंग से विचक्षण प्रकार के प्रभेद प्रायः वे हैं, जो अप्रकट तथा गूढ़-प्ररूपीय स्तरों तक किए गए विश्लेषण द्वारा प्रकट होते हैं। इसमें सन्देह नहीं है कि अप्रकट कोटियों में प्रकट कोटियों की अपेक्षा अधिक तर्क संगत होने की प्रवृत्ति रहती है। लैटिन या जर्मन के चिह्नित लिंगों की अपेक्षा अंग्रेज़ी का अचिह्नित लिंग अधिक तर्कसम्मत है तथा वास्तविकता के अधिक निकट है। जैसे-जैसे बाह्य चिह्न कम होते जाते हैं वैसे ही वर्ग, एक विचार के चारों ओर, वर्ग के सदस्यों के अर्थों में जो भी सश्लेषण करने वाले सिद्धान्त हैं—उन सब पर अधिक आश्रित होने के लिए घनीभूत होता जाता है। यह सत्य भी हो सकता है कि बहुत से अमूर्त विचार इसी प्रकार अस्तित्व में आते हैं। कुछ रूपात्मक तथा बहुत अधिक सार्थक न होने वाले भाषायी वर्ग, जिन्हें प्रकट रूपों द्वारा निर्दिष्ट किया गया है, मोटे रूप में तथ्यों की श्रृंखलाबद्धता के साथ ऐसे ढंग से मेल खा सकते हैं जिससे कि इस 'समकक्षता' की तर्क-सम्मति की प्रतीति होने लगती है। ध्वन्यात्मक परिवर्तन के कारण भेदक चिह्न, अन्त्य प्रत्यय, या कुछ भी लुप्त हो सकता है और वर्ग रूपात्मक से अर्थपरक कोटि का हो जाता है। अब इसका प्रतिघात वह है जो इसे एक वर्ग के रूप में वैशिष्ट्य प्रदान करता है, और इसका भाव वह है जो इसका एकीकरण करता है। जैसे-जैसे समय बीतता जाता है, और प्रयोग बढ़ता जाता है, वैसे ही यह एक तर्काधार के चारों ओर उत्तरोत्तर व्यवस्थित होता जाता है। यह अर्थ की दृष्टि से अनुकूल शब्दों को आकर्षित करता है, तथा उन पहले सदस्यों को छोड़ देता है जो अब अर्थ की दृष्टि से अनुपयुक्त हो गए हैं। अब 'तर्क' वह है, जो इसे एक साथ मिलाकर रखता है, तथा इसका तर्क उस एकता का अर्थपरक सहयोगी बन जाता है, जिसका समाकृतिपरक पक्ष अपेशीय अनुबन्धों का एक पुंज है जो शब्दों के समस्त बेड़े को एक साथ लंगर डलवा कर उन्हें उनके सामान्य प्रतिघात के साथ बांध देता है। अर्थ की दृष्टि से यह तथ्यों के पीछे सिद्धान्त का एक गहन प्रोत्साहन इस प्रकार बन गया है, जैसे निर्जीविता के, 'पदार्थ' के, अमूर्त लिंग के, अमूर्त व्यक्तित्व के, शक्ति के भाग, कारणता के भाग—कारणता की वह प्रकट कोटिपरक धारणा (शब्दीकरण) नहीं, जो शब्द 'कारणता' के सदृश है, परन्तु अप्रकट भाग, 'संवेदन' (Sensing) या जिसे सामान्य रूप से (परन्तु युंग के अनुसार गलत ढंग से) 'भावना' कहते हैं— यह भावना कि कारणता का कोई सिद्धान्त अवश्य होना चाहिए। बाद में इस अप्रकट भाव की एक शब्द के रूप में, तथा दार्शनिकों द्वारा आविष्कृत एक शाब्दिक धारणा, जैसे 'कारणता' के रूप में लगभग द्विरावृत्ति हो सकती है। इस दृष्टिकोण से बहुत से अशिक्षित (आदिम) समाज, जिनका उप-विवेकशील होना तो दूर रहा—मानव मस्तिष्क को सभ्य मानव की विवेकशीलता से उच्चतर तथा अधिक जटिल स्तर पर कार्य करता हुआ दिखा सकते हैं। हम यह नहीं जानते कि 'सभ्यता' 'विवेकशीलता' का पर्याय है। इन प्राचीन गणों में दार्शनिकों का अभाव सम्भव है, जिनका अस्तित्व ऐसी आर्थिक सम्पन्नता पर निर्भर करता है, जिसे इतिहास-काल में बहुत कम सभ्यताओं ने प्राप्त किया है; या,

सम्भवत: अत्यधिक तर्कशीलता स्वयं अपने-आप को परास्त कर सकती है; या किसी अन्य क्षतिपूरक सिद्धान्त को विकसित कर सकती है। ये सभी प्रश्न तत्वत: मानव-शास्त्र संबंधी हैं, जिनके लिए नृकुलविज्ञान, तथा मनोविज्ञान भाषाविज्ञान के बीच सम्पर्क, सम्भवत: सब से अधिक युक्तियुक्त मार्ग प्रस्तुत करता हुआ प्रतीत हो सकेगा।

दूसरे मार्ग का, जिसके द्वारा 'चिन्तन' का भाषायी विवेचन मानवशास्त्र के लिए महत्त्वपूर्ण है, सम्बन्ध भविष्य से है; सम्भवत:, सब से अधिक, मानव-जाति के सुदूर भविष्य से है, जबकि वह किसी और ही रूप में विकसित हो चुकी होगी और हमें आशा करनी चाहिए कि वह आज के मानव से बहुत अधिक ऊंची ही होगी। निकट भविष्य पर दृष्टिपात करते हुए यह वाञ्छनीय है कि मानवशास्त्र, भाषाविज्ञान को उस समय की तैयारी के लिए सहयोग दे जो कि अधिक दूर स्थगित नहीं किया जा सकता, जब भाषा का सांस्कृतिक एवं मनोवैज्ञानिक 'जगत-सर्वेक्षण' सम्भव ही नहीं अत्यन्त आवश्यक भी होगा, जिसका पूर्वाभास James Byrne के ग्रन्थों में मिलता है, और इस बार सहयोग इस ढंग से दिया जाएगा जिससे कि हमारा विज्ञान नए सत्य के उस प्रचुर धन से सम्पन्न हो जाएगा जो खोजे जाने की प्रतीक्षा में उस क्षेत्र में दबा पड़ा है।

जैसे-जैसे समय बीतता जाता है, उस प्रकार का ज्ञान, जिसे उपरोक्त सर्वेक्षण उद्घाटित करेगा,—विद्या-सम्बन्धी अध्यवसायों के क्षेत्र से बाहर भी अधिकाधिक दिलचस्पी तथा महत्त्व का विषय बनता जा रहा है। क्योंकि आजकल रचे जाने वाले विश्व-इतिहास में इसका बहुत बड़ा हाथ हो सकता है। पारस्परिक सहानुभूति प्राप्त करने की समस्या, भाषायी बाधाओं की समस्या, प्रचार तथा विज्ञापन की, शिक्षा की, मनुष्यों के मामलों को बिना अनुचित संघर्ष सुलझाने के तकनीक की समस्या, भौतिक विज्ञान द्वारा लाए गए परिवर्तनों के साथ-साथ चल सकने वाली बुद्धि की समस्या, अर्थात् ये सभी समस्याएं 'भाषा तथा विचार' के इस विषय की उलझन में अवश्य पड़ती हैं। प्रत्येक व्यक्ति स्वाभाविक रूप से भाषा के प्रश्न में रुचि रखता है, यद्यपि, या तो लोग इसे जानते नहीं हैं, या इसे जानते हैं, और समझते हैं कि वे इसके विषय में सभी कुछ जानते हैं। उदाहरणार्थ आजकल Odgen की कुशल कृत्रिम भाषा, जिसे वह 'बेसिक इंग्लिश' कहता है, के विस्तृत प्रयोग का आन्दोलन चल रहा है, जिसे व्यापारियों, शिक्षकों, अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में रुचि रखने वाले लोगों, तथा H. G. Wells जैसे सामाजिक भविष्यवक्ताओं से पर्याप्त रूप में सहानुभूति मिली है। अलग बैठे रहकर इस प्रकार के भाषायी आन्दोलनों को अवैज्ञानिक कह कर शान से निन्दा करने का कोई लाभ नहीं है। चाहे अवैज्ञानिक है या नहीं—वे आज के भाषायी तथ्य अवश्य हैं, और फिर भाषा-विज्ञान, जो एकमात्र इस प्रकार के आन्दोलनों के महत्त्वपूर्ण आधारभूत सिद्धान्तों का संचालन करने में समर्थ है, क्यों एकान्त उदासीनता अपनाकर तमाशा देखता रहे और उन्हें गलतियाँ करते रहने दे

जो अपनी अपरिष्कृत परन्तु महान् शक्ति का उपयोग कल के चिन्तन को परिवर्तित करने में लगा रहे हैं ? 'बेसिक इंग्लिश' लोगों को अच्छी लगती है क्योंकि वह सरल प्रतीत होती है। परन्तु, वे जिन्हें यह सरल प्रतीत होती है, या तो जानते हैं, या सोच लेते हैं कि वे अंग्रेजी जानते हैं। यहाँ एक बाधा उपस्थित होती है। प्रत्येक भाषा उस भाषा को बोलने वाले के लिए सरल प्रतीत होती है, क्योंकि उन्हें इसकी संरचना का बोध नहीं होता। परन्तु अंग्रेजी कुछ भी हो सकती है, परन्तु सरल नहीं है—यह एक विस्मयकारी जटिल व्यवस्था है, जिसमें अप्रकट कोटियों, गूढ़-प्ररूपों, वरणात्मक पदिमों, अनुक्रमात्मक पदिमों[22], काफी पेचीदा अर्थयुक्त बलाघात-अभिरचनाओं, एवम् अनुतान-अभिरचनाओं का बाहुल्य है। जहाँ तक स्वर-गुणिमिक जटिलता का सम्बन्ध है अंग्रेजी निस्सन्देह अपने-आप में एक श्रेणी है; इस विषय में संसार भर की सबसे अधिक जटिल भाषाओं में से एक होने के नाते, कुल मिलाकर यह इतनी पेचीदा है जितनी कि अमरीका की अधिकांश बहु-संश्लिष्ट भाषाएं—यह तथ्य ऐसा है जिससे हम आनन्दपूर्वक अनभिज्ञ हैं। अंग्रेजी में जटिल संरचना मुख्यत: अप्रकट कोटि की है, जो उसके विश्लेषण को और भी अधिक कठिन बनाती है। अंग्रेजी सीखने वाले विदेशियों को इसे अचेतन रूप से समाविष्ट करना पड़ता है—एक प्रक्रिया जिसमें वर्षों लग जाते हैं,—वह भी बड़ी मात्रा में बोली जाने वाली अंग्रेजी की बम्बारी को निरन्तर सहते रहने के बल पर; ऐसे अवसर पर कोई व्याकरण ऐसा नहीं है जो इसे सिखा सके। जैसा बेसिक इंग्लिश के सम्बन्ध में है, वैसा ही अन्य कृत्रिम भाषाओं के विषय में भी है। क्योंकि, कतिपय सांस्कृतिक रूप से प्रमुख, योरोपीय भाषाओं की आधारभूत संरचनाओं, तथा कोटियों को स्वाभाविक मान लिया जाता है। उनके पूर्वानुमानों का जटिल जाल, मिथ्या सरलता का आधार बना लिया जाता है। हम "a large black and white hunting dog" कहते हैं और यह कल्पना कर लेते हैं कि बेसिक इंग्लिश में प्रत्येक व्यक्ति ऐसा ही करेगा। परन्तु मौलिक रूप से भिन्न मातृभाषा वाले व्यक्ति से कैसे आशा की जा सकती है कि वह "hunting white black large a dog." नहीं कह सकता ? अंग्रेजी के विशेषणों का सम्बन्ध गूढ-प्ररूपों से है जिनका निश्चित स्थान नियुक्त है, तथा उनका सूत्र सुनिश्चित तथा जटिल है, परन्तु देख लीजिए कि बेचारा इण्डियन अपने चिन्तन को बिल्कुल दूसरे ढंग से व्यवस्थित करता है। परन्तु ऐसे व्यक्ति को, जिसे बेसिक इंग्लिश का प्रयोग करना है, 'वास्तविक रूप में बोली जाने वाली अंग्रेजी' की अत्यधिक पेचीदा अप्रकट संरचना को पहले जानना पड़ेगा या सीखना पड़ेगा।

---

22. **उपान्तीय टिप्पणी** Membership in Covert Categories of a certain type **अप्रकट कोटियों में विशेष प्रकार की सदस्यता प्रतीत होती है तथा** Leonard Bloomfield **की** *Language* (New york, 1933) **का भी निर्देश है, जहाँ पदिमों के विषय पर अध्याय** 10 12 **में तथा दूसरी जगह विचार किया गया है**—JBC

हम यहाँ उस गलती का उल्लेख कर रहे हैं जिसे ऐसे अधिकांश लोग करते हैं जो भाषा के सामाजिक प्रश्नों का समाधान करने का प्रयत्न करते हैं। वे भोलेपन से यह मान बैठते हैं कि भाषा शब्दीकरण का एक ढेर लगाने के सिवाय और कुछ नहीं है, और यह कि बस यही कुछ है जिसकी आवश्यकता किसी प्रकार के या सभी प्रकार के विवेकयुक्त चिन्तन के लिए पड़ सकती है, इससे कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण विचार, जिन्हें भाषा की संरचना तथा समाकृतिपरक घनिष्ठता प्रस्तुत करती है, उनकी समझ से बाहर हैं। यह भी सम्भव हो सकता है कि भाषा प्रकट रूप से जितनी सरल होती जाती है उतनी ही वह गूढ़-प्ररूपों तथा अन्य अप्रकट रचनाओं पर निर्भर करने लगती है। उतना ही अधिक यह अचेतन पूर्वकल्पनाओं को छिपाती है, उतने ही अधिक इसके 'शब्दीकरण' परिवर्तनशील एवं अपरिभाषेय या अनिर्वचनीय बनते जाते हैं। क्या यह अन्तर्राष्ट्रीय सरल भाषा के भावी समर्थकों के लिए एक मछलियों की सुन्दर पतीली नहीं होगा, जिसे चूल्हे पर चढ़ाने में उनका हाथ होगा? क्योंकि इन क्षेत्रों में गम्भीर चिन्तन करने के लिए हमें भाषाओं के समर्थ विश्व-सर्वेक्षण की आवश्यकता है।

IV

और अब, अधिक सुदूर भविष्य की ओर दृष्टिपात करते हुए, भाषा-विज्ञान के विषय का निरीक्षण करने तथा समस्त मानवजाति के दृष्टिकोण से चिन्तन पर इसके प्रभाव का अनुमान लगाने के लिए हमें एक अधिक विशाल दृष्टिकोण अपनाने की अनुज्ञा होनी चाहिए। ऐसा करने के लिए हमें घिसीपिटी उक्ति से प्रारम्भ करने से डरना नहीं चाहिए। मनुष्य, भाषा के कारण, तथा चिन्तन के महान विकास के कारण, अन्य पशुओं से भिन्न हो जाता है। जहाँ तक हम उसके भविष्य की पूर्व कल्पना कर सकते हैं, हमें यह कल्पना उसके मानसिक विकास के रूप में करनी चाहिए। हमारे पास यह मानने के सिवाय और कोई चारा नहीं है कि चिन्तन के भावी विकास ही मानव जाति के लिए प्राथमिक महत्त्व की चीजें हैं। वे इस पृथ्वीतल पर या ब्रह्माण्ड में, मनुष्य के अस्तित्व की अवधि भी निर्धारित कर सकते हैं। चिन्तन के लिए उपलभ्य सम्भावनाएं, सम्बन्धों को मान्यता प्रदान करने की सम्भावनाएं हैं, तथा मानसिक या बौद्धिक स्तर पर उन सम्बन्धों के साथ कार्यान्वित करने के तकनीकों की ऐसी खोज हैं, जो बदले में सम्बन्धों की उत्तरोत्तर विशाल होने वाली तथा अधिक विचक्षणात्मक महत्त्वपूर्ण व्यवस्था को जन्म देंगी। ये सम्भावनाएं भाषायी अभिव्यक्ति की व्यवस्थाओं के साथ अनिवार्य रूप से बँधी हुई हैं। मानव में उसके विकास की कहानी मानव के भाषायी विकास की कहानी है—सम्बन्धों को पहचानने, चुनने, संगठित करने, तथा सम्बन्धों के साथ व्यवहार करने, की हजारों नितान्त भिन्न व्यवस्थाओं की लम्बी कहानी है। इस विकासात्मक प्रक्रिया की प्रारम्भिक अवस्थाओं में मिलने वाली भाषा की वास्तविक प्राचीन धातुओं के विषय में हमें कोई ज्ञान नहीं है। जो कुछ भी हम कम-से-कम पता लगाने की स्थिति में हैं, वे हैं

इस विकास के परिणाम, जो हमें इस पृथ्वीतल पर चारों ओर प्रसारित रूप में आज भी विद्यमान दिखाई देते हैं। संसार भर के भाषायी वर्गीकरण के ज्ञान का, केवल प्रारम्भ ही, हमें प्रमाण के रूप में मिलता है। व्याकरण विषयक साधारण सामान्यी-करणों में, तथा तर्कशास्त्र एवं 'विचार-मनोविज्ञान' के सम्बन्धित क्षेत्र में हम उसी स्थिति में हैं जिसमें Linnaean से पहले वनस्पति-शास्त्र था। जीव-विज्ञान के रूपक का प्रयोग करते हुए मैं कहना चाहूंगा कि हमारे पास अभी तक वर्तमान भाषायी जीव-जातियों के विवरण जैसी कोई चीज नहीं है।

सौभाग्यवश, जीव-विज्ञान के लिए संसार भर का व्यवस्थित वर्गीकरण पहले हुआ, तथा उसने ऐतिहासिक एवं विकासात्मक प्रणाली के लिए आधार स्थापित कर दिया। दुर्भाग्यवश, अन्य सांस्कृतिक अध्ययनों की भांति भाषा-विज्ञान में भी विपरीत स्थिति रही है। जब मनुष्य की भाषा तथा विचार सम्बंधी धारणाएं, संसार की विभिन्न प्रकार की सैंकड़ों विद्यमान भाषाओं में से केवल कुछ एक भाषा-प्रकारों पर ही आधारित थीं, तब मानव पर विकास-सिद्धान्त के थोपे जाने से उसके प्रदेशीय भाषायी पक्षपात को दुरुत्साह प्राप्त हुआ, तथा उसने उस थोथी ज्ञान को प्रोत्साहित किया जिसके अनुसार उसकी अपनी चिन्तन-पद्धति तथा कतिपय योरोपीय भाषाएं, जिनपर वह आधारित है,—भाषा के विकास-कुसुम तथा पराकाष्ठा का प्रतिनिधित्व करने वाली मानी जाती हैं। यह तो ऐसी बात है जैसे Linnaean से पूर्वकालीन कोई वनस्पति-शास्त्री, जिसने विकास-सिद्धांत का विचार ग्रहण कर लिया हो, यह कल्पना करले कि समस्त कृषि द्वारा उत्पादित गेहूं तथा जई हिमालय पर किसी सीमित क्षेत्र में मिलने वाले 'एस्टर' पौधे से उच्चतर विकासात्मक स्तर का प्रतिनिधित्व करती हैं। प्रौढ़ जीव-विज्ञान के दृष्टिकोण के अनुसार दुर्लभ एस्टर ही निश्चित रूप से उच्च विकासीय श्रेष्ठता का अधिकारी है; गेहूं को उसकी प्रतिष्ठा तथा सर्वव्यापकता केवल मनुष्य के अर्थशास्त्र तथा इतिहास के कारण प्राप्त है।

योरोपीय भाषाओं की श्रेष्ठता तथा चिन्तन-अभ्यासों का प्रादुर्भाव भी (भाषाओं के विषय में अत्यल्प ज्ञान के सिवाय) और किसी कारण से नहीं हुआ। आधुनिक सभ्यता को प्राप्त करने वाली संस्कृतियों की कतिपय भाषाएं, जो समस्त भूमण्डल पर फैलने का विश्वास दिलाती हैं, तथा सैकड़ों विभिन्न विजातीय भाषाओं की समाप्ति का कारण बन सकती हैं; उनके विषय में यह सोचना निरर्थक है कि वे किसी प्रकार की जातीय श्रेष्ठता से युक्त हैं। इसके विपरीत अशिक्षित जातियों की भाषाओं, विशेष रूप से अमरीका की भाषाओं के थोड़े से सही वैज्ञानिक अध्ययन की आवश्यकता यह दिखाने के लिए पर्याप्त है कि हमारी भाषाओं से इन भाषाओं में सम्बन्धों की व्यवस्था कितनी अधिक सुनिश्चित तथा सूक्ष्म रूप से सुविस्तृत है।[23] बहुत सी अमरीकी भाषाओं के साथ

23. इस विषय पर पाण्डुलिपि में एक उपान्तीय टिप्पणी मिलती है। "निष्कर्ष—गल्ती इस बात के मान लेने में है कि भाषा का कार्य केवल विचारों का

तुलना में अंग्रेजी, जर्मन, फ्रांसीसी या इटली की भाषाओं का रूपात्मक व्यवस्थीकरण दरिद्र तथा नीरस प्रतीत होता है। उदाहरणार्थ हम होपियों की भांति संवेदन के माध्यम के संबंध को 'चेतना में परिणाम' के ढंग से भिन्न ढंग में अभिव्यक्त क्यों नहीं करते; जैसे, 'मैं देखता हूं कि यह लाल है', तथा 'मैं देखता हूँ कि यह नया है' के बीच अन्तर है? हम बिल्कुल भिन्न प्रकार के दो सम्बन्धों को 'That' से स्पष्ट रूप में मिलाकर एक कर देते हैं; जबकि होपी भाषा यह संकेत देती है कि पहले कथन में 'देखना' एक 'लाल' संवेदन को प्रस्तुत करता है, और दूसरे में देखने की प्रक्रिया एक अनिश्चित प्रमाण प्रस्तुत करती है जिससे नवीनता का अनुमान किया जाता है। यदि हम उसके रूप को 'मैं सुनता हूं कि यह लाल है' या 'मैं सुनता हूं कि यह नया है' के रूप में बदल दें तो हम योरोपीय, उसी लंगड़े 'कि' (that) से चिपके रहेंगे; परन्तु होपी भाषा ऐसे अवसर पर एक अन्य संयोजक का प्रयोग करती है और 'लाल' तथा 'नए' में कोई भेद नहीं करती, क्योंकि दोनों ही विषयों में, चेतना के समक्ष जो महत्त्वपूर्ण प्रस्तुतीकरण है, वह एक मौखिक सूचना सम्बन्धी है; तथा न तो वास्तविक रूप में संवेदन है, और न ही अनुमानपरक परिणाम। क्या यहाँ होपी भाषा, हमारी अभ्यसित अंग्रेजी भाषा से अधिक ऊंचा चिन्तन स्तर तथा परिस्थिति का एक अधिक विवेकशील विश्लेषण प्रस्तुत करती है? हाँ, यह करती है। इस क्षेत्र में तथा अन्य बहुत से क्षेत्रों में अंग्रेजी, होपी की तुलना में ऐसे है जैसे एक लाठी तलवार की तुलना में। ऊपर दिए गए उदाहरणों में that के द्वारा अभिव्यक्त किए सम्बन्धों के भेद को समझ सकने से पहले, हमें सोचना भी पड़ता है तथा प्रश्न पर कुछ झिझकना भी पड़ता है, या हम किसी से इसकी व्याख्या करवा लेते हैं, जब कि एक होपी इन सम्बन्धों का भेद श्रम-रहित सरलता से कर लेता है। क्योंकि उसकी भाषा के रूपों ने उसे ऐसा करने का अभ्यास प्रदान किया है।

BIBLIOGRAPHY

[पाण्डुलिपि के अन्त में Bibliography notes शीर्षक के अन्तर्गत एक अनुभाग है जो पुस्तक-सूची का एक ढांचा मात्र है; इसमें केवल नाम हैं। मैंने पादटिप्पणी-संकेतों में पहले ही निम्नलिखित नामों का उल्लेख किया है। Bloomfield Boas, Byrne, Fabre d' Olivete, Jung, Sapir, Watkins and Watson.

संचारण है।" संचारण शब्द पर बल देने का व्होर्फ का अभिप्राय यह है कि वह स्पष्ट करना चाहता है, कि भाषा न केवल विचार का संचारण करती है अपितु उसे आरम्भ करने का कार्य भी करती है। हम इस लेख की मुख्य धारणा स्वीकार कर लेते हैं तो यह ऐसा निष्कर्ष है जिसे स्वीकार करने के लिए हमें बाध्य होना पड़ता है—JBC

नीचे अब मैं उन नामों का उल्लेख करूंगा जो, सम्भवतः, व्होर्फ के मन में थे, कुछ के विषय में तो वह स्पष्ट संकेत देता है —]

De Angulo, Jaime. 'Tone patterns and verb forms in a dialect of Zapotek.' *Language* 2:238-250 (1926).

Flournoy, Theodore. *Metaphysique et Psychologie.* Geneva, 1890. [This may not be the relevant work.]

Haas, Mary. [Whorf probably referred to unpublished material which he has seen. See her sketch of Tunica, an American Indian language, in H. Hoijer, *Linguistic Structures of Native America.* New York, 1946.–JBC]

Jones, William, and Michelson, Truman. 'Algonquian (Fox)' Pp. 735-873 in Boas, F. (editor). *Handbook of American Indian Languages,* Part I. Washington : Government Printing Office, 1911.

Koffka, K. *Principal of Gestalt Psychology.* New York : Harcourt, Brace and Co., 1935.

Lowes, John Livingston. *Road to Xanadu.* Harvard University Press, 1927. [Whorf misremembered the author's name as Dickinson. He comments, "Interesting for illustrations of the dredging up of linguistic material from the unconcious."]

Murdock, George P. Our *Primitive Contemporaries.* New York : Macmillan, 1934.

Newman, Stanley S. *A Grammar of Yokuts, an American Indian Language of California.* Unpublished Ph.D. dissertation, Yale Univ. 1932. Aalso *Yokuts Language of California.* New York, 1944. (Viking Fund Publication in Anthropology, no. 2)

Morice, Adrian G. *The Carrier language (Dene family), a grammar and dictionary combined.* St. Gabriet-Modling near Vienna, Austria, 1932.

Ogden, Charles K. *Basic English : A General Introduction with rules and grammar.* London : K. Paul, Trench, Trubner, 1930. [Whorfs citation is to Ogden and Richards, but I believe he meant to refer to this book about Basic English.]

Swadesh, Morris. [Whorf probably referred to unpublished material which he had seen. See Swadesh's sketch of South Greenland Eskimo in H. Hoijer, *Linguistic Structures of Native America.* New York, 1946–JBC]

Trager, George L. "The phonemes of Russian." *Language,* 10 : 334-344 (1934).

व्याकरणिक कोटियाँ*

भारोपीयेतर भाषाओं का विवरण प्रस्तुत करने के लिए परम्परागत व्याकरणों से ली गई शब्दावली—जैसे क्रिया, संज्ञा, विशेषण, तथा कर्मवाच्य आदि का प्रयोग करने की स्वाभाविक प्रवृत्ति, भ्रमोत्पादक होने की गम्भीर सभावनाओं की आशंकाओं से भरी हुई है। साथ ही यह भी वाञ्छनीय है कि हम इन शब्दावलियों की परिभाषा इस ढंग से करें कि हम उनसे प्राप्त होने वाली बड़ी सुविधा का लाभ उठा सकें, और जहाँ कहीं सम्भव हो वहाँ विजातीय (भारोपीयेतर) भाषाओं पर इन्हें वैज्ञानिक एवम् संगत रूप से लागू कर सकें। ऐसा करने के लिए हमें संसार की भाषाओं में मिलने वाली व्याकरणिक कोटियों का पुनरीक्षण करना चाहिए। यह भी आवश्यक है कि हम भाषायी तथ्यों के विषय में विश्वव्यापी दृष्टिकोण अपनाएँ, यथासम्भव नई धारणाएँ बनाएँ तथा शब्दावली में आवश्यक संवर्धन करें। ये कथन अंग्रेजी पर समान-रूप से लागू होते हैं, क्योंकि अंग्रेजी भाषा सामान्य भारोपीय भाषाओं की अभिरचना से लगभग इतनी ही भिन्न है जितनी कि कुछ अमरीकी-इण्डियन भाषाएँ।[1]

श्रेण्यकालिक नमूनों पर आधारित अमरीकी-इण्डियन भाषाओं की रूढ़िगत व्याकरणों के प्रतिक्रिया के फलस्वरूप रुपिमों पर ध्यान केन्द्रित करने की प्रवृत्ति अधिक रही है, जिनके द्वारा बहुत से व्याकरणिक रूपों का निर्देश किया जाता है। यह दृष्टिकोण उन बहुत से शब्दवर्गों की उपेक्षा कर जाता है जिनका निर्देश रूपिम प्रत्ययों द्वारा नहीं किया जाता, अपितु अभिरचना-प्रकारों द्वारा किया जाता है; जैसे कुछ रूपिमों के व्यवस्थित परिहार द्वारा, शाब्दिक चयन द्वारा, शब्द-क्रम द्वारा जो वर्ग-क्रम भी है; सामान्यतः निश्चित भाषायी समाकृतियों

---

* *Language* 21 : 1–11 (1945) से पुनर्मुद्रित। *Language* के सम्पादक द्वारा दिए गए नोट के अनुसार "यह लेख Franz Boas उस समय के *Int. J. Amer. Linguistics* के सम्पादक की प्रार्थना पर 1937 के अन्तिम चरण में लिखा गया था। इसकी हस्तलिपि C. F. Voegelin एवम् Z. S. Harris द्वारा किए गए बोअस-संग्रह से प्राप्त हुई। बोअस की सूची *Language Monograph* नं० 22, 1945 में भी दी गई है।

1. लेखक अपने सहयोगियों Dr. George L. Trager तथा Dr. Morris Swadesh के प्रति आभार प्रकट करना चाहता है, जिनके साथ व्याकरणिक कोटियों की कुछ समस्याओं पर विचार-विमर्श हुआ।

के साहचर्य द्वारा.। किसी भाषा की खोज के प्रारम्भ में 'प्रकार्यात्मक' प्रकार की परिभाषा का परिहार करना चाहिए, उदाहरणार्थ, किसी एक श्रेणी का शब्द, जैसे 'संज्ञा' एक शब्द है, जो 'यह यह कार्य करता है;' विशेष रूप से तब जब कि भेद दिखाने की यह एकमात्र कसौटी हो; क्योंकि एक विशेष शब्द 'क्या करता है' इस विषय में लोगों की धारणाएँ एक अपरिचित भाषा में भी इतनी ही भिन्न एवम् विविध हो सकती हैं जितनी उनकी अपनी भाषाओं, भाषायी-प्रशिक्षणों तथा दार्शनिक अभिरुचियों में हो सकती है। कोटियाँ जिनका व्याकरणों में अध्ययन किया जाता है, समाकृतिपरक तथ्यों द्वारा अभिज्ञेय हैं और ये तथ्य सभी प्रेक्षकों के लिए समान हैं। तथापि, मैं प्रकार्यात्मक परिभाषाओं के प्रति पूर्ण अविश्वास की उस भावना से सहमत नहीं हूं जो आजकल के वैयाकरणों में दिखाई देती है। जब एक बार कोटियों की रूपरेखा समाकृतिपरक तथ्यों के आधार पर बना दी गई हो तो अनुसन्धान के आगे बढ़ने पर प्रकार्यात्मक या संक्रियात्मक प्रतीकवाद का प्रयोग वाञ्छित हो सकता है। समाकृतिपरक शोध-सामग्री से सम्बन्धित प्रकार्यात्मक परिभाषाएँ, रूपों के अर्थ-प्रतिपादन करने की सम्भव विधियों के रूप में, मान्य हो सकती हैं। ऐसे विषयों में अर्थ एक प्रकार का लक्षण-वर्णन होता है जो स्पष्ट रूप से सभी अर्थपरक तथा समाकृतिपरक, ज्ञात एवम् ज्ञातव्य, तथ्यों का विवरण प्रस्तुत करता है।

सबसे पहले हम प्रकट तथा अप्रकट कोटियों का भेद दिखाते हैं।

प्रकट कोटि, वह कोटि है, जिसका एक रूपात्मक निर्देशक होता है जो (केवल कुछ विरले अपवादों को छोड़कर) उस प्रत्येक वाक्य में होता है जिसमें उस कोटि का सदस्य हो। निर्देशक के लिए यह आवश्यक नहीं कि वह उसी शब्द का अंश हो जिसे उस कोटि के साथ रूपावली के अर्थ में सम्बन्धित माना जाता है—अर्थात् इसके लिए पर-प्रत्यय, उपसर्ग, स्वर-परिवर्तन या कोई अन्य 'विभक्ति' होना आवश्यक नहीं है; परन्तु यह एक पृथक् शब्द हो सकता है, या पूरे वाक्य की एक विशिष्ट अभिरचना। अतः अंग्रेजी में संज्ञाओं का बहुवचन एक प्रकट कोटि है जिसका निर्देशन रूपावली-शब्द में (अपेक्षित संज्ञा में)—*s*—प्रत्यय या स्वर-परिवर्तन द्वारा किया जाता है, परन्तु fish, sheep तथा जाति अथवा देश का निर्देश करने वाले कुछ बहुवचनों में इसका निर्देशन क्रियापद के रूप द्वारा, आर्टिकल के प्रयोग के ढंग आदि द्वारा किया जाता है। 'fish appeared' में किसी आर्टिकल का अभाव बहुवचन का निर्देश करता है; 'the fish will be plentiful' में बहुवचनीकारक विशेषण इसका द्योतन करता है; 'the Chinese arrived और the kwakiutl arrived में निश्चयात्मक आर्टिकल तथा एकवचनीय निर्देशक जैसे, person, Chinaman, Indian आदि का अभाव, बहु-वचन का द्योतन करता है। इन सभी दृष्टान्तों में बहुवचन प्रकट रूप से निर्दिष्ट है, तथा इसी प्रकार, कुछ अपवादों को छोड़कर, अंग्रेजी के सभी संज्ञा-बहुवचन निर्दिष्ट होते हैं। अतः अंग्रेजी में संज्ञा

बहुवचन एक प्रकट कोटि है।[2] दक्षिणी paiute में एक क्रिया का कर्ता-पुरुष उपशाब्दिक तत्व (बद्धरूपिम) द्वारा, जो पृथक रूप से प्रयुक्त नहीं हो सकता, अंग्रेजी के "–s" की तरह निर्दिष्ट होता है, परन्तु इसका क्रिया के साथ जोड़ा जाना आवश्यक नहीं है, इसे वाक्य के किसी भी पहले महत्त्वपूर्ण शब्द के साथ जोड़ा जा सकता है। अंग्रेजी में जिसे क्रिया की विध्यर्थक वृत्ति कहा जा सकता है; एक प्रकट कोटि है, जिसका निर्देशन 'Can' या 'Could' रूपिमों द्वारा किया जाता है—जो वाक्य में क्रिया से पृथक् प्रयुक्त शब्द है, परन्तु इस कोटि से युक्त प्रत्येक वाक्य में इनकी उपस्थिति रहती है; यह कोटि रूपविज्ञान की क्रिया व्यवस्था का वैसे ही अंग है जैसे कि मानो यह संस्कृत या अल्गोन्वियन जैसी श्लिष्ट भाषाओं के क्रिया-रूपों में बद्धरूपिम द्वारा निर्दिष्ट हो। इसका रूपिम 'Can' उसी क्रियार्थद्योतक व्यवस्था में समानाधिकरण तत्व का स्थानापन्न बन सकता है जैसे 'May', 'Will'; परन्तु एक शाब्दिक इकाई की भाँति (जैसे possibly) उनके साथ साधारण रूप में जोड़ा नहीं जा सकता। होपी में भी परस्पर व्यावर्तक प्रकारता की कड़ी व्यवस्था है जिसका द्योतन पृथक् शब्दों द्वारा किया जाता है।

एक अप्रकट कोटि का निर्देशन, चाहे रुपिमों द्वारा हो या वाक्य अभिरचना द्वारा हो, विशेष प्रकार के वाक्यों में ही होता है, न कि उन सभी वाक्यों में जिनमें उस कोटि का शब्द या तत्व मिलता हो। किसी शब्द की कोटि-सदस्यता तब तक स्पष्ट नहीं होती, जब तक कि उसे इन विशेष प्रकार के वाक्यों में से किसी एक में प्रयुक्त करने या निर्दिष्ट करने का प्रश्न न उठे, और तब हमें पता चलता है कि यह एक ऐसी कोटि से सम्बन्ध रखता है जिसके साथ किसी तरह का विशेष व्यवहार अपेक्षित है; वह व्यवहार निषेधात्मक भी हो सकता है जैसे उस प्रकार के वाक्य का बहिष्कार। इस विशेष व्यवहार को हम कोटि का प्रतिघात भी कह सकते हैं; अंग्रेजी में अकर्मक क्रियापद अप्रकट कोटि में है जिनका निर्देशन कर्मणि कृदन्त, तथा कर्मवाच्य एवम् प्रेरणार्थक वाच्यों के अभाव द्वारा किया जाता है। इस कोटि के क्रियापद का प्रतिस्थापन, (जैसे—go, lie, sit, rise, glean, slap, arrive,

---

2. वैसे कुछ सम्भव अथवा सैद्धान्तिक रूप में सम्भव वाक्यों की छोटी सी संख्या ऐसी है, जैसे 'the fish appeared' जिसमें बहुवचन का एकवचन से भेद नहीं है। परन्तु वास्तविक बोलचाल में इस प्रकार के वाक्य एक बड़े प्रसंग में जड़े होते हैं जो पहले ही चर्चित वस्तुओं के एकवचन या बहुवचनत्व का निर्णय किए होता है, (अन्यथा ऐसे वाक्य के उच्चारण की सम्भावना नहीं होगी) प्रकट तथा अप्रकट कोटि का भेद दिखाने के लिए ऐसे अल्प-संख्यक प्रकारों पर विचार नहीं किया गया है, अर्थात् वे किसी श्रेणी के प्रकट सिद्ध होने में बाधक नहीं हैं। अप्रकट कोटियों में अचिह्नित रूप अपेक्षाकृत अधिक हैं, प्रायः बहुसंख्यक हैं और उनका भेद प्रसंग द्वारा भी स्पष्ट नहीं होता।

appear, rejoice) इस प्रकार के वाक्यों में नहीं कर सकते जैसे—'It was cooked' यह पकाया गया था, (It was being cooked) यह पकाया जा रहा था, (I had it cooked to order) मैंने इसे आज्ञा देकर पकवाया था। अतः 'अकर्मक' की यदि समाकृतिपरक ढंग से परिभाषा दी जाए तो वह परम्परागत अंग्रेजी व्याकरण में प्रयुक्त (डम्मी) अकर्मक से सर्वथा भिन्न वस्तु है; यह एक वास्तविक व्याकरणिक श्रेणी है जिसका निर्देशन इनके द्वारा, या अन्य नियम-बद्ध व्याकरणिक वैशिष्ट्यों द्वारा किया जाता है, जैसे कि क्रियापद के पश्चात् संज्ञा या सर्वनामों का न आना। कोई भी व्यक्ति इस प्रकार के वाक्यों का प्रयोग नहीं करता 'I gleaned it' (I appeared the table)। हाँ, यह भी सत्य है कि इन्हीं शब्दिमों से बनी हुई यौगिक रचना सकर्मक हो सकती है जैसे 'sleep (it) off', 'go (him) one better'। अमरीकी बोलचाल के टकसाली रूप 'go hay wire, go South Sea Islander', आदि आदि। क्रियापद के पश्चात् कोई शब्द या वाक्यांश एक अप्रकट विशेषण होता है, दृष्टान्त के रूप में 'go completely haywise'.

अप्रकट कोटि के एक अन्य प्रकार का प्रतिनिधित्व अंग्रेजी का 'लिंग' करता हैं। प्रत्येक जातिवाचक संज्ञा तथा व्यक्तिगत रूप से दिया गया नाम किसी विशेष लिंग से युक्त होता है, परन्तु विशेष प्रकट चिह्न केवल उस समय दृष्टि-गोचर होता है जब संज्ञा का संकेतन पुरुषवाचक सर्वनाम के एकवचन द्वारा किए जाने का अवसर उपस्थित हो—या नपुंसकलिंग वर्ग के विषय में इसका निर्देशन प्रश्न-वाचक और सम्बन्ध वाचक सर्वनामों (what) क्या, (which) कौन सा द्वारा किया जा सकता है। यहाँ पर व्याकरणिक बन्धन लिंग-व्यवस्था की प्रकट कोटि से कुछ कम कड़ा नहीं है, उदाहरण के रूप में, लैटिन में लगभग सभी संज्ञाओं का लिंग निर्देशक होता है। निस्सन्देह अंग्रेजी के अधिकांश जातिवाचक संज्ञा शब्दों के लिंग-ज्ञान के लिए वास्तविक (सेक्स) (लिंग) तथा वैज्ञानिक जीवशास्त्रीय एवम् शारीरिक वर्गीकरण का ज्ञान स्वयं व्याकरणिक श्रेणियों के ज्ञान के स्थान पर उपयोगी हो सकता है, परन्तु अन्ततः इस प्रकार का ज्ञान बहुत ही सीमित रूप में उपयोगी रहेगा, क्योंकि पुल्लिंग तथा स्त्रीलिंग श्रेणियों का अधिकांश भाग हजारों व्यक्तिगत नामों से भरा पड़ा है और एक ऐसा विदेशी जो पाश्चात्य योरोपीय ईसाई नामों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से अनभिज्ञ है उसे तो सीखना, पड़ेगा अर्थात् ध्यानपूर्वक देखना होगा कि "Jane" 'She' वर्ग के अन्तर्गत है और "John" 'he' वर्ग में है। ऐसे बहुत से नाम है जो प्रकट रूप में समान आकृति वाले हैं परन्तु उनमें लिंग विषयक विरोध है, जैसे—Alice : Ellice : Alison : Addison, Aubrey, Winifred : Wilfred, Myra : Ira: Esther : Lester'[3] न ही किसी प्रकार के (प्राकृतिक) गुणों का ज्ञान ही

3. अन्तरिम लिंग या उभयलिंगय नाम बहुत कम हैं: 'Frances (Francis)', Jessie (Jessie)', or Jess, Jean (Gene) Jocelyn Sidney, Wynne',

हमारे प्रेक्षक को यह बता पाएगा कि स्वयं जीवविज्ञान सम्बन्धी नाम (जैसे animal, bird, fish आदि) 'it' वर्ग के हैं। सामान्यत: छोटे जीव 'it' होते हैं; बड़े पशु प्राय: 'he' होते हैं, 'dogs', 'eagles' और 'turkeys' प्राय: 'he' हैं, 'cats' तथा 'wrens' प्राय: 'she' वर्ग के हैं। शरीर के अंग तथा समस्त वनस्पति संसार 'it' है, देश तथा प्रदेश कल्पित व्यक्तित्व के रूप में (स्थान के रूप में नहीं) 'she' हैं, 'Cites', 'Societies' और 'Corporation' कल्पित व्यक्तित्व के रूप में 'it' हैं, मानविक शरीर 'it' है, एक प्रेतात्मा 'it' है, प्रकृति 'she' है। जलयान जो बादवान से युक्त है—या इञ्जन वाला है, जिसका नाम छोटा यान रख दिया गया है 'she' है, बिना नाम वाली किश्तियाँ, डोंगियाँ, तथा बेड़े 'it' हैं। अंग्रेजी लिंग सम्बन्धी अशुद्धियाँ, जिन्हें भाषा सीखने वाले करते हैं, विशेषत: वे लोग जिनकी अपनी भाषा में लिंगभेद नहीं है, हमें यह बता सकती हैं कि हमारी भाषा में ये अप्रकट व्याकरणिक कोटियाँ हैं, तथा यह भी बता सकती हैं कि ये अशुद्धियाँ, स्वाभाविक तथा असांस्कृतिक भिन्नताओं का, भाषा के अन्तर्गत, प्रतिबिम्ब मात्र नहीं हैं।

बहुत सी अमरीकी भाषाओं में, संज्ञाओं की वे श्रेणियाँ जो वास्तविक या प्रकट आकृति पर आधारित हैं, या तो 'प्रकट' या 'अप्रकट' कोटि वाली हो सकती हैं। नवाहो भाषा में वे अप्रकट हैं। कुछ शब्द 'वृत्ताकार' श्रेणी के हैं, दूसरे लम्बे पदार्थों की श्रेणी के हैं, कुछ अन्य ऐसे हैं जो आकार पर आधारित नहीं हैं। कोई प्रकट चिह्न, श्रेणी का द्योतन प्रत्येक वाक्य में नहीं करता। वर्ग-चिह्न, जैसे अंग्रेजी में लिंग, एक प्रतिघात है; (परन्तु) सर्वनाम नहीं, किन्तु कुछ विशेष धातुओं का चयन जो एक श्रेणी के साथ प्रयुक्त होते हैं किसी अन्य के साथ नहीं होते, एक प्रकार का प्रभेद स्पष्ट करते हैं, यद्यपि बहुत सी ऐसी धातु हैं जो इस प्रभेद के प्रति उदासीन हैं। मुझे सन्देह है कि कम-से-कम नवाहो भाषा में ये प्रभेद सभी प्रेक्षकों के लिए समान प्रतीत होने वाले अभाषायी वस्तुपरक प्रभेदों की भाषायी मान्यता-मात्र हैं, और वे अंग्रेजी के लिंग से कुछ अधिक नहीं है; बल्कि ये अप्रकट व्याकरणिक कोटियाँ प्रतीत होते हैं। अत: नवाहो भाषा सीखने वाले को शिक्षण के अंग के रूप में यह भी सीखना होगा कि 'शोक' वृत्ताकारी श्रेणी के अन्तर्गत है। किसी भी प्रेक्षक के 'सामान्य बोध' के अनुसार अंग्रेजी की लिंग श्रेणी तथा नवाहो की आकृति श्रेणी जैसी अप्रकट कोटियों के विषय में पहली धारणा यह होगी कि ये केवल भिन्न प्रकार के अनुभव या ज्ञान के प्रभेदमात्र हैं क्योंकि हम 'jane went to her house' (जेन अपने घर गई) इसलिए कहते हैं कि हमें पता है कि जेन स्त्री है। वास्तव में जेन के विषय में हमें कुछ जानने की आवश्यकता

और सम्भवत: दो चार और। इनकी संख्या बढ़ सकती है यदि हम उपनामों को भी सम्मिलित कर लें तो, जैसे 'Bobby, Jerry', आदि, परन्तु कुल मिलाकर उदाहरण अपेक्षाकृत् इतने कम हैं कि हमारी व्यवस्था को किसी प्रकार भंग नहीं करते।

भी नहीं है, जेन चाहे केवल एक नाममात्र हो सकता है, तथा पिइस नाम को टेलीफोन पर सुनकर हम कह उठते हैं—'What about her' 'उस स्त्री के विषय में क्या बात है?' 'सामान्य बोध' एक पग और पीछे हट कर कह सकता है कि हम जानते हैं कि 'जेन' नाम केवल स्त्रियों को दिया जाता है। परन्तु यह अनुभव भाषायी अनुभव है, यह अंग्रेजी को प्रेक्षण द्वारा सीखना मात्र है। इसके अतिरिक्त यह दिखाना आसान है कि सर्वनाम की अन्विति केवल नाम के साथ होती है, अनुभव के साथ नहीं। मैं किसी भी मोटर गाड़ी, एक ढाँचे, या तोप का नाम 'जेन' रख सकता हूँ, और इसे प्रत्येक सार्वनामिक संकेतों के लिए 'She' पद की आवश्यकता पड़ेगी। मेरे पास दो सुनहरी मछलियाँ हैं, मैं एक का नाम जेन और दूसरी का नाम डिक रख देता हूँ। मैं अब भी कह सकता हूँ कि 'Each gold fish likes its food' 'प्रत्येक मछली अपनी खूराक पसन्द करती है'। परन्तु यह नहीं कह सकता 'Jane likes its food better than dick' 'जेन अपना खाना डिक से अधिक पसन्द करती है'। मुझे कहना पड़ेगा 'Jane likes her food' 'जेन अपना खाना पसन्द करती है।' 'dog' शब्द (नपुंसक) सामान्य लिंग वर्ग के अन्तर्गत है, और 'he' तथा 'it' को (सर्वनाम के रूप में) प्राथमिकता देता है, परन्तु लिंग के अनुसार श्रेणीगत 'dog' का 'नाम' अपने सर्वनाम का निर्धारण करता है। तब 'हम Tom came out of its kennel' नहीं कहते अपितु 'Tom came out of his kennel' कहते हैं, तथा 'Lady came out of her kennel,' 'The female dog came out of its (her) kennel,' कहते हैं। कुत्तों के 'Fido' आदि जैसे नाम 'he' वर्ग के होते हैं: 'Towser came out of his kennel' हम कहते हैं 'See the cat chase her tail' परन्तु यह कभी नहीं कहते 'See dick chase her tail,'। 'child', 'baby' 'infant' आदि शब्द सामान्य-लिंग वर्ग के है और 'it' सर्वनाम ग्रहण कर सकते हैं, परन्तु बच्चों के दिए गए नाम केवल 'he' या she ही ग्रहण कर सकते हैं। मैं कह सकता हूँ 'My baby enjoys its food' परन्तु यह कहना भाषायी रूप में ग़लत होगा कि 'My baby's name is Helen—See how Helen enjoys its food' न ही मैं यह कह सकता हूँ कि 'My daughter enjoys its food' क्योंकि 'daughter baby' के असदृश व्याकरणिक रूप से स्त्रीलिंगवाची श्रेणी में है।

विजातीय भाषाओं की बहुत सी अप्रकट कोटियों के विषय में भी यही बात मानी जा सकती है। जहाँ उन्हें वस्तुपरक प्रभेदों का अभिज्ञान समझा जाता है, वहाँ वास्तविकता यह हो सकती है कि वे केवल व्याकरणिक कोटियाँ हैं जो वस्तुपरक अनुभव से एक विशिष्ट सीमा तक मेल खाती हैं। यह सत्य है कि वे अनुभव कर प्रतिनिधित्व कर सकती हैं, परन्तु उसी अनुभव का जो एक निश्चित भाषायी योजना के रूप में अनुभूत हो—न कि उस अनुभव का जो सभी प्रेक्षकों के लिए समान है। दूसरी ओर बहुत सी अमरीकी भाषाओं में उपस्थित एवम् अनुपस्थित, दृश्य एवम् अदृश्य के प्रभेद अनुभवात्मक भिन्नता का प्रतिनिधित्व कर सकते हैं, और

फिर हमें ऐसी अनुभवात्मक भिन्नताओं को शुद्ध व्याकरणिक वर्गीकरण पर आरोपित करना पड़ सकता है जिसके परिणामस्वरूप ऐसी मिश्रित श्रेणियाँ बन सकती हैं—जैसे – 'अनुभवात्मक—वर्तमान+व्याकरणिक – स्त्रीलिंग ।'

अप्रकट कोटि को गूढ़ प्ररूप का नाम भी दिया जा सकता है—एक ऐसा नाम जो इस प्रकार के शब्द-वर्ग की गुप्त किंवा प्रच्छन्न प्रकृति की ओर ध्यान दिलाता है, विशेष रूप से तब जबकि उनके भावों में प्रबल विरोध न हो, और न ही उनमें बहुधा घटित होने वाले प्रतिघात हों जैसे 'सर्वनाम' । वे बड़ी आसानी से हमारी दृष्टि से बच सकते हैं और उन्हें परिभाषित करना भी कठिन हो सकता है, तथापि वे भाषायी व्यवहार पर गहरा प्रभाव डाल सकते हैं। समाकृतिपरक ढंग से ऊपर परिभाषित अंग्रेज़ी की अकर्मक क्रियाएँ गूढ़ प्ररूप कही जा सकती हैं। एक इसी प्रकार का गूढ़ प्ररूप 'संयोजक विघटन' वाले क्रियापदों का हो सकता है, जैसे be, become, seem, stay, remain आदि, जिनके कर्मवाची तथा प्रेरणार्थक रूप नहीं होते परन्तु संज्ञा, सर्वनाम और विशेषण उनके अनुवर्ती हो सकते हैं। अंग्रेज़ी के सकर्मकों के (एक प्रच्छन्न कोटि जिसमें run, walk, return आदि वास्तव में अधिकांश अंग्रज़ी क्रियाएँ सम्मिलित हैं) कर्मवाची तथा प्रेरणार्थक रूप होते हैं और उनके अनुवर्ती संज्ञा तथा सर्वनाम हो सकते हैं परन्तु केवल विशेषण नहीं। देश और नगरों के नाम अंग्रेजी प्रच्छन्न कोटि के हैं, उनमें प्रतिघात यह है कि वे पुरुषवाची सर्वनामों द्वारा उपपदों in, at, to, from के कर्म के रूप में निर्दिष्ट नहीं किए जाते । हम कह सकते हैं कि 'I live in Boston'—मैं बोस्टन में रहता हूँ, परन्तु यह नहीं कह सकता कि 'I live in it' 'मैं इसमें रहता हूँ' । इस प्रकार की प्रच्छन्न कोटि के शब्द का संकेत in it—'इसमें', 'at it इस पर', 'to it' इसको' के स्थान पर 'there' वहाँ या here 'यहाँ' द्वारा किया जाता है और from it (इससे) के स्थान पर from there (here) (यहाँ से) द्वारा किया जाता है। बहुत सी अमरीकी भाषाओं में ऐसे स्थान नाम एक व्याकरणिक श्रेणी बनाते हैं। होपी में उनके कर्ता तथा कर्मकारक रूप नहीं होते, वे केवल अधिकरणवाची कारकों में घटित होते हैं । अज्तेक भाषा में वे विशिष्ट अन्त्य रूप वाले होते हैं, तथा विशेष पूर्व सर्गों के प्रयोग का बहिष्कार किया जाता है ।

अंग्रेज़ी के विशेषण उपश्रेणियों सहित दो प्रच्छन्न कोटियों में विभक्त किए जा सकते हैं। एक शब्द-वर्ग जो ऐसे 'जन्मजात' गुणों का अर्थ-निर्देश करता है जैसे रंग, पदार्थ, भौतिक स्थिति (घन, तरल, छिद्रिल, कड़ा आदि) उद्गम-स्थान, जाति, राष्ट्रीयता, कार्य, प्रयोग इत्यादि। इस समूह का एक प्रतिघात है, और वह यह है कि इसे दूसरे वर्ग की अपेक्षा संज्ञा के अधिक निकट रखा जाता है जिसे हम अजन्मजात गुणों में से एक कह सकते हैं; यद्यपि यह पहले समूह का अवशेष है तथा उससे बाहर है और उसमें प्रमाण, आकृति, स्थिति, मूल्यांकन के (नैतिक, सौन्दर्यपरक, आर्थिक) विशेषण सम्मिलित हैं। ये जन्मजात गुण वाले समूह से पहले आते हैं, जैसे

Large red house —बड़ा लाल घर (Red large house —लाल बड़ा घर नहीं), 'Steep Rocky hill—तीखी चट्टानी पहाड़ी', 'Nice smooth floor —अच्छा चिकना फर्श'। सन्तुलित विरोध दिखाने के लिए क्रम उलटा भी जा सकता है, परन्तु सामान्य बलाघात अभिरचना को परिवर्तित करते ही यह पता चल जाता है कि रूप बदला जा रहा है और कुछ विचित्र-सा लगने लगता है। सामान्य अभिरचना में मुख्य बलाघात या तो संज्ञा पर होता है (steep rocky hill) या अन्तर्निहित विशेषण पर (Pretty French girl)। हम विशेषणों का क्रम उलट नहीं सकते तथा 'Frech pretty girl' नहीं कह सकते, यह रूप French plain girl से विषमता दिखाता है, परन्तु इस प्रकार विषमता दिखाने वाले विशेषणों की अभिरचना अंग्रेज़ी की प्रकृति के विरुद्ध है। उचित वैषम्य तो 'plain French girl' है। खैर, हम बलाघात अभिरचना को बदल कर विशेषणों को उलट सकते हैं, तो 'French pretty girl' कह सकते हैं। यदि विरोध 'Spanish pretty girl' से हो तो, यद्यपि ऐसे रूप स्पष्ट ही अपवाद-स्वरूप हैं।

प्रच्छन्न कोटि का विरोधी पद Phenotype प्रकट कोटि के लिए प्रयुक्त किया जा सकता है, और जब किसी प्रकार की सन्दिग्धता की आशंका न हो तो इसे उस निर्देशक चिह्न पर भी लागू किया जा सकता है जो वाक्य में प्रकट कोटि के साथ आता हो।

प्रकट तथा अप्रकट कोटियों, या गोचर और अगोचर प्ररूप का प्रभेद व्याकरणिक कोटि सम्बन्धी सिद्धान्त के दो अत्यन्त महत्त्वपूर्ण प्रभदों में से एक है। दूसरे प्रभेद को हम वरणकोटियाँ तथा प्रवर्तक कोटियों का प्रभेद कह सकते हैं।

वरणकोटि एक व्याकरणिक श्रेणी है जिसकी सदस्यता, कुछ बड़ी श्रेणी की तुलना में, नियत तथा सीमित है। एक प्राथमिक वरणकोटि या शाब्दिक कोटि वह है जिसकी तुलना में उससे अगली बड़ी श्रेणी भाषा का समूचा शब्दकोष है। जब किसी शब्द का वरण नियत सदस्यता वाली श्रेणी से, जो समूचे शब्द-समूह के साथ एकसीम नहीं है, किया जाता है तो उस शब्द में विशेष अर्थगत तथा व्याकरणिक गुण निश्चित कर लिए जाते हैं; ताकि एक विशिष्ट व्याकरणिक गुण 'एक शब्दिम में' तो सम्भव हो सके परन्तु सभी शब्दिमों में नहीं। अंग्रेज़ी के अतिरिक्त अधिकांश भारोपीय भाषाओं में मिलने वाले सुपरिचित शब्दभेद शब्दिम कोटियाँ हैं। अंग्रेज़ी में स्थिति विचित्र है जिसका विवेचन आगे किया जाएगा। शब्दिम-कोटियाँ या तो प्रकट हो सकती हैं या अप्रकट। होपी भाषा एक ऐसी भाषा का दृष्टान्त है जिसमें वे अप्रकट हैं। सम्भवत: माया भाषा भी इसी प्रकार का दूसरा दृष्टान्त हो सकती है यद्यपि उसके विषय में पूरी और स्पष्ट जानकारी का अभाव है। होपी भाषा में संज्ञा (प्रातिपदिक) और क्रिया (धातु) के सरल प्रकृति-रूपों में कोई भेद नहीं है, और इस प्रकार के वाक्य भी सम्भव हैं जिनमें वाक्यगत अन्तर भी नहीं पड़ता, अत: *le! na* या *pam le! na* का अर्थ है :—'यह एक बाँसुरी है'

और *pe! na* या *pampe! na* का अर्थ है—'वहे इसे लिखता है।' अत: प्रकट गुणों के सम्बन्ध में संज्ञा और क्रिया रूप समान हो सकते हैं । परन्तु ऐसे वाक्य बनाना बड़ी आसानी से सम्भव हो सकता है जिनमें *le! na* के साथ कारक प्रत्यय जोड़े जा सकते हैं; परन्तु कुछ अन्य रूपों में *pe! na* के लिए ऐसा करना बिल्कुल असम्भव है, और इससे उलटी स्थिति में भी ऐसा ही है। यह सब कुछ सीखना पड़ता है, और कोई भी व्यक्ति वाक्य देखकर सदैव नहीं बता सकता कि le! na तथा pen! a शब्दकोश के भिन्न विभागों से सम्बन्धित हैं ।

सम्भवत: प्रकट शब्दिम कोटियों का पता चलाना अधिक सामान्य है, जैसे लैटिन, फ्रैंच, अज्तेक, तुबतुलबल (Tiibatulabal) ताओस, नवाहो में । फ्रांसीसी में *ange* तथा *mange* शब्द-समूह के दो अलग-अलग विभागों (संज्ञा और क्रिया) से सम्बन्धित हैं और वाक्य में सदैव एक ऐसा वैशिष्टच रहता है जो इस तथ्य को प्रकट करता है। फ्रांसीसी में इस प्रकार के युग्म नहीं मिलेंगे । *ilmange : il ange C'est un ange : C'est un mange Ange* के विरोध में *mange* तो सम्भव हो सकता है परन्तु कुछ विशेष तथा संक्षिप्त वाक्यों के प्रकारों के आधार पर जिनमें रूपात्मक भेदों का अभाव भी है, इन कोटियों को प्रकट कोटि कहना उचित नहीं । लैटिन, अज्तेक, तुबतुलबल (Tiibatulabal) और ताओस में यह भेद न केवल वाक्य में ही निर्दिष्ट होता है अपितु प्राय: स्वयं रूपावली शब्द में भी । तथापि संज्ञा, क्रिया या अन्य 'शब्दभेद' का यह प्रकट चिह्न सही वर्ग से बाहर के किसी भी शब्द के लिए अन्तरित नहीं किया जा सकता। जो (निर्देशक) चिह्न अप्रकट शब्दिम कोटि के साथ रहता है, उसके लिए यह आवश्यक नहीं कि वह किसी अन्य कोटि जैसे कारक, पुरुष या काल आदि का प्रतिनिधित्व करे, यद्यपि यह लैटिन, ग्रीक और संस्कृत में इस प्रकार का प्रतिनिधित्व करता है। उत्तो-अज्तेक भाषाओं की शब्दिम संज्ञाओं के साथ संलग्न रूप में मिलने वाले निरपेक्षिक परप्रत्ययों का मौलिक रूप में वर्ग-निर्देशक चिह्न होने के अतिरिक्त और कोई वैशिष्ट्य नहीं है, यद्यपि अज्तेक में उन्हें 'वचन' के साथ भी जोड़ दिया जाता है, और उन्हें 'आर्टिकल' के रूप में समझने के निमित्त अनावश्यक पटुता का भी व्यर्थ प्रयोग किया गया है । ताओस में 'निरपेक्षिक प्रत्यय' संज्ञाओं की वरणश्रेणी के साथ जुड़ते हैं परन्तु वे लिंग और वचन का भी संकेत करते हैं। लैटिन में संज्ञाओं (जिनमें विशेषण भी सम्मिलित हैं) तथा क्रियाओं में भेद वरणात्मक तथा प्रकट है, परन्तु विशेषण और विशेष्य (सत्ववाचक) में भेद वरणात्मक तथा अप्रकट है; तुलना कीजिए *est gladius* तथा *est bonus*। जैसा कि सभी अप्रकट कोटियों के विषय में विदित ही है कि इनका भेद सही प्रकार का वाक्य बनाने पर ही स्पष्ट होता है : *est bona* मिलता है परन्तु *est gladia* नहीं ।

शब्दिम कोटियों में न केवल संज्ञाएँ, क्रियाएँ, विशेषण तथा अन्य 'शब्दभेद'

सम्मिलित हैं, परन्तु 'पूर्ण' एवम् 'रिक्त[4]' शब्द या प्रकृति (प्रातिपदिक एवम् धातु) रूप भी सम्मिलित हैं, जैसे चीनी भाषा में, तथा शायद वाकशान (Wakashan) भाषाओं में भी और इससे भी भिन्न प्रकार के भेद जैसे अल्गोन्कियन की शब्दिम श्रेणियों में प्रकृतियों के बहुत से ऐसे वर्ग, जिनमें भिन्न प्रकार की संयोजन-शक्तियाँ हैं तथा शाब्दिक मिश्र के अन्तर्गत विभिन्न स्थितियाँ भी सम्मिलित हैं।

एक परिवर्तक कोटि अवरणात्मक कोटि है—अर्थात् सामान्यतः यह इच्छानुसार उपयोजित तथा वियोजित की जा सकती है। इसके प्रकार पर निर्भर करते हुए इसे किसी भी 'मुख्य शब्द' (कोई भी शब्द, छोटी तथा विशेषीकृत वरणात्मक कोटियों को छोड़कर जैसे निपात आदि) पर लागू किया जा सकता है, या अधिकतर, किसी भी शब्द पर जो किसी भी पूर्वापेक्षित बड़ी कोटि के अन्तर्गत आता हो, वह कोटि या तो वरणात्मक हो सकती है या एक अन्य परिवर्तक कोटि। भारोपीय तथा अज्तेको-तानोअन[5] भाषाओं के कारक, काल,पक्ष, अर्थ तथा परिवर्तक कोटियाँ हैं, जिन्हें इच्छानुसार उन शब्दों पर लागू किया जा सकता है जो उपयुक्त बड़ी कोटि के सदस्य हैं, 'कारक' संज्ञाओं की एक बड़ी कोटि के परिवर्तक हैं, 'काल, पक्ष और वाच्य' क्रियाओं की एक बड़ी कोटि के परिवर्तक हैं। अतः वह व्यक्ति जो केवल भारोपीय प्रकार के व्याकरणों में दक्ष है, वह केवल वरणात्मक तथा परिवर्तक कोटियों के प्रभेदों को, शब्दभेद के अन्तर को, तथा वाच्य प्रकार के व्याकरणिक रूपों की समस्या को ही अपने समक्ष रखता है। परन्तु बहुत अधिक भिन्न प्रकार की भाषाओं में ये परिचित प्रकार के 'अर्थ' तथा 'कार्य' वरणात्मकता तथा परिवर्त्तकता के साथ उसी ढंग से सम्बन्धित होना बन्द कर देते हैं, तथा व्याकरण में नितान्त भिन्न प्रकार के गठबन्धनों का साम्राज्य हो जाता है, और जब तक इस तथ्य को मान्यता नहीं दी जाती, तब तक व्याकरण की एक पर्याप्त धारणा की उपलब्धि नहीं हो सकती। यह आवश्यक नहीं कि 'पक्ष' जैसी परिवर्तक कोटियों के लिए 'संज्ञा' और 'क्रिया' जैसी बड़ी-बड़ी कोटियाँ बनाई जाएँ। नितिनेत (Nitinat)[6] भाषा (और शायद निकट रूप से सम्बन्धित

---

4. **एक 'रिक्त' शब्द या प्रातिपदिक सम्भवतः व्याकरणिक अथवा वाक्यविन्यास संकेतों के लिए एक-एक नए ढंग से विशेषीकृत रूप हैं, जो एक विशिष्ट अर्थ के साथ युक्त होना स्वीकार नहीं करता। उदाहरणार्थ—इस प्रकार के रूप का किसी अन्य कोटि के 'प्रतिघात' होने के अतिरिक्त और अर्थ न हो, या वह परिवर्तक कोटि का चिह्नक मात्र हो (देखिए अगला पैरा)।**
5. **बी. एल. व्होर्फ तथा जी. एल. ट्रेगर,** 'The relationship of Uto-Aztecan and Tanoan' *Amer Anthrop.*, 39 : 609–24 (1937).
6. **देखिए** Mary Haas Swadesh and Morris Swadesh, 'A Visit to the other world : a Nitinat text' *Int. J. Amer Enguistics*, 7 : 3-4 (1933)

नूत्का और क्वकुत्ल (Nootka और Kwakutl) में भी सभी मुख्य शब्दों के पक्ष होते हैं जैसे सांतत्य बोधक, क्षणिक, आरंभमाण इत्यादि। दोनों (1) run 'दौड़ने के' लिए शब्द में तथा (2) 'घर' के लिए शब्द में इस पक्ष का निर्देशन करने वाले तत्त्व मिलते हैं।

हम 'परिवर्तक' पद का प्रयोग केवल इस कोटि के विशिष्ट श्रेणीगत अर्थ तथा कार्य का द्योतन करने के लिए कर सकते हैं। अतः अंग्रेज़ी का वर्तमानकालिक कृदन्तीय अर्थ 'परिवर्तक' कोटि का है। हम परिवर्तक पद का प्रयोग इस प्रकार के अर्थ को उत्पन्न करने वाले व्याकरणिक व्यापार का द्योतन करने के लिए भी कर सकते हैं। अतः इससे किसी प्रकार की संदिग्धता उत्पन्न नहीं होती यदि हम इसका प्रयोग उस तत्त्व या अभिरचना के लिए भी करें जो परिवर्तक का निर्देश करती है। अतः हम कह सकते हैं कि अंग्रेज़ी में वर्तमानकालिक कृदन्तीय परिवर्तक' '–ing' प्रत्यय लगाने में है,' या संक्षेप में वह '–ing' है। जहाँ अधिक सूक्ष्म स्पष्टता वाञ्छनीय है वहाँ हम प्रकट निर्देशक चिह्न को परिवर्तक का एक संकेत कह सकते हैं। अन्ततः, यह प्रभेद बहुत ही महत्त्वपूर्ण है, कभी-कभी एक ही परिवर्तक के कई संकेतों में भेद दिखाना आवश्यक हो जाता है। प्रकट कोटियों के उदाहरण देते समय हमने अंग्रेजी के संज्ञा बहुवचन का उल्लेख किया था जो एक परिवर्तक कोटि है। परिवर्तक अथवा बहुवचन प्रकार का अर्थ दोनों ही बहुत प्रकार के सभी उदाहरणों के प्रसंग में एक ही चीज़ हैं परन्तु वे संकेत, जिनके द्वारा यह बहुवचन परिवर्तक fish शब्द पर लागू किए जाते हैं, एक उदाहरण से दूसरे उदाहरण के प्रसंग में भी भिन्न हैं। उन संकेतों में हम '–s, es' भी जोड़ सकते हैं जिनसे fishes रूप बनता है। क्योंकि sheep deer, moose, Caribou आदि गूढ़ प्ररूप कोटि के हैं जो –s का बहिष्कार करते हैं, और मछेरों की मछलियाँ, fish जैसे trout, bass, Salmon, maekerel, cold आदि जिनका विरोध निम्न श्रेणी की मछलियों से दिखाया जा सकता है–जैसे Sharks, Skates, eels, Sculpinsek) एक अन्य प्रकार की गूढ़प्ररूप कोटि के अन्तर्गत हैं, हम उनके लिए इस अन्तिम संकेत का प्रयोग नहीं कर सकते। इस उदाहरण के अनुसार परिवर्तकों तथा संकेतों के बीच एक के साथ एक का तदनुरूप होना आवश्यक है। जहाँ इस प्रकार की 'एक के साथ एक' की अनुरूपता बड़े पैमाने पर मिलती है वहाँ यह प्रथा सी हो गई है कि उस भाषा को ऐसे 'योगात्मक' जैसे शब्द से अभिहित किया जाए जो चित्रात्मक तो है परन्तु बहुत अधिक वैज्ञानिक नहीं है। तुर्की जैसी ठेठ योगात्मक भाषाओं के विषय में ऐसा उल्लेख किया गया है, मानों उनमें एक की एक के साथ अनुरूपता हो और उनकी परिवर्तक कोटि के अतिरिक्त अन्य कोई कोटि न हो। Yana के व्याकरण में (Hokan, Stock, California) अधिकतर परिवर्तक कोटियाँ हैं, परन्तु साथ ही कुछ वरणात्मक कोटियाँ भी हैं जैसे प्रातिपदिकों का एक वर्ग जो किसी भी शाब्दिक-मिश्र के आरम्भ में आता है, तथा एक ऐसा वर्ग जो दूसरे स्थान पर आता है।

वरणात्मक कोटियों के क्रिया तथा संज्ञाओं में इस प्रकार के अर्थगत प्रभेदों को बदले में परिवर्तक कोटियों द्वारा भी दिखाया जा सकता है; अर्थात् सम्भव परिवर्तक कोटियों में न केवल वाच्य पक्षादि ही सम्मिलित हैं, परन्तु क्रियाकरण और स्थिरीकरण[7] भी सम्मिलित हैं, उदाहरणार्थ yana में जहाँ कहीं भी विशिष्ट प्रत्ययों का प्रयोग या संकेतों का प्रयोग किसी प्रकृति से क्रिया-पद बनाता है तब वहाँ उन्हीं अर्थों में 'क्रियाओं का वर्ग' नहीं होता, जिन अर्थों में फ्रैंच, लैटिन, ग्रीक, होपी, अज्तेक, ताओस तथा नवाहो में होता है—अर्थात् एक वरणात्मक वर्ग नहीं होता; वहाँ पर क्रियापदों के स्थान पर 'क्रियाकरण' होते हैं। सेमेटिक के तथाकथित संज्ञा और क्रियापद परिवर्तक हैं, जो अधिकतर स्वर-व्यञ्जन अनुक्रम अभिरचना वाले संकेतों द्वारा सामान्य रूप से शब्दिमों पर उपयोज्य होते हैं; यद्यपि शब्दिम सम्बन्धी उपयोज्यता की व्यापकता में कहीं-कहीं व्यवधान भी है। हिब्रू भाषा में स्थिरीकरण के बहुत से संकेतों में एक से e-e हैं, और a-a क्रियाकरण के अन्य बहुत से संकेतों में से एक जैसे—berek[8] घुटना; barak वह घुटने के बल झुका; derek(सड़क) darak वह चला; geber पुरुष शक्तिशाली gābar वह शक्तिशाली था; hebel धागा; habal उसने बाँधा; melek राजा; malák उसने राज्य किया, gedem पूर्ववर्ती : gadam वह पूर्ववर्ती था, vgel पैर : ragel —वह पैदल गया। इसमें सन्देह नहीं कि हिब्रू के बहुत से ऐसे संज्ञापद हैं जिनके क्रियाकरण रूप हमें लिखित रूप में उपलब्ध नहीं हैं, परन्तु ऐसा अधिकतर इसलिए प्रतीत होता है, क्योंकि लिखित हिब्रू, जिसका हमें ज्ञान

---

7. 'स्थिरीकरण' पद का प्रयोग उन रूपों का परिवर्तक दिखाने के लिए किया जाता है जिनका विरोध क्रियाकरण के साथ इसी प्रकार किया जाता है जिस प्रकार वरणात्मक कोटि के रूप में संज्ञाओं का विरोध क्रिया के साथ ऐसी भाषाओं में किया जाता है जिनमें ये विरोध उपस्थित न हों। 'स्थिरीकरण' पद का प्रयोग यहाँ पर नामीकरण या नामिकीकरण के स्थान पर किया गया है, क्योंकि ये पद रूढ़ प्रयोगों के कारण परिवर्तकों की अपेक्षा व्युत्पत्ति का संकेत देते हैं जबकि 'स्थिरीकरण' यह सोचने में हमारा सहायक बनता है कि प्रस्तुत संज्ञारूप किसी क्रिया से व्युत्पन्न नहीं हैं परन्तु केवल एक शब्दिम है जो विशेष समाकृतियों के भाग के रूप में एक विशेष सार्थक व्याकरणिक रञ्जीकरण द्वारा प्रभावित मात्र हैं।
8. क्योंकि इन हिब्रू उदाहरणों का प्रयोग केवल स्वर-अभिरचना दिखाने के लिए किया गया है, उनका अभिलेखन निकटतम रूप-स्वनिमिक लिपि में किया गया है जो ब्, ग्, क् आदि स्पर्शों का भेद दिखाने का प्रयत्न नहीं करती और न ही उन संघर्षी ध्वनियों का भेद दिखाती है जो स्वर के पश्चात् नियमित रूप में वर्णनीय परिस्थितियों में उन स्पर्शों के स्थान पर आते हैं।

है—पुरानी सजीव भाषा के सभी स्रोतों का प्रतिनिधित्व नहीं करती। अधिकतर शब्दिमों पर इन परिवर्तकों की सामान्य उपयोज्यता अरबी भाषा में अधिक दिखाई पड़ती है। परन्तु वे क्रिया-पद तथा संज्ञाएँ जो परिवर्तक कोटियों में हैं, सेमेटिक की अपेक्षा अपनी भाषाओं में अधिक मिल सकते हैं। अंग्रेज़ी शब्द-समूह दो मुख्य वरणात्मक विभागों में विभक्त हैं। एक विभाग के अन्तर्गत अधिकांश बड़े क्रियापद तथा प्रत्ययान्त शब्द हैं जिनमें 'reduce, survive, undertake, perplex, magnity, reciprocate' और वरणात्मक संज्ञाएँ जैसे instrument, elephant, longevity altruism आदि हैं। संज्ञाओं और क्रियाओं की वरणात्मक कोटियों में बहुत कम संख्या में छोटे शब्द मिलते हैं, जैसे heart, boy, street, road, town, sit, see, hear, think। अंग्रेज़ी इस वरणात्मक शब्दावली के प्रसंग में, फ्रैन्च या होपी की तरह है। शब्द-समूह का दूसरा भाग जिसमें अधिकांश छोटे परन्तु कुछ बड़े शब्द भी सम्मिलित हैं, जिनमें क्रियाकरण या स्थिरीकरण इच्छानुसार लागू किया जा सकता है: जैसे head, hand, stand, walk, exchange, sight, skin, weave, dog, surrender, massage[9] इत्यादि। शब्दावली का यह भाग अरबी की तरह है, यद्यपि सूचक चिह्न बिल्कुल भिन्न प्रकार के हैं। स्थिरीकरण के सूचक चिह्नों में आर्टिकल (उपपद), बहुवचन के चिह्न सम्बन्धवाचक सर्वनामों तथा वरणात्मक विशेषणों के अनुवर्ती होने की स्थिति आदि सम्मिलित हैं। क्रियाकरण के सूचक चिह्नों में कर्ता सर्वनाम की अनुवर्ती स्थिति, सर्वनाम से पूर्ववर्ती स्थिति, संज्ञाएँ, या स्थिरीकरण, काल-रूप, सहायक-क्रियाएँ, तथा वृत्ति सूचक निपात आदि सम्मिलित हैं।

किसी एक ही भाषा में क्रियाकरण तथा स्थिरीकरण के अर्थगत सम्बन्धों में विस्तृत विभेद हो सकते हैं। जब क्रियाकरणों का उनके समानवर्ती स्थिरीकरणों के साथ वैषम्य दिखाया जा सकता है तो क्रियाकरण कुछ इस प्रकार के विचारों को अनियमित रूप से जोड़ता हुआ प्रतीत होता है जैसे "he engagea in—उसने अपने-आप को व्यस्त किया (शिकार करने, कूदने, नाचने आदि में), "behave like'—की तरह आचार किया। (माँ, बढ़ई, कुत्ते आदि की तरह)," "be in—के अन्दर होना (कोठी, छत्ता)", "put in—अन्दर रखना (स्थान, सीट, आसन) जेब, गैरिज)","make, add, stall—बनाना जोड़ना, स्थापित करना (बुनना, पौधा, छत, नलिका, टीन), "take away—उतारना या दूर करना (छाल, छिलका, भूसा, हड्डी)," "get—प्राप्त करना (मछली, चूहा)," "use—प्रयोग करना (भाला

९. अंग्रेजी में विशेषणीकरण एक अन्य प्रकार का परिवर्तक है जो केवल कोरे शाब्दिक तथा वरणात्मक संज्ञाओं पर लागू किया जाता है; परन्तु कुछ वरणात्मक विशेषण भी हैं और उनका विशेष्य के रूप में परिवर्तन नहीं किया जाता है।

हथौड़ा, कमानी, बिगुल); जबकि स्थिरीकरण इस प्रकार के विचारों को अनियमित रूप से जोड़ता हुआ प्रतीत होता है जैसे "result–परिणाम (बुनना, पौधा, रूप)" "means–साधन (रौगन, पगडण्डी)," "action or place–क्रिया या स्थान (चलना, रपटना, पग धरना, गिरना)", "instrument–उपकरण (उठाना, ढँकना, बाँधना, बकसुआ, चिमटी)" आदि। कतिपय शब्दों में यह अनियमितता या अच्छे शब्दों में 'यह लोच' जो सेमेटिक तथा अंग्रेज़ी में भी पाई जाती है, वह क्रियाकरण तथा स्थिरीकरण के साधारण परिवर्तकों का वैशिष्ट्य है। और इसका वैषम्य भिन्न प्रकार के अनेक परिवर्तक रखने की स्थिति से दिखाया जा सकता है, जिसमें प्रत्येक भिन्न रूप से विशेषीकृत प्रकार का क्रियाकरण या स्थिरीकरण है, जैसा कि एलास्का की एस्किमो भाषा की स्थिति से प्रतीत होता है। इसका अर्थ केवल यह है कि जिस भाषा में साधारण प्रकार के मूलभूत परिवर्तक होते हैं, उसमें 'एक' शब्दिम का अर्थ पूरे वाक्य से प्रभावित रहता है तथा वाक्य द्वारा उत्पन्न सम्पृक्तार्थों और व्यञ्जनाओं की बहुमुखी सम्भाव्यताओं की दया पर निर्भर करता है।

क्या ऐसी भाषाएँ भी हो सकती हैं जो न केवल वरणात्मक संज्ञा और क्रियाओं के बिना हों अपितु स्थिरीकरण एवम् क्रियाकरण से भी रहित हों? निश्चित रूप से हो सकती है। विधेय या घोषणात्मक वाक्य बनाने की शक्ति तथा ऐसे परिवर्तक ग्रहण करने की शक्ति जैसे वाच्य, पक्ष, काल आदि किसी प्रारम्भिक परिवर्तक जोड़े बिना ही किसी मुख्य शब्द का गुण हो सकती है। ऐसी स्थिति नितिनैत (Nitinat) तथा अन्य वाकशान (Wakashan) भाषाओं के विषय में हो सकती है। एक पृथक् शब्द, वाक्य होता है, और इस प्रकार के शब्द-वाक्यों का अनुक्रम एक मिश्र वाक्य की तरह होता है। हम अंग्रेज़ी भाषा में इस प्रकार के संयुक्त वाक्य की नकल कर सकते हैं जैसे "There is one who is a man who is yonder who does running which traverses it which is street which elongates"—"एक व्यक्ति है जो पुरुष है जो उधर का है जो भाग रहा है जो इसे पार कर रहा है जो एक गली है जो लम्बी होती है", यद्यपि इस प्रकार के विदेशीय वाक्य में केवल विधेयात्मक शब्दिम हैं जैसे 'One–एक, 'Man–पुरुष, 'yonder–उधर, 'run–दौड़ना, 'traverse–पार करना 'street–गली, 'long–लम्बी, जिसका सही अनुवाद इस प्रकार होगा 'A man yonder is running down the long street–उधर एक पुरुष लम्बी गली में भाग रहा है।' इस प्रकार की संरचना किसी वियोगात्मक भाषा में नहीं मिल सकेगी, और नितिनैत (Nitinat) जैसी बहुसंश्लेषणात्मक भाषा में यह मिल सकती है तथा सम्भव है, न भी मिले। बहुसंश्लेषणात्मक भाषाएँ कुछ शब्दिमों को मिलाकर एक बड़े संश्लिष्ट शब्द में परिवर्तित कर भी सकती हैं और नहीं भी कर सकतीं; परन्तु इसमें यह शक्ति तो निस्सन्देह है ही कि यह किसी-न-किसी प्रकार पक्षात्मक, वृत्यात्मक तथा संयोजक तत्त्वों को (परिवर्तकों

के सूचक चिह्नों को) मिलाकर एक कर सके। इसी प्रकार की बहुसंश्लेषणात्मक भाषा के विषय में कभी-कभी कहा जाता है कि इसमें 'सभी शब्द क्रियाएँ हैं, या सभी शब्द संज्ञा हैं, जिनमें क्रिया बनाने वाले तत्त्व जोड़ दिए जाते हैं। वास्तव में इस प्रकार की भाषाओं के सन्दर्भ में 'क्रिया' और 'संज्ञा' आदि शब्द निरर्थक हैं। यह स्थिति होपी भाषा में मौलिक रूप में भिन्न है, क्योंकि, यद्यपि होपी में, 'le! na–यह बाँसुरी है', और 'pe! na–वह इसे लिखता है, दोनों ही पूर्णवाक्य हैं, वे ऐसे शब्द हैं जो वाक्य की सभी स्थितियों में समानरूप से विधेयात्मक नहीं हैं, और उनका सम्बन्ध साधारणतया भिन्न विभक्ति प्रत्ययों को ग्रहण करने वाली क्रियाओं और संज्ञाओं की वरणात्मक अप्रकट कोटि से है, और वे केवल किसी एक विशेष प्रकार के वाक्य में समान दिखाई पड़ते हैं। होपी में क्रिया संज्ञा का विभेद वरणात्मक आधार पर महत्त्वपूर्ण है, अंग्रेज़ी में यह परिवर्तक आधार पर महत्त्वपूर्ण हैं तथा नितिनैत (Nitinat) भाषा में इसका अस्तित्व ही प्रतीत नहीं होता।

अब तक हमने उन्हीं कोटियों का विवेचन किया है जो समाकृति तथा अर्थ की दृष्टि से विशिष्ट हैं तथा व्याकरण के विशेष सूत्र हैं। परन्तु ऐसे शब्द समूह भी मिलते हैं जो समाकृतिक रूप से भिन्न हैं परन्तु फिर भी उनके अर्थों में कोई भेद नहीं, उन्हें हम समशब्दार्थ वर्ग (Iso-semantic) या शुद्ध रूप से रूपात्मक वर्ग कहेंगे। वे पुनः दो प्रकार के हैं जिन्हें अर्थगत कोटियों के अन्तर्गत वरणात्मकों और परिवर्तकों के अनुरूप माना जा सकता है; परन्तु यहाँ पर उन्हें अच्छे शब्दों में वरणात्मक एवम् विकल्पी कह सकते हैं। वरणात्मक समशब्दार्थ वर्ग का प्रतीकीकरण 'शब्द-रूपों' और 'धातु-रूपों' द्वारा किया जाता है, जो कि संसार भर में भाषाओं की सामान्य विशेषताएँ हैं, और जिनका विशेष विकास लैटिन, संस्कृत, होपी, तथा माया भाषा में हुआ है, परन्तु इनका कम विकास सामी, अंग्रेज़ी (अनियमित तथा नियमित क्रियाओं में) तथा अज्तेक में हुआ, तथा दक्षिणी पैउते (Paiute) में इनका बिल्कुल अभाव है। उनमें अर्थ-भेद रहित लिंग की तरह की श्रेणियाँ भी सम्मिलित हैं, जैसा कि बाण्टू और लाओस के कुछ लिंगों में (इन सब को सार्वनामिक अन्विति आदि से युक्त शब्द रूप कहा जा सकता है), तथा वे वर्ग, जिन्हें वाक्य में भिन्न स्थितियाँ अपेक्षित हैं, या वे मिश्र, जिनके अर्थ-प्रकारों में अन्तर नहीं है (अल्गोन्कियन में प्रकृति की स्थिति वाले वर्ग), वे वर्ग जिनमें अर्थ के प्रकारों में अन्तर के बिना एक ही परिवर्तक के लिए भिन्न सूचक चिह्नों की अपेक्षा हो जैसे हिब्रू the segholate (e-e) 'संज्ञाएँ' तथा समानान्तर स्थिरीकरण वर्ग सम्मिलित हैं। विकल्पी समशब्दार्थ वर्ग अपने नाम के अनुरूप हैं, जैसे अंग्रेज़ी में 'don't', 'Won't', 'Shan't', 'Can't', आदि का वर्ग तथा 'do not', 'will not', 'shall not', 'cannot', आदि का वर्ग। इस विषय में संक्षेप, सुविधा या बोलचाल की शैली आदि के परिवर्तकों की बात कर सकते हैं जिनका प्रयोग पूर्ववर्ती वर्ग में किया

गया है। विकल्पी वर्ग व्याकरणिक भिन्नता की अपेक्षा शैलीगत अन्तर अधिक व्यक्त करता है। अन्य विषयों में सामान्य नियम का रूप देने योग्य कोई अन्तर प्रतीत नहीं होता, जैसे अंग्रेज़ी में 'electrical, cubical, cyclical, historical, geometrical' के मुकाबले 'electric, cubic, cyclic, historic, geometric' आदि में।

एक अन्य प्रकार का प्रभेद शेष रहता है: सामान्य कोटियों और विशिष्ट कोटियों का। एक विशिष्ट कोटि एक भाषा में मिलने वाला व्यष्टि वर्ग है जैसे अंग्रेजी में कर्मवाच्य, होपी में खण्डात्मक पक्ष। वर्गीय कोटि किसी विशेष भाषा में लागू होने वाले सीमित अर्थों के समान अथवा परिपूरक प्रकार के वर्गों को मिलाकर बनाई गई एक क्रम परम्परा है, जैसे लैटिन में कारक और होपी में 'वाच्य'। इस विषय में नियम विधायक या वैयाकरण की अभिरुचि एवम् अन्तर्दृष्टि पर बहुत कुछ निर्भर करता है क्योंकि विशिष्ट कोटियों को तर्कसंगत योजनाओं में नियमित करना सरल हो सकता है, तथापि वाञ्छनीय यह है कि वर्गीय कोटियाँ उन व्यवस्थाओं का प्रतिनिधित्व करें जो स्वयं भाषा में मिलती हों। हम वैयाकरण की व्यवस्थापन शैली पर तब ठीक ही सन्देह कर सकते हैं जब उसका व्यवस्थापन Enantomorphism प्रतिबिम्ब रूपवाद से व्याप्त हो जैसे एक विरोधी को प्रत्येक कोटि के साथ युग्मन करना जो उसका अभावमात्र भी हो सकता है। उन विशिष्ट कोटियों को, जो प्रतीयमान रूप में विरुद्ध अर्थवाली हों जैसे कर्मवाच्य और कर्तृवाच्य (जब कर्तृपद का अर्थ केवल अकर्मवाची हो) एक सामान्य कोटि में रखना चाहिए (जिसे वाच्य कह सकते हैं) लेकिन केवल तभी जबकि वे दो से अधिक हों या तब जब वे केवल दो हों, तथा सामूहिक रूप से वे एक इकाई के रूप में रूपों की किसी अन्य व्यवस्था से विरोध प्रकट करती हों।

अन्ततः कुछ और अधिक विस्तृत अर्थों में वर्गीय कोटियों का सूत्रीकरण कुछ इस प्रकार किया जाना चाहिए कि वे व्याकरण के सामान्य विज्ञान की धारणाओं के सदृश हों। ऐसी कोटियाँ समूहन द्वारा बनाई जा सकती हैं जो हमें विभिन्न भाषाओं में समान विशिष्ट कोटियाँ प्रतीत होती हैं। केवल इस प्रकार के अर्थों में ही हम 'कर्मवाच्य' की कोटि की बात कर सकते हैं जिसमें उन सभी रूपों का समावेश हो जाएगा जिन्हें अंग्रेजी, लैटिन, अज्तेक और दूसरी भाषाओं में इसी नाम से अभिहित किया जाता है। ऐसी कोटियों या धारणाओं का हम वर्णनात्मक कोटियों से विरोध प्रकट करने वाली वर्गिकी (Taxonomic) कोटियाँ कह सकते हैं। वर्गिकी (Taxonomic) कोटियाँ प्रथम श्रेणी की हो सकती हैं जैसे कर्मवाच्य, कर्मकारक, या दूसरी श्रेणी की जैसे वाच्य और कारक। कदाचित् दूसरी श्रेणी वाली अधिक महत्त्वपूर्ण हैं और अन्ततः भाषायी धारणाओं के रूप में अधिक मूल्यवान हैं, विशेष रूप से बड़ी से बड़ी व्यवस्थित रचनाओं के सामान्यीकरण के रूप में—जबकि भाषा का विवेचन एवम् विवरण समस्त मानव-जाति के संदर्भ में किया जाता है।

होपी भाषा-विज्ञान का विवेचन*

320 बॉलकॉट हिलरोड
वेदर्जफील्ड कॉन.

प्रिय जॉन,

तुम्हारी यह जानने में दिलचस्पी होगी कि अमरीकी भाषा-विज्ञान की समस्याओं पर दो घण्टे प्रति सप्ताह व्याख्यान देने के लिए मुझे येल विश्वविद्यालय के मानवशास्त्र विभाग में जनवरी से जून 1938 तक के सत्र के लिए अंशकालिक प्राध्यापक पद पर नियुक्त कर लिया गया है। शरत् सत्र में इसी श्रेणी को मेरे सहयोगी श्री जार्ज एल ट्रेगर ध्वनिकी पढ़ायेंगे, अंत: मैं ध्वनिकीय या ध्वनिमीय समस्याओं पर अधिक समय लगाने की योजना नहीं बनाऊँगा। मैं अपने व्याख्यानों को मुख्यत: मनोवैज्ञानिक दिशा में ले जा रहा हूँ और तथाकथित प्राचीन संस्कृतियों की अर्थ, विचार, एवं धारणा सम्बन्धी समस्याओं की ओर मोड़ रहा हूँ। इन व्याख्यानों में भाषायी खोज की उन प्रणालियों पर बल दिया जायेगा जो किसी विशेष भाषायी वर्ग के अमरीकी-इण्डियनों के चित्तीय उपकरणों या अपरिवर्तनशील दृष्टिकोणों के विषय पर कुछ प्रकाश डाल सकें। मैं मानसिक (mental) के बदले चित्तीय 'Psychic' शब्द का प्रयोग कर रहा हूँ क्योंकि यहाँ 'भाव' तथा 'विचार' के उस स्वरूप पर विचार किया जाएगा जो केवल भाषायी है। मैं भाषायी अभिरचनाओं के माध्यम से कच्चे अनुभवों को विचारों के सुसंगत एवं सरलतापूर्वक कथनीय क्षेत्र में व्यवस्थित करने के विषय पर काफी अधिक ध्यान देने की आशा रखता हूँ। कुल मिलाकर, मैं कुछ ऐसी धारणाएँ प्रस्तुत करने की आशा रखता हूँ जो सांस्कृतिक मानवशास्त्रियों एवं मनोवैज्ञानिकों के लिए कुतूहल उत्पन्न करने वाली हो सकती है, तथा मुझे अपने विद्यार्थियों में से इन दोनों शास्त्रों के उदीयमान प्रतिपादक प्राप्त हो सकते हैं।

इस पाठ्यक्रम के लिए सामग्री तैयार करने में जो भी सहायता आप या आपका विश्वविद्यालय मुझे दे सकेगा, उसे प्राप्त करके मुझे बड़ी प्रसन्नता होगी, क्योंकि मैं

* निम्नलिखित लेख जो अब तक अप्रकाशित रहा है, मुझे लिखे गए एक पत्र का प्रारूप है। यह पत्र मुझे सन् 1937 के शरद् सत्र में उस समय लिखा गया था जब मैं मिनेसोटा विश्वविद्यालय में मनोविज्ञान का विद्यार्थी था। यद्यपि हस्तलिखित प्रारूप का कुछ अंश टाइपराइटर पर एक कार्बन कापी सहित नकल किया गया था, परन्तु यह स्पष्ट है कि यह कभी भेजा नहीं गया था, क्योंकि यह मुझे कभी नहीं मिला। यह हस्तलिखित प्रारूप परिवार के कागज-पत्रों में मिला था।

जानता हूँ कि आप और आपका विश्वविद्यालय भाषायी मनोवैज्ञानिक प्रणालियों में रुचि रखते हैं। मैं यहाँ उन धारणाओं की रूपरेखा प्रस्तुत करना चाहूँगा जिन पर मैं काम कर रहा हूँ, और जो होपी भाषा पर आधारित हैं, अतः स्वाभाविक है कि मैं उदाहरणों के लिए इसी पर अधिक निर्भर करूँगा, यद्यपि मैं अज्तेक तथा माया भाषाओं पर भी कुछ समय लगाने की आशा करता हूँ। इन सामान्य समस्याओं की भूमिका क्रियापदीय रूप-विज्ञान की होपी कोटियों के विश्लेषण में मिल सकती है, विशेष रूप से उनके विश्लेषण में जिन्हें हम सुविधा के लिए 'पक्ष' तथा 'काल' कह सकते हैं; यद्यपि इनका जो अर्थ श्रेण्य कालीन भारोपीय भाषा-विज्ञान में लगाया जाता है, ठीक वह अर्थ होपी भाषा के लिए ग्रहण नहीं किया जा सकता। हमारे पास दो पृथक् रूपिमीय कोटियाँ हैं, जिनके प्रत्यय भिन्न रूप से व्यवहार करते हैं, तथा उनके स्थान भिन्न हैं, काल-प्रत्यय, वाच्य-प्रत्यय से परे आता है। इसमें तीन काल हैं : भूत (अर्थात् वर्तमान तक, तथा वर्तमान को सम्मिलित करने वाला भूत), भविष्य, तथा सामान्यीकृत (जो सामान्य रूप से व्यापक रूप से या कालातीत रूप से सत्य है) तथा सभी परस्पर व्यावर्तक हैं। इनमें से यहाँ केवल भविष्य के (–ni) प्रत्यय पर ही विचार किया जायेगा। इसके अर्थ की पहली निकट समानता अंग्रेज़ी के भविष्य से है। इस भाषा में नौ पक्ष हैं जिनमें से मैं केवल आरंभमाण (–va) तथा प्रक्षेपी (–to) पर मुख्य रूप से विचार करूँगा। Punctual पक्ष सरल धातुओं का पक्ष है (ऐसी प्रकृति जो प्रत्यय-रहित है, तथा उसमें किसी अन्य प्रकार का परिवर्तन नहीं हुआ है), भूतकाल 'सरलरूप" का काल है। आरंभमाण के अर्थ की पहली निकटता अंग्रेज़ी में begins doing (करना आरम्भ करता है) से है (मैं होपी भूतकाल का अनुवाद अंग्रेज़ी के वर्तमान द्वारा करूँगा) और प्रक्षेपी की समीपतम अभिव्यक्ति अंग्रेज़ी में "does with a forward movement है, (अग्रसरी गति के साथ करता है)। बाद में मैं पुरोगत्यात्मक परिणामी या वर्धमान रूप—iwma का उल्लेख करूँगा। pyma प्रत्ययान्त एक अन्य आरंभमाण की तरह का पुरोगत्यात्मक रूप है, परन्तु मैं इसे सम्मिलित नहीं करूँगा क्योंकि इसके स्पष्टतया भिन्न अर्थ हैं; (is well on the way to getting it done) 'इसे करवा लेने की दिशा में अग्रसर है।'

अंग्रेज़ी के 'begins doing it' (करना आरम्भ करता है) का होपी भाषा में अनुवाद करने के लिए बहुत सी भिन्न धातुओं के प्रयोग करने पर हमें पता चलता है, कि जहाँ होपी भाषा अधिकांश धातुओं के लिए आरंभमाण का प्रयोग करती है, वह कुछ अन्य धातुओं के लिए प्रक्षेपी का भी प्रयोग करती है, और बहुत-सी धातुओं के लिए यह पक्ष कोटि से पूर्णतया बाहर जाकर 'भविष्य' काल का प्रयोग करती है (काल-बिन्दुनिष्ठ का अथवा अनिर्दिष्ट पक्ष का प्रयोग करती है)। प्रयोग सुसंगत है, तथा क्रिया के रूपात्मक प्रकार (Conjugation धातुरूप-प्रक्रिया) पर आश्रित नहीं है। विश्लेषण से यह सिद्ध होता है कि यह बड़े विचित्र ढंग से धातु के शाब्दिक अर्थ का अनुसरण करता है। अकस्मात् एक प्रश्न सम्मुख उपस्थित होता है। क्या कारण

है कि एक विशेष अभिरचना (begins doing it); 'करना आरम्भ करता है', जो हमें पूर्णतया एक रूप प्रतीत होती है, तथा सभी संदर्भों में से एक सी प्रकृति वाली दिखाई देती है, तो वही द्विभाषी, अंग्रेज़ी-भाषी होपी सूचक के समक्ष एक ऐसे 'अर्थ' के रूप में उपस्थित होती है, जो उसकी अपनी भाषा की दो (या अधिक) मौलिक अर्थ-कोटियों के मध्य इधर-उधर परिवर्तनशील होती रहती है। यह भी उल्लेखनीय है कि लगभग सभी उन स्थानों पर जहाँ आरम्भमाण का प्रयोग (begins doing), "करना आरम्भ करता है" के लिए किया गया है वहाँ होपी न केवल–va प्रत्यय का अपितु एक अभ्यास का भी प्रयोग करती है। अभ्यास का अर्थ (Punctual) काल-बिन्दुनिष्ठ पक्ष का सांतत्यीकरण है और वह एक अधिक विस्तारित प्रक्रिया को द्योतित करने के लिए है। अतः वह प्रक्रिया के आरम्भ का द्योतन करने वाले रूप की तर्कसंगत पूर्वापेक्षा है, परन्तु फिर भी जहाँ प्रक्षेपी अथवा भविष्यकाल begins doing का अनुवाद करते हैं तो वहाँ 'अभ्यास' का प्रयोग नहीं किया जाता। यह तथ्य इस धारणा की पुष्टि करता हुआ प्रतीत होता है कि होपी-प्रेक्षक घटनाओं को अंग्रेज़ी मातृभाषी की अपेक्षा एक भिन्न प्रकार से देखता है।

अतः इन अभिव्यक्तियों में जैसे—लिखना, साँस लेना, सोना, उड़ना, लुढ़कना, हँसना, लड़ना, धूम्रपान करना, गाना, तैरना, मरना, देखना, इसे[1] उछालना, इसे मोड़ना, इसे खोदना, इसे खाना, इसे तोड़ना, इसे फाड़ना, इसे मारना, इसे बान्धना, इसे एकत्रित करना, इसे उठाना, इसे झुकाना, इसे अन्दर रखना, इसे नीचे रखना, इसे ऊपर उठाना आरम्भ करता है। आरंभमाण (अभ्यसित प्रकृति पर –va) प्रयुक्त होता है। 'दौड़ना (आरम्भ करता है), चल पड़ना, भागना, घर की ओर जाना, दूर जाना, किसी स्थान पर जाना, ऊपर (या नीचे) जाना, बात करना, इसे खोलना, तीर छोड़ना, इसे चलाना (कार), किसी स्थान में (या पर) होना आरम्भ करता है' आदि के साथ भविष्य का प्रयोग होता है। अतः दौड़ेगा, चलेगा, भाग जाएगा इत्यादि के लिए भी वैसे ही रूप बनेंगे। ऐसी अभिव्यक्तियों में जैसे बाहर जाना (आरम्भ करता है) अन्दर जाना, आना (या होपी में पहुँचना) नीचे गिरना, अन्तराल से गिरना, (एक भिन्न धातु) चक्कर में चलना, मुड़ना, घूमना, फूट पड़ना (अकर्मक), उलट जाना, बिखरना, आरम्भ करता है, आदि के लिए प्रक्षेपी पक्ष का प्रयोग होता है। "Does with a forward movement" अग्रसरी गति द्वारा करता है—इनमें से अधिकांश के लिए उचित प्रतीत होता है, परन्तु यह बात स्पष्ट नहीं है कि यह दूसरे वर्गों के धातुओं के लिए भी उचित क्यों नहीं है, न ही यह स्पष्ट है कि इस तीसरे वर्ग में अंग्रेज़ी के 'begins doing' (करना आरम्भ करता है) का यह आवश्यक अनुवाद क्यों है, सूचक स्वयं किसी प्रकार का स्पष्टीकरण नहीं दे सकता।

---

1. it (इसे) एक सकर्मक क्रिया का द्योतन करता है, जिसे एक अन्तर्निहित या अभिव्यक्त कर्म की अपेक्षा रहती है।

इस प्रकार के तथ्यों से, जो केवल आरंभमाण की समस्या तक ही सीमित नहीं हैं अपितु समस्त होपी व्याकरण में व्याप्त हैं, मैं यह निष्कर्ष निकालता हूँ कि होपी-भाषी के लिए प्रत्येक वर्ग के क्रियापदीय प्रयोगों के बीच एक मद्धम रूप में अनुभूत समानता का ऐसा सम्बन्ध है जिसका उनके अर्थों के अप्रकट पक्षों से कुछ प्रयोजन है, अत: वह स्वयं ही एक अर्थ है; परन्तु वह चेतन चिन्तन की देहली के इतने निकट ऊपर या नीचे है कि उसे प्रयोग करने वाला अपने शब्दों में अभिव्यक्त नहीं कर सकता और उसका अनुवाद भी सम्भव नहीं और आगे विश्लेषण करने का मेरा प्रयोजन इस मद्धम रूप में अनुभूत, कठिनाई से चेतन (या अचेतन भी) अर्थों की प्रक्रिया को स्पष्ट करने, उनके वैशिष्ट्य बताने तथा समझने का है। इस प्रकार के दुर्ग्राह्य, गुप्त परन्तु क्रियात्मक रूप से महत्त्वपूर्ण, अर्थ को मैं Cryptotype 'गूढ़ प्ररूप' कहता हूँ।

अत: मैं कहना चाहूँगा कि उन होपी प्रकृतियों का अर्थ, जिनका अनुवाद 'लिखते रहना, साँस लेते रहना, सोते रहना, इसे तोड़ते रहना' आदि होता है, इसलिए समान है कि उन सबमें गूढ़ प्ररूप 'क' है, जबकि दौड़ना, चलना, घर की ओर जाना, इसे खोलना, इत्यादि में गूढ़ प्ररूप 'ख' है, और अन्दर जाना, गिरना, मुड़ना आदि में गूढ़ प्ररूप 'ग' है। प्रत्येक समस्या के लिए अक्षर द्वारा अंकन (क इत्यादि) काम चलाऊ एवं परिवर्तनशील हैं। गूढ़ प्ररूप, जो एक ऐसी कोटि हैं जिसका कोई रूपात्मक चिह्न नहीं, तथा जिसका अर्थ स्पष्ट रूप से प्रकट नहीं है, परन्तु वह एक प्रभाव मात्र के रूप में दिखाई देने वाला अर्ध-प्रच्छन्न अर्थ है। उससे वैषम्य दिखाने के लिए मैंने आरंभमाण भविष्य और प्रक्षेपी आदि कोटियों को Phenotype 'प्रकट प्ररूप' का नाम दिया है, अर्थात् प्रकट प्ररूप एक प्रसिद्ध रूपिमीय कोटि है जिसका एक रूपात्मक चिह्न होता है और उस वर्ग का स्पष्ट रूप से प्रकट अर्थ होता है। प्रस्तुत समस्या के संदर्भ में योजनाबद्धता के प्रयोजनार्थ हम आरंभमाण, भविष्य, प्रक्षेपी को प्रकट प्ररूप 1, 2, 3 कह सकते हैं। यह भी विवेचन किया जाएगा कि होपी जैसी भाषा में व्याकरणिक रूपों के अर्थ गूढ़ प्ररूप तथा प्रकट प्ररूपों के पारस्परिक प्रभावों के फलस्वरूप द्योतित होते हैं, केवल प्रकट प्ररूपों द्वारा नहीं। यह धारणा होपी को छोड़ अन्य बहुत सी भाषाओं पर लागू होती है। भाषा-विज्ञान ने अब तक पूर्णतया प्रकट प्ररूपों का ही अध्ययन किया है। गूढ़ प्ररूपों का अध्ययन भाषा-विज्ञान के एक अधिक मनोवैज्ञानिक पक्ष का उद्घाटन करता है।

अब तक हमारे पास तीन प्रकार के 'begin' (आरम्भ करना) रूप हैं, क 1, ख 2, ग 3। यदि हम 'begins–ing' को 'begin to be–ing' के बराबर मान लें (जो होपी में एक ही प्रकार अनूदित होते हैं) और फिर begin to be—', की ओर ध्यान दें, जहाँ–एक –ing रूप नहीं है अपितु या तो (अ) एक विशेषण है, अथवा (ब) एक भूतकालिक कृदन्त है, तो हमें एक दिलचस्प भेद का पता चल जायेगा। जैसे begins to be sweet, etc मीठा होना, लाल होना, सफेद होना, नीला होना, गरम होना, बड़ा होना, छोटा होना, अच्छा होना, गोल होना-आरम्भ

होता है, इत्यादि एक विश्शेषण के साथ एक नया प्रकट प्ररूप (4) अर्थात् एक नया आरंभमाण प्रकार का रूपिम प्रकट हो जाता है। अब–iwma जैसे प्रत्यय-युक्त एक रूप का प्रयोग होता है। यह रूप वाच्य और पक्ष का एक संयोग है : परिणामात्मक वाच्य (परिणामस्वरूप मीठा है) जमा वर्धमान पक्ष –ma (गतिशीलता के साथ करता है, या गौण रूप से एक स्थिति अथवा अवस्था में या अवस्था की ओर "निकल जाता है" अथवा "चला जाता है")। (ब) के विषय में, जैसे "begins to be torn" फाड़ा जाना, उछाला जाना, खोदा जाना, काटा जाना, लिखा जाना आरम्भ होता है इत्यादि, में यह बात अन्तर डालती है कि 'अवस्था' को परिणामात्नक माना जाए अथवा कर्मवाच्य, अर्थात् क्या जो आरम्भ हो रहा है, वह एक फटी हुई अवस्था है जो प्रकट प्ररूप (4) का प्रयोग करती है, या जो कुछ आरंभ हो रहा है। वह एक फाड़ने की क्रिया है जो एक निष्क्रिय विषय पर घटित हो हो रही है, जो (2) भविष्य (भविष्यकाल–ni) जमा कर्मवाच्य के प्रत्यय का प्रयोग करती है। यदि किसी प्रकार गूढ़ प्ररूप 'ग' उपस्थित है, तो रूप ग 3, (प्रक्षेपी–to) है जैसे पहले विषय में कर्मवाच्य के अर्थ के बिना अर्थात् (begins to be split open) फट निकलना, घूमना, बिखरना, आरम्भ करता है, यद्यपि यहाँ निश्चित रूप से परिणामात्मक अर्थ देने के लिए–iwma रूप का प्रयोग सम्भव है। इन सभी—begins to be– रूपों में हम एक अन्य गूढ़ प्ररूप 'घ' देखते हैं जो 'क' एवं 'ख' दोनों के अर्थों का तथा साथ में साधारण वर्णनात्मक विशेषण को भी सम्मिलित कर लेने पर स्पष्टतया कर्मवाच्य-परिणामात्मक पक्ष है। 'घ' दो आरंभमाण प्रकट-प्ररूपों 4 या 2 का प्रयोग कर सकता है। प्रकट प्ररूप 4 वास्तव में वर्धमान पक्ष–ma है, iwa– परिणामात्मक वाच्य का चिह्न है जो 2 के साथ प्रयुक्त कर्मवाच्य के चिह्न के समान है। हमने घ 4, घ 2, प्रकार और जोड़ दिए हैं।

अब यह बात उल्लेखनीय है कि 'घ' का क, ख, ग के साथ ऐसा ही विरोध है जैसे अकर्तृवाच्य का कर्तृवाच्य के साथ। क, ख, ग कर्तृवाच्य होने के कारण समान हैं, अर्थात् वास्तविक क्रिया तथा परिवर्तन होते हुए दिखाई देते हैं, या फिर यह एक सजीव अवस्था है, एक जीवन-प्रक्रिया है, जो सोने जैसी क्रिया में दिखाई जाती है, (हमारे दृष्टिकोण से) केवल एक ही अपवाद है 'किसी स्थान में होना' जो बहुत सम्भव है कि एक वास्तविक अपवाद नहीं है, परन्तु उसी विचार का एक पक्ष है। उद्देश्य का "कार्य" कर्ता की तरह है, यदि कर्ता कुछ भी नहीं करता है तो भी उसे स्थान पर होना चाहिए– यही एक विचार क, ख, और ग में सामान्य रूप से मिलता है। 'घ' में कर्ता का कार्य उस निष्क्रिय पदार्थ की तरह है जो किसी विशेष अवस्था अथवा गुण को प्रदर्शित करने के काम आता है। सम्भवतः यह कहा जा सकता है कि पहले विषय में उद्देश्य को प्रेरणार्थक कर्ता माना जाता है जिसे मैं 'Verbation' 'क्रियाकरण' कहूँगा, अर्थात् क्रिया द्वारा अभिव्यक्त आविर्भूत (क्रिया, व्यापार, अवस्था, दशा, स्थिति, सम्बन्ध इत्यादि)।

हम अब भी क, ख, ग गूढ़ प्ररूपों के बीच अन्तर का स्पष्टीकरण नहीं कर सकते, परन्तु यहाँ गूढ़ प्ररूपीय अर्थों का एक पक्ष दिखा दिया गया है, कर्तृ-अकर्तृ या प्रेरणार्थक : अप्रेरणार्थक का विरोध होपी भाषा में प्रकट प्ररूपों के रूप में प्रकट होता है। परन्तु गूढ़ प्ररूपीय विरोध के रूप में यह बाह्य रूप का नियन्त्रण करने के लिए निर्णायक है।

यदि हम 'begins to do' के होपी रूप देखें तो 'begins doing' के रूप की तुलना में स्पष्ट अन्तर प्रतीत होगा। यहाँ पर होपी AL के आरंभमाण पक्ष के रूपों से अभ्यास रूप को छोड़ देता है। स्पष्ट है कि होपी अनुभव करता है कि –ing रूप भावार्थक संज्ञा से कहीं अधिक विस्तारित प्रक्रिया को द्योतित करता है। तथापि, 'ख' गूढ़ प्ररूपों का अनुवाद उसी प्रकार होता है : अर्थात् –ni का प्रयोग दोनों 'begins moving' तथा 'begins to move' के लिए। 'ग' भी उसी प्रकार है अर्थात् to का प्रयोग 'begins going out' तथा 'begins to go out' के लिए। परन्तु इसके अतिरिक्त, क गूढ़ प्ररूप अब प्रकट प्ररूप 2 (–ni) तथा का भी प्रयोग कर सकता है, दोनों रूप एक ही प्रक्रिया के लिए एक ही अनुवाद के लिए सम्भव हैं। कुछ रूपों में अर्थ का एक हल्का सा अन्तर उभर आता है। हमने एक और प्रकार क 2 जोड़ दिया है जिसके अर्थ में अभ्यसित क 1 के अर्थ से हल्का सा अन्तर है। यह अन्तर पहचानना बड़ा कठिन है परन्तु कतिपय उदाहरणों में दिखाया गया है और अनुमानतः प्रकट-प्ररूपी –ni तथा –va (और गूढ़ प्ररूपी नहीं है) के अन्तर से सम्बन्धित है।

गूढ़ प्ररूप, 'क', 'ख', 'ग', पर लौटते हुए हम देखते हैं कि : 'क' तथा 'ख' इस तथ्य के कारण परस्पर सम्बन्धित हैं कि 'क'–ni तथा –va' दोनों का प्रयोग करता है जबकि 'ख' केवल –ni का प्रयोग करता है। अतः सम्भवतः 'ग' का कोई वैशिष्ट्य है जो –va तथा –ni को अनुपयुक्त बनाकर –to की अपेक्षा करता है। 'घ' विशिष्ट रूप से अकर्तृ या अकारणात्मक है तथा इसके विरोध में क, ख, ग तीन भिन्न प्रकार की क्रियाशीलताओं या कारणताओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। स्पेस-सम्बन्धात्मक कुछ रूपों तथा कतिपय अन्य रूपों को छोड़कर कारणता वैसी ही हो जाती है जैसी क्रियाशीलता। होपी के जिन भाषायी विचारों तथा दृष्टि-कोणों को मैं समझ पाया हूं उन सब की सहायता से एक दीर्घकालीन पुनरीक्षण तथा विश्लेषण के पश्चात् मैं इन क, ख, ग गूढ़ प्ररूपों के निम्नलिखित लक्षण प्रस्तुत करने में सफल हुआ हूं। 'ख' एक क्रियाशीलता है, जिसके आरम्भ का यह आशय होता है कि वह (क्रियाशीलता के) एक विशिष्ट वास्तविक मात्रा में सुरक्षित बनी रहेगी, जिसकी प्रारम्भिक गति विषय अथवा कर्ता द्वारा प्रेरित की गई थी। 'ख' उन कार्यों का प्रतिनिधित्व करता है जो कर्ता द्वारा प्रारम्भ किए गए आवेश से उद्भूत हैं, परन्तु अनिवार्य रूप से ऐसे सभी कार्य नहीं—केवल वही, जिसमें आवेग द्वारा प्रेरित किसी तथ्य का पहला प्रारम्भ तुरन्त ही परिपूर्णरूप में क्रियाशीलता

को प्रकट करता है; एक ऐसा रूप जिसके लिए सातत्य का अर्थ केवल कुछ अधिक समय जोड़ना है परन्तु और अधिक विकास करना नहीं है, न ही उस रूप को निरन्तर रूपान्तरित करना है। लगभग सभी उदाहरणों में हम 'आवेग' के स्थान पर 'साकल्पिक आवेग' या संकल्प पढ़ सकते हैं, या निर्जीव कर्ता में 'वास्तविक', या 'उसमें अनुभव किया हुआ' एक विरल रूप में घटित होने वाला निर्जीव कर्ता (समझ सकते हैं)। अतः इस प्ररूप में आत्मनिष्ठ रूप से निर्धारित प्रकार की समरूप गति सम्मिलित है जैसे दौड़ना, भाग जाना, तथा विभिन्न प्रकार का 'जाना'! अतः यह कहने के लिए—कि "वह दौड़ना आरम्भ करता है" क्रियाशीलता अपने-आप को दौड़ने के सफल रूप में पहले ही अवश्य दिखा चुकी होगी, जो इसके बाद किसी तरह अवस्थित नहीं किया जाएगा, परन्तु 'जैसा है वैसा ही' बना रहेगा। Being 'होना', अर्थात् होपी में एक 'स्थानीय' सम्बन्ध जैसे—में, पर, ऊपर, साथ-साथ, नीचे, साथ—इत्यादि का क्रियाकरण उसी श्रेणी में रखा गया है जिसमें 'दौड़ना'। बहुत कम सकर्मक क्रियाएँ उस श्रेणी में सम्मिलित की गई हैं जिसमें कर्ता अपने आवेग को तुरन्त विषयभूत पदार्थ पर इस तरह स्थानान्तरित करता है कि इसका क्रियाशील रूप तुरन्त ही पूर्णरूपेण प्रकट हो जाता है। अतः 'वह इसे खोलता है' (कितना कम खोलता है यहाँ इस बात का कोई महत्त्व नहीं; यह खुला है और अब बन्द नहीं है), 'इसे बन्द करना' इसी प्रकार के विपरीत व्यापार के रूप में वर्गीकृत किया गया है (किसी अवरोधक का खुले स्थान पर आ जाना एक प्रकार से बन्द करने की आंशिक क्रिया है, जिसे जहाँ तक सम्भव है, उस स्थिति में बनाए रखना है, और सातत्य के द्वारा उसमें परिवर्तन नहीं लाया जाएगा), इसी प्रकार 'तीर छोड़ना' भी है।

'क' तथापि एक क्रियाशीलता है, जिसके आरम्भ का अर्थ पहले एक आवेग अथवा प्रवृत्ति के फलस्वरूप अपने-आप को क्षण भर के लिए भी बनाए रखने का नहीं है। यदि पहले ही आवेग का दृढ़ीकरण न किया जाए तो हंसी एक हंसी न होगी, लेखन भी लेखन न होगा, अधिक से अधिक वह एक चिह्न होगा, या लेखनी का पकड़ना मात्र होगा, तोड़ना, तोड़ना नहीं होगा अपितु एक खिंचाव मात्र होगा। कार्य-व्यापार की अनुभूति घटनाओं की विकासशील शृंखला के रूप में होती है, या कार्य करने के संकल्प के क्षणिक से अधिक अनुप्रयोग द्वारा यह कर्ता की एक अनुवर्ती प्रकार की सहमार्गता है जो क्रिया के लिए अपने आदर्श रूप में क्षण भर भी स्थापित होने के लिए आवश्यक है। 'क' के कुछ अर्थ पहले पहल इसी दृष्टिकोण से विचित्र रूप में चुने गए प्रतीत होंगे, परन्तु इस विषय पर थोड़ा सा भी चिन्तन प्रायः होपी गूढ़ प्ररूपी अर्थों में एक अनोखी अन्तर्दृष्टि प्रकट करता हुआ दिखाई देगा। अतः होपी द्वारा 'सोना' ऐसे वर्ग में रखा गया है मानो वह सोने को एक दशा मानता है जिसमें व्यक्ति एक निरन्तर अनुकूलन द्वारा विकसित होता है, ऐसी दशा नहीं जिसमें उसने अपने-आप को फेंक दिया हो, या प्रवर्तित किया हो, जबकि 'दौड़ना' और 'बात करना' ऐसी दशाएँ मानी जाती हैं जिनमें कर्ता अपने-आपको फेंकता है,

या प्रवर्तित करता है, उसमें वह विकसित नहीं होता न ही संमजित या अनुकूलित होता है। केवल कुछ विशिष्ट क्रियाओं को छोड़कर 'ख' की सभी सकर्मक क्रियाएं 'क' तरह की मानी जाती हैं—किसी विषय को प्रभावित करने के लिए उसके साथ समंजन करना आवश्यक है। अत: गूढ़प्ररूपी 'क' तत्वत: गतिशील या प्रतीकात्मक ढंग से गतिशील धारणा है, भले ही यह विश्रान्ति की दशा-निर्देश करता हो, और कर्ता से गतिशीलता प्रस्फुटित होती हो। गूढ़ प्ररूप 'ख' सक्रिय है या प्रतीकात्मक ढंग से सक्रिय है, परन्तु गतिशील नहीं, कर्ता एक समरूप गति की दशा में या इसकी प्रतीकात्मक रूप से समान अवस्था में फेंक दिया जाता है और वहीं छोड़ दिया जाता है।

गूढ़ प्ररूप 'ग' एक 'क्रियाशीलता' है, (सदैव अकर्मक) जिसमें कर्ता को केवल आरम्भिक अवस्था में रखने मात्र की आवश्यकता है, ताकि वह स्वाभाविक प्रवृत्ति द्वारा पकड़ लिया जाए और वह कुछ न करने पर भी आरम्भिक अवस्था से दूर ले जाया जाए। उसे मानो प्रवृत्ति के एक साम्राज्य को सौंप दिया जाता है और इसके पश्चात् वह स्वतन्त्र नहीं रहता और उसे आरम्भिक अवस्था के अनिवार्य विकास तथा परिवर्तन की अधीनता स्वीकार करनी पड़ती है। अत: आरम्भिक अवस्था एक आधार या सन्तुलन खो रही हो सकती है जिस पर कर्ता को गुरुत्वाकर्षण के लिए छोड़ दिया जाता है और वह 'गिरता है' या 'उलट जाता है' या 'बिखर जाता है' या 'छलक जाता है'; एक बार इस अवस्था में प्रविष्ट होने के बाद उसे 'इसका अन्त भी देखना पड़ता है'। या जैसे मुड़ने, घूमने तथा अन्य यान्त्रिक क्रियाओं के विषय में घटित होता है, यह 'जड़ता' हो सकती है, संवेग, प्रत्यास्थ (लचीलापन) या कोई अन्य साधारण सी अनिश्चित स्वचालित प्रवृत्ति हो सकती है, जो कर्ता को उसी क्षण पकड़ लेती है, जिस क्षण उसे क्रिया का पहला प्रक्षेपण, बन्दूक के घोड़े की तरह, छोड़ चुका होता है। इसके लिए प्रतीक है 'फेंका जाना' जो प्रक्षेपी पक्ष—'to' (अग्रसरी गति द्वारा करता है) के पीछे प्रतीकात्मक चित्र है। पहली बार यह विचित्र प्रतीत हो सकता है कि होपी 'बाहर जाने' और 'अन्दर जाने' को इसी कोटि में रखते हैं। वास्तव में कोई बाह्य शक्ति न तो उसे पकड़ती है और न ही उसे चलाती है परन्तु वह एक विभाजक रेखा को अवश्य पार करके एक नए साम्राज्य में प्रविष्ट होता है—एक बाह्य साम्राज्य में जबकि इसे पहले वह आन्तरिक साम्राज्य का अंग था, या इसके उलट (अर्थात् आन्तरिक से बाह्य साम्राज्य में प्रवेश करता है) और जब उसने एक बार परिवर्तन कर लिया तो वह नए साम्राज्य की प्रकृति एवं नियमों के अधीन हो जाता है, क्योंकि आरम्भिक अवस्था के नियम पूर्णतया पीछे छूट चुके होते हैं। अत: एक प्रकार से 'go in' 'अन्दर जाना' और 'go out' 'क्रिया' इस गूढ़ प्ररूप के अन्तर्गत सभी अन्य विचारों के 'प्रतीक' के रूप में मानी जा सकती है, इसलिए गूढ प्ररूप 'ग' गतिशील है अथवा प्रतीकात्मक रूप से गतिशील है, परन्तु गतिशीलता विषय से उद्भूत नहीं होती अपितु बाह्य क्षेत्र से होती है। अन्तत: गूढ प्ररूप 'घ', जैसा हम देख चुके हैं, गति-

शील नहीं है या सक्रिय भी नहीं है, परन्तु निष्क्रिय है, अर्थात् या तो 'स्थिर' है या निश्चेष्ट है।

'प्रकट प्ररूप' का अर्थ यद्यपि प्रकट रूप से सीधा है, परन्तु इसे पूर्णतया तब तक नहीं समझा जा सकता, जब तक कि इनसे सम्बन्धित गूढ़ प्ररूपों को उनकी निमग्न अवस्था से खींच कर बाहर नहीं निकाला जाता, और उनके सार्थक अर्थों को कुछ सीमा तक चेतना-पटल पर नहीं लाया जाता। तब भिन्न गूढ़ प्ररूपों के साथ एक ही प्रकट प्ररूप द्वारा उत्पन्न भिन्न प्रभावों का परिणाम तथा इसके उलट (अर्थात भिन्न प्रकट रूपों के साथ एक गूढ़ प्ररूप का) स्वयं प्रकट प्ररूप की अधिक मुखरित जानकारी तथा स्पष्टतर बोध के रूप में होता है। अब हम '-va' तथा '-ni' के सूक्ष्म अर्थ को समझने के लिए अधिक अच्छी स्थिति में हैं।

'–ni' के विषय में हमें सम्पूर्णकाल व्यवस्था का कुछ-कुछ अन्तबोधपरक अध्ययन करना पड़ेगा, तत्पश्चात् '–ni' 'द्योतित' भविष्य-काल का। 'भविष्य-काल' यह उद्घोषित करता है कि 'घटना की प्रत्याशा वर्तमानकालिक है, और यह कि यदि यह स्वेच्छापूर्ण क्रिया है तो घटना के प्रतिकर्ता का संकल्प वर्तमानकालिक है, और यह कि प्रत्येक घटना का प्रत्येक पहला आरम्भिक बिन्दु प्राप्त किया हुआ हो सकता है, (यहाँ संदर्भ नियन्त्रण करता है) और यह (भी उद्घोषित करता है) कि इससे परे अब वर्तमान नहीं है अपितु भविष्य है: अर्थात् घटना कुल मिकाकर भविष्य है। जिससे कि घटना कुल मिलाकर भविष्य हो जाए, काल यह संकेत नहीं दे सकता कि कर्ता की प्रवृत्ति इस प्रारम्भिक बिन्दु से आगे भी बनी रहेगी, अन्यथा भविष्यता का अर्थ ही बहुत अधिक दुर्बल पड़ जायेगा या बिल्कुल लुप्त हो जायेगा। इसका अर्थ केवल यह होगा कि 'he is starting his doing of it' 'वह इसका करना आरम्भ कर रहा है' या 'he is starting to do it' 'वह इसे करना आरम्भ कर रहा है।' दूसरी ओर -va का अर्थ है 'अध्यवसाय सहित प्रारम्भ करता है' या 'इसे करने के लिए शक्ति का संचय कर रहा है।' यहाँ आरम्भिक बिन्दु उपस्थित है, दूसरा बिन्दु तेजी से उपस्थित होने वाला है, और ऐसे बिन्दुओं का एक सतत अनुसरण प्रतिज्ञात है। अनभ्यसित 'क' गूढ़प्ररूप के साथ या तो -va प्रयुक्त हो सकता है या थोड़े से अर्थ-भेद के साथ -ni का प्रयोग हो सकता है जिसे 'begins to do it' 'इसे करना आरम्भ करता है' के अर्थ वाले कुछ उदाहरणों द्वारा दिखाया गया है। -ni का अर्थ है कि क्रियाशीलता प्रारम्भिक बिन्दु तक पहुंच गई है, परन्तु गूढ़-प्ररूप का गतिशील, परिरक्षक अर्थ स्वयं यह प्रतिज्ञा करता है कि क्रिया द्वारा द्योतित की गई अस्थायी या अनवधिक अवस्था पर पर्याप्त रूप में आरूढ़ रहा जायेगा। -va के विषय में भी यही बात है, अन्तर केवल यह है कि यह आरोहण को और अधिक निश्चित बनता है। परन्तु अभ्यसित अथवा आवधिक 'क' क्रिया के साथ, हमें -va की आवश्यकता है क्योंकि 'क' क्रिया में धुंधला गूढ़ प्ररूपीय सुरक्षण केवल आरोहण मात्र कराने में समर्थ है, और एक स्थायी व्यापार द्वारा सतत अनुसरण की प्रतिज्ञा करने के लिए हमें उस संरक्षक संकल्प या

स्वयं विषय की प्रवृत्ति की या स्वयं इस (क्रिया) की दृढ़ घोषणा करनी पड़ेगी, जिसे -'va' सम्पन्न करता है। अतः यह कहने के लिए कि "वह इसका काटना आरम्भ करता है" जिसका अर्थ है कि वह अपने कुल्हाड़े से प्रहार कर रहा है, कम-से-कम एक प्रहार तो कर ही दिया है। (क्या उसने अधिक प्रहार किए अथवा उसी समय काटना त्याग दिया—इस विषय में हमें कुछ पता नहीं) हम यहाँ या तो -ni का प्रयोग कर सकते हैं या -va का। परन्तु यह कहने के लिए "he begins chopping it." "वह इसे काटना आरम्भ करता है", जिसका अर्थ है कि पहले प्रहार के पश्चात् दूसरा होगा, दूसरे के पश्चात् तीसरा, और इससे आगे भी होते रहेंगे, हमें अभ्यास तथा -va एवं -ni का प्रयोग करना पड़ेगा। उस विषय में भी ऐसा ही रूप बनता है। यदि कर्म बारबार होने वाला नहीं है, परन्तु केवल निरन्तर होता रहता है तब भी इन्हीं प्रत्ययों का प्रयोग होगा जैसे 'वह सोना आरम्भ करता है' में।

दूसरी ओर गूढ़-प्ररूप 'ख' के साथ, जिसका गूढ़-प्ररूपी अर्थ है—कि एक बार यदि आरम्भिक दशा पहुंच जाए (जिसके लिए केवल -ni पर्याप्त है) तो वह घटना एक विशिष्ट रूप में आविर्भूत हो जाती है, और एक अवधि तक कम-से-कम उसी दशा को बनाए रखेगी : अतः यहाँ कर्ता के अध्यवसाय का सारा प्रश्न ही मानो खिड़की से बाहर फेंक दिया गया है। इसका यह अर्थ है कि -va निरर्थक एवं अनुपयुक्त रहेगा। सम्भवतः यह उससे कुछ अधिक सोद्देश प्रेरणा का संकेत देता जितनी प्रेरणा 'ख' प्रकार की क्रियाशीलता को अभिव्यक्ति मात्र करने के लिए आवश्यक है। 'ख' प्रकार के गूढ़-प्ररूपी शब्दों के विषय में एक प्रकार की शून्यता तथा अमूर्तता है, वे एक प्रकार की गति की या अवस्था की घोषणा करते हैं और उसे उसी (अवस्था) पर छोड़ देते हैं। सभी 'going' गत्यर्थक, coming आगत्य-र्थक, शब्द विशेष रूप से अमूर्त हैं, जिनके कोई वास्तविक धातु नहीं हैं : परन्तु केवल क्रिया रूप में परिणत किए गए परसर्ग या क्रिया-विशेषण हैं 'to' 'को', from 'से' 'away' 'परे' इत्यादि। सम्भवतः यह होपी चिन्तन-प्रक्रिया की गहरी परतों का विषय है कि इस जड़, शून्यता को किसी -va जैसे तत्त्व के प्रयोग से न तो विकृत किया जाए और न ही उसका निराकरण किया जाए। यह दृष्टांत यह दिखा सकेगा कि किस प्रकार होपी जैसी भाषा में किसी रूप का अर्थ गूढ़-प्ररूपीय धारणा द्वारा अधिक गहन रूप से विश्लेषित किया जा सकता है, और किस प्रकार अर्थ की समग्रता गूढ़-प्ररूपी तथा प्रकट-प्ररूपी कारणों की संयुक्त उपज है। बहुत सी भाषाओं में 'गूढ़ प्ररूप' की धारणा किसी विशेष काम की चीज नहीं, परन्तु होपी जैसी भाषाओं में जहाँ रूपावली रचना के लिए अधिकांश प्रभावशाली सामग्री इस गहन रूप से प्रच्छन्न अवस्था में निहित है, ठीक उसी तरह जैसे कुछ लोग ऐसे होते हैं जिनका मानसिक जीवन दूसरों के मानसिक जीवन की अपेक्षा बहुत कम अभिगम्य है। इन आरंभमाण रूपों की अपेक्षाकृत गौण समस्या की अपेक्षा होपी भाषा में गूढ़ प्ररूपों का अधिक बड़ा हाथ है। यह सत्य है कि आरंभमाण के दृष्टान्त नितान्त

स्पष्ट हैं। मुझे विश्वास है कि मैं पहला व्यक्ति हूं जिसने अर्थों को इन निमग्न परतों के अस्तित्व की ओर इशारा किया है, जो इस निमग्नता के होते हुए भी सामान्य भाषायी समष्टि में नियमित रूप से कार्य करते हैं।

मैं यह जानने के लिए बहुत उत्सुक हूं कि आप एक मनोवैज्ञानिक के रूप में इस सामान्य विचार के विषय में क्या सोचते हैं। आप जिन समस्याओं पर काम कर रहे हैं, उनसे इसका क्या सम्बन्ध है ? इसमें सन्देह नहीं कि गूढ़ प्ररूपों का साम्य Freud की तथा उससे भी अधिक युंग की अचेतन सम्बन्धी धारणा के साथ प्रतीत हो, यद्यपि इस साम्य को सम्भवत: और अधिक आगे नहीं बढ़ाना चाहिए।

होपी भाषा की कुछ क्रियापदीय कोटियां*

होपी भाषा के शोधकार्य के आरम्भिक चरण में मुझे परिचित भाषायी क्षेत्र में होने का सा सुखद अनुभव हुआ था। यह बताते हुए बड़ा आश्चर्य होता है कि यहाँ एक विजातीय दूरस्थ भाषा मिलती है, जो बहुत अधिक भारोपीय की अभिरचनाओं पर बनी है। एक ऐसी भाषा जिसमें स्पष्ट रूप से अलग-अलग संज्ञाएँ, क्रियाएँ तथा विशेषण हैं, और जो पक्षों, कालों तथा वृत्तियों से युक्त है; तथा जिसमें वाह्य विचित्र कोटियाँ नहीं हैं ; न ही पदार्थों की आकृतियों पर आधारित लिंग की तरह की कोटियाँ हैं; न ही ऐसे सर्वनाम हैं जो कबीले की स्थिति, उपस्थिति, अनुपस्थिति, दृश्यता, या अदृश्यता का संकेत करते हों।

परन्तु कुछ समय के पश्चात् मुझे पता लगा कि यह इतना सरल कार्य नहीं है। मैंने जो वाक्य बनाए तथा अपने होपी सूचक के समक्ष प्रस्तुत किए, वे प्राय: गलत थे। पहले पहल तो भाषा ही अनियमित सी लगी, परन्तु बाद में पता चला कि भाषा अपनी अभिरचना के अनुसार बिल्कुल नियमित है। लम्बे समय के अध्ययन के पश्चात् तथा अपने पूर्वाग्रहों तथा पूर्वनिर्धारित धारणाओं के निरन्तर निराकरण के पश्चात् मुझे वास्तविक अभिरचनाओं का ज्ञान हो पाया। मुझे यह अनुभव न केवल होपी के विषय पर, अपितु, व्याकरणिक कोटियों तथा धारणाओं के समूचे विषय पर अत्यधिक प्रकाश डालने वाला प्रतीत हुआ। बात यह है कि होपी कोटियां कुछ इस तरह से भारोपीय के समान हैं कि वे पहले पहल ऐसी समानता का भ्रामक आभास उत्पन्न करती हैं, जो आभास कष्टदायक अनियमितताओं के कारण धूमिल पड़ने लगता है, तथा यह पर्याप्त रूप में भारोपीय से इतनी भिन्न भी है जो सही रूप से निश्चित कर लिए जाने पर बहुत सी नवीन तथा प्राचीन भारोपीय भाषाओं में कुल मिलाकर समान प्रभेद दिखाने के लिए एक नया दृष्टिकोण प्रदान करती है। अंग्रेज़ी से होपी में अनुवाद करने की आवश्यकता पड़ने पर, होपी मेरे लिए अंग्रेज़ी को एक नए दृष्टिकोण से देखने के लिए इतनी बोधजनक हो गई जितनी कि वह स्वयं होपी रूपों के अर्थ निश्चित करने के लिए थी। यह बात विशेष रूप से उन चार क्रियापदीय कोटियों के विषय में सच है जिनका विवेचन यहाँ किया जाएगा।

पहले यहाँ निम्नलिखित सामान्य प्रभेदों की रूपरेखा प्रस्तुत करना उचित रहेगा :

1. **प्रकट कोटि :** एक कोटि, जो एक रूपिम से निर्दिष्ट होती है जो इस कोटि से युक्त प्रत्येक वाक्य में मिलती है, बनाम, अप्रकट कोटि जो सामान्यत: वाक्यों

---

* *Language*, 14 : 275–286 (1938) **से पुनर्मुद्रित** ।

में चिह्नित नहीं होती, परन्तु विशेष प्रकार के वाक्यों में उनके लिए विशेष व्यवहार अपेक्षित है, जैसे अंग्रेज़ी में लिंग।

2. **शब्द कोटि :** एक कोटि (जो प्रकट, अप्रकट, या मिश्रित हो सकती है) जो शब्दवर्गों के एक प्राथमिक आनुपूर्व्य की सीमा निर्धारित करती है, प्रत्येक की सदस्यता सीमित हैं (जो समस्त शब्दावली के समकक्ष नहीं है), जैसे कि भारोपीय तथा अन्य भाषाओं के परिचित "शब्द-भेद," बनाम परिवर्तक कोटि : "ऐसी कोटि जो या तो शब्द-भण्डार के किसी शब्द को किंचित् परिवर्तित करती है या किसी ऐसे शब्द को परिवर्तित करती है जो पहले ही एक सीमित वर्ग में सम्मिलित कर दिया गया है, जैसे वाच्य, पक्ष और कारक आदि वर्ग में।

3. **विशिष्ट कोटि :** उपरोक्त प्रकार की कोटियों में से कोई एक वर्ग जैसे कर्म-वाच्य, आवधिक पक्ष, बनाम सामान्य कोटि : एक उच्चतर आनुपूर्व्य जिसे समान या परिपूरक प्रकार के वर्गों को समूहित करके बनाया गया हो, जैसे वाच्य, पक्ष।

इस लेख में विवेचित सभी कोटियाँ प्रकट तथा परिवर्तक प्रकार की हैं, परन्तु यह भी कहना चाहिए कि अप्रकट कोटियाँ तथा शब्द-कोटियाँ भी होपी व्याकरण में बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। ऐसे वर्गों की परिभाषा देने में असफलता के कारण व्याकरण अनियमित प्रतीत होने लगेगा। यहाँ जिन सामान्य कोटियों का विवेचन किया गया है, वे सब क्रियापदीय व्यवस्था से सम्बन्धित हैं तथा उन्हें दृढ़ कथन (assertion), वृत्ति (mode), स्थिति (status) और प्रकारता (modality) से अभिहित किया गया है।

दृढ़ कथन (Assertion)

होपी क्रियाओं के तीन दृढ़ कथन हैं :

१. सूचनात्मक (Reportive) (शून्य रूप)।

२. प्रत्याची (Expective) (-ni प्रत्यय)।

३. प्रथापरक (Nomic) (-$\eta^{w\cdot}$i प्रत्यय)।

ये अंग्रेज़ी के कालों का लगभग अनुवाद करते हैं। परन्तु ये 'काल'[1] या अवधि का निर्देश नहीं करते। वे तीन प्रकार की सूचनाओं का भेद स्पष्ट करते हैं। दूसरे शब्दों में 'दृढ़कथन' एक ऐसा वर्गीकरण है, जो किसी कथन की संगति के तीन पृथक् क्षेत्रों में से उन्हें किसी एक के लिए निर्दिष्ट करता है। 'सूचनात्मक' ऐसे कथन की सूचना मात्र देने के लिए है, जो किसी विशेष अवस्था को ऐतिहासिक

1. *Language* 12 (1936) में छपे 'The Punctual and Segmentative aspects of Verbs in Hopi' नामक लेख में मैंने दृढ़कथनों (assertions) का कालों के रूप में निर्देश किया था तथा उन्हें तथ्यात्मक या वर्तमान भूत, भविष्य, एवं सामान्यीकृत या Uisitative नाम दिया था।

वास्तविकता को बताता है: जैसे अंग्रेज़ी में 'he ran' वह दौड़ा, 'He is running' वह दौड़ रहा है, 'I see it' मैं इसे देखता हूँ।'[2]

प्रत्याशी (expective) किसी अवस्था की प्रत्याशा या पूर्वाभास की घोषणा करता है। इसका अनुवाद अंग्रेज़ी में 'भविष्य काल' से किया जाता है, या 'is going to' करने वाला है, या 'begins to' करना प्रारम्भ करता है, के द्वारा किया जाता है, क्योंकि मनोवृत्ति, उस समय भी जबकि कार्य प्रारम्भ हो चुका है, कार्य-सम्पन्नता की सूचक होने की अपेक्षा प्रत्याशित पूर्वाभास वाली हो सकती है। क्योंकि दृढ़कथनों का 'काल' से कोई सम्बन्ध नहीं होता है, इसलिए प्रत्याशी मनोवृत्ति का आरोपण बीती हुई घटनाओं के विवरण पर किया जा सकता है। अतः इस प्रकार के अनुवाद मिलते हैं—was going to (करने लगा था), began to (करना प्रारम्भ किया था)। ऐसे अर्थों की कुन्जी, जो अन्यथा दुर्बोध है, इस प्रकार के अनुवादों में निहित है, 'his doing it is (or was) expected (उसका यह करना प्रत्याशित है या था)। अतः संगामी वृत्यर्थक (concursive) प्रत्यय -kaŋ, जबकि -nikaŋ में प्रत्याशी-संगामी (expective-concursive) बनाता है, परन्तु इसका अंग्रेजी के भविष्यकाल में 'while he will do it

---

2. (Reportive) सूचनात्मक के अन्तर्गत भूत तथा वर्तमान में कोई भेद नहीं है, क्योंकि दोनों ही निष्पादित तथ्य हैं। जिसे हम अपना वर्तमान-काल कहते हैं (हमारे वर्तमान के उस रूप की गणना न करते हुए जो प्रथागत के समान है) वह होपी दृष्टिकोण से दूसरों के साथ व्यतीत की गई परिस्थिति से सम्बन्धित उन्हें (दूसरों को) दी गई सूचना मात्र है, यह सूचना या तो अनावश्यक समाचार है, या ध्यान आकर्षित करने के लिए प्रयुक्त की जाती है, या उस स्थिति के कुछ अंशों के विषय में बताने के लिए है जिन्हें उनके साथ पूरी तरह व्यतीत नहीं किया गया है। अतः होपी के लिए 'वह दौड़ रहा है' के लिए 'वह दौड़ रहा था' से भिन्न होना आवश्यक नहीं है, क्योंकि वक्ता तथा श्रोता दोनों ही दौड़ने वाले को देख सकते हैं, तो पहले वाक्य के 'है' का अर्थ केवल यह है कि श्रोता को जो कुछ बताया जा रहा है उसे वह स्वयं देख सकता है, उसे अनावश्यक सूचना दी जा रही है तथा दूसरे वाक्य से इसका केवल यही अन्तर है। ऐसी स्थिति में होपी श्रोता को होपी व्याकरण में इस बात का अभाव नहीं दिखाई देता कि उसे यह नहीं बताया गया कि सूचना अनावश्यक है जबकि वह स्वयं देख सकता है कि ऐसा है। यदि वक्ता दौड़ने वाले को देख सकता है परन्तु श्रोता नहीं तो फिर सूचना अनावश्यक नहीं होती, परन्तु ऐसे स्थलों पर स्थिति तेज़ी से सूचना देने की होती है, जो 'था' के स्पष्ट भूत-कालिक अर्थ का निषेध करती है तथा होपी लोगों को हमारे 'काल-भेद' अनावश्यक प्रतीत होते हैं।

(जबकि वह इसे करेगा) के रूप में अनुवाद करना बिल्कुल अशुद्ध होगा। इस रूप का अर्थ है 'before he does it' (उसके करने से 'पहले) : अर्थात् 'while his doing it is expected' (जबकि उसका करना चल रहा है) यह प्रत्याशित है।'[3]

प्रथापरक (Nomic) किसी अवस्था की घोषणा नहीं करता, परन्तु कथन को शाश्वत सत्य के रूप में प्रस्तुत करता है, जैसे अंग्रेजी में 'she writes poetry' (वह कविता लिखती है) 'He smokes only cigars' (वह केवल सिगार पीता है) 'rain comes from the clouds' (वर्षा बादलों से होती है) certain dinosaurs laid eggs in sand (कुछ भयंकर मगरमच्छ रेत में अण्डे देते थे)।' ये तीन दृढ़ कथन कोटियाँ परस्पर व्यावर्तक हैं।

वृत्ति (Mode)

होपी भाषा में वृत्ति उस व्यवस्था की 'सामान्य' कोटि है जिसके द्वारा, एक वाक्य (उपवाक्य) तथा उस वाक्य (उपवाक्य) जो परवर्ती है या पूर्ववर्ती, के बीच सम्बन्ध तथा मिश्रित पार्थक्य के स्वरूप को द्योतित किया जाता है। स्वतन्त्र-वृत्ति, (Independent Mode) (शून्य रूप) का अर्थ है कि वाक्य दूसरे वाक्यों से पृथक् है, यद्यपि यह सम्भव है कि उस वाक्य का सम्बन्ध दूसरे वाक्यों से अंग्रेजी के वाक्यीय संयोजक (and) (और) के द्वारा जोड़ा जा सकता है। परन्तु होपी लोग आश्रितान्वित रचनाओं के प्रति विशेष रुचि रखते हैं। वे परस्पर व्यावर्तक छह

3. होपी के लिए प्रयुक्त की गई लेखन-प्रणाली स्वनिमिक है तथा American Anthropological Association (अमरीकी मानव-शास्त्रीय परिषद्) द्वारा प्रयुक्त प्रतीकों का प्रयोग करती है। इनमें निम्नलिखित कतिपय परिवर्तन किए गए हैं ? K थोड़ा सा अग्रीकृत है तथा a और ϵ से पहले Ky जैसी ध्वनि देता है, c स्पर्शसंघर्षी ts है; ? काकलीय स्पर्श है; v द्वयोष्ठीय है तथा अक्षर के अन्त में अघोष होता है; r मूर्धन्य, अकम्पित, तथा किंचित संघर्षी है और जब अक्षर के अन्त में हो तो अघोष होता है, छोटे कैंपिटल वर्ग अघोष् व्यंजनों को द्योतित करते हैं तथा ये पृथक् स्वनिम हैं; स्वरों के नीचे एक बिन्दु ह्रस्वना का, किसी चिह्न के अभाव का, होपी की त्रिमात्रिक व्यवस्था की 'मध्यम श्रेणी' का द्योतन करता है। ('उदात्तस्वर') ऊंचे उठाए गए स्वराधीन तथा पर्याप्त रूप में दृढ़ बलाघात का द्योतन करता है, तथा एकाक्षरीय पदों पर इसका चिह्न नहीं होता परन्तु उसे मान लिया जाता है। ('अनुदात्त स्वर') स्वराघात के निम्नस्तर, तथा दुर्बल बलाघात का द्योतन करता है, तथा इसका निर्देश तब होता है जब यह एकाक्षरीय पदों में होता है। वृत्ति-प्रत्यय तथा अधिकतर निपातों के, जब वे वाक्यों के अन्त में आते हैं तो विशेष विरामीय रूप होते हैं। ये केवल उदाहरण में प्रयुक्त –q$\omicron$?, प्रत्यय के अतिरिक्त दिए नहीं गए हैं।

आश्रित वृत्तियों का प्रयोग करते हैं, जिनका द्योतन दृढ़ कथन प्रत्यय से परे कोई अन्य प्रत्यय जोड़ कर किया जाता है। प्रत्येक वृत्ति एक प्रकार की बन्धुता द्योतित करती है जिसमें दोनों ही बातें सम्मिलित हैं, शृंखलता तथा विविक्तता या असमानता। इनसे और आगे, विशेषक निपातों को जोड़ने से ये वृत्तियाँ बहुत से सम्भव सम्बन्धों का स्पष्ट भेद इतनी ही अधिक मात्रा में प्रकट कर सकती हैं, जितना कि ग्रीक भाषा की तीन तिर्यक् कारकों की मौलिक व्यवस्था को बहुत सारे पूर्वसर्गों द्वारा विकसित किया जा सकता है। परन्तु वृत्तिगत सम्बन्ध कारकीय सम्बन्ध नहीं हैं, न ही वृत्तियाँ भारोपीय क्रियार्थक-संज्ञा या भावार्थक संज्ञाओं की तरह विकारी रूप हैं, अपितु इनकी पूरी धातु-रूपावली होती है।

विविक्तता-सम्बन्ध (Discretness Connections) के 'नाम', 'प्रत्यय' तथा 'प्रकार' इस प्रकार हैं।

हेतुमद् (Conditional) : (-ϵ? प्रकृति के अन्तिम स्वर का अन्तर्भाव करते हुए) ऐसा प्रतिबन्ध जिसकी आवश्यकता दूसरे उपवाक्य में सूचकेतर (प्रत्याशी या प्रथापरक) दृढ़कथनों की संगति सिद्ध करने के लिए पड़ती है (अंग्रेज़ी के when जब, if (यदि) (वृत्ति उपवाक्य, तर्कसम्मत रूप से इसी दृढ़ कथन के अन्तर्गत आ जाता है, यद्यपि यह किसी दृढ़कथन प्रत्यय से युक्त नहीं होता), सह-सम्बन्धी (Correlative) (-pɒY), दूसरे उपवाक्य के कथन की व्याख्यात्मक संगति (अंग्रेजी) because (क्योंकि) since (क्योंकि), As (जैसा कि) ,for (इसलिए), (क्रियार्थक संज्ञापदीय रचना), संगामी (Concursive) (Kaη, KaKaη) समानान्तरीय समसामयिक घटना (अंग्रेजी--while (जबकि), as (जसा कि), and (और), अनुक्रमीय (sequential) (-t), काल के अन्तर्गत अनुक्रम अंग्रेजी after (इसके बाद) and then (और फिर), कर्तृवाची Agentive (qa) एक उपवाक्य में किसी वस्तु या व्यक्ति की दूसरे who (कौन), उपवाक्य के अन्तर्गत कर्ता होने की योग्यता, वृत्ति उपवाक्य (अंग्रेज़ी के who, (कौन) which (कौन सा) तो होते हैं, यद्यपि अंग्रेजी का whom (किसे) नहीं होता, परा-सम्बन्धी (-q -qo?) सामान्य बन्धुता-परा-सम्बन्धी जो दो उपवाक्यों में उद्देश्य के अन्तर की पूर्ति करता है (अंग्रेजी में इसकी समकक्ष अभिव्यक्ति नहीं है) । प्रत्येक वृत्ति एक विशेष प्रकार की असमानता या विषमता की ओर संकेत करती है, तथा दो उप-वाक्यों के सम्बन्ध को भी निर्दिष्ट करती हैं; और दो उपवाक्यों में उद्देश्यों या कर्ताओं की पृथकता अन्य मौलिक प्रकार की असमानताओं के स्तर पर स्वयं एक मौलिक प्रकार की असमानता है, और उपवाक्यों में से एक उपवाक्य के अन्तर्गत परासम्बन्धी वृत्ति को अनिवार्य बना देता है। अतः सभी अन्य वृत्तियाँ उन परिस्थितियों की ओर संकेत करती हैं जिनमें उप-वाक्यों का 'उद्देश्य' एक ही है अर्थात् उपवाक्य-वैषम्य, जो उद्देश्यों की असमानता को छोड़कर अन्य कारणों पर आधारित होता है। यदि परासम्बन्धी वृत्ति के साथ सामान्य अर्थों के साथ उन तत्वों की अभिव्यक्ति भी जोड़नी अपेक्षित हो जो अन्य

वृत्तियों में आधारभूत हैं तो पृथक् निपातों की सहायता से ऐसा करना सम्भव है। परासम्बन्धी का उद्देश्य, वहुत-सी रचनाओं में, तथा; कर्तृवाचक उद्देश्य कुछ रचनाओं में कर्म-कारकीय होता है, अन्य सभी वृत्तियों का कर्ताकारक में होता है। इन वृत्तियों के प्रयोगों के कतिपय उदाहरण नीचे दिए हैं। इन उदाहरणों में तथा इसमें आगे इस लेख में सभी जगह वृत्ति प्रत्यय संयोजक रेखा द्वारा जोड़े गये हैं ताकि आश्रित क्रिया को पहचानने में सहायता मिल सके।

हेतुमद् वृत्ति : ni'm-ϵ' mi.'nat tiwa'ni

जब वह घर जायेगा तो नदी को देखेगा (प्रत्याशी); ni'ma-o' mi' nat tiwa'ŋʷi जब वह घर जाता है तो नदी को देखता है (प्रथापरक)।

सह सम्बन्धी : ni'ma-qa'Y mi.'nat tiwa क्योंकि वह घर गया, उसने नदी को देखा ni'ma mi.'nat tiwa'ni–qaY वह घर गया ताकि नदी को देखे: अर्थात् वह घर गया क्योंकि उसका नदी को देखना प्रत्याशित था, (उसके द्वारा नदी को देखने की आशा की जा रही थी ; pa'Nqa W–qaY ya'w mi.'nat ti'wa उसने कहा कि उसने नदी देखी (उसके यह कहने से, उदाहरणार्थ, 'उसने नदी देखी') ।

संगामी : ni'ma-kaŋ' mi.'nat ti'wa

जब वह घर गया तो उसने नदी देखी; wini'ma-ka'ŋ ta.'–wlawi उसने नृत्य किया और गाया' (एक ही साथ)।

अनुक्रमीय : ki.y ʔaw piti'-t mi.'nat ti'wa

घर पहुँचने के पश्चात् (या जब) घर पहुँचा तो उसने नदी को देखा; wini' ma'-t pt'ʔ ta.'wla'wi 'उसने नृत्य किया और तब उसने गाया।'

कर्तृवाची : ta 'qa ni'ma-qa mi.' nat ti'wa

'वह पुरुष जो घर गया उसने नदी देखी' ni' ti wa ta.' qat ni' ma–qa–t 'मैंने उस पुरूषै को देखा जो घर गया' (कर्तृवाची में संज्ञाकारक लगते हैं और यहाँ पर यह कर्मकारक में हैं, इसी प्रकार इसका उद्देश्य भी कर्मकारक में है।[4]

परासम्बन्धी : ni'm–-q ta.'qaʔaw piti'ni जब वह घर जायेगा तो एक व्यक्ति मिलेगा (उसके पास पहुँचेगा); ni'ma-q mo'ŋʷiʔaw' piti'ŋʷi जब वह घर जाता है तो मुखिया उसे मिलता है (प्रथापरक); ti'yo wini' ma-q ʔo.' viy ma.'na ta.'wla'wi क्योंकि लड़का नाचा इसलिए लड़की ने गाया, pa'NqaW-q yaw ma.'na ni'ma उसने कहा कि लड़की घर गई; na.t ta.'wlaW-p ma.'na wini'ma जब उसने गाया लड़की नाची; pa'nis wini'ma'-q piʔma.'ठीक उसके na ta.'wla'wi पश्चात् जब (या ज्योंही) वह नाचा लड़की ने गाया; ʔa' son ni'ma-q mo'ŋ i' aw piti' ni जब वह घर चला जायेगा तो मुखिया उसे मिलेगा।

---

4. **यह कर्म-कारक कर्तृवाची उपवाक्य उस नियम का एक अपवाद है जिसके अनुसार कर्ता की विषमता को परासम्बधी की आवश्यकता पड़ती है।**

हमारा सम्बन्धवाचक, उपवाक्य सम्बन्धवाचक सर्वनामी कर्म के साथ होपी भाषा का परासम्बन्धी है। इसमें कारण है उद्देश्य सम्बन्धी असमानता का होना, जैसे ta.' qat ni? tiwa-q nima' वह पुरुष जिसे मैंने देखा था घर चला गया। (पुरुष कर्मवाची मेरे देखने पर वह घर चला गया पर आश्रित है)। होपी भाषा पुरुष-पुरुष को देखने वाले उप वाक्य का कर्म मानती है, जबकि घर जाने वाले उप वाक्य का कर्ता वह है जिसकी अभिव्यक्ति क्रिया-पद द्वारा की गई है। अंग्रेजी भाषा, ऐसी रचनाओं में तथा उन रचनाओं में जिन्हें होपी भाषा कर्तृवाचक द्वारा अभिव्यक्त करती है, बहुत कम भेद दिखाती है—होपी प्रायः उसी संयोजक 'that' जिसे, या 'which' जिसने, जो, को दोनों के लिए प्रयोग कर देती है, अतः बाह्य रूप से समान प्रतीत होने वाले बहुत से सम्बन्ध-वाचक उपवाक्यों में होपी में अनुवाद करते समय कई प्रकार के विभिन्न संरचनात्मक परिवर्तन उपस्थित हो सकते हैं। एक होपी-भाषी के लिए ये परिवर्तन बिल्कुल स्पष्ट होते हैं : एक द्विभाषी होपी भी, जब उसके समक्ष अंग्रेजी के एक ही रूप में रंगे दो प्रस्ताव प्रस्तुत किए जाएं 'the man that I saw went house' पुरुष जिसे मैंने देखा था घर चला गया, और पुरुष जिसने मुझे देखा तो घर चला गया तो वह तुरन्त दो नितान्त भिन्न अभिरचनाओं ta.'qat ni? tiwa'-ni'ma, तथा ta.'qa niy tiwa' qa ni'ma, के रूप में प्रतिक्रिया करेगा। होपी में परा-सम्बन्धी रूपों की रचना होती है जो हमारे पूर्वसर्ग के कर्मभूत सम्बन्धवाचक सर्वनाम का अनुवाद करते हैं; तथा इस विषय में हमारी अभिरचनाओं से होपी की दूरी अपनी पराकाष्ठा पर है जैसे yama'kpit? aŋwa.' yma-q le'pe 'the bridge on which he was walking collopse' (वह पुल, जिस पर वह चल रहा था, टूट गया) (bridge) पुल (कर्मवाची) on it (उस पर) being his walking (उसका चलना होने पर) it collapsed (वह टूट गया)। भारोपीय दृष्टिकोण के लिए सबसे अधिक विस्मयकारी वह ढंग है जिसके अन्तर्गत होपी भाषा अपने ही व्यवस्थित तर्क द्वारा वृत्तियों को प्रकारताओं के साथ मिला देती है।

ऐसा न हो कि वृत्तियों की सूची से 'आज्ञार्थ' का अभाव विचित्र प्रतीत हो, इसलिए मैं यह कहना आवश्यक समझता हूँ कि वह उन विध्यर्थक (वृत्तियों) में ही समाविष्ट है (आज्ञार्थ, अर्ध-आज्ञार्थ, इच्छार्थक वृत्ति, Vetative (प्रतिबन्धात्मक) जिनकी रूपावली अनियमित है तथा वे न तो वृत्तियाँ हैं, और न ही प्रकारताएं हैं।

स्थिति कोटि (Status)

स्थिति कोटियों को अस्तिवाचक (शून्य रूप, उद्घोषक वाक्य) नकारात्मक, प्रश्नवाचक, अनिश्चयवाचक आदि नाम दिए गए हैं। सूचक तथा प्रथारूढ़ कोटियों में नकारात्मक की रचना क्रियापद से पहले *qo* निपात जोड़ कर की जाती है और प्रत्याशी में *So? on* जोड़कर प्रश्नवाचक, 'हां' या 'न' में उत्तर प्राप्त करने के लिए प्रश्न पूछने की स्थिति है। इसकी रचना वाक्य के आरम्भ में *pi* निपात जोड़

कर की जाती है जैसे pi' ma.'na ti'yot ti'wa 'क्या लड़की ने लड़के को देखा? किसी भी अन्य प्रकार के वाक्य में भिन्न अनुतान प्राप्त नहीं होती। उत्तरवाची रूप में होते हैं ?owi. y हाँ, qa?e या qa? ɛy 'न' तथा Pi.'hi जिसका विश्लेषणीय अर्थ "मैं नहीं जानता" होता है । अनिश्चयवाक वाक्य की वह 'स्थिति' है जिसमें एक प्रश्नवाचक (या अनिश्चयवाचक कहना अधिक उचित रहेगा) सर्वनाम, क्रिया विशेषण, या क्रियापद (जैसे क्रियापद–'क्या करें') होता है। यह आवश्यक नहीं है कि वह सही अर्थों में एक प्रश्न ही हो क्योंकि ऐसे प्रश्नवाचक शब्द अनिश्चयवाचक भी होते हैं (अर्थात् 'क्या?) और 'कोई चीज' शब्द एक ही हैं'), या दूसरे शब्दों में एक शब्द का अर्थ एक अनिश्चयात्मक संकेत है जिसका निहितार्थ यह भी होता है कि वक्ता की न्यूनाधिक जिज्ञासु मनोवृत्ति है (पता नहीं क्या? की तरह की । होपी के इस वाक्य का अर्थ hi.'mi' pɛ wi? 'कोई चीज आ रही है' मनोवैज्ञानिक ढंग से यह भी समझा जा सकता है—'(न जाने) आश्चर्य है कि क्या आ रहा है ?'। आया इसे अधिक सूचना प्राप्त करने के लिए अभ्यर्थना समझा जाए, या इसे केवल एक मनोरंजक टिप्पणी माना जाए—यह उस प्रसंग पर निर्भर करेगा जिसमें वक्ता का सामान्य व्यवहार भी सम्मिलित हो सकता है।

प्रकारता (Modality)

साधारण शब्दों में होपी भाषा में प्रकारता वह चीज है जिसका निर्देश भारोपीय भाषा में (Subjunctive) सम्भावनार्थवृत्ति या अन्य वृत्तियों द्वारा किया जाता, परन्तु हमें इस प्रकार की परिभाषा से सन्तुष्ट नहीं हो जाना चाहिए। मैं यह कहना चाहूँगा कि होपी की प्रकारताएँ परिवर्तकों की परिवर्तक हैं, अर्थात् ये उस त्रि-दृढ़कथन व्यवस्था को और अधिक सुधारने तथा विस्तृत करने के वे तरीके हैं जो तर्कसगत तथ्यों के तीन क्षेत्रों का भेद स्पष्ट करते हैं, ताकि इसके परिणाम स्वरूप तर्क संगत तथ्यों के तीन से बहुत अधिक क्षेत्रों तथा उपक्षेत्रों में प्रभेद किया जा सके—ठीक उसी तरह जैसे ग्रीक के पूर्व-सर्गीय सम्बन्ध, कारक सम्बन्धों की मौलिक व्यवस्था का विस्तार करते हैं। प्रकारताओं का दृढ़ कथनों के साथ वही सम्बन्ध है, जो हमारे वृत्तियों के उदाहरणों में na.t,? a'son आदि निपातों का वृत्तियों के साथ है। उनका द्योतन (modalizen) प्रकारक नामक निपातों द्वारा किया जाता है । प्रकारता कोटि का सुनिश्चित विवेचन करने पर जितने रूपिम मिल सकते हैं उससे कहीं अधिक रूपिम-प्राचुर्य प्रकारकों की शब्द-कोटियों में है। यूं तो प्रकारक जाति के बहुत से निपात हैं, परन्तु आठ प्रकारताओं की एक व्यवस्था बनाने के निमित्त परस्पर समन्वित आठ निपातों का भेद स्पष्ट करना नितांत आवश्यक है। उन प्रकारताओं में हम रूपरेखा व्यवस्था आधार पर नवीं अर्थात् निश्चयार्थक प्रकारता या शून्य रूप का भी समावेश कर सकते हैं। प्रकारताओं तथा अन्य प्रकारकों के शाब्दिक प्रयोग में बहुत स्पष्ट अन्तर नहीं है, तथापि कुल मिलाकर प्रकारताए परस्पर

व्यावर्तक रूपों का एक वर्ग है (कुछ अपवादों को छोड़कर) जबकि दूसरे प्रकारक अधिक स्वतन्त्र रूप से एक दूसरे के साथ प्रयुक्त होते हैं, या प्रकारता प्रकारकों के साथ कम स्थानों पर तथा कुछ कम रूपात्मक अभिरचनागत प्रयोगों में घटित होते हैं, और सम्भवतः उन्हें बहुत आसानी से शाब्दिक इकाई माना जा सकता है (इस लेख के अन्त में उदाहरण देखिये)। प्रकारताओं के नाम इस प्रकार है– (Indicative) निश्चयात्मक, (Quotative) उद्धरणात्मक, (Inhibitive) निरोधात्मक, (Potential) विध्यर्थक, (Indeterminate) अनिश्चयवाचक, (Advisory) परामर्शी, (Concessive) अनुमोदनात्मक, (Necessitative) आवश्यकता सूचक, (Impotential) अविध्यर्थक।

उद्धरणात्मक Quotative प्रकारक : Yaw : यहाँ पर दृढ़ कथन एक भाषाई सूचना का दृढ़कथन बन जाता है। एक लोक कथा बताते हुए Yaw का प्रयोग अंग्रेजी के 'So' या, and (so) या की तरह प्रत्येक लम्बे वाक्य के आरम्भ में किया जाता है, यहाँ इसका प्रयोग 'कथा के अनुसार' या 'बात यह है' के अर्थ में होता है। एक साधारण स्वतन्त्र वाक्य में इसका प्रयोजन 'वे कहते हैं' या 'कहते हैं कि' इत्यादि अर्थ जोड़ने का होता है। इसे प्रधान उद्धरण के तुरन्त पीछे जोड़ा जाता है, अन्तिम शब्द जिसके अन्तिम अक्षर पर उच्च बलाघात होता है और यह संयोग उच्चरित उद्धरण-चिन्हों के समकक्ष है। इसका प्रयोग अप्रधान उपकथन में भी किया जाता है, कहने और सुनने आदि अर्थ वाली क्रियाए सह-सम्बन्धी तथा तथा परा सम्बन्धी वृत्तियों में होती हैं (इन वृत्तियों के नीचे उदाहरण देखिये) ninavo' t–q Yaw mi'ni 'मैंने सुना कि वह गिर गया' (शाब्दिक सूचना) का भेद, ni? navọ't–q. mini मैंने उसे गिरते हुए सुना (गिरने की आवाज सुनी) से कीजिए। तथापि, उद्धरणात्मक का अर्थ सूचना का समर्थन या सूचना की सत्यता की स्वीकृति भी नहीं हो सकता, जो कि अनुमोदनात्मक प्रकारता (Kir) का कार्य है, अतः मैंने ni? navo't–q kir mini (इस विषय में) सुना कि वह गिर गया है (इस वाक्य में यह स्वीकृति है कि घटना वास्तव में घटित हुई)।

निरोधात्मक (Inhibitive) **प्रकारक :** Kir hi'n: इसका अर्थ है कि क्रिया द्वारा अभीष्ट कार्य को करने के लिए कर्ता को रोका जाता है या उसका निरोध किया जाता है। इसमें इस परिस्थिति के कारण के संकेतन का पूर्ण अभाव होता है, यह संकेत नहीं मिलता कि निरोधकर्ता के सामर्थ्य के कारण हुआ अथवा बाह्य कारणों से, इसका अनुवाद केवल 'नहीं कर सकना' द्वारा किया जा सकता है।

विध्यर्थक (Potential) : यह सूत्रीकरण एक अंग्रेजी भाषी को पहले पहले यदि अटपटा नहीं तो कम से कम उलटा पुलटा अवश्य लगता है। इसका अनुवाद Can 'कर सकना' द्वारा किया जाता है परन्तु यह निरोधात्मक का निषेध मात्र है जिसका द्योतन Kir hin *qà* द्वारा किया जाता है, तथापि इसका विश्लेषण सिद्ध करता है कि यह रूप विलक्षण रूप से तर्कसंगत है। इस ढंग से होपी भाषा पूर्णतया तटस्थ की रचना कर सकती है, विध्यर्थक (Can) 'सकना' न केवल

व्यक्तिगत योग्यता का संकेत देता है अपितु, यह भी द्योतित करता है कि कर्ता के लिए मार्ग पूरी तरह खुला है यदि वह चाहे तो सम्भावना को क्रियाशीलता में बदल सकता है, क्योंकि (Can) 'सकना' व्यक्तिगत तथा विशेष योग्यता के लिए', 'यह कैसे किया जा सकता है' इस अर्थ के लिए एक निश्चित क्रिया है, जिसका प्रयोग क्रियाशीलता द्योतक क्रियापद के प्रत्याशी सहसम्बन्धी के साथ होता है। परन्तु प्रश्न यह है कि इस प्रकार के तटस्थ विध्यर्थक Can 'सकना' की अभिव्यक्ति कर्ता तथा क्रिया के बीच आने वाले निरोधी अथवा विफल बनाने वाले व्यवधानों के अभाव मात्र का द्योतन करने वाले निषेधात्मक रूप द्वारा कैसे हो सकती है?

अनिश्चयवाचक (Indeterminate) **: प्रकारक** Sєn : यह 'अनिश्चय' का संकेत देता है जिसका अर्थ 'स्यात्', 'सम्भवतः' हो सकता है या प्रत्याशी 'may' के समान माना जा सकता है, जैसे ni'm-є? Sєn moy w it? aw piti'ni जब वह घर जाएगा (जाता है) तो वह सरदार से मिल सकता है (और पुनः वह न भी मिल सके)। यहां पर 'अनिश्चितता' की प्रकृति ऐसी है जैसे सकारात्मक एवं नकारात्मक सम्भावनाओं के बीच सन्तुलन बनाना, अतः, जैसे ni? 'aw ti viyta-qSEn ni'máni 'मैंने उससे पूछा (आया) वह जाने वाला है' (परा सम्बन्धी रचना)। यहां पहले पहल ऐसा लगता है कि Sєn अंग्रेजी के if 'यदि' की तरह कार्य करता है परन्तु वास्तव में ऐसी बात नहीं है। यह केवल if 'यदि' के द्वारा अभिव्यक्त की गई अनिश्चितता का कार्य करता है, जबकि 'if' का 'योजन' तथा 'सम्बन्धन' कार्य परासम्बन्धी-वृत्ति सम्बन्ध (वाची) द्वारा सम्पन्न किया जाता है, Sєn स्वयं किसी प्रकार का संयोजन करने में बिल्कुल असमर्थ है।

परामर्शी (Advisory) **प्रकारक** Kє: यह Sєn जैसी ही अनिश्चितता का द्योतन करता है, परन्तु नकारात्मक परिणाम की अपेक्षा सकारात्मक परिणाम पर थोड़ा सा बल देता है। यदि इस प्रकार की सकारात्मक सम्भावना का दृढ़तापूर्वक कथन, विरोधी मनोवृत्ति की उपस्थिति में, या विरुद्ध परिणाम के भय की (उपस्थिति) में किया जा रहा है तो यह अंग्रेजी के might 'कर सकना' (में समर्थ होना), may nevertheless 'तथापि कर सकना' या सूचनावाचक might have done so 'ऐसा कर सका हो', का आभास देता है। अतः ta 'qa tiw є'? Kє wa' ya'ni. When the man sees it may run away. जब पुरुष इसे देखेगा तो वह भाग सकता है (उसका सम्भावित भाग जाना ऐसा तथ्य है जिसे ध्यान में रखा जाना चाहिए) अतः Kє से युक्त वाक्य की प्रकृति परामर्शी है क्योंकि यह केवल अनिश्चितता का पूर्वाभास ही नहीं कराता, अपितु उसके एक सम्भव परिणाम की ओर ध्यान आकृष्ट कराता है। काफी तर्कसंगत ढंग से हमारा may not 'न कर सकना' Kє qa है, Sєn qa' नहीं। जैसे ni'm-є? Kє qa' tiwa'ni 'जब वह घर जाएगा तो इसे नहीं देख सकेगा'।

अनुमोदनात्मक प्रकारक : Kir यह द्योतित करता है कि दृढ़कथन को वस्तुपरक अनुभूति की अपेक्षा एक 'धारणा' के रूप में मान्यता दी जाती है [5] । जैसे 'यह स्वीकार किया जाता है', 'अनुमत होता है', 'प्रस्तुत प्रमाण से अनुमानित होता है, मान लिया जाता है', 'जाना हुआ समझ लिया जाता है', इत्यादि । स्वतन्त्र वाक्य में इसका अनुवाद ऐसा प्रतीत होता है कि स्पष्टतया, प्रामाणिक रूप से या केवल 'अच्छा तो' के रूप में किया जा सकता है जैसे Kir mo'ywc nima 'अच्छा तो मुखिया घर चला गया'। केवल मिश्र वाक्यों में ही इसका सूक्ष्म महत्त्व लक्षित होता है। परासम्बन्धी अभिरचना पर विचार कीजिए ni? tiwa-q pa'la 'मैं देखता हूँ कि यह लाल है' (मेरे देखने से यह लाल है), ni? tiwa-q ripi' pita 'मैं देखता हूँ कि यह चमकता है'। होपी भाषा इस अभिरचना का प्रयोग उसी अर्थ में करने से इन्कार करती है–जिसका यह द्योतन करती है जिसे 'मैं देखता हूँ कि यह नवीन है, जो नवीनता को अभिव्यक्त करने वाले उपवाक्य में अनुमोदनात्मक की अपेक्षा करता है अर्थात् ni? tiwa'-q Kir pi hi (मेरे देखने से यह

5. हम यहां पर 'Objective' वस्तुनिष्ठ के स्थान पर 'Sensory' संवेदी न पढ़ें, क्योंकि उन अनुभूतियों को, जिन्हें मनोविज्ञान संवेदनों के स्तर की अपेक्षा प्रत्यक्ष ज्ञान के स्तर पर, या साधारण धारणाओं के स्तर पर भी रख सकता है, (उन्हें) अनुमोदनात्मक की आवश्यकता नहीं है, यद्यपि उन्हें संवेदनाओं से भिन्न माना जाता है। वे एक ऐसी क्रिया या इस प्रकार के तथ्य, जिसका शाब्दिक नाम (क्रिया) है, को देखने के प्रत्यक्षबोध हैं, (अथवा साधारण धारणाएँ) तथा उन्हें निश्चयार्थक परासम्बन्धी में रख दिया जाता है, जब कि यह अब देखने की क्रिया है जो कि स्वतन्त्र वृत्ति में है जैसे ni ? tiwa wa ya-qo 'मैंने उसे भाग जाते हुए देखा' ni ? tiwa cirot mi ? a-qo ? "मैंने उसे पक्षी को गोली से मारते हुए देखा'। यह एक महत्त्वपूर्ण बात है कि होपी लोग अपनी भाषा में प्राप्त सूचना के उन चार प्रभेदों को मान्यता प्रदान करते हुए प्रतीत होते हैं जो कि मनोविज्ञान द्वारा किए गए क्रम निर्धारण के अनुरूप है : (१) संवेदी, जैसे 'मैं देखता हूं कि यह लाल है', "मैं उसे गिरते हुए सुनता हूं' (अर्थात् मैं उसके गिरने का शब्द सुनता हूं), संवेदनशील क्रिया-पद परासम्बन्धी में है, सूचना देने वाला क्रिया-पद निश्चयार्थक में है, (२) प्रत्यक्ष बोधात्मक धारणात्मक, जैसे 'मैं उसे गिरते हुए देखता हूं, संवेदनात्मक क्रियापद स्वतन्त्र वृत्ति में हैं, सूचना क्रियापद परासम्बन्धी में, (३) प्रकट भाषाई, जैसे मैंने सुना कि वह गिर गया (अस्वीकृत), संवेदनात्मक क्रियापद परासम्बन्धी में, सूचना क्रिया-पद उद्धरणात्मक में, (४) शुद्ध धारणात्मक, जैसे 'मैं' देखता हूं कि यह नया है 'मैंने सुना कि वह गिर गया' (एक स्वीकृत सत्य) संवेदनात्मक क्रियापद परासम्बन्धी में सूचना क्रियापद अनुमोदनात्मक में ।

निष्कर्षतः नवीन हो गया), दूसरे शब्दों में नवीनता 'लाली' या "प्रकाश" की तरह एक चाक्षुष संवेदन नहीं है, यह प्रत्यक्ष रूप से नहीं देखी जाती, अपितु Kir प्रस्तुत सामग्री से इसका अनुमान लगाया जाता है, या इसे मान लिया जाता है। हमें यह मनोवैज्ञानिक विश्लेषण की तरह प्रतीत होता है, परन्तु होपी के लिए यह एक स्पष्ट तथा व्यावहारिक प्रभेद है। अंग्रेजी की साधारण हेतुमद् if (यदि) युक्त रचना के लिए होपी में हेतुमद् या परासम्बन्धी वृत्ति अपेक्षित है, जो हमारे if 'यदि' का संयोजक कार्य भी सम्पन्न करती है, if (यदि) के बन्धक रखने के कार्य का प्रतिनिधित्व करने के लिए उसका अनुमोदनात्मक होना आवश्यक है, अन्यथा उसका उस वृत्ति का अनुवाद, when (जब) होगा if (यदि) नहीं। अतः Kir ni'm-ϵ?mi' nat tiwa' ni 'यदि वह घर जाए तो वह नदी को देखेगा' (यह मान लिया जाता है कि वह घर जाता है इत्यादि)। तथ्य का विरोध if एक अन्य विषय है ?as, see below (नीचे देखिए)।

आवश्यकता (Necessitative) **सूचक प्रकारक :** So'? on qa इसका अर्थ है 'आवश्यक रूप से' स्वाभाविक रूप से, 'अनिवार्य रूप से' तथा इसका दोहरा नकारात्मक होना जो होपी में सदैव सकारात्मक बनाता है; यह भारोपीय दृष्टिकोण से बड़ा अजीब सा लगता है। यह qa 'नहीं' तथा So'?on 'प्रत्याशी नहीं', का संयोग है। अतः इसका अर्थ है कि 'नकारात्मक की कोई सम्भावना नहीं है'। इसके द्वारा प्रायः अंग्रेजी के must 'अवश्य होना चाहिए' तथा 'करना पड़ेगा' का अनुवाद किया जाता है, परन्तु यह किसी प्रकार की अनिवार्यता कर्त्तव्य या बाध्यता की धारणा से रञ्जित नहीं है, क्योंकि यह पूर्णतया तटस्थ तथा निरपेक्ष है। इसका प्रयोग प्रायः हेतुमद् कथनों के निष्कर्ष में एक आवश्यक परिणाम दिखाने के लिए किया जाता है जैसे Kir ni'm-ϵ?So'?on qa'minattiwáni यदि वह घर जाता है तो नदी को देखेगा।

असम्भाव्यार्थक (Impotential) (**अविध्यर्थक**) ?as : हमारी चिन्तन पद्धति के शब्दों में इस प्रकारता को अभिव्यक्त करना बहुत कठिन है। यह उस तथ्य की ओर संकेत करता है जिसे मैं उद्देश्य-मूलक अप्रभावोत्पादकता कह सकता हूं। हम कुछ दूर तक तो होपी के मार्ग पर इस प्रकार के दृढ़कथन रूपों को मान्यता प्रदान करते हुए साथ साथ चलते हैं जैसे 'may' कर सकता (आशा) और 'Can' कर सकना (सामर्थ्य) जो केवल 'करता है' या 'नहीं करता है' से भिन्न स्तर पर है, तथा इन अधिक प्राथमिक दृढ़कथनों की तुलना में इनकी एक स्थिति है। जिसमें वे विशेषताएं हैं जो सकारात्मक एवं नकारात्मक का, वास्तविकता एवं अवास्तविकता का मिश्रण हैं। वे इन दो विपरीत ध्रुवों के मध्यभूमिवर्ती होते हैं यद्यपि रूपात्मक दृष्टि से ये सकारात्मक अभिरचना में ढले होते हैं; परन्तु हमारी सभी "मध्यभूमि अभिव्यक्तियाँ अन्तर्हिति के क्षेत्र का संकेत देती हैं, इस कथन की सकारात्मक-नकारात्मक द्विविध प्रकृति का कारण यह है कि इस विषय में सत्य अन्तर्हिति सम्बन्धी है जिसकी आविर्भूति भविष्य के गर्भ में है। होपियों

की भाषा में इस तरह की मध्य-भूमिवर्ती अभिव्यक्तियाँ भी हैं जैसी हम देख चुके हैं। परन्तु इसके अतिरिक्त उनकी भाषा में ऐसी भी मध्यवर्ती अभिव्यक्तियाँ हैं जिनमें द्विविध सकारात्मक-नकारात्मक प्रकृति, अन्तर्हिति का विषय नहीं है, अपितु उसका सम्बन्ध उन घटनाओं से है जो पहले ही घटित हो चुकी हैं। इसके अतिरिक्त, ऐसी अभिव्यक्ति जो ऐसे विषय को निर्दिष्ट करती हों जो पहले कभी घटित हो नहीं हुआ हो, तो उसका सम्बन्ध वास्तविक घटनाओं के निर्देशों के साथ साथ उसी अर्धवास्तविकता के क्षेत्रों से जोड़ा जा सकता है। कसौटी, जो भाषण की विषय-वस्तु पर मानो अर्धवास्तविकता का विशेष लाञ्छन मढ़ देती है, वह है: प्रयोजन, लक्ष्य, प्रेरणा आवश्यकता, कार्यआदि विषयक अप्रभावोत्पादकता, (जहाँ पर हमारी अपनी विचारधारा की विविध धारणाएँ लागू होती हैं) जो मूलरूप से किसी भी क्रियाशीलता का आधार बनाते हैं। यदि होपी एक ऐसी घटनाओं के अनुक्रम की सूचना दे रहा है जिसमें एक आदमी अपना पीछा करने वाले लोगों से भाग गया परन्तु बाद में उनके द्वारा पकड़ा गया तो वह यहाँ, अविध्यर्थक का प्रयोग करेगा और कहेगा ta' qa? as wa'ya 'कि व्यक्ति भाग गया था' (और 'भाग गया था' का अर्थ कभी यह नहीं होगा कि वह 'बच निकला')। यदि व्यक्ति भाग गया और बच निकला तो वह केवल इस प्रकार कहेगा ta' qawa' ya. Nï? maqto का अर्थ है 'मैं शिकार के लिए गया' ni? ?as maqto की भी यही बात है, केवल अन्तर यह है कि 'मैं खाली हाथ चला आया।'' हम इस प्रकार की सूचना एक निराशा भरे स्वर में यह कह कर देते 'हां, मैं शिकार के लिए गया था,' परन्तु होपी वाक्य की तुलना वास्तव में इस वाक्य से नहीं की जा सकती। यह पूर्णतया भाव-रहित कथन है; ?as भाव की अभिव्यक्ति न होकर बौद्धिक अभिव्यक्ति है और इसका प्रयोग किया जाता है चाहे वक्ता भावना हीन हो या अप्रसन्न, अथवा प्रसन्न हो जैसे cö 'viw ?as wa'ya 'हरिण' भाग गया था (परन्तु मैंने उसे पकड़ लिया)। इस प्रकारता को मैंने impotential 'असमर्थी' नाम इसलिए दिया है कि यह क्रियाशीलता तथा प्रयत्न-विषयक कथनों को असमर्थता की अभिव्यंजकता प्रदान करता है। प्रत्याशी में यह अनुवाद को 'will' 'गा, गे, गी' से बदल कर 'प्रयत्न करता है' बना देता है: जैसे ma'na? as wïni' máni लड़की नाचने का प्रयत्न करती है (परन्तु नाचने में सफल नहीं हो पा रही है)। फिर भी प्रत्याशी असमर्थी (प्रकारता) यह संकेत नहीं देता कि बाद के प्रयत्न सफल नहीं होंगे। जब प्रत्याशी किसी वृत्तान्त के भूतकाल का संकेत देता है तो इसकी असमर्थी प्रकारता अतीत के उस हताश प्रयत्न का बोध कराती है जो वास्तव में घटित नहीं हुआ: जैसे ?as wa' ya' ni उसने 'भागने का प्रयत्न किया था' किसी कैदी के विषय में जो भागने में सफल नहीं हो सका। जब असमर्थी प्रकारता किसी आश्रिता वृत्ति में होता है (अर्थात् जब यह हेतुमद् या परासम्बन्धी हो तथा दूसरा उपवाक्य प्रत्याशी) तो वास्तविकता कदापि अनुभूत न होने वाली सैद्धान्तिक भूतकालिक सम्भावना के रूप में और भी अधिक सूक्ष्म हो जाती है। अतः हमारी वस्तुस्थिति के विपरीत परि-

स्थिति होपी में असमर्थी प्रकारता होती है जैसे ?as nim-ϵ? on qa' mï' nat. tïwani 'यदि वह घर गया होता तो उसने नदी को देखा होता' (जब वह कभी अनुभूत न होने वाली घर जाने की योग्यता में था तो तब वह नदी देखने की अकिंचन प्रत्याशा में था)। ऐसी स्थिति में असमर्थी के साथ अनुमोदनात्मक भी जोड़ा जा सकता है विशेषत: यदि वृत्ति परासम्बन्धी है तो जैसे Kir ?as nima-q so'?on qa mo' ywi'? aw piti'nt. (यदि वह घर गया होता तो उसे मुखिया मिल गया होता) हमारे 'although'यद्यपि But 'परन्तु', Yet 'तथापि' आदि, दो विरोधी प्रवृत्तियों के बीच एक प्रकार के तनाव की ओर इंगित करते हैं। होपी भाषा बिना गलती के इस विषय में भेद स्पष्ट करती है कि आया इनमें से किसी एक प्रवृत्ति ने दूसरी को निष्फल बनाया है (असमर्थी अर्थ) या विरोध इस प्रकार का है जिसे Kϵ, Sϵn या किसी अन्य ढंग से दिखाया जाए। अत: संगामी में nï? ?as qati-Kay mayi' 'यद्यपि मैं बैठा हुआ था फिर भी मुझे थकान अनुभव हो रही थी।' परासम्बन्धी में ?as wa' ya'-qni?a 'यद्यपि वह भाग गया फिर भी मैंने उसे पकड़ लिया।' दूसरी ओर ?as का प्रयोग ऐसे वाक्य में ठीक नहीं होगा, 'यद्यपि वह भाग रहा था फिर भी गा रहा था' क्योंकि यहाँ किसी भी प्रवृत्ति ने दूसरी के प्रयोजन को निष्फल नहीं बनाया है, इस विषय में होपी केवल wáriki'w-Kay tá wá lá wi, 'जब वह भाग रहा था तो गा रहा था, या सम्भवत: इसमें हल्के से आश्चर्य को प्रकट करने वाला कोई तत्त्व जोड़ दे। आनुक्रमिक रूप में '?as pitï'-t qa' wïni'ma 'यद्यपि वह पहुँच गया था फिर भी वह नाचा नहीं', ?as का अर्थ है कि आने का कार्य नाचने के लिए था, यदि ऐसा न होता तो वह आता भी नहीं।'

भारोपीय से अभिरचना विषयक वैषम्य इसी सम्बन्ध में है जबकि ये सारी प्रकारताएं भारोपीय विध्यर्थक (Subjunctive) से मिलती जुलती हैं, इनमें से एक भी इससे तालमेल नहीं रखती। होपी भाषा हमारे विध्यर्थक का विभिन्न प्रकार से अर्थ लगाती है। वे अर्थ उन सम्बन्धों की मान्यता के अनुसार होते हैं जिनके विषय में हम भाषाई ढंग से अभिज्ञ नहीं हैं। अत: (If I were King) 'यदि मैं राजा होता' में were "होता" असमर्थी है; (to see if he were brave) 'यह देखने के लिए कि वह वीर था' में were 'था' अनिश्चयार्थक है। 'यद्यपि वह जिद्दी हो' (Though he be stubborn) में "be" (हो) परामर्शी है, 'यदि वह सही हो' (If he be right) में "be" 'हो' अनुमोदनात्मक है। या यूं कहा जाए कि, आखिर होपी अभिरचना भारोपीय से इतनी भिन्न है क्या? यह एक

6. संक्षेप में (might-as-well- not-have-been) का क्षेत्र सकारात्मक तथा नकारात्मक के बीच की वह मध्य-भूमि है जिसका प्रतिनिधित्व अविध्यर्थक करता है। जिसे 'हम हो-सकता था' कहते हैं वह होपी के इस क्षेत्र का एक भाग मात्र है। यह प्रत्याशा (सामर्थ्य, प्रवृत्ति, सम्भावना, इच्छा) है जो कि नहीं भी हो सकती थी।

सत्य है कि सामान्य रूप से ऊतो-अज्तेकन भाषाएँ तथा विशेष रूप से होपी अमरीकी इण्डियन भाषाएँ व्याकरण की प्रकृति के कारण असामान्य रूप में भारोपीय के संस्मरण हैं। क्या यह सम्भव हो सकता है कि भारोपीय के प्राचीन रूपों में, सम्भवतः हित्ती में वाक्य विन्यासात्मक रचनाएं मिल जाएँ जिनका विश्लेषण कुछ कुछ होपी की रूपरेखा पर किया जा सके?

अन्य प्रकारक

होपी में बहुत से ऐसे प्रकारक भी हैं जिनके प्रयोग प्रकारता व्यवस्था से कुछ कम निश्चित रूप में रूपात्मक हैं। उनकी अभिव्यक्ति की विशाल श्रेणी का निदर्शन निम्नलिखित रूपों द्वारा किया गया है। ?ïra स्मृति, स्मरण करना, स्मरण के अनुसार बात इस प्रकार है, Pisnïnti'q: सम्भावना, यथोचित प्रत्याशा, तर्कसंगत पूर्वानुमान या आशा—'फर्ज़ करके' तथा प्रत्याशी में हमारे 'यदि सब कुछ ठीक चलता रहा तो' की तरह। náwïs बिना किसी बाध्यता के स्वेच्छापूर्वक किसी कार्य को करने की कर्त्तव्य भावना, अंग्रेजी के "ought to" 'करना कर्त्तव्य है' या "should" (करना) चाहिए से भिन्न है, क्योंकि होपी की इस अभिव्यक्ति में कार्य किए जाने की अधिक बड़ी प्रतिज्ञा है, और इसका कभी कभी "has to" 'करना पड़ेगा' अनुवाद किया जा सकता है, परन्तु मेरे सूचक के अनुसार यह हमारी can't very well refuse to ('करने के लिए अच्छी तरह इन्कार 'नहीं कर सकता') के समान है। PϵV: लगभग, प्रायः, PϵVKϵ सम्भवतः लगभग, लगभग (कर सके) pi परिस्थितियों की स्वीकृति 'वे जैसे भी हैं' या 'जैसी होनी चाहिएं', आविवाद्य तथ्य, अनिवार्यता, कभी कभी यह अंग्रेजी शब्द बलाघात के सदृश होती है, जैसे pam piti' ni 'वह पहुंच जायेगा' pi' pam pitini वह पहुंच जायेगा; 'वह कम से कम पहुंच तो जायेगा।' यह हमारे After all 'आखिरकार' के भी समकक्ष है तथा इससे भी अधिक कन्धों को झटका देने के समान है जबकि pay pi' "पहले ही' में pi अपरिवर्तनीय वास्तविकता के प्रति दार्शनिक समर्पण है, pay pi'wa ya 'वह भाग गया और यह ऐसा ही है।' नकारात्मक pi' qa' तथा आवश्यकतापरक so'? on pi' qa' के साथ संयोग भी बहुत सामान्य है।

ta' tam ऐसी आवश्यकता जिसके प्रति कोई व्यक्ति आत्म-त्याग की भावना सहित आत्मसमर्पण करे; must 'अवश्य' या may as well (अवश्य करेगा भी) इस भावना से ओत प्रोतः का अर्थ है कि कर्ता अपने स्वार्थ तथा पसन्द का त्याग कर रहा है।

tïr : इच्छा जिसमें कार्य करने का स्पष्ट संकल्प नहीं, 'करना चाहता है' या 'करने की इच्छा रखता है' से भी अधिक अस्पष्ट, 'करने की सोच रहा था' के अधिक निकट 'करना चाहेगा।'

जिस सीमा तक 'वृत्तिपरक भावना' का वैभिन्य है तथा (जिस सीमा तक) इसकी प्रयोग-चातुरी विभिन्न भाषाओं में स्पष्ट रूप से भिन्न है परन्तु इन क्षेत्रों में जितनी दूर तक होपी भाषा गई है उस सीमा तक सम्भवतः अन्य भाषाएँ नहीं गई हैं।

भाषा : व्यवस्था की धारणा एवं योजना

सम्पादकीय टिप्पणी : व्होर्फ ने 1938 में यह तालिका तथा संलग्न रूपरेखा पाण्डुलिपि के रूप में अपने चुने हुए साथियों में घुमाई थी। यह याले विश्वविद्यालय के मानवशास्त्र विभाग के George P. Murdock तथा उसके सहयोगियों द्वारा मानवशास्त्र के क्षेत्र-कार्यकर्त्ताओं के निर्देशनार्थ तैयार की गई (सांस्कृतिक सामग्री की रूप रेखा) Outline of cultural materials के परिशिष्ट के रूप में लिखी गई थी, तथा इसे संक्षेप में उस रूप-रेखा का Language खण्ड कहा जाता है।

व्होर्फ ने अपने लेखों में कई स्थानों पर भाषाओं के विश्व-सर्वेक्षण की वाञ्छनीयता की चर्चा की है। निस्सन्देह इस तालिका का उद्देश्य यह था कि विशिष्ट भाषाओं के विषय में सूचना एकत्रित करने के लिए एक ऐसा प्रस्तावित मानक ढांचा तैयार किया जाए जिसकी भविष्य में इस प्रकार के सर्वेक्षण करने में आवश्यकता पड़ सकती है।

पाठक का ध्यान पहले पृष्ट154की तालिका की ओर आकर्षित किया जाना चाहिए जो व्होर्फ द्वारा कल्पना की गई सम्पूर्ण योजना को प्रदर्शित करती है। परवर्ती रूपरेखा, जो तालिका के "अर्थविज्ञान खण्ड के विस्तार" को प्रस्तुत करती है, इस तालिका की संलग्निका मात्र है, यद्यपि इसमें अधिकांश भाषाई सामग्री है। इस सामग्री को उस मूल पाण्डुलिपि में केवल छोटे मोटे परिवर्तन एवं संशोधन करके छाप दिया गया है जिसे शिकागो विश्वविद्यालय के प्रोफेसर नार्मन मेक्कवोन ने जुटाया था।

[तालिका के अर्थविज्ञान खण्ड का विस्तार]

(क) वाक्य

1. वाक्यान्त अंकन: अनुतान के द्वारा (एक अभिरचना, कई अभिरचनाएँ)

    विराम रूप

    विशिष्ट अंकन तत्त्व

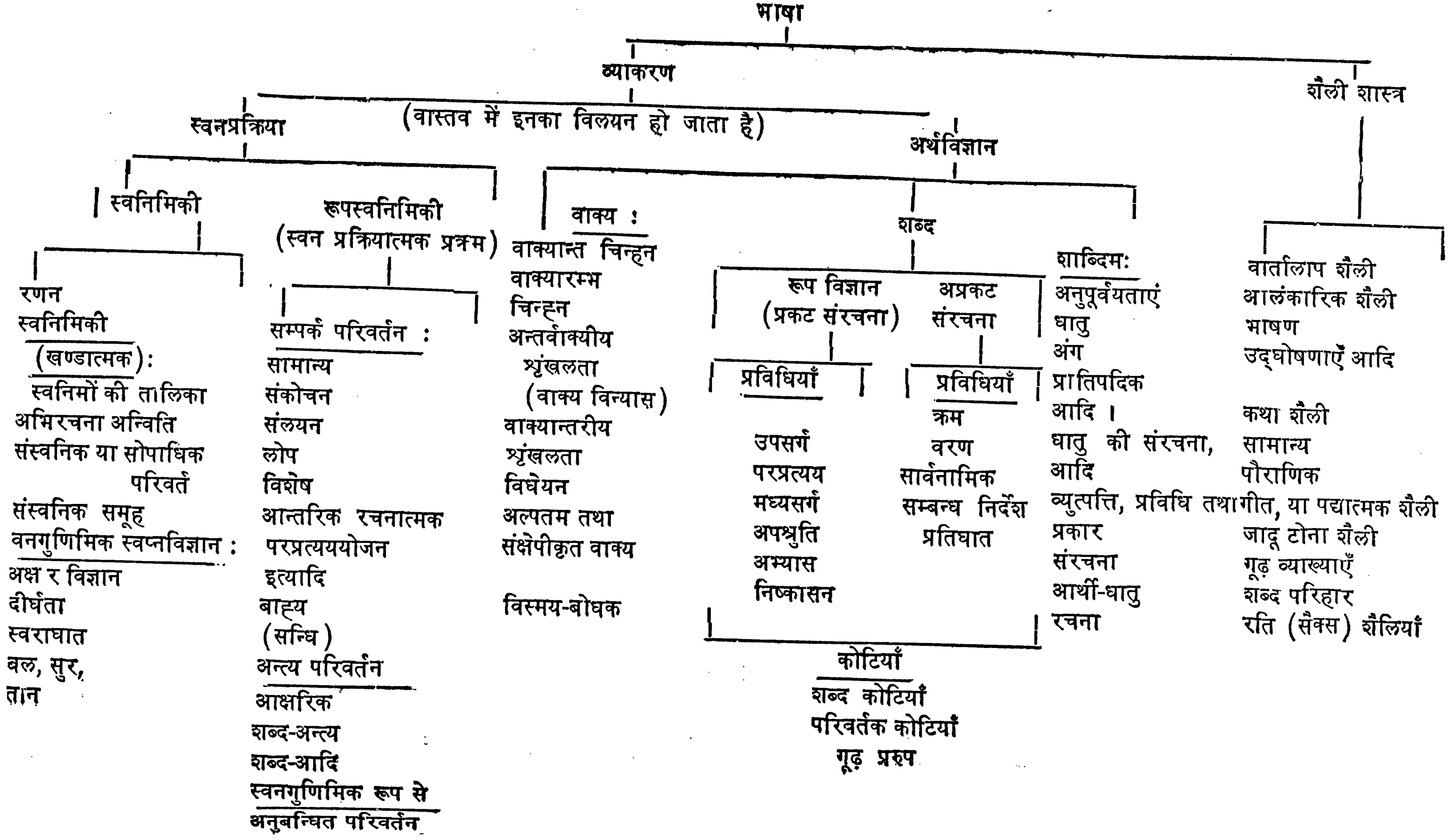
    शब्दक्रम

भावात्मक अंकन। वाक्यान्त का अंकन करने वाली अनुतानें या अन्य तत्त्व तथा इनका भी द्योतन करने वाले, जैसे बल, अभिरुचि, आश्चर्य, आशंका, परिप्रश्न, विश्वास की दृढ़ता, भावात्मक लघ्वीकरण या अभिवर्धन आदि।

2. वाक्यारम्भ अंकन: शब्दक्रम द्वारा, जैसे क्रिया सदा पहले आएगी आदि।

भाषा

योजना तथा व्यवस्था की धारणा



वाक्य-प्रारम्भक
अनुतान
अन्य
अनुपस्थित

3. अन्तर्वाक्यीय शृंखलता (वाक्य विन्यास) (वाक्य के अन्दर ही एकीकरण करने वाला नियम) शब्दक्रम। शब्दक्रम का विस्तार, उद्देश्य-विधेय क्रम, सन्निकट क्रम (विशेषक पहले, विशेषक बाद में, मिश्रित), व्यवहित क्रम (समस्त पद प्रवेश); जैसे अंग्रेजी विभक्त भावार्थक संज्ञा।

प्रकार्यात्मक कोटियाँ (जैसे, संज्ञाएँ, क्रियाएँ, विधेयक आदि) विभिन्न प्रकार से अंकित। कोटियों को 'ख' 'शब्द' के नीचे देखिए।

सम्बन्धों का अंकन, जैसे कारकों द्वारा, पूर्वसर्गों या परसर्गों द्वारा, क्रिया निर्देशकों द्वारा (अर्थात् क्रिया—लक्ष्य, कारण-कार्य, सकर्मकों, प्रयोगात्मकों के के विभिन्न अंकन) et al

सन्निवेशन (क्रिया के अन्तर्गत सम्बन्ध-निर्देश, या वाक्यरचना का अन्य संकेत शब्द)

सार्वनामिक समावेशन या निर्देश, संज्ञा समावेशन

निमित्तवाची और करणवाचक तत्त्व, तथा शरीरावयव तत्त्व, इत्यादि।

'क्रिया पद', एक केन्द्रक वाक्य, (उदाहरणार्थ नवाहो भाषा में)

एकशब्दीय वाक्य (बहुसंश्लेषण का एक रूप, जिसमें क्रिया अधिकांश वाक्य का समावेश कर लेती है)

वाक्यगत अनुरूपता, अर्थात्, रूप सम्बन्धी वर्ग की अनुरूपता, जैसे लिंग, वचन; में अनुरूपता आदि (बाँटू इसका उत्कृष्ट उदाहरण है)।

4. वाक्यान्तरीय, शृंखलता (बाह्य वाक्य-विन्यास) (एक वाक्य को दूसरे वाक्य के साथ जोड़ना)

संयोजकहीन-वाक्यविन्यासात्मक (समन्वय कारक)
वाक्यों की सन्निधि
समन्वयकारी तत्त्व
स्वन गुणिमिक (अनुतानें, आदि)
उपशाब्दिक (प्रत्यय, आदि)
निपात (पूर्वाश्रयी या शब्द, जैसे='और')
आश्रित वाक्य-विन्यास (अधीनता सूचक) (आश्रित उपवाक्यों का प्रयोग)
क्रम
स्वनगुणिमिक का अर्थ है (अनुतान आदि, जैसे अंग्रेजी अर्धविराम अनुतान)
उपशाब्दिक अंकन, जिसमें विशेष क्रियारूप सम्मिलित हैं—
क्रियार्थक संज्ञाएँ, अधीनता सूचक निपात, समुच्चय बोधक।

5. विधेयन

प्रविधियाँ

शब्दक्रम या वाक्य अभिरचना (अयोगात्मक प्रकार)

उपशाब्दिक विधेयक (अर्थात् प्रत्यय आदि, जिसके साथ वे जुड़ते हैं, उससे "क्रिया" की रचना करते हैं। यहाँ पूरी "क्रिया" नहीं, अपितु प्रत्यय ही विधेयक हैं)

विधेयक शब्द-श्रेणियाँ (क्रियाएँ तथा बहुत प्रकार की अर्धक्रियाएँ; विधेयात्मक शक्ति शाब्दिक अर्थ के साथ-मिलाकर एक कर दी जाती हैं, जैसे 'eat' (खाना); 'kill' (मारना), 'stand' (खड़े होना)

शब्द 'ख' के नीचे कोटियाँ देखिए।

केवल क्रियात्मक वाक्य

क्रियात्मक तथा नामिक वाक्य—नामिक वाक्य जो क्रम अभिरचना, उपशाब्दिक रूप इत्यादि द्वारा निर्दिष्ट किए जाते हैं।

प्रचालक (विधेयन के लिए विशेषीकृत शब्द, अन्यथा शाब्दिक अर्थ 'शून्य', [जैसे अंग्रेजी में 'be, become, cause, do'] या अस्पष्ट अर्थ [make, turn, get इत्यादि])।

सहायक क्रियाएँ

प्रविधियों का मिश्रण

विधेयन की कोटियाँ

संयोजक (be) (हो)

सामान्य

अन्तर्निष्ठ (स्पैनिश Ser), या आत्मनिष्ठ वस्तुनिष्ठ (स्पैनिश estar)

सामान्य क्रियार्थक जिसमें निम्नलिखित सभी सम्मिलित हैं:

- प्रेरणार्थक
  - कर्तृ-प्रेरणार्थक
  - अकर्मक-भाववाच्य
  - सकर्मक
- अकर्तृ-प्रेरणार्थक
  - अकर्मक
  - सकर्मक
- अप्रेरणार्थक
  - स्थैतिक
  - परिणामवाची
  - कर्मवाच्य

अन्य (उपरिलिखित का विवरण भाषा की अभिरचना के अनुसार भिन्न प्रकार से दिया जा सकता है, जैसे—करणात्मक क्रिया, आदि)

6. अल्पतम और संक्षेपीकृत वाक्य
संक्षेपीकृत वाक्य
भूतलक्षी रूप, जैसे 'I did,' 'Will you'? ।
लुप्तरूप जैसे But tomorrow—।
सामाजिक सूत्रात्मक प्रयोग ('Thank you, hello, please, आदि) ।
अल्पतम वाक्य
सम्बोधन प्रकार जैसे (John ! Mother !)
आज्ञार्थक प्रकार (Come !) 'आओ' !
अन्य
'Yes' तथा 'No'
विस्मयबोधक
साधारण ('Oh, Ouch, Alas' आदि) ।
"शपथवाची शब्द"
विशेष सांस्कृतिक बल से युक्त अन्य प्रकार

(ख) शब्द (शब्द वाक्य के अंश के रूप में)

1. रूप विज्ञान (प्रकट संरचना)
प्रविधियाँ (प्रकट अंकन की) (यदि सम्भव हो तो मात्रा का उल्लेख कीजिए जैसे हल्का, सामान्य, प्रचुर, विपुल)
पूर्वप्रत्यय योजन
परप्रत्यय योजन
मध्यप्रत्यय योजन
स्वरात्मक अपश्रुति
प्रातिपदिक के एक स्वर का परिवर्तन, दो या अधिक का परिवर्तन अपश्रुति का लोप, दीर्घता परिवर्तन, कम्पनशील
व्यञ्जनपरक अपश्रुति
बलाघात और (या) तान परिवर्तन
द्वित्व (पूर्ण, आंशिक, प्रारम्भाक्षरिक, अन्त्याक्षरिक, स्वरात्मक, प्रक्षिप्त अंश सहित द्वित्व)
आगमात्मक अभ्यास (सामान्यत: जिसे द्वित्व कहा जाता है)
स्वरागमात्मक, प्रारम्भिक (tak–atak), अन्त्य (lem–leme)
व्यञ्जनागमात्मक, प्रारम्भिक (lem–mlem), अन्त्य (lem–leml) मिश्रित (जैसे lem–lemel)
स्वर-संगति अन्य प्रविधियों के साथ
कोटियाँ, रूपविज्ञानात्मक। देखिए नं० ३ कोटियाँ

2. अप्रकट संरचना और सम्बन्ध

प्रविधियाँ

वरण* (जैसे John, come, dog, kill के बीच अन्तर)

सर्वादेश (जैसे go, went)

क्रम (वाक्यांश या वाक्य में)

सार्वनामिक सम्बन्ध निर्देश (जैसे अंग्रेजी में लिंग श्रेणी का निर्देश करने के लिए प्रयुक्त)

सम्बन्ध-निर्देश सूचक शब्द द्वारा जो सर्वनाम न हो प्रतिघात (शब्द जो अप्रकट सम्बन्धों द्वारा अन्य शब्दों के वरण का नियन्त्रण करता है, जैसे नवाहो भाषा में वृत्ताकार बनाम लम्बी वस्तुओं के नाम, क्रिया रूपों की प्रकृति के वरण का नियन्त्रण करता है)

कोटियाँ, अप्रकट देखिए न० 3 कोटियाँ

3. कोटियाँ

प्रकट या अप्रकट हो सकती हैं। यदि सम्भव हो तो यह भी बताइए कि कौन सी और किस प्रकार निर्दिष्ट होती है या मिलाई जाती है, जैसे, क्रियाएँ, परप्रत्यय योजन, संज्ञाएँ, शुद्धवरण; संज्ञाएँ, अन्य अंकन प्रणाली का अभाव।†

I–शब्द कोटियाँ

(क) प्रकार्यात्मक—शाब्दिक

संज्ञा

क्रिया

विशेषण

क्रिया विशेषण

इनमें से एक भी नहीं (यह याद रखना चाहिए कि इनमें से कोई सी या सभी प्रकारों की सत्ता का न होना सम्भव है, जैसे प्रत्येक धातु में लगने वाले क्रिया-करण के प्रत्यय के बिना क्रियारूप की सिद्धि असम्भव हो सकती है। अतः यहाँ क्रियाओं की कोई श्रेणी नहीं है केवल एक "परिवर्तक कोटि" हैं (q. v.) क्रियाकरण की)

(ख) प्रकार्यात्मक

सर्वनाम (पुरुषवाचक, संकेतवाचक, निमित्तवाची के प्रकार बताइए,—द्योतित विचारों का निर्देश कीजिए—प्रश्नवाचक, निषेधात्मक, अनिश्चयवाचक, सम्बन्धवाचक आदि)

*** वरण : अर्थात् शुद्धवरण-वरण अन्य शब्द कोटियों के निर्देश के साथ भी आता है। शुद्धवरण के लिए अप्रकट शब्द कोटियों की सत्ता अपेक्षित है। (q. v.)**

† जहाँ सम्भव हो सामान्यतः मिलने वाली कोटियों के परिहार का उल्लेख कीजिए, जैसे बहुवचन-रहित, लिंग-रहित।

निपात (वाक्य का निर्देशन या जोड़ने के लिए प्रयुक्त शब्द देखिए अन्त्य-निर्देशक, आरम्भ-निर्देशक (आरम्भी) पूर्व एवम् परसर्ग, संयोजक, वृत्तिवाचक निपात, विधेयक, प्रचालक आदि।)

उपपद देखिए II ग निश्चायक—अनिश्चायक

(ग) सम्बन्ध निर्देश कोटियाँ (जिसमें अनुभव, विभिन्न प्रकार की वस्तुएँ स्थिति या क्रिया का वर्गीकरण निहित होता है।)

लिंग (बहुत से विभिन्न प्रकार, पुल्लिग, स्त्रीलिंग, चेतन, अचेतन, पुरुषवाचक, तर्कसम्मत, अतर्कसम्मत, समेकित आदि।)

बहु सम्बन्ध निर्देश कोटियाँ (बहुत सी लिंग जैसी श्रेणियाँ, जिनका अर्थ प्रायः अविवेच्य होता है, जैसे बाँटू)

सामाजिक स्थिति तथा पदवी श्रेणियाँ

आकृति श्रेणियाँ, (जैसे, नवाहो, हैदा) (Haida)

उपस्थिति—अनुपस्थिति

गोचरता

स्थान तथा विस्तार श्रेणियाँ

(घ) शुद्ध रूपात्मक श्रेणियाँ, जैसे

(ङ) पुरुषवाचक नाम श्रेणियाँ, लिंग, आयु, आदर, आदि।

II–**परिवर्तक कोटियाँ** (ये शब्द श्रेणियों को उनमें ही सीमित नहीं करती हैं; ये किसी एक श्रेणी को या श्रेणियों को जो पहले ही दूसरी विधियों से सीमित कर दी गई हैं, उनमें विशेषाधान करती हैं)।

(क) सामान्यतः उपयोज्य

विधेयन

क्रियाकरण (विधेयन 'be' होना के अतिरिक्त)

"नामीकरण" या संज्ञा-निर्देशन

निरपेक्षिक प्रत्यय, नाम निर्देशक उपपद, शून्य अंकन, इत्यादि

विशेषणीकरण

(ख) मिश्रित उपयोजन—कभी कभी साधारणतया उपयोजित तथा कभी विशेष रूप से उपयोजित।

संख्या (इस प्रकार 1, 2, 3, कई, बहुत, बहुवचन)

समुदायवाचकता तथा वितरण

अवधि

काल निर्देशन (विस्तारण—अवधि)

समय या काल

तुलना, जैसे विशेषणों की

सम्बन्ध निर्देश कोटियों को भी देखिए, ये ही विचार परिवर्तक कोटियों पर भी लागू किए जा सकते हैं।

(ग) विशेष उपयोजन

प्राय: क्रियापदों पर लागू किया जाता है (या क्रियाकरण के साथ)

विधेयन की कोटियाँ, q. v. क **वाक्य** में देखिए

वाच्य : कर्तृ कर्म इत्यादि

विश्लेषण : सकर्मक, अकर्मक, कर्म (वाच्य और विश्लेषण मिल जाते हैं) ।

पक्ष (अवधि, विस्तारण, इत्यादि जैसे काल बिन्दु निष्ठ, आवधिक, पूर्णतावाची, अपूर्णतावाची, आरभमाण, सांतत्यबोधक, घटमान, पौन:पुनिक, आम्रेड़ित, अभ्यासी (Usitative) आदि)

अतिवाचक

काल व्यवस्थाएँ

प्रकार (वृत्ति) जैसे निश्चयार्थक, संभावनार्थक, अनुमिति, संशयवाचक, इच्छार्थक, विध्यर्थक, अनुज्ञापक, अनुमतिवाचक, विरोधवाचक, et al: स्थिति, जैसे, प्रश्नवाचक, निषेधात्मक, उद्धरणात्मक, अवधारक, विस्मय-सूचक, तथा अन्य प्रभावी रूप

सम्बोधन के रूप, जैसे, आज्ञार्थक, निषेधात्मक, (नकारात्मक आज्ञार्थक); उद्बोधक, इत्यादि

क्रियार्थक संज्ञाएँ या अधीनता सूचक (देखिए क 4 के अन्तर्गत)

प्राय: संज्ञा शब्दों पर लागू होता है (अथवा नामीकरण के साथ)

स्थिति (अर्थात् अधिकृत, अनधिकृत, सार्वनामिक रूप से अधिकृत रूप)

कारक (विभिन्न कारक)

विशेषणीकरण (सामान्य में भी दिए गए हैं)

निश्चयवाचक—अनिश्चयवाचक (उपपद, आदि)

अंशसूचक (कुछ या कोई)

सामान्य कथन, जैसे, 'एक आदमी, एक औरत, एक कुत्ता' इन शब्दों के विरोध में 'आदमी, औरत, कुत्ता',

संतत, जैसे 'छड़ी, धातु का टुकड़ा' इनकी तुलना में 'लकड़ी, धातु' एकलकरण, जैसे 'छड़ी'

अन्य—देखिए निर्देश कोटियाँ जिनमें ये मिलकर एक हो जाती हैं।

(घ) प्रभावी परिवर्तक कोटियाँ (एक विचार की अपेक्षा वक्ता की भावनाओं को व्यक्त कीजिए)

प्रभावी लघ्वीकरण (लघुतावाची)

प्रभावी प्रवर्धन

सम्मान सूचक रूप

बल, विस्मयादि बोधक, तथा अन्य रूप—कौन सी शब्द श्रेणियों पर प्रभावी परिवर्तक कोटियाँ लागू होती हैं ?

III–**गूढ़ प्ररूप**। अप्रकट शब्द कोटियाँ जिनका सूक्ष्म अर्थ केवल प्रतिघातों द्वारा अंकित किया जाता है। सर्वेक्षण में बहुत स्पष्ट दशाओं के अतिरिक्त इसे छोड़ दीजिए, क्योंकि गूढ़ प्ररूप के निश्चय के लिए प्राय: किसी भी भाषा के गहन अध्ययन की आवश्यकता होती है।

(ग) शब्दिम (शब्द या प्रातिपदिक शब्दकोष की एक इकाई के रूप में, और विश्लेषित अथवा वाक्य शब्दों से निकाले गए अंश के रूप में)।

1. शब्दगत अनुक्रम

(क) भाषा में धातुओं तथा साधित रचनाओं (प्रातिपादिक, प्रकृति, अंग) में अन्तर होता है। ऐसी अवस्था में अल्पतम अखण्डनीय रूप को धातु कहा जाता है।

(ख) भाषा के अन्तर्गत शब्दगत तत्त्व का एक ही प्रकार या एक मुख्य प्रकार होता है। ऐसी अवस्था में ऐसा तत्त्व प्राय: प्रातिपदिक कहलाता है, जैसे, अल्गोन्कियन, याना में प्रातिपदिक। यदि सम्भव हो तो भाषा की विशेषताएँ इस प्रकार से बताइए।

(ग) शब्दिम शब्द के एकरूप हो सकती है (वाक्य में शब्द) शब्दिम सदा शब्द से भिन्न। शब्दिम वाक्य में प्रयोग होती है—

1. रूपात्मक तत्त्वों के साथ
2. बहुश्लिष्ट रचना में

2. **धातु और प्रातिपदिक प्रकार—**

बहुरूपात्मक (धातु और प्रातिपदिक के लिए कोई विशेष रूप नहीं—तथापि, यह दुर्लभ है; अपर्याप्त विश्लेषण पर आधारित आविर्भाव, जैसे, जहाँ तक धातुओं का सम्बन्ध है अंग्रेजी भाषा बहुरूपात्मक नहीं है)

एकरूपात्मक। एक विशिष्ट धातु प्रकार, या एक या दो सम्बद्ध प्रकार, जैसे, व्यञ्जन-स्वर, व्यञ्जन-स्वर-व्यञ्जन, इत्यादि नियन्त्रित। एक ऐसा प्रकार जिसे कुछ प्रतिबन्धों सहित रूप की स्वतन्त्रता प्राप्त है, जैसे, धातु या प्रातिपदिक के अन्दर ही संयुक्त व्यञ्जनों की स्थिति और प्रकार पर नियन्त्रण, जैसे अंग्रेजी। यदि सम्भव हो तो संयोगों पर प्रतिबन्धों का निर्देश भी कीजिए।

3. **व्युत्पत्ति** (गौण शब्दिमों की रचना, अर्थात् धातुओं से शब्दों के प्रातिपदिक)।

प्रविधियाँ। प्रकट। ये रूपात्मक प्रविधियों के समान है जैसे पूर्व-प्रत्यययोजन, परप्रत्यययोजन, इत्यादि

अप्रकट प्रविधियाँ—एक विभिन्न प्रकट श्रेणी में बदल देना तथा प्रकट अंकन के साथ अर्थ में परिवर्तन, जैसे '(to) stand, (a) stand (position), (a) stand (pedestal)'

व्युत्पत्ति की कोटि—कोई नहीं, हल्का, सामान्य, महान, सञ्चयी (साधित पर साधित का जोड़ते चले जाना, जैसे, कृत्रिम, विद्वत्तापूर्ण शब्द 'honorificabilitudinity'; यह अज़तेक में पाया जाता है, ग्रीक और संस्कृत में कम, शायद माग्यार (Magyar) और तुर्की में भी)

व्युत्पत्तिमूलक प्रकार †

क्रिया जैसी प्रकृतियों से संज्ञा प्रकार

क्रियावाचक और स्थितिवाचक संज्ञाएँ, भाववाचक संज्ञाएँ

कर्तृ संज्ञाएँ—कर्त्ता की संज्ञाएँ

करणात्मक संज्ञाएँ—करण की संज्ञाएँ

स्थान संज्ञाएँ

Nomen Patientis { किसी प्रभावित की संज्ञा / उत्पन्न स्थिति की संज्ञा }

विशेषण संज्ञाएँ

अन्य—बहुत सी संभावनाएँ होती हैं

संज्ञा जैसी धातुओं से क्रिया प्रकार

सक्रियकरण की क्रिया, अधिकार या आधिपत्य क्रिया, आदि

4. रचना

समास रचना (तत्त्वत: द्विचर मिश्रण; दो मुख्य भाग अलग भी हो सकते हैं)

विशेषक प्रकार। क्या विशेषक पहले आता है या बाद में ?

प्रकार: संज्ञा-संज्ञा, क्रिया-संज्ञा, संज्ञा-क्रिया, आदि।

समानाधिकरण प्रकार, जैसे, 'दिक्-काल' 'दिक्-कालसम्बन्ध में'

बहुसंश्लेषणात्मक रचना

क्रम के नियमानुसार बहुत से प्रातिपदिकों की रचना

जैसे अलगोंकियन में

आगे सम्भावना यह है: प्रातिपदिक (शब्दिम) और परिवर्तक कोटियों के चिन्हकों में कोई अन्तर नहीं। इस विषय में परिवर्तक कोटियों के अन्तर्गत देखिए

मिश्रित प्रकार, जैसे, "अन्तरायित संश्लेषण"

अथबास्कन में—छोड़ा भी जा सकता है क्योंकि प्राय: इसका विश्लेषण कठिन होता है।

अपृथक् करणीय शब्दिम—कुछ, बहुत सी, या सभी शब्दिम

5. अर्थ सम्बन्धी धातु-संरचना

बहुत या कम अस्पष्ट अंशों और अर्थों में विश्लेषण योग्य धातु,

---

† ये उसी में मिल जाएँ या रूपात्मक कोटियों के तद्रूप हो जाएँ, और कुछ भाषाओं में यह भाग शब्दिम से शब्द में परिवर्तित किया जाता है: रूपविज्ञान।

जैसे tread, track, trip धातु-केन्द्रक (जैसे tr) और धातु-निर्धारक।

स्वनिमिक प्रतीकवाद (ध्वनि और भाव में संवाद) अर्थ के एक प्रकार के साथ उसी स्वनिम या स्वनिम समूह की पुनरावृत्ति अर्थ सम्बन्धी और प्रभावी परिणामों के लिए स्वनिमों का प्रकट––संयोजन (जैसे कुछ उत्तर पश्चिमी तटवर्ती भाषाओं में बचकाने रूप) धातुएँ पर्याप्त अन्तर्मूलशब्दीय विश्लेषण के लिए संवेदनशील।

भाषा के साथ अभ्यासगत विचार तथा व्यवहार का सम्बन्ध*

"मानव न तो केवल वस्तुपरक संसार में रहता है, और जैसा साधारणतया समझा जाता है, न ही केवल सामाजिक क्रियाओं के संसार में ही रहता है; अपितु वह उस विशेष भाषा की दया पर निर्भर करता है जो उस समाज में अभिव्यक्ति का साधन बन चुकी है। यह कल्पना करना काफी बड़ी भ्रान्ति है कि मनुष्य भाषा के प्रयोग के बिना ही निश्चित रूप से वास्तविकता के साथ समझौता कर लेता है, और यह कि भाषा संचारण या चिन्तन की विशिष्ट समस्याओं को सुलझाने का केवल प्रासंगिक साधन है। तथ्य की बात यह है कि 'वास्तविक संसार' बहुत अधिक सीमा तक अचेतन रूप में एक वर्ग की भाषाई आदत पर निर्मित होता है--हम सुनते हैं, और देखते हैं, तथा जैसा कुछ अधिकतर हम अनुभव करते हैं वह सब इसीलिए है कि हमारे वर्ग की भाषाई आदतें अर्थ निर्णय के कुछ विकल्प पहले ही निश्चित कर देतीं हैं।"

--एडवर्ड सपीर

सम्भवत: इस प्रस्ताव पर व्यापक सहमति प्राप्त हो जाएगी कि शब्दों के प्रयोग की स्वीकृत अभिरचना प्राय: एक निश्चित चिन्तन पद्धति तथा व्यवहार के विशेष रूपों सें पूर्ववर्ती होतीं है। परन्तु जो व्यक्ति अपनी सहमति प्रकट करता है उसें अक्सर ऐसे वक्तव्यों में एक ओर दार्शनिक तथा विद्वत्तापूर्ण शब्दावली की मोहिनी शक्ति की निरर्थक सी मान्यता दिखाई पड़ेगी, या दूसरी ओर नारेबाजी और सामूहिक शोर दृष्टिगोचर होगा। केवल इसी सीमा तक अवलोकन करने वाला व्यक्ति निश्चय ही उस महत्त्वपूर्ण तथ्य से चूक जाता है, जिसे सपीर ने भाषा; संस्कृति एवं मनोविज्ञान के अन्त:सम्बन्ध के विषय में देखा और जिसे इस प्रारम्भिक उद्धरण में अभिव्यक्त किया। भाषा के इन विशिष्ट प्रयोगों के विषय में हमें भाषा के उस प्रभाव को, जो व्यक्तिगत, अथवा सांस्कृतिक जैसी अन्य गतिविधियों पर पड़ता है--मान्यता प्रदान करने की इतनी आवश्यकता नहीं है जितनी भाषा की सामग्री को व्यवस्थित करने की, निरन्तर विधियों, तथा इस तथ्य के साधारणतम दैनिक विश्लेषण की आवश्यकता है।

* Reprinted from pp-75-93. Language, culture, and personality, essays in memory of Edward sapir. edited by Leslie spier (Menasha, wis:-sapir Memorial Publication Fund, 1941) **यह लेख सन् 1939, ग्रीष्म में लिखा गया।**

व्यवहार पर प्रभाव डालने वाली परिस्थिति का नाम

इस समस्या के एक पक्ष के साथ मेरा सम्पर्क उस समय हुआ था जब मैं डा० सपीर से नहीं पढ़ा था, तथा एक ऐसे क्षेत्र में सम्पर्क हुआ, जो प्रायः भाषा-विज्ञान से बहुत दूर का माना जाता है। यह सम्पर्क, उस समय हुआ जबकि मैं अग्नि-बीमा कम्पनी में व्यवसायी विशेषज्ञ के रूप में कार्य कर रहा था, और जहाँ मैंने कई सौ उन रिपोर्टों का विश्लेषण करने का कार्यभार सम्भाला हुआ था, जो आग लगने की प्रारम्भिक परिस्थितियों तथा कई स्थानों पर विस्फोटों के कारणों से सम्बन्धित थीं। मैंने विश्लेषण कार्य शुद्ध भौतिक परिस्थितियों को लक्ष्य में रख कर किया था—जैसे दोषयुक्त बिजली के तार, धातु के जाल और लकड़ी के ढांचों के बीच रिक्त वायवी स्थानों की उपस्थिति या अभाव, इत्यादि; और परिणाम इन्हीं शब्दों में व्यक्त किए गए थे। वास्तव में इस कार्य को लेते समय यह कल्पना भी नहीं की गई थी कि किसी अन्य प्रकार के परिणाम अथवा प्रमाण भी मिल सकते हैं। परन्तु कुछ ही समय में यह स्पष्ट हो गया कि भौतिकी के रूप में भौतिक परिस्थितियाँ ही एकमात्र कारण नहीं हैं, अपितु इन परिस्थितियों का लोगों के मन में जो 'अर्थ' है वह भी लोगों के व्यवहार द्वारा आग लगने के कारणों में से एक है। और, अर्थ सम्बन्धी यह कारण तब पूर्णतया स्पष्ट हो गया, जब इसे उस **भाषाई अर्थ** के रूप देखा गया जो परिस्थिति पर साधारणतया लागू होने वाले भाषाई विवरण में स्थित या 'नाम' के अन्तर्गत विराजमान हैं। अतः एक स्टोर के आसपास यदि 'गैसोलीन ड्राम' लिखा हो तो लोगों का व्यवहार एक विशेष प्रकार का होगा, अर्थात् अत्यधिक सावधानी बरतेंगे परन्तु खाली गैसोलीन के ड्रमों के स्टोर के आसपास लोगों का व्यवहार भिन्न होगा, अर्थात् असावधानी का होगा और वे जलते हुए सिग्रेट के टुकड़ों को फैंकने में सावधानी नहीं बरतेंगे, तथापि खाली ड्राम अधिक खतरनाक होते हैं क्योंकि उनमें विस्फोटक वाष्प होती है। भौतिक रूप से स्थिति अधिक जोखिम वाली है परन्तु नियमित सादृश्य के अनुसार भाषाई विश्लेषण **'खाली'** शब्द का प्रयोग अवश्य करेगा जो जोखिम के अभाव का संकेत देता है। **खाली** शब्द दो भाषाई अभिरचनाओं में प्रयुक्त होता है (1) निष्प्रभाव एवं शून्य, अभावात्मक तथा क्रियाशून्य आदि के वास्तविक पर्याय के रूप में। (2) ड्राम के अन्दर स्थित भाप, तरल अवशेष, या कूड़ा करकट आदि की उपेक्षा करते हुए जो भौतिक परिस्थितियों के विश्लेषण में प्रयुक्त हो। एक अभिरचना में परिस्थिति का नाम-करण किया जाता है और दूसरी परिस्थिति में उस नाम 'पर आचरण किया जाता है' या 'नाम को सार्थक' किया जाता है। जोखिम की स्थिति में डालने वाले व्यवहार के भाषाई अनुबन्धन का यही सूत्र है।

एक बार लकड़ी के आसवन संयन्त्र पर धातु के भभकों (stills) को विद्युत ऊष्मारोधी बनाने के लिए 'चूना पत्थर' के बने मिश्र का प्रयोग किया जाता था जिसे संयन्त्र पर 'धुना हुआ चूना' कहते थे। इस आवरक पदार्थ को अत्यधिक

ऊष्मा या आग की लपटों से बचाने का कोई प्रयत्न नहीं किया गया था। कुछ दिन के प्रयोग के बाद भभके के नीचे की आग—'चूना पत्थर' पर फैल गई और सभी को आश्चर्य यह हुआ कि वह बड़े जोर से जलने लगी। भभकों से निकलने वाली शुक्तीय तेजाब के धुएं के सम्पर्क ने (कैलसियम-कार्बोनेट) 'चूना पत्थर' के कुछ अंशों को, 'कैलसियम अम्ल' में परिवर्तित कर दिया था। इसे जब आग में तपाया जाता है तो यह अलग हो जाता है और जलने वाला अम्ल बन जाता है। उस आवरक के पास आग की उपस्थिति की उपेक्षा के व्यवहार का कारण (Lime Stone) "चूना-पत्थर" शब्द का प्रयोग था, क्योंकि यह 'पत्थरान्त' पद है जिसका अर्थ यही समझा जाता है कि पत्थर ज्वलनशील पदार्थ नहीं है।

वारनिश उबालने का लोहे का बना एक विशाल पतीला अत्यधिक गरम हो उठा था और तापमान इतना बढ़ गया था कि उसमें आग लग सकती थी। कारीगर ने उसे आग से नीचे उतार दिया और काफी दूर ले गया परन्तु ढका नहीं। कुछ देर बाद वारनिश में आग लग गई। यहाँ भाषाई प्रभाव कुछ जटिल है। यहाँ यह सब 'कारण' के आलंकारिक विषयीकरण की वजह से हुआ और 'कारण' "वस्तुओं" के सम्पर्क अथवा स्थानगत सन्निधि के माध्यम से विशेष परिस्थिति, अर्थात् 'आग के ऊपर' बनाम' 'आग से नीचे उतारा हुआ' के विश्लेषण में निहित है। वास्तव में वह अवस्था जब बाह्य अग्नि (तापमान बढ़ाने में) मुख्य कारण थी, अब बीत चुकी थी और अत्यन्त तपित पतीले से वारनिश का अतितपन एक आन्तरिक संवहन की प्रक्रिया थी और वह प्रक्रिया आग से 'नीचे उतार दिए' जाने पर भी चलती रही।

एक बार दीवार पर लगा हुआ दीप्ति तापक (हीटर) बहुत कम प्रयुक्त होता था, एक कारीगर को वह कोट टांगने का सुविधाजनक हैंगर प्रतीत हुआ। रात को चौकीदार अन्दर आया और उसने स्विच दबा दिया, उसके लिए इस क्रिया का अर्थ (लाइट) प्रकाश करना था। परन्तु रोशनी दिखाई नहीं दी और इस परिणाम का उसने यह अर्थ लिया कि 'लाइट समाप्त हो चुकी है।' वह हीटर की दीप्ति नहीं देख सका क्योंकि उस पर कोट टंगा हुआ था। शीघ्र ही हीटर ने कोट को सुलगा दिया जिससे सारे भवन में आग लग गई।

एक चर्मशोधनालय का पशुपदार्थयुक्त गंदा पानी बाहर एक कुण्ड में एकत्रित था और उसका आधा भाग लकड़ी के ढक्कन से ढका हुआ था, आधा भाग खुला था। यह परिस्थिति ऐसी थी कि साधारणतया उसका नामकरण "पानी का गड्ढा" के रूप में किया जा सकता था। एक कारीगर ने अपनी लालटेन जलाई और माचिस की तिल्ली उस पानी में डाल दी। परन्तु अपघटित होता हुआ कचरा लकड़ी के ढक्कन के नीचे गैस बना रहा था, अत: वहाँ की स्थिति 'जलीय' होने से उल्टी थी, तुरन्त ही आग की लपट ने लकड़ी के ढक्कन में आग लगा दी, जिससे बिल्डिंग में आग लग गई।

खाल सुखाने के कमरे में एक ओर हवा फैंकने वाली (Blower) धौंकनी लगी हुई थी जिससे एक ओर से वायु प्रवाह कमरे में होता हुआ दूसरी ओर एक झरोखे से निकल जाता था। धौंकनी के गरम धारूक (बेयरिंग) पर आग लग गई जिसने गरम शोलों को सीधा खालों पर फैंक दिया और उन्ह सारे कमरे में धधका दिया, अत: सारा माल जल गया। यह खतरनाक परिस्थिति हवा फैंकने वाला" (ब्लोअॅ) पद के कारण उत्पन्न हुई क्योंकि इसका भाषाई सादृश्य' "वह जो हवा फेंकता है" के साथ है जिसका कार्य अनिवार्य रूप से केवल हवा फैंकना ही समझा जाता था। इसके कार्य को 'खाल सुखाने के लिए हवा फैंकने वाला' आदि शब्दों में भी व्यक्त किया जा सकता है, उस समय यह भुला दिया जाता है कि यह दूसरी चीजों को भी फैंक सकता है जैसे शोले, चिंगारी आदि। वास्तव में एक धौंकनी केवल वायु का एक प्रवाह बनाती है, हवा फेंक भी सकती है और खींच भी सकती है। अत: इसे कमरे की वायु बाहर निकालने वाले झरोखे पर लगाया जाना चाहिए था ताकि वह हवा को खालों के ऊपर से प्रवाहित कराता हुआ फिर जोखिम के स्थान (अपने खोल और धारूक बेयरिंग) में से गुजारता हुआ बाहर निकाल देता।

कोयले की आग पर सीसा बनाने के लिए पिघलाने वाले बरतन के निकट 'रद्दी सीसे' का ढेर पड़ा था। रद्दी सीसा एक भ्रामक शब्दीकरण है क्योंकि उस ढेर में पुराने रेडियो संघनित्र (Condensers) के सीसे की परते थीं जिनके बीच में अब भी पैराफिन कागज थे। शीघ्र ही पैराफिन में आग भड़क उठी और छत में आग लग गई जिससे वह आधी जल गई।

ऐसे उदाहरण, जिन्हें और अधिक बढ़ाया जा सकता है, यह बतलाने के लिए पर्याप्त हैं कि किस तरह एक विशेष व्यवहार प्रणाली को भाषाई सूत्रों के सादृश्य द्वारा प्रेरित किया जाता है, जिनमें स्थिति अभिव्यक्त की जाती है, और जिनके द्वारा एक सीमा तक विश्लेषित की जाती है, और उसका स्थान उस संसार में नियत कर दिया जाता है जो कि "बहुत हद तक अचेतन रूप में उस वर्ग की भाषाई आदतों पर बना हुआ होता है।" और, हम सदैव यही मान बैठते हैं कि हमारे वर्ग द्वारा किया गया भाषाई विश्लेषण सत्य को उससे अधिक व्यक्त करता है जितना वास्तव में वह 'करता' है।

व्याकरणिक अभिरचनाएँ अनुभूतियों के अर्थ निर्णायक के रूप में

ऊपर दिए गये दृष्टान्तों में भाषाई सामग्री एकल शब्दों, वाक्यांशों, और सीमित क्षेत्र की अभिरचनाओं तक सीमित हैं। इस प्रकार की सामग्री के बाध्यकारी व्यवहार का अध्ययन, बड़े पैमाने की व्याकरणिक कोटियों की कहीं अधिक प्रभावशाली बाध्यता की आशंका किए बिना नहीं किया जा सकता, वे (व्याकरणिक कोटियाँ) हैं—जैसे बहुवचनता, लिंग, तथा इसी प्रकार के अन्य वर्गीकरण (सजीव तथा निर्जीव) काल, वाच्य, तथा अन्य क्रिया रूप, 'शब्द भेदों के प्रकारों का वर्गीकरण, तथा यह विषय, कि एक विशेष अनुभव एक रूपिम की इकाई, द्वारा, 'पद' द्वारा,

या किसी वाक्य विन्यासात्मक संयोग द्वारा व्यक्त किया जाता है। एक **कोटि** जैसे वचन (एक वचन: बहुवचन) एक सम्पूर्ण बड़े अनुभव क्रम का, वस्तुत: संसार का, या प्रकृति का, प्रयत्नकृत अर्थ-प्रतिपादन है। यह स्पष्ट करने का प्रयत्न करता है कि अनुभव का किस प्रकार खण्डीकरण किया जाए, और कौन सा अनुभव 'एक' कहलाता है और कौनसा 'कई', परन्तु इस प्रकार के व्यापक प्रभाव का मूल्यांकन करने में बहुत बड़ी कठिनाई इसके पृष्ठभूमिगत गुण के कारण है, इसलिए भी कि अपनी भाषा से (द्रष्टा के रूप में) तटस्थ रहना तथा वस्तुगत दृष्टि से निरीक्षण करना कठिन है क्योंकि भाषा एक अभ्यास है, तथा सांस्कृतिक निर्विवाद-मान्यता, (non est disputandum) है। और यदि हम एक अत्यधिक असदृश भाषा को (निरीक्षणार्थ) लेते हैं तो यह भाषा प्रकृति का एक अंग बन जाती है, और हम इसके साथ भी वही करते हैं जो कुछ हम प्रकृति के साथ पहले ही कर चुके हैं। विजातीय भाषा का परीक्षण करते समय हम अपनी भाषा में सोचते हैं, या हम शुद्ध रूपिमीय जटिलताओं को सुलझाने के काम को इतना भीमकाय समझ बैठते हैं, कि ऐसा प्रतीत होने लगता है मानो उसी में सभी का समावेश हो गया है। यद्यपि समस्या कठिन भले है तथापि सुलझाई जा सकती है, और श्रेष्ठ मार्ग है विजातीय भाषा का माध्यम, क्योंकि उसके अध्ययन से हम अन्तत: जबरदस्ती ही अपनी लीक से बाहर फैंक दिए जाते हैं। तब हमें पता चलता है कि विजातीय भाषा हमारी अपनी भाषा का (रूप पहचानने के लिए) दर्पण है।

होपी भाषा का अध्ययन करते समय यह समस्या जिसे मैं अब सुअवसर मानता हूं, परन्तु उस समय जबकि मुझे इसका बोध भी न था, वास्तव में पहले मुझ पर थोप दी गई थी। रूपविज्ञान का विवरण देने का कार्य, जो अन्तहीन प्रतीत होता था, अन्तत: समाप्त हो गया। तथापि, यह स्पष्ट हो गया, विशेष रूप से सपीर के नवाहो पर भाषण के प्रकाश में, कि उस भाषा का वर्णन "पूर्णता" से अभी बहुत दूर है। उदाहरणार्थ, मुझे बहुवचनों की रूपिमीय रचना विधि का तो ज्ञान था परन्तु यह पता नहीं था कि प्रयोग कैसे किया जाता है। यह बात स्पष्ट थी कि होपी में बहु-वचनीय कोटि वही चीज नहीं थी जैसा कि अंग्रेजी, फ्रेंच या जर्मन में। कुछ चीजें जो इन भाषाओं में 'बहुवचन' थीं होपी में वे एक वचन थीं। इस अवसर पर प्रारम्भ होने वाली खोज का पक्ष मेरे लगभग दो वर्ष खा गया।

इस कार्य ने पाश्चात्य भारोपीय भाषाओं तथा होपी भाषा की तुलना का रूप ग्रहण करना आरम्भ कर दिया। यह भी सुस्पष्ट हो गया कि होपी व्याकरण का होपी संस्कृति से सम्बन्ध था और योरोपीय भाषाओं के व्याकरण का हमारी पाश्चात्य या योरोपीय सभ्यता से, और यह भी प्रकट हुआ कि भाषा द्वारा अनु-भूतियों के बृहद सन्निवेशन में लाए गए अन्त:सम्बन्ध भी हैं जैसे हमारे अपने पद (Time) 'काल' (Space) 'दिक्' (Substance) 'पदार्थ' (Matter) 'भौतिक तत्त्व', क्योंकि इस वैशिष्ट्य की तुलना के विषय में अंग्रेजी, फ्रान्सीसी, जर्मन या अन्य योरोपीय भाषाओं में कोई अन्तर नहीं है। सम्भवत: बाल्टोस्लाविक

या अभारोपीय भाषाएँ सम्भव अपवाद हैं, अत: मैंने इन भाषाओं को एक वर्ग में एकत्रित कर दिया जिसे SAE या 'Standard Average European का नाम (मानक सामान्य योरोपीय) दिया है।

उस सारी खोज का वह अंश, जिसका यहाँ उल्लेख किया जायेगा, दो प्रश्नों में संकलित किया जा सकता है। (१) 'काल', 'दिक' तथा 'भौतिक तत्त्व' सम्बन्धी हमारी धारणाएं क्या सभी मानवों को उनके अनुभव द्वारा तत्त्वत: उसी रूप में दी जाती है, या वे अंशत: विशिष्ट भाषा की संरचना द्वारा अनुबन्धित हैं? (२) क्या (अ) सांस्कृतिक तथा व्यवहारगत प्रतिमानों (ब) तथा बड़े पैमाने पर भाषाई अभिरचनाओं में किसी प्रकार का अनुमार्गणीय घनिष्ट सम्बन्ध है? इस विषय का दावा करने वालों में—कि भाषा और संस्कृति में "सहसम्बन्ध" जैसी कोई निश्चित चीज है, मुझे अन्तिम व्यक्ति होना चाहिए, और विशेष रूप से नृकुल विज्ञान सम्बन्धी शीर्षकों में सहसम्बन्ध जैसे 'कृषीय, शिकार' आदि, तथा भाषाई शीर्षकों में जैसे 'Inflected' विभक्तिपरक 'SYNTHETIC' श्लिष्ट या 'ISOLATING' वियोगात्मक ।[1] जब मैंने इस विषय का अध्ययन आरम्भ किया तो समस्या इतने स्पष्ट ढंग से सूत्रित नहीं हुई थी, और मुझे ऐसा आभास भी नहीं था कि उत्तर ऐसे बन पायेंगे जैसे कि बन गए।

मासायो और होपी में—बहुवचनता तथा गणना (प्रणाली)

हमारी भाषा में अर्थात् (SAE) मासायो में बहुवचनता तथा गण संख्या का दो तरह से प्रयोग किया जाता है; वास्तविक बहुवचनों के लिए तथा काल्पनिक बहुवचनों के लिए। या अधिक निश्चित परन्तु कुछ कम संक्षिप्त शब्दों में—इन्द्रिय-गोचर 'स्थानिक समष्टियाँ' तथा 'आलंकारिक समष्टियाँ।' हम "दस व्यक्ति" कहते हैं और 'दस दिन' भी। दस दिखाई देते हैं, या देखे जा सकते हैं, 'दस', एक सामूहिक अवलोकन में,[2] उदाहरणार्थ गली के मोड़ पर दस व्यक्ति। परन्तु 'दस दिन' वस्तुनिष्ठ रूप में अनुभूत नहीं किए जा सकते। हम केवल 'एक दिन' का अनुभव करते हैं, केवल आज का, दूसरे नौ (या दस के दस) का स्मृति द्वारा या कल्पना द्वारा संकलन किया जाता है, यदि दस दिनों को एक वर्ग के रूप में समझा जाए

1. हमारे पास पर्याप्त मात्रा में प्रमाण है जिनसे सिद्ध होता है कि वास्तविक स्थिति यह नहीं है। केवल होपी तथा ऊते पर विचार कीजिए, इनमें ऐसी भाषाएँ हैं जो प्रकट-रूपरचनात्मक तथा शाब्दिक स्तर पर इतनी समान हैं जितनी अंग्रेजी और जर्मन। भाषा एवं संस्कृति में 'सहसम्बन्ध' की धारणा, सहसम्बन्ध के सामान्य रूप से स्वीकृत अर्थों में, निश्चित रूप से भ्रामक है।
2. जैसा कि हम कहते हैं, ' ten at the SAME TIME ' (दस एक ही उसी समय), यह दिखाते हुए कि हमारे भाषा एवं विचार में हम सामूहिक अवबोधन के तथ्य का पुनर्कथन एक धारणा—'काल' के शब्दों में करते हैं, जिसका बृहद् भाषाई संघटन इस लेख में आगे प्रकट होगा ।

तो वह एक 'काल्पनिक' मानसिक रूप से रचित वर्ग होगा। परन्तु यह मानसिक अभिरचना आती कहाँ से है ? जैसे आग लगाने वाली गल्तियाँ इस तथ्य के कारण होती हैं कि हमारी भाषा दो भिन्न परिस्थितियों में भ्रान्ति उत्पन्न कर देती है क्योंकि दोनों (परिस्थितियों) के लिए अभिरचना एक ही है । जब हम दस कदम आगे, घण्टी पर दस चोट, या इसी प्रकार वर्णित अन्य आवर्ती अनुक्रमों या किसी भी प्रकार के 'कालों' की चर्चा करते हैं तो हम वही कुछ कर रहे हैं, जो कि हमने 'दिनों' के साथ किया था। "चक्रीयता" या "आवर्तिता" काल्पनिक बहुवचनों की प्रतिक्रिया का आह्वान करती है। परन्तु चक्रीयता का समष्टियों के साथ सादृश्य भाषा के पूर्व निश्चित रूप में अनुभूति द्वारा प्रदत्त नहीं है। अन्यथा यह सभी भाषाओं में मिलता, परन्तु ऐसा है नहीं।

'काल' तथा 'चक्रीयता' सम्बन्धी हमारे बोध में कुछ तात्कालिकता एवं आत्मपरकता के तत्त्व अवश्य हैं—उत्तरोतर उत्तरवर्ती होने का आधारभूत ज्ञान। परन्तु हम 'मासायों' (SAE) लोगों के अभ्यासगत विचार में यह किसी भिन्न विषय के अन्तर्गत आता है, वह यद्यपि मानसिक विषय है तथापि उसे आत्मपरक नहीं कहना चाहिए । मैं इसे 'विषयीकृत' या काल्पनिक कहता हूं क्योंकि यह बाह्य संसार पर अभिरचित है । वास्तव में वह यह तथ्य है जो हमारे भाषाई प्रयोग का द्योतन करता है। हमारी भाषा विविक्त इकाइयों को गिनने वाली संख्याओं तथा उन "केवल अपने आपको ही गिनने वाली" संख्याओं में कोई भेद नहीं करती । हमारी अभ्यासगत विचारणा यह मान बैठती है कि उत्तरवर्ती विषय में (अर्थात् अपने आप को गिनने वाली संख्या के विषय में) भी संख्याएं इसी प्रकार किसी वस्तु पर गिनी जाती हैं, जैसे कि पूर्ववर्ती । इसी का नाम विषयीकरणहै। काल विषयक धारणाएं 'उत्तरवर्ती' होने के आत्मपरक अनुभव से सम्पर्क तोड़ लेती हैं तथा उनका विषयीकरण गिनी हुई मात्राओं के रूप में हो जाता है, विशेष रूप से जैसे दीर्घताएं इकाइयों द्वारा बनी हुई होती हैं क्योंकि एक दीर्घता का चिह्न इन्चों में प्रकट रूप में किया जा सकता है । 'एक' काल की दीर्घता भी इसी प्रकार की इकाइयों द्वारा बनी हुई परिकल्पित की जाती है— जैसे बातलों की पंक्ति हो ।

होपी में भिन्न प्रकार की भाषाई स्थिति है। बहुवचन तथा गणना संख्या उन्हीं इकाइयों के लिए प्रयुक्त किए जाते हैं जो या तो वस्तुपरक समुदाय बनाते हैं या बना सकते हैं। वहां किसी प्रकार के काल्पनिक बहुवचन नहीं होते अपितु एक वचन के साथ क्रमसंख्या का प्रयोग होता है; 'दस दिन' जैसी अभिव्यक्ति का प्रयोग नहीं होता। इसका समकक्ष वक्तव्य एक क्रियात्मक प्रकार का है जो कि एक दिन तक उपयुक्त गणना द्वारा पहुंचना है वे दस दिन ठहरे 'वहां' ग्यारहवें दिन आने तक ठहरे बन जाता है या 'वे दसवें दिन के बाद चले गए' । 'दस दिन नौ दिन से बड़ा है ।' यह अभिव्यक्ति इस प्रकार व्यक्त की जाती है— 'दसवां दिन नवें दिन से उत्तरवर्ती है । हमारी काल सम्बन्धी दीर्घता, दीर्घता

नहीं मानी जाती अपितु उसे उत्तरवर्तिता की दो घटनाओं के बीच एक 'संबंध' मानते हैं। उस चेतना की सामग्री की भाषाई रूप में उन्नत विषयीकरण जिसे हम 'काल' कहते हैं, होपी भाषा ने उसके स्थान पर कोई ऐसी अभिरचना नियत नहीं की है जो काल के सारभूत आत्मपरक 'उत्तरवर्ती होना' को माप सके।

मासायो तथा होपी में भौतिक मात्रा वाली संज्ञाएं

हमारे पास भौतिक पदार्थों का द्योतन करने वाली दो प्रकार की संज्ञाएं हैं : व्यक्ति या व्यष्टि संज्ञाएं तथा राशिवाचक संज्ञाएं : राशिवाचक संज्ञाएं जैसे 'पानी, दूध, लकड़ी, (ग्रेनाइट) कणाश्म, रेत, आटा, मांस'। व्यष्टि संज्ञाएँ निश्चित रूपरेखाओं वाले पिण्डों का द्योतन करती हैं : 'एक वृक्ष, एक लाठी, एक पुरुष, एक पहाड़ी'। राशिवाचक संज्ञाएं विवक्षित सीमा रहित समरूप सांतत्यक का द्योतन कराती हैं। यह अन्तर भाषाई आकृति द्वारा निर्दिष्ट होता है जैसे राशिवाचक संज्ञाओं के बहुवचन[3] नहीं होते।

अंग्रेजी में उनके साथ आर्टिकल का प्रयोग नहीं होता और फ्रांसीसी में उनके साथ अंशसूचक आर्टिकल, दु, दे, ला, देस du, de, la, des का प्रयोग होता है। यह भेद पदार्थों की इन्द्रियगोचर बनावट की अपेक्षा भाषा में अधिक व्यापक है। वास्तव में कुछ ही प्राकृतिक घटनाएं असीमित विस्तार के रूप में अपने आप को प्रस्तुत करती हैं—जैसे 'वायु' तथा प्रायः पानी, वर्षा, बरफ, रेत, चट्टान, गंदगी, घास। मक्खन, मीट, मांस, कपड़ा, लोहा, शीशा या बहुत से अन्य इस प्रकार प्रकट लक्षणों वाले पदार्थ हमें (असीमित विस्तारमें) दिखाई नहीं देते अपितु छोटे या बड़े पिण्डों में निश्चित रूप रेखा सहित मिलते हैं। यह प्रभेद भाषा की अनिवार्य अभिरचना द्वारा हमारे घटना विषयक वर्णनों पर कुछ कुछ थोप दिया गया है। बहुत से विषयों में यह इतना असुविधाजनक हो जाता है कि हमें राशिवाचक संज्ञाओं को अन्य भाषाई विधियों द्वारा किसी प्रकार व्यष्टिपरक बनाना पड़ता है। यह अंशतः पिण्ड प्रकारों के नाम द्वारा किया जाता है Stick 'of wood'—etc. लकड़ी की लाठी, कपड़े का टुकड़ा, शीशे का फलक (पल्ला), साबुन की टिकिया, तथा इससे भी अधिक पात्रों के नामों द्वारा, चाहे पात्रों में रखे पदार्थ वास्तविक विषय वस्तु हों : 'पानी का

---

3. बहुवचन के अभाव के इस नियम का यह कोई अपवाद नहीं है कि एक राशिवाचक संज्ञा कभी 2 शब्दिम में किसी एक ऐसी संज्ञा के समान व्यवहार करे जिसका बहुवचन भी होता है जैसे 'STONE' (पत्थर) (कोई बहुत नहीं) a STONE की तरह (जिसका बहुवचन STONES है) विविधता को द्योतित करने वाला बहुवचन जैसे 'WINES' (शराबें) आदि, वास्तव में, वास्तविक बहुवचन से भिन्न वस्तु हैं; यह मासाय (SAE) राशि संज्ञाओं से उत्पन्न विचित्र विकास हैं जो एक अन्य प्रकार की काल्पनिक समष्टियों की ओर ले जाते हैं जिन्हें इस लेख में स्थान नहीं दिया जाएगा।

गिलास, कॉफी का कप, खाने की तश्तरी, आटे का बोरा, बीयर की बोतल।' ये अधिक सामान्य 'पात्र परक' सूत्र जिनमें 'का' का स्पष्ट, इन्द्रियगोचर अर्थ (पात्र की सामग्री) कम स्पष्ट पिण्ड-प्रकारीय सूत्रों लकड़ी की लाठी, गूंथे आटे की लोई, आदि के विषय में हमारी भावनाओं को प्रभावित करते हैं, ये सूत्र बहुत समानता रखते हैं : व्यष्टि संज्ञा तथा एक सदृश सम्बन्धदर्शी अंग्रेजी का ऑव (of)। एक सुस्पष्ट विषय में यह 'संबन्धदर्शी' पात्र सामग्री का द्योतन करता है। अस्पष्ट विषयों में यह सम्बन्धदर्शी पात्र-सामग्री का संकेत मात्र करता है। अत: पिण्ड, खण्ड, प्रखण्ड (Blocks) तथा टुकड़े आदि ऐसे प्रतीत होते हैं मानों उनमें कुछ है, जैसे कोई 'उपादान' 'सामग्री', 'पदार्थ', 'द्रव्य' जो' पात्र सामग्री' सूत्र में 'जल', काफी, या आटे की विवक्षापूर्ति करते हैं। अत: 'मासाय' लोगों के लिए दार्शनिक 'पदार्थ' और 'द्रव्य' भी साधारण विचार हैं, वे तुरन्त 'स्वीकरणीय "सामान्य सूत्र" हैं। ऐसा भाषाई अभ्यास के माध्यम द्वारा होता है। हमारी भाषाई अभिरचनाएँ हमसे यह अपेक्षा करती हैं कि हम एक भौतिक पदार्थ का नामकरण एक ऐसे द्विपद द्वारा करें जो संकेतितार्थ को दो भागों में विभक्त कर दे अर्थात् एक आकृति रहित इकाई|एक आकृति।

होपी पुन: इस विषय में भी भिन्न है। इस में रूपात्मक ढंग से संज्ञाओं का एक विशिष्टता प्राप्त वर्ग है। परन्तु इस वर्ग में राशिवाचक संज्ञाओं का कोई रूपात्मक उपवर्ग नहीं है। सभी संज्ञाओं का एक व्यष्टिपरक अर्थ होता है और उनमें दोनों, 'एक वचन' तथा 'बहुवचन' रूप होते हैं। हमारी राशि-वाचक संज्ञाओं का अनुवाद करने वाली संज्ञाएँ अस्पष्ट पिण्डों या अस्पष्ट रूप से परिसीमित विस्तारों की ओर संकेत करती हैं। उनसे अनिश्चितता तो ध्वनित होती है परन्तु रूपरेखा और आकार का अभाव नहीं। सुनिश्चित वक्तव्यों में 'पानी' का अर्थ होता है पानी की एक विशेष राशि अथवा मात्रा, वह कदापि नहीं जिसे हम 'जलतत्त्व या पदार्थ' कहते हैं। वक्तव्य की सामान्यता, क्रिया अथवा विधेयक द्वारा अभिव्यक्ति की जाती है, संज्ञा (द्वारा) नहीं। क्योंकि संज्ञाएं पहले ही व्यष्टिपरक होती हैं, अत: उनका व्यष्टिकरण न तो पिण्ड प्रकारों से किया जाता है और न ही पात्रों के नामों द्वारा ही। यदि पात्र या आकृति पर बल देने की विशेष आवश्यता नहीं है तो संज्ञा स्वयं ही अनुकूल पिण्ड-प्रकार या पात्र का द्योतक होती है। वे 'पानी का गिलास' नहीं बोलते परन्तु Kəyi 'एक पानी' बोलते हैं। 'पानी का कुण्ड' नहीं कहते परन्तु 'पा ह' pa.hə कहते हैं, 'मक्की के आटे की तश्तरी' नहीं कहते अपितु yəmni आटे की एक मात्रा कहते हैं, मांस का टुकड़ा नहीं कहते परन्तु Sikwi एक मांस बोलते हैं।

---

4. **पानी की मात्राओं के लिए होपी में दो शब्द हैं, kəyi तथा pahə : अन्तर कुछ इस प्रकार का है जैसे 'पत्थर' और 'चट्टान' में; pahə (का अर्थ है अधिक बड़ा आकार, 'प्रचण्डता'; बहता हुआ पानी, चाहे घर से बाहर है**

उस भाषा में न तो आवश्यकता है न ही ऐसे सादृश्य हैं जिन के बल पर अरूपात्मक इकाई तथा रूप के द्वैत के रूप में सत्ता विषयक धारणा बना सकें। अरूपात्मकता की अभिव्यक्ति संज्ञेतर प्रतीकों द्वारा की जाती है।

मासाय तथा होपी में काल चक्रों के पक्ष

हमारे लिए ऐसे पद जैसे ग्रीष्म, शरद्, सितम्बर, प्रातः, दोपहर, सूर्यास्त आदि संज्ञाएं हैं, और इनका दूसरी संज्ञाओं से किसी प्रकार का रूपात्मक भाषाई भेद नहीं है। वे कर्त्ता हो सकते हैं, या कर्म, और हम 'सूर्यास्त होने पर' या 'शरद् में' ठीक इसी तरह कहते हैं जैसे हम 'कोने पर' या 'बागीचे' में कहते हैं।[5] उनका बहुवचनीकरण तथा गणना भौतिक पदार्थों वाली संज्ञाओं की तरह होता है—यह हम देख ही चुके हैं। अतः इन संकेतितार्थों के प्रति हमारे विचार विषयीकृत हो जाते हैं। विषयीकरण के बिना यह वास्तविक काल का आत्मपरक अनुभव हो जायेगा अर्थात् 'उत्तरोत्तरवर्ती होने' की चेतना का—केवल एक कालचक्रीय पक्ष जो कि सदैव उत्तरवर्ती होने वाली अवधि में एक पूर्ववर्ती चक्र के सदृश है। केवल कल्पना द्वारा ही ऐसा चक्रीय पक्ष एक के साथ दूसरा और फिर दूसरा स्थानपरक समाकृति (अर्थात् दृष्टिगोचर रूप में) की विधि से रखे जाते हैं (चक्रीय पक्ष एक के साथ दूसरे इस प्रकार रखे जाते हैं जैसे आँख से देखे जाने वाले पदार्थ)। यह भाषाई सादृश्य की शक्ति ही है जिसके बल पर हम इस चक्रीय पक्षता का विषयीकरण कर लेते हैं। हम 'पक्षता' के स्थान पर 'एक पक्ष' या बहुत से पक्ष कह कर भी ऐसा करते हैं। और, हमारे व्यष्टिपरक तथा राशिवाचकों की अभिरचनाएँ परिणामभूत द्विपदीय सूत्र 'अरूप' विषय और 'रूप सहित', इतना सामान्य है कि यह सभी संज्ञाओं के लिए अव्यक्त रूप में मान लिया जाता है। अतः हमारे पास (Substance) 'पदार्थ' तथा (Matter) 'द्रव्य' जैसी सामान्यीकृत अरूप इकाइयाँ हैं जिनके द्वारा हम 'द्विपदीयों' को संज्ञाओं की अतिविशाल श्रृंखला के स्थान पर भर सकते हैं। परन्तु ये भी पूर्णतया या पर्याप्त रूप में इतनी सामान्यीकृत नहीं हैं कि हमारी पक्ष-संज्ञाओं को समाविष्ट कर सकें। अतः हमने इन पक्ष संज्ञाओं के लिए एक 'अरूप' इकाई बनाई है जिसे हम 'काल' कहते हैं। हमने इसे 'एक काल'' के रूप में प्रयोग करके बनाया है, अर्थात् राशिवाचक संज्ञाओं की अभिरचना में

या नहीं है, या प्रकृति में है, वह सब pahə है, ऐसे ही 'आद्रता' है। परन्तु STONE (पत्थर) तथा rock (चट्टान) के विसदृश, इनमें अन्तर अनिवार्य है, वह केवल गुणार्थकता तक ही सीमित नहीं है, तथा दोनों का अन्तर्बदल कदापि नहीं हो सकता है।

5. पूर्णतया निश्चित होने के लिए यह कहना आवश्यक है कि, इनमें अन्य संज्ञाओं से बहुत ही नगण्य से अन्तर हैं, उदाहरणार्थ अंग्रेजी में (articles) 'आर्टिकलों' का प्रयोग।

"एक अवसर या पक्ष' (के रूप में) ठीक इसी तरह जैसे हम 'एक ग्रीष्म' से 'ग्रीष्म' बना लेते हैं। अतः द्विपद-सूत्र द्वारा हम 'काल का क्षण' 'काल का एक सेकिण्ड', 'काल का एक वर्ष' आदि अभिव्यक्त कर सकते हैं और सोच सकते हैं। मैं पुनः ध्यान आकर्षित करना चाहूँगा कि अभिरचना बिल्कुल वैसी ही है जैसे "दूध की एक बोतल या 'पनीर का एक टुकड़ा'। अतः हमें यह कल्पना करने में सहायता मिलती है कि "एक ग्रीष्म" वास्तव में काल की इतनी या इस प्रकार की मात्रा से युक्त है, या बना है।

होपी भाषा में सभी पक्षीय पद जैसे ग्रीष्म, प्रातः इत्यादि 'संज्ञा' नहीं हैं अपितु, यदि मासाय के निकटतम सादृश्य का प्रयोग किया जाए, तो एक प्रकार के 'क्रियाविशेषण' हैं। वे स्वयं अपने आप में भाषा के रूपात्मक भाग हैं जो संज्ञाओं से, क्रियापदों से, और होपी के 'क्रियाविशेषणों' से भी भिन्न हैं। इस तरह का एक शब्द कारक रूप भी नहीं है या अधिकरण अभिरचना भी नहीं है—जैसे des Abends 'देस् अबेन्दस्' या 'प्रातःकाल में' हैं। इसमें 'in the house' 'घर के अन्दर' या 'वृक्ष के ऊपर' जैसी कोई रूपिम भी नहीं है। इसका अर्थ यह है कि 'जब प्रातः काल होता है' या 'जब प्रातःकालीन पक्ष चल रहा है। इन 'काल सूचकों का प्रयोग' 'कर्त्ता' या 'कर्म (के रूप में) या कभी भी संज्ञाओं के रूप में नहीं होता। वहां पर कोई भी यह नहीं कहता कि 'यह एक गरम ग्रीष्म है' या 'ग्रीष्म गरम है', ग्रीष्म गरम नहीं है, ग्रीष्म तभी है जब परिस्थितियाँ गरम हैं, जब गरमी पड़ती है। उस भाषा में कोई यह नहीं कहता 'यह ग्रीष्म' परन्तु 'अब ग्रीष्म' या 'अभी होने वाली ग्रीष्म' कहते हैं। वहाँ 'प्रदेश, विस्तार, मात्रा आदि के रूप में आत्मपरक आवधिक भावना का विषयीकरण नहीं होता है। काल के विषय में किसी प्रकार का संकेत नहीं किया गया है, सिवाय 'उत्तरवर्ती' होने के। अतः यहाँ हमारे 'काल के समकक्ष किसी अरूप इकाई के लिए कोई आधार नहीं है।

मासाय तथा होपी में क्रियापदों के कालसूचक रूप

मासायक्रियापदों की त्रिकालीन व्यवस्था काल के विषय में हमारे समस्त चिन्तन को रञ्जित कर देती है। यह व्यवस्था-अवधि के आत्मपरक अनुभव के विषयीकरण की योजना के साथ एकीकृत कर दी जाती है जैसा कि हम पहले दूसरी अभिरचनाओं में देख चुके हैं—द्विपद-सूत्र में, जो सामान्य रूप से संज्ञाओं पर लागू होता है, काल सूचक संज्ञाओं में, बहुवचनता तथा गणनाओं में। यह विषयीकरण हमें कल्पना द्वारा काल की इकाइयों को एक पंक्ति में खड़ा करने में

6. 'वर्ष' तथा ऋतु के नाम के साथ 'वर्ष' के कुछ योग, परन्तु ऋतुओं के नाम अकेले विरले ही अधिकरण रूपिम at के साथ आते हों, परन्तु यह अपवादस्वरूप है। यह किसी पूर्ववर्ती अभिरचना का ऐतिहासिक अवशेष है, या अंग्रेजी सादृश्य का प्रभाव है, या दोनों ही है।

समर्थ बना देता है। काल विषयक पंक्तिबद्ध कल्पना तीन कालों की व्यवस्था के साथ समस्वर हो जाती है जब कि 'दो' की व्यवस्था अर्थात् पूर्ववर्ती तथा उत्तरवर्ती होने की अवधि की उस भावना से अधिक संगत है जिस रूप में उसकी अनुभूति होती। क्योंकि यदि हम चेतना का निरीक्षण करें तो हमें भूत, वर्तमान, भविष्य जैसी कोई चीज नहीं मिलेगी परन्तु जटिलता का समावेशन (समालिंगन) करने वाली एक एकता ही मिलेगी। सब कुछ चेतना में है और चेतना में जो सब कुछ है वह है, और एक साथ है, इसमें कुछ तो इन्द्रिय ग्राह्य है कुछ अनिन्द्रिय ग्राह्य है। हम उसे इन्द्रियग्राह्य कह सकते हैं जो कुछ हम देख रहे हैं, सुन रहे हैं, छू रहे हैं—अर्थात् वर्तमान, जबकि अनिन्द्रियग्राह्य में स्मृति का एक विशाल 'बिम्ब-जगत' होता है जिसे हम 'भूतकाल' कह देते हैं, और दूसरा 'विश्वास', अन्तदृष्टि, तथा अनिश्चितता का क्षेत्र है, जिसे 'भविष्य' कहते हैं; तथापि संवेदन, स्मृति, पूर्वदृष्टि—ये सभी चेतना में एक साथ मिलते हैं—केवल एक नहीं होता—"जो अभी हुआ नहीं है", न ही दूसरा—'एक बार, परन्तु अब कभी नहीं"। जहां वास्तविक काल का क्षेत्र आता है वह यह कि जो कुछ चेतना में है वह सब 'उत्तरकालीन' होना है, सम्बन्धों को अनुत्क्रमणीय ढंग से परिवर्तित करना है। इस उत्तरकालीनीकरण तथा अवधिकरण में मुझे, ध्यान के केन्द्र पर उत्तरकालीनतम नवीनतम 'क्षण' में, तथा शेष में, अर्थात् पूर्वकालीन में, एक परम वैषम्य प्रतीत होता है। बीसियों ऐसी भाषाएं हैं जो अपना कार्य सुचारू रूप से 'काल' जैसे दो रूपों से चलाती हैं जो इस 'उत्तर-कालीन' तथा 'पूर्वकालीन' के परम सम्बन्ध के अनुकूल हैं। निस्सन्देह हम भूत, वर्तमान और भविष्य की व्यवस्था को एक बिन्दुओं की विषयीकृत आकृतियों के रूप में बुद्धि-व्यापार द्वारा रच सकते हैं तथा उन पर चिन्तन भी कर सकते हैं। हमारी विषयीकरण की सामान्य प्रवृत्ति हमें यही कुछ करने में प्रवृत्त करती है तथा हमारी 'काल-व्यवस्था' इस तथ्य की पुष्टि करती है।

अंग्रेजी में 'वर्तमानकाल' ऐसा है जो उस सर्वोच्च कालसूचक सम्बन्ध के साथ सब से कम सामंजस्य में है। ऐसा लगता है मानों इससे कई तरह के काम लिए जाते हैं जो पूरी तरह संगत नहीं हैं। उनमें से एक 'कार्य' यह है कि वह वर्णन, विचारविमर्श, वाद-विवाद, तर्क तथा 'दर्शन' आदि में विषयीकृत भूत, तथा विषयीकृत भविष्य, के बीच विषयीकृत मध्य बन कर खड़ा रहे। दूसरा कार्य इन्द्रियग्राह्य क्षेत्र में समावेशन का द्योतन करना है : 'मैं उसे देखता हूं' एक अन्य कार्य है 'रूढ़िपरक' के लिए, अर्थात् प्रथागत रूप में, या साधारणतया प्रचलित वक्तव्य : "हम अपनी आंखों से देखते हैं।" ये बहुमुखी प्रयोग विचारों में संकरता का प्रवेश कराते हैं, जिसके विषय में हमें बहुत हद तक ज्ञान भी नहीं होता।

होपी, जैसा कि हम आशा कर सकते हैं, इस विषय में भी भिन्न है। क्रिया-पदों के हमारी भाषाओं जैसे 'काल' नहीं होते। परन्तु वहाँ मान्यता-सूचक रूप

है, (दृढ़कथन) पक्ष, तथा उपवाक्य संयोजन रूप (वृत्तियाँ) हैं, जिनके द्वारा भाषा में अधिक सुनिश्चितता आ जाती है। वे मान्यता सूचक रूप प्रकाशित करते हैं कि बोलने वाला (कर्त्ता नहीं) स्थिति की सूचना दे रहा है (जो हमारे भूत तथा वर्तमान के समान हैं), या वह इसकी आशा करता है (जो हमारे भविष्य के समान है)[7]। या, वह एक प्रथागत-कथन कर रहा है (जो हमारे प्रथागत वर्तमान के समान है)। ये पक्ष अवधि की भिन्न अवस्थाओं का तथा "अवधिकाल में" भिन्न प्रकार की प्रवृत्तियों का द्योतन करते हैं। अभी तक हमने किसी ऐसे पक्ष पर ध्यान नहीं दिया है जिससे यह संकेत मिल सके कि जब दोनों घटनाओं की सूचना दी जा रही हो तो उनमें से कौन सी घटना 'पूर्वकालीन' है तथा कौन सी 'उत्तर-कालीन'। परन्तु इसकी आवश्यकता उस समय तक नहीं पड़ती जब तक कि हमारे पास दो क्रियाएँ न हों अर्थात् दो उपवाक्य न हों। उस परिस्थिति में 'वृत्तियाँ' दो उपवाक्यों के बीच सम्बन्ध द्योतित करती हैं जिसमें उत्तर-कालीन का पूर्वकालीन के साथ सम्बन्ध है, तथा युगपत्ता का सम्बन्ध सम्मिलित है। तब बहुत से ऐसे पृथक् शब्द हैं जो इसी प्रकार के सम्बन्धों को अभिव्यक्त करते हैं तथा वृत्तियों एवं पक्षों के सम्पूरक का कार्य करते हुए इस प्रकार के सम्बन्धों को अभिव्यक्त करते हैं। हमारी त्रिकालीय व्यवस्थाओं के कार्य तथा इसके त्रिभागीय रैखिक विषयीकृत 'काल' का वितरण बहुत सी उन क्रियापदीय कोटियों में किया गया है जो हमारे 'कालों' से भिन्न हैं और होपी क्रियाओं मेंअन्य होपी अभिरचनाओं की तरह कोई अन्य आधार विषयीकृत 'काल' के लिए नहीं है, तथापि, होपी क्रियापदों अथवा अन्य अभिरचनाओं में लेशमात्र भी ऐसी बाधा उत्पन्न नहीं करता जिससे कि वे वास्तविक स्थितियों की उपयुक्त सत्यता के साथ घनिष्ठ रूप में समन्वित न हो सके।

मासाय तथा होपी में अवधि, तीव्रता, तथा प्रवृत्ति

वक्तव्य को वास्तविक बहुविधि परिस्थितियों के साथ संगत करने के लिए सभी भाषाओं को अवधियों, तीव्रताओं तथा प्रवृत्तियों को अभिव्यक्त करने की

7. प्रत्याशी तथा सूचनात्मक दृढ़कथनों का व्यतिरेक "सर्वोच्च सम्बन्ध" के अनुसार होता है। प्रत्याशी, वस्तुपरक तथ्य से पूर्वस्थित प्रत्याशी को अभिव्यक्त करता है तथा वह उस वस्तुपरक तथ्य के साथ सम्पाती होता है जो वक्ता की यथापूर्वस्थिति के पश्चवर्ती है, यह यथापूर्व स्थिति, जिसमें भूत के सभी सन्निवेशन सम्मिलित हैं, सूचनात्मक द्वारा अभिव्यक्त की जाती है। हमारी 'भविष्य' की धारणा पूर्ववर्ती (प्रत्याशी) तथा पश्चवर्ती (बाद में, जो कुछ होगा), दोनों का एक साथ प्रतिनिधित्व करती हुई प्रतीत होती है, जैसा कि होपी से विदित है। यह विरोधाभास इस बात की ओर संकेत कर सकता है कि वास्तविक काल का रहस्य कितना दुर्ग्राह्य है, तथा इसे भूत-वर्तमान-भविष्य के रेखीय-अनुक्रम सम्बन्ध द्वारा कितनी कृत्रिमता से प्रकट किया जाता है।

आवश्यकता पड़ती है। मासाय भाषाओं का तथा सम्भवत: अन्य बहुत सी भाषाओं का यह वैशिष्ट्य है कि वे इन्हें रूपकात्मक ढंग से अभिव्यक्त करती हैं। ये, रूपक स्थानपरक विस्तार से सम्बन्धित हैं, अर्थात् परिमाण, वचन स्थिति, आकृति तथा गति के हैं। हम अवधि को 'Long' दीर्घ, 'Short' 'अल्प', 'Great' 'बड़ा' 'much' अधिक, 'quick' आशु, 'slow' मन्द, आदि द्वारा (अभिव्यक्त करते हैं), तीव्रता को 'Large' बृहद्, 'great' बड़ा, 'much' अधिक, 'heavy' भारी, 'light' हल्का, 'low' धीमा, 'sharp' तीव्र, 'faint' धुंधला आदि द्वारा; प्रवृत्ति को 'more' और अधिक, 'increase' बढ़ाना, 'grow' विकसित होना, 'turn' मुड़ना, 'get' प्राप्त करना, 'Approach' निकट जाना या पहुंचना, 'go' जाना, 'come' आना, 'rise' उठना, 'fall' गिरना, 'stop' रुकना, 'smooth' चिकना, 'even' सम, 'Rapid' तेज़, 'slow' धीमा, तथा इस प्रकार के अन्य बहुत से रूपकों की अनन्त सूची द्वारा अभिव्यक्त करते हैं, जिन्हें हम इस रूप में मान्यता भी प्रदान नहीं करते हैं क्योंकि वास्तव में वे ही एक मात्र उपलब्ध भाषाई माध्यम हैं। इस क्षेत्र में अरूपकात्मक रूप जैसे 'early' समय से पूर्व, जल्दी, 'late' देर से, 'soon' शीघ्र, 'lasting' चिरस्थाई, 'intense' तीव्र, 'very' बहुत, 'tending' (की ओर) प्रवृत्ति या झुकाव होना, आदि केवल मुट्ठी भर हैं तथा आवश्यकताओं के लिए नितान्त अपर्याप्त।

यह स्पष्ट हो गया कि किस प्रकार यह प्रतिबन्ध यहाँ ठीक बैठता है। यह हमारी **विषयीकरण** की समस्त योजना का एक भाग है—कल्पनात्मक रूप से उन गुणों तथा अन्तर्निहित तत्त्वों का स्थानीकरण करना जो पूर्णतया अस्थानिक हैं (जहाँ तक स्थानपरक रूप से, अनुबोधक इन्द्रियाँ हमें बता सकती हैं)। संज्ञा का अर्थ (हमारे लिए) भौतिक पिण्डों से प्रारम्भ हो कर बहुत ही भिन्न प्रकार के समुद्दिष्टों तक पहुँच जाता है। क्योंकि भौतिक पिण्डों तथा इन्द्रियग्राह्य स्थान के अन्तर्गत उनकी रूपरेखाओं का द्योतन परिमाण तथा आकृति पदों द्वारा किया जाता है, तथा उनकी गणना सूचक संख्याओं तथा वचनों द्वारा की जाती है; अत: ये द्योतन तथा गणना की अभिरचनाएं अस्थानिक अर्थों वाले प्रतीकों तक विस्तृत हो जाती हैं और इस प्रकार एक **काल्पनिक स्थान** का निर्देश करती हैं। भौतिक आकृतियाँ, 'गतिशील होना, रुकना, उठना, डूबना, पास पहुंचना' आदि इन्द्रियगोचर स्थान में हैं, तो ये अन्य समुद्दिष्ट अपने काल्पनिक 'स्थान' में क्यों न हो? यह (प्रवृत्ति) इस सीमा तक बढ़ चुकी है कि हम किसी साधारणतम अस्थानिक परिचित का निर्देश भौतिक रूप की निरन्तर शरण के बिना नहीं कर सकते। मैं दूसरे व्यक्ति के तर्क का 'सूत्र' 'पकड़ता' हूं, परन्तु यदि इसका (Level) स्तर (Over my head) (मेरे सिर के ऊपर) 'मेरी समझ से बाहर है' तो मेरा ध्यान इधर उधर (wander) भटक सकता है और इसके प्रवाह से 'Loose touch' अपना 'सम्पर्क' खो सकता है। यहाँ तक कि जब वह अपने 'point' विषय पर 'आता है' तो हम ' 'differ widely'

ुत अधिक 'भिन्न' हो जाते हैं, हमारे 'Views.'(दृश्य) विचार, निश्चय ही ar apart' भिन्न हैं, कि thing' (चीजें) जो बातें वह कहता है वे (appear) ीत होती है (much अधिक) बहुत ही मनमानी या 'a lot' ढेर सारी बकवास ीत होती है।

होपी भाषा में इस प्रकार के रूपकों का अभाव महत्वपूर्ण है। जहाँ पर स्पेस) स्थान का सम्बन्ध नहीं है, वहाँ स्थान-पदों (स्पेस टर्मज़) का प्रयोग ता ही नहीं, मानो उन पर पूणतया मद्यपान-निषेध नियम लागू कर दिया गया । कारण स्पष्ट है—हमें विदित है कि होपी भाषा में बहुत अधिक मात्रा ऐसे क्रियापदीय तथा शाब्दिक माध्यम हैं जिनके द्वारा अवधि, तीव्रता तथा वृत्ति आदि सीधे ढंग से व्यक्त की जा सकती है और हम यह भी जानते कि होपी की मुख्य व्याकरणिक अभिरचनाएँ हमारी भाषाओं की तरह एक काल्प-क (स्पेस) स्थान के लिए सादृश्य प्रस्तुत नहीं करती। बहुत से क्रिया-पदीय 'पक्ष' ाविर्भाव की प्रवृत्ति तथा तीव्रता को अभिव्यक्त कर देते हैं जबकि कुछ 'वाच्य ाविर्भाव उत्पन्न करने वाली शक्तियों या कारणों की अवधि, प्रवृत्ति, और तीव्रता ो अभिव्यक्त करते हैं। और फिर, वहाँ एक विशेष शब्द-भेद, "तीव्रक", जो एक शाल शब्द वर्ग है, केवल तीव्रता, प्रवृत्ति, अवधि, तथा अनुक्रम का द्योतन करता । तीव्रकों, का कार्य तीव्रताओं, "शक्तियों" को अभिव्यक्त करना है और यह वे किस प्रकार अपने परिवर्तन की गति जारी रखते हैं या बदलते हैं, ताकि तीव्रता ो विशाल,धारणा जब आवश्यक रूप में सदैव परिवर्तनशील तथा या निरन्तर रहने ाली मानी जाती है तो, वे प्रवृत्ति और अवधि का भी समावेश कर लें। तीव्रक ात्रात्मक, दरजा, गति,, निरन्तरता, आवृत्ति, तीव्रता का घटना या बढ़ना, निकट-म अनुक्रम बाधा या मध्यान्तर के पश्चात् अनुक्रम आदि को सूचित करते हैं, साथ शक्तियों के गुणों को भी सूचित करते हैं जिन्हें हम रूपकात्मक ढंग से अभिव्यक्त हते हैं जैसे चिकना, समतल, कठोर, खुरदरा। इनका एक आश्चर्यजनक वैशिष्ट्य ह है कि इनमें वास्तविक "स्पेस" स्थान या गति वाले शब्दों से समानता का भाव है परन्तु जिनका हमारे लिए "एक ही अर्थ है।" होपी में ऐसे स्थानवाचक ब्दों से केवल स्पष्ट व्युत्पत्ति के आभास-मात्र से अधिक और कुछ नहीं है।[8] अतः

. इस प्रकार का एक आभास या सकेत मात्र यह है कि तीव्रक (Long in duration) 'अवधि में दीर्घ, जबकि विशेषण (Long in space) 'स्पेस में दीर्घ' से बिल्कुल भिन्न है तथापि इसमें वही धातु प्रतीत होती है जो (large) स्पेस की 'विशालता' में है। दूसरा वह है जिसमें किन्हीं तीव्रकों के साथ प्रयुक्त स्पेस का (some where) "कहीं पर" का अर्थ है किसी 'अनिश्चित समय पर'। सम्भवतः यह बात सत्य नहीं, तथा यह केवल तीव्रक ही है जो काल तत्व प्रस्तुत करता है, जिससे कि 'Somewhere' 'कहीं' अब भी स्पेस का द्योतन करता है तथा इन अवस्थाओं से तथा स्पेस

जब कि होपी भाषा अपनी संज्ञाओं के विषय में अत्यधिक मूर्त है, वह तीव्रकों के विषय में इतनी अमूर्त है कि हमारी समझने की शक्ति से बाहर हो जाती है।

मासाय तथा होपी में अभ्यासगत विचार

मासाय तथा होपी भाषियों के अभ्यासगत विचार-जगत् की यहां की जाने वाली तुलना निस्सन्देह अपूर्ण है। यहाँ पर केवल कुछ प्रमुख वषम्यों का विवेचन करना ही सम्भव है जो कि पहले ही विवेचित भाषाई प्रभेदों से उद्भूत होते प्रतीत होते हैं। 'अभ्यासगत विचार' तथा 'विचार-जगत्' से मेरा अभिप्राय केवल भाषा से कुछ अधिक है, अर्थात् स्वयं भाषाई अभिरचनाओं से भी अधिक। इसमें अभिरचनाओं के सभी सादृश्यमूलक तथा अभिव्यंजक मूल्यों को भी सम्मिलित करता हूँ (जैसे–– हमारा काल्पनिक स्थान (स्पेस) तथा उसका दूरस्थ तात्पर्य) तथा भाषा और सम्पूर्ण संस्कृति के बीच समस्त आदान प्रदान को, जिस में बहुत अधिक मात्रा ऐसी है जो भाषाई नहीं है परन्तु फिर भी भाषा के आकृतिदायक प्रभाव को प्रकट करती है। संक्षेप में, यह 'विचार-जगत्' एक लघु ब्रह्माण्ड है जिसे प्रत्येक व्यक्ति अपने अन्दर लिए रहता है, और जिसके द्वारा वह ब्रह्माण्ड को, जैसे भी सम्भव हो मापता है और समझने का प्रयत्न करता है। मासाय लघु ब्रह्माण्ड ने वास्तविकता का विशलेषण अधिकतर वस्तुओं, (पिण्डों तथा अर्धपिण्डों) तथा प्रसारात्मक परन्तु अरूपात्मक सत्ता की विधियों, जिसे 'द्रव्य' या 'पदार्थ' भी कहते हैं, के रूप में किया है। यह सत्ता को ऐसे द्विपद-सूत्र के माध्यम से देखने की प्रवृत्ति रखता है जो किसी भी सत्व (सत्तायुक्त पदार्थ) को स्थानगत रूप (torm) तथा रूप से सम्बन्धित स्थानगत अरूपात्मक सांतत्यक के रूप में अभिव्यक्त करता है, जिस प्रकार पात्रगत सामग्री अपने पात्र की रूपरेखा से सम्बन्धित है। अस्थानीय सत्वों का कल्पनात्मक रीति से स्थानीकरण कर लिया जाता है, तथा रूप और सांतत्यक के समान अर्थों से युक्त कर दिया जाता है।

होपी लघु ब्रह्माण्ड ने वास्तविकता का विश्लेषण **घटनाओं** के (अधिक उपयुक्त शब्दों में घटनन) रूप में किया प्रतीत होता है, जिनका निर्देशन दो प्रकार से किया जाता है––वस्तु परक तथा आत्मपरक ढंग से। वस्तुपरक ढंग से, यदि यह केवल इन्द्रियगम्य भौतिक अनुभव हो तो घटनाओं की अभिव्यक्ति केवल रूप-रेखाओं रंगों, गतियों तथा अन्य गोचर सूचनाओं के रूप में की जाती हैं। आत्मपरक ढंग से,

---

से निरपेक्ष्य अनिश्चित स्पेस का अर्थ केवल सामान्य प्रयोजनीयता होता है। एक अन्य संकेत है कालचक्र-दर्शी शब्द ' after-noon **'; इस शब्द में वह तत्व जिसका अर्थ '** after **' पश्चात है, '**to seperate**' पृथक करना धातु से व्युत्पादित है। इस प्रकार के अन्य आभास भी मिलते हैं, परन्तु वे बहुत विरले तथा अपवादमात्र हैं, तथा स्पष्टतया वे हमारे अपने स्पेसीय रूपकीकरण की तरह नहीं हैं।**

भौतिक तथा अभौतिक दोनों के लिए घटनाओं को अदृश्य तीव्रता के कारण की अभिव्यक्ति समझ लिया जाता है, जिनपर उनकी स्थिरता या झुकाव निर्भर करता है। इसका अर्थ यह हुआ कि विद्यमान (सत्व) सभी एक प्रकार से उत्तरोत्तर कालीन नहीं होते परन्तु कुछ पौधों के बढ़ने के क्रम की तरह, कुछ असंगठित तथा लुप्त होकर, अन्य रूपान्तरण के प्रक्रिया-क्रम द्वारा; और कुछ हिंसक शक्तियों का प्रभाव पड़ने से पहले तक एक ही रूप में स्थिर रहकर (उत्तरोत्तर कालीन) हो जाते हैं। प्रत्येक 'विद्यमान' (सत्व) जो अपने आप को एक सुनिश्चित पूर्ण के रूप में अभिव्यक्त करने का समर्थ्य रखता है, उसके स्वभाव में अपनी आवधिक विधि की शक्ति निहित होती है: तथा उसकी वृद्धि, ह्रास, स्थैर्य, चक्रीयता, अनुतिता या सर्जनात्मकता। अत: सभी कुछ पहले ही उस मार्ग के लिए तैयार है जो वह अपनी पूर्ववर्ती अवस्थाओं द्वारा प्रकट करता है, और जो कुछ बाद में होगा, जो कुछ अंशत: हो चुका है, तथा अंशत: वैसा तैयार होने की प्रक्रिया में है। एक विशेष महत्व तथा बल, इस तैयार करने की प्रक्रिया पर, या जगह के तैयार किए जाने वाले पक्ष पर आश्रित रहता है और वह होपी के लिए उस 'वास्तविकता के गुण' के समान है जो गुण हमारे लिए द्रव्य या पदार्थ का है।

होपी संस्कृति में अभ्यासगत व्यवहार के वैशिष्ट्य

हमारा तथा होपियों का व्यवहार भाषाई रूप से अनुबन्धित लघु ब्रह्माण्ड के साथ बहुत प्रकार से समन्वित होता हुआ प्रतीत होता है। जैसा कि मेरी अग्निकाण्ड सम्बन्धी नोटबुक से विदित है कि लोग परिस्थितियों के विषय में उसी तरह का व्यवहार करते हैं, जैसी कि वे उनके बारे में बातचीत करते हैं। होपी व्यवहार का एक वैशिष्ट्य है—"तैयारी करने पर बल देना" इसमें घटनाओं से काफी पहले घोषणा करना तथा तैयारी करना, अपेक्षित परिस्थितियों के नैरन्तर्य को सुनिश्चित बनाने के लिए कठिन पूर्वोपाय, तथा सही परिणाम को तैयार कराने वाली शुभकामना पर बल भी सम्मिलित हैं। दिनों की गणना पद्धति के सादृश्यों पर ही विचार कीजिए। समय की गणना मुख्यत: 'दिन द्वारा' की जाती है (talk,-tala) या 'रात्रि द्वारा' (tok), जो कि संज्ञा शब्द नहीं है अपितु तीव्रक हैं, पहला शब्द प्रकाश या 'दिन' धातु से बनाया गया है, दूसरा अन्य धातु से, जिसका अर्थ 'सोना' है। गणना, क्रमसूचक संख्यावाचकों द्वारा की जाती है। यह पद्धति कुछ भिन्न मनुष्यों या भिन्न वस्तुओं को गिनने की पद्धति नहीं है, यद्यपि वे क्रमश: उत्तरोत्तर प्रतीत होते हैं; क्योंकि, फिर भी वे एक समुदाय में एकत्रित हो सकते हैं। यह एक ही ऐसे व्यक्ति या वस्तु की क्रमश: उत्तरोत्तर पुन: प्रकटन की गणना है जो एक समुदाय का रूप ग्रहण करने में असमर्थ है। दिन की आवर्तनीयता के विषय में बहुत से व्यक्तियों की तरह (बहुत से दिन) व्यवहार करने से सम्बन्धित यह सादृश्य नहीं है, जैसा कि करने की हमारी प्रवृत्ति है, परन्तु इसका सादृश्य ऐसे व्यवहार से है जिसमें **उसी** व्यक्ति का पुन: पुन: आगमन हो। कोई भी, केवल एक ही व्यक्ति को विषय बनाकर कई व्यक्तियों को बदल नहीं सकता, परन्तु कोई भी तैयारी कर सकता है, और

उसी व्यक्ति के उत्तरवर्ती आगमनों को, प्रस्तुत आगमन पर कार्य द्वारा प्रभाव डाल कर बदल सकता है। भविष्य विषयक विवेचन करने का होपी में यही ढंग है जिससे यह अपेक्षित है कि प्रस्तुत परिस्थिति के अन्दर कार्य करके प्रकट, तथा गुप्त दोनों प्रकार के संस्कारों को भविष्यवर्ती दिलचस्प घटना तक ले जाए। कोई भी यह कह सकता है, कि होपी समाज हमारी इस लोकोक्ति (well begun is half done) 'अच्छी तरह आरम्भ किया हुआ काम आधा होने के बराबर है' को तो समझता है, परन्तु इस अभिव्यक्ति 'कल दूसरा दिन है' को नहीं समझ सकेगा। यह तथ्य अधिकांश होपी वैशिष्ट्य की व्याख्या कर सकता है।

होपी के इस तैयारी वाले व्यवहार को घोषणा, बाह्य तैयारी, आन्तरिक तैयारी, अप्रकट सहभागिता; तथा अध्यवसाय में विभाजित किया जा सकता है। घोषणा करना या उपक्रमात्मक विज्ञापन एक विशिष्ट अधिकारी प्रधान उद्घोषक का महत्वपूर्ण कार्य होता है। बाह्य तैयारी के अन्दर पर्याप्त मात्रा में दृश्य गतिशीलता होती है। यह आवश्यक नहीं कि उसमें सभी कुछ हमारी समझ के लिए प्रत्यक्ष रीति से उपयोगी हो। उसमें सम्मिलित है—साधारण अभ्यास, पूर्वाभ्यास, तैयार होना, प्रारम्भिक औपचारिकताएं, विशेष खाद्य सामग्री के लिए तैयारी करना आदि आदि, (ये सभी किसी मात्रा में हमें बहुत श्रमसाध्य प्रतीत हो सकती हैं), सघन एवं सतत, (शारीरिक) पेशीय क्रियाएं, जैसे भागना, दौड़ना जिनके विषय में यह समझा जाता है कि ये घटनाओं के विकास की गति को बढ़ा देती है, (जैसे फसल की वृद्धि) अनुकरणात्मक तथा अन्य प्रकार के जादू, वे तैयारियाँ जो गोपनीय सिद्धान्तों पर आधारित हैं, सम्भवत: जिनमें रहस्यमय उपकरणों–जैसे प्रार्थना की छड़ी, प्रार्थना के लिए पक्षियों के 'पंख', प्रार्थना, भोजन, आदि का समावेश होता है, और अन्ततः महान चक्रीय धर्मानुष्ठान तथा नृत्य भी, जिनका महत्व वर्षा तथा फसल को तैयार करने का है। 'तैयार करने' के अर्थ वाली बहुत सी क्रियाओं में से एक से 'फसल' या 'खेती' संज्ञा व्युत्पन्न की गई है: 'na' twani 'तैयार किया हुआ' या 'तैयारी में'।१

आन्तरिक तैयारी में प्रार्थना तथा मनन चिन्तन, होता है, यदि कुछ कम प्रबलता अपेक्षित हो तो शुभकामनाओं तथा शुभकांक्षाओं का प्रयोग अपेक्षित फल की अभिवृद्धि के लिए किया जाता है। होपी व्यवहार 'इच्छा' तथा विचार की शक्तियों पर बल देता है। उनके 'लघु ब्रह्माण्ड' के अनुसार यह नितान्त स्वाभाविक है कि उन्हें बल देना चाहिए। इच्छा तथा विचार सब से पहली अतः सबसे अधिक महत्वपूर्ण तथा तैयारी की सबसे अधिक नाजुक तथा निर्णायक अवस्था है। इसके अतिरिक्त,

---

१. होपी के 'तैयार करना' (preparing) अर्थ को प्रकट करने वाली क्रियाएँ स्वाभाविक हैं; वे हमारी क्रिया (prepare) से प्राँजल रूप में समान नहीं हैं; अतः ' na'twani ' का अर्थ 'अभ्यास किया हुआ', 'परखा हुआ', या अन्य प्रकार से भी किया जा सकता है।

एक होपी के लिए किसी व्यक्ति की इच्छाएं तथा विचार न केवल उसके अपने कार्यों को प्रभावित करते हैं अपितु प्रकृति के कार्यों को भी। यह सब पूर्णतया स्वाभाविक है। चैतन्य को स्वयं कर्म, प्रयत्न, तथा उस क्रियाशक्ति का बोध है, जो चिन्तन और इच्छा करने में रहती है। भाषा से भी अधिक प्राथमिक अनुभव यह बताता है कि यदि कर्मशक्ति का विस्तार कर दिया जाए तो उसके परिणाम उत्पन्न होंगे। हमारी यह विश्वास करने की प्रवृत्ति है कि हमारे शरीर इस शक्ति को रोक सकते हैं, तथा इसे दूसरे पदार्थों पर प्रभाव डालने से भी वर्जित कर सकते हैं; जब तक कि हम यह इच्छा न करें कि हमारे शरीर इस प्रत्यक्ष-कार्य को करें। परन्तु यह इसलिए हो सकता है कि हमारे अपने भाषाई आधार ऐसे सिद्धान्त के लिए हैं, जिनके अनुसार 'द्रव्य' जैसी अरूपात्मक इकाइयां भी अपने आप में 'चीजें' हैं, जो केवल समान वस्तुओं द्वारा ही पीट कर बढ़ाई जा सकती हैं (आघातवर्ध्य हैं), अधिक द्रव्य द्वारा, अतः जीवन तथा विचार की शक्तियों के प्रभाव से सरक्षित हैं। 'घर के बाहर जलाई गई रोशनी' यह सब करती है, ऐसा सोचने, या करने से, यह सोचना अधिक अस्वाभाविक नहीं है, कि विचार प्रत्येक वस्तु से सम्पर्क स्थापित कर लेता है तथा सारे विश्व में व्याप्त हो जाता है। और यह फर्ज करना भी अस्वाभाविक नहीं है कि विचार--किसी भी अन्य शक्ति की तरह अपने प्रभाव के चिन्ह छोड़ देता है। अब, जबकि हम एक विशेष वास्तविक गुलाब के पौधे के विषय में सोचते हैं तो हम यह नहीं मान बैठते हैं कि हमारा विचार उस वास्तविक पौधे तक जाता है, और उसके साथ इस प्रकार सम्पर्क स्थापित करता है जैसे उस पर फेंकी गई रोशनी। अब हम गुलाब के पौधे के विषय में सोच रहे हैं, तो हमारी चेतना किस प्रकार व्यवहार कर रही है, तब इस विषय में हम क्या फर्ज करते हैं? सम्भवतः हम मान लेते हैं कि यह एक मानसिक प्रतिकृति के साथ व्यवहार कर रही है जो एक गुलाब का पौधा तो नहीं है अपितु उसका मानसिक प्रतिनिधि है। परन्तु यह सोचना स्वाभाविक क्यों होना चाहिए कि हमारा विचार एक 'प्रतिनिधि' के साथ व्यवहार कर रहा है, और वास्तविक गुलाब के पौधे के साथ नहीं? सम्भवतः हम इसलिए सोचते हैं कि हमें थोड़ा सा यह बोध है कि हम अपने साथ सदैव एक सम्पूर्ण काल्पनिक (स्पेस) स्थान रखते हैं जो मानसिक प्रतिनिधियों से भरा पड़ा है। हमारे लिए मानसिक प्रतिनिधि पुराने परिचित यात्री हैं। काल्पनिक (स्पेस) 'स्थान' की प्रतिकृतियों के साथ साथ, जिन्हें हम गुप्तरूप से सम्भवतः केवल काल्पनिक मानते हैं, हम वास्तविक रूप में विद्यमान गुलाब के पौधे का विचार भी जोड़ देते हैं, जो एक बिल्कुल अलग बात हो सकती है, शायद ठीक इसीलिए कि हमारे पास इसके लिए केवल वही एक सरल सुलभ "स्थान" है। होपी विचार-जगत् में कोई काल्पनिक स्पेस नहीं है। इसका उपपरिणाम यह हुआ कि वह वास्तविक स्पेस का विवेचन करने वाले विचार का स्थान कहीं भी निर्धारित नहीं कर सकता, केवल वास्तविक स्पेस में (निर्धारित) कर सकता है, न ही वह वास्तविक स्पेस को विचारों के प्रभाव से अलग रख सकता है। एक होपी भाषी स्वाभाविक रूप से यह मान लेगा कि उसका विचार (या वह

स्वयं) गुलाब के पौधे के साथ टकराता है, या अधिक सम्भावना इस बात की है कि उसका विचार 'अनाज के पौधे' के साथ टकराता है जिसके विषय में वह सोच रहा है। अतः, विचार खेत में खड़े पौधे के पास, अपने कुछ चिन्ह (प्रभाव) अवश्य छोड़ेगा। यदि यह अच्छा विचार है, या स्वास्थ्य तथा विकास एवं वृद्धि सम्बन्धी है, तो वह पौधे के लिए अच्छा रहेगा; यदि बुरा विचार है तो परिणाम इसके विपरीत होंगे।

होपी-भाषी विचार के तीव्रता-पक्ष पर अधिक बल देते हैं। अधिक प्रभावशाली होने के लिए यह आवश्यक है कि विचार, चेतना में बिल्कुल स्पष्ट, निश्चित, स्थिर, सतत तथा दृढ़तापूर्वक अनुभूत भावनाओं से भरा हो। वे इस विचार को अंग्रेजी के अनुसार इस प्रकार व्यक्त करते हैं" 'Concentrating' " 'ध्यान केन्द्रित करना' 'Holding it in your heart' 'अपने हृदय में धारण करना', 'putting your mind on it' 'अपने मन को इस पर लगाना' 'earnestly hoping' 'सच्चे हृदय से आशा करना'। विचारशक्ति ही धर्मानुष्ठानों, प्रार्थना-छड़ियों, तथा कर्मकाण्डीय धूम्रपानों की आधार है। प्रार्थना का हुक्का 'ध्यान केन्द्रित करने का' साधन माना जाता है (यह मुझे मेरे सूचक ने बताया) इसका नाम है nat wanpi 'नात्वॉन्पी' अर्थात् 'तैयारी कराने का उपकरण।'

'अप्रकट रूप से सम्मिलित होने' का अर्थ है—उन लोगों का मानसिक सहयोग जो वास्तविक कार्य में भाग नहीं ले रहे हैं, चाहे वह कोई साधारण काम हो या शिकार, दौड़ या धर्मानुष्ठान, वे अपने विचार तथा शुभकामनाओं को उस कार्य की सफलता के लिए उस ओर प्रेषित करते हैं। घोषणाएँ प्रायः ऐसे मानसिक सहायकों के सहयोग प्राप्ति का अनुरोध करती हैं तथा प्रकट रूप में भाग लेने वालों के सहयोग की अपेक्षा भी, तथा उन में लोगों के लिए उपदेश होता है कि वे अपनी सक्रिय शुभाकांक्षाओं द्वारा सहायता करें[10]। सहानुभूतियुक्त श्रोताओं या फुटबाल के खेल में (तालियाँ बजाकर) प्रोत्साहित करने वाले दर्शकों के विषय में हमारी धारणाओं के के साथ समानता से यह तथ्य छुपना नहीं चाहिए कि वह मौलिक रूप से प्रेषित विचार की शक्ति होती है, साधारण रूप में सहानुभूति या प्रोत्साहन मात्र नहीं, जिसकी अपेक्षा अप्रकट रूप में भाग लेने वालों से की जाती है। वास्तव में ये अप्रकट रूप से भाग लेने वाले लोग अपने घातकतम कार्यों को पहले ही प्रविष्ट कर देते हैं, खेल होने के समय नहीं। विचार शक्ति का एक उपपरिणाम, अशुभ के लिए 'अशुद्ध

---

10. **देखिए, जैसे** Ernest Beaglehole notes on Hopi economic life (yale University pnblication iu Anthropology, no. 15, 1937) **विशेष रूप से वह प्रसंग जहां खरगोश के शिकार की घोषणा है, तथा पृष्ठ 30 पर तोरेवा (Toreva) बहार की स्वच्छता से सम्बन्धित गतिविधियों के वर्णन—विविध गतिविधियों के आयोजन का उद्घोषण, तथा अन्ततः प्राप्त किए गए अच्छे परिणामों की अविच्छिन्नता के लिए आयोजन. तथा बहार के निरन्तर प्रवाह के निमित्त तैयारियाँ।**

विचार की शक्ति' के रूप में हुआ, अतः अप्रकट रूप में भाग लेने का उद्देश्य अशुभ-कर्मियों के अशुभ एवं हानिकारक विचारों को परास्त करने के लिए बहुत से शुभा-कांक्षियों की सामूहिक विचार शक्ति को प्राप्त करना। इस प्रकार का व्यवहार पारस्परिक सहयोग तथा सामाजिक भावना को बहुत अधिक प्रोत्साहन देता है। इस का यह अभिप्राय नहीं है कि होपी समाज में पारस्परिक वैमनस्यगत स्पर्धाएं अथवा परस्पर विरोधी स्वार्थों का बाहुल्य नहीं है। इतने छोटे से, पृथक् समाज में विचार की शक्ति द्वारा, उपक्रमात्मक सिद्धान्त तर्क-संगत ढंग से समस्त समाज के समन्वित, तीव्रीकृत तथा सम्मिलित महान् विचार को महान् शक्ति की ओर ले जाता हुआ, सामाजिक विघटन की प्रवृत्ति के विरुद्ध सहयोग की असाधारण कोटि के प्रति अवश्य सहायक होता है, जैसा कि बहुत से व्यक्तिगत झगड़ों के होते हुए भी होपी गाँव अपनी समस्त महत्वपूर्ण सांस्कृतिक गतिविधियों में (सहयोग=भावना को) प्रदर्शित करता है। होपियों की "उपक्रमात्मक" गतिविधियाँ आग्रही, तथा निरन्तर आग्रही आवृत्ति, या दोहराने पर बल देने के रूप में पुनः अपने भाषाई विचारों की पृष्ठ भूमि के परिणाम का प्रकाशन करती हैं। असंख्य छोटे-छोटे संवेगों के एकत्रीभूत मूल्यों की भावना, हमारी काल सम्बन्धी धारणा के समान ही काल की विषयीकृत तथा स्थानीकृत धारणा द्वारा कुण्ठित कर दी जाती है, जिसका (धारणा का) संवर्धन एक प्रकार की चिन्तन पद्धति द्वारा किया जाता है, जो अवधि के आत्मपरक बोध, तथा घटनाओं के निरन्तर "उत्तरकालीनीकरण" के बहुत निकट है। हमें—जिनकी दृष्टि से काल, स्थान के ऊपर एक गति है, अपरिवर्तनशील आवृत्तियाँ अपनी शक्ति को उस स्थान की इकाइयों की पंक्ति के साथ विकीर्ण करती हुई, तथा नष्ट होती हुई प्रतीत होती हैं। होपी के लिए अपरिवर्तनशील आवृत्ति नष्ट नहीं होती अपितु संगृहीत होती रहती हैं, क्योंकि उसकी दृष्टि में काल एक गति नहीं है, अपितु उस प्रत्येक वस्तु का, जो कभी की जा चुकी है, उत्तरकालीन 'होना' है। यह (प्रक्रिया) एक अदृश्य परिवर्तन का संचयीकरण है जो उत्तरवर्ती घटनाओं में विद्यमान रहता है।[11] जैसा कि हम देख चुके हैं यह इस तरह है

---

11. शक्ति संग्रहण की इस धारणा का, जो होपी के पर्याप्त व्यवहार से प्रकट होती है, भौतिकी में एक सादृश्य है। होपी के बहुत अधिक व्यवहारों से प्रकट होती प्रतीत होने वाली शक्ति संग्रहण की इस धारणा का भौतिकी में एक तुल्य रूप है : त्वरण (acceleration); यह कहा जा सकता है कि होपी विचार-धारा की भाषाई पृष्ठभूमि उसे यह मान्यता देने के लिए स्वाभाविक रूप से सज्जित करती है कि शक्ति, गति या तीव्रगति के रूप में प्रकट नहीं होती, अपितु एक संग्रहण या त्वरण के रूप में होती है। हमारी भाषाई पृष्ठभूमि हमारे अन्दर इसी मान्यता को रोकने में प्रवृत्त होती है, क्योंकि उचित रूप से जब हम धारणा बना लेते हैं कि शक्ति वह तत्व है जो परिवर्तन लाता है, तब हम परिवर्तन के विषय में एक शुद्ध गतिहीन परिवर्तनता की धारणा अर्थात् संग्रहण या त्वरण द्वारा सोचने के बदले अपने भाषाई रूपकात्मक

मानो दिन का लौटना ऐसा प्रतीत होता है जैसे उसी व्यक्ति का लौट आना; वह थोड़ा सा पुराना अवश्य हो जाता है परन्तु उसमें कल के सभी लक्षण विराजमान होते हैं, वह "दूसरे दिन" की भाँति नहीं होता, अर्थात् बिल्कुल भिन्न व्यक्ति की तरह नहीं होता। यह सिद्धान्त विचारशक्ति के साथ तथा सामान्य प्यूब्लो संस्कृति के वैशिष्ट्यों के साथ संयुक्त होकर होपी के धर्मानुष्ठानीय नृत्य में अभिव्यक्त होता है, जिसके द्वारा वर्षा तथा फसल की वृद्धि अपेक्षित होती है। यह अभिव्यक्ति नृत्य के सभी, पिस्टन की तरह के, छोटे छोटे पद संचालनों में होती है जिन्हें हज़ारों बार कई घंटों तक दोहराया जाता है।

पाश्चात्य सभ्यता में भाषाई अभ्यास के कुछ प्रभाव

होपी की अपेक्षा, भाषाई रूप में अनुबन्धित हमारी अपनी संस्कृति की विशेषताओं के विषय में कतिपय शब्दों के माध्यम से न्याय करना दोनों कारणों से अधिक कठिन है (१) विषय की विशालता, तथा वस्तुनिष्ठ ज्ञान की कठिनाई के कारण, (२) तथा विश्लेषणीय मनोवृतियों के साथ हमारी गहरी पैठी हुई परिचितियों के कारण। मेरी इच्छा है कि केवल कुछ इन वैशिष्टयों की मात्र रूपरेखा प्रस्तुत करूँ जो हमारी रूप + अरूप इकाइयोंया "पदार्थ" कीभाषाई द्विपदीयता के साथ, हमारी रूपकात्मकता के साथ, हमारे काल्पनिक 'स्पेस' के साथ, हमारे विषयीकृत काल के साथ संगत हों। ये सब, जैसा कि हम देख चुके हैं, भाषाई हैं।

उन दार्शनिक विचारोंने जो "पाश्चात्य संसार" के अत्यधिक परम्परागत वैशिष्ट्य हैं, 'रूप' 'पदार्थ' के द्विभागीकरण से बहुत बड़ी सहायता प्राप्त की है। इसमें भौतिकवाद, मनः-शारीरिक समानान्तरताएं, भौतिकी—कम से कम अपने परम्परागत "न्यूटनी रूप में", तथा सामान्य रूप से जगत् के विषय में द्वैत विचार सम्मिलित हैं। वास्तव में इसी में सभी कुछ सम्मिलित है जो "कठोर, व्यावहारिक, सामान्य ज्ञान" है। पूर्णतावादी, तथा वास्तविकता के विषय में सापेक्षतावादी विचार दार्शनिकों तथा कुछ वैज्ञानिकों को बहुत अच्छे लगते हैं, परन्तु वे पाश्चात्य जगत् के सामान्य लोगों के 'सामान्य ज्ञान' को अच्छे लगने में समर्थ नहीं हैं—इसलिए नहीं, कि प्रकृति स्वयं उनका निराकरण करती है (यदि वह करती तो दार्शनिक इसका पता लगा लेते) अपितु, इसलिए कि उनके विषय में चर्चा की जानी चाहिये और वह चर्चा एक नई भाषा के समान होगी। "सामान्य ज्ञान" जैसा कि इसके नाम से

तुल्य रूप 'गति' के द्वारा ही सोचते हैं, अतः हमारी साधारण भावना को एक धक्का सा लगता है जब हमें भौतिकी के प्रयोगों द्वारा पता चलता है कि गति के माध्यम से शक्ति की परिभाषा करना सम्भव नहीं, और यह, कि गति एवं रफ्तार, तथा इसी प्रकार 'विश्राम की स्थिति में होना' पूर्णतया सापेक्षिक है तथा यह, कि शक्ति का मापन केवल त्वरण द्वारा किया जाता है।

स्पष्ट है, और "व्यावहारिकता" जैसा कि इसके नाम से स्पष्ट नहीं, ये मुख्यत: बातचीत के विषय हैं, ताकि बोलने वाले को आसानी से समझा जा सके। कभी कभी यह भी कहा जाता है कि न्यूटनी (स्पेस) दिक्, काल, तथा पदार्थ को सभी लोग अन्तर्दृष्टि द्वारा समझ लेते हैं, जिस पर सापेक्षता का दृष्टांत यह दिखाने के लिए दिया जाता है कि किस प्रकार गणितशास्त्र अन्तर्दृष्टि को झूठा सिद्ध कर सकता है। यह, अन्तर्दृष्टि के प्रति अन्याय होने के साथ-साथ, एक तात्कालिक प्रश्न का उत्तर देने का प्रयत्न है, (१) जिसे इस लेख के प्रारम्भ में प्रस्तुत किया गया था, और जिसका उत्तर देने के लिए शोध कार्य आरम्भ किया गया था। उस शोध के परिणामों का प्रस्तुतीकरण अब समाप्ति के निकट है और मेरा विचार है कि उत्तर स्पष्ट मिल चुका है। लापरवाही से दिया गया वह उत्तर जो ब्रह्माण्ड के रहस्यों, जैसे सापेक्षतावाद का उद्घाटन करने में हमारी सुस्ती का आक्षेप अन्तर्दृष्टि पर करता है—वह ग़लत है। सही उत्तर यह है : न्यूटनी दिक्, काल, और पदार्थ अन्तर्दृष्टि हैं ही नहीं। वे संस्कृति और भाषा के मनश्चित्र हैं। न्यूटन ने उन्हें वहीं से प्राप्त किया।

'काल' विषयक हमारी विषयीकृत धारणा, फिर भी ऐतिहासिकता के अनुकूल है, तथा सबके अनुकूल है, जिनका सम्बन्ध रिकार्ड रखने से है, जबकि होपी की धारणा इसके प्रतिकूल है। होपी इस विषय में बहुत सूक्ष्म, जटिल, तथा सदैव विकासशील है; उसके पास इस प्रश्न का, कि कब एक घटना समाप्त होती है और कब दूसरी घटना आरम्भ होती है, कोई बना बनाया उत्तर नहीं है। जब यह विवक्षित है कि प्रत्येक चीज़ जो एक बार हो चुकी वह अब भी है, परन्तु जो कुछ रिकार्ड बताते हैं या स्मृति बताती हैं उससे अनिवार्यत: भिन्न रूप में है, तो वहाँ अतीत का अध्ययन करने की बहुत कम प्रेरणा होती है । जहां तक वर्तमान का सम्बन्ध है, प्रोत्साहन उसके अभिलेखन के लिए नहीं होगा, अपितु इसे "उपक्रम" मानने के लिए होगा। परन्तु हमारा विषयीकृत 'काल' हमारी कल्पना के समक्ष एक फीते या खर्रे जैसी चीज प्रस्तुत करता है जिसमें समान रिक्त स्थान अंकित हैं जिनकी रिक्त-स्थान पूर्ति करना आवश्यक है। इसमें सन्देह नहीं कि काल के भाषाई विवेचन के प्रति लेखन पद्धति ने काफी सहायता की है, जिस प्रकार भाषाई विवेचन ने लेखन की उपयोगिताओं का मार्ग-निर्देशन किया है। भाषा तथा समस्त संस्कृति के पारस्परिक आदान प्रदान के द्वारा हमें निम्नलिखित उपलब्ध होते हैं। उदाहरणार्थ: (1) लिखित रिकार्ड, दैनन्दिनी, हिसाब-किताब रखना, लेखाशास्त्र द्वारा प्रोत्साहित गणितशास्त्र। (2) सुनिश्चित अनुक्रम में अभिरुचि, तिथीकरण, पंचांग, कैलैण्डर, कालानुक्रम, घड़ियाँ, काल-वेतन, काल-रेखा-चित्र, काल जैसा कि वह भौतिकी में प्रयुक्त होता है। (3) वर्ष-इतिवृत्त, इतिहास, ऐतिहासिक प्रवृत्ति अतीत में अभिरूचि, पुरातत्व विज्ञान, अतीत कालों की रीतियों के अनुकरण की प्रवृत्ति जैसे : श्रेण्यता, स्वच्छन्दतावाद।

जैसे हम अपने विषयीकृत काल के बारे में यह सोचते हैं कि वह भविष्य में

प्रसारित हो जाता है, और इसी तरह यह अतीत में भी होता है, अतः हम अपने भविष्य विषयक अनुमानों को उसी रूप में ढालते हैं जैसे कि हमारे अतीत के रिकार्ड हैं, एवम् तदनुसार कार्यक्रम, समय सारिणी तथा (बजट) आय-व्ययक, आदि बनाते हैं। (स्पेस) 'स्थान' की तरह की इकाइयों का वह रूपकात्मक गुण जिसके द्वारा हम काल को मापते हैं, या समझते हैं, हमें यह सोचने को बाध्य करता है 'कि काल की' 'रूपहीन इकाई' या काल का 'पदार्थ' समरूप हैं, तथा इकाइयों की संख्या के अनुपात में हैं। परिणाम स्वरूप, काल विषयक मूल्यों का यथानुपात आबंटन है जो अपने व्यापारिक ढांचे का वह रूप प्रदान करता है जो कालगत—यथानुपातीय मूल्यों पर आधारित है : काल वेतन (काल-कार्य, छुटपुट कार्यों' का स्थान निरन्तर लेता रहता है) किराया, उधार, सूद, अवमूल्यन शुल्क, तथा बीमे की किश्तें, इत्यादि। इसमें सन्देह नहीं कि यह विशाल व्यवस्था, यदि एक बार बन जाए तो काल के किसी भी प्रकार के भाषाई विवेचन के अन्तर्गत सुचारू रूप से चलती रहेगी, पर इसका इस प्रकार बनना और इस विशेष रूप, तथा वृहदाकार को प्राप्त करना, जो इसने पाश्चात्य जगत् में प्राप्त किया है, वह एक सत्य है, जो निश्चित रूप से मासाय भाषाओं की अभिरचनाओं के अनुरूप है। काल के साथ अत्यधिक भिन्न भाषाई व्यवहार करने पर क्या हमारी जैसी सभ्यता सम्भव हो सकती है ? —यह एक बहुत बड़ा प्रश्न है—हमारी सभ्यता में, हमारी भाषायी अभिरचनाओं में, तथा कालक्रम के साथ हमारे व्यवहार की संगति जैसी भी है, वह सब परस्पर अनुरूप है। हमें निस्सन्देह कलेण्डरों, घण्टों, और घड़ियों का प्रयोग करने की प्रेरणा प्राप्त है और हम 'काल' को अधिकाधिक सुनिश्चित रूप में मापना चाहते हैं, यह व्यवहार विज्ञान को सहायता प्रदान करता है, और बदले में विज्ञान इन प्रसिद्ध सांस्कृतिक लीकों पर चलता हुआ, संस्कृति को एक उत्तरोत्तर वृद्धि प्राप्त करने वाला प्रयोगों का, आदतों का, और मूल्यों का ऐसा भण्डार सौंप देता है जिसके द्वारा संस्कृति पुनः विज्ञान का निर्देशन करती है। परन्तु इस सर्पिल प्रगति के बाहर क्या रह जाता है ? विज्ञान ने अब यह पता लगाना आरम्भ कर दिया है कि इस विश्व में कुछ ऐसी चीजें भी हैं जो उत्तरोत्तर वर्धनशील सर्पिल गति विषयक हमारी धारणाओं के अनुरूप नहीं हैं। विज्ञान एक नई भाषा बनाने का प्रयत्न कर रहा है जिसके द्वारा वह अपना तालमेल एक विशालतर विश्व के साथ बैठा सके।

यह स्पष्ट है कि किस प्रकार 'समय बनाने' की धारणा पर बल देना उपरोक्त सभी स्थानों पर लागू होता है तथा यह काल का बहुत ही स्पष्ट विषयीकरण है, जो रफतार के उस उच्च मूल्यांकन की ओर ले जाता है, जो अपने आप को हमारे व्यवहार में बहुत अधिक प्रकट करता है।

एक अन्य व्यवहार-परक प्रभाव यह है कि अनन्त मापक फीते पर समरूप में अंकित 'काल' विषयक हमारा मनश्चित्र, जो नियमितता एवं एकरसता के वैशिष्ट्य से युक्त है, हमें इस प्रकार व्यवहार करने को प्रोत्साहित करता है

मानो वह एकरसता उससे अधिक सत्य हो जितनी कि वह वास्तविक रूप में है। अर्थात् यह हमें नित्य-क्रमबद्ध होने में सहायता प्रदान करता है। जो कुछ भी इस विचारधारा को धारण करता है, सत्ता के नित्य-क्रमिक पक्षों का सहयोग देने के लिए हमारी प्रवृत्ति उसी का चयन, तथा उसी का पक्ष लेने की हो जाती है।

इस का एक पक्ष है---सुरक्षा की मिथ्या भावना प्रदर्शित करना, या यह धारणा बना लेना कि सभी कुछ ठीक चलता रहेगा, तथा जोखिमों को पहले से ही जानने तथा उनसे अपनी सुरक्षा करने की भावना का अभाव। ऊर्जा (energy) को काम में लगाने की हमारी विधि नित्यक्रमिक कार्यवाहन में ठीक कार्य करती है, और नित्यक्रमिक पद्धतियों द्वारा ही हम उसमें सुधार करने का प्रयत्न करते हैं। उदाहरणार्थ, हम ऊर्जा को दुर्घटना करने, आग लगाने, और विस्फोट करने आदि से, जिन्हें वह निरन्तर बहुत बड़े पैमाने पर कर रही है, रोकने में अपेक्षाकृत उदासीन हैं। एक छोटे, एकाकी, तथा खतरनाक परिस्थितियों वाले समाज के लिए, जैसा कि होपी समाज अब है, या कभी था, जीवन की आकस्मिकता के प्रति इस प्रकार की उदासीनता विनाशक सिद्ध हो सकती है।

अत: हमारा भाषाई रूप से निर्धारित विचार-संसार न केवल हमारे सांस्कृतिक अभिपूजित-मूल्यों एवं आदर्शों को सहयोग देता है, अपितु, हमारी अचेतन व्यक्तिगत प्रतिक्रियाओं को भी अपनी अभिरचनाओं में व्यस्त कर लेता है, और उन्हें एक विशेष प्रकार का वैशिष्ट्य प्रदान करता है। उनमें से एक वैशिष्ट्य जैसा कि हम देख चुके हैं, उदासीनता या लापरवाही है, जैसे बेतहाशा गाड़ी चलाने, या रद्दी की टोकरी में जलता हुआ सिग्रेट का टुकड़ा फेंक देने आदि के व्यवहार में। दूसरे प्रकार का वैशिष्टदय है, बोलते समय आंगिक चेष्टाएं। इनमें से बहुत सी आंगिक चेष्टाएं, जो कम से कम अंग्रजी भाषियों, या सम्भवत: सभी मासाय भाषियों द्वारा की जाती हैं, वे 'स्पेस' में चेष्टा के द्वारा ऐसे संकेतों का दृष्टाँत देने में सहायक होती है जो वास्तविक स्थानिक संकेत तो नहीं अपितु अस्थानिक सकेतों में से एक हैं, जिसको हमारी भाषा काल्पनिक स्पेस के रूपकों द्वारा प्रयोग करती है। अर्थात् हम 'समझ जाने' की अंग-चेष्टा उस समय करने में अधिक प्रवृत्त होते हैं जब हम दुर्ग्राह्य मायावी विचारों को समझने की बात करते हैं, न कि उस समय जबकि हम दरवाजे के कुण्डे को समझने की बात करते हैं। आंगिक चेष्टाएं रूपकात्मक, अत: कुछ स्पष्ट संकेतों को अधिक स्पष्ट करने के उद्देश्य से प्रयुक्त की जाती हैं। होपी में आंगिक चेष्टाएं बहुत कम हैं, संभवत: जिन अर्थों में हम समझते हैं, उन अर्थों में तो बिल्कुल नहीं हैं।

ऐसा प्रतीत होगा मानो गतिसंवेदना, या पेशियों की चेष्टाओं का बोध, यद्यपि भाषा से पहले प्रकट होता है, फिर भी उसे काल्पनिक स्पेस के भाषाई प्रयोग, तथा गति के रूपकात्मक प्रतीकों द्वारा बहुत अधिक चेतन बना दिया जाना चाहिए। गति-संवेदना यूरोपीय संस्कृति के दो पक्षों में अभिलक्षित होती है, कला, तथा खेल कूद में। यूरोपीय मूर्तिकला, जिसमें यूरोप अग्रगण्य है, शारीरिक

गतियों के महान अर्थों की अभिव्यक्ति करने के कारण अत्यधिक गति-संवेदनात्मक है। यूरोपीय चित्रकला भी इसी तरह की है। हमारी संस्कृति में नृत्य, 'प्रतीकवाद' या धर्मानुष्ठानों की अपेक्षा 'गति में उल्लास' को अभिव्यक्त करता है; और हमारा संगीत हमारे नृत्य के रूपों से बहुत अधिक प्रभावित है। हमारे खेलकूद भी "गति में संगीत" की भावना से अत्यधिक ओत-प्रोत हैं। होपी की दौड़ें तथा खेल अधिकतर सहनशक्ति, तथा दीर्घीकृत सतत तीव्रताओं पर बल देते प्रतीत होते हैं। होपी के नृत्य अत्यन्त प्रतीकात्मक हैं, तथा बहुत अधिक गंभीरता-पूर्वक किए जाते हैं, परन्तु उनमें बहुत अधिक गति या दोलन नहीं होते।

सह-संवेदन, या किसी अन्य इन्द्रिय से सम्बन्धित वैशिष्ट्यों का विशेष इन्द्रिय-ग्रहणों द्वारा अभिव्यंजित करने, जैसे 'प्रकाश' या 'रंग' को ध्वनियों द्वारा, तथा इसके विपर्यय अर्थात् ध्वनियों द्वारा प्रकाश या रंग को अभिव्यञ्जित करने को 'अधिक चेतन' उस भाषाई रूपकात्मक व्यवस्था द्वारा बना देना चाहिए जो अस्थानीय अनुभवों को स्थानीय अनुभवों के शब्दों द्वारा निर्दिष्ट करती है। यद्यपि यह व्यवस्था, निस्सन्देह, गहरे स्रोतों से उद्भूत होती है। संभवतः, पहले तो रूपक सहसंवेदन से उत्पन्न होता है, इसका विपर्यय नहीं; (अर्थात् रूपक से सहसंवेदन उत्पन्न नही होता) तथापि रूपक के लिए भाषाई अभिरचना में पूरी तरह बद्धमूल होने की आवश्यकता नहीं, जैसा कि होपी भाषा प्रकट करती है। 'अस्थानिक' अनुभव के पास एक सुव्यवस्थित इन्द्रिय है––श्रवणेन्द्रिय, क्योंकि गन्ध तथा स्पर्श बहुत कम व्यवस्थित हैं। अस्थानिक चेतना मुख्यतः विचार, भावना और ध्वनि का क्षेत्र है। स्थानिक चेतना, प्रकाश, रंग, रूप, (दृश्य) और स्पर्श का क्षेत्र है, तथा आकृतियों और आयामों को प्रस्तुत करती है। हमारी रूपकात्मक व्यवस्था, अस्थानिक अनुभवों का स्थानिक अनुभवों के सादृश्य पर नाम रख कर ध्वनियों, गंधों, स्वादों, भावों, तथा विचारों पर, रंगों, प्रकाशिताओं, आकृतियों, कोणों, बनावटों, तथा स्थानिक अनुभवों की गतियों के गुणों का आरोप कर देती है। और, कुछ सीमा तक विपरीत रूपान्तरण भी घटित होता है, क्योंकि स्वरों के विषय में कि सुर ऊंचा है, नीचा है, तेज़ है, मन्द है, भारी है, शानदार है, धीमा है इत्यादि, काफी ज्यादा चर्चा करने के बाद बोलने वाले को सुर-तत्वों के सादृश पर स्थानिक अनुभावों के कुछ तत्त्वों के विषय में सोचना आसान हो जाता है। अतः हम रंगों के 'सुर' की (a grey "monotone") जैसे "एक-सुरा" भूरा रंग', 'लाउड नेकटाई' उच्चस्वरयुक्त नेकटाई, तथा पोशाक के (taste) 'जायके' की बात करते हैं: जो सब के सब उल्टे रूप में 'स्थानिक' रूपक हैं। योरोपीय कला अपने उस ढंग में निराली है जिस ढंग से वह जान बूझकर सह-संवेदन के साथ खिलवाड़ करना पसन्द करती है। संगीत 'दृश्यों', रंगों, गतियों, ज्यामिति के नमूनों का द्योतन करने का प्रयत्न करता है; चित्रकला तथा मूर्ति-कला प्रायः जानबूझ कर संगीत की लय से निर्दिष्ट होती है, रंगों को समस्वरता, तथा विषमस्वरता के लिए भावनाओं के साथ जोड़ दिया जाता है। योरोपीय

रंग-मंच तथा गीतिनाट्य बहुत सारी कलाओं का संश्लेषण करना चाहता है। यह भी सम्भव है कि इस ढंग से हमारी रूपकात्मक भाषा, जो एक प्रकार से विचारों का सम्मिश्रण है—कला के माध्यम से गहरे तथा व्यापक मूल्यों वाले परिणामों को उत्पन्न कर रही है—एक गहरी सौंदर्यपरक भावना को (उत्पन्न कर रही है) जो हमारी इन्द्रियों द्वारा विविध रूपों में प्रस्तुत, दृश्यसत्ता की आधारभूत एकता के सीधे 'बोध' की ओर ले जाती है।

इतिहास-सम्बन्धी निहितार्थताएँ

भाषा, संस्कृति तथा व्यवहार का जाल ऐतिहासिक रूप में किस प्रकार व्यक्त होता है? कौन सी चीज पहले थी,—भाषाई अभिरचनाएं या सांस्कृतिक मानक? मुख्य रूप से ये दोनों एक दूसरे को प्रभावित करते हुए एक ही साथ विकसित हुए हैं। परन्तु इस साझेदारी में भाषा की प्रकृति एक ऐसा तत्व है जो स्वच्छन्द लचीलेपन को सीमित कर देता है और विकास के साधनों को अधिक निरंकुश रूप में कठोर बना देता है। ऐसा इसलिए होता है कि भाषा एक व्यवस्था है न कि मानकों का एक समूह। बड़ी बड़ी व्यवस्थित रूपरेखाएं किसी वास्तविक नई चीज में बदल तो सकती हैं, परन्तु बहुत धीरे धीरे, जबकि बहुत सी दूसरी सांस्कृतिक नवीनताएं अपेक्षाकृत अधिक तेजी से लाई जा सकती हैं। अत: भाषा, सम्प्रदाय के मन का प्रतिनिधित्व करती हैं। यह आविष्कारकों तथा नवीनताओं के द्वारा प्रभावित तो होती हैं, परन्तु बहुत कम, और बहुत धीरे, जब कि यह आविष्कारकों, तथा नवीनता लाने वालों के लिए तात्कालिक आज्ञप्तियों द्वारा नियम बना देती हैं।

'मासाय' का भाषा-संस्कृति 'मिश्र' प्राचीन काल से चलता आया है। इसके बहुत सारे 'स्थानिक' के द्वारा 'अस्थानिक' के रूपकात्मक निर्देश, प्राचीन भाषाओं में ही नियत हो चुके थे और विशेषतया लैटिन में। निस्सन्देह यह लैटिन का प्रसिद्ध वैशिष्ट्य है। यदि हम हिब्रू से तुलना करें तो पता चलेगा कि हिब्रू में 'अस्थान' के 'स्थान' के रूप में कुछ थोड़े से निर्देश हैं परन्तु लैटिन में अधिक हैं। 'अस्थानिकों' के लिए educo, religis, principia, comprehendo जैसे' शब्द रूपकीकृत भौतिक संकेत हैं: अंग्रेजी में लीड आउट (lead out) 'बाहर 'नेतृत्व करना', ट्राइंग बैक, 'पीछे प्रयत्न करना' पुन: प्रयत्न करना आदि। यह, सब भाषाओं के विषय में सच नहीं हैं—होपी के विषय में यह बात बिल्कुल असत्य है। यह तथ्य, कि लैटिन में विकास की दिशा 'स्थानिक' से 'अस्थानिक' की ओर थी; ('अंशत: बौद्धिकता में अपरिपक्व रोमनों का यूनानी संस्कृति के साथ सम्पर्क होने पर, सूक्ष्म अथवा अमूर्त चिन्तन को गौण प्रेरणा मिलने के कारण) और यह; कि उत्तरकालीन भाषाएं लैटिन का अनुकरण करने में अत्यधिक उत्साहयुक्त थीं—उस "धारणा" के लिए सम्भाव्य कारण प्रतीत होता है, जो भाषा-विज्ञानियों में अब भी रेंग रही है कि यह सभी भाषाओं में अर्थपरिवर्तन की स्वाभाविक दिशा है,

तथा पाश्चात्य विद्वजनमण्डलों में (प्राच्य विद्वजनमण्डलों के नितान्त विरोध में) इस अटल धारणा के लिए कारण यह है कि वस्तुपरक अनुभव आत्मपरक अनुभव का पूर्ववर्ती है। दर्शन-प्रणालियाँ इससे उल्टी दिशा के पक्ष की पुष्टि करती हैं, और निश्चित रूप से कभी-कभी विकास की दिशा इससे उल्टी होती है । अतः होपी भाषा में 'हृदय' के लिए शब्द, होपी भाषा की एक ऐसी धातु से, जिसका अर्थ सोचना या याद रखना है, बाद में बनाया हुआ दिखाया जा सकता है । या इस पर विचार कीजिए कि 'रेडियो' शब्द का ऐसे वाक्य में क्या अर्थ हो गया, जैसे "उसने एक नया रेडियो खरीदा" और इसकी तुलना "बेतार की टेलीफूनी के विज्ञान' से करें, जो इसका पहला अर्थ था ।

मध्यकालीन युग में लैटिन में पहले से ही बनी अभिरचनाएं बढ़ते हुए मशीनी आविष्कारों, उद्योगों, व्यापार, तथा पाण्डित्यपूर्ण एवं वैज्ञानिक विचारों के साथ अन्तर्गुम्फित होनी आरम्भ हो गई थी । उद्योग तथा व्यापार में मापन की आवश्यकताओं, मालगोदामों तथा भिन्न प्रकार के डिब्बों में भरी जाने वाली ढेर सारी सामग्रियों, भिन्न प्रकार के आकार-प्रकार के ढांचों जिन्हे बहुत से पदार्थों के लिए प्रयुक्त किया जाता था, मापक और तौलक इकाइयों के मानकीकरण, घड़ियों के आविष्कार, तथा समय का मापन, लेखा जोखा, हिसाब-किताब, इतिवृत्त, इतिहासों, गणित शास्त्र के विकास, तथा विज्ञान और गणित की साझेदारी आदि उपरोक्त बातों ने परस्पर सहयोग द्वारा हमारी भाषा एवं विचार जगत् को वर्तमान रूप प्रदान किया है ।

होपी इतिहास में, यदि हम समझने का प्रयत्न करें तो, हमें वहाँ एक भिन्न प्रकार की भाषा, और भिन्न प्रकार के सांस्कृकि एवं वातावरणात्मक प्रभाव एक साथ काम करते हुए प्रतीत होंगे । एक शान्तिपूर्ण समाज, जो भौगोलिक विशेषताओं तथा यायावर शत्रुओं के कारण सब से अलग कटा हुआ, बहुत कम वर्षा वाले प्रदेश में बसा हुआ, अनुर्वर कृषि, जिसे केवल अत्यन्त परिश्रम द्वारा ही सफल बनाया जा सके, (अतः उस समाज में डट कर काम करने और बारबार करने का मूल्य है), सहयोग की अनिवार्य आवश्यकता, (अतः वहाँ सामूहिक कार्य की मनोवृत्ति पर, तथा सामान्य रूप से अन्य मानसिक कारणों पर बल दिया जाता है) खेती और वर्षा मूल्यनिर्धारण के प्राथमिक मापदण्ड, अनिश्चित जलवायु, तथा अनुर्वर भूमि में अच्छी फसल सुनिश्चित बनाने के लिए बड़ी मात्रा में तैयारियाँ तथा सावधानियाँ, प्रकृति पर आश्रित रहने की गहरी अनुभूति के कारण प्रार्थना करना, तथा प्रकृति की शक्तियों के प्रति धार्मिक भावना, विशेषतः प्रार्थना और धर्म को सदैव-अपेक्षित वर्षा का वरदान प्राप्ति के लिए प्रयुक्त करना;--ये सब बातें होपी भाषाई अभिरचनाओं के साथ पारस्परिक आदान प्रदानात्मक प्रभाव डालती रहीं हैं ताकि उन्हें (भाषाई अभिरचनाओं को) विशेष साँचे में ढाल सकें, और पुनः उनके द्वारा ढाली जा सके और इस प्रकार धीरे धीरे होपी के जगत्विषयक दृष्टिकोण को मूर्तरूप दे सकें।

इस विषय का समाहार करने के लिए, इस अध्याय के आरम्भ में उठाए गए हमारे प्रश्न का उत्तर इस प्रकार है : सभी मनुष्यों को "काल" तथा "द्रव्य" विषयक धारणाएं, अनुभव द्वारा, तत्वतः उसी रूप में नहीं दी जाती, अपितु उस भाषा या भाषाओं की प्रकृति पर निर्भर करती हैं जिनके प्रयोग द्वारा उनका विकास हुआ है। वे **किसी एक व्याकरणगत व्यवस्था** (जैसे काल, या संज्ञा) पर इतना अधिक निर्भर नहीं करती, जितना कि उन अनुभवों के विश्लेषण करने और सूचना देने के तरीकों पर, जो भाषा में बोल-चाल के प्रचलन के रूप में एकीकृत, या स्थिर हो गए हैं, और जो विशेष व्याकरणिक वर्गीकरण की सीमा के पार निकल जाते हैं, ताकि इस प्रकार के 'प्रचलन' में शाब्दिक, रूप-प्रक्रियात्मक, वाक्यविन्यासात्मक तथा सामंजस्य के एक विशिष्ट ढांचे में समन्वित, परन्तु अन्य प्रकार से व्यवस्थित रूप में भिन्न तरीके भी सम्मिलित किए जा सकें। हमारा अपना 'काल' होपी की "अवधि" से भिन्न है। इसे (काल को) अत्यधिक सीमित विमाओं वाले एक स्थान की भांति माना जाता है, या इस प्रकार के स्थान के ऊपर एक प्रकार की गति, तथा तदनुसार एक बौद्धिक उपकरण के रूप में प्रयुक्त माना जाता है।[12] होपी "अवधि" स्थान तथा "गति" के संदर्भ में अचिन्तनीय प्रतीत होती है क्योंकि वह एक रीति है जिसमें जीवन, रूप से बिल्कुल भिन्न है, एक चेतना है, जो चेतना के स्थानिक तत्वों से पूर्णतया भिन्न है। हमारी 'कालविषयक' धारणा से उत्पन्न हुए कुछ विचार, जैसे कि सम्पूर्ण समकालिकता या युगपत्ता का विचार, इसे या तो होपी धारणा के अन्तर्गत अभिव्यक्त करना बहुत कठिन होगा, या अर्थहीन होगा, और उसे परिचालनात्मक धारणाओं द्वारा प्रतिस्थापित कर दिया जाएगा। हमारा 'पदार्थ', 'द्रव्य' या 'वस्तु' का भौतिक उपप्रकार है, जिसे बढ़ाई हुई अरूपगत इकाई के रूप में अवगत किया जाता है, जिसका 'रूप' के साथ संयोग करना आवश्यक है यदि किसी प्रकार की वास्तविक सत्ता अपेक्षित है तो होपी में इस के समकक्ष कोई धारणा नहीं है, वहाँ पर किसी प्रकार की 'अरूप-गत' बढ़ाई गई इकाइयाँ नहीं हैं, सत्ता का 'रूप' नहीं भी हो सकता है और हो भी सकता है, परन्तु रूप सहित और रूप रहित जो चीज़ होपी में है, वह है "तीव्रता" तथा "अवधि" ये न बढ़ाई गई इकाइयाँ हैं, और निम्नस्तर पर भी वैसी ही हैं।

परन्तु हमारी "स्थान" विषयक धारणा का क्या बना जिसे हमारे पहले प्रश्न में सम्मिलित किया गया था ? होपी और मासाय में जैसे काल विषयक कोई विशेष अन्तर नहीं वैसे ही स्थान के विषय में भी कोई ऐसा असाधारण अन्तर नहीं है, और सम्भवतः अनुभव द्वारा स्थान विषयक 'बोध' तत्वतः उसी रूप में दिया जाता है, चाहे भाषा कोई भी क्यों न हो। जेस्टाल्ट मनोवैज्ञानिकों के चाक्षुष बोध द्वारा किए गए प्रयोग इसे 'सत्य' के रुप में स्थापित करते प्रतीत होते हैं।

---

12. **इसमें** 'Newtonian' **तथा** 'Euclideau' **'स्पेस' इत्यादि सम्मिलित हैं।**

परन्तु स्थान की धारणा भाषा के साथ साथ कुछ बदलती अवश्य है क्योंकि बौद्धिक उपकरण के रूप में यह अन्य, 'काल' तथा 'द्रव्य' की व्यवस्था वाले बौद्धिक उपकरणों 12के सहगामी नियोजन के साथ निकटतम रूप में सम्बन्धित हैं, जो भाषाई रूप में अनुबन्धित हैं। हम भी अपनी आँखों से वस्तुओं को उसी 'स्थानिक' रूप में देखते हैं जिसमें होपी देखता है, परन्तु स्थान विषयक हमारी धारणा के अन्तर्गत काल, तीव्रता, प्रवृत्ति आदि अस्थानिक सम्बन्धों के प्रतिनिधि के रूप में कार्य करने का भी वैशिष्ट्य है, तथा एक 'शून्य' के रूप में कार्य करने का वैशिष्ट्य है, जो कल्पित रूपरहित इकाइयों द्वारा भरा जाना चाहिए, जिनमें से एक का नाम 'स्थान' भी है। होपी द्वारा समझे गए 'स्थान' का ऐसे प्रतिनिधियों के साथ कोई मानसिक सम्बन्ध नहीं होगा, परन्तु वह अपेक्षाकृत "शुद्ध" तथा बाह्य धारणाओं से अमिश्रित होगा।

हमारे दूसरे प्रश्न के सम्बन्ध में जो कि इस अध्याय के आरम्भ में उठाया गया था, सांस्कृतिक मानकों तथा भाषाई अभिरचनाओं के बीच सम्बन्ध तो है परन्तु सहसम्बन्ध अथवा अन्योन्याश्रय या भेद-निरूपणात्मक अनुरुपताएं नहीं हैं। यद्यपि होपी में काल-वाचक के अभाव से मुख्य उद्घोषकों का अनुमान लगाना या मुख्य उद्घोषकों से कालवाचकों के अभाव का अनुमान लगाना असम्भव होगा, किन्तु एक भाषा एवम् उसका प्रयोग करने वाले समाज में तथा शेष संस्कृति में एक सम्बन्ध हैं। चाहे यह व्यापक रूप में सत्य है या नहीं परन्तु जैसे भी दृष्टा त हैं जहाँ "बोलने के प्रचलन" समस्त सामान्य संस्कृति के साथ प्रगाढ़ रूप में एकीकृत हैं, और एकीकरण के अन्दर, प्रयोग में लाए गए भाषाई विश्लेषणों, एवं विविध व्यवहारपरक प्रतिक्रियाओं, तथा विविध सांस्कृतिक विकासों द्वारा ग्रहण किए गए रूपों में इस एकीकरण के अन्दर पारस्परिक सम्बन्ध हैं। अतः 'उद्घोषक–मुख्यों' के महत्व का सम्बन्ध तो है, परन्तु काल-व्यवस्था-रहितता के साथ नहीं, अपितु विचारों की एक व्यवस्था के साथ, जिसमें हमारे काल सूचकों से भिन्न कोटियां होनी स्वाभाविक हैं। इन सम्बन्धों के विषेश शीर्षकों के विषय में भाषा-विज्ञान, मानव-जाति-विज्ञान, या समाजशास्त्रीय विवरणों पर ध्यान केन्द्रित करने से इतना पता नहीं लगाया जा सकता जितना संस्कृति और भाषा का सम्पूर्ण परीक्षण करने से, (सदैव, तथा केवल तब, जबकि दोनों पर्याप्त समय तक ऐतिहासिक रूप में एक साथ रहे हों) जिनमें ऐसी श्रेणियों के अस्तित्व की अपेक्षा की जा सकती है जो इन विभागीय पद्धतियों (भाषा और संस्कृति) में आरपार व्याप्त हो गई हों, और यदि उनका अस्तित्व है ही, तो वे, अन्ततोगत्वा, अध्ययन द्वारा अन्वेषणीय हैं।

शॉनी में प्रातिपदिक रचना का जेस्टाल्ट तकनीक

C F. Voegelin ने शॉनी के जटिल समस्त-पदों की एक विशाल संख्या का विश्लेषण करने का कठिन तथा असाधारण कार्य सम्पन्न किया है। उसने शॉनी समस्तपदों के विश्लेषण कार्य को, घटक शब्दिमों, तथा अन्य रूपिमों को, शॉनी व्याकरण की रूपात्मक कोटियों के अनुसार वर्गीकृत करते हुए, तथा महत्वपूर्ण देशीय अर्थपरक सम्बन्ध का पता चलाते हुए, सम्पन्न किया। वह अर्थपरक सम्बन्ध एक ऐसी उपस्थित शब्दिम का था, जिसका व्यापक अर्थपरक प्रभाव होता है, और जो मातृभाषा को उस उपस्थित शब्दिम के अनिवार्य रूप से अनुवाद करने के लिए प्रेरित करता है, जबकि वह समस्तपद के अन्दर अन्य शब्दिमों के विशिष्ट अनुवाद की अवहेलना तक कर देता है।

Voegelin ने भाषाई प्रणाली के एक ऐसे भिन्न पक्ष के विनियोग का स्पष्टीकरण करने के लिए मुझसे कहा जिसे रूपात्मक व्याकरणिक विश्लेषण कर चुकने पर लागू किया जा सके, परन्तु जो कभी कभी ऐसे सिद्धान्तों का भी द्योतन कर सके जिनके द्वारा विभिन्न अर्थवाली शब्दिमों को विशेष अनुक्रमों में रखा जा सके, वे अनुक्रम चाहे समासों में हों अथवा वाक्यात्मक रचनाओं में हों, ताकि वे अर्थपरक प्रभाव उत्पन्न कर सकें।

भाषा-शास्त्री भारोपीय भाषाओं का अध्ययन इतने दीर्घकाल से करते आ रहे हैं कि वे उन भाषाओं के अत्यधिक विशिष्ट अनुक्रमों तथा परिणामी अर्थपरक प्रभावों का सामान्यीकरण ऐसे सामान्य सूत्रों के रूप में कर सकने में समर्थ हुए हैं, जैसे उद्देश्य और विधेय, कर्तृ-क्रिया-कर्म, विशेषण तथा विशेष्य, बहिष्केन्द्रीय बनाम अन्त: केन्द्रीय; तथा उन सम्बन्धों को जोड़ने तथा प्रयोग करने में सफल रहे हैं जो ऐसी "भारोपीयेतर" भाषाओं से केवल ऊपरी समानता रखते हैं, जो भारोपीय भाषाओं से अन्यथा बहुत भिन्न हैं। परन्तु यह अन्तिम योग्यता बहुत से विषयों में केवल सुखद सिद्ध हो सकती हैं, परन्तु कई बार सम्भवत: यह एक दुःखद संयोग सिद्ध हो। जब संरचना के नियम स्वयं ही इतने अधिक भिन्न हैं, तो ये वर्गीकरण लागू नहीं होते, और ये न तो अनुक्रम के नियमों का, और न ही पारिणामिक

---

* Appendix, PP. 303–406, to C. F. Voegelin, Shawnee stems and the Jacob P. Miami dictionary से पुनर्मुद्रित। Indianpolis : Indiana Historical Society, 1940 (Prehistory Research Series Vol I, no 9, April 1940).

अर्थपरक प्रभावों का विवरण दे सकते हैं। मैं ऊतो-अज़्तेकन परिवार की अज़्तेक भाषा से एक साधारण सा उदाहरण प्रस्तुत करता हूं। यह अज़्तेक भाषा भारोपीय के वाक्य-विन्यास प्रकार से बहुत अधिक भिन्न नहीं है। इस भाषा में विशेषण और विशेष्य का स्पष्ट सम्बन्ध बहुत निश्चित है, और विशेषणपद या विशेषक सदा विशेष्य पद से पहले आता है (यह आवश्यक निष्कर्ष क्यों है, इस तथ्य के स्पष्टीकरण के लिए काफी विस्तार की आवश्यकता पड़ेगी।) तो भी बहुत सी अभिव्यक्तियाँ Narrow Road 'तंग सड़क' जैसी अभिव्यक्तियों का अनुकरण करती है –O?–picak-tli जिसमें 'narrow' 'तंग' की अभिव्यक्ति एक प्रकार के क्रियापदीय भूतकालिक कृदन्त विशेषण के रूप द्वारा की जाती है—' 'narrowed' ' तंग बनाई गई (–picak–) और क्योंकि यह कृदन्त अन्त में रखा जाता है इसलिए Road 'सड़क' (–O?–) के बाद आएगा। इस भाषा में शब्द क्रम के साथ विशेषण तथा विशेष्य का पूर्ण सहसम्बन्ध यह निष्कर्ष निकालने पर बाध्य करता है कि 'narrow' (तंग) विशेष्य है तथा road 'सड़क' विशेषण है जैसे कि अंग्रेजी शब्द road side 'सड़क के किनारे' में है। तो भी यदि कोई new road 'नई सड़क' good road 'अच्छी सड़क' brick road ईट की सड़क' कहना चाहें तो इनमें road सड़क' विशेष्य होगी और अन्त में आएगी। ऐसी स्थिति में अज़्तेक भाषा में रचना करने के इच्छुक व्यक्ति के लिए विशेषण और विशेष्य की कोटियां किस काम की, जब वे road 'सड़क' जैसी साधारण धारणा के विषय में यह भी नहीं बता सकती कि अर्थप्रभावों में road 'सड़क' विशेषण है या विशेष्य, जब कि narrow road 'तंग सड़क' तथा good road 'अच्छी सड़क' आपस में इतने अधिक समान प्रतीत होते हैं? इससे व्यक्ति यही निष्कर्ष निकालता है कि एसी कोटियाँ भाषाई गोत्र व्यवस्थाएं हैं, तथा सामाजिक गोत्रव्यवस्थाओं के समान किसी सार्वभौमिक मानदण्ड का अनुकरण नहीं करती।

यही बात उद्देश्य-विधेय, कर्तृ-कर्म, कर्म-क्रिया के वर्गीकरणों के साथ हैं, यहाँ तक कि अंग्रेजी भाषा में भी The tree stood here 'वृक्ष यहाँ था' जैसे वाक्य का कर्तृ कर्म के रूप में किया गया विवरण कृत्रिम है, यद्यपि वह रूपात्मक दृष्टि से The boy ran 'लड़का दौड़ा' इस वाक्य के समान है। सम्भव है कि एक परिकल्पित अमेरिकन भाषा 'क' दूसरे वाक्य के लिए दो की अपेक्षा तीन या उससे अधिक शब्दिमों का प्रयोग करे। movement of the foot 'पैर की गति', (2) on a surface 'एक सतह पर' (3) Manifestation of the boy occurs quickly 'लड़के का आविर्भाव शीघ्रता से होता है।' सम्भवतः (3) में प्रत्यय भी जुड़े हुए हों, जो इसे रूपात्मक दृष्टि से 'क्रिया' अथवा 'गति' बनाएं—परन्तु ऐसे प्रत्यय पूरे वाक्य पर लागू होने वाले निपात (Operators) होंगे जो एक अथवा किसी दूसरी शब्दिम पर लागू नहीं होते। ऐसा वाक्य सचमुच उद्देश्य और विधेय में बाँटा नहीं जा सकता, यहाँ तक कि उस समय भी नहीं

जबकि उसमें केवल दो रूपात्मक शब्द हों। तथापि उसका विश्लेषण किया जा सकता है, तथा उसके अंश उन आवश्यक तत्वों के समान हैं, जिन्हें सूचित स्थिति से पृथक् किया गया है—अर्थात् उस स्थिति में कुछ ऐसा है जिसे 'सतह' के नाम से पुकारा जा सकता है, तथा कुछ ऐसा जिसे 'गतिशील चरण' कहा जा सकता है और कुछ ऐसा जिसे 'लड़का' कहा जा सकता है। हमारी समस्या यह निश्चित करना है कि समान परिस्थिति में से भिन्न भाषाएं भिन्न तत्वों को कैसे पृथक कर लेती हैं। प्राय: किसी भी भाषा का विवरण देने के लिए यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न है, तथा यह नहीं मान लेना चाहिए कि भाषा की परिस्थितियों के आवश्यक तत्वों का पृथक्-पृथक् रूप से प्रतिनिधित्व करने वाली शब्दिमों तथा रूपिमों को वाक्यों में जोड़ने के लिए दिए गए रूपात्मक नियमों के विवरण से हमें इसका उत्तर मिल चुका है। हमारी परिकल्पित भाषा 'क' वाक्य (1)-(2) (3) को एक रूपात्मक शब्द में प्रकृति तथा प्रत्ययों के बहुसंश्लेषणात्मक संयोजन द्वारा अभिव्यक्त कर सकती है, जैसा प्राय: शॉनी में होता है, या कुछ शब्दों के द्वारा, जिनका विन्यास एक ऐसे वाक्य में किया जा सके। जो अंग्रेजी वाक्य की तरह वियोगात्मक हो। तो भी दोनों स्थितियां में अंग्रेजी से, वास्तविक रूप में, महत्वपूर्ण भिन्नता एक सी ही है, जैसे कि इसने (1)-(2)-(3) तत्वों के विचित्र वर्ग को अलग कर लिया है, तथा हमारे द्वारा की गई, Boy 'लड़का' (कर्त्ता के रूप में) तथा 'ran' 'दौड़ा' के रूप में, पृथकता की अवहेलना की है। अत: जहाँ हम Cleaning (a, gun) with a ramrod गज़ से (बन्दूक) साफ करना' की बात करते हैं, शॉनी वहाँ किसी 'छड़ी' या 'साफ करने की क्रिया' को अलग से नहीं दिखाती, बल्कि खोखले गतिशील शुष्क स्थान का निर्देश यन्त्र की गति के द्वारा करती है। (शॉनी प्रकृतियाँ भाग III, 157) यही तथ्य है जो अंग्रेजों के दृष्टिकोण से शॉनी को इतना विचित्र तथा विस्मयकारी बनाता है, तथा केवल वह तथ्य नहीं कि यह बहुसंश्लेषणात्मक है। एक भाषा बहु-संश्लेषणात्मक हो सकती है, तथा Claen with a ramrod 'गज़ से साफ करना' इस वाक्य को बहुसंश्लेषणात्मक ढंग से कह सकती है, और इस प्रकार अंग्रेजी के ढंग से पारदर्शी भी हो सकती हैं।

उन प्रणालियों की तुलना करने के लिए यह अपेक्षित है कि पहले एक ऐसी प्रणाली से विश्लेषण करने का सामर्थ्य प्राप्त किया जाए जो किसी एक भाषा या भाषाई परिवार की विश्लेषण प्रणाली से स्वतन्त्र हों, तथा वह सभी प्रेक्षकों के लिए समान हो। यह विश्लेषण उद्देश्य-विधेय, कर्तृ-कर्म, विशेषण-विशेष्य आदि के रूप में परिस्थिति का विवरण देने से नहीं किया जा सकता, क्योंकि ऐसे पदों के किसी वैज्ञानिक प्रयोग का अभिप्राय यह होता है कि उनका एक परिवर्तनशील अर्थ होगा, जिसकी प्रत्येक विशेष भाषा के लिए अलग परिभाषा होगी; तथा इसमें यह सम्भावना भी सम्मिलित है कि वे पद कुछ भाषाओं के लिए निरर्थक होंगे। यह विश्लेषण सामान्य रूप से प्रचलित प्रकर से लेकर अर्धवैज्ञा-

निकता की कोटि में आने वाले पदों की सहायता से इतनी अच्छी तरह नहीं किया जा सकता जितना कि परिस्थितियों को पदार्थों, विषयों, क्रियाओं, भावों, अस्तित्वों तथा घटनाओं के रूप में बाँटने के प्रयत्न से सम्भव है। ऐसे पदों का सावधान रूप से प्रयोग सहायक हो सकता है और सम्भवतः अनिवार्य भी है। परन्तु यह याद रखना चाहिए कि अपने अर्थों की परिधियों में वे पद आधुनिक भारोपीय भाषाओं तथा उनकी सहायक गौण विशिष्ट शब्दावली की सृष्टि हैं, तथा उन भाषाओं के अनुभव के खण्डीकरण की विशिष्ट प्रणालियों को प्रतिबिम्बित करते हैं। वे पद भाषाविज्ञान के लिए वैज्ञानिक नहीं होते, क्योंकि सम्भव है कि उनका भौतिकी तथा रसायन-शास्त्र में भी प्रयोग होता हो। जब वे मनोवैज्ञानिक अनुभव का निर्देश करते हैं—जैसे विचार, भाव, धारणायें आदि तो इन पदों के प्रयोग के लिये कम सतर्कता की आवश्यकता नहीं होती, परन्तु कोई ऐसी शक्तिशाली बाधा नहीं है जो उन्हें 'मनोवृत्यात्मक' या 'रहस्यात्मक' होने से रोक सके। सही अर्थ में 'रहस्यात्मक' वे निश्चित रूप से नहीं हैं, केवल 'शब्दीकरण' हैं, 'गुरुत्वाकर्षण' gravitation या 'पनीर' से न अच्छे हैं न बुरे हैं।

एक बात, जिस पर भागते हुए लड़के के दिखाई देने पर सभी प्रेक्षक, कम से कम प्रश्न पूछने के पश्चात् तथा प्रयोगात्मक परीक्षण के पश्चात् सहमत होंगे, यह है कि यह खण्डीकृत किया जा सकता है, और वे सभी उसी प्रकार से उसका विभाजन करेंगे। वे सभी इसे (१) एक आकृति या एक रेखाचित्र अधिक या कम गति से युक्त (लड़का), (२) किसी प्रकार की पृष्ठभूमि जिस पर या जिसमें आकृति दिखाई पड़ती है, में बाँटेंगे। (अर्थात् यदि हम प्रेक्षण की परिभाषा सामान्य चाक्षुष अर्थ में लें, तो सभी अन्धे प्रेक्षकों को छोड़ सकते हैं।)

आधुनिक समाकृतिपरक या जेस्टाल्ट मनोविज्ञान के द्वारा की गई खोज से हमें; सभी प्रेक्षकों के लिये उनकी भाषाओं अथवा वैज्ञानिक विशिष्ट शब्दावली से निरपेक्ष, एक निर्देशों की तालिका मिलती है, जिसके द्वारा सभी आँखों से देखने योग्य प्रेक्षणीय परिस्थितियों का भी विभाजन करना, तथा विवरण देना सम्भव है। खोज यह है, कि अबोध शैशव काल पार करने वाले सभी सामान्य लोगों के लिये चाक्षुष बोध मौलिक रूप से समान है, तथा ऐसे निश्चित नियमों के अनुरूप है जिनकी बहुत बड़ी संख्या सुप्रसिद्ध है। यहाँ इन नियमों का उल्लेख मात्र करने से कुछ अधिक कहना असम्भव है, परन्तु ये स्पष्ट रूप से घोषित करते हैं कि चाक्षुष बोध का मौलिक तथ्य आकृति तथा भूमि के सम्बन्ध में निहित है; बोध मुख्यतः रूप-रेखाओं के रूप में होता है, जिनका वैषम्य न्यूनाधिक भूमियों, क्षेत्रों, तथा रूपरेखाओं की भराई से हैं, और यह कि गति या क्रिया का बोध समाकृतिपरक प्रकार का है, या जो कम से कम एक अस्पष्ट रूपरेखाओं के गुण वाले बोध से सम्बन्धित हैं।

यह कहना कि तथ्य सभी प्रेक्षकों के लिये तत्वतः समान होते हैं, इस बात से इन्कार करना नहीं है कि उनमें भी अपनी त्रुटियाँ तथा विशिष्ट भेद होते हैं,

परन्तु ये अपेक्षाकृत गौण होते हैं। मस्तिष्क की क्षतियाँ तथा दृष्टिदोष विकार उत्पन्न करते हैं, और विशेष प्रवीणता या मानसिक प्रयत्न| झुकावों को पुनः व्यवस्थित कर सकते हैं और कभी कभी कुछ वस्तुओं के आकृति तथा भूमि के परस्पर कार्यों को बदल भी सकते हैं—जैसे कि जब कोई दृढ़ इच्छा करे तो किनारों की ओर से देखा जाने पर एक 'घन' का रेखाचित्र तीन व्यासार्धों वाले षट्कोण की तरह दिखाई दे सकता है। वर्णान्धता तथा वर्णों के प्रति असमान संवेदनशीलता इसी प्रकार के सीमान्तीय वैभिन्य हैं। आकार की छाप में भी सीमान्तीय वैभिन्नय होता है, जैसे कि चन्द्रमा किसी व्यक्ति को (Nickel) निकल के आकार का दिखाई देता है, तो दूसरे को घर जितना बड़ा, तो भी चक्षुपटल (ratina) पर सदा एक हाथ की दूरी पर पैन्सिल से भी छोटे रूप में अन्तरित हो जाता है। जब आकार की बात होती है तो विभिन्नताएं और अधिक कम तथा हल्की पड़ जाती हैं। ये सब विभिन्नताएं ज्ञात नियमों के ढांचे में काम करती हैं; अतः दृष्ट सामग्री के मानकीय विवरण में बाधा उत्पन्न नहीं करती। तथ्य थोड़े से भिन्न हो सकते हैं—परन्तु नियम सबके लिए समान होते हैं। यदि बोधात्मक प्रभाव ऐसे हैं कि एक सामान्य व्यक्ति को एक निश्चित रूपरेखा दिखाते हैं, तो अन्य सभी सामान्य व्यक्तियों को भी वैसी ही रूपरेखा दिखायेंगे। उदाहरणार्थ, सभी लोग सप्तर्षि तारों को उस रूपरेखा के रूप में देखते हैं जिसे हम कलछी (dipper) की आकृति वाला कहते हैं। चाहे वे इसे कलछी (dipper) न कहते हों, या उनकी संस्कृति में ऐसा कोई बर्तन न हो; और, यद्यपि यह सत्य है कि इन सितारों को इस रूपरेखा अथवा अन्य किसी रूपरेखा में जोड़नेवाली कोई रेखाएं नहीं हैं।

परन्तु दृष्टि के नियम अचाक्षुष अनुभव के लिए निर्देश तालिका कैसे देते हैं? नेति नेति प्रक्रिया के द्वारा। प्रत्येक उस वस्तु के विषय में, जो स्थान (Space) घेरती है, यह सिद्ध किया जा सकता है कि वे सीधे या किसी अन्य ढंग से जानी जा सकती है। प्रत्येक अदृष्ट वस्तु 'अस्थानी' वैशिष्ट्य वाली होती है, (तथा इसका विपर्यय भी सत्य है), तथा अनुभवकर्त्ता को यह तात्कालिक प्रतीत होती है। केवल स्पर्श ही दृष्ट सामग्री के साथ कुछ कुछ मिलता है, और जब स्पर्श से आकार, रूपरेखा, और गठन का पता चलता है तो यह परोक्ष रूप से चाक्षुष ही है। चाक्षुष अनुभव प्रक्षिप्त किया जाता है तथा 'स्थान' की रचना करता है, या वह वस्तु बनाता है जिसे हम प्रेक्षक का बाह्य क्षेत्र कहना चाहेंगे। अचाक्षुष अनुभव अन्तर्क्षिप्त होता है, तथा यह, वह वस्तु बनाता है जिसे जेस्टाल्ट मनोवैज्ञानिकों का अनुसरण करते हुए हम, अहं-क्षेत्र, या अहं-सम्बन्धी क्षेत्र कहेंगे; क्योंकि प्रेक्षक, या अहम् ऐसा अनुभव करता है, मानो वह इन संवेदनाओं और चेतनाओं के साथ अकेला है। अतः, किसी विशेष अनुभव का निर्देश अहं-सम्बन्धी क्षेत्र में इसलिए करते हैं, क्योंकि यह चाक्षुष क्षेत्र का विषय नहीं है, न ही इसका सम्बन्ध ऐसे उभयमुखी सीमान्त प्रदेश से है, जैसे कि "संवेदना" को प्रक्षक

के शरीर के अन्दर दोनों विधियों से जाना जा सकता है; अतः हम इसे इस तरह वर्गीकृत कर रहे हैं जैसे सभी प्रेक्षक एक बार इस प्रभेद की प्रकृति को समझ जाने पर इसका वर्गीकरण अपनी भाषा की अपेक्षा किए बिना करते हैं। इसके अतिरिक्त अहं सम्बन्धी क्षेत्र के अपने इन्द्रिय-गुण, लय, आदि के जेस्टाल्ट नियम हैं, जो सार्वभौमिक हैं। किसी सुनने, चखने, या सूंघने की शब्दिम द्वारा निर्दिष्ट पदार्थ को, चिन्तन, भावनाएं, इत्यादि की शब्दिमों के निर्दिष्ट पदार्थों के साथ, बिना झिझक अहम् सम्बन्धी क्षेत्रों में वर्गीकृत कर सकते हैं, तथा इनका क्षेत्र, रूपरेखा या गति के अनुभव का निर्देश करने वाली शब्दिम के क्षेत्र से पृथक् होगा। प्रकाश और अन्धकार का भेद, तथा 'देखने' का संकेतित-पदार्थ भी (परन्तु कुछ देखा जाता है उसका संकेतित पदार्थ नहीं) या तो सीमावर्ती क्षेत्र का, या अहं सम्बन्धी क्षेत्र का विषय है, क्योंकि संवेदना गुण अन्तर्क्षिप्त किया जाता है, यद्यपि आकृति-क्षेत्र गुण प्रक्षिप्त किया जाता है। 'कुछ कहने' का संकेतित पदार्थ भी अहं सम्बन्धी क्षेत्र का है, क्योंकि प्रेक्षक इसमें से एक तत्व को, अपने सुनने के, या ध्वनि के अहं सम्बन्धी क्षेत्र के, समकक्ष बनाता हुआ, अपनी तथा दूसरे लोगों की बोली: दोनों को ही इसमें अन्तर्क्षिप्त करता है। 'अधिकार में रखने' या केवल 'रखने' का संकेतित पदार्थ भी अहं सम्बन्धी क्षेत्र का है।

संकेतित पदार्थों का वर्गीकरण करने का यह नियम अभाषाई है, तथा अर्थ-विज्ञान के साधारण अर्थों में 'अन'-अर्थ-विषयक है। बाह्य, अथवा अहं सम्बन्धी क्षेत्र में अनुभव की एक 'पृथक् इकाई, जैसे—एक आकृति, या शोर, अर्थ नहीं है। फिर भी कभी कभी किसी एक भाषा में रूपिमों तथा उनके अर्थगत परिणामों के समूहों को वर्गीकृत करने के लिए एक सिद्धान्त हो सकता है, जो इस सार्वभौमिक सिद्धान्त से समन्वित होता है। अतः, अंग्रेजी भाषा में, कर्त्ता के 'अहं-क्षेत्र के अनुभव' का निर्देश करने वाली क्रियाएं, क्षणिक वर्तमान तथ्य के लिए साधारण वर्तमानकाल का प्रयोग करती हैं, वर्तमान अपूर्णकालिक काल का नहीं। अन्य क्रियाएं वर्तमान अपूर्णकालिक काल का प्रयोग या तो क्षणिक या सतत वर्तमान तथ्य के लिए करती हैं, तथा साधारण वर्तमान काल का प्रयोग (Here he comes) जैसे विशेष मुहावरों (या विशिष्ट बोली) को छोड़कर, प्रथापरक या रूढ़ काल पक्ष के लिए करती हैं। विदेशी लोग अंग्रेजी सीखते समय यह सब नहीं जानते अतः 'I am hearing you, he is seeing you' ऐसा कहते हैं। अंग्रेजी भाषाभाषी 'I hear you,' 'he sees it,' 'he feels sick,' 'I say that,' 'I think that,' ऐसा कहते हैं, परन्तु इसके विपरीत, 'I am working' कहते हैं, ('I work' नहीं), 'the boy is running' कहते हैं, ('the boy runs' नहीं कहते, जो कि प्रथापरक है, जैसे the boy runs whenever—)।[1]

1. cf. 'he is feeling (outlining) it (वह इसका अनुभव कर रहा है, (रूपरेखा) बना रहा है) बाह्य क्षेत्र का चाक्षुष स्पर्श; तथा he feels it (वह इसका अनुभव करता है) अहं सम्बन्धी 'क्षेत्र संवेदना।

संकेतित पदार्थों तथा स्थितियों का विवरण देने की इस **जेस्टाल्ट पद्धति** को, बिल्कुल भिन्न दृष्टिकोण वाली, जैसे अंग्रेजी, होपी, अज्तेक और माया आदि भाषाओं के समस्या-जनक विषयों को समझने के लिए, मैंने इतना अधिक सहायक पाया, कि मैंने इसे शॉनी पर लागू करने का निर्णय किया। मैं शॉनी या अन्य किसी अलगोन्कियन भाषा के विषय में कुछ नहीं जानता था। मुझे थोड़ा सा ज्ञान Voegelin द्वारा प्रस्तुत ग्रन्थमाला तथा ग्रन्थमाला के अवशिष्ट भाग को पूरा करने के लिए उन पाण्डुलिपियों से प्राप्त हुआ, जो उसके शॉनी तथा मियामी भाषा के शब्दकोष को पूरा करेंगी। परिणाम अधोलिखित हैं, तथा इसके विषय में अल्गोन्की भाषाविद् (Algonkianists) ही बता सकते हैं कि उन परिणामों का कोई महत्व या उपयोग है या नहीं।

शॉनी में प्रातिपदिकों की समास रचना पर मोटे रूप से एक काफी साधारण सा सामान्य नियम लागू होता है। इसके प्रयोग की तुलना मोटे रूप से अंग्रेजी के संज्ञा उपवाक्य रचना के नियम से की जा सकती है: विशेषण, विशेष्य से पहले आता है। कोई भी नियम अपवादरहित नहीं है, जैसे अंग्रेजी में 'brick building' यह उदाहरण उस विशिष्ट स्थिति का प्रतिनिधित्व करता है, जहाँ सामान्य नियम लागू होता है, परन्तु 'buildings brick exept for frame porches' इस अंश में यह अन्य नियमों को असिद्ध करने वाले विशेष नियमों में से एक है। अंग्रेजी की रचना करना सीखने वाले आधुनिक यूरोपियन के लिए अंग्रेजी का यह नियम एक अच्छा साधारण सा पथप्रदर्शक है; क्योंकि उसकी अपनी भाषा पर्याप्त रूप से इतनी समान है कि वह विशेषण तथा विशेष्य का अर्थ समझता है, उसकी भाषा भी अनुभव का वर्गीकरण करती है, और अधिक से अधिक यूं ही फ्रांसीसी भाषा की तरह केवल क्रम को उलट देती है।[2] विशेषण और विशेष्य आदि की शब्दशैली शॉनी की उन प्रातिपदिक समास रचनाओं पर लागू नहीं होती जो क्रिया में परिणमित होती हैं, जैसा कि वे प्रायः होती हैं। शॉनी के लिए सामान्य सा नियम यह है (अभिभावी नियमों को छोड़कर) कि आकृति बाह्य-क्षेत्र से पहले आती है, अधिक आकृति वाला कम आकृति वाले से पहले आता है— परन्तु अहं सम्बन्धी क्षेत्र सामान्यतः इन सबसे पहले आता है। मुख्य अभिभावी नियम ये हैं —

---

2. तथापि कभी कभी अंग्रेजी न बोलने वाला जेस्टाल्ट गलती कर देता है, जैसे कि एक मैक्सिकन ने मेरे लिए desierto de los leones का अनुवद lion desert किया। सामान्य अंग्रेजी भाषा में ' lion wilderness ' या ' fish ocean ' का प्रयोग नहीं होता। इसका कारण अन्य नियमों को असिद्ध करने वाला एक कारण है, कि एक छोटी सी आकृति सारे बाह्य-क्षेत्र के विषय की विशेषक नहीं बनती, या साधारण बोली में, 'एक छोटा सा विषय सभी बाह्य पदार्थों का विशेषक नहीं हो सकता।'

(1) अस्पष्ट आकृति के प्रातिपदिकों का समूह (अस्पष्ट गति, संरचना, आकार आदि) सबसे पहले आता है; (2) सामान्य नियम के उल्लंघन पर भी अनारम्भिक प्रातिपदिक किसी तरह पहले रखे जाने चाहिए—चाहें वे अपने से पहले आने वाले से कम आकृति वाले होने की बात पूरी करते हैं या नहीं, (3) जब परिणाम एक संज्ञा हो (परन्तु संज्ञा की तरह से प्रयुक्त बहुब्रीही या वाक्य नहीं) तो नियम उलट जाता है तथा भूमि या क्षेत्र सम्बन्धी विषय, आकृति वाले से पहले आते हैं, (4) दो अंग जिनके समस्तपद पीछे छोड़े गए नियमों के अनुसार बनाए जाते हैं, उन्हें एक साथ रखा जा सकता है, जो सम्पूर्ण रचना के अन्तर्गत कभी कभी अनियमित अनुक्रमों में परिणमित होते हैं; (5) इस प्रकार के अंग कभी कभी प्रातिपदिक की तरह प्रयुक्त होते हैं।

धातुओं के निर्देश के विवरण इस प्रकार होंगे :

Svf (Special stem of vague figure) **अस्पष्ट आकृति के विशेष प्रातिपदिक (प्रायः अस्पष्ट, गति, दिशा, या तल अथवा पिण्ड की लोच या रचना, आकार इत्यादि के) ।**

ef-(egoic field) **अहं सम्बन्धी क्षेत्र निर्देश ।**

f-(figure)—**यह समूह अन्यों की अपेक्षा रूपरेखा तथा स्थान वितरण को सबसे अधिक अभिव्यक्त करता है । यह आवश्यक रूप से गति को सूचित नहीं करता परन्तु गति उसमें वहां विद्यमान हो सकती है, और एक (f) प्रातिपदिक अधिक आकृतिवाले (f) प्रातिपदिक के बाद प्रयुक्त किया जा सकता है; कुछ अधिक बाह्य क्षेत्र; भूमि, या बाद वाले प्रातिपदिक के आपूरक गुणों का द्योतन करने के लिए ।**

frg. (figure as relative grounds). **सापेक्ष भूमि के रूप में आकृति, जैसा कि पूर्ववर्ती वर्णन में, प्रायः एक शारीरिक अवयव ।**

mf.(movoment figure) **गति–आकृति, गति की एक विशेष रूप-रेखा की 'कल्पना' या उसकी आकृति ।**

fcm. (figure containing movement)**आकृति जिसके अन्दर गति है, एक अस्पष्ट रूपरेखा वाला क्षेत्र जो अपेक्षाकृत स्थिर है, परन्तु जिसके अन्तर्गत गति है या "गति का विराम होने वाला है)।"**

xf (external field or ground) **बाह्य क्षेत्र अथवा भूमि, जिसमें आकृतिपरक अथवा रूपरेखीय गुण न्यूनतम हैं ।**

i (instrumental) (**करणात्मक**) **तत्वों का एक छोटा विशिष्ट वर्ग ।**

यह अवस्थान का सामान्य क्रम है, अर्थात् svf, ef, f, frg, mf, fcm, i यद्यपि frg, mf, fcm के सापेक्ष क्रम के विषय में कोई दृढ़ नियम नहीं है । प्रत्ययों के विषय में बताया जायेगा—

S (Subject formative of), **कर्ता (का प्रत्यय) ।**

O (Object /transitive) **कर्म (विषय) और सकर्मक (कर्म या सकर्मक)**

t (Transitive element) सकर्मक तत्व ।
m (miscellaneous formatives) विविध प्रत्यय ।
मोटे अर्थों में frg, , mf, fcm, xf का समूह एक है, और कभी कभी वही प्रातिपदिक इनमें से किसी भी स्थिति में आ सकता है, यदि इससे पहले या बाद में प्रातिपदिक इस प्रकार से आता है, कि घटती हुई आकृतिपरक गुण का अनुक्रम तथा बढ़ती हुई भूमि या क्षेत्र गुण की प्रगति कार्यान्वित हो रही है ।

Svf प्रकृतियों के उदाहरण—pa?– जाना, उधर घूमना; paak सख्त, दृढ़, असम्बद्ध रीति से गति; tep उपार्जित करना, 'प्राप्त करना' kt 'बड़ा, उत्तम' ka'k–'रूखा, सूखा;' laakeet "धीरे से, आसानी से, शीघ्रता से'; laaśiwe 'नीचे, परे, ऊपर", lo? θǝe "बाहर जाना, पर में से", liil विभिन्नता ।

ef प्रकृतियों के उदाहरण : pa? pa 'खट खट की ध्वनि' (ef क्योंकि 'एक ध्वनि'); petśkw घृणा, विमुखता, अरूचि; petoak (y) 'कष्ट, कण्टक (उपद्रव), जटिल, दुर्बोध, भ्रान्त, उत्तेजित; pt– 'आकस्मिक, अनभिप्रेत, भ्रान्तिपूर्ण, अशुद्ध; teepwe– 'सच्चाई' tepat– 'सन्तोषजनक' cl' c 'भय; kiś 'गरम, तप्त; kiiśwe 'अभिज्ञता, चेतना' katawi–'योग्यता'; katow–'पूछना, माँगना' । lalalwee तीव्रध्वनि खड़खड़ाहट, शोर miim' kaw 'खोजा हुआ, स्मरण किया हुआ' wiyakowee–क्रोध; waasi–अभिप्रेत; halan–'सूचना देता हुआ' । eele–'विचार' ।

(f-xf) के उदाहरण, प्रथम कोटि के वर्ग के उदाहरण जो मुख्यतया (f) के रूप में कार्य करते हैं, वे इस प्रकार हैं :

pap–	'कमरे की तरह की आकृति';
pat–	'आर्द्र स्थान, या पिण्ड';
pep't–	'बहुत कमजोर सहारे पर टिकी समाकृति';
petekw–	'वर्तुलीकृत, चारों ओर, लुढ़कना';
petakw–	'आवरण, शिखर, ऊपर';
piit–	'आन्तरिक रूपरेखा, अन्दर की ओर, छिद्र';
pi taw–	'मध्याकृति';
pakw–	'पौधे की तरह का, पत्ते की आकृति वाला',
peekw–	'शुष्कस्थान';
pe?kw–	'गुच्छ गुल्मीकृत';
po'k(y)–	'टूटा हुआ, भग्नावस्था';
paśk(y)–	'किसी विवरद्वार से प्रकट होना';
pośkw–	'अनियमित अंश, आधा किया हुआ, टूटा हुआ';
tepilahı–	'सीधी रूपरेखा';
tepet(w)–	'इकट्ठे, एक समशाह में';
cee–	'अनुरूप युग्म या योग, समान, सम';

kip–	'ढका हुआ, बन्द किया हुआ';
kotekwi–	'मोड़ा, मरोड़ना, घुमाना;'
kakaanwi–	'लम्बा, (लम्बी रूपरेखा)'
kooky–	'पानी में डूबा हुआ';
saapw–	'अन्दर और बाहर, आरपार (के पार से)';
skote–	'अग्नि (आग्नेय आकृति)'
laa–	'क्षेत्र का बीच, (क्षेत्र के बीचों बीच')\;
leep–	'नीचे से पतला होते चले जाना';
li?ipiik–	'स्थिरीभूत तरलपदार्थ';
l'pw–	'संकुचित, कूटा हुआ (कूटकर दबाया हुआ)';
taka'kwa–	'कमानीदार रूपरेखा', धोने के लिए फलक की तरह या तालु की तरह';
liiky–	'मिट्टी या राख से ढका हुआ';
lekw–	'उघड़ा हुआ, (विखण्डित, अलग, पृथक)';
le' θawaa–	'काँटेदार (द्विशाखित') ;
laal–	'नीचे लटकता हुआ, से परे';
lel'ky–	'फटी हुई रूपरेखा या फटा हुआ कपड़ा आदि';
waawiyaa–	'दायरा, वृत्त'

f.g के रूप में कार्य करने वाली कुछ f प्रकृतियाँ :

(–)lec	'अंगुलि, हाथ, अंगुलियों में, हाथ के ऊपर';
eçe–	'पेट, शरीर (वास्तव में शरीर और शरीर के अंगों के सभी पद प्रायः frg होते हैं)';
a?kwi–	'वनस्पति पेड़पौधे, जंगल''
–aalaka	'छिद्र खोखलापन';
–kamekwi	'घर, घर में'
–śee–	'वस्त्र, 'वस्त्राभरण'
–wale	'पीठ की पट्टी';
–api	'बैठी हुई आकृति', बैठी हुई;

कुछ mf प्रकृतियाँ ये हैं :

peteki	'काल अथवा दिक् में प्रत्यावर्तन, (गति या मार्ग);'
–pho	'भागते हुए उठाना';
ptoo–	'भागना (भागते हुए);
ci p	'अन्दर पहुंचाना, गुप्तरूप से पहुंचाना';
çi? çiip–	'हिलना (हिलता हुआ)';
–?tan	'बहता हुआ, तैरता हुआ';
–ke–	'सामान्य शारीरिक गति',

–əśka–	'शारीरिक गति को प्रारम्भ करना';
–eka	'नाचता हुआ';
–kawi	'टपकता हुआ';
–? θa	'उड़ता हुआ';
loop–	'झूलता हुआ';
lek–	'विलीन होता हुआ, पिघलता हुआ';
miil–	'देता हुआ';
hee–	'जाता हुआ (जाने वाला)';
? θen	'गतिशील वस्तु से टूटकर अलग होता हुआ';

कुछ fcm प्रकृतियाँ हैं :–

pi?te–	'झागवाला (झाग उगलने वाला);
pootəwe	'जलती हुई लकड़ी';
–etekwi	'सरिता';
kapee–	'नदी पार करना';
kalawi–	'बोलता हुआ, (आदमी, बोलता हुआ)';
kon–	'निगलता हुआ';
kwaap–	'पानी से उठाता हुआ';
kwaśkw	'प्रतिक्षिप्त होना, ठिठकते हुए';
kwke–	'पानी में काँटे की गति;'
–a–	'दाँतों की गति;'
?śi-?śin	'शान्त होना';
–laa–	'उबलता हुआ, (उबलने वाला)';

बुख्यतः 'Xf' रूप में कार्य करने वाली प्रकृतियों के उदाहरण :

–piiwe	'बाल, पंख';
–aapo	'तरल पदार्थ';
–pki	'समतल पर बिखरा हुआ, समतल भूमि';
tepki	'दलदल वाला, दलदल से युक्त भूभाग';
tepe?ki	'रात्रि';
–taskwi	'पेड़ पौधे';
–la	'रंग';
–kami	'पानी का विस्तार';
–? ki	'विस्तार, आधिक्य';
–? kwatwi	'आकाश';
–ʟwaa	'स्थान, कमरा';
–? skw–atwi	जड़ी बूटियां';
aam–	मिटठी, भूमि',

–? ho– 'जल, गीलापन',
–? śk (y) 'नरमी, तनुता

हाथ, पांव, यन्त्र, अग्नि आदि से व्यापार का संकेत करने वाले बहुत ही सामान्य i प्रकृतियों, (करण) के छोटे से वर्ग के उदाहरणों की कोई आवश्कता नहीं है।

संरचना के कुछ उदाहरणों की व्याख्या विस्तार से की जा सकती है। शॉनी प्रातिपदिकों के भाग III, 289 में f प्रकार के प्रातिपदिक kip-, kipw-, के अन्तर्गत अवरोध की, या किसी ढके हुए पदार्थ की, रूपरेखा को भूमि पर, किसी विशेष स्थान पर रखा जाता है, या चित्रित किया जाता है, या (क) मृगछाला, (ख) मार्ग, (ग) आंखों के क्षेत्र, (घ) हाथ की गति के साथ आंखों के क्षेत्र के वातावरण में रखा जाता है; जैसे (–kip iikwee-n,-f-frg-i), गुदा, क्षेत्र, मुंह, कान इत्यादि में भी । अथवा "दलदलों के बीच" इत्यादि', कथन पर विचार कीजिए । हमारा शब्दीकरण का अपना ढंग यह है कि हम अनुभूति में से उस आवश्यक तत्व को अलग कर लेते हैं जिसे हम विशिष्ट अंग्रेजी संज्ञा के रूप में, 'swamp' कहते हैं । क्योंकि ऐसी संज्ञा, सभी सज्ञाओं के लिए तैयार किये गए व्याकरणिक सांचे में समा जाती है, तथा व्यक्तिगत पार्थक्य, एकत्व, अनेकत्व, उपपद, तथा पूर्वसर्ग के रूप में प्रयोग किए जाने के लिए 'उपयुक्तता' से युक्त रूप में निर्दिष्ट की गई एक विशिष्ट "वस्तु" के रूप में ग्रहण की जाती है। 'दलदल' और 'तितली' के प्रत्यक्ष-बोधात्मक अनुभव में बहुत अधिक अन्तर होने पर भी उनके भाषाई व्यवहार में बहुत थोड़ा अन्तर है। शॉनी में हमें शब्दीकरण के अंग्रेजी ढंग को भूलना पड़ता है, तथा दृश्यमान स्थिति का आश्रय लेना पड़ता है। हमारे पूर्ववर्ग 'among' का संकेतित-पदार्थ, रूपरेखा के अधिकांश गुण से युक्त उस चित्र का भाग वास्तविक रूप में बन जाता है जो ऐसे अनिश्चित क्षेत्र के बीच एक सीमित तथा सुनिश्चित स्थान है—जो "दलदलपने" का क्षेत्र है। चित्र यह है, मानो मोटे रूप से खींचा गया, जिसमें आकृतिपरक तत्व laa 'क्षेत्र के बीच' को सबसे पहले रखा गया, और उसके बाद इसकी भूमि, या पृष्ठभूमि tepki "दलदलवाला भूभाग" को रखा, laa-tee-ki (X-ef) दलदलों के बीच स्थान, दलदल में –(भाग II 137) ।

भाग II, 157, में "मैं बन्दूक को छड़ी घुमाकर साफ करता हूं, या सुखाता हूं"—हमारी इस अभिव्यक्ति के लिए वहाँ ni-peekw-aalak-h-a, s-f-frgi-o है। संरचना का आकृतिपरक केन्द्र 'सूखा' या 'साफ स्थान' है (peekw) जो प्रातिपदिक aalak-,frg, के द्वारा छिद्र या खोखलेपन के वातावरण में रखा गया है। एक आकृति, जो प्रथम आकृति के लिए सापेक्ष भूमि, या क्षेत्र के रूप में काम करती है, तब आकृतिपरक केन्द्र को करण कारक -h- 'यन्त्र की गति के द्वारा' गतिशील बनाता है, या गति प्रदान करता है, और -a प्रत्यय के द्वारा जड़ पदार्थ के साथ 'सकर्मक' के रूप में सूचित किया जाता है।

भाग II, 143 में f- प्रातिपदिक cee- संरचना, अनुरूप बनाए गए युग्म की समाकृति, या अनुरूप इकाइयों के लिए आधारभूत रूपरेखा स्थापित करती है। अनुरूप किए गए जोड़ों के लिए पूरक गुण के आवश्यक तत्व उन xf प्रकृतियों द्वारा जो 'विशेष-प्रकार', सामान्य रूप रंग, वर्ण का महत्व बताती हैं, या frg प्रकृति द्वारा (व्यक्तियों) या xf-xf द्वारा, जैसे 'रंग+शरीर के बाल', और 'रंग+पानी' के द्वारा प्रस्तुत किए जाते हैं। अतः इस प्रकार के शब्दों का अर्थ है, 'उसी प्रकार का, समान दिखाई देने वाला, उसी रंग का' आदि।

भाग I, 69 ni-Ppeθ-k-a, s-f-mf-o "मैं इसे ऊपर उठाने के लिए इसके सहारे झुकता हूँ"—में आश्रय की आधारभूत रूपरेखा, जो दृश्य रूप से प्रायः भद्दी सी T या एक नीचे की ओर मुख वाले lambda अक्षर के समान है, Ppeθ (Ppe?t) द्वारा दी जाती है, तथा गतिशील सचेत शरीर का अस्पष्ट आकृतिपरक गुण, mf प्रातिपादिक– k 'शारीरिक गति' के द्वारा दिया जाता है। ni-Ppec-śi-m-a, s-f-fem-t-o "मैं उसे गिरने से बचाने के लिए वहाँ रखता हूं (किसी आधार पर)" इस में दूसरी आकृति śi गति की एक अस्पष्ट रूप रेखा जो एक क्षेत्र के अन्दर स्थिर होती जा रही है, स्थिर होती है, आधारभूत आश्रय-रूप-रेखा में या उसके ऊपर (आपूरक के रूप में), तथा सजीव पदार्थ के साथ सकर्मक बना दी जाती है।

प्रातिपादिकों की समास-रचना के और अधिक उदाहरण इस परिशिष्ट के अन्त में एक सूची के अन्दर बहुत संक्षेप में विश्लेषित किए गए हैं। संज्ञा समास-रचना, तथा प्रकृति समास-रचना के विषय में अभी बताना शेष है, जो यहाँ प्रकृति समास रचना के आधारभूत नियम पर अभिभावी समझे जाते हैं। जब समास-रचना का परिणाम संज्ञा होता है तो नियम उलट लिया जाता है: क्षेत्र या भूमि आकृति से पहले आते हैं, कम आकृतिपरक अधिक आकृतिपरक से पहले आता है। क्योंकि अंग्रेजी में विशेषण-विशेष्य सम्बन्ध के सामान्य प्रकार में भी सामान्यतया ऐसा ही होता है, शॉनी संज्ञा को प्रायः (जो क्रिया के समान नहीं है) ऐसे सम्बन्ध के रूप में समझा जा सकता है, उदाहरणार्थ, भाग III, 290 kopeleko-miyeewi, xf-f,, "लोहा-सड़क (रेल-सड़क)"। पुनः, जैसे कि अंग्रेजी में विशेष्य पद या आकृति के साथ मानसिक रूप से सम्बद्ध वस्तु इससे पहले आती है, तथा इस प्रकार के विश्लेषण में स्मृति के कारण यह वक्ता के अहं सम्बन्धी क्षेत्र का आधार समझी जाती है अतः efm कही जाती है। इस प्रकार भाग II, 139 takhwaan-ːkaawe, efm-f, रोटी नृत्य (141) taamin-aapo, 'गेहूं तरल' (व्हिस्की); (पृ० 143) ciipa-ɵeme, efm-f, मद्यसार मधुमक्खी (पृ० 145), caki-pkweeθa, frg-f, "छोटी औरतें" जहाँ अस्पष्ट आकृति, आकार की मात्रा का बोध, अधिक निश्चित रूपरेखा से पहले आती है।

दो समस्त प्रातिपदिक एक दूसरे के साथ समस्तपद बनाए जा सकते हैं, परन्तु इनके क्रम पर यदि कोई नियम लागू होता है तो कौन-सा, यह बताने में मैं असमर्थ

हूं। साधारण प्रातिपदिक-समासों की बड़ी संख्या की तुलना में उदाहरण थोड़े प्रतीत होते हैं। इस प्रकार भाग I, 67 में एक रूप है जिसका शायद waasinitaśi-palenaweewi-ci प्रातिपदिक-प्रातिपदिक—s के रूप में विश्लेषण किया जा सकता है। प्रथम प्रातिपदिक होगा waasi-nitaśi-cf-f "किसी स्थान पर जानबूझ कर होना," और दूसरा pa?lenaweewi, svf-ef "उधर जाता हुआ, रहता हुआ।" दूसरी ओर शायद यहाँ हमारे पास एक प्रातिपदिक है जिससे पहले दो प्रकृतियां आती हैं।

यह सम्भव है कि शॉनी में दो प्रकार के शब्दिम हैं प्रकृति और प्रातिपदिक (stems and themes) और दो प्रकार की समास रचना की विधियाँ हैं, एक प्रकृतियों के लिए और दूसरी प्रातिपदिकों के लिए। ऐसे सिद्धान्त के अनुसार प्रकृति-समासों में भूमि से पहले आकृति का सिद्धान्त प्रयुक्त होगा और उसका परिणाम एक क्रियात्मक प्रातिपदिक होगा, जो यदि शब्द के अन्त में हो तो इसे क्रिया या सामान्य वाक्य बनाता है, और अन्यत्र एक रूढवाक्य बनाता है जिसका प्रयोग संज्ञा की तरह होता है जैसे (बहुव्रीहि रूप) प्रातिपदिक समास आकृति से पहले भूमि वाले सिद्धान्त का प्रयोग करते हैं और इस रचना का परिणाम वही होगा जो अन्तिम प्रातिपदिक है, क्रिया या संज्ञा। तब यह प्रकट होगा कि कुछ शब्दिम में, यद्यपि विश्लेषण योग्य नहीं है, सदा प्रातिपदिक हैं, जैसे मूलरूप में संज्ञा शब्दिम तथा svf और cf शब्दिम। ये svf और ef तत्व प्रातिपदिक होने के कारण कम आकृतिपरक के रूप में f-xf क्रियात्मक शब्दिमों से पहले आते हैं। निस्सन्देह, यह बहुत ही अनन्तिम निष्कर्ष है।

इस परिशिष्ट में व्यवहृत कुछ भी इस बात की व्याख्या नहीं कर सकता कि मातृभाषी किस प्रकृति को सर्वाधिक व्यापक, अर्थात् अधिक प्रयुक्त होने वाला समझता है। यह प्रश्न समास रचना की पद्धति से बिलकुल अलग है। मैं एक अनुमान लगाने का साहस करता हूं कि यह किसी संयोग में विविध प्रातिपदिकों के सादृश्यात्मक दबाव की मात्रा पर निर्भर कर सकता है। कुछ प्रातिपदिक विषय की प्रकृति के अनुसार, अन्यों की अपेक्षा, संयोगों के विषय में अधिक उत्पादक हो सकते हैं। ऐसा प्रातिपदिक जिसके विचाराधीन संयोग की सबसे अधिक संख्या में निकटतम समरूप होते हैं, उस प्रातिपदिक को एक मातृभाषी एक केन्द्रकीय प्रातिपदिक के रूप में मान सकता है।

अब यहाँ नीचे भाग I, II, III, से विश्लेषित संयोगों की एक सूची दी जा रही है, जिसमें पहले पृष्ठ संख्या तथा बाद में सूत्र तथा अनुवाद दिया गया है जिसे तकनीक की व्याख्या करने के लिए प्रायः वोजेलिन (Voegelin) के अनुवाद से लिया गया है। यहाँ, अर्थगत परिणामों पर यथावसर टिप्पणियां भी दी गई हैं :
Part I, 67 pa-kwke, svf-fem "वह पानी के स्थान पर उसमें कांटे को घुमाता हुआ गया, वह मछली का शिकार करने गया।"

67. ni-pá-pem-θe?-to, s-svf-f-mf o "मैं इसे (चारों ओर) हस्तान्तरित करता हूँ (दृढ़ संकल्प)।"

67. ye?-pa?-nekot-θee-θi-ya, m-svf-f-mf-m-s "जब मैं वहां अकेला जाता हूं।"

68. papi-śvaa-wi,f-xf-s "कमरे जैसे अधिवास- की आकृति, सामान्य स्पेस में घटित होती है; इसमें काफी स्थान है।"

69. ni-pat-śk-α?-m-a, s-f-xf-fcm-t-o "मैंने उसे चूमा (f आर्द्र-स्थान, xf सामान्य कोमलता, fcm ओष्ठ–गति; प्रकृति–ə– को fcm कहा जा सकता है पर शायद i भी है)

69. ni-pat-śk-a? h-w-a, s-f-xf-i-t-o 'मैंने उसे कीचड़ से गीला कर दिया (1, गति यंत्र की या उपकरण की गति)।"

70. ni-peteko-n-a, s-f-i-o "मैं इसे लपेटता हूं।"

70. peteko-će-śka, f-frg-mf "उसने अपने शरीर को दुगुना किया"। (शरीर या पेट के सापेक्ष क्षेत्र में वलयित रूपरेखा, सामान्य शारीरिक गति)।

70 ta?petekiśi-miim ? kaweele-ta-m-akwe, प्रातिपदिक-प्रातिपदिक -t-o-s<ta?-peteki-śi, svf-mf-m "उस स्थान पर पुन: लौटना, miim? kaw-eele, əf-ef", "स्मरण करना।"

71. ni-petśkw-eele-m-ə, s-ef-ef-t-o "मैं उससे घृणा करता हूं।"

71 petθaki-lee-θa, ef-f-m (व्यक्ति जो) बाधा है।

71. ni-petako-l-aw-a, s-f-mf-t-o "मैंने उसके ऊपर अस्त्रप्रहार किया" (अध्यारोपण की रूपरेखा; अस्त्र की गति)।

71. ni-pt-a-m—a, s-ef-fcm-t-o "मैंने उसे संयोगवश काट खाया।"

72. piić-θe-? θen-wi,-f-mf-fcm-s "यह टूट पड़ती है तथा अन्दर गिर पड़ती है।"

72. piići-lećе-? śin-wa, f-frg-fcm-s "उसने अपना हाथ अन्दर डाल दिया।"

72. ni-piići-miil-a, s-f-mf-o "यह मैंने उसे सूराख में से दिया।"

72. piit-alwa, f-frg (आन्तरिकता चित्र, गोली भरने की) ="गोली रखने की बोरी।"

72. pi? teewi-laate, fcm-fcm "सापेक्ष आधार के रूप में" उबलते समय यह झाग देता है।"

73. ni-pi?tawiśe-θe-to, s-fcm-o प्रातिपदिक "मैंने कपड़े के टुकड़े को जोड़ा।" pi?tawi-śe,f-xf "जोड़ (f) कपड़े में (xf)"।

73. piimi-pooteθ-wa, ef-f-s "वह सिगरेट पीने में गलती करता है।"

74. paak-aame? ki, svf-xf "यह भूमिका (Svf) कठोर स्थल है (xf)"।

74-75 ni-paak-eele-m-a, s-svf-ef-t-o "मैं उसकी शक्ति के बारे में सोचता हूं।"

76. ni-paki-kaw-?to, f-svf-mf-o "मैं इसे टपकाता हूं।"

77. ni-pkw-e?ko-ta, s-f-fcm-o "मैं इससे एक टुकड़ा काटता हूं।"

83. leelawi-piikwa, f-xf "केन्द्रीय स्थान (f) नीचे उगने वाले झाड़ झंखाड़ का (xf) घटित होता हैं।"

83. kinwi-piikwa, f-xf "लम्बा तंग क्षेत्र (f) ब्रुश का (xf) घटित होता है, ब्रुश लम्बी फैलती है।"

83. ni-po?ki-ce-el-aw-a, s-f-frg-mf-t-o "मैंने शरीर में (frg) अस्त्र की गति से छेदन किया (f) उसकी ओर, मैंने उसके शरीर को अस्त्र से बेध दिया।"

83. po?k-iikwe, f-frg "एक ओर, चेहरे के (frg) उसके दरार है (f), उसकी एक आँख बाहर निकली हुई है।"

87. ni-pośkwi-piye-en-α, s-f-frg-i-o "मैंने हाथ के विस्तार से (i) लम्बे विस्तार वाला (frg) अनियमित खण्ड उत्पन्न किया। मैंने इस वृक्ष का एक अंग तोड़ दिया।

87. ni-pośkwi-n?ke-?śi-m-a, s-f-frg-fcm-t-o "मैंने तोड़ी (f) उसकी भुजा (frg) गति से जो स्थिर हो रही थी। (fcm) उसे किसी वस्तु के विरुद्ध फैंक कर।"

91. ni-paalaći-we-l-a, s-f-mf-t-o "मैं ले जाता हूं (mf) उसे नीचे की ओर (f) ।"

91. ni-pele-śe-en-a, s-f-frg-i-o "मैंने इसकी सीवन उघेड़ी।"

92. meelawaaći-paam-?θe, ef-f-mf "वह थका हुआ था (ef) भागने से (mf) चारों ओर (f) ।"

99. piyet- aalak-θen-wi, svf-f-xf-s "यह पड़ा है (is in xf) छिद्र के साथ (f) इस ओर (svf) ।

भाग 2

135. ni-tephikan?θe-to, s-f-fem-o "मैं इसे घड़े में रखता हूं।"

135. ni-tepi-kiiśkwe, s-svf-ef "मैं होश में आ गया।"

136. pa?-tepowee-ki, svf-ef-s "वे सभा में गए (सलाह करने)" ।

137. ni-tepeto-kalawi-pe, s-f-fcm-m "वे बात कर रहे थे (fcm) एक समूह में, इकट्ठे (f) ।"

137. tepeto-ptoo-ki, f-mf-s "वे इकट्ठे समूह में भाग रहे थे।"

138. tetep-a?kwi, f-frg "वर्तुलाकार रूपरेखा, वनस्पति की, अंगूर की बेल।"

138. ni-waawiyaa-tap-śk-a, s-f-mf-i-o "मैंने लुढ़काया (mf) इसे एक दायरे में (f) ठोकर से (i) ।"

141. ni-me?ći-tehe, s-svf -ef "मैंने सोच लिया है।"

149. ni-θaki,ćaalee-pi-l-a, s-f-frg-fcm-t-o "मैंने पकड़ने की रूप-रेखा उत्पन्न की (f) नाक के ऊपर (frg) बाँधकर (fcm), मैंने उस पर नकेल डाल दी ।"

भाग 3

289. kape-ho-kwi, fem-xf-s "वह ऊपर तैरता हुआ पार करता है।"

293. kotekw-aakami, f-xf "पानी (xf) पेचदार में है (f) मार्ग।"

295. ni-kakaanwi-leće s-f-frg "मेरे लम्बे हाथ हैं।"

297. ni-kooki-tepe-en-a, s-f-frg-i-o "मैंने उसका सिर डुबोया (frg, डूबती-आकृति का भरना) पानी में।"

298. ni-kki-lećee-pi-l-a, s-f-frg-fem-t-o "मैंने पहनाई (बांधने की क्रिया (fcm) एक अंगूठी (गोल रूपरेखा, f) उसकी अंगुली पर (frg) । "

300. kaśko ? śe, f-frg "उसके तेज कान हैं।"

300. ni-kiśw-eele-ma, s-ef-ef-t-o "मैं उसे योग्य समझता हूं, उसे अनुमति दो ।"

301. kiiśoo-kwaam-wa,ef-ef-s या svf-ef-s "वह आराम से सोता है।"

303. ni-kilek-a-m-a, s-f-fcm-t-o "मैंने मिश्रित समाकृति उत्पन्न की (f), मुंह में, गति के साथ (fcm), मैं इसे मुंह में धोलता हूँ।"

304. kolep-śin-wa, f-fcm-s "वह लेटे लेटे पलट गया।"

306-307. ni-kaawat-eele-m-a, s प्रातिपदिक -ef-t-o "मैं उसे गोल समझता हूं।" (kaaw-at-प्रातिपदिक, अत: ef के पूर्व आ सकता है ?)

308. ni-kwaśko-l-aw-a, s-fem-mf-t-o "मैंने उसे गोली मार कर गिरा दिया।"

308. ni-kwaśkwi-tepe-en-a, s-fcm-frg-i-o (अनियमित क्रम, परन्तु fcm को f समझा जा सकता है) " मैंने उसका सिर दूर धकेल दिया।"

310. saapoc-aalakat-wi, f-frg-s "इसमें आर पार एक सूराख है ।"

319. θaak-ho-?θ en-wi, f-xf-xf-s "यह आंशिक रूप से डूबा हुआ है, और थोड़ा सा पानी से बाहर हैं।"

320. ni θak-aalow-een-a, s-f-frg i-o "मैंने उसे पूंछ से पकड़ा" ।

माया चित्रलेखों के भाषायी अंशों का अर्थ-निर्धारण*

आदिम अमरीकी जगत में केवल माया लोग ही पूर्णतया शिक्षित थे। उनके द्वारा बनाई गई तथा अब तक बची हुई पत्थर की इमारतें तथा स्मारक उनकी रचनाओं की लिखाई से ढकी हुई हैं। उन रचनाओं को अभी तक पढ़ा नहीं गया है। उनकी केवल उन तिथियों को पढ़ा गया है जिनसे उनका लेखन आरम्भ हुआ था। इसके अतिरिक्त, उन्होंने बहुत सी पुस्तकें तथा पाण्डुलिपियाँ लिखीं; तथा काफी बाद के समय की ऐसी तीन पुस्तकें भी सुरक्षित हैं। ये तीन प्रसिद्ध माया प्राचीन पाण्डुलिपियाँ हैं, तथा इस लेख की समाप्ति से पूर्व, उन तीनों में से किसी एक के बहुत ही संक्षिप्त अंश पढ़ने का मेरा विचार है, तथा बहुत ही साधारण तथा सरल ढंग से मैं यह दिखाना चाहता हूं कि माया लेखन-पद्धति कैसी थी, तथा इसके प्रतीक चिन्ह किस प्रकार एक साथ रखे जाते थे।

इस लेखन-पद्धति में चिन्ह-समूह तथा विशेष प्रकार की विषय-वस्तु का निर्देश करने वाले चिन्हों के वर्ग तथा चिन्हों के संयोग सम्मिलित हैं। संख्यावाचक शब्दों, कालावधि, तथा पंचांग की शब्दावली का द्योतन करने वाले इन चिन्हों में गणितीय सम्बन्ध विद्यमान रहते हैं, तथा इनका प्रयोग गणितशास्त्र की व्यवस्था बनाता है। इन चिन्हों के गणितीय संकेतों का निर्धारण उन गणितीय सम्बन्धों से किया गया है जो उनमें विद्यमान पाए गए हैं, तथा इस प्रकार हम सौर-चान्द्र पंचांग की स्थितियाँ तथा तिथियाँ पढ़ सकते हैं, जो अधिकतर शिलालेखों के आरम्भ में लिखी गई हैं। इस गणितीय रिकॉर्ड के अतिरिक्त लेखों के विशुद्ध भाषायी अंश भी हैं, जिनके भागों के बीच में हम व्याकरणिक या भाषायी अंश तो देख सकते हैं पर गणितीय सम्बन्ध नहीं। इन्हीं विशुद्ध भाषायी अंशों का मैं विवेचन करूंगा, तथा प्राचीन पाण्डुलिपियों के लेखों का विवेचन करूंगा, शिलालेखों के लेखों का नहीं, यद्यपि शिलालेखीय लेख सामान्यतः प्राचीन पाण्डुलिपियों के लेखों के समान हैं। यह जानकर बहुत से लोगों को आश्चर्य हो सकता है कि प्राचीन पाण्डुलिपियों में अगणितीय तथा भाषाई चिन्हों की संख्या गणितीय चिन्हों से, सौ और एक के

---

*Reprinted from pp. 479-502 of the *Smithsonian Report for* 1941 (Washington: Government Printing Office, 1942). This paper was read before the Section on Anthropological Sciences of the Eighth American Scientific Congress, Washington, D. C., May 10-18, 1940.

अनुपात में अधिक है (उसी चिन्ह की पुनरावृत्ति को न गिनते हुए); (यह सब कुछ) उस विश्वास को पुष्ट करने के लिए है जिसके अनुसार माया लेखन मुख्यतया गणितीय है।

जब चैम्पोलिअन ने मिस्री लेखों का अर्थ-निर्धारण प्रारम्भ किया तो वह अपेक्षाकृत सौभाग्यपूर्ण स्थिति में था, कि उसे उन सुस्थापित सिद्धान्तों के विशाल वर्ग का विरोध नहीं करना पड़ा था, जिनके अनुसार ये चिन्ह, लेख नहीं थे अपितु, अभाषायी प्रतीक थे। यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि वे अथनेसिअस किरचर (Athanasius kircher) की अत्यन्त काल्पनिक अटकलबाजियाँ थीं; जिनका सम्बन्ध उस धार्मिक तथा रहस्यात्मक प्रतीकवाद से था, जिस प्रतीकवाद को उसने चित्रलेखों में पढ़ा। परन्तु विद्याविशेष सम्बन्धी शास्त्रों में से किसी ने भी इन अटकलबाजियों की पुष्टि नहीं की, तथा चैम्पोलिअन के अकाट्य तर्कों के सामने शीघ्र ही परास्त हो गई। उस समय भाषा-वैज्ञानिकों तथा साहित्यिक विद्वानों का प्राचीन संस्कृतियों के अध्ययन के क्षेत्र में साम्राज्य था। अतः चैम्पोलिअन को भाषाविदों के सामने केवल अपने परिणामों के भाषायी-तर्क को ही सिद्ध करना था। उसे पुरातत्ववेत्ताओं के सामने अपनी पद्धतियों की वकालत नहीं करनी थी क्योंकि भाषाविदों के अतिरिक्त कोई था ही नहीं। उस समय शास्त्र-विशेषों की विशिष्ट पृथक्ता नहीं थी जो इस समय है। उस समय भाषा-विज्ञान मार्ग दर्शन करता था, भाषा-विज्ञान से ही शिलालेख पढ़े जाते थे, तथा इसी से पुरातत्व-विज्ञान को प्रेरणा मिलती थी।

सामान्यतः यह माना जाता है कि चैम्पोलिअन के प्रयत्न की सफलता, पूरी तरह, द्विभाषीय लेख से युक्त रोसेटा स्टोन (Rosetta Stone) की खोज के कारण है, तथा यह कि माया चित्रलेखों में रोसेटा स्टोन के समान कुछ नहीं है। ये दोनों धारणाएँ ग़लत हैं। चैम्पोलिअन, अन्ततः, रोसेटा स्टोन के बिना भी सफल हो जाता, क्योंकि शिलालेख ऐसी भाषा में थे, जिसे वह जानता था। वह मिस्री भाषा अर्थात् काप्टिक, जानता था, तथा जो उस भाषा का अर्वाचीन रूप है, और अब भी तत्त्वतः वही भाषा है जो प्राचीन मिस्र-देशवासी बोलते, लिखते थे। ठीक ऐसे ही केन्द्रीय अमरीकी लेख ऐसी भाषा में हैं जिसे जानना सम्भव है। यदि वे मृतभाषा में होते तो स्थिति निश्चय ही कठिन होती। परन्तु सौभाग्य से वे माया में हैं जो अब भी बोली जाती है, तथा बहुत से स्रोतों से उसका अध्ययन किया जा सकता है। परन्तु हम कैसे जानते हैं कि वे माया में है? यह बात भाषा-विज्ञान के उस विद्वान के लिए बिल्कुल स्पष्ट हो जायेगी जो इस मूल्य को समझता है, कि यदि मूलपाठ किसी अज्ञात लिपि में परन्तु ऐसी भाषा में है जिसे वह जानता है, तो यह सम्भव हो सकता है कि वह चिन्हों की पुनरावृत्त संस्थितियों की प्रकृति, तथा आवृत्ति से, उस तथ्य को ढूंढ निकाले। इसके साथ ही माया व्यवस्था में विभिन्न चिन्ह-गुच्छों का अर्थ परम्परा से जाना जाता है (जैसे महीनों के चित्र) तथा अन्य चिन्ह-गुच्छों का ज्ञान उन चित्रों से होता है जो प्राचीन पाण्डुलिपियों में उनके साथ दिए जाते हैं। चित्र-लेखों में एक

ऐसी भाषा का लेखन है जिसमें किसी विशेष महीने के लिए तथा "बैठने की स्थिति" के लिए लेख उसी प्रतीक से प्रारम्भ होता है, और वह एक 'पंख' का चित्र है। यह शर्त केवल माया भाषा में ही पूरी होती है, जिसमें इन विशेष शब्दों की धातुएँ, तथा 'पंख', शब्द की धातु, सभी उसी एक अक्षर से प्रारम्भ होती हैं। पुनः, यह ऐसी भाषा है जिसमें "साँप, मछली" आदि शब्दों तथा किसी विशेष काल की अवधि के लिए लेखन, सभी उसके, अथवा परस्पर विनिमेय चिन्हों से प्रारम्भ होते हैं—यह शर्त भी माया भाषा में ही पूरी होती है। यह वह भाषा है, जिसमें मधुमक्खी, मिट्टी, तथा दिन का नाम, जिसमें 'हाथ में पकड़ना', तथा 'कुछ नहीं' तथा, 'भाला', और पाश, उसी चिन्ह से प्रारम्भ होते हैं, जो उन गुच्छों में भी पाए जाते हैं जिनका अर्थ 'जागुआर', 'नौ', तथा 'चान्द्रमास', इत्यादि होता है। प्रमाण एकत्रित होते जाते हैं और अन्ततः पूर्णतया सिद्ध हो जाता है। माया भाषा की समीपतम भाषाएं चोल्ती तथा त्जेल्तल (cholti and Tzeltal) भी इन शर्तों को पूरी नहीं कर सकतीं, केवल माया भाषा में ही ऐसा होता है।

रोसेटा स्टोन से कुछ कम तुल्य-रूप भी विद्यमान है—अर्थात् प्राचीन महीनों तथा अन्य कैलेण्डर पदों के सुरक्षित नाम, तथा उनको लिखने के लिए चिन्ह-गुच्छ, संख्यावाचक शब्दों को लिखने के ढंग, बिशप लैन्दा के द्वारा अभिलिखित 27 वर्ण, मूलभूत दिशाओं के लिए रंगों के लिए पशुओं की काफी बड़ी संख्या के लिए, देवताओं के लिए चिन्ह गुच्छ हैं—यह एक ऐसे कुछ विषय-खण्डों का संग्रह है, जिनका कुल जोड़ कुछ कम विचारणीय नहीं है। अन्ततः, प्राचीन पाण्डुलिपियों में बहुत से ऐसे मूल-पाठ हैं, जिनमें अर्थ इतना स्पष्ट है, मानो साथ साथ अनुवाद दे दिया गया हो, क्योंकि पाठ के साथ साथ, उसका स्पष्टीकरण करने के लिए ब्यौरेवार चित्र भी दिए गए हैं। अतः हमारे पास वास्तव में माया रोसेटा स्टोन है; साथ ही साथ लेखों की भाषा का ज्ञान भी है ताकि यदि चैम्पोलिअन की विद्वत्ता के समान भाषायी विद्वत्ता प्राप्त हो जाए तो इनमें से कुछ लेखों का अर्थ निर्धारण करना, तथा अनुवाद करना अब सम्भव है, तथा अन्ततः, उनमें से सभी लेखों का सम्भव हो जाएगा।

परन्तु, दूसरी ओर, भाषायी अर्थ-निर्धारक को अमरीकी पुरातत्व विज्ञान तथा भाषा-विज्ञानके बीच विद्यमान बड़ी खाई से ही अपने को सन्तुष्ट करना पड़ता है। भाषा-वैज्ञानिक दृष्टिकोण, जिसकी पाण्डित्यपूर्ण अभिरुचि केवल लेखों के स्वरूप मात्र में है, उस आधुनिक अमरीकी पुरातत्व विज्ञान के लिए विचित्र एवं दुर्बोध हो गया है, जिसके सुनिश्चित भौतिक प्रमाण के तर्कसम्मत सहसम्बन्ध का अत्यधिक विकास हुआ है; जबकि इसके लोकप्रिय पक्ष एवं आर्थिक सहायता का सम्बन्ध सौन्दर्यपरक अभिरुचियों से है, तथा उस अभिरुचि से है, जो विशेष रूप से एक आकर्षक प्रकार की ठोस. मानव विषय-वस्तु के साथ सम्बद्ध है। अब भाषायी तथा भाषा वैज्ञानिक अभिरुचि का, दोनों से अर्थात् भौतिक एवं भौतिकीय रूप से वैज्ञानिक अभिरुचि से, तथा

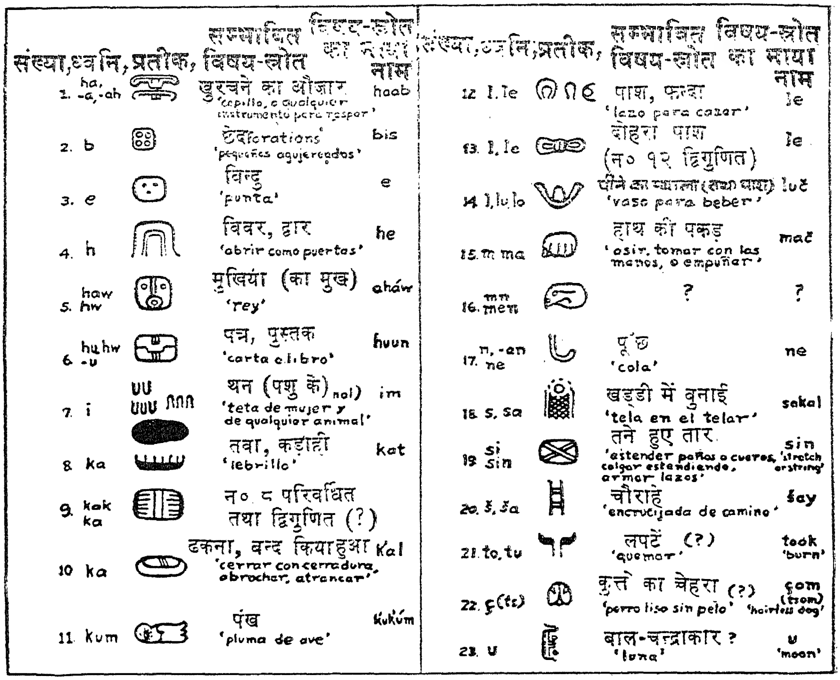
सौन्दर्यपरक एवं मानवीय अभिरुचि से, भेद दिखाना होगा; क्योंकि, जबकि यह किसी एक से भी पूर्णतया पृथक नहीं हैं, और यह शून्य में भी नहीं रह सकती—तो भी इसका मुख्य सम्बन्ध एक अन्य भिन्न स्तर से है, जो इसका अपना स्तर है। भाषायी विद्वान की किसी मूलपाठ में रुचि भाषा के ऐसे स्मारक के रूप में होती है, जिसे किसी काल-विशेष में अवरुद्ध करके सुरक्षित रखा गया हो। मुख्यतया उसकी रुचि पाठ की विषय-वस्तु में नहीं होती, जैसे इतिहास, लोक साहित्य, धर्म, ज्योतिष या किसी अन्य विषय में, परन्तु केवल उसके भाषायी रूप में होती है, जो उसके लिए सर्वोत्कृष्ट अभिरुचियों की अभिरुचि है। यहाँ उसकी वस्तुनिष्ठता का एक प्रकार से प्रारम्भ होता है—एक गम्भीर सच्चाई, कि उसका पठन, लेखन के वर्ण्य-विषय से सम्बन्धित सिद्धान्तों से प्रभावित नहीं होगा। भाषायी रूप पर ध्यान केन्द्रित करने के लिए वह वर्ण्य-विषय को एक ओर रख देता है। शब्दों के अन्दर, इसके व्यंजनों और स्वरों के वास्तविक स्थानों के द्वारा, इसके शब्दरूप तथा धातु रूप की रूपावलियों के द्वारा तथा वाक्य-विन्यास की अभिरचनाओं के द्वारा वह भाषा के वास्तविक रूप के पुनर्निर्माण को अपना लक्ष्य बनाता है, और इस प्रकार भाषायी वर्गीकरण के सम्पूर्ण क्षेत्र के साथ तथ्यों का एक नया रूप जोड़ देता है। उसके शोध कार्य का एक उपफल इतिहास और संस्कृति का पठन पाठन हैं; परन्तु यह प्रश्न उठाया जा सकता है, कि क्या काल परिदृश्य में, केवल भाषायी तथ्य सम्बन्धी उसका अन्वेषण, अधिक महत्त्वपूर्ण नहीं है? भारोपीय भाषाओं के विकास पर प्रकाश डालने के कारण हित्ती का अर्थ निर्धारण, हित्ती राज्यों और विजयों के सभी लेखों से कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण सिद्ध हुआ है। हित्तियों के युद्ध और राजनीतियाँ ऐसी ही मृत हैं जैसे हैक्टर के कफन में एक कील, परन्तु उनके क्रिया-रूप और सर्वनाम तथा सामान्य शब्द अब भी अमरीकी विश्वविद्यालयों में सजीव अभिरुचि के विषय हैं; क्योंकि सुचिन्तित अर्थ-निर्धारणसे आविभूत हित्ती भाषा के यथार्थतथ्य, भारोपीय भाषा विज्ञान विषयक हमारी धारणाओं में आमूल परिवर्तन कर रहे हैं। हित्ती का यह प्रामाणिक ज्ञान कभी घटित नहीं हो सकता था, यदि अर्थ-निर्धारण के विद्वान ऐसे भाषाविद् न होते, जिन्होंने धीरे-धीरे और सुचिन्तित रूप से, विद्वत्तापूर्ण पद्धतियों द्वारा, मूलपाठ को यथार्थ रूप में अत्यधिक आदर प्रदान करते हुए, तथा इसे अपना सर्वोपरि कर्त्तव्य समझते हुए, वास्तविक शब्दों और व्याकरण का पता न लगाया होता। यह कभी भी सम्भव नहीं हो सकता था यदि वे हित्ती इतिहास और संस्कृति के सामान्य सर्वेक्षण मात्र को अपना कर्त्तव्य मान बैठते, या पुरातत्व-विज्ञान की सूखी अस्थियों को मानव आख्यान के माँस से ढकना ही अपना कर्त्तव्य समझते, क्योंकि ये बातें महत्त्वपूर्ण तो हैं ही।

माया अर्थ-निर्धारण के लिए अपेक्षित ध्येय इससे भिन्न नहीं हैं। माया पाण्डुलिपि पढ़ते हुए भाषायी रूपों का धीमा और सुचिन्तित अनुसंधान होना चाहिए, तथा वह अनुसंधान उनकी विषयवस्तु में रुचि अथवा रुच्यभाव से निरपेक्ष होना चाहिए। हमें इतिहास, संस्कृति, धर्म, अथवा और जो भी कुछ उसमें हो,. उसकी

सूचना के लिए माया-साहित्य को सामान्य रूप से पढ़ना अपना काम नहीं समझ लेना चाहिए। इस विषय का इतिहास माया की प्राचीन पाण्डुलिपियों की सारी सामग्री की एक ही तीव्र झपट्टे के साथ व्याख्या करने, या पढ़ लेने के, प्रयत्नों से बोझिल हुआ पड़ा है, जिसमें Brasseur de bourg से लेकर अभी हाल के ऐसे प्रयत्न भी सम्मिलित हैं। इस तरह की विचित्र बातें, तड़क भड़क तथा फल प्राप्त करने की इच्छा से उत्पन्न होती हैं, तथा इन निष्कर्षों से प्राप्तव्य, सबसे अधिक बहुमूल्य, वस्तु के विषय में नासमझी के कारण भी होती हैं। दूसरी ओर, सीरस थामस (Cyrus Thomas) का बहुत सा काम तथा मोरले (Morley) तथा अन्यों के द्वारा निर्दिष्ट भाषायी सामग्री के विभिन्न अंश, कम से कम ठीक दिशा में रहे हैं। ऐसा लगता है कि उन्होंने इस बात को समझ लिया है कि वास्तविक समस्या क्या है?

माया लेखन-पद्धति जटिल परन्तु बहुत ही स्वाभाविक ढंग की थी। उन लोगों के लिए स्वाभाविक थी, जो भाषा को दृश्य चिन्हों में स्थापित करने के विचार का प्रयोग करना प्रारम्भ कर रहे थे। वे चित्र जैसे चिन्हों को, उच्चारणों की ध्वनियों के खण्डों का प्रतिनिधित्व करने के लिए प्रयोग में लाना चाहते थे (प्रायः किसी अक्षर या उससे भी कम मात्रा की ध्वनियों का), तथा इन चिन्हों को इस तरह जोड़ते थे कि उच्चारण के जोड़े गए खण्ड एक वाक्य या शब्द के सम्पूर्ण उच्चारण की रूपरेखा प्रस्तुत कर सके। इस पद्धति को, या किसी विशिष्ट, प्रतीक को 'ध्वन्यात्मक' कहा जाए या 'भाव-मूलक'—इस पर अनावश्यक तथा निष्फल वितण्डावाद से इस पद्धति के अध्ययन में पहले काफी अवरोध उत्पन्न हुए। समाकृतिपरक भाषायी दृष्टिकोण से, इनमें कोई अन्तर नहीं है। "भावलिपि" तथा कथित बौद्धिक शब्दावली का एक उदाहरण है, जो हमें भाषायी दृष्टिकोण से कुछ नहीं बताता। किसी भी प्रकार का लेखन चाहे कितना भी अपरिष्कृत अथवा आदिम हो, अभिव्यक्ति के भाषायी रूपों से पृथक किएहुए विचारों का प्रतीक नहीं होता है। एक प्रतीक, जब अकेला होता है, तो एक 'शुद्ध विचार' का प्रतीक हो सकता है, परन्तु विचारों के निश्चित क्रम में से एक विचार का प्रतिनिधित्व करने के लिए इसे अवश्य ही एक भाषायी रूप या किसी भाषायी रूप का अंश बनना पड़ेगा। चीनी सहित सभी लेखन पद्धतियाँ साधारणतया भाषायी उच्चारणों की प्रतीक होती हैं। लिखी जा रही भाषा में स्पष्टतया अर्थयुक्त अनुक्रम (वाक्यँश या वाक्य, उदाहरणार्थ) के साथ विलक्षण अनुरूपता के लिए ज्योंही उच्चारणों के लिए पर्याप्त प्रतीक इकट्ठे कर दिये जाते हैं तो प्रतीकों का वह समुदाय उस भाषा के मूल पाठक के लिए उस भाषायी अनुक्रम का अर्थ अवश्य ही सूचित करता है—चाहे प्रत्येक प्रतीक पृथक् रूप में किसी भी अर्थ का संकेत करता हो। लेखन चाहे किसी भी प्रकार का हो उसमें अर्थ इसी प्रकार से प्रविष्ट होता है, अन्य किसी तरह नहीं। रेखाबद्ध या प्रतीकों के भौतिक अनुक्रम रेखीय का अर्थ, प्रतीकवादों अथवा द्योतितार्थों का कुल जोड़ नहीं है, जो पृथकता में प्रतीकों का हो सकता है, परन्तु सम्पूर्ण भाषायी रूप का अर्थ है जिसका संकेत वह अनुक्रम देता है। अतः यह तथ्य , कि कुछ व्यक्तिगत चिन्ह उच्चरित

ध्वनि के शब्दों द्वारा द्योतित विचार, भावों, अथवा वस्तुओं के चित्रों जैसे लगते हैं, पठन में कोई वास्तविक 'पार्ट' अदा नहीं करता, क्योंकि ये चिन्ह उच्चारण के अंशों के लिए उतने ही प्रतीकात्मक, सीखे गए और अन्तत: यादृच्छिक हैं, जितने कोई भी अन्य लिपि-चिन्ह या वर्ण। दूसरी ओर, एक विषय या चित्र से समानता, अर्थ-निर्धारण में सचमुच महत्त्वपूर्ण हो सकती है।



ध्वन्यात्मक-मूल्यों से मुक्त माया प्रतीकों के उदाहरण

यह समानता इस रहस्य का सूत्र प्रस्तुत करने में भी महत्त्वपूर्ण हो सकती है, कि यह चिन्ह अपने मौलिक प्रयोग के तर्कानुसार तथा परिणामस्वरूप उच्चारण के खण्ड के अनुरूप किस प्रकार आविष्कृत हुआ—अर्थात् ध्वनि, जो पठन के अन्तर्गत इस समस्या का समाधान करती है—एक ऐसा सूत्र जिसका परीक्षण इस दृष्टि से करना होगा कि प्रस्तुत खण्ड या ध्वनि प्रत्येक प्रस्तुत पठन में कितनी अच्छी तरह संगत बैठती है।

चित्र 3 में 23 प्रतीक दिखाए गए हैं, जो समस्त माया साहित्य में प्राप्त, कई सौ प्रतीकों में से चुने गए हैं। ये विशिष्ट प्रतीक इसलिए चुनें गए हैं क्योंकि ये इस लेख में अर्थ-निर्धारण के उदाहरणों के रूप में प्रयुक्त लिखित शब्दों और प्राचीन पाण्डुलिपि वाक्यों में प्रवेश कर जाते हैं। उच्चारण के वे खण्ड, जिनके ये प्रतीक नियमित रूप से सदृश हैं, उनका निश्चयीकरण ऐसे तुलनात्मक प्रमाणों द्वारा किया गया है, जो अन्ततः प्रमाणों के उस वर्ग से जा मिलता है जिसे मैंने रोसेटा स्टोन

के नाम से अभिहित किया है । चिन्ह 1, 2, 3, 7, 8, 12, 17, 22 लैन्दा (LANDA) ने भी इन्हीं मूल्यों सहित अपनी पुस्तक *Relacio'node les cosas de yucatán* में दिए हैं, जो माया लोगों पर विजय प्राप्ति के बाद का उनका प्रथम विवरण है। बाईं ओर का कॉलम वर्णमाला के क्रमानुसार उच्चारण के खण्ड दर्शाता है, जो नियमित रूप से[1] 'लिखित रूप में किसी एक चिन्ह की आकृति के सदृश होता है। दाईं ओर का अगला कॉलम उन लिखित चिन्हों का सामान्य रूप प्रदर्शित करता है, जिनके साथ कुछ स्थितियों में सामान्य पाठभेद भी जोड़ दिए गए हैं। इस सूची में उन सभी चिन्हों के एक तिहाई से भी कम चिन्ह सम्मिलित हैं, जिनके ध्वन्यात्मक मूल्य को मैं अच्छी तरह सिद्ध मानता हूँ ।"Probable object Source" (विषय का सम्भव स्रोत) के शीर्षक वाला कॉलम उस वस्तु या परिस्थिति को अभिलक्षित करता है जिसका लिखित चिन्ह शायद किसी समय एक चित्र था। तथापि, चित्रात्मक उत्पत्तियों के ये सिद्धान्त, जबकि वे सम्भव प्रतीत होते हैं और उनका महत्त्वपूर्ण मूल्य है, ध्वन्यात्मक मूल्यों के लिए प्रमाण नहीं हैं, और 'उनका

---

1. निरपवाद रूप से तो नहीं, परन्तु नियमित रूप से इन सभी चिन्हों के विषय में, क्योंकि माया लेखन-पद्धति में बहुस्वनता एक सामान्य वैशिष्ठ्य है जैसा कि यह सुमेरी एवं अक्कादी (बेबीलोनियाई) कीलाक्षरों का भी है । अर्थात् बहुत से चिन्ह एक वर्ग के अन्तर्गत थोड़े से भिन्न मूल्यों के साथ साथ दो या अधिक व्यतिरेकी वर्गों के ध्वनिमूल्यों से युक्त बहुस्वन हैं, जैसे ha या h स्वर रहित अथवा अनिश्चित; ऐसी मामूली भिन्नताएं बहुस्वनिक व्यतिरेक से भिन्न स्तर पर हैं । उसी देश का पाठक जो शब्दों के सम्पूर्ण रूपों को समझने में समर्थ है इन बहुस्वनिक मूल्यों के कारण भ्रम में नहीं पड़ता, उसे एक के साथ जोड़े गए दूसरे चिन्हों से ज्ञात हो जाता है कि कौनसा बहुस्वनिक मूल्य उस स्थान पर लागू होता है ठीक ऐसे ही, जैसे एक अंग्रेजी पाठक women के अन्तर्गत O से तथा colonel के अन्तर्गत olo से भ्रम में नहीं पड़ता, परन्तु वह सम्पूर्ण विन्यास से इस प्रकार निर्दिष्ट होता है कि उसकी उच्चारण खण्डों के प्रति प्रतिक्रिया लिखित रूप O एवं o lo के साथ नियमित रूप से सम्बन्धित प्रतिक्रिया से नितान्त भिन्न होती हैं । इसलिए बहुस्वनता उसी प्रकार की चीज है जैसे वर्णमालीय लेखन पद्धति में अनियमित वर्तनी । अतः चित्र 3 माया चिन्ह नं० 5 का मूल्य la, तथा l भी है जैसे (lak'in, lik'n) (पूर्व) आदि शब्दों के लिखने में; बहुत सम्भव है कि यह मूल्य lalail "विशालतम" महानतम, मुख्य, प्रधान शब्द से ग्रहण किया गया हो जो कि ahaw का निकट पर्याय है । चिन्ह नं० 15 का मूल्य कभी कभी ć होता है जैसे कि ćikin "पश्चिम" लिखने में, यह मूल्य सम्भवतः ćuk, "हाथ से पकड़ना या लपकना" शब्द से ग्रहण किया गया है जो màc का निकट पर्याय है।

गलत सिद्ध होना' न तो ध्वन्यात्मक मूल्यों को रद्द करता है और न ही पठनों को परिवर्तित करता है; बल्कि उनका केवल यही अर्थ होगा कि चिन्ह का मूल स्रोत कोई अन्य है, वह नहीं जिसकी मैंने कल्पना की है। कुछ चिन्ह ऐसे हैं जिनकी कोई भी व्याख्या देने में मैं असमर्थ हूँ (जैसे सं० 16), फिर भी जिनके लिए ध्वन्यात्मक मूल्य यथोचित रूप से निश्चित हैं। मैंने संख्या 6 के सम्भावित विषय स्रोत का भी अनुमान तब तक नहीं लगाया जब तक कि कई वर्षों तक मैं इसका ध्वन्यात्मक मूल्य नहीं जान गया था।

दाईं ओर के अन्तिम कॉलम में माया शब्द दिए गए हैं, ठीक वैसे ही जैसे वे मौतुल शब्दकोष[2] में किसी वस्तु या स्थिति के लिए विषयस्रोत मानकर

---

2. मोतुल शब्दकोष सोलहवीं शताब्दी के किसी अज्ञात रचयिता की कृति है, जिसका श्रेय Fray Antonio de ciudad Rèal के नाम पर आरोपित किया जाता है, तथा विजयकालीन माया भाषा के विषय में सूचना देने वाला यह सबसे बृहद् एवं प्रामाणिक स्रोत है। वास्तव में यह न केवल शब्दकोष है अपितु एक व्याकरण तथा उद्धरणिका भी है क्योंकि इसमें अधिकतर शब्दों के उल्लेख के साथ-साथ उपवाक्यों तथा वाक्यों के प्रचुर उदाहरण भी दिए गए हैं। इन उदाहरणों में उस काल की माया भाषा की प्रातिपदिक रचना पद्धति बड़े सुन्दर ढंग से दी गई है, वाक्यविज्ञान के विषय में भी यही बात सत्य है। चित्र-3 के माया शब्दों का उल्लेख पारम्परिक माया लेखन पद्धति में नहीं किया गया है परन्तु उन ध्वन्यात्मक वर्णों में किया गया है जिन्हें आजकल के अधिकतर भाषा विज्ञानी अमरीकी इण्डियन भाषाओं के लिए करते हैं, American Anthropological Association की संशोधन पद्धति केवल वर्त्स्य स्पर्श-संघर्षी C (ts जैसी ध्वनि) के स्थान पर C का प्रयोग किया जाता है। यहां पर केवल (सेडिला) एक छोटी सी घुण्डी जैसे Ç C में जोड़ दी गई है, ताकि माया लेखन पद्धति में K का प्रतिनिधित्व करने वाले C के साथ भ्रम उत्पन्न न हो। प्रतीक 22 का उल्लेख landa द्वारा C के मूल्य के रूप में किया गया है, यह निश्चित है कि उसका अभिप्राय स्पेनिश Ç या कोमल ध्वनि C से था जैसा कि Ce वर्ण के नाम में है, जिसे बहुत सम्भव है उसने अपने माया सूचक को लिखने के लिए कहा होगा। C की यह कोमल ध्वनि पुरानी स्पेनिश में ts के निकट थी, और यही कारण है कि उसे ts के लिए प्रयुक्त माया चिन्ह 22 के तुल्य माना गया है। ć तथा ś ध्वनियाँ अंग्रेजी की Ch तथा sh ध्वनियाँ हैं K' कण्ठयीकृत K है इस भाषा में इस प्रकार कण्ठ्यीकृत ध्वनियों की एक श्रेणी है: p', t', c̓, ć', K' किसी विचित्र भूल के कारण मोतुल शब्दकोष में ne (पूँछ) का उल्लेख नहीं है, परन्तु वास्तव में, यह एक प्रसिद्ध माया शब्द है।

दिए गए हैं। आगे चलकर हम यह देखेंगे कि इस विषय के माया नाम की प्रारम्भिक ध्वनि (अर्थात् प्रथम व्यञ्जन और / या प्रथम व्यञ्जन तथा स्वर) वह ध्वनि है, लेखन में, जिसका प्रतिनिधित्व चिन्ह करता है—जैसा कि बाईं ओर के कॉलम में दिखाया भी गया है; केवल सं० 1 की स्थिति को छोड़ कर जिसमें a या ah बनाने वाला आरम्भिक h या तो लुप्त हो जाता है या उसका स्थान बदला जाता है। विषय स्रोत के अंग्रेजी नाम के नीचे स्पेनिश लेखन वह ढंग है, जिसमें मोतुल शब्दकोष, बिल्कुल दाईं ओर के कॉलम में माया शब्दों की परिभाषा देता है।

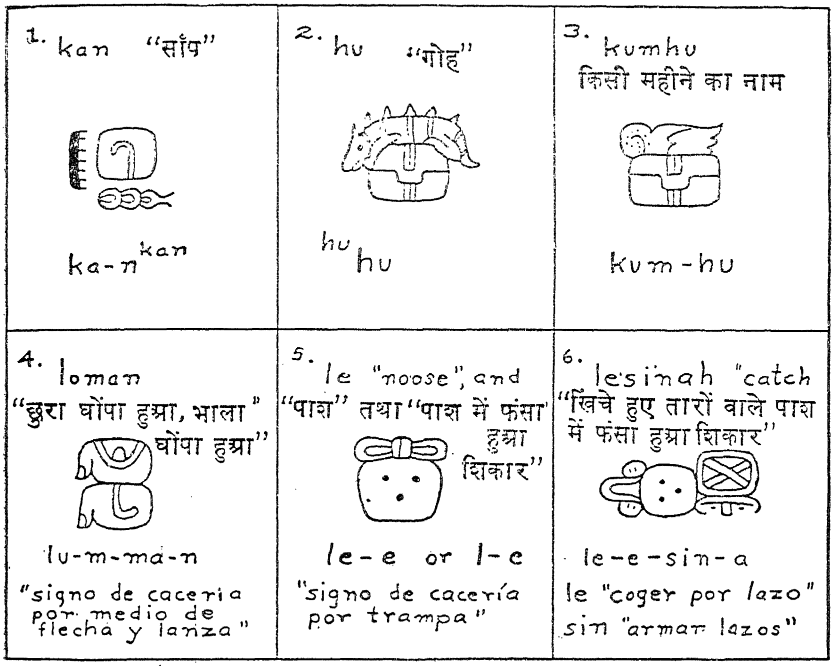
तब आकृति संख्या 3 स्वत: स्पष्ट होनी चाहिए। यहाँ अधोलिखित संपूरक टिप्पणियाँ जोड़ी जा सकती हैं: संख्या 1 शब्द के आरम्भ में नहीं आती। माया में प्राथमिक शब्दारम्भिक h जब गौण रूप से शब्द के मध्य में आता है—जैसे जब यह समस्त शब्द के उत्तरपद के आरम्भ में आता है तो इसकी प्रवृत्ति क्षीण हो जाने की या लुप्त हो जाने की होती है। यह बताता है कि क्यों एक अक्षर मूल रूप से ha को सूचित करने पर भी जब केवल शब्दों के अनारम्भिक खण्डों को लिखने के लिए प्रयुक्त होता है तो a को सूचित करता है। संख्या 6 विशेष रूप से दिलचस्प है। माया में 'लिखना' या 'पुस्तक' के लिए साधारण तथा विश्लेषण-योग्य शब्द हैं—ये शब्द 'रंग भरना' या 'रेखा चित्र बनाना' से सम्बन्धित नहीं हैं जैसे अज़्तेक तथा अन्य बहुत सी अमरीकी भाषाओं में हैं। यह तथ्य, अन्य परिस्थितियाँ समान होने पर, इन अन्य संस्कृतियों से माया संस्कृति में लेखन की अधिक प्राचीनता को प्रमाणित करता है। माया पत्र तथा पुस्तकें (उदाहरणार्थ, प्राचीन पाण्डुलिपियाँ) पतले और महीन कपड़े की एक लम्बी बनाई हुई पट्टी पर लिखी गई हैं, जो कि तब मोड़ी जाती थी, और बाँधे जाने पर उसकी बाह्याकृति अपने लिफाफे में बन्द एक आधुनिक पत्र के समान या संख्या 6 के समान होगी [3] प्राचीन पाण्डु-

3. **जैसा कि इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि नं० 6 जिस वस्तु का प्रतिनिधित्व करता है उसके विषय में मैं पहले सिद्धान्तों को मानता हूं; जिनमें से एक को जो इसे 'मक्के का दाना' कहता है (जिसके साथ इसका कोई साम्य नहीं है) मैं नितान्त काल्पनिक मानता हूं। यह तथ्य कि कुछ माया चित्रों में मक्के का पौधा लेखन के वर्णों से प्रस्फुटित होता दिखाया जा सकता है, तथा वर्ण बहुत से व्यक्ति अथवा पदार्थों वाले दृश्यों में भाग ले सकते हैं, एक गौण प्रतीकवाद है, यह वह मौलिक तर्क नहीं जिससे वर्णों की उत्पत्ति हुई। समस्त विस्तृत गौण प्रतीकवाद, सम्भवतः अधिकतर धार्मिक एवं जादु सम्बन्धी प्रतीकवाद का वर्णों के उनके लेखन प्रतीकों के सामर्थ्य के रूप में पठन से कोई सम्बन्ध नहीं, यदि कुछ है तो वह उससे अधिक नहीं जितना कि गुरू परम्पराओं में हिब्रू वर्णों के चारों ओर विकसित विस्तृत प्रतीकवाद तथा संख्या-समनौती हिब्रू पाठों के पठन पर एक लवमात्र का प्रभाव डालती है। यह गौण प्रतीकवाद अन्ततोगत्वा तुलनात्मक साहित्यिक**

लिपियों में i के लिए घुण्डी (im) चिन्ह प्राय: तीन घुण्डियों के साथ प्रकट होता है, जो मुझे यह सोचने के लिए प्रेरित करता है कि इसके लिए हिरण अथवा किसी अन्य पशु के थन, मूलरूपों में से एक रहे होंगे। कभी कभी ये दो के साथ भी प्रकट होता है। लैन्दा इसे दो घुण्डियों के साथ ही देता है, तथा ik(दिन) का चिन्ह केवल एक घुण्डी के साथ मूल मानवीय वक्ष, रूप पर आधारित हो सकता है। नं० 8 शायद Kat का प्रतिनिधित्व करता है जो कुछ मिट्टी की डलिया जैसी, या लकड़ी के कड़ाहे जैसी, ट्रे (किश्ती) या नीची समतल टब, प्राय: किश्ती की सी आकृति की होती है। इसे ćem या 'नाव' भी कहा जाता था (देखिए मौतुल शब्दकोष (HEM Licil PPO और CHEM CHE) तथा इसके विपरीत एक नाव 'Kat' कही जाती होगी। कंधे की सी रेखाएं लम्बी धारी वाली नेमि का प्रचलित रूप हो सकती हैं, या बाहर निकली हुई टोकरी की सी लचीली टहनियों का रूढ़ीकृत रूप हो सकती हैं, या Kat (किश्ती) में बैठे हुए लोगों का प्रतिनिधित्व कर सकती हैं, जिसका अर्थ किश्ती है। सं० 10 लेखन प्रतीकों तथा माया कलाओं में मिलने वाले बहुत से संदर्श आरेखणों का उदाहरण है—एक वृत्ताकार चपटा घड़ा, टोकरी या तुम्बी जिस पर एक ढकना बंधा हुआ है, या चिपका हुआ है। जैसा कि सुविदित है, माया बहुत प्राचीन काल से ही परिप्रेक्ष्य में, ये आरेखण बनाती रही है। नं० 11 Kúk'úM "पंख या पिच्छक" है, और यह शब्द k'úM प्रातिपदिक का वास्तविक आरम्भिक रूप माना जाता था, तथा Kú को एक अभ्यास माना जाता था, एक स्थिति जो ऐतिहासिक दृष्टि से चाहे कभी न रही हो, परन्तु माया जैसी भाषा में सादृश्य के कारण मानी जाएगी, जिसमें प्रारम्भिक

अध्ययन का विषय बन सकता है, जहाँ पर यह संभवतः महत्त्वपूर्ण सिद्ध हो सकेगा। वर्तमान स्थिति में, तथा विशेषतः भाषायी दृष्टिकोण से लेखन पद्धति में माया चिन्हों के कार्य एवं प्रतीकों का सही रूप समझने के लिए यह आवश्यक है कि इस प्रकार के सभी प्रतीकवाद से इसे मुक्त कर दिया जाए। दिन Kan **को द्योतित करने के लिए नं०** 6 **का प्रयोग, दिन के मौलिक नाम** Hu **अर्थात् गिरगिट** iguana **का लेखन है (देखिए अज्तेक** Cuetzpalin **'गिरगिट' 'उसी दिन' के लिए) केवल** Ik, Cimi, Caban **तथा सम्भवतः** Manik, Cauc **एवं** EZnab **तथा दूसरे एक या दो को छोड़कर माया संस्कृति में लेखन पद्धति की स्थापना होने के पश्चात् दिनों के सभी नाम बदल गए। कुछ दिनों के नाम का द्योतन उनके मौलिक नामों के आदि अक्षर या वर्ण से ही होता रहा, ठीक इसी तरह जैसे हम** libra **के लिए** lb **लिखते हैं परन्तु इसे पढ़ते पाउंड हैं। दिवस प्रतीकों के विषय में** seler **के प्रचुर चिन्तन को अत्यन्त सावधानी से प्रयोग में लाना चाहिए और वह भी उस स्थिति में जबकि वे निकृष्ट प्रकार की बाधाएं उत्पन्न न करें।**

अभ्यास बहुत अधिक प्रयोग में आने वाली व्युत्पादक प्रक्रिया है। सं० 16 के स्रोत के विषय में अभी कुछ भी धारणा नहीं बनाई गई है—एक सिर का पार्श्व चित्र तोते जैसी चोंच के साथ—यहाँ सुझाव होगा कि तोते जैसे पक्षी को moan या muan कहा जाता है । चिन्ह, व्यंजनात्मक अनुक्रम m। का संवादी है, जिसके मध्य में कोई स्वर आ सकता है, या स्वराभाव भी हो सकता है, तथा यह एक दिवस चिन्ह के रूप में दिन का द्योतक है। संख्या 23 बहुत अधिक सं० 1 के समान प्रतीत होती है, परन्तु यह हमेशा खड़ी होती है तथा इसके नतोदर पक्ष को समूह की ओर करके इसे चिन्ह समूह के सामने रखा जाता है, जबकि सं० 1 को गुच्छ के सामने नहीं रखा जाता और प्रायः पड़ी होती है।



चित्र 4—शब्दों का प्रतिनिधित्व करने वाले माया चिन्ह समूह ।

चित्र 4 में प्राचीन पाण्डुलिपियों में आने वाले 6 शब्दों का लेखन है।[4] चिन्ह-

---

4—"A Comparative decipherment of 46 Maya written words" **नामक एक अप्रकाशित लेख में जो, वाशिंगटन में** D.C. **दिसम्बर** 1936 **में हुई** American Anthropological Association **की एक गोष्ठी में पढ़ा गया था, मैंने 46 शब्दों के लेखनों का, समान ढंग से विश्लेषण करके दिखाया था, जिन शब्दों में इन प्रस्तुत 6 चिन्हों में से** hu **तथा** kumhu **भी सम्मिलित थे ।**

समूहों या विभिन्न पशुओं के चित्र बहुत पहले से ज्ञात हैं । इनका निश्चय मूलतः Schellhas ने चित्रों के साथ उनकी संगति से किया था[5]। संख्या 1 को Schellhas ने 'सर्प' अर्थ वाले चित्र के रूप में उद्धृत किया है। यह देखा जायेगा कि यह चित्र 3 के स० 8 Ka, और सं० 17 n तथा एक तीसरे प्रतीक से युक्त है। चित्र 4 के अगले चित्र में तीसरा प्रतीक, तथा गोह आकृति ही ऐसे प्रतीक हैं, जो इस लेख में उद्धृत हैं तथा चित्र 3 में नहीं मिलते। प्रथम दो प्रतीकों की वर्तनी 'Kan' है जो 'साँप' के लिए माया शब्द है । तीसरा प्रतीक, सम्भवतः. अमरीकी रैटल साँप की खड़खड़ाहट से लिया गया है, जिसका अभिप्राय सर्प अर्थात् Kan की भाषायी प्रतिक्रिया जागृत करना है, तथा इसका स्वयं का मूल्य Kan सर्प है। फिर भी Kan शब्द को लिखना स्पष्ट रूप से अपर्याप्त है। माया पद्धति में एकाक्षरिक शब्द को उस अक्षर के मूल्य वाले केवल एक चिन्ह से लिखना प्रचलित नहीं था, सम्भवतः इसलिए कि वह चिन्ह प्रायः बहुस्वनिक तथा अन्य मूल्यों वाला होता था। इसकी अपेक्षा माया पद्धति, अक्षर को उन चिन्हों के संयोग से संकेतित करने की है, जो लेखन की परिपाटियों से प रिचित मायाभाषियों के लिए सम्भवतः सुस्पष्ट थे। चिन्हों का वह संयोग दो सिद्धान्तों के अनुसार किया जा सकता था: (1) साँश्लेषिक ढंग से—उन चिन्हों से अक्षर बनाना जो अक्षर के अंश समझे जायेंगे, तथा जो इकट्ठे मिलकर सम्पूर्ण अक्षर बनाते हैं । (2) पुनरावृत्त अभिकथन से अर्थात् पुनरावृत्त के अर्थ में सारे अक्षर को बताने के विभिन्न तरीकों को जोड़कर। एक अक्षर वाला एक शव्द, या एक लम्बे शव्द के अन्दर ही प्रायः एक अक्षर को, दोनों में से किसी एक पद्धति से या दोनों से लिखा जा सकता था जैसेKan शब्द के प्रस्तुत लेखन के विषय में। संयोगात्मक रूप से Ka तथा n चिन्ह इसे बनाते हैं, चिन्ह Kan इसे दोहराता है, हम दो बार लिखते हैं पर पढ़ते एक बार हैं। यह बात इस तरह है जैसे मानों लेखन पद्धति कहती हो कि कि "मेरा प्रथम Ka है, मेरा द्वितीय n है, मेरा सम्पूर्ण 'Snake-rattle' चिन्ह के मूल्यों में से एक है, अतः वह Kan होना चाहिए। इसके सभी भागों के योग से संयोग है Ka-n-Kan ,परन्तु हम लिप्यन्तरण सिद्धान्त का प्रयोग यह दिखाने के लिए कर सकते हैं कि Ka-n-Kan में अन्तिम Kan केवल लिखने के लिए है, पढ़ने के लिए नहीं।

चित्र 4, संख्या 2 चिन्ह-समूह है, जिसका अर्थ है 'गोह' या 'बड़ी छिपकली', एक बिल्कुल स्पष्ट अर्थ—क्योंकि इसके साथ पशु का एक सादा चित्र भी है। परन्तु यह चित्र जैसा चिन्ह चाहे यह कितना भी पशु के समान लगे, अपने आप शब्द का अर्थ 'गोह' लिखने के लिए पर्याप्त नहीं है । जैसा कि पहले ही देखा गया है, माया पद्धति स्वयं समर्थ लेखन की एक इकाई के लिए कम से कम एक

5. Paul Schellhas, Göttergestalten der Mayahand schriften, 1897.

अन्य चिन्ह है साथ संयोग चाहती है, इस नियम के अपवादों की बहुत ही सीमित सी सूची है। इनमें से सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण 20 दिवस-चिन्ह हैं, जो पूर्ण गुच्छ के आकार में परिवर्धित अकेले तत्त्व हैं, तथा स्वयं समर्थ है। चिन्हों के गुच्छ होने से मास चित्र तथा पंचाँग से सम्बन्धित चित्र, सामान्यतः, इस नियम के अनुरूप हैं। सं० 2 एकाक्षरिक शब्द hu के लिए साधारण चिन्ह चित्र 3 सं० 6 का प्रयोग करता है, जिसमें सबसे ऊपर 'गोह' की आकृति है तथा निस्सन्देह जिसमें पशु के नाम का भाषायी महत्त्व है। यहाँ लिप्यन्तरण में जिस सूत्र का हम प्रयोग करते हैं वह hu-hu है, जिसका पठन या उच्चारण निस्सन्देह hu किया जाएगा।

सं०3 KUMHU शब्द को, जो एक माया महीने का नाम है, पूरी तरह संश्लिष्ट पद्धति से लिखता है। यह इस 'CUMhu' महीने का सुविदित चित्र है, जैसा कि प्राचीन पाण्डुलिपियों में मिलता है। यह पंख चिन्ह Kum, चित्र 3, सं० 11, तथा सं० 6का प्रयोग करता है—अतः हम इसका लिप्यन्तरण करते हैं Kum-hu। प्राचीन पाण्डुलिपियों के कुछ अन्य शब्द जो चिन्ह Kum चित्र 3, सं० 11 का प्रयोग करते हैं, वे हैं—Kumah प्रकृति 'sit' (बैठना) सकर्मक प्रत्यय के साथ अर्थ है "स्थान" seats (आसन) या carries seated (बैठे हुओं को ले जाता है) और Kumac 'साँप' अर्थवाला एक अन्य शब्द (देखिए Quinche kumaç 'snake')। इन शब्दों में स्वरों के मूल्यों के सम्बन्ध में हम अब भी कुछ संशय में है, तथापि सामान्य ध्वन्यात्मक रूपरेखा की इस तथ्य से बड़े रोचक ढंग से पुष्टि होती है, कि प्राचीन पाण्डुलिपियों में kumah को न केवल kum-ma (11 तथा 15 चिन्हों के साथ) की तरह बल्कि k𝜔-m-a की तरह भी लिखा जाता है, जबकि लैन्दा cumhu मास को लिखने का एक ढंग उद्धृत करते हैं जो k𝜔-m-h𝜔 का गुच्छ है, जिन दोनों लेखनों में k𝜔 तथा m चिन्ह चित्र 3 में सम्मिलित नहीं है (परन्तु अन्य प्रमाणों से इसकी पुष्टि हुई है) जबकि चित्र 3 में a सं० 1 है, तथा h𝜔 सं० 5 है।

चित्र 4 सं० 4 शिकार से सम्बन्धित तथा शिकार चित्रों से स्पष्टीकृत प्राचीन पाण्डुलिपि Tro-cortesianus के मूलपाठ में आता है। स्पष्टतया यह चिन्ह-गुच्छ, भालों अथवा बाणों से मारे गए पशुओं का निर्देश करने वाला शब्द है, तथा Tro-cortesianus के villacorta संस्करण[6] के भाष्य में इसे "signo de caceri'a por medio de flecha y Lanza" कहा है। यह एकाक्षरिक चिन्ह के द्वित्व से संश्लिष्टतया संरचित एक लेखन है। सबसे ऊपर 'भाला-तथा-फन्दा' चिन्ह lu, lo चित्र 3 का सं० 14 है, जो द्वित्व किए गए संख्या 15 m, ma की रूपरेखाओं में लिखा गया है। द्विगुणित युगल का पूंछ के पास का नीचे का सदस्य चित्र 3 का सं० 17 है। जब हम किसी चिन्ह ही की द्विरावृत्ति पाते हैं, जिसे पूरे ढांचे में सम्भवतः आक्षरिक माना जाएगा, तथा जिसकी पुष्टि एक

6. J. Antonio Villacorta C. and Carlos A. Villacorta, Co'dices Mayas, published iu "Arqueologia Quatemalteca", 1932.

उपाक्षरिक से होगी, तो हम अतिलिपि लिखने की पद्धति के बिना ही लिप्यन्तरण कर सकते हैं; अपेक्षाकृत एक ऐसी पद्धति का प्रयोग करके जो एक दीर्घ व्यञ्जन या स्वर के रूप में सम्भव व्याख्या की अनुमति देती है—जैसे इस स्थिति में ma-ma नहीं बल्कि m-ma लिखा जायेगा। तब संख्या 4 का लिप्यन्तरण lu-m-ma-n या lo-m-ma-n किया गया है, जो ठीक उसी अर्थ वाला शब्द है जो चित्रित दृश्यों की संगति हमें बताती है। यह lom प्रकृति की—an में कर्मवाच्य भूतकालिक कृदन्तीय रूपरचना है, जिसका अर्थ है चीरना, छुरा भोंकना या प्रहार करना, तथा व्युत्पत्ति से इसका अर्थ है 'भाला', जबकि क्रियात्मक रूपरचना के साथ यह "चीरने के कर्म" को द्योतित करती है। मोतुल शब्दकोष "lom: tiro de lanza,o dardo, y cosas assi, y estocada'o pun'alada", देता है। यह प्रकृति सकर्मक क्रियात्मक रूपरचना के साथ मोतुल शब्दकोष में ऐसे दी गई है–"lomah, ob: fisgar, o harponear, dar estocada o pun'alada, alancear y aguijonear", यह उद्धरण कर्मवाच्य कृदन्तीय रूप से अनुसृत है—"lomán: cosa que esta assi fisgada" अतः माया मूलपाठ के चित्रलेखों में लिखित, इस loman शब्द का अर्थ है—भाले के द्वारा भोंका गया, मारा गया, चीरा गया, घायल किया गया, या मारा गया, इत्यादि।

चित्र 4 का सं० 5 एक चिन्ह के स्वाभाविक स्वर के द्वित्व के साथ संश्लिष्ट है। Tro-cortesianus प्राचीन पाण्डुलिपि के शिकार के विभाग में यह सामान्य है, तथा स्पष्टतया पाश अथवा कमन्द के द्वारा, या पाश जाल में पशुओं के पकड़ने का द्योतन करने वाला शब्द है, —या एक फन्दे के जाल द्वारा पकड़ने में,—ऐसा जाल जिसमें एक फन्दा होता है, जिसे ऐसे एक स्प्रिंग के साथ बाँध दिया जाता है जिसमें एक लम्बी रस्सी के साथ एक घोड़ा होता है, और रस्सी छोटे झुके हुए वृक्ष में इस तरह बंधी हुई होती है, कि जब पशु इस फन्दे में कदम रखता है, तथा उस घोड़े को ढीला कर देता है तो वृक्ष पीछे की ओर उछलता है और उछलने से फन्दे की खिसकने वाली गाँठ को खींचते हुए पशु को पकड़ लेता है। चित्र या चिन्ह गुच्छ सं० 5 में इस क्रिया के चित्र साथ दिए गए हैं जैसे Tro-cortesianus 42 c villacorta में इसे "signo de caceri'a por trampa" कहा जाता। इसमें डबल पाश या गाँठ चिन्ह l; le चित्र 3 सं० 13 और बिन्दु चिन्ह e चित्र 3 सं० 3 है तथा लिप्यन्तरण के लिए le-e तथा पढ़ने के लिए le है, इसके अर्थ हैं—फन्दा, पाश, खिसनेवाली गाँठ, फन्दे वाला जाल, या जाल। मोतुल शब्दकोष में है "le: lazo para cazar y pescar, y pescar con lazo" क्रियात्मक रूपरचना के साथ—उदाहरणार्थ leah का अर्थ है 'पाश के साथ पकड़ना' जिसके लिए मोतुल शब्दकोष कृदन्तीय रूप देता है—"lean: cosa enlazada o cogida en lazo" यहाँ पुनः हम उस सिद्धान्त को देखते हैं जिसके अनुसार चिन्ह अपने आप में अपर्याप्त है, सं० 13 यद्यपि खिसकने वाली गाँठ या पाश le के चित्र तथा ध्वनि अंश le को बताने वाले

le पाश के चित्र से लिया गया है तो भी इस ध्वनि अर्थात् le पाश युक्त एकाक्षरिक शब्द को अकेले लिखने के लिए असमर्थ है, बल्कि इस नियम के अधीन है कि एक चिन्ह् का दूसरे से संयोग अवश्य होना चाहिए, क्योंकि यह अकेला नहीं आ सकता, यहाँ चिन्ह् e के जोड़ने से उसके अन्तर्निष्ठ स्वर की पुन: पुष्टि होती है। अत: इस प्रकार के चिन्ह् समूहों अथवा चित्रों में संश्लिष्ट तथा पुनरावृत्त अभिपुष्टि सिद्धान्तों का मिश्रण है। हम क्रियात्मक दृष्टि से रचित रूप leah 'पाश से पकड़ना' को le–e–a–'a' के लिए चित्र 3 सं० 1 के साथ लिखा हुआ भी पाते हैं, मेरा विश्वास है कि Cyrus Thomas ने समूह का ठीक विश्लेषण किया है यद्यपि उनके कार्य का संकेत दिए बिना मैंने इस पर काम किया है। निस्सन्देह् थामस के बहुत से पठन ठीक हैं।

चित्र 4 सं० 6 में, माया के साधारण बहुसंश्लिष्ट शब्दों में से एक है, जिसमें दो प्रकृतियों का संयोग करके प्रत्यय जोड़े गए हैं। Tro–cortesianus में पृष्ठ 46 पर यह् क्रिया की तीन उत्तरोत्तर अवस्थाओं को स्पष्ट दिखाने वाले तीन चित्रों के द्वारा स्पष्ट किया गया है—एक हरिण पकड़ा गया, तथा झुके हुए उस पेड़ के प्रतिक्षेप से ऊपर झटका गया, जिसमें पाश का फन्दा बंधा हुआ है। यह, चित्र 3 के 12, 3, 19 तथा 1 चिन्हों के साथ le–e–sin–a (या –ah) लिखा गया है, तथा पढ़ा जायेगा lesinah । यह् शब्द माया समासों में एक सामान्य प्रकार का विशेष शब्द है। दो प्रातिपदिकों वाला तथा दूसरी के बाद जुड़ी हुई क्रियात्मक रूपरचना वाला यह शब्द माया समासों के सामान्य प्रकार में अपने ही ढंग का है।

प्रातिपदिक है le– जिसकी परिभाषा पहले दी जा चुकी है, तथा 'sin' फैलाना या कस कर डोरी लगाना (जैसे किसी ढांचे पर कपड़ा, खाल या धागे ताने जाते हैं), 'कस कर खींचना, (draw taut) तने हुए धागों की डोरियाँ कसना, (string up) किसी फन्दे के जाल में डोरी इस तरह बाँधना कि छूटने पर वह उछल पड़े' इत्यादि। मोतुल शब्दकोष के अनुसार "Zin (i. e. Sin) : estender pan'os O Cueros y colgar estendiendo O tender desarrug-ando; armar lazos; armar arco o ballesta."

इस प्रकार, समास के प्राय: निम्न प्रकार के अर्थ होते हैं—दो प्रातिपदिकों का x और y नामकरण करते हुए, समस्तपद x–y–ah या x–y–t–ah[7] का अर्थ है y के द्वारा x करना, अस्थायी रूप से, या किसी विषय को करना। अत:, क्योंकि le–ah का अर्थ है 'पाश में पकड़ना' तो हम स्वतन्त्र रूप से ऐसे शब्द बना सकते हैं जैसे le–k'ab–ah (या अधिक आधुनिक le–K'αb–t–ah) हाथ

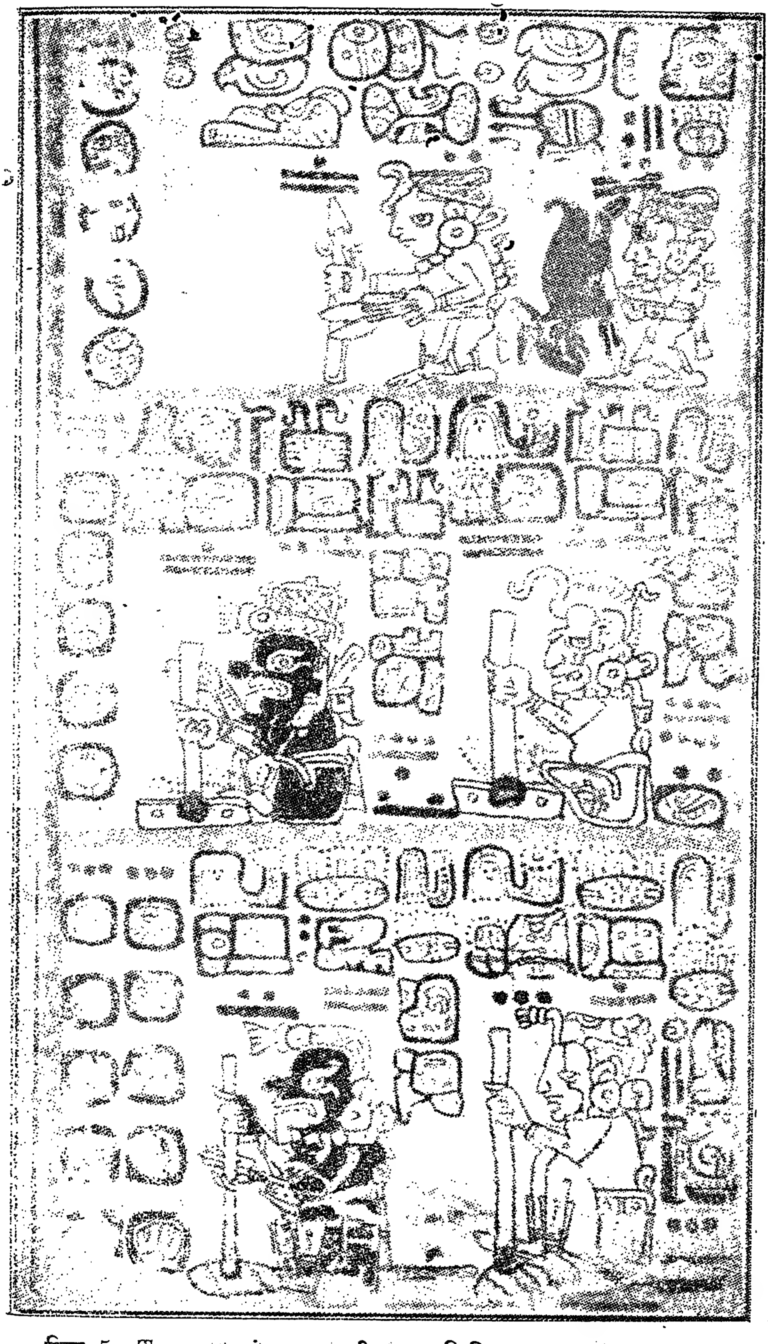
7. **माया के मोतुल शब्दकोष में इस प्रकार के द्विपदीय समासों के लिए–ah प्रत्यय से पहले –t प्रत्यय वाले रूप सामान्य रूप से मिलते हैं।**

की क्रिया द्वारा पाश में पकड़ना le–K'ab–ah प्रयत्न करने की क्रिया द्वारा पाश में पकड़ना—इत्यादि । तब हमारे शब्द le–sin–ah का अर्थ है 'sin' कर्म द्वारा पाश से पकड़ना, कसे तनाव के साथ पाश में पकड़ना, कस कर तांत लगे पाश की उछाल से पकड़ना ।[8]

कुछ पृथक् शब्दों के पठन को देख लेने पर, आइये, अब हम माया चित्रलेखों में लिखा एक छोटा सा वाक्य पढ़ते हैं । चित्र 5 प्राचीन पाण्डुलिपि Tro-cortesianus के पृष्ठ 38 को दिखाता है; तथा विशेषरूप से वह वाक्य, जिसका हम परीक्षण कर रहे हैं, खण्ड ख में बैठी हुई दूसरी आकृति के ऊपर 4 चिन्ह समूहों तथा चित्रों से बनता है । पृष्ठ के तीन क्षैतिज विभाजनों में से बीच का चित्र 6 इस वाक्य को एक पंक्ति पर लिखा हुआ, विश्लेषित, लिप्यन्तरित तथा अनूदित दिखाता है; जैसा कि चित्र 5 में सुगमता से देखा जा सकता है । वे पाठ जो चित्रों पर टिप्पणी हैं, या इसे दूसरे ढंग से कहें तो, जिनकी चित्रों द्वारा स्पष्ट व्याख्या की जाती है, उन्हें चित्रों के ऊपर रखा जाता है तथा दाएँ से बाएँ चित्र की चौड़ाई की ओर तथा फिर उसी तरह नीचे की पंक्ति पर पढ़ा जाता है, अथवा ऐसी अवस्थाओं में जहाँ कोई चित्र नहीं है वे नीचे की ओर चलती है । यह क्रम, लेखन के सादृश्य चित्र5 Tro-cortesianus प्राचीन पाण्डुलिपि का पृष्ठ 38 द्वारा बड़ी सुगमता से प्रदर्शित किया गया है । स्पष्ट रूप में यहाँ हमारे पास बहुत ही सदृश, छोटे वाक्यों अथवा वाक्यांशों की पुनरावृत्ति है । इस प्रकार यदि हम प्रत्येक समूह या चित्र को जो कि वही है, एक वर्ण प्रदान करें, तो प्रथम अथवा बाईं ओर के चित्र के ऊपर की मध्यभागीय मूलपाठ A–B है, और तब नीचे की पंक्ति पर C–D दाईं ओर से आगे सीधा नीचे की ओर जाते हुए A–B-E–F, तो अगले चित्र पर पुन: A–B–C–D तब फिर नीचे को A–B-G–H होगा । सबसे ऊपर तथा सबसे नीचे के खण्डों के पाठ उसी प्रकार लिखे हुए देखे जा सकते हैं, जो प्राचीन पाण्डुलिपियों में आद्योपन्त सामान्य हैं । हस्तलिपियाँ एक ऐसी रीति में लिखी प्रतीत होंगी जो आदिम अमरीकी गीतों, रागों, तथा उत्सवों में काफी सामान्य हैं : उपवाक्यों के वर्ग जिनके प्रत्येक वर्ग में सभी स्थानों

---

8. प्राचीन पाण्डुलिपियों में हमें इस प्रकार के दुसरे समास भी मिलते हैं, उनमें ऐसे अन्य समास भी सम्मिलित हैं जिनमें Sin दुसरे पक्ष में आता हो, अतः Tro-Cortesianus (जैसे 41 a) में गठरी के रूप में बंधे हुए एक हरिण का चित्र है जिसकी टाँगें रस्सियों से कसकर बांध दी गई हैं, इसी के साथ चिन्ह समूह m--in-a है (Landa के ma चिन्ह से युक्त) जिसे सम्भवतः massinah पढ़ा जाता है, जो macinah (mac तथा sin पदों से बना है) का समीकृत रूप है, जिसका अर्थ है एक साथ कस कर बन्द करना, (बन्द मुट्ठी की तरह) खींच कर तथा कसकर, कसे हुए रस्सों द्वारा या कसकर खींची गई रस्सियों द्वारा ।



चित्र 5—Tro-cortesianus प्राचीन पाण्डलिपि का पष्ठ 38.

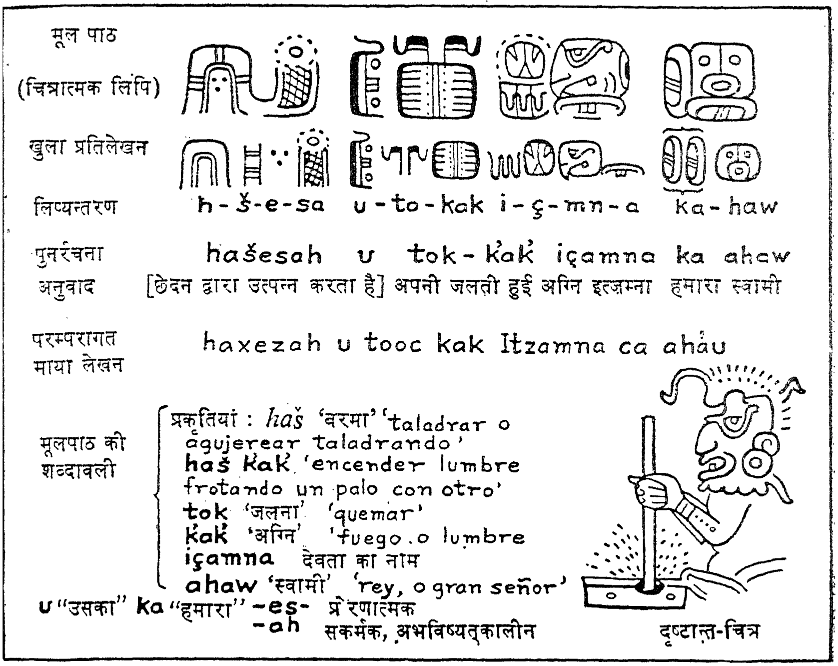
पर व्यञ्जन तत्त्व दोहराया गया है, जैसे गीत के पद्य की प्रत्येक पंक्ति उसी ढंग से प्रारम्भ होती है परन्तु कुछ अन्तर का समावेश कर देती है। इस प्रकार मूलपाठ में जिसका निरीक्षण हमने अभी किया है, वे पंक्तियाँ हैं जिनमें से प्रत्येक A–B से प्रारम्भ होती हैं और बाद में भिन्न हो जाती हैं। निस्सन्देह, नवाहो गीत इस प्रकार के विषय के विशिष्ट उदाहरण हैं। जैसा कि चित्र दिखाते हैं—भाले से शिकार करने से सम्बन्धित सबसे ऊपर के खण्ड में, प्रत्येक उप-वाक्य loman=चीरा गया, शब्द से प्रारम्भ होता है, जिसका अध्ययन हम पहले ही कर चुके हैं। फिर भी, हम इस ऊपर के खण्ड का विस्तार से विश्लेषण करने के लिए नहीं रुकेंगे, क्योंकि इस लेख की सीमाएं हमें इसकी आज्ञा नहीं देती हैं।

वीच का, और नीचे का खण्ड, यद्यपि ये एक-रूप नहीं हैं पर एक दूसरे के बहुत सदृश हैं तथा छेदन से सम्बन्धित हैं जैसा कि चित्रों से देखा भी जा सकता है। वीच के खण्ड के चित्र अग्नि उत्पादन के लिए छेद करना दिखाते हैं, तथा नीचे का सेट किसी वस्तु का छेदन दिखाता है जो पत्थर प्रतीत होता है। प्रत्येक खण्ड में प्रत्येक उपवाक्य छेदन करना या छेदन के लिए शब्द से प्रारम्भ होता है, जो न केवल इन चित्रों के साथ तुलना करने से स्पष्ट है, बल्कि माया पुस्तकों में से एक अन्य ड्रैस्डन (Dresden) प्राचीन पाण्डुलिपि से भी स्पष्ट है, जिसमें वही चिन्ह-गुच्छ छेदन करने के चित्रों के साथ दिया गया है। यह गुच्छ A प्रथम स्थान रखता है जो 16वीं शताब्दी की माया भाषा में (यदि आज भी नहीं तो) उप-वाक्य के विधेयक शब्द की नियमित स्थिति है, जैसा कि मोतुल शब्दकोष में सैकड़ों छोटे तथा साधारण वाक्यों द्वारा दिखाया गया है। माया व्याकरण में इस विधेयक के लिए रूप सम्बन्धी क्रिया होना जरूरी नहीं; (यद्यपि प्रायः यह होता है) परन्तु यह वह है जो अंग्रेजी अनुवाद में विधेय से मिलता जुलता है। प्रत्येक उपवाक्य के अन्तिम दो शब्द C–D.. आदि माया देवताओं के सुविदित नाम चित्र हैं। वे चित्रों में दिखाए गये व्यक्तियों के नाम हैं, जैसा कि बहुत समय से जाना जाता है और परिणामस्वरूप, निश्चय ही वे उपवाक्यों के व्याकरणिक उद्देश्य हैं। प्रत्येक उपवाक्य का दूसरा गुच्छ B बीच के खण्ड में B_1, नीचे के खण्ड में B_2 कहा जा सकता है; यह निर्देश देने के लिए कि यह प्रत्येक खण्ड में आद्योपान्त वही है, परन्तु दो खण्डों में भिन्न हो जाता है विलोपन तथा विधेयक के बाद की स्थिति के द्वारा इसे क्रिया के परिणाम और/अथवा व्याकरणिक 'कर्म' का निर्देश करना चाहिए जो इस तथ्य से सहमत है कि दोनों खण्डों में, विभिन्न उपकरणों के साथ, तथा विभिन्न परिणामों के साथ छेदन करना चित्रित है। इस प्रकार प्रथम वर्गीकरण के रूप में हमारे पास है—

A, विधेयक अथवा क्रिया (छेदन करना)

B_1, B_2, उपकरण तथा/या परिणाम (अग्नि, पत्थर)

C, D...इत्यादि; कर्त्ता (देवताओं या व्यक्तियों के नाम)



चित्र 6—Tro-cortesianus प्राचीन पाण्डुलिपि के पृष्ठ 38 से लिए गए एक माया वाक्य का विश्लेषण।

चित्र 6 मध्य भाग के दूसरे चित्र के ऊपर के वाक्य का विस्तृत प्रदर्शन है, जो चित्र प्राचीन पाडुलिपियों के रोमन नाक वाले देवता, या देवता D को छेदन से अग्नि बनाते दिखाता है। सबसे ऊपर की पंक्ति मूल पाठ की नकल है, जिसे दो पंक्ति की अपेक्षा, जैसा कि मूलपाठ में है, एक पंक्ति में बाएँ से दाएँ व्यवस्थित किया गया है। मूल हस्तलिपि के समान यह पंक्ति प्राचीन पाण्डुलिपियों में प्रयुक्त लिखने की चित्रात्मक लिपि में है। यह शिलालेखों की स्मारकीय, चित्रात्मक शैली से बहुत अधिक मिलती जुलती है, परन्तु कम अलंकृत है, तथा इसमें वृत्ताकार रूपरेखाएँ अधिक हैं। इन दोनों ही शैलियों में एक गुच्छ में चिन्ह एक कसे समूह या एक पट्टी में एकत्रित किए जाते हैं, जिसमें वे दो आयामों में बाँटे जाते हैं, और वहाँ रेखीय क्रम का केवल चिन्हावशेष इस तथ्य में है, कि गुच्छ के सामने या एकदम बाईं ओर का भाग शब्द के अन्तिम भाग के लिए कभी नहीं होता तथा इसी तरह पिछला या दाईं ओर का भाग कभी शब्द के प्रारम्भ के लिए नहीं होता। एक समूह में चिन्ह प्राय: एक दूसरे के सम्पर्क में होते हैं, तथा प्राय: उसी गतिशील रूपरेखा में इकट्ठे, अवगुण्ठित, या इकट्ठे मिले हुए होते हैं। वे केन्द्रीय चिन्ह के ऊपर या नीचे जोड़े जा सकते हैं, या वे दूसरे के साथ एक हो सकते हैं—अर्थात् एक चिन्ह दूसरे के ढांचे या आधार के रूप

में सेवा करता है । संक्षेप में, चिन्हों का इकट्ठा रखना हमारे लेखन के प्रकार की अपेक्षा चिन्ह बनाने वाली विधि के अधिक समान है[9]। परन्तु चिन्हों का पढ़ना ठीक इसी तरह से है मानो वे रेखीय क्रम में लिखे गए थे । यद्यपि यह क्रम प्रत्येक चित्र के लिए अलग से सीखा जाना चाहिए, अतः अर्थ-निर्धारक के लिए प्रत्येक चित्र का अलग तथा दीर्घ अध्ययन आवश्यक है ।

चित्र 6 में ऊपर दूसरी पंक्ति, उन चिन्हों को प्रदर्शित करती है, जो एक विमात्मक रेखीय क्रम से समूहित प्रत्येक गुच्छ को व्यवस्थित करते हैं । ऐसे प्रबन्ध को मैं स्थूल प्रतिलिपि या रेखीय लिपि कहता हूं, तथा कुछ साक्षी भी हैं कि माया में ऐसी लिपि का रूप वास्तव में प्रयुक्त होता था, यद्यपि उन शिलालेखों या प्राचीन पाण्डुलिपियों में नहीं होता था जो सुरक्षित रखे गए हैं । लैन्दा एक आदिवासी सूचक के द्वारा इस ढंग से[10] लिखे गए उच्चारणों ma in k'ati तथा elele के दृष्टान्त उद्धृत करता है । ये चिन्ह निरन्तर क्रम-पूर्वक बाएं से दाएं तथा कुछ सटा करके या एक दूसरे को छूते हुए बनाए गए हैं । यह असंभाव्य प्रतीत नहीं होता कि जैसे मिस्रियों ने अपनी लोकलिपि का प्रयोग किया, वैसे ही बाद के माया लोगों ने साधारण प्रयोजनों में सुविधा के लिए ऐसी रेखीय लिपि का प्रयोग किया हो, जबकि चित्रात्मक लिपि अधिक पाण्डित्यपूर्ण, आलंकारिक समझी जाती रही हो, तथा इसका प्रयोग महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों, धार्मिक अभिलेखों, तथा शिलालेखों में होता रहा हो । चाहे कुछ भी हो, चित्रलेखों के किसी लेखांश का स्थूल प्रतिलिपि में

---

9. यह स्पष्ट कर देना चाहिए कि हमारी जैसी लेखन पद्धति, अर्थात् वर्णमालीय प्रकार की पद्धति की बहुत सी उन व्यवस्थाओं में, जिनमें समूहन की द्विविमात्मक विधि के अवशेष मिलते हैं, चिन्हों का रेखीय अनुक्रम पूर्णरूप में नहीं है । अतः बिन्दुयुक्त अरबी, बिन्दुयुक्त हिब्रू लेखन, तथा पिटमैन के शॉर्टहैन्ड में व्यञ्जनों के साथ स्वर बिन्दुओं का विन्यास द्विविमात्मक है, उन्हें वास्तविक उच्चारण के अनुरूप क्रम से नहीं लिखा जाता । देवनागरी वर्णमाला में स्वर चिन्ह व्यञ्जनों के साथ द्विविमात्मक ढंग से मिला दिए गए हैं, तथा 'इ' स्वर जिसका उच्चारण व्यञ्जन के पश्चात् होता है, उसे व्यञ्जन से पहले जोड़ दिया जाता है । हमारा अपना ωh इसी प्रकार विपर्यय से लिखा जाता है । यह वास्तव में hω है—एक विशेष चिन्ह गुच्छ जो क्रम की असामान्य स्थितियों को सुरक्षित रखता है । कुछ गुम्फाक्षर तथा आधुनिक विज्ञापन भी अक्षरों के द्विविमात्मक समूहन का प्रयोग करते हैं ।
10. Diego de Landa, *Relación de las cosas de Yucatán* पहले उपवाक्य का अर्थ है "मैं नहीं चाहता" । माया दृष्टिकोण से दूसरी अभिव्यक्ति निरर्थक है, परन्तु प्रसंग के दृष्टिकोण से देखते हुए यह निश्चित रूप से सूचक से "L-E" लिखने की प्रार्थना करने पर उसका 'le' लिखने का प्रयत्न है ।

रूपान्तरण एक ऐसी युक्ति है जो अर्थ-निर्धारक के लिए प्रायः बहुत सहायक होती है। यह देखा जाएगा कि इस लेखांश के सभी चिन्ह चित्र 3 में दिए गए हैं, ताकि स्थूल प्रतिलिपि की इस पंक्ति से सारा उच्चारण मोटी रूपरेखा में पढ़ा जा सके, जैसा कि तीसरी पंक्ति या लिप्यन्तरण में दिखाया गया है। क्योंकि बहुत से चिन्ह स्वरात्मक विशिष्ट रणन के लिए अनिश्चित हो सकते हैं, जबकि वे अभिमत अन्तर्निहित स्वर को सूचित करते हैं, अभिव्यक्ति के स्वर जहाँ तहाँ संदिग्ध हैं, यद्यपि निश्चित स्वरों का निर्देश सामान्यतः मिस्री या अनिर्दिष्ट हिब्रू से बहुत अच्छा है। किसी भी तरह, पूरी तरह नहीं, बल्कि एक सीमा तक स्वरों का लिप्यन्तरण 16वीं शताब्दी की माया भाषा पर आधारित है जिसमें प्राचीन पाण्डुलिपियों के समय से लेकर जो सम्भवतः बहुत पुराना नहीं है, इस विषय में मूलरूप से बिल्कुल अन्तर नहीं आया है; तथा अंशतः यह अन्य माया बोलियों के तुलनात्मक साक्षी पर भी आधारित हैं। यह अन्वेषण का एक ऐसा क्षेत्र है जो प्राचीन पाण्डुलिपियों के विद्वत्तापूर्ण तथा भाषायी पठन के साथ साथ चलना चाहिए। परन्तु इस बात पर भी बल दिया जाना चाहिए कि स्वयं अभिलेख में असंदिग्ध रूप से इसके बहुत से स्वरों का निर्देश किया गया है। अतः चित्र 3 के a, e, i, u, प्रतीक, स्वरों का निर्देशन करने में असंदिग्ध हैं, चाहे शब्द के अन्तर्गत एक स्वर की स्थिति सदैव स्पष्ट न हो। अतः हम इस लिप्यन्तरण पर पहुँचते हैं।

h–ś–e–sa–u–to–kak i–ç,–mr–a k–ka–haw.

प्रथम शब्द में e की स्थिति पूर्णरूप से स्पष्ट नहीं है, क्योंकि यह e दोनों चिन्हों h तथा S के बीच लिखा गया है, तथा इसका एक अन्य सम्भव लिप्यन्तरण है he–ś–sa या he–e–ś–sa, जिसे या तो heśesah पढ़ना चाहिए या heśsah, जो यह निर्देश करेगा कि प्रातिपदिक, जिसका अर्थ 'छेदन करना' है, तथा जिसका रूप 16वीं शताब्दी की माया भाषा में haś है, प्राचीन पाण्डुलिपियों की बोली में hes के अधिक निकट था। इस समय इसकी पुष्टि करने के लिए अधिक प्रमाण की आवश्यकता होगी, स्वर a लिखने में निर्दिष्ट न होने के कारण, परन्तु माया के भाषायी प्रमाणों से युक्तिसंगत पुनर्रचना होने के कारण 'haśesah' पढ़ना अधिक अधिमान्य प्रतीत होता है।

लिप्यन्तर के नीचे माया भाषाविज्ञान के प्रकाश में सामान्य अमरीकी ध्वन्यात्मक पद्धति में लिखे गए मूलवाक्य की पुनर्रचना है, तथा इसके अनुवाद के नीचे पुनर्रचना की आवृत्ति है, जो पारम्परिक माया वर्तनी में लिखी गई है। इसे इसलिए सम्मिलित किया गया है कि माया भाषा का विद्यार्थी वाक्य को सर्वाधिक परिचित ढंग से लिखा हुआ देख सके, यद्यपि पारम्परिक वर्तनी का प्रयोग भाषायी प्रयोजनों के लिए उपयुक्त नहीं बताया जा सकता, क्योंकि यह बाधाएँ भी उत्पन्न करता है, तथा इसमें सन्देह नहीं कि यह विद्यार्थियों के मनों में काफ़ी भ्रामक धारणाएं भी उत्पन्न कर सकता है। अतः यहाँ पुनर्रचना के लिए अधोलिखित

शब्द हैं—ध्वन्यात्मक लेखन heśesah u-to·k–k'ak' içamnaka–ahaw.
पारम्परिक लेखन haxezahu tooc kak Itzamnaca ahau.
ध्वन्यात्मक प्रतिलेखन के नीचे शाब्दिक अनुवाद है— "makes (or made) by drilling his burning-fire Itzamna our lord (बनाता है (बनाई) छेदन से अपनी जलती अग्नि Itzamna हमारा स्वामी") या अधिक सीधे शब्दों में : "Our lord Itzamna kindles (kindled) his fire with a drill." (हमारा स्वामी इत्ज़म्ना छेदक से अपनी अग्नि प्रज्वलित करता है।")

प्रथम शब्द प्रातिपदिक haś से व्युत्पन्न है, जिसका अर्थ है—मरोड़ना या हथेलियों के बीच घुमाना, छेदन करना, तथा क्रिया-पदीय रूप के साथ, 'हथेलियों के बीच घुमाना, बर्मा चलाना, छिद्र करना, छेदन करना।' मोतुल शब्दकोष में "has, ah, ab (यानिhaś, haśah, haśab): torcer con la palma o palmas de las manos y hazer tomiza, o cordel assi, y lo assi torcido" तथा पुन: "haxs; taladrar O agujerar taladrando y la cosa taladrada O agujerada assi."
छेदन के लिए एक यही प्रातिपदिक माया में है, जिसे मैं जानता हूँ, अतः, उदाहरण विशेषरूप से युक्तियुक्त है। बर्मा नाम के औज़ार के लिए शब्द haśab है। इस प्राचीन पाण्डुलिपि में यह शब्द नहीं मिलता, बल्कि क्रियापदीय रूप मिलता है। क्रियात्मक रूपरचना का प्रत्यय es,–s (–ah जिसके बाद आता है) प्रेरणार्थक है; तथा अर्थ में प्रत्यय—bes के समान है, x–es–ah का अर्थ है "इसे (व्याकरणिक कर्म को) 'x' की स्थिति में रखता है या रखवाता है, या इसे 'x' के कर्म या स्थिति में विद्यमान कराता है, और इसे 'x–ing द्वारा बनाता है, 'x' बनाकर। प्रेरणार्थक अर्थ का दूसरा प्रकार वह है जो उपस्थित स्थिति में उपयुक्त है। प्रत्यय—ah उस सकर्मक क्रिया को बनाता है जो पहले ही सम्पन्न हो चुकी है, तथा इसका विरोध 'iK' प्रत्यय के साथ है जो उस सकर्मक क्रिया को बताता है, जो पूरी नहीं हुई या भविष्य या वर्तमान में चलने वाली क्रिया को द्योतित करता है। इस प्रकार haśesah का अर्थ है "छेदन द्वारा इसे बनाता (बनाया) है।"

छेदन से क्या बनाता है ? ऊपर की हमारी योजना के अनुसार जो अगले चिन्ह गुच्छ B_1 के द्वारा बताया जाता है, —बनाता है। इसी पृष्ठ के नीचे के खण्ड में संवादी गुच्छ, पत्थर, या छेदन किए जाते हुए विषय पत्थर, को निर्दिष्ट करता है। उस स्थिति में 'छेदन से बनाता है' का निस्सन्देह यह अर्थ नहीं है कि पूरी तरह छेदन से विषय को उत्पन्न किया जाता है, प्रत्युत् उस विषय के उत्पादन में एक चरण पूरा करना है जिसमें छेदन की आवश्यकता है। अतः इस विशेष विषय में haśesah तथा haśah 'इसमें छेद करता है' में बहुत सूक्ष्म अन्तर है। थोड़ा सा विषय से हटने पर B_2 गुच्छ सम्भवत: e–i–l–l:• पढ़ा जाना चाहिए, यहाँ तीन की अपेक्षा बिन्दु कई हैं, तीन घुण्डियों का

'I' तथा 'डबल' पाश-कुण्डल 1 का पाश-कुण्डलों के बीच प्रस्थान=रेखाओं (lac) के द्वारा द्विगुणित किया हुआ रूप मिलता है। शब्द eil का अर्थ 'तेजधार वाला यन्त्र', अर्थात् शस्त्र की नोक, चाकू इत्यादि हो सकता था। ऐसी नोक, या चाकू माया में सर्वाधिक पत्थर के होते थे, तथा इसमें सन्देह नहीं कि कभी कभी उनमें छिद्र किए जाते थे।

मध्य खण्ड के लेख पर पुन: आने पर; यहाँ haśesah B_1 का अर्थ है 'छेदन से B_1 बनाता है', वास्तव में यह कारण बनना या 'उत्पन्न करना' के अर्थ में है, क्योंकि स्पष्टतया 'अग्नि' को सूचित करता है। यह मोतुल शब्दकोष के द्वारा उद्धृत 'अग्नि' के बरमें से अग्नि बनाता है, के लिए haśah k'ak' (k'ak' 'fire') उस अभिव्यक्ति में ठीक बैठता है, जो haśesah की अपेक्षा अधिक साधारण तथा कम विभक्ति लगा हुआ रूप hasah प्रयोग करती है। मोतुल शब्दकोष में "hax kak (अर्थात्, haś–[ah] k'ak'): encender lumbre casando fuego frotando un palo con otro," तथा "haxab kak (haśab k'ak' अग्नि के लिए छेदन) : artificio o recaudo con que sacan fuego los indios." समूह B_1 का u–to–kak के रूप में विश्लेषण किया गया है, चित्र 3 के चिन्ह 23 u, चिन्ह to tu, (जिसे यहाँ to पढ़ा जाएगा) तथा चित्र 3 का चिन्ह 1 जो यदि द्विगुणित तथा परिवर्द्धित ka (सं० 8) हो तो इसे kaka, kak, या ka पढ़ा जा सकता है। यहाँ kak पाठ बिल्कुल ठीक बैठता है। प्रारम्भिक u पूर्व स्थापित अन्य पुरुष के सार्वनामिक संकेत u को सूचित करता है। हमारे प्रस्तुत प्रयोजनों के लिए इसका कोई मूल्य नहीं है, कि इसे पूर्व-प्रत्यय समझा जाए या सार्वनामिक प्राति-पदिकों से सदा एकदम पहले आने वाला पृथक् शब्द। पूरी तरह अंग्रेजी (तथा अन्य भारोपीय भाषाओं) के व्याकरणिक नमूनों के कारण, यदि परवर्ती प्रातिपदिक का अर्थ अंग्रेजी क्रिया की तरह किया जाए तो इसका अर्थ he (She, it, they) किया जाना चाहिए, परन्तु यदि प्रातिपदिक का अर्थ अंग्रेजी संज्ञा की तरह किया जाए तो इसका अर्थ his (her,its, their) किया जाना चाहिए। परन्तु माया दृष्टिकोण से यह सदा उसी सम्बन्ध को सूचित करता है। माया प्रातिपदिक, अंग्रेजी अर्थ में न तो क्रिया होती है, न संज्ञा, बल्कि एक अकेला अलग वर्ग है, जिसे हमारे शब्दभेद से बिल्कुल भिन्न आधारों पर पृथक् किया गया है। वह प्रातिपदिक जिसके साथ यह u रचना में है, वह है, जो शेष गुच्छ में to–kak की तरह लिखा गया है।

फिर भी to–kak लिखना, लगभग ध्वन्यात्मक है, जैसा कि माया लेखन में सामान्यतः है। यह उच्चारण की ध्वनि को मोटी रूपरेखा में सुझाता है, जिस सुझाव के कारण, पाठक से, वास्तविक माया शब्द का अनुमान लगाने की आशा की जाती है। जैसा कि हम पहले ही देख चुके हैं, कि लेखन के लिए माया लोगों के द्वारा किए गए ध्वनि-विज्ञान के विनियोग ने इससे आगे उन्नति नहीं की थी। अब,

शब्द, जिसका स्पष्टतया निर्देश किया गया है, वह नहीं है, जो प्रतिलेखन tokakसे आधुनिक अमरीकी स्वनविज्ञानी समझता है, बल्कि वह है [जिसका वह to Kk'a'k के रूप में प्रतिलेखन करेगा। यह एक समस्त पद है to·K–k'ak जिसमें प्रातिपदिक है to·k 'जलाना, ले जाने वाला, ज्वलन' (O· दीर्घ O को सूचित करता है) तथा k'ak' 'अग्नि'। मोतुल शब्दकोष इन्हें इस तरह देता है "tooc (अर्थात्, tök) :quemar, abrazar, y cosa quemida" तथा "kak (अर्थात् k'ak'): fuego, O lumbre." ध्यान से देखिए कि "to·Kk'ak' को लिखने का माया ढंग न तो K'ak' के अन्त में श्वासद्वारीय, रंजित तालव्य स्पर्श K' का, tók के अन्त में संवादी अश्वासद्वारीय रंजित स्पर्श K से भेद करता है, न दोनों के क्रम का भेद करता है, न ही KK' का किसी एक अकेले से, और न ही दीर्घ O का ह्रस्व O से भेद करता है। यह सब कुछ उस ध्वन्यात्मकता का अनिवार्य अंग है जो बोधात्मक होने की अपेक्षा अन्तर्निहित अधिक है, तथा स्थूल एवम् रूपरेखात्मक स्वरूप वाली है, और जिसका प्रयोग माया लेखकों ने किया है। माया भाषा में सामान्य तथा श्वासद्वारीय रंजित स्पर्शों में स्वनिमिक अन्तर है; परन्तु यह न्यूनतम अन्तर है। लेखन में सामान्य स्पर्श तथा सवर्ण श्वासद्वारीय रंजित स्पर्श, दोनों के लिए वही प्रतीक प्रयुक्त किया जाता है—इसके उदाहरण असंख्य हैं। इसका यह अर्थ नहीं है कि प्राचीन पाण्डुलिपियों की माया बोली में ये भिन्न ध्वनियाँ नहीं थीं। यह प्राय: निश्चित है कि वे भिन्न ध्वनियाँ थीं, जैसे कि वे माया की सभी आधुनिक बोलियों में भी हैं। संभवत: उनके लिखने में उसी तरह भेद नहीं दिखाया जाता था जैसे अल्पतम रूप से भिन्न स्वनिमों में (उदहरणार्थ लेटिन के दीर्घ और ह्रस्व स्वर) प्राय: लेखन प्रणाली में भेद नहीं दिखाया जाता, क्योंकि देशीय पाठक सदा प्रसंग से बता सकता है कि इसमें कौन सी ध्वनि बोली जानी जानी चाहिए। तथा, यह प्रतिवन्ध थोड़ी बहुत मात्रा भेद के साथ सभी लेखन पद्धतियों पर लागू होता है, केवल उन लेखनों को छोड़ कर जो कि भाषा-वैज्ञानिकों ने स्पष्ट सुनिश्चितता प्राप्त करने के लिए प्रयुक्त किए हैं, क्योंकि इनका प्रयोजन साधारण संचार की आवश्यकताओं से परे रहा है।

u–tò K–k'ak' अभिव्यक्ति का अनुवाद 'उसकी जलती हुई अग्नि' या शायद और अच्छा "उसकी प्रज्वलित होती हुई अग्नि," "उसका अग्नि को प्रज्वलित करना" किया जा सकता है। यह अभिव्यक्ति माया के द्वि-प्रातिपदिक समास के प्रकार का अनुकरण करती है, शायद वही प्रकार जिसकी पहले ही व्याख्या की जा चुकी है, यद्यपि "के साधन द्वारा" का भाग, यहाँ अनुवाद में भरने की जरूरत नहीं है। अब हमने सारे विधेय के अनुवाद को प्राप्त कर लिया है; (वह) अग्नि का अपना प्रज्वलन छेदन द्वारा उत्पन्न करता है और यह स्पष्ट है कि इस अभिव्यक्ति का haśe-sah u–to·k–k'ak मोतुल शब्दकोष में उद्धृतhaśah k'ak' से अधिक विस्तृत रूप है, जैसे कहने का यह ढंग, कि अग्नि के बर्मे से अग्नि जलाना आरम्भ करता है, यह उसी मौलिक अभिरचना का अनुसरण करता है ।

भ्रान्त धारणा के कारण किए जा सकने वाले एक आक्षेप का पूर्वानुमान करके, मैं यह कहने के लिए, यहाँ संक्षेप में विषयान्तर पर जाना चाहूँगा, कि कभी कभी चिन्हगुच्छ to–kak प्राचीन पाण्डुलिपियों में वहाँ भी आता है जहाँ अग्नि का कोई चित्रित संकेत नहीं होता, तथा ऐसी दशाओं में यह शिकार दृश्य में एक पशु का संकेत देता हुआ प्रतीत होता है। इसका एक उदाहरण चित्र 5 में ऊपर का खण्ड, दूसरे चित्र के ऊपर, देखा गया है, जहाँ गुच्छ to–kak-a चित्र 3 सं० 1 के –a के साथ तथा पूर्ववर्ती u के बिना मोटे रूप में loman u–NORTH tokaka x "speared (in) his north (is) व्याकरणिक विषय) –x" के रूप में विश्लेषण-योग्य वाक्य का अंश बन कर आता है। मैं पहले एक सुझाव दूँगा जो बहुत गम्भीर तो नहीं, परन्तु एक ऐसा स्पष्टीकरण है, जो मनोवादी उपगम पर अधिक बल देता है। मैं यह सुझाव दूँगा कि यह चित्र दोनों के साथ, अर्थात् अग्नि के चित्रों तथा शिकार किए गए पशु के चित्रों के साथ क्यों आता है — इसका कारण यह है कि यह एक ऐसा चित्र है जो बलि देने, या यज्ञ का द्योतन करता है; अतः इसका अर्थ या तो यज्ञीय अग्नि या यज्ञीय-पशु हैं। अब स्पष्टतया इस प्रकार की व्याख्या, अपने नृकुल-विज्ञान सम्बन्धी प्रसंग की हल्की झलक के साथ कुछ उन लोगों के मस्तिष्कों को ठीक जंचती है, जो स्वयं को माया चित्रलोखों में व्यस्त रखते हैं। परन्तु इसके विरुद्ध चेतावनी दी जानी उचित है कि यह बहुत आवश्यक है कि चित्रलेखों को भाषा-विज्ञानी ही हाथ लगाएं दूसरे कोई नहीं। निस्सन्देह, प्रस्तुत विषय में यह व्याख्या पूर्णतया मेरे द्वारा घड़ी गई है। मेरा विश्वास है कि एक प्रशिक्षित भाषाविद् यह पूछना चाहेगा कि क्या तुमने इस सर्वथा अनुमानित परिकल्पना को अपनाने से पहले व्याख्या के लिए उच्चारणों की समाकृतियों तथा शब्द संग्रह की सामग्री की खोज कर ली है? निस्सन्देह, वास्तविक कारण यह है कि tok 'जलाना' प्रातिपदिक के अतिरिक्त माया में समान ध्वनि वाला प्रातिपदिक tok है (ह्रस्व O के साथ) "ले जाना, बलपूर्वक ले जाना, पकड़ लेना, दूर ले जाना" इत्यादि। मोतुल शब्द-कोष में "toc, ah, ob, (अर्थात् tok) : quitar,tomar por fuerza, privar, arrebatar, robar y usurpar casas, y cosas muebles" इस स्थिति में चिन्ह गुच्छ to–kak का प्रयोग समस्त शब्द to'K–K'ak' लिखने के लिए प्रत्युत नहीं किया जा रहा, प्रत्युतपदिक tok के किसी समान ध्वनि वाले व्युत्पादी रूप या विभक्ति शब्द को लिखने के लिए किया जा रहा है, तथा शायद शब्द का अर्थ है—"शिकार ले जाया गया", या "मारा गया पशु, पकड़ा गया पशु, शिकार किया गया पशु" सम्भवतः इस शब्द में tok तथा आम्रे-ड़ित बहुवचन प्रत्यय–ak है, अतः इसका "शिकार किए गए कई पशु" अर्थ होगा। यह प्रसंग इस शब्द का भेद इसी के समान लिखे जाने वाले, तथा अग्नि से युक्त शब्द से दिखाने के लिए काफी है।

अगला चिन्ह गुच्छ, i–ç–mn–a, Içamna शब्द का लेखन, "Itzamma

प्रमुख माया देवता का नाम , जो प्राचीन पाण्डुलिपियों का रोमन नाक वाला देवता है'', बहुत ही महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि माया चित्रलेखों में लिखा जाने वाला, तथा पढ़ा गया यह पहला व्यक्तिवाचक नाम है। व्यक्तिवाचक नाम, तथा विशेषतया व्यक्तिगत नाम, किसी भी लिपि के अर्थ-निर्धारण में विचित्र विश्वासोत्पादकता रखते हैं। जब भी वे उपलब्ध हो जाते हैं तो अर्थ निर्धारण में आदर्श साधन माने जाते हैं। जब एक अर्थ-निर्धारक अपने ढंग की प्रणाली से एक ऐसे सुविदित व्यक्तिवाचक नाम को, जो उसकी पाण्डुलिपि में आना चाहिए, पढ़ सकता है, तो वह जानता है कि वह ठीक मार्ग पर है। यह स्मरणीय रहेगा कि एक शिलालेख में ये Ptolemy तथा Cleopatra के नाम थे जिन्होंने चैम्पोलिअन को सबसे अधिक प्रभावशाली परिणाम दिए, तथा उसी प्रकार Behistun शिलालेख में Xerxes तथा Darius के नाम थे, जिन्होंने रालिन्सन को कीलाक्षरों के अर्थ निर्धारण के लिए उसका प्रारम्भिक सूत्र प्रदान किया। इस बात पर बहुत पहले सहमति हो चुकी थी कि प्राचीन पाण्डुलिपि चित्रों का रोमन नाक वाला देवता, या देवता D, लक्षणों में परम्परा से Itzamna के रूप में ज्ञात देवता से मिलता है । उसका चित्रलेख सदा इसी तरह से लिखा जाता है। यदि हम देवताओं के प्राचीन नामों के विषय में और अधिक जानते तो अर्थ निर्धारण में हमारी प्रगति को पर्याप्त सहायता प्राप्त होती । दुर्भाग्यवश, देवता Kukulcan, जो प्राचीन पाण्डुलिपियों में इतनी बार प्रकट होता है, स्पष्टतया प्राचीन पाण्डुलिपियों में या अन्यत्र उसी नाम से नहीं पुकारा जाता, या, यदि वह उस नाम से पुकारा जाता है तो यह ऐकिक शब्द-चिन्ह से लिखा जाता है ।

Kahaw उच्चारण का प्रतिनिधित्व करने वाले अगले चिन्ह-समूह K–ka–haw की पुनर्रचना Ka–ahaw के रूप में की जानी चाहिए, जिसका अर्थ है 'ईश्वर', 'हमारा स्वामी', हमारा राजा। माया देवराज के रूप में में Itzamna की यह विशिष्ट उपाधि थी । Chumayel के Chilam Balam में तथा Tizimin में भी इस देवता का निर्देश किया गया है, तथा इसे Itzamna kavil कहा गया है । यहाँ kavil अमरीकी स्वनिक पद्धति में K'awil के बराबर है, Kahawil से (–ah– के लोप से उत्पन्न होने वाला श्वासद्वारीयरंजन) Ka–ahawil से, जिसका वही अर्थ है जो Ka–ahaw का है । इस प्रकार यह अर्थ निर्धारण Xerxes के नाम के आधार पर रॉलिन्सन के 'राजा, महान राजा, राजाओं का राजा' के अभिज्ञान के तुल्य माना जा सकता है। मोतुल शब्दकोष ahaw की परिभाषा इस प्रकार देता है "ahau(ahaw): rey O emperador monarca, principe O gran sen'or.'' पूर्व-योजित सार्वनामिक Ka (पारम्परिक वर्तनी ca), परवर्ती शब्द पर नियन्त्रण करने वाला मध्यम पुरुष का बहुवचन है, इस सम्बन्ध का अनुवाद 'सम्बन्धवाचक', उस समय होगा जब शब्द का संज्ञा के रूप में अनुवाद किया जाता है, तथा जब किसी क्रिया के द्वारा अनुवाद किया जाए तो इसका अर्थ 'उद्देश्य' होगा। यहाँ, निस्सन्देह इस शब्द का अनुवाद है "हमारा"। प्राचीन

पाण्डुलिपियों में गुच्छ K–ka–haw "हमारा स्वामी", Itzamna नाम के साथ निरपवाद रूप में संलग्न रहता है, विरले ही यह छोड़ा जाता है, तथा विरले ही यह अन्य देवताओं के नाम के साथ आता है। यदा कदा ही देवताओं के नामों के साथ, हम साधारण उपाधि ahaw "स्वामी" a–hw की तरह, a चिन्ह के साथ, जो इस लेख में सूचीवद्ध नहीं किया गया है, परन्तु लैन्दा ने जिसे थोड़े से भिन्न रूप में उद्धृत किया है, तथा hw के लिए चित्र 3 की सं० 6 के साथ, लिखा हुआ पाते हैं। माया लेखन के इस सामान्य नियम के अनुसार, कि दिवस चिन्हों के अतिरिक्त चिन्हों का पृथक् प्रयोग नहीं किया जाएगा, ahaw शब्द चिन्ह 5 (haw) के साथ अकेला नहीं लिखा जाता, उस स्थिति को छोड़ कर जबकि इसका अर्थ ahau दिवस होता है।

इस प्रकार हम अपने अन्तिम अनुवाद पर पहुँचते हैं: "हमारा स्वामी Itzamna छेदन से अपनी अग्नि प्रज्वलित करता है"।

इस अर्थ-निर्धारण तथा अनुवाद का महत्त्व, विषय-वस्तु में रुचि अथवा रुचि के अभाव से बिल्कुल निरपेक्ष है। जहाँ तक उस सूचना का सम्बन्ध है, जो यह अनुवाद हमें माया अथवा स्वयं अपनी विषय-वस्तु के बारे में देता है, वह बिल्कुल नगण्य है; क्योंकि यह सूचना उससे अधिक नहीं है, जितनी कि हम केवल चित्रों से इकट्ठी कर सकते थे। इसका महत्त्व है 'भाषायी' तथा 'वाङ्-मीमाँसात्मक'। भाषायी—क्योंकि यह एक भाषा की संरचना के विषय में सूचना देता है—भूतकाल के किसी विशेष युग की भाषा के विषय में इतनी सूचना देता है जितनी कि लेखन अभिव्यक्ति कर सकता है; वाँङमीमांसात्मक—क्योंकि यह भूतकाल की अवधि में, तथा ऐतिहासिक प्रसंग एवम् परिदृश्य में साहित्य तथा संस्कृति में प्रतिबिम्बित सभ्यता के अध्ययन का पूर्ववर्ती है। इस छोटे से वाक्य से भाषायी तथा वांङ् मीमांसात्मक सामग्री एकत्रित की जा सकती है, जिसके बहुत थोड़े से अंश पर इस लेख में विचार विमर्श किया गया है। यह सामग्री ऐसी है जिसकी परीक्षा की जा सकती है, तथा सह-सम्बन्ध स्थापित किया जा सकता है; और आगे आने वाली उत्तरोत्तर बढ़ने वाली कठिनाइयों वाले अनुसन्धानों में स्वतः शोधनात्मक रूप से प्रयोग किया जा सकता है। इस वाक्य की और अधिक शाखाओं का पादटिप्पणियों में केवल संकेत मात्र दिया गया है, जिन्हें स्थान की कमी के कारण अपेक्षाकृत बहुत संक्षिप्त रखा गया है। इस प्रकार की प्रत्येक पाद-टिप्पणी वास्तव में विस्तृत अध्ययन का प्रतिनिधित्व करती हैं। इस प्रकार अर्थ-निर्धारण स्वयं को उन वाक्यों के निरन्तर बढ़ते हुए संश्लेषणों पर स्थापित करता है, जिनका अनुवाद चित्रों के वर्गों से नियन्त्रित है, तथा जो वाक्य एक बढ़ते हुए व्याकरण, वाक्य विन्यास, शब्द-भण्डार, तथा चिन्ह-सूची को परस्पर मिलकर उत्पन्न करते हैं।

माया चित्र लेखों को पढ़ने का प्रयत्न करने के दो मुख्य गलत रास्ते हैं। एक गलत रास्ता है—इस विषय से सम्बन्धित सभी कुछ लिख डालने का प्रयत्न करना—

एकान्त में चले जाना और अन्ततः एक पुस्तक के साथ प्रकट होना—एक पुस्तक जो सभी "कुछ बताती है", जो Tro–cortesianus के प्रथम पृष्ठ से लेकर ड्रेस्डन (Dresden) के अन्तिम पृष्ठ तक प्रत्येक विषय पर धड़ाधड़ बोलती है, अर्थ लगाती है, व्याख्या करती है, तत्त्व प्रस्तुत करती है। गत सौ वर्षों में ऐसी कई पुस्तकें रही हैं। प्रायः ऐसी पुस्तकें मूल सिद्धान्त की खोज की घोषणा करती हैं। तब यह मूल सिद्धान्त, लेखक की इच्छा से लागू किया जाता है, और यह चाल इतनी सुगमता से प्रदर्शित कर दी जाती है जैसे एक जादूगर टोप में से खरगोश निकाल देता है। तिस पर प्रायः ऐसा लेखक, माया-भाषा तथा सामान्य रूप से भाषायी कार्य-प्रणाली से अपने थोड़े से परिचय को प्रकट कर देता है। ऐतिहासिक लेखन कभी कुञ्जियों से नहीं पढ़े जाते हैं—कभी कोई कुञ्जी नहीं होती, केवल खोज होती है। अप्रौढ़ अर्थ-निर्धारक सीधे लेखन तथा गूढ़-लिपि में मिथ्या-सादृश्य मान लेने में प्रवृत्त हो सकता है। वास्तव में शब्द, 'decipher', ('अर्थ-निर्धारण करना') जिसका मैंने इस लेख में इतनी बहुलता से प्रयोग किया है, एक गलत धारणा से युक्त है। मैंने इसका प्रयोग क्यों किया है? मेरा अनुमान है कि यह शब्द साधारण एवं विशद् है, इस प्रकार के शोध के लिए प्रायः यह प्रयुक्त होता रहा है, और मैं प्रयोग के वशीभूत हो गया हूँ। परन्तु वास्तव में कोई व्यक्ति साहित्य का अर्थ निर्धारण नहीं करता, बल्कि केवल गूढ़ लिपि का अर्थ निर्धारण करता है। गूढ़-लिपि, उन लोगों से, वर्ण्य विषय को जानबूझ कर छिपाने के उद्देश्य से लिखने का एक ढंग है, जिनके पास कुञ्जी नहीं होती। इसका कुञ्जी से अर्थ निर्धारण किया जाता है, क्योंकि पहले यह कुञ्जी से गूढ़ बनाई गई है। सीधे सादे लेखन का, जिसकी सही लिपि सबसे नहीं, बल्कि थोड़े लोगों से छिपानी अभिप्रेत है, वास्तव में अर्थ-निर्धारण नहीं किया जाता; इसका विश्लेषण और अनुवाद किया जाता है, इस प्रकार के विश्लेषण और अनुवाद की पद्धतियाँ, सन्देश का अर्थ निकालने वाली पद्धतियों से काफी भिन्न हैं। ये मिस्री अर्थ-निर्धारण करने के लिए चैम्पोलिअन तथा यंग (Young) की पद्धतियाँ हैं, बेबीलोनियन को पढ़ने के लिए रालिन्सन तथा ग्रोटेफैन्ड (Grotefend) की पद्धतियाँ, हित्ती को पढ़ने के लिए ह्रोज़नी (Hrozny) स्तर्तेवाँ (Sturtevant) की पद्धतियाँ हैं, वे भाषा-विज्ञान तथा वाङ्-मीमांसा की पद्धतियाँ हैं।

माया प्राचीन पाण्डुलिपियों के भाषायी अंश पर आक्षेप करने का दूसरा गलत ढंग है, Sitzenfleisch का उपगम। यह काफी समय तक पृथक् चित्रों या शब्दों पर अधिक ध्यान देता है, और यह बड़ी आसानी से भूल जाता है कि वाक्य जैसी किसी चीज का भी अस्तित्व है। मान लो, कि इस पद्धति से कोई व्यक्ति Itzamna के चित्र का अर्थ निर्धारण, या आंशिक अर्थ निर्धारण करने में सफल हो जाता है। तब फिर उसे, साहित्य में इत्ज़मना की प्रत्येक चित्रलिपि का निरीक्षण करने, लेखन के वैशिष्ट्य से लेकर अत्यन्त सूक्ष्म भेदों तक का ध्यान रखने, तथा इसका, पहले, इत्ज़मना के विषय में एकत्रित की जा सकने वाली सूचना के प्रत्येक

अंश से सम्बन्ध जोड़ने, और फिर इत्ज़मना से सम्बन्धित किए जा सकने वाले प्रत्येक मध्य अमरीकी क्षेत्र के देवता से सम्बन्ध जोड़ने में कई वर्ष लगाने पड़ेंगे। किसी व्यक्ति के लिए केवल चित्रलिपि, पौराणिक कथाओं, धर्म तथा लोकविज्ञान के समुद्र में छलाँग लगाने के तख्ते का कार्य करके दृष्टि से ओझल हो जाती है तथा, सम्भवतः अन्त में वह "इत्ज़मना की धारणा", शीर्षक वाले एक प्रबन्ध को हाथ में लेकर बाहर आ सकती है। यह प्रणाली शब्द अध्ययन पर पूरी तरह ध्यान देने से, मूलपाठ में शब्द की विशिष्ट आवृत्तियों से इतनी दूर चली जाती है, कि अन्ततः यह बिल्कुल भाषायी नहीं रहती, तथा कुछ और ही बन जाती है। वाक्यों के बिना शब्द कुछ भी नहीं हैं। शब्द क्या हैं—यह निर्भर करता है इस बात पर कि शब्द 'क्या करता है', अर्थात् वाक्य में 'अपने कार्य' तथा 'स्थिति' पर निर्भर करता है। यह बात, इससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण है कि शब्द कैसे लिखा गया है। माया में, अंग्रेजी की तरह, बहुत से समनाम शब्द हैं तथा ऐसे शब्द भी हैं जो समनाम तो नहीं हैं, परन्तु लिखे समान रूप से जाते हैं, जैसे अंग्रेजी में lead (धातु) तथा lead (आगे जाना)। अतः चिन्हों की ध्वनियों तथा उनके चित्रात्मक संयोगों का निर्धारण केवल आधा संघर्ष है।

माया चित्रलेखों के अर्थ-निर्धारण तथा माया साहित्य के पठन के लिए केवल एक ही मार्ग है। यह है वाक्यों की बढ़ती हुई शृंखलाबद्धता के द्वारा कम कठिन से अधिक कठिन की ओर बढ़ना; उन वाक्यों से प्रारम्भ करना जिनका अर्थ चित्रों से समझा जा सकता है; भाषायी अभिरुचि तथा भाषायी उपलब्धियों को निरन्तर सर्वप्रथम मानते हुए, तथा विषयवस्तु से सापेक्ष्य निष्कर्षों को दृढ़तापूर्वक दबाए रखते हुए माया चित्रलेखों को पढ़ना। भाषायी उपलब्धियाँ अन्ततः भाषायी विद्वानों की कसौटी पर पूरी उतरनी चाहिएँ तथा बहुत से भाषायी विद्वानों के सहयोग का आधार बननी चाहिएँ। एक व्यक्ति साहित्य की व्याख्या के लिए साधन नहीं हो सकता; ऐसे कार्य के लिए बहुत से ऐसे विद्वानों के पारस्परिक योगदान की आवश्यकता होती है, जो मौलिक सिद्धान्तों के विषय में सामान्य सहमति प्रकट करने में समर्थ हों। भाषायी सिद्धान्तों में ही इस प्रकार की वैज्ञानिक सहमतियों के लिए आवश्यक दृढ़-धारणा निहित है।

ज्यों ज्यों शोध की प्रगति होती है, विस्तार होता है, तथा वह अधिक सुनिश्चित होता जाता है, तो वह ऐसे वाक्यों को कुछ विश्वास के साथ पढ़ने में समर्थ हो जाता है, जिनमें अनुवाद को नियन्त्रित करने वाले चित्रों का अभाव होता है। इस प्रकार हम शिलालेखों के अंशों तथा प्राचीन पाण्डुलिपि Peresianus की लम्बी चित्ररहित हस्तलिपियों को, जिनका अर्थ अब बिल्कुल गूढ़ है, सावधानी से पढ़ना प्रारम्भ करेंगे। जब प्रमुख भाषायी कठिनाइयों पर विजय प्राप्त हो जाती है, तो अध्ययन अधिकाधिक वाङ्मीमांसात्मक हो जाता है, अर्थात् विषयवस्तु, सांस्कृतिक सामग्री, तथा इतिहास अधिक महत्त्वपूर्ण भाग लेने लगते हैं; केवल पठन का ही नहीं, अपितु जितना अधिक सम्भव हो सकता है, उन संकेतों, निर्देशों,

अभाषायी प्रसंगों तथा, उन सांस्कृतिक अभिरचनों को समझने का विषय भी हो जाता है, जो मानो, अनुवादों के केवलमात्र शब्दों तथा व्याकरण के माध्यम से केवल झलकियों में देखे जाते हैं। यह वाङ मीमांसा है। परन्तु वाँङ मीमांसा के आधार के रूप में हमारे पास भाषा-विज्ञान अवश्य होना चाहिए। केवल इसी ढंग से हम भी माया भाषा के इतिहास तथा संस्कृति को समझने की आशा कर सकते हैं।

होपी की वास्तुकला* शब्दावली के भाषायी घटक

होपी में मकान बनाने का सामान्य पदार्थ पत्थर है। रायोग्रान्दे (Rio Grande) प्रदेश में भवन-निर्माणार्थ प्रयोग में लाई जाने वाली कच्ची ईंटों (adobe) का प्रयोग यहाँ कम होता है। पत्थर, स्वयं होपी लोगों द्वारा, खान से निकाला जाता है तथा थोड़ा सा तराशने के बाद बिना चूने के ही चिन दिया जाता है। दीवारें केवल पत्थर की बनी हुई होती हैं। छत तथा छत के नीचे का हिस्सा, दीवारों में फँसाई गई गोल बल्लियों या शहतीरों के ऊपर सटाकर रखे गए लट्ठों की तह पर चिकनी मिट्टी की कई इञ्च मोटी परतों से लीप कर बनाया जाता है। दीवारों और छतों के अन्दर की ओर का भाग मिट्टी के पलस्तर या महीन चूने की टीप करके तैयार किया जाता है, और फिर बढ़िया खड़िया मिट्टी से सफेदी कर दी जाती है। बाहर की ओर दीवारों पर या तो चूने की टीप कर दी जाती है या फिर चिनाई को उसी तरह छोड़ दिया जाता है। होपी में एक-मञ्ज़िले मकान सबसे अधिक मिलते हैं, परन्तु दो-मञ्ज़िले भी काफी मिल जाते हैं, और वाल्पी (Walpi) में तो कहीं कहीं तीसरी मञ्ज़िलें भी देखने में आती हैं। सीढ़ियों और ज़ीनों, दोनों का ही प्रयोग किया जाता है, और दोनों ही मकान से बाहर होते हैं। विशेष धार्मिक अनुष्ठानों के निमित्त प्रयोग में लाया जाने वाला तहखाना या कीवा भी तत्वतः इसी के समान होता है, अन्तर केवल इतना है कि यह ज़मीन के अन्दर होता है तथा पूर्णतः या अंशतः ज़मीन खोखली करके बनाया जाता है। इसका ऊपरी भाग कुएँ की मेंढ की तरह ऊपर को उभरा हुआ होता है और ऊपर छत होती है, जो अन्दर जाने की सीढ़ियों को भी ढँक लेती है।

होपी भाषा में पर्याप्त मात्रा में ऐसे शब्द हैं जिन्हें रचना सम्बन्धी तत्त्व या इमारतों के संघटक अंग कहा जा सकता है; जिनमें मकानों के आवश्यक सहायक उपकरण भी सम्मिलित हैं, जैसे सीढ़ियाँ, ज़ीने और खिड़कियाँ आदि। ऐसे शब्द व्याकरण की दृष्टि से सभी संज्ञा रूप होते हैं। नीचे इसका प्रतिनिधित्व करने वाली एक सूची दी जा रही है, जो नीवों से लेकर ऊपर तक रचनाक्रम के अनुसार हैं।

Int. J. Amer. linguistics* 19, 141-145 (1953) **से पुनर्मुद्रित। यह लेख व्होर्फ द्वारा न्यूयार्क तथा येल की अनौपचारिक भाषायी गोष्ठी की 25 फरवरी सन् 1940 में हुई मीटिंग में प्रस्तुत करने के लिए तैयार किया गया था। यह पाण्डुलिपि व्होर्फ द्वारा जार्ज-एल, ट्रेगर के पास छोड़े गए पत्रों से प्राप्त हुई है। इसका पुनरीक्षण एडवर्ड ए० कैनर्ड ने किया था।

Kiza: "नींव या नीवें"; tek^{w}ā "चिना हुआ मकान का अंग", पूरी बनी हुई इमारत का भाग नहीं, "अधूरी दीवार, छतरहित दीवार, या किसी खण्डहर की अवशिष्ट दीवारें"; tek^{W}anmera "घेर या चारदीवारी"; tėwi "टाँड या पैंहड़ी, अल्मारी और आला", यह शब्द दोनों प्रकार की पैंहड़ियों के लिए प्रयुक्त होता है—स्वाभाविक शिलाफलक या चिन कर बनाए गए रूप के लिए; tek^{W}ni "दीवार", मुख्यरूप से छती हुई दीवार, परन्तु तैयार की गई पत्थरों की चारदीवारी या प्राचीर के लिए भी इस शब्द का प्रयोग होता है; ?èci "विभाजक दीवार" या किसी भी प्रकार का घेरा या अवरोध; ?e?ècpi, ?ecpi "दरवाज़ा", अर्थात् बन्द करने की कोई चीज़ या दरवाज़ा ही; höci'wa "द्वार का खुला भाग"—द्वारमार्ग; Poksö "गवाक्ष, हवा के लिए छिद्र, बिना शीशे या बिना रोगन की खिड़की, चिमनी"; panávca "शीशे का टुकड़ा, या शीशे वाली खिड़की"; nayáve "धूप में सुखाई हुई ईंट"; Palwi Pálwicọ̈qa "पलस्तर करने की मिट्टी" जिसका प्रयोग टीप या सफेदी के लिए होता है, "फर्शी मिट्टी"; ki.qọ̈lö एक से अधिक मञ्जिलों वाली इमारत की सबसे निचली मञ्जिल, तहखाना, या ऐसी मञ्जिल जिस पर कोई मञ्जिल हो; kèvẹ̄la kè vẹ̄Lpı "छत अन्दर की"; Wúna लकड़ी की बल्ली का कैसा भी टुकड़ा, पालक, फट्टा, खम्बा, लट्ठा, बल्ला", मकान में लगाया हुआ, न लगाया हुआ; lèstàvi "शहतीर या छत की कड़ी या ऊपर की छत—या इसके लिए बल्ली का लट्ठा—प्राय: जब मकान में उसका प्रयोग किया गया हो"; Kigálmo "ओरी" या "कार्निस" (छज्जा); ki.?ámi "छत" (छत के ऊपर आदि अभिव्यक्तियों के लिए इस शब्द का प्रयोग नहीं होता); kiska "सुरंग या ढका हुआ मार्ग, या छता हुआ रास्ता—छत्ता।"

ये उन्नीस पद कुछ बहुत ही साधारण शब्दों में से हैं। इनमें से आठ अविश्लेषणीय प्रातिपदिक हैं, अथवा कुछ परिस्थितियों में आंशिक रूप से अनुमानतया विश्लेषणीय हैं। अन्य ग्यारह स्पष्ट रूप से साधितपद अथवा समस्त पद हैं।

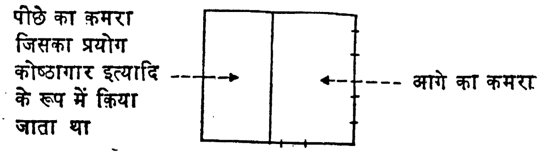
इस वर्ग के सारे पद, जो संरचनात्मक तत्त्वों या अंगों के द्योतक हैं, "संज्ञाएँ" हैं। इनके दो कारकों—कर्त्ता और कर्म में शब्द रूप मिलते हैं तथा अधिकृत रूपों का, या रचित-अवस्था रूपों का एक वर्ग मिलता है।

जब हम व्याकरणिक संज्ञा श्रेणी को देखते हैं तो आन्तरिक त्रिविमात्मक अवकाशों के लिए शब्दों का अभाव, हमारा ध्यान आकृष्ट करता है—जैसे कि हमारे शब्द—कमरा, कक्ष, सभा भवन, गलियारा—बरामदा, कोठरी, गुहागृह, तहखाना, अटारी, छज्जा, तहखाना, गोदाम' आदि; यद्यपि यह सत्य है कि होपी इमारतें कई कक्षों में विभक्त होती हैं, कई बार तो विभिन्न प्रकार के निवासों के लिए विशेष रूप से बनाई जाती हैं। इस वस्तुस्थिति का हमें तब तक पता नहीं चल सकता जब तक कि हम इसे पहले व्याकरण के दृष्टिकोण से न देखें, क्योंकि यदि हम सधारण रूप में सूचक से कमरे के लिए कोई शब्द पूछें तो हमें उत्तर अवश्य

मिल जाएगा—एक ऐसा शब्द जो उसकी दृष्टि में हमारे "Room" शब्द का समानार्थक तथा अनुवाद होगा। तथापि इस शब्द तथा ऐसे ही अन्य शब्दों को, जिनका प्रयोग आन्तरिक अवकाशों को बताने के लिए किया गया है, परन्तु परीक्षण करने पर उन सभी भवन निर्माण सम्बन्धी तत्त्वों या संरचनात्मक भागों के शब्दों से, जिन्हें हमने अभी देखा है, भिन्न व्याकरणिक या रूपात्मक तत्त्वों वाला पाया जाएगा। कम से कम ये पूर्ण अर्थों में 'संज्ञा' शब्द प्रतीत नहीं होते। कमरे के लिए ?àᵉpảvE?, शब्द का कर्त्ता-कारक और कर्म-कारक में कोई रूप नहीं होता, न ही कोई संरचित अवस्था है। इस प्रातिपदिक के आधार पर "मेरा कमरा" जैसी कोई अभिव्यक्ति नहीं की जा सकती, जबकि 'मेरा द्वार', 'मेरी छत' आदि अभिव्यक्तियाँ की जा सकती हैं; यद्यपि इन अभिव्यक्तियों का समाज में प्रचलन नहीं है, क्योंकि होपी समाज में कमरों का, दरवाज़ों का, या छतों का, व्यक्तिगत स्वामित्व या अधिकार नही होता। यहाँ पर हम शुद्ध भाषायी या सूत्रीय अर्थ में अन्तर देखते हैं, अर्थात् जो कहा जा सकता है परन्तु सम्भवतः कहा नहीं जाएगा—जैसे "मेरी छत," और एक ऐसे साँस्कृतिक अर्थ का विषय भी देखते हैं जिसे व्यावहारिक रूप से मान्यता प्राप्त है तथा जो 'मेरा घर' जैसे भाषायी अर्थ के साथ भी मेल खाता है। इसके विपरीत "My room" जैसी अँग्रेजी की अभिव्यक्ति के रूपात्मक दृष्टि से समान अभिव्यक्ति का अस्तित्व ही नहीं है; यहाँ तक कि सूत्रीय अर्थ भी नहीं है। ऐसे स्थानों पर जब होपी भाषा की हम अपनी भाषा से तुलना करते हैं तो एक अन्तर स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। यदि हम लोगों से व्यक्तिगत "अपना" कमरा रखने की प्रथा होपी लोग अपना लें, या किसी दूसरे गाँव में जाने पर एक व्यक्तिगत कमरा किराए पर भी ले लें, तो भी वे 'मेरा कमरा' कहने में समर्थ नहीं होंगे। ऐसी परिस्थिति में वे जो कुछ कर सकते हैं सम्भवतः वह यही है कि उन्हें इस आवश्यकता की पूर्त्ति के लिए एक नई अभिव्यक्ति गढ़नी पड़ेगी। ऐसा कर सकने के लिए उनके पास कई ढंग हैं। उदाहरणार्थ—"मेरी छत", "मेरा द्वार", "मेरा फर्श" आदि वे कह सकते हैं, और कुछ ही समय में 'छत', 'द्वार' या 'फर्श' का अर्थ-विस्तार "मेरा अपना कमरा" के रूप में हो जाएगा—जैसे कि फ्रांसीसी भाषा में foyer अर्थात् चूल्हा शब्द का अर्थ होता है "घर"। मुख्य विषय से थोड़ा सा हट जाने का लाभ यह होगा कि इससे पता चल जाएगा कि व्याकरण की अभिरचना कितनी अधिक रुढ़िबद्ध तथा परिवर्तन विरोधी होती हैं।

कमरे के लिए शब्द ?àᶜpàvE? पर पुनः विचार करने के लिए, आइए, हम इसकी कारक सम्बन्धी विशेषताओं का परीक्षण करें। यद्यपि इसके कर्त्ता और कर्म-कारक में रूप नहीं हैं इसके अधिकरण, परिणामसूचक, तथा अपादान कारकों में रूप मिलते हैं, जैसे ?àpáᵉvE?, ?àᵉpảmiq, ?àᵉpảzk ये ऐसे कारक सम्बन्ध हैं जो कुछ समान प्रकृति वाले तथा अधिकरणवाची कारक कहे जा सकने वाले सर्वनामों में पाए जाते हैं। परन्तु सर्वनामों के कर्ता और कर्म कारकीय रूप भी होते हैं तथा साथ ही ऐसे विशिष्ट गुण भी होते हैं जो केवल उनके अपने होते हैं। आगे यह

स्पष्ट हो जाएगा कि ?à^{e}pá̧ve? ऐसे शब्द-भेद से सम्बन्ध रखता है, जिन्हें स्थान-सूचक कहा जाता है, तथा जिनमें ऐसे शब्द सम्मिलित किए जा सकते हैं जैसे—यहाँ, वहाँ, ऊपर, नीचे, सामने, पीछे, उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम और अन्य बहुत से शब्द, जिनमें होपी भौगोलिक नाम आ जाते हैं, जैसे 'औरेबी' (Oraibi), वाल्पी (Walpi), शिपौलोवी (Shipaulovi)। इन सबकी अधिकरणवाची कारकीय रूपावली होती हैं तथा प्रत्येक रूप एक प्रत्यय में अन्त होता है, कोई भी केवल प्रातिपदिक मात्र रूप प्राप्त नहीं होता जैसा कि संज्ञाओं में होता है तथा वह उनका कर्त्ता रूप बनाता है। "उत्तर" कहने के लिए यह आवश्यक है कि "उत्तर में", "उत्तर से", या "उत्तर को" आदि कहा जाए। ये सब रूप विधेय की श्रेणी में आते हैं जबकि कर्त्ता के रूप में कोई अन्य ही रूप होता है या फिर कर्त्ता होता ही नहीं है। दूसरे शब्दों में ये क्रिया विशेषणात्मक रूप होते हैं। "Room" शब्द का होपी में अनूदित होने पर, अर्थ होता है—"घर के अन्दर, कमरा, या अन्य कोई बन्द कोठरी", या अधिक निश्चित रूप से—'किसी निर्मित भवन का आन्तरिक भाग', या 'ऐसे आन्तरिक भाग में', या "ऐसे आन्तरिक भाग से" आदि, जैसा भी कारक प्रत्यय हो उसी के अनुरूप। ?à^{e}pá̧vE? शब्द में –vE? प्रत्यय अधिकरण-कारक सम्बन्धी है। होपी में एक अर्ध अधिकरणवाची प्रत्यय-vi या-pi भी होता है जिसका प्रयोग ?á^{c}pá, प्रातिपदिक के साथ नहीं हो सकता, न ही अन्य बहुत से अधिकरणवाचियों के साथ ही, परन्तु भौगोलिक स्थान नामों के साथ अथवा कमरे के लिए अन्य एक या दो विशिष्ट शब्दों के साथ इसका प्रयोग हो सकता है।

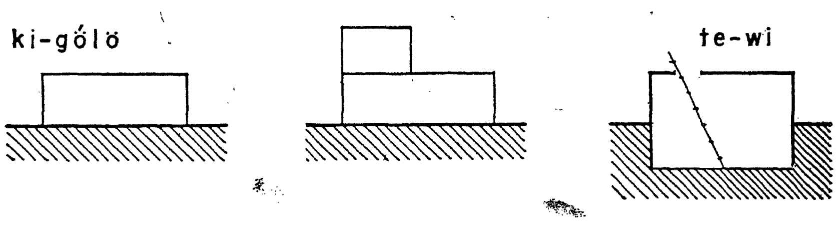


चित्र सं० 7

इसका अधिकरण अर्थ इतना निर्बल है कि इसका प्रयोग कर्त्ता अथवा कर्म कारक संज्ञा रूप में हो सकता है, यद्यपि इसका यह प्रयोग अति विरल है। भवन के आन्तरिक अवकाश के लिए दूसरा मुख्य शब्द अधिकरणवाची yè.môkvi, तथा परिणाम सूचक yè.môk, हैं जिसका अनुवाद प्राय: "दूसरा कमरा" या "अगला कमरा" किया जाता है, परन्तु इसका प्रयोग "पिछला कमरा, कोठरी, रिक्त स्थान, फाल्तू कमरा, या सामान का कमरा" के अर्थ में भी किया जाता है। शायद अंग्रेजी में इसका निकटतम अर्थ होगा "आन्तरिक कमरा", परन्तु इसका अर्थ होपी के परिणामसूचक अर्थों में लगाया जाना चाहिए जिसमें कि एक और कमरा या पास का कमरा आदि अर्थों का समावेश हो जाता है। यहाँ कहने का अभिप्राय यही है कि यह कोई भी दूसरा कमरा है जिसमें किसी एक निर्दिष्ट आन्तरिक कमरे से प्रवेश

प्राप्त होता है। होपी भवनों की सर्वसाधारण योजनाओं में से एक ऊपर चित्र सं० 7 में दी गई है।

यह सब होपी में और वास्तव में अधिकतर या सारी उत्तो-अज्तेकन भाषाओं में आन्तरिक अवकाशों के क्षेत्र या उनकी स्थिति दिखाने के ढंग के अनुरूप है। इन सब को किसी वाक्य में, लोगों, पशुओं, या विशिष्ट रूप वाले भौतिक पदार्थों, या मानव जातियों, या मानव सम्बन्धों को निर्दिष्ट करने वाले पदों के रूप में कार्य करने वाली इकाइयों के रूप में नहीं रखा गया है। परन्तु इन्हें क्रियाविशेषक प्रकार का एक शुद्ध सम्बन्धवाचक संप्रत्यय माना गया है। अतः खोखले अवकाशों जैसे कमरा, कोठरी, सभाभवन आदि का नामकरण अन्य पदार्थों की तरह नहीं किया जाता अपितु उनका स्थान निर्दिष्ट किया जाता है,—अर्थात् दूसरी वस्तुओं की स्थितियाँ विशेष रूप से निर्दिष्ट की गई हैं ताकि ऐसे खोखले अवकाशों में उनकी स्थिति दिखाई जा सके। ठोस वास्तु शिल्पीय भागों के लिए पर्याप्तमात्रा में शब्दों के मुकाबले, वास्तुशिल्पीय खोखले अवकाशों के लिए शब्दों का असाधारण अभाव पाया जाता है। होपी में केवल दो प्रातिपदिक कुछ व्यावहारिक महत्त्व के हैं। आरम्भ में हमें होपी वास्तुकला में किसी विचित्र सांस्कृतिक कारक का प्रभाव प्रतीत हो सकता है, हम अनुमान लगा सकते हैं कि उनकी भवन-निर्माण की धारणाएँ एक प्रदत्त सांस्कृतिक तथ्य के रूप में सीमित तथा एकांगीन हैं। भाषा के मर्म को और अधिक जानने पर हमें पता चलता है कि इस न्यूनता का सम्बन्ध भवन कला से बिल्कुल नहीं है, क्योंकि हमें वहाँ शब्दों की सम्पन्न श्रेणी भी उपलब्ध होती है, अतः यह भाषा की संरचना का विषय है। अभिव्यक्ति के साधनों की न्यूनता या सम्पन्नता की निर्भरता केवल दो प्रातिपदिकों पर नहीं है, अपितु उन अधिकरण कारक सम्बन्धी प्रत्ययों की बड़ी संख्या पर है जिनका प्रयोग प्रातिपदिकों के संयोग से किया जा सकता है, क्योंकि ये स्थानसूचक गण से सम्बन्ध रखते हैं। स्थान-सूचक गण में शब्द-भण्डार की सम्पन्नता का महत्त्वपूर्ण मानदण्ड प्रातिपदिकों की संख्या नहीं हैं अपितु प्रत्ययों का अत्याधिक्य है जो वास्तव में यहाँ पर अनारम्भी प्रातिपदिक हैं।



चित्र सं० 8

भवन निर्माण सम्बन्धी शब्दों की एक और तीसरी श्रेणी भी, जो यहाँ विचार-णीय है—वह है विभिन्न प्रकार के भवनों के लिए शब्द। होपी संस्कृति में निश्चित

रूप से विभिन्न संरचनात्मक प्रकार के भवन हैं। तीन मुख्य प्रकार चित्र आठ में दिखाए जा सकते हैं।

इन भवनों को कई प्रकार से विशेष प्रयोगों में लाया जाता है। इनमें अधिकतर आवास हैं परन्तु तथाकथित "पिकी गृह" केवल पिकी या होपी की मक्की के आटे की टिकिया पकाने के लिए भट्ठियाँ हैं; दूसरे का प्रयोग सामान रखने के लिए स्टोर के रूप में किया जाता है; और "कीवा" का प्रयोग केवल विशेष रस्मों के लिए किया जाता है। गोरे लोगों के प्रभाव के पश्चात् भवनों का प्रयोग केवल स्टोर, गिरजा और स्कूल के लिए भी किया जाता है। अब हमारी भाषा में तथा अन्य जातियों की भाषा में जो होपियों से भवन निर्माण कला में कम निपुण हैं, विभिन्न प्रकार के शब्द विद्यमान है:—हमारे पास 'घर', 'भवन', 'झोंपड़ी', 'किला', 'दुर्ग', 'मन्दिर', 'गिरजा', 'महल', 'सौध', 'थियेटर', 'स्कूल', 'स्टोर', 'सराय', 'होटल', 'बुखारी', 'छप्पर', 'अस्तबल', 'छप्पर', 'सिरकी', 'झोंपड़ी', 'क़ैदखाना', 'ज़ेल', 'मीनार', 'स्टेशन', 'डिपो', आदि आदि हैं। इनमें से अधिकतर शब्द अधिवास प्रकार के हैं तथा अन्य 'रचनात्मक' प्रकार के हैं। यह बात निष्पक्ष दृष्टिकोण से सोची जा सकती है कि अंग्रेजी की यह तालिका बिल्कुल एक सम्मिश्रण है और वास्तव में इसमें किसी प्रकार की व्यवस्था नहीं है। तथापि हमारे लिए यह स्वाभाविक बात इसलिए प्रतीत होती है क्योंकि हमारे भवन निर्माण तकनीक उतने ही बहुमुखी हैं जितने की होपी लोगों के।

फिर भी तथ्य यह है कि कतिपय सीमावर्ती अत्यन्त स्वल्प प्रयोग वाले शब्दों (नीचे) को छोड़कर होपी भाषा में 'भवन' के लिए केवल एक ही शब्द है, और यह बात बिना किसी ऊहापोह के कही जा सकती है कि होपी भाषा में भवनकला सम्बन्धी कोई शब्दावली नहीं है, जो भवनों का विभिन्न प्रकारों में वर्गीकरण करे—बावजूद इस बात के कि होपी में अन्य प्रयोजनों के लिए भवन कला शब्दावली पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है। यहाँ पर केवल एक शब्द ki. he "घर" (जैसा कि प्रायः अनुवाद किया जाता है) है जिसका वास्तविक अर्थ किसी भी प्रकार का 'भवन' है। यह 'घर' शब्द घर में अन्त होने वाला समस्तपद नहीं बनाता परन्तु ऐसे आधार अथवा प्रातिपदिक के रूप में कार्य कर सकता है जिसमें स्थानसूचक प्रत्ययों की प्रत्ययावली को जोड़ा जा सके, जिससे कि 'पद', स्थानसूचक अधिकरण-कारक-प्रत्ययान्त बन जाए तथा ऐसा प्रतीत हो मानो यह सर्वनाम है या स्थानसूचक है। अन्य कई संज्ञाओं में इनमें से कुछ को जोड़ा जा सकता है, परन्तु 'घर' ही एकमात्र ऐसा संज्ञा शब्द है जिसमें समस्त प्रत्ययावली को जोड़ा जा सकता है। इस दृष्टि से यह एक स्थानवाची सर्वनाम है, परन्तु यह सर्वनाम है नहीं, क्योंकि इसके रचित अवस्था रूप मिलते हैं जो केवल संज्ञाओं के होते हैं, जिससे कि "मेरा घर", "तुम्हारा घर" जैसी अभिव्यक्ति हो सके।

ki. he के अतिरिक्त अन्य सीमान्ती पदों का उल्लेख यहाँ किया जा सकता है जिन्हें सम्भवतः भवनवाची शब्द माना जा सकता है, और यह भी स्पष्ट किया

जाएगा कि ये पद सामान्य अर्थों में वास्तविक भवन के वाचक नहीं हैं। mecàvki "तम्बू", इसका शाब्दिक अर्थ है—'कपड़े का मकान'—यह होपी जाति के लिए विजातीय द्रव्य है और इसका वाचन "घर" के समस्तपद द्वारा किया गया है; tè. tèska 'मठ', एक छोटा सा, पत्थरों का कच्चा घेर, उपर से ढके हुए और निर्दिष्ट बाह्यद्वार युक्त, kiska 'सुरंग'—विभिन्न भवनों को एक दूसरे से मिलाने के लिए दीवार और छत युक्त बाह्य मार्ग है।

होपी भवनों के लिए शब्दावली की न्यूनता का एक कारण यह है कि होपी लोग या तो अधिवास शब्दों का प्रयोग उन भवनों के समानार्थक के रूप में नहीं करते जिन भवनों में अधिवास आवासित है, या यदि वे करते भी हैं तो उन्होंने अभी कुछ दिन पूर्व ही करना आरम्भ किया है, अतः इस प्रकार के कुछ शब्द जमा हो गए हैं। कम से कम उनके पास इस प्रकार की बद्धमूल अभिरचना नहीं है जैसी कि हमारे पास स्वाभाविक रूप ग्रहण कर चुकी है, जिसमें कि एक 'गिरजा' अर्थात् एक 'संस्था', एक शब्द है जो कि नितान्त अदृष्ट रूप से 'गिरजा' में समा जाता है—अर्थात् एक प्रकार का भवन जिसका उपयोग उस संस्था के सम्मेलन के स्थान के लिए किया जाता है। इस अन्तर का अनुभव भी किसी को नहीं हो पाता जब तक कि उनका ध्यान इस ओर आकृष्ट न किया जाए; या जिसमें 'स्कूल'—एक संस्था का एक स्कूल के लिए भवन से, या गैरेज का जो एक प्रकार का अधिवास प्रकट करता है, गैरेज से अर्थात् भवन से जिसमें अधिवास आवासित है, या हस्पताल अधिवास का हस्पताल के भवन से, या थियेटर के नाट्यकला सम्बन्धी अर्थों का थियेटर, एक भवन मे भेद विरले ही किया जाता है। होपी भाषा में इस प्रकार का अदृश्य एकीकरण नहीं है अपितु दोनों में स्पष्ट अन्तर है। अधिवास और भूमि का वह भाग या फर्श जिस पर अधिवास विद्यमान होता है, उसे होपी में साधारण रूप से 'भवन' ki.he मात्र कहेंगे। यह शैलीशास्त्र का विषय नहीं है, क्योंकि यह बोलने वाले के कलात्मक बलाघात परिवर्तन से परिवर्तित नहीं होता। परन्तु यह भाषाविज्ञान का विषय है क्योंकि यह एक ऐसा रूप है जिसे मातृभाषी यूं ही समझ जाएगा, जैसे कि वह व्याकरण की बातों को समझ जाता है। पिकी गृह का अधिवास एक ऐसे शब्द से सूचित किया जा सकता है, जिसका अर्थ है—वह "स्थान जहाँ तवा स्थापित किया गया है", परन्तु इस आशय की अभिव्यक्ति ऐसे की गई है मानों इसकी स्थापना घर से बाहर की गई हो। और इस प्रकार स्वयं पिकी-गृह के लिए अंग्रेजी के सिवाय, होपी में कोई शब्द नहीं है, यद्यपि पिकी गृह एक विशिष्ट भवनकलात्मक प्रकार का है।

अभिव्यक्ति की निर्बाध-गति का जहाँ तक सम्बन्ध है वहाँ इन भवन सम्बन्धी शब्दों की कमी की पूर्त्ति इस तथ्य द्वारा कर दी जाती है कि अधिवास शब्दों का प्रयोग पृथक् तथा असंयुक्त शब्द 'भवन' ki.he के साथ पर-प्रत्ययों की श्रेणी को जोड़कर किसी भवन के आन्तरिक तथा बाह्य किसी भी स्थान का निर्देश किया जा सकता है। तथापि यह बड़ा विचित्र सा लगता है कि भाषा में बिल्कुल विभिन्न

आकृति वाले भवनों जैसे एक मञ्जिला भवन, दोमञ्जिला पीछे का भवन, या कीवा के लिए भी कोई शब्द न हो, इस तथ्य का भाषा की विचित्र सामग्री के रूप में रिकार्ड करना पड़ेगा जो कि न तो भाषा की अन्य अभिरचना द्वारा, न भवन संरचना की किसी बात से, न ही संस्कृति के ही किसी विषय द्वारा निर्वचनीय है।

विशेष रूप से हमारी दृष्टि में यह बात बड़ी विचित्र लगती है कि होपी भाषा में कीवा के लिए भी कोई शब्द नहीं, जबकि उसकी प्यूबलो संस्कृति अत्यधिक वैशिष्ट्यपूर्ण है, और उसका उनके धर्म के साथ इतना अन्तरंग सम्बन्ध भी है। बहुत लोग जानते हैं कि हमारा 'कीवा' शब्द होपी भाषा से लिया गया है, परन्तु वे सोचते हैं कि यह 'कीवा' के लिए होपी शब्द है, जो कि सही नहीं है।

भवन-निर्माण संबंधी होपी शब्दावली

अविश्लेषणीय प्रातिपदिक: ʔa'epa—'आन्तरिक', ʔàepavèʔ 'अन्दर (की ओर) पर', ʔeéci 'द्वार', ʔèecpi, ʔéʔɛepi "द्वार पर" ; ʔéci "अवरोध, विभाजन"; Saeqa "सीढ़ी"; tèekwa "पत्थरों की बनी हुई कोई चीज़, परन्तु पूरी बनी हुई बिल्डिग नहीं, पत्थरों की चिनाई, अपूर्ण दीवार, किसी खण्डहर का अवशिष्ट खड़ा हुआ भाग; tè.wi "आला या पैंहड़ी (स्वाभाविक या चिनी हुई), wèna "शहतीर, तख्ता, फट्टा" । ki.he "भवन, गृह।"

ki: के साथ समस्त (प्रातिपदिक) अधिवास शब्द— hè.yaNki "गोदाम, व्यापारिक स्थान", tè.teqàyki "स्कूल।"

स्थान सूचक प्रत्यय: kícoʔo 'छत', kicéʔo've "छत से" ; kico'ʔo' mig "छत को", yè.mok "किसी दूसरे अवरोध में, कमरे में, कोठरी में" आदि आदि; yè.mokvi —"बहुत दूर अन्दर की ओर।"

समस्त तथा सम्मिश्रित भवन निर्माणात्मक शब्द: kiza, ki.het za.ʔat 'नींव' (घर की जड़); kiska "सुरंग, ढका हुआ रास्ता", ki.coki "गाँव", ki'.sonvi "चौक" hö̤ciwa "खुलाभाग, द्वारमार्ग", kè,vèla "छत"; kiqàlmo "छज्जा"; ki'.qölö "मकान की सबसे निचली मञ्जिल, गुफा"; lèstavi "शहतीर या छत का आधार"; mecávki "तम्बू"; naṛávè "ईंटें"; pàlwicö̤qa "पलस्तर की मिट्टी"; panàvca "खिड़की, शीशा, दर्पण"; poksö, "सूराख, चिमनी, खिड़की का सूराख"; tek^{W}ni छती हुई दीवार; पत्थर की बाड़"; tek^{W}ànmère "चार दीवारी, बाड़ा।"

विज्ञान और भाषिकी*

संसार का प्रत्येक व्यक्ति अबोध शैशव पार करने पर बोलने की क्षमता रखता है, और बोलता है। इस तथ्य के कारण प्रत्येक सभ्य या असभ्य व्यक्ति, वाणी तथा विचारों के साथ इसके सम्बन्ध में सीधी सादी परन्तु बद्धमूल धारणाएँ जीवन-पर्यन्त बनाए रखता है। अचेतन एवम् स्वचालित हो जाने वाली वाक्प्रवृत्ति के साथ विचारों का दृढ़ सम्बन्ध हो जाने के कारण ये धारणाएँ किसी भी प्रकार के विरोध के प्रति प्राय: असहिष्णु हो उठने की प्रवृत्ति रखती हैं। वे किसी भी प्रकार से पूर्णतया व्यक्तिगत एवम् अव्यवस्थित नहीं होती; उनका आधार निश्चित रूप से व्यवस्थित है, अत: हम उसे स्वाभाविक तर्क की व्यवस्था कहना उचित समझते हैं—यह नाम उसी विषय के लिए प्राय: प्रयुक्त होने वाले "सामान्य-ज्ञान" की अपेक्षा मुझे अधिक वरीय प्रतीत होता है।

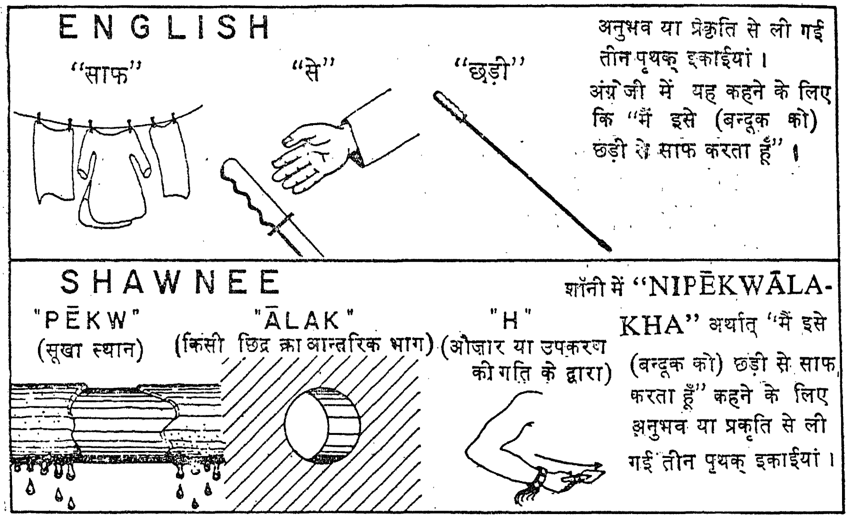
स्वाभाविक तर्क के अनुसार, यह 'तथ्य' कि प्रत्येक व्यक्ति शैशवकाल से ही धाराप्रवाह रूप में बोलता आया है, उस व्यक्ति को उस प्रक्रिया का विशेषज्ञ बना देता है जिसके द्वारा वह नियम सूत्रित करता है तथा सञ्चारण करता है। उसे केवल तर्क अथवा विवेक के सामान्य अध:स्तर से परामर्शमात्र करना पड़ता है, जिसका उसके, या प्रत्येक व्यक्ति के पास होना स्वाभाविक माना जाता है। स्वाभाविक तर्क के अनुसार बोलना एक आनुषंगिक प्रक्रिया है, जिसका सञ्चारण के साथ सुनिश्चित रूप में सम्बन्ध है, न कि विचारों के सूत्रीकरण के साथ बोलने या भाषा के प्रयोग से केवल यह आशा की जाती है कि वह उन विचारों को 'अभिव्यक्त' कर दे जिनका सूत्रीकरण पहले ही अभाषायी रूप में कर दिया गया है। सूत्रीकरण एक स्वतन्त्र प्रक्रिया है जिसे विचार या चिन्तन कहा जाता है, और वह विशिष्ट भाषाओं की प्रकृति से अधिकतर तटस्थ माना जाता है। भाषाओं का व्याकरण होता है, जिन्हें प्राय: परम्परागत तथा सामाजिक शुद्धता का मानक मात्र माना जाता है, परन्तु भाषा के प्रयोग से यह आशा की जाती है कि वह व्याकरणों से इतना पथ प्रदर्शन प्राप्त न करे जितना कि सही, युक्तियुक्त या मेधावी चिन्तन से।

इस मत के अनुसार 'विचार' व्याकरण पर निर्भर नहीं करता अपितु तर्क एवम् विवेक के उन नियमों पर करता है, जो विश्व के समस्त प्रेक्षकों के लिए समान माने जाते हैं—ताकि वे विश्व में तर्काधार का प्रतिनिधित्व कर सकें, जिस तर्काधार

---

* *Technology Review* 42: 229-231, 247-248 न० 6 (अप्रैल 1940) से पुनर्मुद्रित।

की उपलब्धि स्वतन्त्र रूप से कोई भी बुद्धिमान प्रेक्षक कर सके चाहे वह चीनी भाषा बोलता हो या चोकताओ। हमारी अपनी सभ्यता में रूपात्मक तर्कशास्त्र



चित्र सं 9 : भाषाएँ प्रकृति का विभाजन भिन्न रूप से करती हैं। बन्दूक के अंदर छड़ी घुमाकर उसे साफ करने के एक ही अनुभव की सूचना देने के लिए अंग्रेजी तथा शॉनी द्वारा प्रयुक्त की गई (विचारों) अर्थ की भिन्न-भिन्न पृथक् इकाइयाँ। सर्वनाम 'मैं' (I) तथा "इसे" (It) प्रतीकों द्वारा नहीं दिखाए गए हैं, क्योंकि उनका प्रत्येक भाषा में वही अर्थ है। शॉनी में 'मैं' (I) के समान हैं, तथा 'इसे' (It) के समान है।

तथा गणितशास्त्र के सूत्रों ने इस प्रकार के पदार्थों के इस अनुक्रम का विवेचन करने की प्रसिद्धि प्राप्त कर ली है—अर्थात् शुद्ध विचारों के क्षेत्र तथा नियमों के विवेचन की। स्वाभाविक तर्क की धारणा है कि विभिन्न भाषाएँ केवल इसी एक विचार के तर्काधार की अभिव्यक्ति के लिए तत्वतः समकक्ष रीतियाँ हैं, अतः वास्तविक भेद बहुत मामूली से होते हैं, परन्तु उनका महत्त्व केवल सूक्ष्म दृष्टि से देखने पर ही दृष्टिगोचर होता है। इसके अनुसार गणित, प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र, दर्शन आदि वे व्यवस्थाएँ हैं, जिनका, विचार के क्षेत्र का सीधा विवेचन करने वाली 'भाषा' से विरोध है। यह सत्य है कि वे स्वयं भाषा के विशेषीकृत विस्तार है। स्वाभाविक तर्क का भाषा के प्रति दृष्टिकोण एक ऐसी पुरानी लोकोक्ति से स्पष्ट हो जाता है, जो एक ऐसे जर्मन वैयाकरण के प्रति कही गई थी, जिसने अपना समस्त जीवन सम्प्रदान कारक के अध्ययन में लगाया। स्वाभाविक तर्क के इस दृष्टिकोण के अनुसार सम्प्रदान कारक और सामान्य रूप से व्याकरण भी नितान्त गौण विषय हैं। कहा जाता है कि प्राचीन अरबों में इससे भिन्न दृष्टिकोण था। कहानी कुछ इस

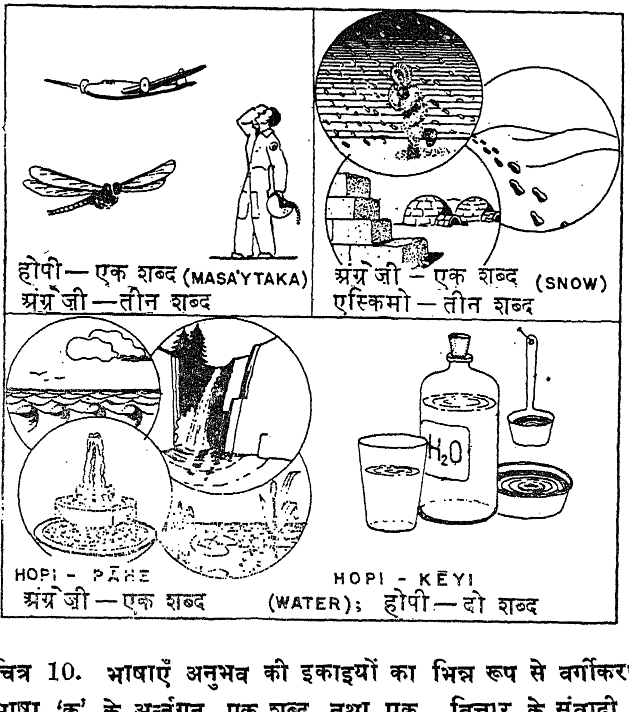
प्रकार है कि दो राजकुमारों में इस बात पर झगड़ा हो गया कि उनमें से किसको देश के सब से बड़े विद्वान वैयाकरण के जूते पहनने का सम्मान प्राप्त हो,—कहते हैं कि इस पर उनके पिता "खलीफा" ने टिप्पणी करते हुए कहा कि यह उसके साम्राज्य का गौरव है कि यहाँ वैयाकरणों को राजाओं से भी अधिक सम्मान प्राप्त है ।

'अपवाद' नियम को सिद्ध करते हैं, इस सुपरिचित उक्ति में काफी बुद्धिमत्ता निहित है, यद्यपि औपचारिक तर्कशास्त्र के दृष्टिकोण के अनुसार यह लोकोक्ति उसी समय बेतुकी हो गई जब "prove" (सिद्ध करो) का अर्थ "put on trial" (इसका परीक्षण करो) नहीं रहा । यह पुरानी कहावत उसी समय से "गहरे मनोविज्ञान" का रूप ग्रहण करने लगी, जब से तर्कशास्त्र में इसे महत्त्वपूर्ण स्थान मिलना बन्द हो गया । आज हमें यह उक्ति जिस तथ्य को सुझा सकती है, वह यह है कि यदि किसी नियम का कोई भी अपवाद न हो, तो, न तो उसे नियम माना जाता है न कुछ और चीज़ ही । तब यह उस पृष्ठभूमि का अंग बन जाता है जिसके विषय में हमारी प्रवृत्ति अनभिज्ञ बने रहने की रहती है । इसके विरोध का किसी भी वस्तु में अनुभव न करने के कारण हम इसकी न तो पृथक् सत्ता स्थापित कर सकते हैं, न इसे एक नियम के रूप में सूत्रित कर सकते हैं, जब तक कि हम अपने अनुभव को इतना विशाल न बना लें और अपने निर्देशों के आधार को इतना विस्तृत न कर लें कि हमें इसकी नियमितताओं में व्यवधान दिखाई देने आरम्भ हो जाएँ । उपस्थित स्थिति कुछ ऐसी है जैसे कि पानी के अभाव का अनुमान तब तक न हो पाना जब तक कि कुआँ सूख न जाए; या दम घुटने की स्थिति आने से पहले यह न समझ पाना कि हमें वायु की आवश्यकता है ।

उदाहरणार्थ, यदि किसी जाति के लोगों में कोई ऐसा शारीरिक दोष हो जिससे वे केवल नीला रंग ही देख सकें तो वे यह नियम कदापि सूत्र-बद्ध नहीं कर पाएँगे कि उन्होंने केवल नीला रंग ही देखा है । "नीला" शब्द उनके लिए किसी भी अर्थ का द्योतन नहीं करेगा, उनकी भाषा में रंगवाची शब्दों का अभाव रहेगा, और उनके नीले रंग के विभिन्न संवेदनों के वाचक शब्द हमारे हल्के, गहरे, सफेद, काले आदि आदि के प्रत्युत्तर तथा अनुवाद होंगे न कि हमारे 'नीला' शब्द के । केवल मात्र 'नीला' देखने का नियम या मानक सूत्रित करने से पहले उन्हें कुछ अलौकिक क्षणों की आवश्यकता पड़ेगी जिनमें वे दूसरे रंग देख सकें । गुरुत्वाकर्षण का तथ्य अपवादरहित नियम बनाता है। यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि अशिक्षित व्यक्ति किसी भी गुरुत्वाकर्षण के नियम से नितान्त अपरिचित है, अनभिज्ञ है, क्योंकि उसके मस्तिष्क में यह बात प्रवेश ही नहीं कर सकती कि वे एक ऐसे विश्व की कल्पना कर सकें जिसके पिण्डों का व्यवहार पृथ्वीतल पर हुए उनके व्यवहार से भिन्न हो। जिस प्रकार हमारी प्रकल्पित जाति के लिए नीला रंग है, इसी प्रकार हमारी जाति के

लिए गुरुत्वाकर्षण का नियम प्रत्येक अशिक्षित व्यक्ति के लिए एक पृष्ठभूमि है, ऐसी कोई वस्तु नहीं है जिसे वह उस पृष्ठभूमि से पृथक् देखता हो। यह नियम तब तक सूत्रित नहीं हो सकता जब तक कि सदैव नीचे की ओर गिरने वाले शरीरपिण्डों को बृहत्तर खगोलीय संसार के सन्दर्भ में न देखा जाए जहाँ कि पिण्ड अपनी कक्षाओं में परिक्रमा करते हैं, और इधर से उधर जाते हैं।

इसी प्रकार जब हम अपना सिर घुमाते हैं तो किसी भी दृश्य का बिम्ब हमारी पुतली के सामने से ठीक ऐसे ही गुजरता है, जैसे उस दृश्य के हमारे चारों ओर घूमने पर गुजरेगा। परन्तु यह 'कार्य' पृष्ठभूमि है और हम इसकी सत्ता को स्वीकार भी नहीं करते; हम कभी भी एक कमरे को अपने चारों ओर घूमता नहीं देखते, हम तो गतिहीन कमरे में अपने सिर को घुमाने की प्रक्रिया से ही परिचित हैं। यदि हम अपनी आँखें या सिर घुमाते समय ध्यान-पूर्वक देखें तो हमें पता चलेगा कि यह सच है कि दृश्यों में गतिशीलता नहीं



चित्र 10. भाषाएँ अनुभव की इकाइयों का भिन्न रूप से वर्गीकरण करती हैं। भाषा 'क' के अन्तर्गत एक शब्द तथा एक विचार के संवादी वर्ग को भाषा 'ख' में दो या दो से अधिक शब्दों तथा विचारों के संवादी दो या अधिक वर्ग माने जा सकते हैं।

है; फिर भी दो स्पष्ट दृश्यों के बीच दृश्यों का धुँधला रूप प्रवाहित होता हुआ दिखाई देता है। साधारणतया हम इस प्रकार के निरन्तर धुंधलेपन से **सर्वथा**

अनभिज्ञ होते हैं, और ऐसा लगता है जैसे हम स्पष्ट दृश्यों को देखते हैं। जब कभी हम किसी वृक्ष या घर के पास से गुजरते हैं, तो इसका बिम्ब हमारे दृष्टि-पटल पर इस प्रकार परिवर्त्तित होता है मानो वृक्ष या घर अपने अक्ष के चारों ओर घूम रहे हों, फिर भी हम साधारण गति से चलते समय घर या वृक्ष को घूमते हुए नहीं देखते। कभी कभी ग़लत लगे हुए चश्मे से इधर-उधर देखने पर दृश्य में विचित्र गति होती हुई प्रतीत होती है, परन्तु जब हम चलते हैं तो हमें वातावरण की सापेक्ष गतिशीलता का अनुभव नहीं होता। हमारी मानसिक प्रवृत्ति उस समय दृश्य-सत्ता की अवहेलना करने की अभ्यस्त हो चुकी है, जो कि इतनी व्यापक है कि हमारे दैनिक जीवन एवम् आवश्यकताओं के लिए सर्वथा निरर्थक है।

स्वाभाविक तर्क में दो तर्क-दोष हैं: पहला, यह इस बात को नहीं देखता कि भाषा के तथ्य उस भाषा के बोलने वालों के लिए अधिकतर पृष्ठभूमि के वैशिष्ट्य वाले होते हैं, अत: स्वाभाविक तर्क के प्रतिपादन करने वाले भाषाभाषी की समालोचनात्मक चेतना तथा नियन्त्रण से बाहर होते हैं। अत: जब कभी कोई व्यक्ति स्वाभाविक तार्किक के रूप में विवेक, तर्क, तथा सही चिन्तन के नियमों के विषय में चर्चा कर रहा हो तो समझ लीजिए कि उसकी प्रवृत्ति केवल उन शुद्ध व्याकरणिक तथ्यों के ढर्रे पर चलने की हो सकती है, और वे तथ्य उसकी भाषा अथवा उसके भाषा परिवार की पृष्ठभूमि के वैशिष्ट्य वाले होते हैं; परन्तु वे तथ्य न तो समस्त भाषाओं में व्यापक रूप से मिलते हैं और न ही किसी भी अर्थ में विवेक के सामान्य आधार हो सकते हैं। दूसरे, स्वाभाविक तर्क भाषा के प्रयोग द्वारा प्राप्त वस्तुविषयपरक अनुरूपता का 'अभेद', उस भाषायी प्रक्रिया के ज्ञान से लेकर बैठता है, जिस ज्ञान के द्वारा अनुरूपता प्राप्त की जाती है—अर्थात् घृणित वैयाकरण के (और इसकी धारणा के कारण अनावश्यक है) क्षेत्र से अभेद कर देता है। उदाहरणार्थ, धाराप्रवाह रूप से अंग्रेजी बोलने वाले दो व्यक्ति अपने भाषण की विषयवस्तु के विषय में शीघ्र ही अपनी सहमति प्रकट कर देते हैं—अर्थात् वे उस विषय पर एकमत हो जाते हैं जिसकी ओर उनकी भाषा संकेत करती है। उनमें से एक "अ" निर्देश दे सकता है, जिसका पालन दूसरा "ब", "अ" की पूर्ण सन्तुष्टि सहित कर सकता है। क्योंकि 'अ' तथा 'ब' एक दूसरे को पूर्णतया समझते हैं। यदि वे स्वाभाविक तार्किक की भाँति यह जानना चाहें कि यह सब कैसे सम्भव हुआ, तो वे सोचेंगे कि यह केवल विचारों को व्यक्त करने वाले शब्दों को चुनने की सीधी सी बात है। यदि आप 'अ' से पूछें कि तुमने 'ब' की सहमति कैसे प्राप्त की, तो वह उसी बात को संक्षेप में, या विस्तार से दोहरा देगा, जो उसने "ब" से कही थी। उसे सम्बन्धित प्रक्रिया का बिल्कुल ज्ञान नहीं होता। भाषायी संरचनाओं तथा वर्गीकरणों की आश्चर्यजनक रूप में जटिल व्यवस्था, जो 'अ' तथा 'ब' के पास एक दूसरे को समझने से पहले होनी चाहिए, यही 'अ' तथा 'ब' के लिए पृष्ठभूमि है।

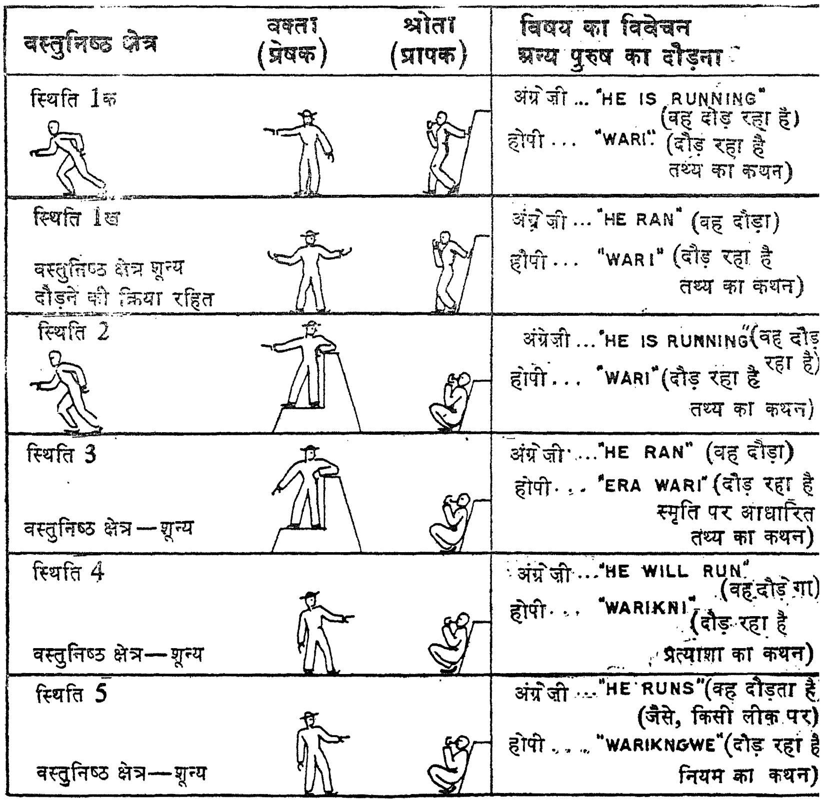
ये पृष्ठभूमि-तथ्य वैयाकरणों के क्षेत्र हैं, वैयाकरणों को अधिक आधुनिक वैज्ञानिक नाम "भाषिक" से अभिहित करने पर इन्हें भाषिकों के क्षेत्र कह सकते हैं। 'लिंग्विस्ट' (भाषिक) शब्द सामान्य बोलचाल या समाचार-पत्रों की भाषा में कुछ सर्वथा भिन्न अर्थों में प्रयुक्त होता है—अर्थात् एक ऐसा व्यक्ति जो शीघ्र ही भिन्न भिन्न भाषाएँ बोलने वाले भिन्न भिन्न लोगों से विषय-वस्तु सम्बन्धी सहमति प्राप्त कर सके। ऐसे व्यक्ति को अधिक अच्छे शब्दों में 'पालीग्लोट' या 'मल्टीलिंग्विल'' (बहुभाषी) कहा जा सकता है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण रखने वाले वैज्ञानिक भाषिक बहुत पहले यह समझ चुके हैं कि किसी भाषा को धाराप्रवाह रूप में बोलना उसे भाषायी ज्ञान प्रदान नहीं करता, अर्थात् उसके पृष्ठभूमि सम्बन्धी तथ्यों तथा इसकी व्यवस्थित प्रक्रियाओं एवम् रचनाओं का ज्ञान ठीक इसी प्रकार नहीं हो पाता, जैसे कि बिल्यार्ड का अच्छा खेल, बिल्यार्ड की मेज पर क्रियान्वित होने वाले यान्त्रिक नियमों का न तो ज्ञान प्रदान करता है, और न ही उसकी अपेक्षा करता है।

यहाँ की परिस्थिति विज्ञान के किसी अन्य क्षेत्र से भिन्न नहीं है। सभी वास्तविक वैज्ञानिकों की दृष्टि मुख्य रूप मे पृष्ठभूमिगत तथ्यों की ओर रहती है, जिनकी उपादेयता हमारे दैनिक जीवन के लिए बहुत ही कम है। तथापि उनका अध्ययन इस अकल्पित तथ्य के साम्राज्य तथा इस प्रकार की निश्चित अग्रभूमिगत गतिविधियों, जैसे—पदार्थों का परिवहन, खाना तैयार करना, रोगियों का उपचार करना या आलू उत्पन्न करना आदि के बीच निकट सम्बन्ध स्थापित करने का मार्ग बनाता है। वह मार्ग कुछ समय पश्चात् पर्याप्त परिष्कृत हो सकता है, क्योंकि वह शुद्ध वैज्ञानिक तत्वान्वेषण है जिसका स्वयं इन जड़ पदार्थों से कोई सम्बन्ध नहीं। भाषिकी का उदाहरण भी इसी के सदृश है; पृष्ठभूमिगत तथ्य जिनसे इसका सम्बन्ध है, वे सब हमारी अग्रभूमिगत गतिविधियों, जैसे बात करना और सहमति पर पहुँचने, सभी कानूनी व्यवस्थाओं में, सभी मध्यस्थताओं, समझौतों, ठेकों, सन्धियों, लोकमतों, वैज्ञानिक सिद्धान्तों के परीक्षणों, तथा वैज्ञानिक परिणामों के सूत्रीकरण आदि सभी विषयों पर तर्क करना तथा बहस करना आदि है। जब कभी मनुष्य के कार्यों में किसी प्रकार की सहमति या ऐक्य प्राप्त होता है, तो चाहे गणित विज्ञान या विशिष्ट प्रतीक विज्ञान उस प्रक्रिया के साधक अंग बनें, या न बनें, परन्तु यह सत्य है कि **यह सहमति भाषायी प्रक्रिया द्वारा प्राप्त होती है, या फिर प्राप्त होती ही नहीं।**

जैसा कि हम देख चुके हैं कि भाषायी प्रक्रिया का प्रकट ज्ञान, जिसके द्वारा सहमति प्राप्त की जाती है, किसी प्रकार की सहमति प्राप्त करने के लिए आवश्यक नहीं है परन्तु यह निश्चित रूप से उसमें बाधक भी नहीं है। जितना पेचीदा और कठिन विषय होगा उतना ही यह ज्ञान स्पष्ट रूप में सहायक होगा और अन्त में एक सीमा आ सकती है, (मेरा विचार है कि आधुनिक युग उस बिन्दु पर पहुँचने ही वाला है) जबकि ज्ञान न केवल सहयोगी ही बन पाएगा अपितु अपरिहार्य भी हो जाएगा। इस परिस्थिति की तुलना नौ-संचालन से दी जा सकती है। प्रत्येक चलने वाली नौका नक्षत्रीय शक्तियों के प्रभाव में है, परन्तु एक लड़का अपनी नौका को

बन्दरगाह पर एक ओर से दूसरी ओर चला सकता है, उसे इस कार्य में भूगोलशास्त्र, खगोलविज्ञान, गणितशास्त्र या अन्तर्देशीय राजनीति से कोई लाभ नहीं पहुँचेगा। परन्तु एक बड़े समुद्री जलपोत के कप्तान के लिए इन सभी विषयों का ज्ञान नितान्त आवश्यक है।

जब भाषिक भिन्न रचनाओं वाली बहुत सी भाषाओं का वैज्ञानिक तथा समालोचनात्मक दृष्टि से परीक्षण करने लगे तो उनके संदर्भों का आधार विस्तृत हो गया; उन्हें अनुभूति हुई कि अब तक सार्वभौमिक रूप से व्यापक माने जाने वाली दृश्य-सत्ता में कुछ बाधा आने लगी है, और उन्हें एक महत्त्वपूर्ण तथ्यों की नई तथा सम्पूर्ण व्यवस्था दृष्टिगोचर होने लगी। इस बात का पता चला कि पृष्ठभूमिगत भाषायी व्यवस्था (दूसरे शब्दों में व्याकरण) प्रत्येक भाषा में विचारों को अभिव्यक्त



चित्र 11. कालयुक्त भाषा (अंग्रेजी) तथा कालरहित भाषा (होपी) का वैषम्य। अंग्रेजी की दृष्टि में जो काल के भेद हैं, होपी भाषा में वे प्रामाणिकता के प्रकार के भेद हैं।

करने का उत्पादक यन्त्र मात्र ही नहीं है, अपितु स्वयं विचारों को रूप देने वाला है। वह व्यक्ति विशेष की मानसिक क्रियाशीलता के लिए कार्यक्रम तथा पथ-प्रदर्शक भी है, ताकि वह अपने संस्कारों का विश्लेषण करे, तथा अपने व्यवसाय सम्बन्धी मानसिक संग्रह का संश्लेषण कर सके। विचारों के सूत्रीकरण, पुराने अर्थों में पूर्णतया बुद्धिसंगत, एक स्वतन्त्र प्रक्रिया नहीं हैं, परन्तु किसी विशेष व्याकरण का एक अंग हैं, तथा भिन्न भिन्न व्याकरणों में थोड़े से लेकर बहुत अधिक तक भिन्नता लिए हुए होते हैं। हम प्रकृति का विभाजन अपनी मातृभाषाओं की पद्धति के अनुसार करते हैं। वे कोटियाँ तथा प्रकार, जिन्हें हम दृश्यसत्ता के संसार से विविक्त करते हैं, हमें वहाँ दिखाई नहीं देते, क्योंकि वे प्रत्येक प्रेक्षक के लिए एक समस्या बन कर खड़े हो जाते हैं। इसके विपरीत संसार एक विचित्र बहुरूपदर्शी संस्कारों का प्रवाह सा दिखाई देता है, जिसे हमारी बुद्धि को व्यवस्थित करना होता है—जिसका अर्थ है कि अधिकतर हमारे मस्तिष्क में विराजमान भाषायी व्यवस्थाओं द्वारा ही व्यवस्थित करना। हम प्रकृति का विभाजन कर देते हैं तथा उसे धारणाओं में व्यवस्थित करते हैं, तथा उन धारणाओं पर महत्त्वों का आरोपण करते हैं; अधिकतर इसलिए कि उन्हें इस प्रकार व्यवस्थित करने की सहमति में हमारा हाथ है—एक सहमति जो हमारे समस्त भाषाभाषी जनसमुदाय में व्याप्त है और हमारी भाषा के ढांचे के अनुसार ही नियमबद्ध की गई है। वह सहमति, यह सच है कि, अप्रत्यक्ष तथा अनभिव्यक्त है **परन्तु इसकी शर्तें पूर्णतया आबन्धक हैं**; हम तब तक विचारों की वाग्व्यापार द्वारा अभिव्यक्ति नहीं कर सकते जब तक कि सहमति से निर्दिष्ट सामग्री का वर्गीकरण तथा संगठन न कर दिया जाए।

यह तथ्य आधुनिक विज्ञान के लिए बहुत ही महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि इसका अभिप्राय: यह हुआ कि कोई भी व्यक्ति प्रकृति का पूर्णतया निष्पक्ष भाव से वर्णन करने में समर्थ नहीं है, बल्कि विशेष प्रकार के अर्थ-प्रतिपादन से उस समय भी नियन्त्रित होता है, जबकि वह अपने आप को सर्वथा मुक्त मानता है। इन विषयों में स्वतन्त्रता के निकट केवल वह भाषिक हो सकता है जो बहुत सी विविध भाषायी व्यवस्थाओं से परिचित हो। अभी तक कोई भी भाषाविज्ञानी इस स्थिति में नहीं है। अत: हमारा परिचय एक नए सापेक्षता सिद्धान्त से हुआ है, जिसकी धारणा है कि सभी प्रेक्षक विश्व के एक ही चित्र के विषय में एक ही भौतिक प्रमाण से प्रेरित नहीं होते, जब तक कि उनकी भाषायी पृष्ठभूमि समान न हो या किसी प्रकार उनका व्यासमापन न किया जा सके।

यह, कुछ अधिक चकित करने वाला परिणाम, इतना स्पष्ट नहीं हो पाता, यदि हम केवल आधुनिक भारोपीय भाषाओं की ही तुलना करते जिनमें काफी मात्रा में ग्रीक और लैटिन के तत्त्व विराजमान हैं। इन भाषाओं में मुख्य रचना का मतैक्य है जो कि पहली दृष्टि में ही स्वाभाविक तर्क को सिद्ध करता हुआ प्रतीत होता है। परन्तु यह मतैक्य इसीलिए वर्तमान है कि ये सब भाषाएँ भारोपीय परिवार की बोलियाँ हैं, इनकी एक ही आधारभूत योजना है, क्योंकि वे एक ही मूलभाषा, जो कभी

एक जन-समुदाय की भाषा थी, उससे ऐतिहासिक रूप में विकसित हुई है। क्योंकि इन सभी आधुनिक भारोपीय भाषाओं ने बहुत दिन तक एक सामान्य संस्कृति बनाने में योग दिया है, और क्योंकि इस संस्कृति का अधिकाँश भाग, विशेष रूप से बौद्धिक पक्ष ग्रीक तथा लैटिन की भाषायी पृष्ठभूमि से लिया गया है। अतः यह भाषायी वर्ग इससे पूर्ववर्ती पैराग्राफ के अन्त में भाषायी सापेक्ष सिद्धान्त विषयक कथन की विशेष धारा, **जो जब तक कि** से आरम्भ होती है कि पुष्टि करता है। इस अनुबन्ध के कारण आधुनिक वैज्ञानिकों के सम्प्रदाय में संसार के वर्णन का मतैक्य है। परन्तु इस बात पर बल देने की आवश्यकता है कि "समस्त आधुनिक भारोपीय भाषाभाषी प्रेक्षक", और "समस्त प्रेक्षक" ये एक ही चीज़ नहीं हैं। आधुनिक तुर्की या चीनी वैज्ञानिक संसार का वर्णन यदि पाश्चात्य वैज्ञानिकों के ढंग से ही करते हैं, तो सच ही इसका अर्थ यह है कि उन्होंने पाश्चात्य वैज्ञानिकों की वैज्ञानिक व्यवस्था पद्धति को पूरी तरह ग्रहण कर लिया है—इसका अर्थ यह नहीं है कि उन्होंने इस व्यवस्था का समर्थन अपने देशीय प्रेक्षण-स्थलों के आधार पर किया है।

जब सेमेटिक, चीनी, तिब्बती, या अफ्रीकी भाषाओं का वैषम्य हम अपनी भाषा से दिखाते हैं, तो संसार का विश्लेषण सम्बन्धी अन्तर अधिक स्पष्ट हो जाता है; और जब हम अमरीका के मूलवासियों की भाषाओं का समावेश भी यह वैषम्य दिखाने के लिए कर लेते हैं, तो यह तथ्य कि भाषाएँ प्रकृति का विभाजन कई प्रकार के विभिन्न ढंगों से करती हैं, दृढ़ हो जाता है, क्योंकि अमरीका की मूलभाषाओं के भाषा समुदाय कई हज़ार वर्षों से एक दूसरे से स्वतंत्र रूप में तथा पुरानी दुनियाँ की भाषाओं से भी अप्रभावित रूप में पनपते रहे हैं। समस्त धारणात्मक व्यवस्थाओं की सापेक्षता, जिनमें हमारी व्यवस्था भी सम्मिलित है, तथा उन व्यवस्थाओं की भाषा पर निर्भरता स्पष्ट रूप से प्रकट हो जाती है। यह कहना भी उचित नहीं कि केवल अपनी देशीय भाषा बोलने वाले अमरीकी इण्डियनों से वैज्ञानिक प्रेक्षक होने की अपेक्षा नहीं की गई है। मनुष्य के बौद्धिक अन्वेषण की सहायता से जो परिणाम उनकी भाषाओं से उपलब्ध हुए हैं, उन्हें प्रमाण कोटि से बाहर रखना तो कुछ ऐसा है जैसे किसी वनस्पति शास्त्री से आशा की जाए कि वह केवल अनाजों के पौधों तथा घरेलू गुलाबों का अध्ययन करके हमें बता दे कि सारा वनस्पति संसार किस प्रकार का है।

आइए, हम कुछ उदाहरणों पर विचार करें। अंग्रेजी में हम अधिकाँश शब्दों को दो श्रेणियों में विभक्त करते हैं, जिनके पृथक्-पृथक् व्याकरणिक तथा तर्कसंगत गुण धर्म हैं। श्रेणी I को हम संज्ञा कहते हैं जैसे 'House' घर, 'Man–मनुष्य' श्रेणी 2 क्रियाएँ हैं जैसे 'hit-मारना, run-भागना'। किसी श्रेणी के बहुत से शब्द ऐसे हैं जो गौण रूप से दूसरी श्रेणी के शब्दों की भांति व्यवहार कर सकते हैं, जैसे—'a hit, 'a Run' ('एक हिट', 'एक दौड़') या to man (the boat) (कश्ती चलाना) परन्तु मुख्यस्तर पर दो श्रेणियों में विभाजन पूर्णतया सुनिश्चित है। अतः हमारी भाषा, प्रकृति का द्विध्रुवीय विभाजन करती है। परन्तु प्रकृति स्वयं इस प्रकार ध्रुवीभूत नहीं है। यदि यह कहा जाए कि 'ताड़ना, घूमना, दौड़ना' आदि क्रियाएँ हैं, क्योंकि वे अस्थायी या क्षणिक घटनाओं अर्थात् गतियों का निर्देश करती हैं तो "a fist" घूंसा

संज्ञा क्यों है ? यह भी तो एक अस्थायी घटना है । फिर 'lightening' बिजली, 'spark–चिन्गारी,' 'wave–लहर', eddy–भंवर', 'pulsation–फड़कन', 'flame-शोला', ' storm-तूफान, 'phase –कला-प्रावस्था', 'cycle –आवर्तन', 'spasm –दरार', 'noise –शोर', 'emotion–मनोवेग', आदि शब्द संज्ञा किस प्रकार हैं ? ये सब अस्थायी घटनाएँ हैं। यदि 'मनुष्य', 'घर', संज्ञा शब्द इसलिए हैं कि चिरस्थायी तथा स्थिर घटनाएँ—अर्थात् वस्तु हैं तो फिर 'keep-रखना', 'adhere –चिपकना', 'extend–बढ़ाना', 'project–प्रक्षेपण करना', 'continue–बना रहना', 'persist–डटे रहना'. 'grow–बढ़ना', 'dwell –रहना' , इत्यादि क्रिया की श्रेणी में क्या कर रहे हैं ? यदि यह आपत्ति उठाई जाए कि 'possess–कब्जा रखना', 'adhere–चिपकना' आदि इसलिए क्रिया हैं कि ये स्थिर सम्बन्ध का द्योतन करते हैं न कि स्थिर प्रत्यक्ष वस्तु का तो 'Equilibrium (सन्तुलन)', 'pressure (दबाव),' 'current (धारा)', 'peace (शान्ति)', 'group (वर्ग)', 'Nation (राष्ट्र)', 'Society (समाज)', 'tribe (कबीला, वंश)', 'sister–(बहन)', या कोई भी पारिवारिक सम्बन्ध दिखाने वाला शब्द संज्ञा शब्दों के अन्तर्गत क्यों हैं ? हमें पता चलेगा कि हमारे लिए "घटना" का अर्थ वह है जिसे हमारी भाषा क्रिया की श्रेणी में रखती है या, उसके सादृश्य पर बनाई गई कोई भी अन्य चीज़; और, इस तथ्य का भी ज्ञान होगा कि 'Event (घटना)', 'thing (वस्तु)', 'object (विषय, कर्म)', 'retalionship (सम्बन्ध)', आदि की परिभाषा प्रकृति से देना सम्भव नहीं है, परन्तु इनकी परिभाषा देने के लिए, परिभाषा देने वाले की भाषा को घूमकर व्याकरणिक कोटियों का आश्रय लेना पड़ता है।

होपी भाषा में, 'Lightening (विद्युत्)', 'wave (लहर)', 'flame (शोला)', 'meteor (धूम्रकेतु)', 'puff of smoke (धुएँ की घूंट)', या ' pulsation (धड़कन)', आदि क्रिया शब्द हैं—वे घटनाएँ जो आवश्यक रूप से क्षण स्थायी होती हैं, सिवाय "क्रिया" के और कुछ नहीं हो सकती। "बादल", या "तूफान" आदि संज्ञा शब्द कालावधि के न्यूनतम स्तर के समान हैं। होपी भाषा में, आप देखेंगे, कि वास्तव में घटनाओं (या भाषायी इकाइयों) का वर्गीकरण कालावधि प्रकार का है, जो कि हमारी विचार पद्धति के लिए बिल्कुल विचित्र है। एक ओर नूत्का में—जो वानकुवेर द्वीपों की भाषा है, हमें सारे शब्द क्रिया ही प्रतीत होंगे, उसमें वास्तव में प्रथम श्रेणी, द्वितीय श्रेणी, आदि की व्यवस्था नहीं है। वहाँ ऐसा प्रतीत होता है कि प्रकृति का वह एकात्मक रूप ग्रहण किया गया है जो हमें प्रत्येक प्रकार की घटनाओं के लिए एक श्रेणी के शब्द प्रदान करता है। "घर" को द्योतन करने के लिए 'a house occurs (घर घटित होता है)', या 'it houses (यह बसाता है)'—आदि प्रयोग करने पड़ते हैं। ठीक ऐसे जैसे 'A flame occurs (एक ज्वाला या लौ उठती है)', या 'it burns (यह जलती है)'—ये शब्द हमें क्रियाओं की तरह प्रतीत होते हैं, क्योंकि इनकी रूपरचना आवधिक और कालसूचक अर्थ भेदों के लिए की जाती है, ताकि 'house event (घर की घटना)' के शब्द में प्रत्ययों के अर्थ होंगे—'चिरस्थायी घर', 'अस्थायी

घर', 'भावीघर', और "घर जो कभी था," या जो "घर होना प्रारम्भ हुआ है", आदि आदि।

होपी भाषा में एक संज्ञा है जो सभी उड़ने वाली चीजों या प्राणियों का द्योतन करती है; केवल पक्षियों को छोड़कर जिनका द्योतन दूसरी संज्ञा द्वारा किया जाता है। पहला संज्ञा शब्द एक श्रेणी का संकेत करता है जिसे हम (Fc-B) (flying class minus birds),'उड़ने वाली श्रेणी—पक्षियों को छोड़ कर' कह सकते हैं। होपी लोग मच्छरों, हवाई जहाजों, और वायुयान चालक सभी को एक ही शब्द से पुकारते हैं, और उन्हें इस विषय में किसी कठिनाई का अनुभव नहीं होता। वास्तव में परिस्थिति ही किसी बड़ी भाषायी श्रेणी जैसे Fc-D श्रेणी के विषम सदस्यों में किसी प्रकार की सम्भावित भ्रान्ति को दूर करती है। हमें यह श्रेणी बहुत बड़ी तथा अभ्यावर्तक दिखाई देती है। परन्तु एक एस्कीमो को हमारी "snow" (बर्फ) श्रेणी ऐसी ही प्रतीत होगी। हमारी भाषा में केवल एक ही शब्द है, जिसका प्रयोग गिरने वाली बर्फ, पृथ्वी पर पड़ी हुई बर्फ, बर्फ जो सिल के रूप में ढाल दी गई है, गलती हुई बर्फ, हवा के द्वारा उड़ाई गई बर्फ, आदि कैसी भी स्थिति के लिए किया जाता है। एक एस्कीमो के लिए इस प्रकार का सभी कुछ अभ्यावर्तन करने वाला शब्द अकल्पनीय है। वह कहेगा कि गिरती बर्फ और पिघलती बर्फ आदि इन्द्रियार्थता की दृष्टि से या कार्यवाहकता की दृष्टि से भिन्न है–अर्थात् दो वस्तुएँ हैं। वह इन सबके लिए और अन्य प्रकार की बर्फ के लिए भिन्न भिन्न शब्दों का प्रयोग करता है। अज़्तेक लोग इससे विपरीत दिशा में हमसे भी आगे बढ़ जाते हैं—क्योंकि उनकी भाषा में 'cold (ठण्ड)', 'ice (जमी बर्फ)', 'snow (बर्फ)' आदि के लिए केवल एक ही प्रातिपदिक है, परन्तु प्रत्यय भिन्न भिन्न जुड़ते हैं। 'ice (बर्फ)' संज्ञा रूप है, "cold" (ठण्ड) विशेषण रूप है, और "snow" बर्फ की धुन्ध है।

सबसे अधिक आश्चर्य इस बात का है कि पाश्चात्य संसार के बहुत से महान सामान्यीकरण जैसे 'Time' (समय), 'velocity' (वेग), तथा 'matter' (द्रव्य) आदि भी विश्व का सुसंगत चित्र प्रस्तुत करने के लिए अनिवार्य नहीं। और यह सच है कि जिन मानसिक अनुभूतियों को हम इन शीर्षकों के अन्तर्गत रखते हैं वे भी अक्षुण्ण रूप में रहती हैं, तथा दूसरे प्रकार के अनुभवों से व्युत्पन्न कोटियाँ, ब्रह्माण्ड विज्ञान का आधिपत्य अपने हाथ में ले लेती हैं, और ऐसा लगता है कि वे समस्त सञ्चालन भलीभांति करती हैं। होपी काल-निरपेक्ष भाषा कही जा सकती है। यह भाषा मनोवैज्ञानिक काल को मान्यता प्रदान करती है जो कि बर्गसन के आवधिक काल के बहुत अधिक समान है, परन्तु यह काल गणितशास्त्र के काल "T," से बहुत भिन्न है, जिसका प्रयोग भौतिकीशास्त्री द्वारा किया जाता है। होपी काल की विचित्र विशेषताओं में से कुछ ये हैं कि यह प्रत्येक प्रेक्षक के साथ बदल जाता है, इसमें समकालिकता को कोई स्थान नहीं और इसकी शून्य विमाएँ हैं—अर्थात् इसे एक से अधिक संख्या नहीं दी जा सकती। होपी लोग यह कभी नहीं कहते कि "मैं पाँच दिन ठहरा" परन्तु कहते हैं "मैं पाँचवे दिन चला गया"—इस प्रकार के काल का निर्देश

करने वाले 'दिन' जैसे शब्द का बहुवचन नहीं हो सकता। समस्या चित्र (चित्र 11 पृष्ठ 257) उस व्यक्ति को बौद्धिक व्यायाम करने का अवसर प्रदान कर सकता है जो कि यह जानना चाहे कि होपी क्रियाएँ किस प्रकार काल रचनाओं के बिना काम चलाती हैं। वास्तव में एक क्रिया वाले वाक्यों में हमारे कालों का एक ही व्यावहारिक लाभ है, वह यह कि चित्र में दिखाई गई पाँच भिन्न विशेष परिस्थितियों का किस प्रकार प्रभेद दिखाया जा सके। काल-रहित होपी क्रिया-रूप किसी घटना के वर्तमान, भूत और भविष्य में प्रभेद नहीं दिखाती परन्तु यह संकेत अवश्य करती है कि वक्ता उस वक्तव्य से किस प्रकार की तर्कसंगति की अपेक्षा करता है: (a) किसी घटना की सूचना (चित्र में 1, 2, 3 परिस्थितियाँ),(b) किसी घटना की प्रत्याशा (स्थिति 4), (c) सामान्यीकरण या घटनाओं का नियम (स्थिति 5); स्थिति I, जहाँ वक्ता और श्रोता एक ही विषय क्षेत्र के सम्पर्क में है, हमारी भाषा द्वारा दो अवस्थाओं में विभाजित की जाती है, ((I) a b) जिसे क्रमशः वर्तमान और भूत की संज्ञा दी जाती है। इस प्रकार का विभाजन उस भाषा के लिए अनावश्यक है जो हमें यह विश्वास दिलाए कि कथन एक सूचनामात्र है।

होपी व्याकरण अपने पक्ष और वृत्तियों के माध्यम से क्षणिक, निरन्तर, और बारबार घटने वाली घटनाओं में आसानी से प्रभेद कर सकता है, और सूचित घटनाओं के वास्तविक क्रम का द्योतन भी आसानी से करता है। अतः विश्व का वर्णन, विभात्मक काल की धारणा का आश्रय लिए बिना किया जा सकता है। प्रश्न यह है कि इस पद्धति पर बनाई गई भौतिकी किस प्रकार काल 'T' के समीकारों (equations) के बिना कार्य कर सकेगी ? जहाँ तक मैं समझ सकता हूँ यह आवश्यक है कि उसके लिए एक भिन्न प्रकार की विचारधारा और भिन्न प्रकार के गणितशास्त्र की आवश्यकता पड़ेगी। हाँ 'V' (वेग) की धारणा को भी तिलाञ्जलि देनी होगी। होपी भाषा में कोई शब्द ऐसा नहीं है जो वास्तव में "speed" (तीव्र गति) "rapid (तीव्रगामी) का सही समानार्थक हो। इसका अनुवाद प्रायः किसी भी गत्यर्थक धातु के साथ तीव्र या बहुत अधिक जोड़ कर किया जाता है। यही हमारी नई भौतिकी की प्रकृति जानने के लिए सूत्र हैं। हमें एक नए शब्द (Intensity) तीव्रता "I" का समावेश करना पड़ेगा । प्रत्येक घटना या वस्तु का एक 'I' होगा, चाहे हम उस वस्तु या घटना को 'चल मानें' या अस्थायी अथवा अस्तित्वयुक्त मानें। शायद विद्युत् चार्ज (आवेश) का 'I' इसकी वोल्टेज् हो या (potential) विभव हो। हम घड़ियों का प्रयोग किसी प्रकार की तीव्रताओं को या कुछ सापेक्षिक तीव्रताओं को मापने के लिए करेंगे, क्योंकि किसी भी वस्तु की निरपेक्ष तीव्रता निरर्थक होगी । हमारा पुराना मित्र (acceleration) त्वरण वहाँ अब भी होगा परन्तु निश्चित रूप से किसी दूसरे नाम से। हम शायद इसे 'V' नाम से पुकारें जिसका अर्थ Velocity (वेग) नहीं होगा अपितु Variation (अपक्रम) होगा। शायद सभी अभिवृद्धियों तथा सञ्चयों को 'V' ही कहा जाएगा। हमें "Rate" (रफ्तार) की धारणा कालिक या कालवाचक अर्थों में नहीं रखनी

चाहिए, क्योंकि "Velocity" (वेग) की भाँति Rate (रफ्तार) भी गणितीय तथा भाषायी काल का सन्निवेश करता है। वास्तव में हमें पता है कि सभी 'मापन' अनुपात है परन्तु तीव्रताओं का मापन किसी घड़ी या नक्षत्र की मानक तीव्रता की तुलना से किए गए तीव्रताओं के मापन को हम इतने ही अनुपात में मान सकते हैं जितना कि एक फासले को एक मापक गज की तुलना में मानते हैं।

दूसरी सभ्यता से आया हुआ एक वैज्ञानिक जो 'T' काल तथा 'V' वेग का प्रयोग करता आया है, हमें बड़ी कठिनाई से इन धारणाओं को समझा पाएगा। जब हम रासायनिक प्रतिक्रिया की तीव्रता 'I' की बात करना चाहेंगे तो वह इसके 'V' वेग या रफ्तार के विषय में बात करेगा—वह उन शब्दों का प्रयोग करेगा जिन्हें हम पहले यही समझे थे कि उसकी भाषा में ये शब्द केवल तीव्रता मात्र (Intensity) के लिए हैं। हमारी ही तरह पहले वह भी यह सोचेगा कि "तीव्रता" हमारा अपना शब्द 'V' (वेग) के लिए है। एक बार हम सहमत हो सकते हैं, परन्तु कुछ देर बाद हम असहमति प्रकट करना आरम्भ कर सकते हैं और दोनों पक्षों को यह आभास हो सकता है कि यहाँ परिमेयकरण (Rationalization) की दो भिन्न व्यवस्थाओं का प्रयोग किया जा रहा है। उसके लिए हमें यह समझाना बहुत कठिन होगा कि वह वास्तव में रासायनिक अभिक्रिया से क्या समझता है। हमारे पास कोई ऐसा शब्द नहीं जो यहाँ ठीक बैठ जाए। वह इसे दौड़ते हुए घोड़े के सादृश्य द्वारा समझाना चाहेगा, या अच्छे घोड़े और सुस्त घोड़े के अन्तर द्वारा। उस समय हम दर्पमय हँसी हँसकर उसे बताने का प्रयत्न करना चाहेंगे कि वह सादृश्य तो भिन्न तीव्रताओं से सम्बन्धित है और इसके अतिरिक्त एक घोड़े तथा बीकर में होने वाली रासायनिक अभिक्रिया में कोई साम्य नहीं। हम यह भी स्पष्ट करना चाहेंगे कि एक दौड़ता हुआ घोड़ा स्थावर पृथ्वी के साथ एक जंगम सापेक्ष है, जबकि प्याले के अन्दर रखा द्रव्य स्थिर है।

भाषायी दृष्टिकोण के द्वारा विज्ञान को एक महत्त्वपूर्ण देन यह भी हो सकती है कि इससे हमारे संदर्श ज्ञान का बहुत अधिक विकास हुआ है। अब केवल कुछ आधुनिक भारोपीय बोलियों को तथा उनकी रचनाओं से प्राप्त किए गए परिमेयकरण के तकनीकों को मानव मस्तिष्क के विकास की चरम सीमा नहीं मानेंगे, न ही ऐसे उनका वर्तमान विस्तार किसी योग्यतमावशेष के नियम के कारण या किसी ऐसे ही अन्य कारणवश है, अपितु कुछ 'ऐतिहासिक घटनाओं' के कारण है—घटनाएँ जिन्हें हम अनुगृहीत पक्षों के संकुञ्चित दृष्टिकोण से 'भाग्यशाली' कह सकते हैं। उन्हें या उनके साथ हम अपनी विचार प्रक्रियाओं को भी अब अधिक समय तक विवेक और ज्ञान के सप्तक में सर्वव्यापी नहीं मान सकते, अपितु इस आकाश गंगा के बृहद् विस्तार में एक तारा पुंजमात्र मान सकते हैं। पृथ्वीमण्डल पर फैली हुई भाषायी व्यवस्थाओं की अविश्वसनीय विविधता की मात्रा का सम्यक् बोध मनुष्य पर इस अपरिहार्य भावना की छाप लगा देता है कि मानवी मनोवृत्ति कल्पनातीत रूप से पुरातन है, तथा इतिहास के कुछ हज़ार वर्ष, जिनके विषय में हमें लिखित

प्रमाणों द्वारा पता चलता है, इस भूमण्डल पर हमारे अतीत के अनुभागों को आँकने वाले मापक पर पैन्सिल के चिन्ह की मोटाई से अधिक नहीं है। तथा, इन अर्वाचीन सहस्राब्दियों की घटनाओं ने विकासक्रम में भी कोई विशेष छाप नहीं डाली है, न ही मानव जाति ने कोई अचानक तेज़ी से ऊँची छलाँग ही लगाई हैं, न ही इन अर्वाचीन सहस्राब्दियों में कोई प्रभावशाली संश्लेषण ही प्राप्त किया है, परन्तु कतिपय भाषायी सूत्रीकरणों तथा प्रकृति विषयक विचारों के साथ, जो उसे अनिर्वचनीय दीर्घतर प्राचीन काल से रिक्थ में प्राप्त हुए हैं, थोड़ा खेल अवश्य किया है। तथापि, न तो इस भावना से, और न ही अधिकतर अज्ञात, स्वयं भाषायी उपकरणों पर सन्दिग्ध रूप से आश्रित होने की भावना से हमें हताश होना चाहिए, अपितु हमें अपने अन्दर उस विनय का समावेश करना चाहिए जो प्रत्येक सच्ची वैज्ञानिक भावना के साथ होता है, और जो मन के उस 'दम्भ' का निषेध कर सके जो सच्ची वैज्ञानिक जिज्ञासा तथा तटस्थता में बाधक होता है।

भाषाविज्ञान—एक यथार्थ विज्ञान*

विज्ञान के संसार में 1890 के पश्चात् जो क्रान्तिकारी परिवर्तन, विशेषरूप से भौतिकी, रसायनशास्त्र, जीव-विज्ञान, तथा मानवविज्ञान में हुए हैं, वे नए तथ्यों के कारण नहीं अपितु तथ्यों पर नए ढंग से सोचने के कारण हुए हैं। हाँ, नए तथ्य भी स्वयं पर्याप्त मात्रा में तथा वज़नदार रहे हैं, परन्तु उनसे भी अधिक महत्त्वपूर्ण शोध के वे क्षेत्र हैं जिनमें वे प्रकट हुए हैं, जैसे सापेक्षतावाद, प्रमात्रावाद, विद्युदणु-विज्ञान, उत्प्रेरण, कोलाइड-रसायनशास्त्र, जीव-सिद्धान्त, जेस्टाल्ट-मनोविज्ञान, मनोविश्लेषण, निष्पक्ष सांस्कृतिक मानवशास्त्र आदि आदि। विज्ञान के महान् श्रेण्य काल में अप्रतिवादित रूप से प्रचलित विश्व सम्बन्धी विचार-धारा में संगत न होने के कारण तथा स्पष्टीकरण के लिए प्रयत्नों, समन्वयों, तथा पुनर्कथनों द्वारा ये विज्ञान के शोध क्षेत्र अभूतपूर्व मात्रा में मौलिक रूप से नूतन धारणाओं के वैशिष्टय से युक्त हैं।

मैं 'तथ्यों' के विषय में **सोचने** को नए ढंग कहता हूँ, परन्तु अधिक सही कथन के अनुसार 'तथ्यों के विषय में (Talk) **बात करने** के नए ढंग' कहना उचित होगा। शोध सामग्री के विषय में भाषा का यह प्रयोग किसी वैज्ञानिक प्रगति में प्रमुख साधन होता है। इसमें सन्देह नहीं कि (Talk) बात करना' शब्द के साथ जो हीन भावना का धुंधला सा व्यंग्य जुड़ा है, उससे हमें अपने आप को मुक्त करना पड़ेगा। जैसे कि "Just talk" (बस यूं ही बात करना) उपवाक्य में; 'काम करने' तथा 'बात करने' में जो असत्य विरोध हैं, परन्तु जिसकी कल्पना सभी अंग्रेजी भाषी करना चाहते हैं (हमें उससे भी अपने आपको मुक्त करना पड़ेगा)। मनुष्य के समस्त कार्यों में सबसे अधिक मानवीय कर्म "बात करना" के विषय में हमें किसी प्रकार का खेद प्रकट नहीं करना चाहिए। पशु सोच भले ही सकते हों परन्तु बात नहीं कर सकते। "Talk" –बात करना, "बोलना" शब्द वास्तव में "सोचना" शब्द से अधिक **शिष्ट एवं प्रतिष्ठित माना जाना चाहिए।** हमें इस सत्य को भी स्वीकार कर लेना चाहिए कि विज्ञान का आरम्भ और अन्त बातों में ही होता है; यही तथ्य किसी भी प्रकार की हेयता का निषेध करता है। ऐसे शब्दों, जैसे 'Analyze,–विश्लेषण करो', 'Compare–तुलना करो', 'Deduce–निगमन करो', 'Reason,–तर्कणा करो', 'Infer अनुमान लगाओ', 'Postulate पूर्वधारणा बनाओ', 'Theorize–सिद्धान्तीकरण करो', का अर्थ है कि जब कभी वैज्ञानिक कुछ करता है तो

*** Technology Review 43:–61–63, 80—83 (दिसम्बर 1940) से पुनर्मुद्रित।**

जो कुछ करता है उसके विषय में बात करता है। जैसा कि ल्यूनार्ड ब्लूमफील्ड ने प्रदर्शित किया है कि वैज्ञानिक शोध वाक्यों के एक सेट से आरम्भ होता है जो कि विशेष प्रेक्षणों एवम् परीक्षणों के लिए मार्ग प्रशस्त करते हैं, तथा जिनके परिणाम तब तक पूर्णतया वैज्ञानिक नहीं हो पाते जब तक कि वे भाषा में पुनः समाविष्ट न हो जाएँ, और पुनः ऐसे वाक्यों के एक सेट को जन्म न दे दें जो कि 'अज्ञात' के क्षेत्र में छानबीन करने का आधार बन सकें। भाषा का यह वैज्ञानिक प्रयोग समस्त भाषा का अध्ययन करने वाले विज्ञान अर्थात् भाषिकी के नियमों या सिद्धान्तों के अधीन है।

जैसा कि मैं अप्रैल मास के रिव्यू के लिए लिखे गए अपने पिछले लेख में यह स्पष्ट करने की चिन्ता में था कि हम सब 'बात करने' के विषय में भ्रान्तिग्रस्त हैं, एक भ्रान्ति, कि बात करना नितान्त निर्बाध एवम् सहज है, तथा हम इससे जो कुछ भी व्यक्त कराना चाहते हैं यह कर देती हैं। यह भ्रान्तिपूर्ण आभास इस तथ्य के परिणामस्वरूप है कि बोलने के प्रत्यक्ष, उन्मुक्त प्रवाह के अन्तर्गत अनिवार्य प्रपञ्च इतना अधिक स्वेच्छाचारी है कि बोलने वाला और सुनने वाला दोनों ही अचेतन रूप से मानों प्रकृति के नियमों की जकड़ में आ गए हों।

भाषा के तथ्य पृष्ठभूमिगत तथ्य हैं, जिनके विषय में बोलने वाले बिल्कुल अनजान होते हैं या अधिक से अधिक उन्हें बहुत थोड़ा सा ऐसा आभास होता है जैसा कि कमरे के अन्दर हवा में धूलि के कणों का हो सकता है यद्यपि भाषायी तथ्य बोलने वालों पर गुरुत्वाकर्षण की तरह अधिक नियन्त्रण रखते हैं अपेक्षाकृत धूलि के उदाहरण के। भाषा के सहज, अविवेचित तथा अनभिप्रेत ढाँचे सभी लोगों के लिए समान नहीं होते, परन्तु प्रत्येक भाषा के लिए विशिष्ट होते हैं तथा भाषा के व्याकृत या रूपीकृत रूप को प्रस्तुत करते हैं, या भाषा का व्याकरण बनाते हैं। यहाँ पर 'व्याकरण' शब्द उस व्याकरण शब्द से अधिक अर्थयुक्त है जिसे हमने अपने स्कूल के दिनों में पाठ्य पुस्तकों में पढ़ा था।

इस तथ्य से ही उस नियम का समारम्भ होता है जिसे मैंने "भाषायी सापेक्षता सिद्धान्त" का नाम दिया है। जिसका, अनौपचारिक शब्दों में अर्थ है, कि स्पष्ट रूप से भिन्न व्याकरणों का प्रयोग करने वाले व्यक्ति, अपने व्याकरण द्वारा, भिन्न प्रकार के प्रेक्षण, तथा बाह्यरूप से समान प्रेक्षण-कार्यों के भिन्न मूल्यांकन की ओर निर्दिष्ट कर दिए जाते हैं, अतः वे प्रेक्षक के रूप में समान नहीं हैं, तथा संसार के विषय में उन्हें कुछ भिन्न परिणामों पर पहुँचना चाहिए। (इस विषय में एक अधिक औपचारिक उल्लेख पिछले अप्रैल के मेरे लेख में किया गया है)। इस प्रकार के प्रत्येक असूत्रीकृत एवम् संसार सम्बन्धी साधारण दृष्टिकोण से एक सुस्पष्ट वैज्ञानिक संसार सम्बन्धी दृष्टिकोण का आविर्भाव उन्हीं आधारभूत व्याकरणिक ढाँचों के ऊँचे विशेषीकरण के द्वारा हो सकता है, जिन्होंने पहले साधारण तथा अस्पष्ट दृष्टिकोण को जन्म दिया था। अतः आधुनिक विज्ञान का संसार सम्बन्धी दृष्टिकोण **पाश्चात्य भारोपीय भाषाओं** के आधारभूत व्याकरणों के उच्चतर

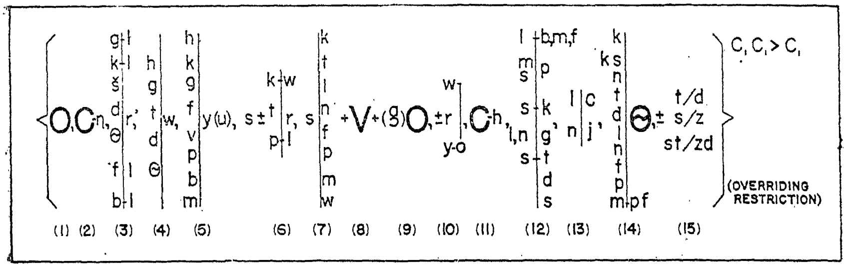
विशेषीकरण द्वारा आविर्भूत हुआ है। निस्सन्देह 'विज्ञान' इस व्याकरण द्वारा उत्पन्न नहीं किया गया है, यह इसके द्वारा केवल रञ्जित किया गया है। इस भाषावर्ग में विज्ञान का आविर्भाव इसलिए हुआ क्योंकि संसार के जिस कोने में ये भाषाएँ प्रमुख रूप से बोली जाती थीं, वहाँ कुछ ऐतिहासिक घटनाओं का ऐसा ताँता बँधा कि उन्होंने वाणिज्य, मूल्यांकन, उत्पादन, तथा तकनीकी आविष्कारों को प्रोत्साहन दिया।

किसी एक 'दत्त' संसार—दृष्टिकोण में भाग लेने वालों को उन सरणियों के मुहावरेदार होने का बोध नहीं होता जिनमें बोलना और सोचना प्रवाहित होता है, वे उन्हें युक्तियुक्त अनिवार्यताएँ मान लेते हैं। परन्तु किसी विदेशी व्यक्ति का उदाहरण लीजिए जो पर्याप्त मात्रा में भिन्न भाषा और संस्कृति का अभ्यस्त हो, या किसी वैज्ञानिक को लीजिए, जो परवर्ती युग का हो और उसी मौलिक प्रकार की परन्तु कुछ भिन्न भाषा बोलता हो, तथा एक दत्त संसार-दृष्टिकोण में भाग लेने वालों को जो कुछ युक्तियुक्त तथा अनिवार्य लगता हो, उसे वैसा न लगता हो। औपचारिक रूप से प्रचलित कारण उसे मुख्य रूप से बहुत ही अधिक मुहावरेदार "Facons de parler" बोलने का ढंग प्रतीत हो सकता है। अब विचार कीजिए प्रकृति विषयक प्रश्नों के उन उत्तरों पर जो किसी समय विद्वान लोगों द्वारा भी दिए जाते थे। पानी पम्प में ऊपर क्यों चढ़ता है ? क्योंकि प्रकृति 'शून्यता' से घृणा करती है। पानी आग को क्यों बुझाता है ? क्योंकि पानी आर्द्र होता है, या क्योंकि आग्नेय तत्त्व और जल तत्त्व परस्पर विरोधी हैं। अग्नि की ज्वाला ऊपर क्यों उठती है ? अग्नि तत्त्व के हल्के होने के कारण। कोई व्यक्ति पत्थर को एक चमड़े के चूषक से कैसे उठा सकता है ? क्योंकि चूषण-क्रिया पत्थर को ऊपर खींच लेती है। एक पतंगा प्रकाश की ओर क्यों उड़ता है ? क्योंकि पतंगा उत्सुक है या प्रकाश उसे अपनी ओर खींचता है। यदि ये वाक्य किसी समय तर्क-सम्मत माने जाते थे और आज इन्हें विचित्र वृत्ति-भाषा की स्वभाव-विशेषता समझा जाता है, तो यह परिवर्तन इसलिए नहीं हुआ कि विज्ञान ने नए तथ्यों को खोज निकाला है। वास्तव में विज्ञान ने पुराने तथ्यों के लिए नए भाषायी सूत्र अपना लिए हैं, और अब जबकि हम नई बोली के अभ्यस्त हो गए हैं तो पुरानी भाषा की कई विशेषताएँ हम पर लागू नहीं होतीं।

हम आधुनिक लोग अभी तक इस स्थिति में नहीं हैं कि पुराने युग के ज्ञान-दम्भियों का उपहास कर सकें, जिन्होंने पानी की आर्द्रता के द्वारा उसके कई गुणों को समझाया है। वह शब्दावली जिसे हम भाषा तथा साँस्कृतिक तथ्य के लिए प्रयुक्त करते हैं प्राय: 'पानी की आर्द्रता' या 'प्रकृति की शून्यता से घृणा' आदि की कोटि की होती है। अनेक तथा विविध भाषाओं की विशेषताओं पर भाषा-विज्ञानियों को शोध करने की बहुत आवश्यकता है; यदि हम सरलतापूर्वक सोचना चाहते हैं, तथा उन दोषों से बचना चाहते हैं जिनका भय हमें अचेतन रूप से अपनी भाषा-पृष्ठभूमि को स्वीकार कर लेने से हो सकता है। इस निबन्ध के आरम्भ में

उल्लिखित विज्ञान के उन नए क्षेत्रों से विवक्षित नए सोचने के ढंग भाषाविज्ञान से उत्तरोत्तर अधिक योगदान की अपेक्षा रखते हैं। अज्ञात की ओर विज्ञान के अगले महा-अभियान के लिए इसकी बहुत आवश्यकता है।

इस परिस्थिति में वे दार्शनिक तथा गणितज्ञ विश्लेषक, जो स्वयं भाषाविज्ञान के अल्पज्ञान द्वारा उच्चतर भाषायी प्रतीकवाद के क्षेत्र का अवलोड़न करना चाहते हैं, सहायक सिद्ध नहीं हो सकते। दुर्भाग्यवश, आधुनिकतम लेखकों के इस क्षेत्रगत प्रयासों में शिक्षुता सम्बन्धी प्रशिक्षण के अभाव का बहुत बड़ा दोष है। जबकि भाषा के प्राथमिक नियमों का भी सम्यक् ज्ञान न हो तो भाषायी अर्थों के निमित्त उच्चतर गणितीय सूत्र बनाने का प्रयत्न करना आपत्ति में फँसना मात्र है। भौतिकी का प्रारम्भ आण्विक संरचनाओं तथा अन्तरिक्ष किरणों से नहीं होता, अपितु साधारण



चित्र 12. अंग्रेजी (मानक मध्य पश्चिमी अमरीकी अंग्रेजी) एकाक्षरिक शब्द का संरचनात्मक सूत्र। इस सूत्र को किन्हीं विशिष्ट अक्षरों के वर्ग के लिए विशेष प्रतीकों द्वारा सरल बनाया जा सकता है, परन्तु यह सरलीकरण इसकी व्याख्या को और अधिक कठिन बना देगा। एक एकाक्षरिक शब्द के लिए सरलतम सूत्र C+V हो सकता है, तथा कुछ भाषाएं इस सूत्र का अनुसरण करती हैं। पोलिनेशियाई भाषाओं का इससे दुसरे नम्बर पर सरलतम सूत्र हैं 0, C+V। ऊपर दिखाई गई अंग्रेजी शब्द संरचना की जटिलता से इसका वैषम्य देखिए।

से स्थूल भौतिक पदार्थों की गति तथा इन गतियों की प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति द्वारा होता है। इसी प्रकार भाषा-विज्ञान का प्रारम्भ न तो अर्थ से होता है और न ही युक्तिसंगत तर्क वाक्यों की संरचना से, बल्कि किसी एक भाषा की स्थूल श्रव्य ध्वनियों द्वारा बनाई गई अविकल्पी अभिरचनाओं तथा इन को अभिव्यक्त करने के लिए निजी प्रतीकात्मक अभिव्यक्तियों द्वारा होता है। इन स्थूल ध्वनि अभिरचनाओं से सम्बन्धित साधारण शब्दावली से ही विज्ञान की उच्चतर विश्लेषणात्मक प्रक्रियाओं का विकास होता है, जैसे कि लकड़ी के गिरते और खिसकते खण्डों से सम्बन्धित साधारण से प्रयोगों तथा गणितों से समस्त उच्चतर भौतिकी गणित यहाँ तक कि प्रमात्रा-सिद्धान्त भी विकसित हुआ है। **वैसे तो ध्वनि-अभिरचन सम्बन्धी तथ्य भी कुछ सरल नहीं है; परन्तु वे भाषण के अचेतन, अविकल्पी, पृष्ठ-भूमिगत तथ्य को इतना सुस्पष्ट बनाते हैं जितना कि कोई अन्य नहीं बना सकता।**

उदाहरणार्थ अंग्रेजी भाषा के एकाक्षरी शब्दों के लिए रचनात्मक सूत्र (चित्र 12) में कुछ थोड़ा प्रतीत होता है। फिर भी, एक भाषायी अभिरचन के लिए यह अपेक्षाकृत कुछ सरल है। अंग्रेजी-भाषी जगत में दो और पाँच वर्ष की आयु के बीच वाले बच्चे अन्य सूत्रों के साथ इस सूत्र द्वारा दी गई अभिरचना को सीखने में लगे रहते हैं। जब बच्चा छह वर्ष का होता है तो यह सूत्र उसके मस्तिष्क में पूरी तरह अंकित तथा स्वाभाविक हो जाता है। इस तथ्य का समर्थन बच्चों द्वारा बनाए गए अनर्गल शब्द भी करते हैं—बच्चे इसकी सम्भावनाओं की छानबीन भले ही करें परन्तु इस सूत्र से रत्ती भर भी बाहर नहीं जाते। बाल्यावस्था में ही बच्चों के

A.



y = C+sin x

(परिवर्तकों का कार्य)

B.

SERIES 1.		SERIES 2.		SERIES 3.		SERIES 4.	
NOISES	(noyz-iz)	CLAWS	(klɔ-z)	CATS	(kat-s)	LEAF	(liyf#
HORSES	(hors-iz)	PIGS	(pig-z)	LIPS	(lip-s)	LEAVES	liyv-z)
MATCHES	(mac-iz)	LAMBS	(lam-z)	NECKS	(nek-s)	WIFE	(wayf#
WEDGES	(wej-iz)	ROWS	(row-z)	CHIEFS	(ciyf-s)	WIVES	wayv-z)
ETC.		ETC.		ETC.		ETC.	

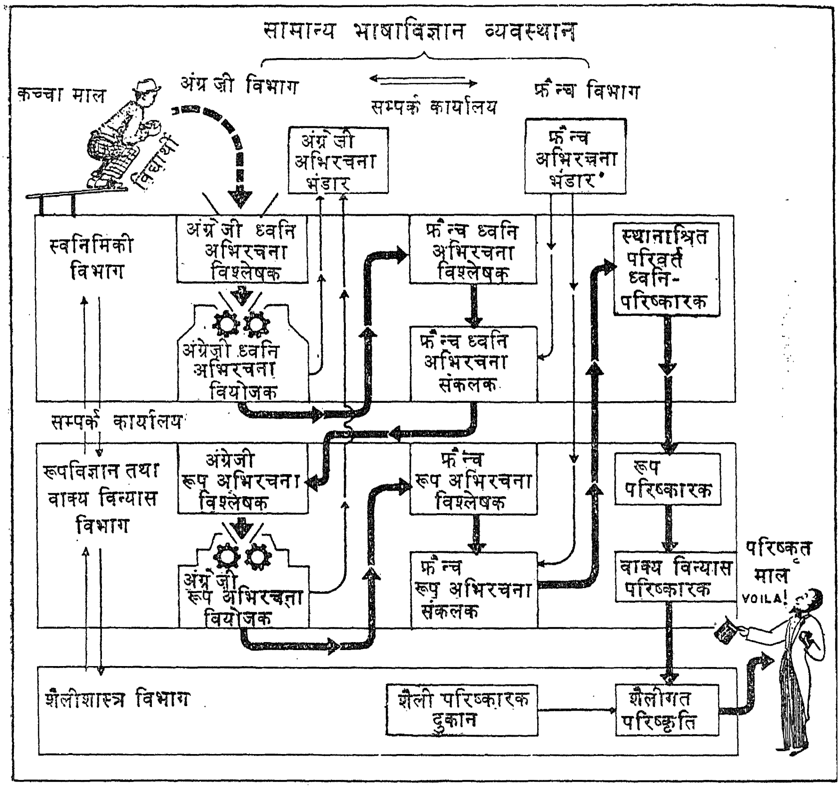
suf.√-s = 1(C_{sib})-iz ; 2 (S)-z ; 3 (C-S)-s ; 4 (f#>V)-z.

(परिवर्तों की अभिरचना)

चित्र 13. परिवर्तक तथा परिवर्त : A आरेख द्वारा तथा गणितीय सूत्र द्वारा (समीकरण) परिवर्तकों का एक सह-सम्बन्ध दिखाता है। B विस्तारणीय उदाहरणों द्वारा तथा एक अभिरचना सूत्र द्वारा परिवर्तों का एक सह-सम्बन्ध प्रदर्शित करता है। सूत्र का अर्थ है कि अंग्रेजी का प्रत्यय जो सैद्धान्तिक दृष्टि से ("मूल द्वारा",√) एक अन्तिम 'S' है जो किसी दत्त विषय में चार परिवर्तों में से किसी एक का रूप धारण कर लेता है : किसी ऊष्म वर्णान्त व्यञ्जन के पश्चात् "—iz" का, किसी घोष स्वर या व्यञ्जन के पश्चात् "—z", किसी अघोष व्यञ्जन के पश्चात् "—s" का, केवल विशेष परिवर्त 'f#', के बाद यह '—z' का रूप धारण करता है, "f#" 'v' में प्रत्यावर्तित होता है।

लिए यह सूत्र वैसा ही हो जाता है जैसा कि यह एक वयस्क के लिए है। इस सूत्र से हट जाने वाले किसी भी ध्वनिक्रम का बड़ी कठिनाई के पश्चात् भी उच्चारण

नहीं हो सकता। नए शब्द जैसे "blurb" अर्थहीन शब्द जैसे लेविस कैरोल (Lewis caroll) के ("mome raths") संयोग जिनका प्रयोग पशुओं और जंगली लोगों की चिल्लाहट का संकेत देने के लिए किया गया है जैसे "glub" तथा "Squonk" आदि भी इस सूत्र के साँचे से बन कर निकलते हैं। जब कभी कोई युवक किसी विदेशी भाषा को सीखना प्रारम्भ करता है तो वह अचेतन रूप से इसी सूत्र के अनुसार अक्षर बनाने का प्रयत्न करता है। इसमें सन्देह नहीं कि यह सूत्र वहाँ काम नहीं आएगा, क्योंकि विदेशी भाषाएँ अपने सूत्रों के अनुसार ढली होती हैं। प्राय:



चित्र 14. फ्रैंच को सरलतापूर्वक सीखने की प्रक्रिया का संशोधित प्रवाह पत्र। गारन्टी : उत्पादन में कोई अड़चन नहीं।

शिक्षार्थियों के लिए यह समय बहुत ही कठिनाई का होता है। यह बिलकुल न जानते हुए कि कोई सूत्र इस कठिनाई का मूल कारण है, वह प्राय: अपने आप को दोषी ठहराता है। प्रारम्भिक अवस्था में उत्पन्न हुई ये निराशाएँ एवम् कुण्ठाएँ उसके विदेशी भाषा का प्रयोग करने के प्रयत्न में निरन्तर बाधक बनी रहती हैं। या फिर, उदा-

हरणार्थ, वह सुनता भी अपने सूत्र के अनुसार ही है ताकि जो अंग्रेजी ध्वनि-संयोग वह बनाता हैं, उसे वे शुद्ध फ्रैन्च ध्वनियाँ प्रतीत होती हैं। तब वह कुछ कम कुण्ठाग्रस्त होता है तथा "बुरी" फ्रांसीसी भाषा का "धाराप्रवाह" वक्ता हो सकता है।

यदि किसी प्रकार वह इतना भाग्यशाली है कि उसे प्रारम्भिक फ्रांसीसी पढ़ाने वाला कोई ऐसा सैद्धान्तिक भाषाविज्ञानी मिल जाए, जो उसे अंग्रेजी ध्वनि सूत्रों का अभिरचन पहले ही समझा दे जिससे कि वे अर्धचेतन हो जाएँ, और परिणाम-स्वरूप उस पर उन अभिरचनाओं की जकड़ कम हो जाए जो उसे संस्कारवश मिली है; यद्यपि जहाँ तक अंग्रेजी बोलने का सम्बन्ध है वे स्वाभाविक रूप में विद्यमान रहती हैं। तब वह फ्रांसीसी भाषा के अभिरचन को आन्तरिक विरोध के बिना ही सीख लेता है तथा भाषा पर प्रभुत्व प्राप्त करने की अवधि कम होकर एक लघ्वंश मात्र रह जाती है। यह विश्वासपूर्वक कहा जा सकता है कि सम्भवतः प्रारम्भिक फ्रांसीसी इस ढंग से कहीं नहीं पढ़ाई जाती—कम से कम सरकारी संस्थाओं में तो कहीं नहीं। बहुत से वर्षों का समय तथा करोड़ों डालर मूल्य के अपव्ययित शैक्षणिक प्रयत्न बचाए जा सकते हैं, यदि इन प्रणालियों को अपना लिया जाए तो, परन्तु ऐसे व्यक्ति, जिनकी सैद्धान्तिक भाषाविज्ञान में गति है, बहुत ही अल्पसंख्या में हैं तथा उच्चतर संस्थाताओं में हैं।

आइए (चित्र 12) में दिए गए अंग्रेजी भाषा के सूत्र का परीक्षण करें। यह गणितीय प्रतीत होता है परन्तु है नहीं। यह अभिरचन प्रतीकविद्या की अभिव्यक्ति है, एक विश्लेषणात्मक रीति है, जो भाषा-विज्ञान से उद्भूत होती है, तथा इसका सम्बन्ध भाषा-विज्ञान के साथ लगभग वैसा ही है जैसा कि उच्चतर गणित का भौतिकी के साथ। इस तरह के अभिरचना सूत्रों से कई प्रकार की प्रक्रियाएँ की जा सकती है, जैसे कि गणितीय अभिव्यक्तियों का जोड़ किया जा सकता है, गुणन किया जा सकता है, या अन्य किसी प्रकार से उन्हें प्रयोग में लाया जा सकता है। केवल अन्तर यह है कि यहाँ पर प्रक्रियाएँ जोड़ और गुणन आदि की नहीं हैं अपितु उन अर्थों की हैं जो भाषायी प्रसंग में लागू होते हैं। इन प्रक्रियाओं द्वारा कुछ निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं और जाँच-अधीन भाषा द्वारा प्रस्तुत अव्यवस्था के वास्तविक कठिन स्थलों पर बुद्धिमत्तापूर्वक आक्षेप किए जा सकते हैं। साधारणतया भाषा-विज्ञानी को कागज़ पर सूत्र लिखकर काम चलाने की आवश्यकता नहीं पड़ती, परन्तु वह अपने मन में सांकेतिक प्रक्रियाएँ करके बता देता है कि "पूर्ववर्ती अनुसन्धाता द्वारा "क" श्रेणी की धातुओं के रूपों का विवरण ठीक रूप से नहीं दिया गया है"; या" "देखिए इस भाषा में एकान्तर बलाघात होने चाहिएं यद्यपि मैं उन्हें पहले सुन नहीं पाया था", या, यह अजीब बात है परन्तु "इस भाषा में 'द' और 'ल' एक ही ध्वनि के उपरूप होने चाहिएं" आदि आदि। तत्पश्चात् वह किसी मातृभाषी पर प्रयोग करके छानबीन करता है तथा उसे पता चलता है कि उसका निष्कर्ष युक्तियुक्त है। अभिरचन-प्रतीकात्मक अभिव्यक्तियाँ गणित की तरह सुनिश्चित

हैं परन्तु परिमाणात्मक नहीं हैं। वे अन्ततः गणित की संख्या और विमा की ओर नहीं अपितु अभिरचन और संरचना की ओर संकेत करते हैं। न ही उनका सिद्धान्त या प्रतीकात्मक तर्क के साथ ऐक्य समझना चाहिए, चाहे वे किसी प्रकार सम्बन्धित भले ही हों।

सूत्र का पुनः अनुसरण करने पर इसका सरलतम भाग आठवाँ पद है, (पदों के नम्बर नीचे दिए गए हैं) जिसमें दो धन चिन्हों के बीच V है। इसका अभिप्राय यह है कि प्रत्येक अंग्रेजी शब्द में स्वर होता हैं (जो कि सभी भाषाओं के लिए सही नहीं है) और क्योंकि v दूसरे प्रतीकों द्वारा सीमित नहीं किया गया है, अतः कोई भी अंग्रेजी स्वर एकाक्षरी शब्दों में आ सकता है। (यह बहु-अक्षरी अंग्रेजी शब्दों के सभी अक्षरों के विषय में सही नहीं है)। इसके बाद हम पहले पद की ओर मुड़ते हैं जो शून्य है और जिसका अर्थ है कि स्वर से पहले किसी अन्य ध्वनि का न होना भी सम्भव है,—अर्थात् शब्द स्वर से आरम्भ हो सकता है—एक संरचना जो बहुत सी भाषाओं में असम्भव है। पदों के बीच अर्धविराम "या" के सूचक हैं। दूसरे पद में C—ऋण एक लम्बी पूँछ वाला n है। इसका अर्थ यह हुआ कि एक व्यञ्जन को छोड़कर कोई भी एकल अंग्रेजी व्यञ्जन शब्द के आरम्भ में आ सकता है। उस एक मात्र व्यञ्जन को, जो शब्द के आरम्भ में नहीं आता, भाषा-विज्ञानी लम्बी पूँछ वाले n से लिखते हैं, तथा उस ध्वनि को प्रायः हम ng से लिखते हैं जैसे hang में। यह ng ध्वनि अंग्रेजी शब्दों के अन्त में प्रायः आती है, परन्तु शब्दों के आरम्भ में कभी नहीं। बहुत सी भाषाओं जैसे होपी, एस्किमो, या समोअन में यह एक शब्द के लिए साधारण प्रारम्भिक ध्वनि है। हमारे अभिरचन इन आरम्भिक ng वाले विदेशी शब्दों के उच्चारण करने में भयंकर बाधा उपस्थित करते हैं। परन्तु ज्यों ही हमें 'ng' के उच्चारण करने की क्रियाविधि बता दी जाती है और हमें यह पता चलता है कि हमारा असामर्थ्य अभ्यसित अभिरचन के कारण है तो हम ng को जहाँ चाहे वहाँ रख सकते हैं, तथा इन शब्दों का उच्चारण बड़ी आसानी से कर सकते हैं। अतः उक्त सूत्र में जो वर्ण हैं वे सदैव उन वर्णों के तुल्य नहीं हैं जिनके द्वारा हम सामान्य वर्त्तनी में अपने शब्दों को अभिव्यक्त करते हैं; परन्तु वे असन्दिग्ध प्रतीक हैं जिन्हें भाषाविज्ञानी वर्तनी की नियमित एवम् वैज्ञानिक व्यवस्था में कुछ ध्वनियों के लिए निर्धारित करते हैं।

तीसरे पद के अनुसार दो कॉलम हैं—पहले कॉलम का कोई भी ऐसा व्यञ्जन शब्द के आरम्भ में आ सकता है जिसका अनुवर्ती 'र्' हो, या 'ग्, क्, फ्' के साथ, अथवा ऐसे 'व्' के साथ जिसका अनुवर्ती 'ल्' हो। ś चिन्ह sh ध्वनि का द्योतक है। अतः हमारी भाषा में shred होता है shled नहीं। यह सूत्र इस तथ्य को प्रस्तुत करता है कि shled अंग्रेजी की प्रकृति के विरुद्ध है और यह shred के चीनी उच्चारण का प्रतिनिधित्व करता है, या जर्मन भाषा के sled का। (sl सातवें पद द्वारा अनुज्ञात है)। ग्रीक 'थेटा' "th" का प्रतीक है, इसीलिए हमारी भाषा में thread हो सकता है thled नहीं। अतः परवर्ती शब्द यह

संकेत देता है कि वह या तो चीनी thread का उच्चारण कर रहा है, या बच्चा तुतलाकर जर्मन sled बोल रहा है। परन्तु tr तथा pr. तथा pl तीसरे पद में क्यों नहीं है? क्योंकि वे 'S' पूर्वक हो सकते हैं, अतः छटे पद में उनका आयोजन किया गया है। इसी प्रकार चौथे पद का अर्थ है कि पहले कॉलम के व्यञ्जन अनुवर्ती W सहित शब्द के आरम्भ में आ सकते हैं। Hw अंग्रेज़ी की सभी बोलियों में नहीं आते; साधारण वर्तनी में इनका क्रम उल्टा करके लिखा जाता है, जैसे wh। यदि किसी बोली में hw नहीं है तो वह wh का साधारण w की तरह उच्चारण करेगा। thw कतिपय शब्दों में आता है, जैसे thwack और thw-art और gw बड़े भोंडे ढंग से केवल नामों में आता है, जैसे Gwen, Gwynn, Kw साधारणतया 94 लिखा जाता है तथा इसके पूर्व S आ सकता है, अतः इसका स्थान छटे पद में है।

पाँचवाँ पद दिखाता है कि शब्द का आरम्भ पहले कॉलम के किसी एक व्यञ्जन तथा अनुवर्ती y से हो सकता है, परन्तु केवल उसी समय जबकि शब्द में "u" स्वर हो, अतः हमारे पास hue (hyuw), cue, few, muse जैसे शब्द हैं। कुछ बोलियों में tyu, dyu, nyu भी हैं (जैसे tune, due, new में) परन्तु मैंने यह सूत्र उत्तरी अमेरिका की विशेष बोलियों के लिए प्रस्तुत किया है, जहाँ इन शब्दों में सदा tu, du, nu हैं। छटा-पद गुच्छों को दिखाता है जो शब्द के आरम्भ में अकेले या पूर्ववर्ती S सहित आ सकते हैं; अर्थात् (क्, त्, प्) K, t, p अनुवर्ती r सहित, Kw, तथा pl भी, (देखिए train, strain, crew, screw, quash, squash, play तथा splay) सातवाँ पद जिसका अर्थ है कि दूसरे कॉलम के किसी भी व्यञ्जन से अनुवर्तित S के द्वारा शब्द का आरम्भ हो सकता है, तथा यह उन शब्दांशों को पूर्ण कर देता है जो इसके स्वर से पहले आ सकते हैं।

आठवें पद से आगे वाले पद स्वरों से परे आने वाली ध्वनियों का विवरण प्रस्तुत करते हैं। यह भाग शब्दारम्भ से कुछ अधिक पेचीदा है, तथा प्रत्येक बात की विस्तारपूर्वक व्याख्या करने में काफी समय लग सकता है। इस प्रतीक-वाद के सामान्य नियम पहली व्याख्याओं से स्पष्ट हो जाएँगे। नवाँ पद अपने 'शून्य' द्वारा स्पष्ट करता है कि शब्द स्वरान्त हो सकता है यदि स्वर a हो तो, जिसका अभिप्राय यह हुआ कि (1) उपपद का स्वर a तथा विस्मयबोधक huh? तथा (2) pa एवम् ma का स्वर तथा विस्मयबोधक ah! bah! या स्वर, शब्द के अन्त में आ सकता है यदि वह aw ध्वनि है तो जैसे paw, thaw में। कुछ बोलियों में (पूर्वी न्यू इंगलैण्ड, दक्षिणी संयुक्त राज्य, और दक्षिणी ब्रिटिश) वे शब्द स्वरान्त होते हैं जिनकी वर्तनी में–ar होता है जैसे car, star (इन बोलियों में Ka और sta); परन्तु संयुक्त राष्ट्र की बहुत सी बोलियों में ये शब्द निश्चित रूप से r में अन्त होते हैं। परन्तु दक्षिणी संयुक्त राष्ट्र को छोड़-कर पूर्वी न्यू-इंग्लैण्ड तथा दक्षिणी ब्रिटिश की बोलियों में, ये शब्द अनुवर्ती

शब्द के प्रारम्भ में आने वाले स्वर से पहले संयोजक r को प्रकट करते हैं। इस प्रकार far off शब्द को fa of, कहता है; बोस्टन निवासी तथा ब्रिटिशवासी fa rof, आरम्भिक अन्तस्थ r के साथ बोलते हैं, परन्तु संयुक्त राष्ट्र का बहुत सा भाग लोड़ित पश्च r के साथ far of कहता है। कुछ बोलियों के लिए पद नौ कुछ भिन्न होगा क्योंकि वह एक अन्य सम्भव अन्तिम स्वर दिखाता है, जैसे मध्य पश्चिमी प्रदेश के लोग बोस्टन वालों के द्वारा किए गए fur, cur, के उच्चारण (fa, Ca) में देखेंगे और इसमें सन्देह नहीं कि उन्हें यह उच्चारण बड़ा विचित्र लगेगा। यह अनोखी ध्वनि वेल्श, गैलिक, तुर्की, ऊते तथा होपी में सामान्य रूप से पाई जाती है; परन्तु मुझे विश्वास है कि बोस्टन ने यह ध्वनि इनमें से किसी भी स्रोत से नहीं ली है।

क्या एकाक्षरिक शब्द e, i, o या u में अन्त हो सकते हैं? नहीं, इंग्लिश में नहीं होते। इस प्रकार की वर्तनी वाले शब्द व्यञ्जन ध्वनि y या v. में अन्त होते हैं। इस प्रकार 'I, को जब सूत्र रूप में अभिव्यक्त किया जाता है तो यह ay है, we, wiy है, you, yuw, तथा how, haw है आदि आदि। स्पैनिश 'नो' कि अंग्रेजी 'नो' से तुलना करने पर पता चलता है कि स्पैनिश 'नो' ओकारान्त हैं अर्थात् O ध्वनि में अन्त होता है, परन्तु अंग्रेज़ी में वही शब्द w ध्वनि में अन्त होता है। जिस अभिरचन के हम अभ्यस्त हैं वह हमें बाध्य करता है कि हम अधिकतर अन्तिम स्वरों को व्यञ्जनान्त बनाएँ। अतः हम जब स्पैनिश सीखते हैं तो Como, no, कहने की अपेक्षा Kowmow, now कहते हैं, Si के स्थान पर हम अपना शब्द See (siy) बोलते हैं। फ्रैन्च में Sibeau को हम see bow बोलेंगे।

दसवें पद का अर्थ है कि इस अवसर पर r, w या y का आगम हो सकता है, केवल उस स्थान को छोड़ कर जहाँ आगम के परिणामस्वरूप w तथा y की परस्पर सन्धि होने की सम्भावना है। ग्यारहवें पद का अर्थ है कि शब्द h को छोड़कर किसी भी एकल व्यञ्जन ध्वनि में अन्त हो सकता है। यह अपवाद बहुत सी भाषाओं के असदृश है, जैसे संस्कृत, अरबी, नवाहो तथा माया आदि जिनमें बहुत से शब्द h ध्वनि में अन्त होते हैं। पाठक यदि अब तक समझ गया है तो आगे भी 12, 13, 14 का हिसाब लगा सकता है। छोटा c ch के समान है जैसे child में, J का उच्चारण ऐसे होता है जैसे Jay में। पद नं० 13, जिसमें ये वर्ण हैं, "gulch," "bulge," "lunch", "lounge," आदि शब्दों की सम्भावना को अभिव्यक्त करता है। पद नं० 14 'health,' 'width', 'eiθhth' (eyt), 'Sixth', 'xth' (eksθ) आदि शब्दों के अभिरचन की ओर संकेत करता है। यद्यपि हम 'nth power' या 'fth' power का उच्चारण कर सकते हैं पर अननुज्ञात 'Sth' power या 'hth' power बोलने में हमें कठिनाई होगी। 'Hth' power को इस प्रकार *eyco के रूप में प्रस्तुत

किया जा सकता है। (तारक चिन्ह का अर्थ है कि इस रूप का प्रयोग नहीं होता)। पद नं० 14 के अनुसार दोनों mθ एवम् mpt शब्दान्त में सम्भव है जैसे mpt humph तथा oomph (umpf) आदि शब्दों में। पद नं० 15 के तत्त्व किसी शब्द के भी अन्त में जोड़े जा सकते हैं— t तथा S रूप अघोष ध्वनियों के पश्चात् तथा d और z घोष ध्वनि के पश्चात्। अतः 'Towns' tawnz, है जिसमें wnz की सिद्धि पद नं० 10+11+15 के द्वारा प्राप्त हुई है। इस प्रकार सिद्ध हुए कई संयोग बहुत ही सामान्य रूप में उपलब्ध हैं; अन्य बहुत ही विरल हैं, परन्तु फिर भी अंग्रेजी रूपों में सम्भव हो सकते हैं। यदि चारली मैक्कार्थी (Charlie Mcgarthy) अपने लजीले ढंग से गुनगुना सकता है—"Thon oomphst" "does thou not?" या शेक्सपीयर का अभिनेता गरज सकता है—"**Thou** triumphst"तो इसमें कारण यह है कि mpfst जैसी अनोखी बड़बड़ का उत्पादन सूत्र के पद नं. 14 और 15 के योग द्वारा होता है। न तो श्री बर्जेन में, न ही श्री शेक्सपीयर में इस सूत्र को बदलने की शक्ति है।

इस सारी अभिव्यक्ति पर लागू होने वाला नियम है –'द्वित्व का निषेध'। सूत्र चाहे कुछ भी कहे परन्तु एक ही प्रकार के दो व्यञ्जन कदापि साथ नहीं आ सकते जबकि हम पद नं० 15 के अनुसार 'flip' में t जोड़कर 'flipt' (flipped) प्राप्त कर सकते हैं, परन्तु 'hit' में t जोड़कर "hitt" सिद्ध नहीं कर सकते। अभिरचनों के उन स्थलों पर जहाँ hitt की अपेक्षा की जा सकती है, इसके बदले में हमें साधारण "hit" ही मिलता है (I hit it yesterday; I flipt it yesterday)। कुछ भाषाएँ जैसे अरबी आदि में hitt, fadd आदि शब्द मिलते हैं और उनमें दोनों युग्मक व्यञ्जन स्पष्ट सुनाई पड़ते हैं। क्रीक इण्डियन-भाषा में तीन व्यञ्जन अनुज्ञात हैं जैसे—nnn।

जिस ढंग से अंग्रेजी शब्दों के रूपों को इस सूत्र में संक्षेप से दिए गए अभिरचन नियन्त्रित करते हैं, वह वास्तव में आश्चर्यजनक है। वाल्टर विन्चैल (walter winchell) एक नया एकाक्षरीय शब्द या किसी Plugging Adman द्वारा घड़ा हुआ नाश्ते के दलिए के लिए कोई नया नाम निश्चित रूप में इस साँचे से इस प्रकार निकल कर आएगा जैसे कि मैंने लीवर (खटका) खींचा हो, और उसके मस्तिष्क पर एकदम छाप पड़ गई हो। अतः भाषाविज्ञान, भौतिक विज्ञानों की तरह भविष्यवाणी करने की शक्ति प्रदान करता है। मैं किसी हद तक यह भविष्यवाणी कर सकता हूँ कि विन्चैल क्या कहेगा और क्या नहीं। वह thrub शब्द घड़ सकता है, परन्तु वह srub जैसा शब्द नहीं घड़ेगा, क्योंकि सूत्र sr का उत्पादन नहीं कर सकता। एक दूसरा सूत्र संकेत करता है कि यदि विन्चैल th से आरम्भ होने वाले किसी शब्द का आविष्कार करता है, जैसे thell तथा therg, तो th की वही ध्वनि होगी जो thing शब्द में है, वह ध्वनि नहीं होगी जो "this" या there" में है। विन्चैल परवर्ती ध्वनि से आरम्भ होने वाले शब्द का आविष्कार नहीं करेगा।

हम कठोर से कठोर व्यञ्जनों को एक के बाद एक बड़ी आसानी से बोल सकते हैं यदि वे केवल इस सूत्र के उत्पादक अभिरचनों के अनुसार हैं तो। हम आसानी से thirds या sixths बोल सकते हैं यद्यपि sixths में ksθs इन चार व्यञ्जनों का बहुत ही भद्दा अनुक्रम है, परन्तु इससे सरल sisths का अनुक्रम अभिरचना के प्रतिकूल है, अतः इसका उच्चारण कठिन है। "Glimpst" (glimpsed) में gl पद नं० 3 के कारण है, i नं० 8 के कारण, mpst नं० 12 तथा 15 के कारण। लेकिन dlinpfk का बहिष्करण कई कारणों से हो जाता है, पद नं० 3 dl की अनुज्ञा नहीं देता और किन्हीं भी पदों के सम्भव योग के द्वारा npfk की सिद्धि नहीं होती; फिर भी भाषाविज्ञानी dlinpfk इतनी आसानी से बोल सकता है जितना कि वह "glimpsed" बोल सकता है। सूत्र अन्त्य mb की अनुज्ञा नहीं देता, अतः हम "lamb" का उच्चारण इसकी वर्तनी के अनुसार न करके lam करते हैं। "Land" इसके बिल्कुल समान है परन्तु सूत्र के अनुज्ञात होने के कारण वर्तनी के अनुसार तुरन्त हमारी जीभ से रिपट पड़ता है। यह समझना कठिन नहीं है कि अब भी कुछ गम्भीर पाठ्य पुस्तकों में पाई जाने वाली यह व्याख्या—कि भाषा में सुश्रवता के लिए यह होता है, (भाषा यह करती है) वैसे ही हैं जैसे कि यह प्रसिद्ध कथन कि "प्रकृति शून्य से घृणा करती है"।

इस सूत्र की सुनिश्चितता अन्य सैकड़ों सूत्रों की भांति यह बताती है कि भाषायी सूत्रीकरण गणित के नहीं हैं तथापि ये सुनिश्चित हैं। यह बात हमें समझ लेनी चाहिए कि इस सूत्र की जब अंग्रेजी के अर्थ से सम्बन्ध रखने वाले व्याकरणिक सूत्रों से तुलना की जाए तो ऐसा साधारण प्रतीत होगा जैसे calculus के एक पृष्ठ के मुकाबले में एक साधारण सा जोड़ का प्रश्न। सामान्यतः जटिल अभिरचनाओं के विवेचन के लिए सरल सूत्रों तथा सुनिश्चित वाक्यों में बद्ध उत्तरोत्तर पैराग्राफों द्वारा करना अधिक सरल है, अपेक्षाकृत इसके कि एक ही जटिल सूत्र में सभी को बाँधने का प्रयत्न किया जाए। पैराग्राफों की व्यवस्था ऐसी होनी चाहिए कि प्रत्येक उत्तरवर्ती पैरा, अपने पूर्ववर्तियों की पूर्वकल्पना करता हो।

भाषाविज्ञान भी एक प्रयोगात्मक विज्ञान है। इसकी सामग्री नियन्त्रित परिस्थितियों में किए गए निरीक्षणों के परिणामस्वरूप उपलब्ध होती हैं; वे परिस्थितियाँ ऐसी हैं जो व्यवस्थित रूप से बदल जाने पर सुनिश्चित तथा भिन्न प्रतिक्रियाएँ उत्पन्न करती हैं। उन प्रयोगों का निर्देशन भौतिकी और रसायनशास्त्र की तरह ज्ञान के सैद्धान्तिक पक्ष द्वारा किया जाता है। उन प्रयोगों को मशीनी उपकरणों की भी आवश्यकता नहीं होती। उपकरणों के स्थान पर भाषाविज्ञान अपने तकनीक बनाता है और उनका प्रयोग करता है। यह आवश्यक नहीं कि प्रायोगिक का अर्थ 'मात्रिक' समझा जाए। मापन, तोलन, और संकेतक वाचन आदि युक्तियों की भाषाविज्ञान में आवश्यकता नहीं होती, क्योंकि मात्रा और संख्या अभिरचनाओं के क्षेत्र में भाग नहीं लेती, जहाँ कि कोई परिवर्तनशीलताएँ नहीं हैं; अपितु बदले में एक समाकृति से दूसरी समाकृति में आकस्मिक प्रत्यावर्तन होते हैं।

गणितीय विज्ञान में सही मापन अपेक्षणीय है परन्तु भाषाविज्ञान को 'सुनिश्चित' अभिरचनों की आवश्यकता है—सम्बन्धों की सुनिश्चितता की चाहे विमाएँ कुछ भी हों। मात्रा, विमा, आकार आदि यहाँ केवल रूपकमात्र हैं क्योंकि ये दिक्-रहित सम्बन्धात्मक क्षेत्र सही रूप में उनके नहीं हैं। मैं शायद इस उपमा का प्रयोग करना चाहूँ। रेखाओं तथा कोणों के सुनिश्चित मापन की आवश्यकता सही वर्गाकार या दूसरे नियमित बहुभुज बनाने के लिए पड़ सकती है; परन्तु मापन चाहे कितने भी ठीक क्यों न हों एक वृत्त खींचने में कुछ सहायता नहीं कर सकते। यद्यपि दोषरहित वृत्त बनाने की योग्यता प्राप्त करने के लिए केवल "कम्पास नियम" परिधि नियम का पता लगा लेना मात्र ही आवश्यक है। इसी प्रकार भाषाविज्ञान ने कुछ प्रविधियाँ विकसित की हैं जो कम्पासों की ही भाँति इसे बिना किसी सच्चे मापन के ही निश्चित रूप से उन्हीं अभि-रचनाओं का विशेष विवरण देने का सामर्थ्य प्रदान करती है जिनसे इसका (भाषाविज्ञान का) सम्बन्ध है। या मैं प्रस्तुत विषय की तुलना अणु की उन आन्तरिक परिस्थितियों से करना चाहूँगा जहाँ पर तत्त्व समाकृति से समाकृति में प्रत्यावर्तित होते हुए प्रतीत होते हैं, न कि अनुमापनीय स्थितियों के रूप में चेष्टा करते हुए। एकान्तर के रूप में प्रमात्रा तत्त्वों का विवेचन, विश्लेषण की एक ऐसी विधि से किया जाना चाहिए जो प्रतिबन्धों के एक वर्ग के अन्तर्गत अभिरचना के एक बिन्दु को स्थितियों के दूसरे वर्ग के अन्तर्गत किसी एक बिन्दु में प्रतिस्थापित करदे—एक ऐसी विधि जो भाषायी तथ्यों के विश्लेषणार्थ की जाने वाली विधि के समान है।

भौतिकी और रसायन विज्ञान का सम्बन्ध निर्जीव पदार्थों से होने के कारण उन्हें अपने प्रयोगों के लिए मुख्य रूप से निर्जीव संयन्त्रों तथा पदार्थों की आव-श्यकता पड़ती है। आजकल ये प्रयोग क्योंकि बहुत बड़ी मात्रा में किए जाते हैं अतः उन्हें बहुत उच्च कोटि के भौतिक उपकरणों की आवश्यकता पग पग पर पड़ती है, तथा उन भौतिक यन्त्रों पर बहुत बड़ी लागत लगती है। उनके प्रयोग वैज्ञानिकों की संख्या से निरपेक्ष तथा सापेक्ष दोनों ही रूपों में बहुत महँगे पड़ते हैं। प्रयोगात्मक जीवविज्ञान भी बहुत से निर्जीव उपकरणों का प्रयोग करता है परन्तु उसके आधारभूत उपकरण हैं प्रायोगिक पशु तथा उनकी वृद्धि के लिए सुसाध्यताएँ। जिस मात्रा में इनकी आवश्यकता पड़ती है ये भी काफी महँगे पड़ते हैं। जब तक ये अथवा भौतिक विज्ञानों के क्षेत्र मनुष्य के ज्ञान तथा कल्याण में वृद्धि का कारण बनते रहते हैं तब तक कोई भी इन वैज्ञानिक प्रयोगों पर किए गए खर्चे को बुरा नहीं समझता।

भाषाविज्ञान के उपकरण इनके मुकाबले में बहुत कम लागत वाले हैं, परन्तु इन पर भी पैसा खर्च तो होता ही है। प्रायोगिक भाषाविज्ञानी जीवविज्ञानी की भांति पशुओं का प्रयोग करता है और उसे उनकी आवश्यकता पड़ती है। अन्तर यह है कि पशु मानव जाति के होते हैं। वे उसके सूचक होते हैं तथा

उन्हें उसके साथ काम करने के लिए कुछ रकम देना आवश्यक है। कभी कभी उसे इण्डियनों के सुरक्षित स्थानों में या अफ्रीका के गाँवों में जहाँ उसके सूचक रहते हैं जाना पड़ता है। किसी अन्य अवसर पर सूचकों को अपने पास लाना अधिक सुविधाजनक रहता है। वे ही प्रायोगिक अनुसन्धान के क्षेत्र प्रस्तुत करते हैं। वे उपकरण हैं शिक्षक नहीं। इस प्रकार इण्डियनों, अफ्रीकनों, तथा अन्य आदिवासियों की बोलियों का अध्ययन करना इतना ही महत्त्वपूर्ण है जितना कि ब्रूकलिन, बोस्टन, रिचमाण्ड, या लन्दन की बोलियों का अध्ययन करना।

यद्यपि सूचक ही प्राथमिक उपकरण हैं फिर भी भाषाविज्ञानी मशीनी साधनों की सहायता से अपने कार्य को सुधार सकता है और उसकी गति तेज कर सकता है, ठीक ऐसे ही जैसे जीव विज्ञानी अपने पशुओं तथा पौधों का अनुवीक्षण यन्त्रों, एक्सरे मशीनों तथा अन्य बहुमूल्य यन्त्रों की सहायता से अध्ययन करता है। फोनोग्राफी-सम्बन्धी पुनरुत्पादन के तरीके का अच्छा प्रयोग भाषाविज्ञानी की सहायता करता है। अन्य व्यापारी मशीनों की सहायता से भी बहुत कुछ किया जा सकता है।

यद्यपि भाषाविज्ञान बहुत पुराना विज्ञान है परन्तु इसका आधुनिक प्रायोगिक पक्ष, जो कि अलिखित भाषा के विश्लेषण पर बल देता है, नवीनतम विज्ञानों में से एक कहा जा सकता है। जहाँ तक हमारा ज्ञान है भाषाविज्ञान की नींव या इसे प्रस्तुत आधार पर ईसा से भी कई शती पूर्व किसी पाणिनी ने भारत में स्थापित किया था। इसके प्राचीनतम रूप को अर्वाचीनतम रूप का पूर्वाभास था। पाणिनी बहुत अधिक बीजगणितीय था अर्थात् अपने निरुपणों में अभिरचन-प्रतीकात्मक था। उसने संस्कृत की अविकल्पी अभिरचनाओं के विवेचन के लिए बहुत ही आधुनिक ढंग से सूत्रों का प्रयोग किया है। ये ग्रीक लोग थे जिन्होंने इस विज्ञान का पतन किया। उन्होंने यह दिखा दिया कि वे हिन्दू वैज्ञानिक चिन्तकों से कितनी असीम मात्रा में अवर थे, और उनकी अवैज्ञानिकता का प्रभाव दो हजारवर्ष पूर्व तक चलता रहा। पाश्चात्य जगत को 19वीं शताब्दी के प्रारम्भिक चरण में पाणिनी का पता लग जाने से आधुनिक वैज्ञानिक भाषा-विज्ञान का श्रीगणेश हुआ।

जहाँ तक इसके आवश्यक उपकरणों, सूचकों की उपलब्धि, तथा न्यूनतम साधन पुस्तकादि का प्रश्न है भाषाविज्ञान आज भी अपने अबोध शैशव में ही है। मशीनी साधनों के लिए धन की प्राप्ति, जिसका मैंने ऊपर उल्लेख किया है; इस समय केवल एक सुखद स्वप्न है। शायद यह अव्यवस्था विज्ञापन की कमी के कारण है—विज्ञापन जो कि अन्य विज्ञानों को सुलभ है अतः वे काफी धन प्राप्त भी कर लेते हैं। अब हम सभी जानते हैं कि भौतिकी, रसायनविज्ञान और जीव-विज्ञान द्वारा जिन शक्तियों का अध्ययन होता है वे सशक्त एवम् महत्त्वपूर्ण हैं। परन्तु अभी तक साधारणतया लोग यह नहीं जानते कि भाषाविज्ञान द्वारा जिन शक्तियों का अध्ययन किया जाता है वे कहीं अधिक सशक्त एवम् महत्त्व-

पूर्ण हैं, कि इसके सिद्धान्त मानवजाति की सभी प्रकार की सहमतियों तथा सूझबूझों को नियन्त्रित करते हैं, और यह कि आज या कल इसे (भाषाविज्ञान) निर्णायक के रूप में बैठना पड़ेगा; जबकि अन्य विज्ञान अपने अपने परिणामों को इसके न्यायालय में इसलिए लाएँगे कि वे जान पाएँ कि उनका अर्थ क्या है। जब यह शुभ समय आएगा तो भाषाविज्ञान की बहुत बड़ी और सुसज्जित प्रयोग-शालाएँ होंगी जैसाकि अन्य असंदिग्ध विज्ञानों के लिए हैं।

भाषाएँ और तर्क*

अंग्रेजी के "I pull the branch aside" तथा "I have an extra toe on my foot" इन वाक्यों में बहुत कम साम्य है। कर्त्ता, सर्वनाम तथा वर्तमानकाल के प्रतीकों को छोड़कर, जो कि अंग्रेजी वाक्यविज्ञान की आवश्यकताओं के अनुसार सामान्य तत्त्व हैं, हम कह सकते हैं कि इनमें कोई समानता नहीं है। सामान्य अथवा वैज्ञानिक कथन के अनुसार भी ये वाक्य असमान इसलिए हैं कि ये उन चीज़ों की बात कर रहे हैं जो मौलिक रूप से भिन्न हैं। इसी ढंग से श्री 'जनताजनार्दन'—प्राकृतिक तार्किक अपना तर्क उपस्थित करना चाहेगा। पुराने ढंग का रूपात्मक तर्कशास्त्र शायद उससे सहमत हो जाए।

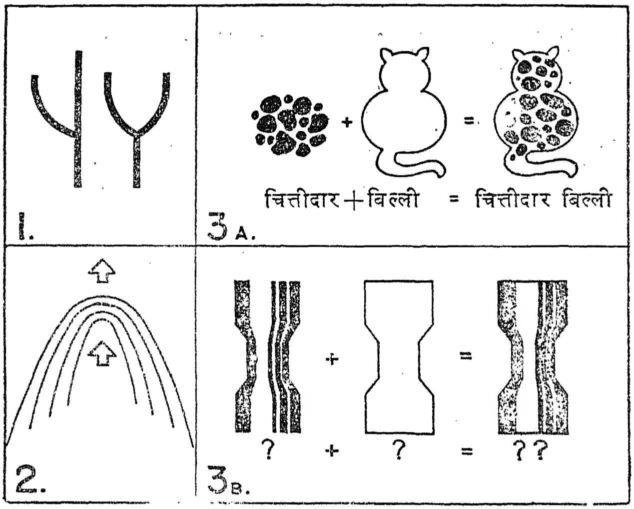
इसके अतिरिक्त यदि हम निष्पक्ष अंग्रेजीभाषी वैज्ञानिक प्रेक्षक से प्रार्थना करें कि इन दो तथ्यों का निरीक्षण करे और देखे कि क्या उनमें कोई ऐसी समानता है जिसे हम देख नहीं पाए हैं, तो उससे भी यही आशा की जा सकती है कि वह तार्किक अथवा श्री जनताजनार्दन के निर्णय का ही समर्थन करे। वह प्रेक्षक जिससे हमने परीक्षण करने की प्रार्थना की थी शायद वह पुरानी पद्धति के तर्कशास्त्री से सहमत न हो तथा उसे गलती करते हुए देखकर उसे निराशा न हो। तथापि वह बाध्य होकर दुःखपूर्वक अपनी असफलता स्वीकार करेगा। वह कहेगा, "मेरी इच्छा थी कि आपको कृतार्थ कर पाऊँ, परन्तु कितना भी प्रयत्न करूँ पर मैं इन दो तथ्यों में कोई समानता नहीं देख पा रहा हूँ।"

इस समय तक हमारी हठीली संशय रेखा जागृत हो उठती है, एवम् हमें आश्चर्य होने लगता है कि पता नहीं मंगलग्रह से आने वाला व्यक्ति भी कोई समानता देख पाए अथवा नहीं। परन्तु इस अवसर पर एक भाषा-विज्ञानी कह उठता है कि मंगलग्रह जितनी दूर जाने की कोई आवश्यकता नहीं है; हमने अभी तक इस पृथ्वी पर भी पूरी खोज नहीं की है—जिससे कि हम देख पाएँ कि संसार की बहुत सी भाषाएँ क्या इन दो तथ्यों को इतनी विषमता से वर्गीकृत करती हैं जितना कि हमारी भाषा करती है। हमें पता चलता है कि शॉनी भाषा में ये दो कथन क्रमशः इस प्रकार हैं ni–l'θawa–'ko–n–a तथा ni–l 'θawa' ko θite (θ यहाँ पर 'thin' वाली th ध्वनि है, और वर्ण लोप का चिन्ह (,) "श्वासद्वारीय स्पर्श" का द्योतन करता है) ये वाक्य बहुत

---

* Tech. Rev., 43: 250–252, 266, 268, 272 (April 1941) से पुनर्मुद्रित।

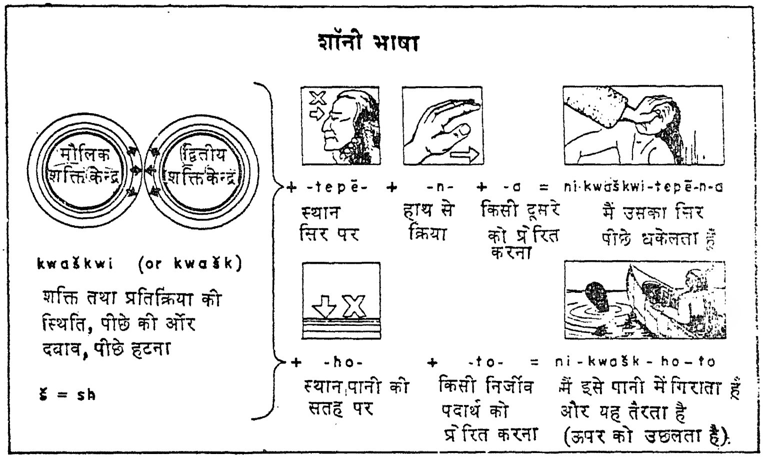
ही समान दिखाई देते हैं; वास्तव में ये दोनों शब्दान्त में ही थोड़े से भिन्न हैं। इसके अतिरिक्त शॉनी भाषा में किसी रचना का आरम्भिक भाग प्रायः महत्त्वपूर्ण और अधिक ज़ोरदार होता है। दोनों वाक्यों का आरम्भ ni–(मैं) से होता है जो कि एक उपसर्ग मात्र है। तत्पश्चात् वास्तविक महत्त्वपूर्ण संकेत शब्द l'θawa है, यह एक सामान्य शॉनी शब्द है जो द्विशाखित रूपरेखा का द्योतन करता है



15. ऊपर कुछ भाषायी धारणाओं का सुझाव दिया गया है। जैसा कि लेख में स्पष्ट किया गया है, इन धारणाओं को आसानी से परिभाषित नहीं किया जा सकता।

जैसा कि चित्र नं० 15 के नं० I में दिखाया गया है। दूसरा तत्त्व –'Ko है जिसके विषय में हम निश्चित रूप से नहीं कह सकते परन्तु यह आकार में –a'kw या –a'ko प्रत्यय के परिवर्त के अनुरूप है जिनका अर्थ है वृक्ष, झाड़ी, वृक्ष का भाग, शाखा या ऐसी ही सामान्य आकृतिवाली अन्य कोई वस्तु। पहले वाक्य में –n–का अर्थ है 'हाथ द्वारा क्रिया' और, या मौलिक स्थिति (द्विशाखित रेखा-चित्र) को हाथ द्वारा उत्पन्न करना, या इसे बढ़ाना, या दोनों ही (अर्थ) हो सकते हैं। अन्त्य–a का अर्थ है कर्त्ता (मैं) यह क्रिया किसी उपयुक्त विषय पर करता है। अतः पहले वाक्य का अर्थ हुआ—मैं खींचकर (वृक्ष की शाखा जैसी किसी चीज़ को) चौड़ा करता हूँ या जहाँ से यह द्विशाखित होती है वहाँ से अलग करता हूँ। दूसरे वाक्य में –θite का अर्थ है—पैर की अंगुली से सम्बन्धित–और इससे आगे प्रत्ययों के अभाव का अर्थ है कि कर्त्ता इस स्थिति को अपने ऊपर प्रकट करता है। इसलिए वाक्य का अर्थ केवल यह हो सकता है—मेरे पैर में एक फालतू अंगुली है जो एक शाखा की तरह सामान्य अंगुली से (बाहर की ओर) शाखित है।

शॉनी भाषा के तार्किक तथा प्रेक्षक इन दो तथ्यों को मौलिक रूप से समान मानेंगे। हम यदि अपने प्रेक्षक को यह सब बता दें तो वह अपने समस्त उपकरणों को पुनः इन दो तथ्यों की ओर केन्द्रित करेगा तथा उसे हर्ष होगा कि वह तुरन्त ही एक सुस्पष्ट साम्य देखने लगा है। चित्र नं० 16 इसी के समान स्थिति का चित्रण करता है। 'मैं उसके सिर को पीछे की ओर धकेलता हूँ', "मैं इसे पानी में फेंकता हूँ और यह ऊपर तैरता है," यद्यपि अंग्रेजी में ये वाक्य बहुत ही असमान हैं, परन्तु शॉनी में समान हैं। भाषायी सापेक्षता का दृष्टिकोण श्री जनताजनार्दन की अभ्युक्ति को बदल देता है : यह कहने की अपेक्षा कि "वाक्य असदृश हैं क्योंकि वे असदृश तथ्यों के विषय में बताते हैं" वह तर्क प्रस्तुत करता है "ये तथ्य उन भाषाभाषियों के लिए असमान हैं जिनकी भाषा-पृष्ठभूमि उनका असमान सूत्रीकरण प्रस्तुत करता है।"



16. **अंग्रेजी के वाक्य** 'I push his head back' **तथा** 'I drop it in water and it floods' **असदृश हैं। परन्तु शॉनी में इनके संवादी कथन निकट रूप से समान हैं, और इस तथ्य पर बल देते हैं कि प्रकृति का विश्लेषण एवम् घटनाओं का वर्गीकरण, यदि वे समान या उसी वर्ग (तर्क) के हों तो, व्याकरण द्वारा नियन्त्रित होते हैं।**

इसके विपरीत अंग्रेजी में ये वाक्य—"The boat is glounded on the beach' (नौका समुद्रतट पर पड़ी है) तथा "The boat is manned by picked men," (नौका चुने हुए लोगों द्वारा चलाई जाती है) हमें समान प्रतीत होते हैं, क्योंकि प्रत्येक वाक्य नौका के विषय में हैं; प्रत्येक वाक्य नौका का सम्बन्ध अन्य विषयों से बताता है—या यह हमारा कथन है। भाषाविज्ञानी व्याकरणिक अभिरचना में समानता इस प्रकार दिखाएगा—"The boat is xed

preposition Y" । एक तार्किक भाषाविज्ञानी के विश्लेषण को इस प्रकार बदल सकता है "A, is in the state x in relation to Y" A, Y, के सम्बन्ध में x की अवस्था में है और फिर शायद fA=x Ry में । इस प्रकार के प्रतीकात्मक ढंग युक्तियुक्त अनुक्रम का उपयोगी तकनीक प्रदान कर सकते हैं, हमारे चिन्तन को प्रेरित कर सकते हैं, तथा बहुमूल्य अन्तर्दृष्टि दे सकते हैं। तथापि हमें यह जान लेना चाहिए कि मौलिक वाक्यों में समानताएँ या विषमताएँ, जिन्हें पूर्वोक्त सूत्र के अन्तर्गत कल्पित किया गया है, मातृभाषा के वरण पर निर्भर करती हैं तथा भाषा के वे गुण अन्ततोगत्वा हमारे ही द्वारा पोषित गणित अथवा तर्क के ताने बाने में रचनागत वैशिष्ट्य के रूप में झलकते दिखाई देते हैं।

वान्कुवेर द्वीप की नूत्का भाषा में नौका सम्बन्धी पहला कथन tlih-is-ma है, दूसरा Lash-tskwiqista-ma है, अत: पहलाI-II-ma,है, दूसरा III-IV-V-ma; और ये दोनों काफी असदृश हैं क्योंकि अन्त्य-म्-केवल अन्य पुरुष निश्चयार्थक का चिन्ह है। किसी भी वाक्य में अर्थ की ऐसी कोई इकाई नहीं जो हमारे (boat) नौका या (Canoe) कश्ती शब्द के ही निकट हो । पहले वाक्य में भाग I का अर्थ है-संकेत के अनुरूप चलना या इस प्रकार चलना जैसे कि रेखा-चित्र 15 नं० 2 में दिखाया गया है-अत: नौका में यात्रा या नौका की तरह यात्रा करना, या इस गति की एक स्थिति की तरह कोई घटना। यह एक संज्ञा नहीं है जिसे हम 'एक वस्तु' कह सकें, परन्तु भौतिकी में (वेक्टर) सदिश के अधिक समान है। भाग II का अर्थ है—'समुद्र तट पर', अत: I-II-ma का अर्थ हुआ-यह समुद्र तट पर है-संकेत के अनुरूप-नौका की गति की एक घटना (स्थिति) की तरह, और सामान्यत: यह एक नौका की ओर संकेत करता है जो स्थल पर आ गई है। दूसरे वाक्य में भाग III का अर्थ है-चुनना, उठाना और भाग IV का अर्थ है—अवशिष्ट, परिणाम, III-IV का अर्थ हुआ 'चुने हुए', भाग V का अर्थ है "एक नौका में चालकों के रूप में दल"। सारी अभिव्यक्ति III-IV-V-ma का अर्थ हुआ या तो 'वे नौका में हैं चुने हुए चालकों के दल के रूप में," या नौका में चुने हुए चालकों का दल है । इसका अभिप्राय: यह हुआ कि चुने हुओं से सम्बन्धित समस्त घटना तथा नौका चालकों का दल एक प्रक्रिया में हैं।

रासायनिक इञ्जीनियरी में शिक्षित होने के कारण, अभ्यासवश, मुझे रासायनिक उपमाएँ अच्छी लगती हैं। शायद पाठक मेरा आशय समझ लें जब मैं कहता हूँ : शॉनी और नूत्का के वाक्यों में उनके घटक जिस ढंग से एक साथ रखे जाते हैं। वह एक (Chemical compound) रासायनिक मिश्रण की तरह है जबकि अंग्रेजी के वाक्यावयवों का संयोजन (Mechanical Mixture) यान्त्रिक मिश्रण से अधिक मिलता है । यह मिश्रण पर्वतारोहियों के potlicker की तरह है, इसका एकत्रीकरण लगभग किन्हीं चीजों से किया जा सकता है, परन्तु इसके बाह्य आकार पर किसी प्रकार का विशेष अन्तर नहीं पड़ता । दूसरी ओर

रासायनिक मिश्रण केवल कुछ ही परस्पर अनुकूल द्रव्यों को एक साथ रख कर किया जा सकता है, और उसका परिणाम केवल शोरबा ही नहीं होगा अपितु क्रिस्टलों की एक फसल भी हो सकती हैं, या धुएं का एक बादल भी बन सकता है। इसी प्रकार शॉनी या नूत्का के विशिष्ट संयोग अपनी शब्दावली के कुछ पदों का प्रयोग करते हुए दिखाई देते हैं, जिनका चयन सम्भवत: उनके निकटस्थ एवम् तात्कालिक प्रसंगों के लाभार्थ इतना नहीं किया गया जितना कि पदों की बहुत प्रकार से, परस्पर अभिव्यञ्जनापूर्ण संयोजन करने की क्षमता को को ध्यान में रख कर किया गया है ताकि वे नवीन तथा उपयोगी चित्र उपस्थित कर सकें। शब्दावली का यह सिद्धान्त तथा घटनाओं के विश्लेषण करने का यह ढंग उन भाषाओं में नहीं मिलता जिनसे हम सुपरिचित हैं।

यह पूर्ण प्रकृति का विश्लेषण है– मौलिक शब्दावली तक--जो कि इस प्रकार के अभिव्यञ्जक संयोजनों की क्षमता रखता है तथा जो शॉनी और नूत्का जैसी बहु-संश्लेषणात्मक भाषाओं का विशिष्टतम गुण है। उनका विशिष्ट गुण, जैसा कि कुछ भाषाविज्ञानियों का विचार है, संयोगों की अभेद्यता या अवियोज्यता का विषय नहीं है। शॉनी पद l'θawa सम्भवत: अकेला भी बोला जा सकता है परन्तु तब इसका अर्थ होगा "यह (या कोई वस्तु) द्विभुजी है"—एक अभिव्यक्ति जो इसके संयोजनों से उत्पन्न होने वाले नए अर्थों की ओर बहुत ही कम संकेत देती है —कम से कम हमारे मस्तिष्क या हमारी तर्कणा-विधि के लिए। शॉनी या नूत्का केवल रासायनिक प्रकार के संश्लेषणों का ही प्रयोग नहीं करती है; वे बाह्य प्रकार की वाक्य रचना का बहुत अधिक प्रयोग करती हैं, जिसमें यह सत्य है कि कोई मौलिक रचनात्मक प्राथमिकता नहीं है। हमारी भारोपीय भाषाओं में भी रासायनिक प्रकार के संयोजन का पूरी तरह अभाव नहीं है। परन्तु वे इस विधि से वाक्य कभी नहीं बनाती, तथा इसकी संभावनाओं का कोई संकेत नहीं देती अपितु किसी अन्य विधि को रचनात्मक प्राथमिकता देती है। तो यह बिल्कुल स्वाभाविक था कि उस समय अरस्तू ने हमारे परम्परागत तर्कविज्ञान का आधार पूरी तरह से दूसरे ही ढंग का बनाया।

मैं यहाँ पर रसायनशास्त्र से नहीं अपितु चित्रात्मक कला से एक दूसरा सादृश्य प्रस्तुत करना चाहूँगा। हम एक बहुत अच्छे शान्त सजीव चित्र की ओर देखते हैं और हमें ऐसा लगता है मानों हम एक चमकदार चीनी मिट्टी के प्याले को तथा एक कोमल रोम वाले शफतालू को देख रहे हैं। परन्तु यदि सारे चित्र का विश्लेषण किया जाए और एक कार्ड में बनाए गए सूराख में से उसे देखा जाए तो हमें कुछ भद्दे से रंगीन धब्बे दिखाई देंगे और वे धब्बे प्याला और फल का वह रूप नहीं दिखा सकते जो कि सम्पूर्ण चित्र को देखने पर प्रकट होता है। चित्र के द्वारा प्रस्तुत किया गया संश्लेषण सम्भवत: रासायनिक प्रकार की वाक्य रचना है तथा यह तथ्य उन मनोवैज्ञानिक आधारों की ओर संकेत करता है जो कला और भाषा दोनों में प्रवेश कर जाते हैं। भाषा और कला में यान्त्रिक ढंग चित्र नं० 15 के 3 क द्वारा

दिखाया जा सकता है। पहला तत्त्व, चित्तियों का क्षेत्र, "चित्तीदार" विशेषण के समान है, दूसरा 'बिल्ली' इस संज्ञा शब्द के सदृश है। इन दोनों को साथ रखने से हमारा चित्तीदार बिल्ली (spotted cat) शब्द बनता है। इस तकनीक का चित्र-15 न० 3 ख के तकनीक से विरोध देखिए । यहाँ पर "बिल्ली" का सादृश्य दिखाने वाला चित्र अस्पष्ट अर्थ वाला है—"फीते की तरह का", हम कह सकते हैं कि पहला तत्त्व और भी अधिक अस्पष्ट है। परन्तु इन दोनों का योग एक सिलेण्डर की तरह के पदार्थ का चित्र प्रस्तुत करता है, जैसे कि धुरे की ढलाई का साँचा।

इन दोनों तकनीकों में सामान्य बात यह है कि दोनों ही अभिरचना का व्यवस्थित संश्लेषणात्मक प्रयोग करते हैं और यही बात सभी भाषा तकनीकों में सामान्य रूप से मिलती है। मैंने चित्र 15, नं० 3 ख, के तत्त्वों के नीचे प्रश्नसूचक चिन्ह इसलिए लगा दिए हैं कि अंग्रेजी में इसके समान अभिव्यक्ति ढूँढ़ने में कठिनाई का संकेत मिल सके, तथा इस तथ्य का भी पता चल सके कि इस तरीके के लिए परम्परागत तर्कशास्त्र में सम्भवत: कोई स्थान नहीं । तथापि नई भाषाओं का परीक्षण और आधुनिक तार्किकों द्वारा स्वयं प्रस्तुत किए गए नए प्रकार के तर्क की सम्भावना संकेत करती है कि यह विषय आधुनिक विज्ञान के लिए महत्त्वपूर्ण हो सकता है। नए प्रकार की तर्कणा हमें अन्तत: यह समझने में सहायता कर सकती है कि इलैक्ट्रोन, प्रकाश की तीव्र गति, और भौतिकी के विषयवस्तु के अन्य भाग क्यों तर्क विरुद्ध व्यवहार करते हैं, या वे प्रपंच जो गत वर्ष के दृढ़ सामान्य बोध की अवहेलना कर रहे थे आज किस प्रकार सत्य हो सकते हैं। आधुनिक चिन्तकों ने बहुत पहले संकेत किया था कि विज्ञान की महान सीमान्तवर्त्ती वर्तमान समस्याओं के सामने तथाकथित यान्त्रिक चिन्तन का गतिरोध उपस्थित हो चुका है। इस प्रकार की चिन्तन पद्धति से छुटकारा पाना अत्यन्त कठिन है, जबकि हमारे पास कोई दूसरा भाषायी अनुभव नहीं है, और जबकि हमारे सबसे अधिक प्रगतिशील तर्कविज्ञानी एवम् गणितज्ञ भी कोई दूसरा अनुभव प्रस्तुत नहीं कर सकते और स्पष्ट है कि वे भाषायी अनुभव के बिना कर भी नहीं सकते। क्योंकि चिन्तन का यान्त्रिक ढंग सम्भवत: जनताजनार्दन द्वारा नित्य पाश्चात्य भारोपीय भाषाओं के प्रयोग के कारण एक स्वाभाविक वाक्य रचना प्रकार बन गया है, जिसका दृढ़ीकरण और जड़ीकरण अरस्तू और उसके मध्यकालीन तथा आधुनिक अनुयायियों द्वारा कर दिया गया है।

जैसा कि मैंने अप्रैल 1940 रिव्यू के लिए लिखे गए "विज्ञान तथा भाषा विज्ञान" नामक लेख में कहा था कि भाषण (शक्ति) की सहजता, तथा जिस उपचेतन ढंग से हमने बचपन में ही उसे सीख लिया था, उसी के कारण हम यह सोचने लगते हैं कि बातें करने और सोचने की क्रिया पूर्णतया सीधी और पारदर्शी है। अत: हम स्वाभाविक रूप से सोचने लगते हैं कि उनमें स्वयं-प्रमाण नियम निहित हैं और वे सभी मनुष्यों के लिए समान हैं। हम सभी उत्तरों का ज्ञान रखते हैं। परन्तु जब सूक्ष्म निरीक्षण किया जाता है तो सभी उत्तर धूमिल पड़ते चले जाते हैं। हम भाषा का प्रयोग विषय वस्तु सम्बन्धी सहमति पर पहुँचने के लिए करते हैं। मैं कहता हूँ

"कृपया द्वार बन्द कर दीजिए", मैं और मेरा श्रोता इस बात पर सहमत हैं कि "द्वार" हमारे वातावरण की किसी वस्तु विशेष का संकेत देता है और यह कि मैं कुछ परिणाम उत्पन्न कराना चाहता हूँ । हमारे ये स्पष्टीकरण कि हम किस प्रकार एक दूसरे को समझ पाएँ यद्यपि प्रतिदिन के सामाजिक स्तर पर बिल्कुल सन्तोषजनक हैं परन्तु वे उसी विषय सम्बन्धी और अधिक सहमतियाँ हैं, (द्वार आदि) जिन्हें सामाजिक तथा व्यक्तिगत आवश्यकताओं के बारे में उत्तरोत्तर अधिक कथनों द्वारा बढ़ा दिया गया है—ऐसी आवश्यकताएँ जो हमें परस्पर वाग्विनिमय करने के लिए बाध्य करती हैं। यहाँ पर विचार के कोई नियम नहीं हैं। तथापि रचनात्मक नियमितताएँ हमें यह समझने योग्य बना देती हैं कि नियम कहीं न कहीं पृष्ठभूमि में अवश्य हैं। स्पष्ट है कि ऐसे वाक्यों की व्याख्या "And so I ups and says to him, says I; see here, why don't you !" उस प्रक्रिया की समझ से बाहर है जिसके द्वारा मैं और वह परस्पर बातचीत कर रहे थे । इसी प्रकार सामाजिक एवम् भावात्मक आवश्यकताएँ जो मानवजाति को परस्पर वाग्विनिमय करने के लिए विवश करती हैं, उनका सामाजिक एवम् मनोवैज्ञानिक वर्णन भी उसी विधि का शिष्ट रूपान्तर है जो मनोरंजक तो अवश्य है। परन्तु उस प्रश्न को टाल जाता है। इसी प्रकार के विषय में प्रश्न की टालमटोल, वाग्वाक्य से शरीर-विज्ञान, और "प्रेरणा" के माध्यम द्वारा सामाजिक परिस्थिति तक छलाँग लगा कर की जाती है ।

पारस्परिक समझ की 'क्यों' बहुत समय तक रहस्यमय रह सकती है; परन्तु 'कैसे' या समझने की तर्कविधि का—इसके नियमों की पृष्ठभूमि या नियमितता का पता लगाया जा सकता है। यह हमारी मातृभाषा की व्याकरणिक पृष्ठभूमि है जिसमें न केवल हमारे तर्कवाक्य बनाने की विधि ही शामिल है अपितु वह तरीका भी है जिसके द्वारा हम प्रकृति का विभाजन करते हैं और अनुभूति के प्रवाह को वस्तुओं और इकाइयों में तोड़ते हैं ताकि उनके विषय में तर्क-वाक्य बनाए जा सकें। यह सत्य विज्ञान के लिए महत्त्वपूर्ण है क्योंकि इसका अर्थ यह है कि विज्ञान का एक विवेक-युक्त एवम् तर्कसंगत आधार हो सकता है चाहे यह एक सापेक्षिक हो परन्तु जनसाधारण का प्राकृतिक तर्क न हो। यद्यपि यह प्रत्येक भाषा के अनुसार परिवर्तित हो सकता है और इसे परिवर्तनों की विमाओं के अस्थिर मानचित्रों की आवश्यकता पड़ सकती है, फिर भी यह खोजे जा सकने योग्य नियमों से युक्त तर्क का एक आधार है। विज्ञान बाध्य नहीं है कि वह इसके सोचने और तर्क करने के तरीकों को उन प्रक्रियाओं में बदलते हुए देखे जो केवलमात्र भावात्मक प्रेरणाओं और सामाजिक समन्वयों की वशवर्तिनी हैं ।

इसके अतिरिक्त, मेरी राय में, भाषा के अत्यधिक महत्त्व का अर्थ आवश्यक रूप में यह नहीं हो सकता कि इसके पृष्ठ पर ऐसा कुछ नहीं है जिसे परम्परा से "मन" कहा जाता है। मेरे अपने अध्ययन मुझे संकेत देते हैं कि भाषा अपनी समस्त राजसी भूमिका में किसी न किसी अर्थ में एक सतही कशीदाकारी है। यह कशीदाकारी

चेतना की गूढ़तर प्रक्रियाओं पर है जो कि किसी भी सञ्चार से पहले आवश्यक है चाहे वह सञ्चार संकेतात्मक हैं या प्रतीकात्मक है, तथा जो स्वयं कभी आवश्यकता पड़ने पर पारस्परिक सञ्चार को भाषा या प्रतीक विज्ञान की सहायता के बिना प्रभावित कर सकता है (चाहे सही सहमति को न कर पाए)। मैं इसे सतही उस अर्थ में मानता हूँ जिस अर्थ में, उदाहरणार्थ, रसायन विज्ञान की सभी प्रक्रियाएँ भौतिक सत्ता की उन गहरी परतों पर सतही कही जा सकती हैं जिन्हें हम विद्युदाण्विक या, उपविद्युदाण्विक कहते हैं। इस कथन का कोई भी यह अर्थ नहीं लगाएगा कि सारा रसायन विज्ञान महत्त्वहीन है। वास्तव में अभिप्राय यह है कि जो जितना सतही है वह उतना ही किसी निश्चित व्यावहारिक अर्थ में अधिक महत्त्वपूर्ण हो सकता है। इस सूचिका में यह भी सम्भव है कि कैपिटल "L" से बनने वाला LANGUAGE (भाषा) जैसा कोई पदार्थ ही न हो। यह कथन कि "चिन्तन, भाषा का विषय है" एक अधिक सही कथन "चिन्तन विभिन्न भाषाओं का विषय है" का गलत सामान्यीकरण मात्र है। विभिन्न प्रकार की भाषाएँ ही वास्तविक सत्ताएँ हैं, और शायद भाषा जैसा कोई व्यापक सामान्यीकरण न करके एक अधिक अच्छा सामान्यीकरण करे जिसे (Sublinguistic) उपभाषायी या (Superlinguistic) अधिभाषायी कह सकते हैं-और वह, जिसे हम अब मानसिक कहते हैं, उससे सर्वथा असमान नहीं है, चाहे काफी असमान भले ही हो। इस प्रकार के सामान्यीकरण इस क्षेत्र के सत्य की खोज के लिए अन्तर्भाषायी अध्ययनों के महत्त्व को घटायेंगे नहीं अपितु बढ़ायेंगे ही।

संसार के जीवों की विभिन्न सजीव जातियों का ज्ञान प्राप्त करने के लिए वनस्पति शास्त्रियों तथा जीवविज्ञानियों ने यह आवश्यक समझा कि संसार के प्रत्येक भाग में पाए जाने वाली जातियों का वर्णन किया जाए तथा काल सापेक्ष महत्त्व बढ़ाने के लिए जीवाश्मों (fossils) या जीवावशेषों का भी अध्ययन आवश्यक समझा गया। तब उन्होंने विभिन्न जातियों के साम्य और वैषम्य का अध्ययन भी आवश्यक समझा ताकि परिवार और श्रेणी बनाई जा सकें, तथा विकासात्मक उद्गम, आकृति-विज्ञान तथा वर्गीकरण भी किए जा सकें। भाषाविज्ञान में भी इस दिशा में प्रयत्न आरम्भ हो गया है। वह दूरस्थ लक्ष्य, जिसकी ओर यह प्रयत्न आरम्भ हुआ है वह "भाषा और विचार" की एक नई तकनीक विद्या है। पृथ्वी की भाषाओं को पारिवारिक वर्गों में वर्गीकृत करने की दिशा में, तथा प्रत्येक भाषा एक पूर्ववर्त्ती भाषा से कैसे विकसित हुई तथा काल के अन्तर्गत उनके आद्योपान्त विकास विषयक खोज करने की दिशा में काफी प्रगति हुई है। उपरोक्त प्रयत्न के परिणाम का नाम है-(Comparative linguistics) तुलनात्मक भाषाविज्ञान। विचार की भावी तकनीक विद्या के लिए इससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण वह है—जिसे हम (Contrastive linguistics) व्यतिरेकी भाषाविज्ञान कहते हैं। यह भाषाओं के परस्पर मुख्य वैषम्यों का चित्रण करता है—विशेषरूप से उन वैषम्यों का जो उनके व्याकरण, तर्क तथा अनुभव के सामान्य विश्लेषण में मिलते हैं।

जैसा कि मैंने 1940 के अप्रैल के रिव्यू में उल्लेख किया था कि प्रकृति का खण्डीकरण करना व्याकरण का एक वह पक्ष है जिसका कि वैयाकरणों ने अभी बहुत कम अध्ययन किया है। हम घटनाओं के विस्तार एवम् प्रवाह को अपने ढंग से विभाजित करते हैं और उन्हें व्यवस्थित करते हैं, प्राय: ऐसा इसलिए होता है क्योंकि हम अपनी मातृभाषा के माध्यम से इस प्रकार की सहमति में भागी हैं, इसलिए नहीं कि प्रकृति स्वयं इस प्रकार प्रत्येक प्रेक्षक के लिए विभक्त है । भाषाएँ एक दूसरी से न केवल इसलिए भिन्न हैं कि उनकी वाक्य रचना किस प्रकार की है, अपितु इसलिए भी कि वे वाक्यों में रखने के लिए तत्त्वों की प्राप्ति प्रकृति का खण्डीकरण किस प्रकार करके प्राप्त करती हैं। इस प्रकार का खण्डीकरण हमें शब्द-कोष की इकाईयाँ प्रदान करता है।(word)शब्द उनके लिए बहुत अच्छा "शब्द" नहीं है ।(Lex(m3) शब्दिम का सुझाव दिया गया है परन्तु अब (term) 'पद' काम चला सकता है। परन्तु इन लगभग स्पष्ट पदों के द्वारा हम अनुभूतियों के अंशों को अर्धकाल्पनिक व्यतिरेक प्रदान करते हैं। अंग्रेजी के पद जैसे 'Sky' (आकाश) ,'hill' (पहाड़ी) तथा 'Swamp' (दल दल) आदि प्रकृति के अनन्त वैविध्य रूपी पक्ष को एक स्पष्ट 'वस्तु' लगभग मेज़ कुर्सी आदि की तरह मान लेने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। अतः अंग्रेज़ी तथा अन्य मिलती जुलती भाषाएँ हमें यह सुझाव देती हैं कि विश्व इन शब्दों के अनुरूप, स्पष्ट पदार्थों तथा घटनाओं का एक संग्रह है । वास्तव में, यह श्रेण्य भौतिकी एवम् खगोल-विज्ञान द्वारा प्रस्तुत किया गया विवक्षित चित्र है–कि संसार निश्चित रूप से भिन्न आकार के पृथक् पृथक् पदार्थों का संग्रह है।

इस विषय का विवेचन करते समय पुराने तार्किकों ने दृष्टान्तों का प्राय: दुर्भाग्य-पूर्ण चयन किया है। वे दृष्टान्त के रूप में मेज़, कुर्सी और मेज़ पर रखे हुए सेब को, परीक्षण विषयों के रूप में वास्तविकता का पदार्थों जैसा स्वभाव दिखाने और उसकी तर्क के साथ एक से एक की अनुरूपता दिखाने के लिए, ग्रहण करने की प्रवृत्ति रखते हैं। मनुष्य की शिल्पी तथा कृषि सम्बन्धी उपज , जिन्हें वह सजीव पौधों की कोटि से अलग करता है, पार्थक्य की एक अनन्य कोटि होती है; हम आशा कर सकते हैं कि भाषाएँ उनके लिए पर्याप्त रूप में पृथक् पदों का प्रयोग करेंगी। वास्तविक प्रश्न यह है कि भाषाएँ इनके साथ कैसा व्यवहार करती हैं–अर्थात् इन कृत्रिम रूप से पृथक् किए हुए पदार्थों के साथ नहीं, परन्तु अपनी गति, रंग तथा परिवर्तनशील रूप से युक्त प्रकृति के प्रवाहशील रूप के साथ, बादलों के साथ, समुद्रतटों और पक्षियों की ऊँची उड़ान के साथ, क्या करती हैं? क्योंकि जिस प्रकार का हमारा प्रकृति के रूप का खण्डीकरण होता है, उसी प्रकार की हमारी भौतिकी बनती है।

यहाँ हम खण्डीकरण में और मौलिक पदों के चुनाव में अन्तर पाते हैं । हम प्रकृति में किसी चीज को यह कह कर पृथक् कर सकते हैं कि "यह बरसने वाला झरना है"। (Apache) अपाचे ga धातु से एक कथन का निर्माण करती है 'श्वेत बनो' (जिसमें रंग रहित, साफ इत्यादि सम्मिलित है) तथा 'no' उपसर्ग के साथ निम्न-गामी गति का अर्थ प्रविष्ट हो जाता है ("श्वेतता नीचे की ओर जाती है"), तब

*o उपसर्ग जोड़ दिया जाता है, जिसके दोनों अर्थ हैं–जल और झरना, और परिणाम हमारे बरसते हुए झरने के सदृश होता है । परन्तु संश्लिष्ट रूप से यह पानी या झरनों की तरह श्वेतता नीचे की ओर जाती है । यह हमारे सोचने के ढंग से कितना भिन्न है। वही धातु 'ga' एक ऐसे उपसर्ग, जिसका अर्थ है—'परिस्थिति' को स्थान अभिव्यक्त करता है' से युक्त होकर gohlga पद बनाता है: 'स्थान सफेद है, स्वच्छ; एक साफ जगह, एक मैदान। ये उदाहरण बताते हैं कि कुछ भाषाओं में अभिव्यक्ति का साधन रासायनिक संयोजन हैं—जैसा कि मैं पहले कह चुका हूँ, जिनमें पृथक् पद इतने पृथक् नहीं हैं जितने कि अंग्रेजी में हैं, परन्तु प्लास्टिक के संश्लेष से बने हुए पदार्थों की तरह एक दूसरे में प्रविष्ट या प्रवाहित होते दिखाई पड़ते हैं। अतः ऐसी भाषाएँ, जो विश्व का भिन्न-पदार्थक चित्र इस मात्रा में प्रस्तुत नहीं करती जितना कि अंग्रेजी तथा अन्य बहुत भाषाएँ, एक नए प्रकार के सम्भव तर्क तथा नए ब्रह्माण्डीय सम्भव चित्रण की सम्भावना की ओर संकेत करती हैं ।

भारोपीय तथा अन्य बहुत सी भाषाएँ दो भाग वाले वाक्य को बहुत महत्त्व देती हैं—जिसमें प्रत्येक भाग शब्दों के वर्ग संज्ञा, या क्रिया के चारों ओर बनाया जाता है, जिन्हें वे भाषाएँ भिन्न प्रकार से व्यवहृत करती हैं । जैसा कि मैंने अप्रैल 1940 के **रिव्यू** में दिखाया था कि यह भेद प्रकृति से नहीं लिया गया है, अपितु यह केवल इस तथ्य का परिणाम है कि भाषाओं का कोई न कोई रचनात्मक ढंग होना चाहिए, और उन भाषाओं ने इस प्रकार के ढंग को अपना कर अपना काम चलाया है। ग्रीक लोगों ने, विशेष रूप से अरस्तू ने इस व्यतिरेक को उपस्थित किया, और इसी को तर्कशास्त्र का सिद्धान्त बनाया। तभी यह व्यतिरेक तर्कशास्त्र में बहुत प्रकार से अभिव्यक्त किया गया है : उद्देश्य तथा विधेय, कर्त्ता तथा क्रिया, पदार्थ तथा पदार्थों में सम्बन्ध, पदार्थ तथा उनके विशेषण, मात्राएँ तथा व्यापार। और, व्याकरण का अनुसरण करते हुए यह विचारधारा दृढ़ हो गई है कि इन इकाइयों का एक वर्ग स्वाधिकार से विद्यमान रह सकता है परन्तु 'क्रिया' वर्ग दूसरे वर्ग की सत्ता के बिना नहीं रह सकता— जिसे हम 'पदार्थ' वर्ग का नाम देते हैं तथा जो आलम्बन के लिए खूँटी का काम करता है। इस विचारधारा के नारे पर "Embodiment is necessary" "मूर्तरूप आवश्यक है" किसी ने **सशक्त** आपत्ति नहीं उठाई है, तथापि आधुनिक भौतिकी का सम्पूर्ण सुझाव, जिसका बल "क्षेत्र" (field) पर है, वास्तव में इस विचारधारा के लिए अन्तर्गूढ़ चुनौती है। यह व्यतिरेक हमारे गणित में दो प्रकार के प्रतीकों में प्रकट होता है। एक तो–1, 2, 3, x, y, z प्रकार का और दूसरा $+, -, \div, \sqrt{}$, log–, यद्यपि $0, \frac{1}{2}, \frac{3}{4}, \pi$ तथा दूसरों के विषय में द्विवर्गीय वर्गीकरण सुनिश्चित रूप से लागू नहीं होता। द्विवर्गीय धारणा हमारे चिन्तन के पीछे अवश्य रहती है यद्यपि उसे प्रायः प्रकट रूप से अभिव्यक्त नहीं किया जाता है ।

हमारी अमरीकी-इण्डियन भाषाएँ बताती हैं कि एक उपयुक्त व्याकरण की सहायता से हम अच्छे वाक्यों का चयन कर सकते हैं जिनका विभाजन उद्देश्य और विधेय में नहीं किया जा सकता। एक प्रयत्नपूर्वक किया गया विभाजन अंग्रेजी के अनुवाद या

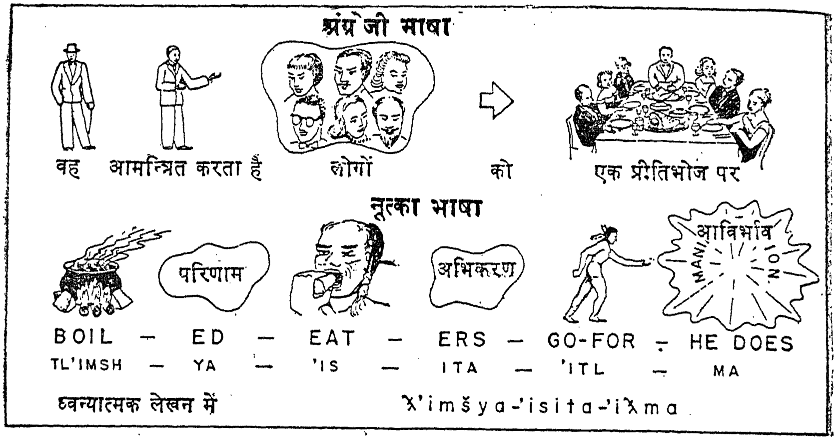
उस वाक्य के भावानुवाद का विभाजन है, न कि स्वयं इण्डियन वाक्य का। हम एक संश्लिष्ट "राल" को सैलूलॉयड या लवलेशों में वियोजित करने का प्रयत्न कर सकते हैं, क्योंकि "राल" की नकल सैलूलॉयड और लवलेशों से की जा सकती है। अल्गोन्कियन भाषा परिवार, जिसकी एक सदस्य शॉनी भाषा भी है, हमारे उद्देश्य—विधेय प्रकार के वाक्यों का प्रयोग करता है, परन्तु चित्र 15 में दिखाए गए उदाहरण की तरह वाक्यों को भी प्रधानता देता है। सुनिश्चित होने के लिए ni को अनुवाद में उद्देश्य के रूप में प्रस्तुत किया गया है परन्तु इसका अर्थ 'मैं' और 'मेरा' दोनों ही हैं और वाक्य का अनुवाद इस प्रकार भी किया जा सकता है—(My hand is pulling the branch aside) मेरा हाथ शाखा को एक ओर दूर खींच रहा है। या ni– अनुपस्थित भी रह सकता है, यदि ऐसा है तो हमें एक उद्देश्य गढ़ने में प्रवृत्त होना चाहिए, जैसे 'he-वह', 'it-यह', 'Somebody- कोई', या फिर हमें अपने अंग्रेजी उद्देश्य के लिए शॉनी तत्त्वों में से किसी एक से मिलता जुलता कोई विषय चुन लेना चाहिए।

जब हम नूत्का भाषा को देखते हैं तो हमें उद्देश्य और विधेय रहित वाक्य का एक ही प्रकार उपलब्ध होता है। विधेयन पद का प्रयोग तो किया गया है परन्तु इसका अर्थ है 'वाक्य'। नूत्का भाषा में शब्द-भेद नहीं है; साधारणतम कथन भी एक वाक्य होता है जो किसी घटना या घटना-ग्रन्थि से सम्बन्धित रहता है। लम्बे वाक्य–वाक्यों के वाक्य (संश्लिष्ट वाक्य) हैं, केवल शब्दों के वाक्य नहीं। चित्र-17 में नूत्का का साधारण वाक्य है न कि संश्लिष्ट वाक्य। उसका अनुवाद "वह लोगों को प्रीतिभोज पर निमन्त्रित करता है" उद्देश्य और विधेय में विभक्त कर देता है। परन्तु नूत्का का वाक्य इस प्रकार विभक्त नहीं है। वह पकाने या उबालने की क्रिया से आरम्भ होता है tl'imsh, तत्पश्चात् ya (परिणाम) आता है = पकाया हुआ, तब '—is 'खाना'—पकाया हुआ भोजन खाना, तब it आता है (जो करते हैं) पकाए हुए भोजन को खाने वाले; तब '—itl (के लिए जाना) आता है, तब अन्य पुरुष निश्चयार्थ का चिन्ह,–ma आता है और पूर्ण अभिव्यक्ति tl'imshya' 'isitáitlma बन जाती है, जिसका अशोधित सा भावानुवाद इस प्रकार है "वह" या 'कोई', जाता है, पका हुआ खाना, खाने वालों के लिए (निमन्त्रण के लिए)।

अंग्रेजी भाषा का बात करने का तकनीक 'संज्ञा और क्रिया' नाम के दो कृत्रिम वर्गों के व्यतिरेक तथा पूर्वोक्त प्रकृति की द्विविभाजक धारणा पर निर्भर करता है। हमारे सामान्य वाक्य में, यदि वह आज्ञार्थक न हो तो, क्रिया से पहले संज्ञा का होना बहुत आवश्यक है। यह आवश्यकता उस दार्शनिक तथा साधारण धारणा के अनुरूप है, जिसके अनुसार 'क्रिया को करने वाला कर्त्ता होना ही चाहिए।' अन्तिम बात ऐसी न हुई होती यदि अंग्रेजी हज़ारों क्रियाएँ "hold" (पकड़ना) जैसी स्थितियों का द्योतन करने वाली होती। परन्तु हमारी अधिकतर क्रियाएँ एक प्रकार के खण्डी-

करण का अनुसरण करती हैं जो कि प्रकृति से उन्हें पृथक् करता है, जिन्हें हम "Actions" (क्रियाएँ) अर्थात् "गतिशील रूपरेखाएँ कहते हैं।

अत: बहुमत नियम का अनुसरण करते हुए हम प्रत्येक वाक्य में गति देखते हैं—'I hold it' (मैं इसे पकड़ता हूँ, रोके रखता हूँ) जैसे वाक्य में भी । एक



यहाँ वे भिन्न प्रकार दिखाए गए हैं जिनके द्वारा अंग्रेजी और नूत्का एक ही घटना को सूत्रित करते हैं। अंग्रेजी का वाक्य उद्देश्य और विधेय में विभाज्य है; नूत्का वाक्य नहीं है, तथापि वह पूर्ण एवम् तर्क संगत है। इसके अतिरिक्त नूत्का वाक्य केवल एक शब्द है जिसमें पाँच प्रत्ययों से युक्त tl'imish धातु है।

क्षण भर के चिन्तन से पता चल सकता है कि "hold' = पकड़े रखना कोई "क्रिया" नहीं है, परन्तु सापेक्षिक स्थितियों की एक अवस्था है, तथापि हम इसे क्रिया के रूप में ही सोचते हैं और "क्रिया" के रूप में देखते भी हैं—क्योंकि भाषा इसका भी सूत्रीकरण इसी प्रकार करती है जैसे कि अन्य असंख्य अभिव्यक्तियों का, जैसे "I strike it" (मैं इस पर चोट मारता हूँ) आदि का जो गतियों और परिवर्त्तनों से सम्बन्धित है।

हम निरन्तर प्रकृति में कृत्रिम क्रियाशील इकाइयों को देखते हैं, केवल इसलिए कि हमारे 'क्रिया -शब्दों' के सामने संज्ञा-शब्द अवश्य होने चाहिएँ। हमें कहना पड़ता है "it flashed" (यह चमका) या "A light flashed" (एक प्रकाश चमका) ताकि हम "flash" (चमकना) क्रिया के लिए एक कर्त्ता प्रस्तुत कर सकें जो इस क्रिया को करने वाला हो। यद्यपि flashing (चमकना) या light (प्रकाश) एक ही चीज है। होपी भाषा "flash" (चमकना) की सूचना एक ही क्रिया शब्द rehpi : से देती है । वहाँ पर उद्देश्य और विधेय का विभाजन नहीं

है, न ही लैटिन के tonat (यह गरजता है) की तरह 't' जैसा कोई प्रत्यय है। होपी में क्रिया शब्द बिना कर्त्ता के हैं और हो सकते हैं—यह एक ऐसा तथ्य है जो उस भाषा में एक ऐसी सम्भाव्यता उत्पन्न करता है जिसका विकास, विश्व के कुछ पक्षों को समझने के लिए एक तर्क संगत व्यवस्था के रूप में, सम्भवतः, कभी नहीं किया जाएगा। इसमें सन्देह नहीं कि आधुनिक विज्ञान—जिस पर पाश्चात्य भारोपीय भाषाओं की छाप है, प्रायः ऐसा ही करता है जैसे कि हम सब करते हैं, अर्थात् वहाँ भी गतियाँ और शक्तियाँ देखता है जहाँ कि "अवस्थाओं" को देखना अधिक अच्छा हो सकता है। दूसरी ओर, 'अवस्था' एक संज्ञा है जिसे परम्परा से 'पदार्थ' वर्ग के साथ सम्बन्धित होने के कारण काफी श्रेष्ठ पद प्राप्त है, अतः विज्ञान "अवस्थाओं" की बात करने के लिए बिल्कुल तैयार है, यदि उसे "संज्ञा" जैसी धारणा से काम चलाने की अनुमति प्राप्त हो जाए तो। शायद "अणु" की अवस्थाओं या विभाजक कोशिकाओं के स्थान पर यदि हम "क्रिया" की तरह की धारणा को इतनी ही तत्परता से काम में ले आते, परन्तु "कर्त्ता और कर्म" की गुप्त भूमिका के बिना, तो बहुत ही अच्छा होता।

मैं उनके साथ सहानुभूति रखता हूँ जो कहते है "इसे सादा और सरल अंग्रेजी में कहिए" विशेष रूप से उस समय जबकि वे भाषा को अर्धशिक्षित शब्दों से लादने के सारहीन रीतिवाद का विरोध करते हैं। परन्तु चिन्तन को केवल अंग्रेजी की अभिरचनाओं तक सीमित रखना—और विशेष रूप से उन अभिरचनाओं तक जो अंग्रेजी में सादगी की पराकाष्ठा का प्रतिनिधित्व करती हैं, चिन्तन की शक्ति को खोना है जो एक बार खो जाने पर कभी प्राप्त न हो सकेगी। अंग्रेजी के "सरलतम" रूप में ही प्रकृति विषयक सर्वाधिक अचेतन मान्यताएँ विद्यमान हैं। यही कठिनाई मौलिक अंग्रेजी की योजनाओं के साथ होती है, जिनमें एक अशक्त बनाई गई ब्रिटिश अंग्रेजी अपनी कठिनतर गुप्त मान्यताओं के साथ सरलमन संसार पर शुद्ध विवेक के तत्त्व के रूप में लादी जाती है। हम अपनी सरल अंग्रेजी को भी बहुत अधिक प्रभावपूर्ण ढंग से व्यवहार में ला सकते हैं यदि हम बहुभाषाई बोध की अनुकूल अवस्थिति से इसका सञ्चालन करें। इसी कारण मेरा विश्वास है कि जो लोग अंग्रेजी, जर्मनी, या रूसी या किसी अन्य एक भाषा बोलने वाले, भावी संसार की कल्पना करते हैं, वे भ्रान्त धारणा रखते हैं और वे लोग मानव मन के विकास का सबसे बड़ा अपकार करेंगे। पाश्चात्य सभ्यता ने भाषा के माध्यम से वास्तविकता का अनन्तिम विश्लेषण किया है, तथा शोधक प्रयत्नों के बिना ही उस विश्लेषण को दृढ़तापूर्वक 'अन्तिम' मानती है। एकमात्र-संशोधक उन सभी भाषाओं में निहित हैं जो युगों के स्वतन्त्र विकास द्वारा भिन्न परन्तु इतने ही तर्क संगत अन्तरिम विश्लेषण पर पहुँचे हैं।

एक बहुत ही उपयोगी लेख "Modern logic and the task of the natural sciences" (आधुनिक तर्क और प्राकृतिक विज्ञानों का कर्त्तव्य) में हैरोल्ड एन ली (Harold N. Lee) कहते हैं: "वे विज्ञान जिनकी शोध्य सामग्री परिमाणात्मक मापन का विषय है, उनका विकास बहुत ही सफलतापूर्वक किया गया

है, क्योंकि जिन अनुक्रम व्यवस्थाओं के दृष्टान्त हमारे गणित विज्ञान ने प्रदर्शित किए हैं, उनके अतिरिक्त अनुक्रम व्यवस्थाओं के विषय में हमें बहुत कम ज्ञान है। हम निश्चयपूर्वक यह कह सकते हैं कि इन व्यवस्थाओं के दूसरे प्रकार अवश्य हैं क्योंकि गत अर्ध शताब्दी में उच्चतर तर्कविज्ञान ने इस ओर स्पष्ट संकेत किया है। हम आज की सुस्थापित वैज्ञानिक व्यवस्थाओं के बहुत से क्षेत्रों में उन्नति की आशा कर सकते हैं यदि तर्क विज्ञान की प्रगति हमें दूसरे प्रकारों का पर्याप्त ज्ञान प्रदान कर दे तो। हम अन्य बहुत से खोज के विषयों की आशा कर सकते हैं जिनके तरीके आज के युग में पूरी तरह वैज्ञानिक नहीं हैं परन्तु वैज्ञानिक हो सकते हैं यदि हमें नई अनुक्रम व्यवस्थाएँ उपलब्ध हो जाएँ।[1]" इसके साथ यह भी जोड़ा जा सकता है कि नई अनुक्रम व्यवस्थाओं की रचना के लिए एक महत्वपूर्ण क्षेत्र, जो आधुनिक गणित-शास्त्र के समरूप तो नहीं अपितु समान अवश्य है, वह क्षेत्र हमारी भाषाओं में अब तक के किए गए अनुसन्धानों से बहुत अधिक विचक्षण अनुसन्धान करने में निहित है।

---

1. Sigma XI Quart., 28 : 125 (Autumn 1940).

भाषा, मन और वास्तविकता*

इन हाल के दिनों में केवल थोड़ी सी सूक्ष्म दृष्टि की आवश्यकता यह देखने के लिए पड़ती है कि आधुनिक पाश्चात्य सभ्यता का महान प्रकाशक-विज्ञान किसी इरादे के बिना ही एक सीमान्त पर पहुंच गया है। अब या तो इसे अपनी मृतप्रायः रूढ़ियों को दफना देना होगा, अपनी व्यवस्था समाप्त करनी होगी, प्रतिष्ठित स्थान छोड़ना होगा और उत्तरोत्तर बढ़ने वाली अपरिचितताओं के क्षेत्र में तथा संस्कृति विशेष में जकड़े इस ज्ञान को व्याघात पहुंचाने वाली सामग्रियों से भरे हुए क्षेत्र में आगे बढ़ना होगा, या इसे— claude Houghton की सारगर्भित उक्ति के अनुसार, स्वयं अपने ही अतीत का 'भाव-चोर' बनना पड़ेगा । इस सीमान्त का सिद्धान्त रूप में बहुत पहले आभास हो गया था और उसका नामकरण भी कर दिया गया था जो कि हमारे पास तक पौराणिक कथाओं से घिरा होने के कारण अस्पष्ट रूप में पहुँचा है। उसका नाम 'बेबल' (babel) है । क्योंकि विज्ञान के पूर्णतया तथ्यपरक होने के सतत एवं शौर्यपूर्ण प्रयत्न ने अन्ततः उसे भाषाई व्यवस्थाओं के ऐसे तथ्यों के साथ उलझा दिया है, जिनके विषय में सन्देह भी नहीं हो सकता था। पुराने श्रेण्य विज्ञान ने न तो कभी भी इन तथ्यों को माना, न इनका सामना किया और न ही इनको कभी तथ्य समझा। इसके विपरीत, ये उसके घर में पिछले द्वार से घुसे और इन्हें स्वयं ही विवेक का तत्त्व मान लिया गया।

जिसे हम "वैज्ञानिक विचार" कहते हैं, वह पाश्चात्य भारोपीय प्रकार की भाषा का विशिष्टीकरण है, जिसने तर्क विद्याओं का एक वर्ग ही विकसित नहीं किया अपितु वास्तव में भिन्न बोलियों का एक वर्ग भी विकसित कर लिया है । ये बोलियाँ अब परस्पर अबोधगम्य होती जा रही हैं। जैसे कि 'स्पेस' पद एक मनोवैज्ञानिक और एक भौतिकविज्ञानी के लिए एकार्थक न तो है और न हो सकता है। यदि मनोवैज्ञानिक यह प्रतिज्ञा भी कर लें कि चाहे कुछ भी हो—आफत आए या तूफान आए, वे "स्पेस" पद का प्रयोग उसी अर्थ में करेंगे जिसमें कि भौतिकविज्ञानी करता है, तो वे इससे अधिक नहीं कर पाएंगे जितना कि अंग्रेजी भाषा में अंग्रेज लोग, फ्रांसीसी भाषा की उक्ति le sentiment का फ्रांसीसी अर्थ में ही प्रयोग कर सकते हैं जो समान वर्तनी वाली होतीं हुई भी भिन्न वृत्तिमूलक है।

यह केवल उन विस्तार सम्बन्धी उलझनों को ही उत्पन्न नहीं करता है जिन्हें शायद एक कुशल अनुवादक सुलझा सकता था। यह इससे भी अधिक जटिलता उत्पन्न

---

* **थियोसोफिकल सोसाइटी की अनुमति से** Theosophist(Madras, India), **जनवरी तथा अप्रैल सन् 1942 के अंकों से पुनर्मुद्रित।**

करने का काम करता है। प्रत्येक भाषा और प्रत्येक सुगुम्फित तकनीकी उपभाषा कुछ दृष्टिकोणों का समावेश करती है तथा कुछ अत्यधिक भिन्न दृष्टिकोणों के प्रति कुछ व्यवस्थित विरोधों को अन्तर्निहित रखती है। विशेष रूप से ऐसा तब होता है यदि भाषा का सर्वेक्षण गतिशील तथ्य के रूप में नहीं किया गया हो, अपितु उसे साधारण रूप में स्वीकार कर लिया गया हो, तथा विशिष्ट चिन्तक द्वारा प्रयुक्त किए गए स्थानीय एवं सीमित रूप को इसका सम्पूर्ण रूप समझ लिया गया हो। ये प्रतिरोध न केवल भिन्न विज्ञानों को एक दूसरे से कृत्रिम रूप में अलग करते हैं अपितु सम्पूर्ण वैज्ञानिक प्रवृत्ति को विकास की ओर एक नया बड़ा कदम उठाने से रोकते हैं—एक ऐसा कदम जो विज्ञान के लिए अभूतपूर्व दृष्टिकोणों को अपरिहार्य बनाता है तथा परम्पराओं से पूर्ण विच्छेद आवश्यक मानता है। क्योंकि कुछ विशिष्ट भाषाई अभिरचनाएं ऐसी हैं जिनका विज्ञान की तर्क विद्या (बोली) में जड़ीकरण हो चुका है और जो भारोपीय संस्कृति के उस मूलस्त्रोत में प्राय: सन्निहित है, जिससे आधुनिक विज्ञान का अभिर्भाव हुआ है, तथा जिनकी चिरकाल से 'शुद्ध विवेक' के रूप में पूजा होती आई है—वे अभिरचनाएं अब मृतप्राय: बन चुकी हैं। विज्ञान भी यह समझने लगा है कि किसी तरह भी समझ लीजिए परन्तु यह सत्य है कि वास्तविकता के कुछ अत्यधिक महत्त्वपूर्ण पक्षों का प्रेक्षण करने के लिए उनकी उपादेयता समाप्त हो चुकी है, जिनके सही प्रेक्षण किए जाने पर विश्व को समझने की समस्त भावी प्रगति निर्भर कर सकती है। इस प्रकार पाश्चात्य ज्ञान के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कदम, अपनी चिन्तन शैली की भाषाई पृष्ठभूमि का पुनरीक्षण करना है और फिर समस्त चिन्तन का पुनरीक्षण। थियोसोफिकल श्रोताओं के समक्ष इस विषय का विकास करने का मेरा अभिप्राय किसी भी थियोसोफिकल सिद्धान्त का अनुमोदन या पुष्टि करना नहीं है, अपितु यह है कि मैं जिन श्रेणियों के लोगों के सम्पर्क में आया हूँ उनमें सबसे अधिक थियोसोफिकल लोग ही मुझे ऐसे लगे जो कि विचारों किंवा नए विचारों से उत्तेजित होते हों। और मेरा काम है कि मैं एक विचार का स्पष्टीकरण उन सब लोगों के समक्ष करूं—यदि पाश्चात्य संस्कृति प्रस्तुत बर्बरता की बाढ़ से बच जाए तो—जो समस्त मानवी प्रकृति को पुनर्गठित करने के निमित्त घटनाचक्र द्वारा नेतृत्व पद पर आरूढ़ किए जा सकें।

यह विचार इतना गम्भीर है कि इसका किसी एक वाक्य में लिखा जाना सम्भव नहीं। अत: मैं इसका नामकरण ही नहीं करता। यह विचार इस प्रकार है कि एक परासत्ता का संसार—एक दिशातीत, उच्चतर विमाओं का संसार उन सारे विज्ञानों से—खोज का प्रत्याशी है जिनका वह संयोजन एवं एकीकरण कर देगा, वह प्रत्याशी है अभिरचनाबद्ध सम्बन्धों के क्षेत्र के प्रथम पक्ष के अन्तर्गत खोज का, जो कल्पनातीत रूप में बहुविध है और फिर भी भाषा के समृद्ध एवं व्यवस्थित संगठन के साथ स्वीकार्य सम्बन्ध रखती हैं। उन संगठनों में सबसे नीचे गणित एवं संगीत भी सम्मिलित हैं जो अन्तत: भाषा के ही सजातीय हैं। यह विचार प्लाटो से भी पुराना होते हुए इतना आधुनिक है जितना कि हमारे सब से अधिक क्रान्तिकारी चिन्तक। यह

विचार White head 'व्हाइटहेड' के 'प्राग्ग्रहणात्मक पक्ष वाले संसार में ध्वनित हैं, तथा चतुर्विमात्मक सांतत्यक (Four dimensional Continuum) सहित सापेक्ष सिद्धान्त तथा उसके (Riemann-Christoffel.) के (टेन्सर) आतानक-जो संसार के तत्त्वों का समाहार किसी भी बिन्दु-क्षण पर करता है उसमें अन्तर्निहित है; जबकि आधुनिक ग्रन्थों में सबसे अधिक विचार प्रेरक और मेरे विचार में सर्वाधिक मौलिक Ouspensky. की Tertium Organum है। मुझे प्रस्तुत विषय पर जो कुछ कहना है वह नया हो सकता है और वह है भाषा में पूर्वभास—एक अज्ञात, विशाल संसार का पूर्वभास—उस संसार का जिसका भौतिक रूप बाह्याकार मात्र या चर्ममात्र है, तथापि हम उसी संसार में हैं और उसी संसार के हैं। गणित की सहायता से वास्तविकता जानने का मार्ग, जिसे आधुनिक ज्ञान अपनाना आरम्भ कर रहा है वह भाषा के साथ इस सम्बन्ध के एक विशेष विषय के माध्यम द्वारा ही अपनाना आरम्भ कर रहा है। इस विचार का आशय है कि, जिन्हें मैंने अभिरचनाएँ कहा है, वे एक वास्तविक ब्रह्माण्डीय अर्थ में मौलिक हैं, और यह कि अभिरचनाएँ पूर्णों का निर्माण करती हैं, जो मनोविज्ञान के Gestelten के सदृश हैं, जिनका समावेश बृहत्तर पूर्णों में अनवरत श्रेणी द्वारा होता रहता है। अतः ब्राह्माण्डीय चित्र स्तरों या तलों की श्रेणियों के आनुक्रमिक या आनुपूर्वीय गुण वाला है। इस प्रकार के अनुक्रमों की मान्यता के अभाव के कारण विभिन्न विज्ञान इस संसार का खण्डीकरण ऐसे करते हैं मानो वे खण्ड प्राकृतिक स्तरों की दिशा को आरपार तिरछा काटते हैं—या परिवर्तन के किसी मुख्य स्थल पर पहुँचते हैं तो बीच में रुक जाते हैं, और तब तथ्य बिल्कुल भिन्न प्रकार के हो जाते हैं, या यूं कहिए कि पुराने निरीक्षणात्मक तरीकों की पकड़ से बाहर हो जाते हैं।

परन्तु भाषिकी के विज्ञान के अन्तर्गत भाषाई साम्राज्य के तथ्य उन आनुक्रमिक स्तरों की मान्यता को अनिवार्य बना देते हैं, जो अभिरचनाओं के प्रेक्षित क्रम द्वारा स्पष्ट रूप में प्रस्तुत किए गए हैं। यह इस प्रकार है मानो कोमल बेलबूटों की डिज़ाइन वाली नक्काशी से ढकी हुई भित्ति देखकर हमें पता चले कि यह नक्काशी अधिक स्पष्ट परन्तु फिर भी लघु एवं मृदुल कुसुमों की अभिरचनाओं का आधार बनाती है; और यह कि इस कुसुमित विस्तार का बोध होने पर हम यह देखें कि इसके अन्दर अन्तरालों का बाहुल्य एक अन्य मरगोल या कुन्डलित अभिरचना का निर्माण कर रहा है; और यह कि उन मरगोलों या कुण्डलियों के समूहों द्वारा अक्षर बनाए जा रहे हैं और उन अक्षरों के क्रम को यदि ठीक ढंग से देखा जाए तो वे शब्द बना रहे हैं और शब्द ऐसे वर्गों में पंक्तिबद्ध हैं, जो इकाइयों को श्रेणीबद्ध तथा वर्गीकृत कर रहे हैं, और इसी प्रकार आरपार काटने वाली अभिरचनाओं के निरन्तर विलास को देखते हुए हमें अन्ततः पता चलता है कि यह भित्ति ज्ञान का एक महान ग्रन्थ है।

पहले "निम्नतम स्तर में" भाषायी तथ्य पूर्णतया भौतिक हैं, ध्वनिक हैं, ध्वनि तरंगों द्वारा निर्मित प्रपंच मात्र हैं; उसके बाद तरंगित मांसपेशियों तथा वागवयवों

की अभिरचनाओं का स्तर आता है, अर्थात् शारीरिक स्वनिक स्तर, तत्पश्चात् स्वनिमिक स्तर—एक अभिरचन जो प्रत्येक भाषा के लिए व्यंजनों, स्वरों, बलाघातों एवं अनुतानों का एक सुव्यवस्थित सेट बनाता है, तब रूप-स्वनिमिक-स्तर आता है जिसमें पूर्ववर्ती स्तर के स्वनिम रूपिमों (शब्द, तथा उपशब्द, जैसे प्रत्यय आदि), के रूप में संयुक्त होते हुए दिखाई पड़ते हैं, तत्पश्चात् रूपविज्ञान का क्षेत्र, तत्पश्चात् पेचीदा, अधिकतर अचेतन अभिरचना का स्तर है जिसका अर्थ-हीन Syntax नाम प्रचलित है, तब इससे भी ऊँचे स्तर हैं जिनका पूरा आशय शायद किसी दिन हमारी समझ में आ जाए और हमें चकित कर डाले।

भाषा सब से बड़ा प्रदर्शनीय परिधान है जिसे मनुष्य धारण करता है। विकास के रंगमंच पर यह उसका अपना अभिनय —जिसमें वह ब्रह्माण्डीय पृष्ठपट के आगे आता है और वास्तविक रूप में अपने करतब दिखाता है। परन्तु हमें सन्देह है कि दर्शक देवगण यह भाप जाता है कि जिस आश्चर्यजनक चालों के सेट द्वारा मनुष्य अपने करतब को पराकाष्ठा पर पहुँचाता है, वह इस विश्व से चुरा लिया गया है। यह विचार, कि प्रकृति और भाषा आन्तरिक रूप से सम्बन्धित है जिससे आधुनिक संसार सर्वथा अनभिज्ञ है, चिरकाल तक बहुत सी उच्चकोटि की उन संस्कृतियों को सुविज्ञात था, जिनकी पृथ्वीतल पर ऐतिहासिक अविच्छिन्नता पाश्चात्य योरोपीय सभ्यता से बहुत अधिक लम्बी है। भारतवर्ष में इस विचार का एक पक्ष मन्त्र और मन्त्र-विद्या के रूप में विद्यमान रहा है। साधारण सांस्कृतिक स्तर पर मन्त्र एक पुरातन जादू-टोना मात्र है जैसा कि अविकसित सभ्यताओं में पाया जाता है। उच्चतर सभ्यताओं में इसका सर्वथा भिन्न, बौद्धिक अर्थ हो सकता है जो ब्रह्माण्डीय व्यवस्था तथा भाषा की आन्तरिक सजातीयता के विवेचन से सम्बन्धित है। इस से भी ऊँचे स्तर पर यही "मन्त्रयोग" बन जाता है। जिसमें मन्त्र एक बहुविध चेतन अभिरचन बन जाता है जिसकी रचना परासत्तात्मक अभिरचनाओं के संसार में चेतना की सहायता करने के लिए की जाती है जहाँ वह "चालक की सीट" पर बैठ जाता है। तब यह मानव अवयव संस्थान को इस प्रकार व्यवस्थित कर सकता है कि वे उन शक्तियों का हज़ार गुणा अधिक संप्रेषण, नियन्त्रण और प्रवर्धन कर सकें जिनका प्रेषण साधारणतया वे अवयव संस्थान अलक्षणीय एवं अल्प मात्रा में करते हैं।

इसी से मिलता जुलता वह गणितीय सूत्र है जो एक भौतिक विज्ञानी को कुछ तारों की कुण्डलियों, टीन की परतों वाली प्लेटों, तन्तुपटों तथा अन्य नितान्त अचेतन एवं निर्हीन (गैजिटों) जुगतों की सहायता से उन्हें एक ऐसी समाकृति देने में समर्थ बना देता है जिसके द्वारा वे सुदूरवर्ती देश में संगीत प्रसारित कर सकते हैं, तथा वह सूत्र भौतिक विज्ञानी की चेतना को अशिक्षित मनुष्य की चेतना से भिन्न स्तर पर पहुँचा देता है तथा पदार्थ की संगति, एक बहुत ही अनुकूल समाकृति के साथ, सम्भव बना देता है,—एक ऐसा समायोजन जिसके द्वारा शक्ति का असाधारण प्रकटीकरण सम्भव होता है। अन्य सूत्र बिजलीघर में तारों और चुम्बकों की अनुकूल व्यवस्था को सम्भव बना देते हैं ताकि जब चुम्बकों (या चुम्बकों के अन्दर या चारों ओर

सूक्ष्म शक्तियों के केन्द्रों) को गतिशील बनाया जाए तो शक्ति इस रूप में प्रकट हो जाए जिसे हम बिजली का करन्ट या "वहा" कहते हैं। हम एक रेडियो स्टेशन या विद्युत संयन्त्र को भाषाई प्रक्रिया रूप में अभिकल्पित नहीं करते हैं। परन्तु यह वास्तव में एक भाषाई प्रक्रिया की तरह ही है। (इसमें प्रयुक्त) आवश्यक गणित एक भाषाई संयत्र है और इसके अत्यावश्यक अभिरचन के सही विनिर्देशन के बिना वे एकत्रित की हुई जुगतें समानुपात रहित तथा समंजनहीन रहेंगी और परिणामस्वरूप निष्क्रिय रहेंगी। परन्तु इस प्रकार के विषय में प्रयुक्त होने वाला गणित एक विशेषीकृत सूत्रभाषा है जिसका आविष्कार केवल धातु पिण्डों के माध्यम से एक विशेष प्रकार की शक्ति प्रकटीकरण की उपलब्धि के लिए किया जाता है जिसे हम "इलेक्ट्रीसिटी" विद्युत कहते हैं, और नाम के अनुरूप ही उसकी परिभाषा करते हैं। मन्त्रों की सूत्रभाषा एक भिन्न प्रकार से विशेषीकृत है। इससे अन्य प्रकार की शक्ति-प्रकटीकरण की उपलब्धि नाडी व्यवस्था तथा ग्रन्थियों की अवस्था में पुनरभिरचन द्वारा होती है या पुनः उन सूक्ष्म "विद्युदात्विक" या "ईथरीय" शक्तियों द्वारा होती हैं जो उन शरीर पिण्डों में या उनके चारों ओर रहते हैं। उन अवयव संस्थानों के अवयव, यदि उनका अनुकूल अभिरचन नहीं किया गया है तो वे भी इतने ही संज्ञाहीन "जुगत" हैं और इतने ही गतिशील शक्ति के उत्पादन में असमर्थ हैं जितने कि ढीले तार तथा ढीले चुम्बक, परन्तु सही अभिरचना में वे ही कुछ अन्य पदार्थ बन जाते हैं, जिन्हें अनभिरचित अवयवों के गुणों से समझना असम्भव है तथा अब वे सुप्त-शक्तियों के सक्रियकरण तथा संवर्धन में समर्थ हैं।

मैं इस प्रकार भाषा के मान्त्रिक तथा यौगिक प्रयोगों के सूक्ष्म प्राच्य विचारों का सम्बन्ध उस समाकृतिपरक या अभिरचन पक्ष के साथ जोड़ूंगा जो भाषा में अत्यधिक मौलिक है। परन्तु ऐसा करना भी मुझे अपने विषय के प्रतिपादन के अत्यधिक महत्त्वपूर्ण स्थल पर ले आता है। हमें भाषा के विषय में और अधिक ज्ञान प्राप्त करना होगा। यह हम पहले ही देख चुके हैं कि इसके विषय में जानने से अभिप्राय वह नहीं है जो कि अन्य बहुसंख्यक-वैज्ञानिक या साधारण जन समझते हैं। जब हम लगभग बिना प्रयत्न के बात करते रहते हैं और हमें यह ज्ञान भी नहीं होता कि हम अत्यधिक जटिल रचना-तन्त्र या प्रक्रिया का प्रयोग कर रहे हैं तो यह तथ्य एक प्रकार का भ्रम उत्पन्न कर देता है। हम सोचते हैं कि हमें पता है कि हम कैसे बोलते हैं और यह कि इसमें कोई रहस्य की बात नहीं है, और हमारे पास सभी प्रकार के उत्तर हैं। दुःख है कि वे उत्तर कितने ग़लत हैं। यह इस प्रकार हुआ जैसे कि एक मनुष्य के असंस्कृत ऐन्द्रिय संस्कार उसके समक्ष विश्व का एक चित्र प्रस्तुत करते हैं जो सरल, सुबोध तथा सन्तोषप्रद तो हैं परन्तु सत्य से बहुत ही दूर है।

जरा सोचिये कि यह संसार उस व्यक्ति को कैसा दिखाई देता है जो कितना ही बुद्धिमान एवं अनुभवी भले ही हो परन्तु उसने ब्रह्माण्ड के विषय में वैज्ञानिक आविष्कारों से सम्बन्धित एक शब्द भी नहीं सुना हो। उसके लिए पृथ्वी चपटी है, सूर्य और चन्द्रमा छोटी छोटी चमकीली चीजें हैं जो आकाश के पूर्वी छोर से नित्य–

प्रति ऊपर उभर आती हैं ऊपरी वायु के क्षेत्र में घूमती हैं और पश्चिमी किनारे में आकर डूब जाती हैं, अतः स्पष्ट है कि नक्षत्र अपनी रात कहीं पृथ्वी के नीचे गुजारते हैं। आकाश किसी नीले पदार्थ से बना उल्टा रखा हुआ प्याला है। तारे, छोटे और अपेक्षाकृत निकटवर्ती पदार्थ, ऐसे लगते हैं मानो सजीव हैं क्योंकि वे शाम के समय आकाश से ऐसे निकल आते हैं जैसे खरगोश या "रैटल स्नेक" अपने बिलों से, तथा प्रातःकाल पुनः वहीं लीन हो जाते हैं। उसके लिए "सौर-व्यवस्था" का कोई अर्थ नहीं और "गुरुत्वाकर्षण" का नियम उसकी समझ से बिल्कुल बाहर की चीज़ है—इतना ही नहीं, बल्कि निरर्थक बकवास भी है। उसकी दृष्टि में पिण्ड नीचे की ओर गुरुत्वाकर्षण के कारण नहीं गिरते अपितु इसलिए गिरते हैं कि उन्हें पकड़े रखने के लिए कोई अन्य पदार्थ नहीं है, अर्थात् वह यह कदापि नहीं सोच सकता के ये पिण्ड कुछ और कार्य भी करते हैं। वह अन्तरिक्ष की कल्पना ही नहीं कर सकता जब तक कि उसमें पूर्व, पश्चिम, ऊपर और नीचे का समावेश न हो। उसके लिये रक्त प्रवाहित नहीं होता न ही हृदय रक्त को पम्प करता है, वह सोचता है कि हृदय वह स्थान है जहाँ प्रेम, दया तथा विचार रखे जाते हैं। किसी वस्तु का शीतल होना उसमें से ऊष्णता का निकल जाना नहीं है अपितु उसमें शीतलता का बढ़ जाना है, पत्तों का हरा होना उसमें क्लोरोफिल जैसे रासायनिक पदार्थ के कारण नहीं है अपितु उनमें 'हरेपन' के कारण है। उसके इन विश्वासों को तर्क द्वारा डिगाना असम्भव होगा। वह दावे के साथ कहेगा कि यह तो साधारण सा बुद्धियुक्त सामान्य ज्ञान है, जिसका अभिप्राय यह है कि वे विश्वास उसे संतुष्ट करते हैं क्योंकि वे उसके तथा उसके साथियों के बीच एक पूर्णतया पर्याप्त संचार-व्यवस्था का निर्माण करते हैं, अर्थात वे भाषाई रूप में उसकी सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिये पर्याप्त हैं और तब तक पर्याप्त रहेंगे जब तक आवश्यकताओं के एक अतिरिक्त समुदाय की आवश्यकता नहीं पड़ती और उनका विनियोग भाषा में नहीं होता।

परन्तु जैसे यह व्यक्ति ऐसे भौतिक संसार के गर्भ में विद्यमान है जिसके विस्तार एवं अनुक्रम का उसे लेशमात्र भी संकेत नहीं, उसी प्रकार हम सभी गँवार, जंगली से लेकर शिक्षित विद्वान् तक, भाषा के गर्भ में हैं। केवल भाषिकी के विज्ञान ने ही थोड़ा सा इस क्षेत्र में प्रवेश करना आरम्भ किया है और इसकी खोजों से दूसरे विज्ञान अभी तक अनभिज्ञ हैं। अपने प्राकृतिक रूप में मनुष्य चाहे साधारण सा मूर्ख है अथवा वैज्ञानिक है, उस पर प्रभाव डालने वाली भाषायी शक्तियों के विषय में उससे अधिक नहीं जानता जितना कि एक असभ्य व्यक्ति गुरुत्वाकर्षण के विषय में जानता है। उसकी धारणा है कि बात करना एक क्रियाकलाप है जिसके करने में वह स्वतन्त्र एवं निर्बाध है। उसके लिये यह एक साधारण सुस्पष्ट क्रिया है जिसके लिये उसके पास आवश्यक स्पष्टीकरण हैं। परन्तु ये स्पष्टीकरण उन आवश्यकताओं के कथन के अतिरिक्त और कुछ नहीं निकलते जो आवश्यकताएं उसे वाग्विनिमय करने के लिये बाध्य करती हैं; और जिस प्रक्रिया द्वारा वह वाग्विनियम करता है वे उसके साथ सम्बन्धित नहीं है। अतः वह कहेगा कि वह कुछ सोचता है और जैसे जैसे विचार

आते जाते हैं वह उन्हें शब्द प्रदान करता रहता है। परन्तु यह पूछने पर कि उसके मस्तिष्क में बोलने से पहले वे ही विचार क्यों आए तो उसका उत्तर पुनः उस क्षण की सामाजिक आवश्यकताओं की कहानी मात्र निकलता है। यह एक धुन्धला उत्तर है जो कोई प्रकाश नहीं डालता। परन्तु फिर वह यह मान लेता है कि इस बोलने की प्रक्रिया पर कोई प्रकाश डालने की आवश्यकता ही क्या है क्योंकि वह अपनी सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए इसका व्यवहार खूब अच्छी तरह कर लेता है। अतः गलत ढंग से उसका अभिप्राय यह हुआ कि सोचना एक स्पष्ट, सीधी क्रिया है जो समस्त बौद्धिक प्राणियों के लिए समान है और भाषा उसकी सीधी सी अभिव्यक्ति है।

वास्तव में सोचने की क्रिया अत्यधिक रहस्यमय है और इस पर जितना भी प्रकाश डाला गया है वह भाषा के अध्ययन द्वारा ही अधिकतर डाला गया। यह अध्ययन बताता है कि मनुष्य के विचारों के रूप अभिरचनाओं के अदम्य नियमों द्वारा नियन्त्रित किए जाते हैं जिनके प्रति मनुष्य अनभिज्ञ रहता है। वे अभिरचनाएँ उसकी अपनी भाषा के अदृश्य, पेचीदा व्यवस्थीकरण हैं—जिन्हें अनायास ही दूसरी भाषाओं के साथ तुलना एवं वैषम्य दिखाकर स्पष्ट रूप में दिखाया गया है—विशेष-रूप से उन भाषाओं के साथ, जो दूसरी भाषाई परिवार की हैं। उसका चिन्तन स्वयं एक भाषा में है जैसे अंग्रेजी में, संस्कृत में, चीनी में।[1] और प्रत्येक भाषा एक विशाल अभिरचना व्यवस्था है, जो दूसरी व्यवस्थाओं से भिन्न है, जिन में सांस्कृतिक रूप से वे रूप और कोटियाँ निहित हैं जिनके द्वारा व्यक्तित्व न केवल वाग्-विनियम करता है अपितु प्रकृति का विश्लेषण भी करता है, भिन्न प्रकार के सम्बन्धों और प्रपंचों को देखता है या उपेक्षा करता है, अपनी तर्कणा को प्रणालीबद्ध करता है तथा अपनी चेतना का प्रासाद निर्मित करता है।

यह सिद्धान्त पाश्चात्य विज्ञान के लिए नया है परन्तु यह अकाट्य प्रमाणों पर आधारित है। इसके अतिरिक्त भारतीय दर्शन तथा आधुनिक थियोसोफी को इस

1. विषय का पूर्वानुमान करते हुए यह कहा जा सकता है कि "एक भाषा में सोचने" के लिए शब्दों का प्रयोग करना ही आवश्यक नहीं है। एक अशिक्षित असभ्य Choctaw 'चोक्ताउ' इतनी ही आसानी से दो अनुभूतियों के 'काल' और 'लिंग' का व्यतिरेक दिखा सकता है जितना कि एक बहुत कुशल साहित्यिक विद्वान, यद्यपि उसने ऐसे व्यतिरेकों के लिए 'काल' या 'लिंग' जैसे शब्दों को कभी नहीं सुना है। अधिक चिन्तन शब्दों का समावेश बिल्कुल नहीं करता, परन्तु सम्पूर्ण रूपावली, शब्दवर्गों तथा ऐसी व्याकरणिक व्यवस्थाओं, जो व्यक्तिगत चेतना के केन्द्र बिन्दु के "पीछे" या "ऊपर' होती है, उनका व्यवहार कुशलता पूर्वक कर लेता है।

सिद्धान्त का या इस जैसी किसी चीज का पूरा ज्ञान है। यह सिद्धान्त इस तथ्य से ढका हुआ है कि संस्कृत की दार्शनिक शब्दावली, मेरे 'लैंग्वेज' शब्द का सही समानार्थक, भाषायी व्यवस्था के मोटे अर्थों में, प्रस्तुत नहीं करती। भाषायी व्यवस्था समस्त प्रतीकवाद का समावेश करती है। यह सभी प्रतीकवादी प्रक्रियाओं का, सभी प्रसंगों, और तर्क की प्रक्रियाओं का आलिंगन करती है। नाम जैसे पद इस व्यवस्था के उपवर्गों की ओर संकेत करते हैं जैसे शाब्दिक (लैक्सिक) स्तर, स्वनिक स्तर। उसका निकटतम समानार्थक मनस् शब्द है जिसके लिए हमारा अस्पष्ट शब्द "माइण्ड' न्यायसंगत नहीं है। व्यापक अर्थों में मनस् संसार की संरचना में मुख्य आनुक्रमिक सोपान है। यह एक "मानसिक स्तर" है जैसा कि इसे स्पष्ट शब्दों में कहा गया है। यहाँ पर पुन: 'मेन्टल प्लेन' शब्द एक अंग्रेजी भाषी के लिए भ्रामक सिद्ध हो सकता है। अंग्रेजी का शब्द "मेन्टल" एक दुर्भाग्यपूर्ण शब्द है जिसका कार्य हमारी सभ्यता में प्राय: एक बौद्धिक व्याख्या के स्थान पर खड़ा होना मात्र है और एक धुंधले "लिम्बस" सीमित अर्थ का द्योतन करता है न कि अभिरचन-गुणात्मक ब्रह्माण्डीय संरचनात्मक व्यवस्था का। कभी कभी मनस् का प्रयोग केवल व्यक्तिगत 'मन' के अर्थ में भी किया जाता है, यह बात श्री 'फ्रिट्ज़ कुंज्' के अनुसार 'द वॉयस ऑव सायलेन्स' The voice of the Silence की एक प्रसिद्ध उक्ति का विषय है (The mind is the great slayer of the real) मन सत्य का महान घातक है।

यह कहा जाता है कि 'मनस्' के क्षेत्र में दो महान् स्तर हैं जिन्हें रूप तथा अरूप कहा जाता है। निम्नतर क्षेत्र नाम और रूप का है। यहां रूप का अर्थ है स्पेस ("हमारी" त्रिविमात्मक स्पेस) में संगठन। यह व्यापक अर्थ में "पैटर्न" या अभिरचन के साथ सहविस्तारी नहीं है। तथा नाम भाषा या भाषाई क्रम नहीं है परन्तु इसमें केवल एक स्तर है--पदार्थों को नाम देने की प्रक्रिया या सभी बहुविध अनुभूतियों के अंगों के शब्दीकरण या नाम अथवा शब्द प्रदान करने का स्तर है-- उन अंगों को शब्द प्रदान करने का स्तर हैं जिन्हें इस प्रक्रिया के द्वारा अर्धकृत्रिम एकान्त में खड़ा कर दिया जाता है। अत: 'Sky' (आकाश) जैसा एक शब्द, जिसके साथ अंग्रेजी में 'board' (तख्ते) शब्द की भांति व्यवहार किया जा सकता है, The sky, a sky, skies, some skies, piece of sky आकाश, एक आकाश, बहुत से आकाश, कुछ आकाश, आकाश का एक अंश। हमें एक प्रेतछाया या एक अपार्थिव दृश्याकृति के विषय में भी ऐसे ढंग से सोचने की प्रेरणा दे सकता है जो कि अपेक्षाकृत पृथक् स्थूल पिण्डों के विषय में सोचने के लिए उचित ढंग है। Hill (पहाड़ी) तथा Swamp 'दलदल' हमें यह सुझाव देते हैं कि हम पदार्थों में ऊँचाई सम्बन्धी या धरती की रचना सम्बन्धी स्थाई विभेदों को इतना ही भिन्न मानें जितना कि मेज़ और कुर्सियाँ हैं। प्रत्येक भाषा भौतिक-सत्ता के निरन्तर विस्तार एवं प्रवाह का क्रम विच्छेदीकरण अपने-अपने ढंग से करती है। शब्द तथा भाषा एक ही

वस्तु नहीं हैं। जैसा कि हम आगे उल्लेख करेंगे वाक्य-संरचना की अभिरचनाएं जो शब्दों का निर्देशन करती हैं—शब्दों से कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण हैं।

अत: रूप और नाम का स्तर—'आकृति-खण्डीकरण' तथा शब्दावली, भाषाई व्यवस्था के अंग हैं—परन्तु एक कुछ अल्पविकसित एवम् आत्मनिर्भर अंग हैं। यह अंग अधिक ऊँचे संगठन स्तर पर निर्भर करता है—वह स्तर जहाँ इसकी संयोजक योजना प्रकट होती है। वह 'अरूप' स्तर है—अभिरचना-संसार का सर्वोत्कृष्ट रूप। इस 'अरूप' 'रूपरहित' का अर्थ भाषाई रूप या व्यवस्था से रहित होना नहीं है, परन्तु दैशिक, दृश्याकृति या स्पेस में खण्डीकरण के निर्देश के बिना, जैसा हमने पहाड़ी और दलदल के विषय में देखा था, शाब्दिक स्तर पर अर्थनिर्देश का एक महत्त्व-पूर्ण लक्षण है। 'अरूप' अभिरचनाओं का वह क्षेत्र है जिसे दिक् तथा काल के अन्तर्गत—निम्न स्तर की सामग्री में क्रियान्वित किया जा सकता है परन्तु स्वयं दिक्-काल के प्रति उदासीन है। वे अभिरचनाएं शब्दों के अर्थों की तरह नहीं हैं परन्तु कुछ इस ढंग की हैं जिससे 'अर्थ' वाक्य में प्रकट होता है। वे पृथक वाक्यों की तरह नहीं हैं परन्तु वाक्यों की योजना और वाक्य संरचना के अभिरचन की तरह हैं। हमारे व्यक्तिगत चेतन "मन" इन अभिरचनाओं को उन गणितीय या व्याकरणिक सूत्रों के प्रयोग द्वारा सीमित रूप में समझ सकते हैं जिनमें शब्द, मूल्य तथा मात्राओं इत्यादि का प्रतिस्थापन किया जा सकता है। इस अवसर पर एक साधारण सा दृष्टान्त दिया जाएगा।

यह "चेतना के संस्कारों" की सम्भावनाओं के अन्तर्गत है कि mental (मानसिक) क्षेत्र के अरूप स्तर के साथ, चेतना के विस्तृत क्षेत्र में, सीधा सम्पर्क स्थापित किया जा सकता है। Ouspensky के ग्रन्थ A New Modle of the Universe में असाधारण मानसिक अवस्थाओं की वे मोहक झलकियाँ हैं जिन्हें उस दार्शनिक ने अनुभूत किया—परन्तु रूपरेखा मात्र में, क्योंकि ये पूर्णतया अशाब्दिक दृश्य शब्दों में अच्छी तरह नहीं रखे जा सकते। वह हमें उन "चल-लिपिचित्रों" के विषय में बताता है जो पूरी तरह "गणितीय सम्बन्धों" से बने हुए थे और उन लिपिचित्रों की शाखा, प्रशाखा तथा विस्तार के विषय में इस सीमा तक बताता है कि वह विश्व के एक पूर्ण पक्ष की व्याख्या बन जाता है। "औउस्पेंस्की" की गणितीय अभिरुचि तथा उसका ऐसे विषयों का अध्ययन जैसे "अनुक्लीदसीय ज्यामिति" (non-Euclidean-geometry) अति-दिक्—hyperspace —— तथा "काल और चेतना का सम्बन्ध" आदि ने उसे गणितीय सादृश्यों पर बल देने की प्रेरणा दी होगी। गणित एक विशेष प्रकार की भाषा है जिसका विस्तार विशेष-वाक्यों द्वारा किया गया जिनमें 1, 2, 3, 4—संख्या वाचक शब्द हैं तथा X, Y, Z, आदि हैं। परन्तु प्रत्येक भाषा का प्रत्येक अन्य वाक्य-प्रकार भी एक महान व्यवस्था का सम्भावित केन्द्र हो सकता है। विरले ही लोगों को इस प्रकार की चेतना की उपलब्धि स्थायी अवस्था के रूप में प्राप्त होती है तथापि बहुत से गणितज्ञ और वैज्ञानिक भाषिकों को एक क्षणिक झलक में सम्पूर्ण सम्बन्धों की ऐसी व्यवस्था देखने

का अनुभव हुआ होगा जिस पर पहले कभी एक इकाई बनाने का सन्देह भी नहीं हुआ था। उस सम्पूर्ण एवं विशाल व्यवस्था में समरसता और वैज्ञानिक सौन्दर्य क्षण भर के लिए मनुष्य को सौन्दर्यपरक आनन्द की बाढ़ से अभिभूत कर लेते हैं। उदाहरणार्थ यह "देखना" कि किस प्रकार अंग्रेजी भाषा की सभी साधारण ध्वनियाँ ("स्वनिम") तथा उनके योगों को अंग्रेजी के सभी एकाक्षरीय शब्दों के सम्भव रूपों में एक पेचीदा परन्तु सुव्यवस्थित नियम द्वारा समन्वित किया जाता है चाहे वे रूप अर्थयुक्त हैं अथवा अर्थहीन, विद्यमान हैं अथवा ऐसे हैं जिनके विषय में अभी सोचा भी नहीं है, (विशेषता यह है) कि अन्य सभी रूपों का इतने ही अनिवार्य रूप में बहिष्कार किया जाता है जितना कि एक रासायनिक मिश्रण का सूत्र एक प्रकार की डलियों को छोड़ कर अन्य सभी प्रकार की डलियों को बनने से रोक देता है। इसलिए अथवा अभिरचना के सम्पूर्ण सूत्र को दिखाने के लिए, जिसे तथा कथित सर्वस्वानिमिक संरचनात्मक सूत्र कहा जाता है, मुझे एक जरा बड़े कागज की आवश्यकता पड़ेगी, परन्तु मैं इसे यहाँ संक्षिप्त रूप में इस प्रकार प्रस्तुत कर सकता हूं।[2]

$$
\begin{aligned}
&O,\ C\text{–}ng, C_1,\ C_2,\ C_3\ C_4,\ \text{etc} \ldots\ldots \\
&S \pm C_m\, C_n + V + (V_1)O, \pm (r,w,y); \\
&C\text{–}h,\ C'_1\ C'_2,\ C'_3,\ C'_4,\ \text{etc} \ldots\ldots \\
&C'_m C'_n \pm (t/d,\ S/z,\ st/zd).
\end{aligned}
$$

इस सूत्र के अनुसार अंग्रेजी के शब्दों को या तो लिपि प्रतीक दिए जाने चाहिएं या उनकी वर्तनी उस स्वानिमिक वर्तनी के अनुसार होनी चाहिए जिसका विवरण ल्यूनार्ड ब्लूमफील्ड ने अपने ग्रन्थ "लैंग्वेज" में किया है। इस पद्धति में संयुक्त स्वरों का प्रतिनिधित्व एक शुद्ध स्वर (V) तथा अनुवर्ती w या y, (r,w,y) पद से करते हैं जिससे कि **note** का प्रतिलेखन 'nowt' है (या newt होगा जो बोलीगत विभेद पर निर्भर करता है),
date, deyt है और ice ays है। वह भौतिक अथवा अकूस्टिक ध्वनिक स्तर पर सही विश्लेषण है इसका प्रमाण हमें इस तथ्य से मिलता है कि यदि हम ice "आयस्" की फोनोग्राफिक रिकार्डिंग को उल्टें तो हमें sya ध्वनि प्राप्त होगी और यदि हम ठीक ढंग से ysa की फोनोग्राफिक रिकार्डिंग करें और फिर उसे उल्टें तो मशीन "आयस" बोलेगी। अंग्रेजी का यह विश्लेषण अकूस्टिक या ध्वनिक स्तर से दो दर्जे और ऊपर संरचनात्मक स्तर पर भी ठीक उतरता है, क्योंकि ays (आयस) का यस् अभिरचना की उसी

---

2. **वह पूरा सूत्र जिससे इसे संक्षिप्त किया गया है मेरे लेख** (Linguistics as an exact Science) Technol Rev., Dec 1940 Massachusetts Institute of Technology cambridge Mass (P.223 in this volume) **में छपा है और उसकी व्याख्या भी की गई है।**

लीक पर है जिस पर (else) का (ls) है, (Since) सिन्स का ns है तथा (hats) का ts आदि आदि। यह दो व्यंजनों के एक साथ रखने के लिए एक सामान्य संरचनात्मक योजना है ।

अब यदि इस सूत्र में अर्धविरामों को "या" पढ़ लिया जाए तो हमें पता चलेगा कि यह सूत्र सहायक उपसूत्रों की एक बहुत बड़ी श्रेणी के समान है । इनमें से सब से सरल O+V+C–h है, (देखिए यह बड़े सूत्र में किस प्रकार विद्यमान है) जिसका अर्थ है कि शब्द का आरम्भ व्यंजन के बिना किसी भी स्वर से हो सकता है तथा h को छोड़ कर उसका अनुवर्ती कोई भी व्यंजन हो सकता है—जिससे हमें at या it , और if जैसे शब्दों की प्राप्ति होती है । पहले पद को बड़े सूत्र के अगले प्रतीक में बदल कर हमें C–ng+V+C–h की प्राप्ति होती है जिसका अर्थ है कि पहले की तरह अन्त होने वाला शब्द किसी भी व्यंजन से आरम्भ हो सकता है 'केवल ng ध्वनि को छोड़कर" (जो Sing में ng की ध्वनि है) (ng) ध्वनि एक ही वर्ण से लिखी जानी चाहिए परन्तु छापने वाले का ध्यान रखते हुए मैं सामान्य चिन्ह का प्रयोग करूँगा यह अभिरचना शब्दों की एक बहुत बड़ी श्रेणी प्रदान करती है जैसे—hat, bed, dog, man तथा हमें नए शब्द गढ़ने की अनुमति देती है--जैसे tig, nem, zib परन्तु ध्यान रहे कि ngib या zih जैसे शब्दों के लिए नहीं ।

अब तक तो अभिरचनाएँ सरल हैं, परन्तु इससे आगे वे पेचीदा हो जाती हैं। इस संक्षिप्त रूप में सूत्र को अपने साथ छँटे हुए व्यंजनों की सूचियों की श्रेणी की आवश्यकता है यह लाण्ड्री की बहुत सी सूचियों की तरह हैं तथा प्रत्येक सूची का प्रतिनिधित्व इन प्रतीकों में से कोई एक करता है जैसे— C_1, C_2 इत्यादि । C_1 C_2 सूत्र का अर्थ है कि आप शब्द का प्रारम्भ C_1 सूची के किसी भी व्यंजन से कर सकते हैं और इसके पीछे सूची का कोई भी व्यंजन आ सकता है जिसमें केवल r और l है। क्योंकि C_1 में p, b f है। अतः उदाहरणार्थ हम 'Pray', 'Play', brew, blew, free, flee तथा 'frig, blosh आदि निरर्थक शब्द बना सकते हैं। परन्तु मान लीजिए कि हमें एक शब्द की आवश्यकता है जो Sr, Zr, tl या dl से आरम्भ होता हो, तो हम अपनी C_1 सूची देखते हैं परन्तु हमें आश्चर्य होगा कि s, z, t, या d वहाँ हैं ही नहीं। हम किंकर्त्तव्यविमूढ़ से हो जाते हैं । तब हम दूसरी सूचियों को उठाते हैं परन्तु हमारी हालत पहले से कुछ अच्छी नहीं है। इस सूत्र के अनुसार अपनी सूचियों को जोड़ने का कोई ऐसा मार्ग नहीं मिलता जिससे कि हम आदि व्यंजन संयोगों को प्राप्त कर सकें। स्पष्ट है कि इस प्रकार के शब्द अंग्रेजी भाषा में हैं ही नहीं और अधिक बड़ी बात तो यह है कि कोई उदीयमान Lewis Carrolls या Edward Lears भी रहस्यपूर्ण ढंग से ऐसे शब्द गढ़ने से इन्कार कर देगा। इस से स्पष्ट है कि शब्दों का गढना निर्बाध कल्पना का कार्य नहीं है, इससे यह सिद्ध होता है कि बिल्कुल ही अनर्गलता की बेढंगी उडान में भी शब्दों का गढ़ना निर्बाध कल्पना का काम नहीं है अपितु पहले ही अभिरचित सामग्री का अनिवार्य रूप से

प्रयोग करना है। यदि किसी अंग्रेजी भाषी से यह कहा जाए कि वह ऐसे शब्द का आविष्कार करदे जो भाषा की इस अभिरचना में पहले नहीं है।तो उसका उत्तर ऐसा ही नकारात्मक होगा जैसा कि उस व्यक्ति का होगा जिससे कहा जाए कि अण्डों के बिना ही तले हुए अण्डे तैयार कर दे।

अतः यह सूत्र उन सभी संयोगों को एकत्रित करता है जो अंग्रेजी के एकाक्षरीय शब्द या शब्द जैसे रूपों में पाए जाते हैं, और उन सबका निषेध करता है जो उन में नहीं है या नहीं आ सकते। इसमें सूत्र के अन्तर्गत Glimpsed का mpst' है, Sixths का ksths है, ftht है he fifthed it का, nchst विचित्र भले हो परन्तु सम्भव है, Thoumunchst it greedily और अन्य ढेर सी अटपटी एवं खुरदरी ध्वनियाँ हैं जो हमारे मुँह के लिए स्निग्ध एवं सहज बन जाती हैं, परन्तु वे ही ध्वनियाँ अन्यथा हमें भौचक्केपन से देखने पर बाध्य कर सकती थीं और हंफा सकती थी। दूसरी ओर, यह सूत्र अनगिनित सरल गुच्छों का, निषेध करता है जैसे—'litk' 'fpat' 'nwelng' 'dzogb' तथा अन्य बहुत से, ये सब गुच्छ कुछ भाषाओं के लिए सम्भव हैं तथा सरल हैं परन्तु अंग्रजी के लिए नहीं।

यह स्पष्ट हो जाएगा कि हमारे एकाक्षरीय शब्दों में संरचना की अविश्वसनीय जटिलता है तथा 'सरलता' अभिव्यंजित करने वाली पुरानी मुख-बन्धनी, जैसे "इसे एकाक्षरीय शब्दों में कहिये", सूक्ष्मतर अर्न्तदृष्टि के दृष्टिकोण से एक सब से अधिक पक्की बकवास है, तथा ऐसी अर्न्तदृष्टि के लिए ऐसी पिष्टोक्तियाँ इस सत्य का प्रमाण हैं कि जो लोग सरलतापूर्वक तथा धारा प्रवाह में भाषा की पेचीदा व्यवस्था का प्रयोग करते हैं, वे लोग उन व्यवस्थाओं के अस्तित्व के प्रति तब तक पूर्णतया, अन्धे या बहरे होते हैं जब तक कि उन्हें उस के विषय में कुछ कठिनाई के साथ संकेत न दिया जाए।

और यह कहावत कि "जैसा ऊपर है वैसा ही नीचे है" यहाँ पर पूर्णतया संगत है। जैसा नीचे, भाषा के स्वानिमिक स्तर पर महत्त्वपूर्ण व्यवहार का नियन्त्रण व्यक्तिगत चेतना के केन्द्र से बाहर स्थित अभिरचना द्वारा किया जाता है, अतः ऐसा ही नियंत्रण भाषा के उन उच्चतर स्तरों पर किया जाता है जिन्हें हम विचारों की अभिव्यक्ति कहते हैं। जैसा कि हम भाग दो में देखेंगे कि चिन्तन भी मार्गों के एक ऐसे जाल का अनुसरण करता है जिसे किसी एक भाषा में बिछाया जाता है—भाषा जो एक ऐसी व्यवस्था है जो वास्तविकता के कुछ पक्षों पर, और बौद्धिकता की कुछ अवस्थाओं पर व्यवस्थित रूप में ध्यान केन्द्रित कर सके तथा अन्य भाषाओं में मिलने वाली व्यवस्थाओं का व्यवस्थित रूप में बहिष्कार कर सके। व्यक्ति विशेष इस व्यवस्था के विषय में नितान्त अनभिज्ञ होता है और इसके अभेद्य बन्धनों में पूर्णतया बन्दी बना रहता है।

II

हमने भाग I में देखा कि भाषाई तथा मानसिक तथ्यों में महत्त्वपूर्ण व्यवहार (या दोनों—'व्यवहार' और 'महत्त्व' एक ही हैं जब तक कि वे परस्पर बन्धे हुए

रहते हैं) का नियन्त्रण एक विशिष्ट व्यवस्था या संगठन द्वारा किया जाता है अर्थात्—आकृति सिद्धान्तों की एक ज्यामिति द्वारा जो प्रत्येक भाषा की अपनी विशेषता है। यह 'संगठन' व्यक्तिगत चेतना के संकुचित वृत्त के बाहर से थोपा जाता है, उस चेतना को कठपुतली मात्र बना दिया जाता है जिसकी भाषाई युक्तियों को अभिरचना के अभेद्य तथा अतर्कित बन्धनों में जकड़ दिया जाता है। यह कुछ इस प्रकार है जैसे कि व्यक्तिगत मन जो शब्दों को तो चुनता है परन्तु अभिरचना से अधिकतर अनभिज्ञ है—मानो वह मन किसी अन्य उच्चतर तथा बहुत अधिक बुद्धिमुक्त मन की जकड़ में है जिसे घरों, बिस्तरों, और दलिये की पतीलियों के विषय में बहुत कम ज्ञान है। परन्तु वह उन पैमानों तथा उन सीमाओं का व्यवस्थीकरण तथा गणितीकरण कर सकता है जिसके समीप तक भी स्कूल का कोई गणितज्ञ कभी नहीं पहुँचा होगा।

और अब "इन्सानी बिरादरी" का यह महान् तथ्य प्रकट होता—कि सभी मानव इस विषय में एक समान हैं। जहाँ तक कि हम भाषा के व्यवस्था-विज्ञान द्वारा अनुमान लगा सकते हैं वह यह है कि पापुअन शिकारी का उच्चतर मन या 'अचेतन' उतनी ही अच्छी तरह गणितीकरण कर सकता है जितना कि आइन्स्टाइन का, और इसके विपरीत एक वैज्ञानिक और गँवार, एक विद्वान और आदिवासी, सभी अपनी व्यक्तिगत चेतना को बड़े धुँधले से ढंग से प्रयुक्त करते हैं और एक ही प्रकार के तर्कसंगत अवरोध में फँसते हैं। वे इस मनोहर एवं अटल व्यवस्था से, जो उनका नियन्त्रण करती है, ऐसे ही अनभिज्ञ हैं जैसे कि एक ग्वाला (कॉस्मिक) ब्रह्मांडीय किरणों से अनभिज्ञ होता है। बात करने या तर्क-वितर्क करने में प्रयुक्त प्रक्रिया के विषय में उनका ज्ञान शुद्ध रूप से कृत्रिम, बाह्य तथा व्यावहारिक है, जिसकी तुलना बालिका 'स्यूस्मिथ' के रेडियो विषयक ज्ञान से की जा सकती है जिसे वह इस प्रकार घुमाती है मानो सोने के समय की कहानी का आह्वान कर रही हो। कुछ लोग इस अज्ञान का बहुत बड़ा लाभ उठाने की प्रबल प्रवृत्ति रखते हैं ताकि वे मन के कार्यों को अच्छी तरह समझने के प्रयत्नों की निन्दा कर सकें। यदि निन्दक एक देहाती गँवार है तो वह इसे "असम्भव" या "सिद्धान्तीय" बात कह कर टालना चाहेगा और यदि उसने वैज्ञानिक की परम्परागत सही पोशाक पहन रखी है तो वह इसे "तत्त्वमीमांसा', 'रहस्यवाद', 'ज्ञानमीमांसा' कह डालेगा। पाश्चात्य सभ्यता में भाषा पर खोज करने वालों के लिए 'मान्यता' का अनिच्छापूर्ण मधु तथा अत्यन्त अल्पमात्रा में पुरस्कार सुरक्षित रखे हैं, यद्यपि उसे मानव की उस स्वाभाविक प्रवृति का प्रतिकार करना पड़ता है जो भाषा को रहस्यपूर्ण मानती है। जैसा कि वह है ही, तथा इसे सर्वाधिक रोचक विषयों में से एक मानती है—यह विषय ऐसा है जिसके विषय में लोग अवैज्ञानिक ढंग से चर्चा करना तथा कल्पनाएँ करना पसन्द करते हैं तथा शब्दों के अर्थों का अनन्त रूप से विवेचन करना चाहते हैं, या यह चर्चा उन्हें अच्छी लगती है कि ओशकोश के आदमी को बोस्टन से आने वाले व्यक्ति की या बोस्टन के लोगों को ओशकोश से आने वाले व्यक्ति की भाषा किस प्रकार

अटपटी लगती है इत्यादि। उच्चतर मन किसी भी, प्रकार का शुद्ध बौद्धिक करतब दिखाने की क्षमता रखता हुआ तो प्रतीत होता है परन्तु व्यक्तिगत स्तर पर 'सचेत" होता हुआ प्रतीत नहीं होता। अर्थात् यह व्यावहारिक मामलों तथा व्यक्तिगत अहंकार के अपने निजी समीपवर्ती पर्यावरण पर ध्यान केन्द्रित नहीं करता। कुछ स्वप्न तथा असाधारण मानसिक अवस्थाएं हमें इसे इसके अपने मानसिक स्तर पर 'चेतन' मान लेने का संकेत दे सकती हैं और यदाकदा इसकी चेतना उसके द्वारा व्यक्तित्व तक आ सकती है, परन्तु योग जैसे कुछ तकनीकों को छोड़कर यह साधारणतया व्यक्तिगत चेतना के साथ कोई सम्बन्ध नहीं बनाता। हम इसे उच्चतर अहंकार कह सकते हैं—यह ध्यान में रखते हुए कि इसका एक विशेष गुण जो प्रत्येक भाषा के द्वारा प्रकट होता है, और इसकी एक ध्यानाकर्षक समानता व्यक्तिगत आत्मा से है अर्थात् यह अपनी व्यवस्थाओं का संगठन तीन या अधिक सार्वनामिक "पुरुष" कोटि के एक केन्द्र के चारों ओर करता है, जो 'एक' पर केन्द्रित है जिसे हम प्रथम-पुरुष एक वचन कहते हैं। यह किसी भी भाषायी व्यवस्था में कार्य कर सकता है—एक बालक किसी भी भाषा को पूरी तत्परता से सीख सकता है—पृथक् पृथक् अनुतानों तथा बलाघातों वाले एकाक्षरीय शब्दों वाली चीनी भाषा से लेकर वान्कुवेर द्वीप की नूतका भाषा तक जिसमें अधिकतर एकशब्दीय वाक्य हैं जैसे mamamamama hln' iqk' ok ma qama (उन में से प्रत्येक ने ऐसा किया क्योंकि वे श्वेत लोगों से मिलने वाली विशेषताओं से युक्त है) [3]।'

उच्चतर मन की व्यवस्थात्मक तथा आकृतिपरक प्रकृति होने के कारण, भाषा का अभिरचनात्मक पक्ष सदैव lexation या 'नाम देने की प्रक्रिया' के पक्ष को अभिभूत एवं नियन्त्रित करता है। अतः विशिष्ट शब्दों के अर्थ इतना महत्त्व नहीं रखते जितना कि हम बड़े प्यार से कल्पना करते हैं। भाषा का सार वाक्य है न कि शब्द, ठीक इसी तरह जैसे (Equation) समीकरण तथा (function) फलन गणित के वास्तविक तत्त्व हैं न कि अकेले संख्यावाचक। हमारा सामान्य विश्वास, कि किसी शब्द का एक "निश्चित अर्थ" होता है, गलत है। हम देख चुके हैं कि उच्चतर मन उन प्रतीकों का व्यवहार करता है जिनका किसी एक निश्चित पदार्थ की ओर संकेत नहीं है, अपितु वे (ब्लैंक चेक) कोरे चेक की तरह हैं, जिन्हें आवश्यकतानुसार किसी भी विशिष्ट परिवर्तनीय मूल्य जैसे उपरोक्त सूत्र में C's और V's या बीजगणित के x, y, z आदि के लिए भरा जा सकता है। यह एक विचित्र पाश्चात्य धारणा है कि उन प्राचीन लोगों ने जिन्होंने बीज गणित का आविष्कार किया एक

---

3. इस शब्द तथा वाक्य में केवल एक नाम या शब्द है mamahl या "श्वेत जाति का व्यक्ति"। शेष समस्त व्याकरणिक रचना है जो किसी भी चीज का निर्देश कर सकती है। गुड़िया के लिए नुत्का नाम या शब्द पर यदि ये ही प्रक्रियाएँ की जाएँ तो उसका अर्थ होगा, 'इनमें से प्रत्येक ने ऐसा किया क्योंकि उनमें गुड़िया की समानता थी'।

बहुत बड़ी खोज की थी यद्यपि मानव का अचेतन मन इसी प्रकार का कार्य युगों से करता आया है। प्राचीन 'माया' लोग या प्राचीन हिन्दू आश्चर्यचकित कर देने वाले गणित-ज्योतिषीय संख्याओं के आवर्तनों पर आवर्तनों का व्यवहार मानव होने के कारण ही करते रहे हैं। हमें किसी प्रकार भी यह सोचने की गल्ती नहीं करनी चाहिए कि शब्द, चाहे उनका प्रयोग निम्न व्यक्तिगत मन द्वारा किया जा रहा है, इन परिवर्तनीय प्रतीकों के विपरीत ध्रुवों का प्रतिनिधित्व करते हैं, और यह कि एक शब्द का एक निश्चित अर्थ होता है, वह एक दत्त वस्तु के लिए प्रतीक होता है तथा किसी एक परिवर्तनीय (Variable) का एक मूल्य है।

निम्न मन ने भी भाषा की बीजगणितीय प्रकृति को समझ लिया है अतः 'शब्द' शुद्ध अभिरचनाओं (अरूप) के परिवर्तनीय प्रतीकों तथा सच्ची नियत मात्राओं के बीच की वस्तु है। अर्थ का वह अंश जो शब्दों में है और जिसे हम "निर्देश" या, समुद्देश्य कह सकते हैं केवल सापेक्ष रूप में ही नियत है। शब्दों का निर्देश या समुदेश्य उन वाक्यों तथा व्याकारणिक अभिरचनाओं की दया पर निर्भर करता है जिनके बीच वे प्रयुक्त होते हैं। और यह आश्चर्यजनक बात है कि यह निर्देश तत्त्व किस प्रकार न्यूनतम मात्रा तक घटाया जा सकता है। यह वाक्य I went all the way down there just in order to see Jack (मैं यहाँ से सारे रास्ते वहाँ नीचे इसलिए गया कि जैक को देख सकूँ) केवल एक सुनिश्चित पक्का निर्देश रखता है–अर्थात्–"जैक"। शेष सब केवल एक अभिरचना मात्र है जो किसी पदार्थ के साथ विशिष्ट रूप से सम्बद्ध नहीं। 'See' का भी स्पष्ट रूप से वह अर्थ नहीं जिसकी अपेक्षा की जा सकती है अर्थात्—'एक दृष्टिगत बिम्ब की प्राप्ति'।

या, पुनः, शब्द निर्देश में हम परिमाणों का विवेचन उसे परिमाण श्रेणियों में विभक्त करके करते हैं–छोटी, मध्यम, बड़ी और बहुत बड़ी इत्यादि। परन्तु 'परिमाण' वस्तुगत दृष्टि से श्रेणियों में विभक्त नहीं होता है परन्तु सापेक्षता का एक शुद्ध सातंत्यक (Continuum) है; तथापि हम निरन्तर परिमाण के विषय में वर्गों की एक श्रेणी के रूप में सोचते हैं क्योंकि भाषा ने अनुभूति का खण्डीकरण तथा नामकरण इसी तरह किया है। संख्यावाचक शब्दों का निर्देश उन संख्याओं की तरफ नहीं होता जिनकी गणना होती है बल्कि लोचयुक्त सीमाओं वाली संख्या श्रेणियों की ओर होता है। अतः अंग्रेजी भाषा का शब्द few अपने क्षेत्र को, निर्देश के परिमाण, महत्त्व तथा दुर्लभता के अनुसार व्यवस्थित करता है। 'few' कुछ राजा, युद्धपोत, या हीरे-केवल तीन या चार हो सकते हैं, और (कुछ) 'few' (peas etc) 'कुछ मटर', 'कुछ वर्षा की बूंदें', या 'चाय की पत्तियाँ' तीस या चालीस हो सकती है।

आप कह सकते हैं कि हाँ, निस्सन्देह यह large, small आदि जैसे शब्दों के विषय में सत्य है, स्पष्ट रूप में वे सापेक्ष्य पद हैं, परन्तु dog, tree, house जैसे शब्द भिन्न हैं—उनमें से प्रत्येक एक विशिष्ट वस्तु का नाम है। परन्तु बात ऐसी नहीं है, ये पद भी उसी नाव में सवार है जिसमें Large और small, किसी विशेष व्यक्ति द्वारा किसी विशेष समय में कहे गए fido शब्द का निर्देश एक विशिष्ट वस्तु की

ओर हो सकता है परन्तु शब्द लोचमयी सीमाओं वाली एक श्रेणी का निर्देश करता है। ऐसी श्रेणियों की सीमाएँ विभिन्न भाषाओं में विभिन्न होती हैं। शायद आप यह सोच बैठे कि शब्द (tree) का अर्थ सर्वत्र तथा प्रत्येक व्यक्ति के लिए वही वस्तु है। परन्तु ऐसा बिल्कुल नहीं है। पोलिश भाषा का शब्द जिसका अर्थ-वृक्ष है, उसी का अर्थ 'wood' लकड़ी भी होता है । सन्दर्भ तथा वाक्य अभिरचना ही यह निश्चित करते हैं कि पोलिश शब्द (या कोई शब्द, किसी भाषा में) किस प्रकार के विषय की ओर संकेत करता है। होपी भाषा में, जो Arizonaकी अमरीकी–इण्डियन भाषा है, कुत्ते के लिए 'pohko' शब्द का अर्थ किसी भी प्रकार का पालतू पशु या घरेलू पशु है। इस प्रकार होपी भाषा में pet eagle पालतू गिद्ध का शाब्दिक अर्थ eagle dog' 'गिद्ध कुत्ता' है, और इस प्रकार सन्दर्भ को नियत करके होपी भाषी इसके पश्चात् उसी 'eagle' को अमुक व्यक्ति का pohko कह कर निर्दिष्ट करता है ।

परन्तु, ताकि ऐसा न हो कि इसे 'प्राचीन' भाषा की सनक समझ कर छोड़ दिया जाए (और कोई भी भाषा 'प्राचीन' नहीं है) आओ, हम अपनी प्यारी भाषा अंग्रेजी की एक और झांकी देखें। 'hand' शब्द लीजिए । His hand में यह शब्द मानव शरीर पर एक स्थान का संकेत करता हैOur landमें यह असाधारण रूप से भिन्न विषय का निर्देश करता है, " all hands on deck' में एक अन्य प्रसंग को दिखाता है, goob hand at gardening में दूसरे को, 'he held a good hand (at Cards) में किसी दूसरे को, 'जबकि he got the upper hand' में यह शब्द किसी अर्थ का संकेत नहीं करता अपितु अभिविन्यास की अभिरचना में विलीन हो जाता है। लोहे की छड़ अथवा वाक्यांशों में प्रयुक्त bar शब्द को देखिए, (लोहे की छड़)'Iron bar, bor to progress' (उन्नति में बाधा,) he should be behind bars (उसे जेलखाने में होना चाहिए) studied for the bar (उसने कानून की शिक्षा प्राप्त की,) let dowu all the bars (सभी बन्धनोंहको तोड़ दिया) bar of music (संगीत दण्ड),Sand bar (बालू भित्ति),Candy bar (मिसरी की डली), mosquito bar (मच्छरदानी का डण्डा), bar sinister, (अमंगल का निषेध करो), bar none (किसी का निषेध न करो), Ordered drinks at the bar (मधुशाला में शराब के लिए आदेश दिया) ।

परन्तु आप कह सकते हैं कि ये तो प्रसिद्ध मुहावरे हैं। भाषा का वैज्ञानिक और तर्कसंगत प्रयोग नहीं । ओह, बेशक । "Electrical" विद्युतीय (विद्युत सम्बन्धी) एक वैज्ञानिक शब्द माना जाता है । क्या आप जानते हैं कि इसका संकेतित पदार्थ क्या है? क्या आप यह भी जानते हैं कि electrical शब्द "electrical apparatus" (बिजली का संयन्त्र) में वही नहीं है जो "electrical expert" (बिजली के काम में 'दक्ष') में है। प्रथम प्रयोग में यह संयंत्र में बिजली के प्रवाह की ओर संकेत का निर्देश करता है परन्तु दूसरे में यह कुशल व्यक्ति में बिजली के प्रवाह का संकेत नहीं करता । जब "group" जैसा एक शब्द काल के अन्तर्गत पक्षों के अनुक्रम, अथवा भूमि पर वस्तुओं के ढेर ी

ओर संकेत कर सकता है, तो इसके संकेतन का तत्त्व गौण है। वैज्ञानिक शब्दों से संकेतित पदार्थ प्राय: "अस्पष्ट" होते हैं, विशेष रूप से उन अभिरचनाओं के प्रभाव के अन्तर्गत जिनमें वे पाए जाते हैं। यह बहुत ही अर्थगर्भित बात है कि यह वैशिष्टय (Babbittry) 'बेबिट्री' (बैबिट के धातु के प्रयोग की कला) का प्रमाणांक होने से बहुत दूर की चीज़ है फिर भी बौद्धिक चर्चाओं में, आश्चर्यजनक कथाओं, तथा प्रेम की भाषा में सर्वाधिक दिखाई पड़ता है। और ऐसा होना आवश्यक है क्योंकि विज्ञान, काव्य, और प्रेम इन दृष्टियों से समान है कि ये सभी, शाब्दिक संकेतों तथा साधारण से नीरस विस्तारों के दास जगत् में बहुत दूर तथा ऊँची उड़ानें हैं, व्यक्तिगत आत्मा के तुच्छ संकीर्णतायुक्त दृष्टिकोण को विशाल बनाने के निमित्त "प्रयास" है, अरूप की ओर, अनन्त समन्वय, सहानुभूति तथा अपरिवर्तन शील सत्य एवं अमर पदार्थों की व्यवस्थाओं के संसार की ओर 'उन्नयन' है। और जबकि सभी शब्द अपनी केवल "letter that killeth" दशा के कारण दयनीय हैं—निश्चित है कि वैज्ञानिक शब्दावली जैसे ',force' (शक्ति) "average" औसत, "sex', 'सेक्स" "allergic" 'एलर्जिक' "biological" ('जीवशास्त्रीय' कुछ कम दयनीय नहीं है और अपने ढंग में "sweet" (मीठा) "gorgeous" (शानदार) 'rapture' (आनन्दातिरेक) enchantment (सम्मोहन) "heart" (हृदय) 'soul' (आत्मा) 'star dust' (तारिका धूलि) आदि से अधिक निश्चित अर्थों वाले नहीं हैं। आपने सम्भवत: (star dust) 'स्टार डस्ट' के विषय में सुना होगा—यह क्या चीज़ है? क्या यह नक्षत्रों का एक पुंज है, या चमकीला पाउडर है, या मंगल नक्षत्र की मिट्टी है, आकाश गंगा है, दिवास्वप्नों की एक अवस्था है, काव्यमयी कल्पना है या स्वत: जलनशील लोहा है, या सर्पिल नीहारिका (नेबुला) है, या "पिट्सबर्ग" का निकटवर्ती उपनगर है, या एक प्रचलित गीत है? आप नहीं जानते और न ही कोई दूसरा ही जानता है। क्योंकि 'शब्द' केवल एक शब्दीकरण (Lexation) है, दो नहीं है अत: इसका अपना कोई निर्दिष्ट अर्थ नहीं है। कुछ शब्द इसी प्रकार के हैं।[4]

जैसा कि हम देख चुके हैं कि निर्देश अर्थ का छोटा भाग है, अभिरचन बड़ा भाग है। विज्ञान, अर्थात् 'सत्य की खोज", प्रेम की भांति एक दिव्य उन्माद है। और संगीत? क्या यह भी उसी श्रेणी में नहीं? संगीत एक अर्धभाषा है, जो ((लेक्सेशन" या शब्दी-करण का विकास किए बिना पूर्णतया अभिरचनों पर आधारित है।

कभी कभी निर्दिष्टार्थ पर अभिरचना का प्रभुत्व बड़ा विचित्र परिणाम उत्पन्न करता है, विशेष रूप से तब जबकि एक अभिरचना ऐसे अर्थों को उत्पन्न कर देती है जो "नाम" के मौलिक संकेतितार्थ से, (अभिधार्थ) से बिल्कुल परे होते हैं। तब निम्न

4. 'Kith' तथा 'thore' " की तुलना कीजिए जिनका कोई अर्थ नहीं है और उनका प्रभाव तब तक, भ्रामक— है जब तक कि उन्हें "kith & kin", and "in thores of" आदि अभिरचनाओं में न देखा जाए।

मन भ्रामक स्थिति में पड़ जाता है और वह यह नहीं समझ पाता कि कुछ शक्तिशाली सूत्र इस पर अप्रतिरोध्य प्रभाव डाल रहे हैं; तथा वह मनमाने ढंग से प्रसन्नतापूर्वक चैन के साथ अपनी मनपसन्द स्पष्ट सी व्याख्याओं की शरण ले लेता है तथा उन सब वस्तुओं को देखकर, और "वस्तुओं" के विषय में सुनकर जो उसकी व्याख्या में सहायक सिद्ध होती हैं वह अपनी व्याख्याएँ प्रस्तुत करने लगता है। "Asparagus" शब्द प्रथम भाग में दिखाए गए शुद्ध रूप में "ध्वन्यात्म अंग्रेजी अभिरचना के दबाव से पुनर्गठित 'Sparagras' के रूप में पुनर्गठित हुआ है, और फिर क्योंकि 'Sparrer' 'Sparrow' (चिड़िया) शब्द का बोलीगत रूप है, इसलिए 'Sparrow-grass' शब्द मिलता है, और तत्पश्चात् हमें धार्मिक मान्यता प्राप्त ऐसे विवरण प्राप्त होते हैं जिनमें चिड़ियों का इस घास के साथ सम्बन्ध दिखाया गया है। 'Cole slaw' जर्मन भाषा के 'Kohlsalat' से बना है 'गोभी का सलाद' परन्तु अभि रचना के दबाव के कारण यह 'cold slaw' में पुनर्गठित हो गया है और इसने कुछ प्रदेशों में एक नए नाम 'slaw' को जन्म दिया तथा परिणामस्वरूप एक नया भोज्य पदार्थ 'hot slaw' प्रचलित हो गया। बच्चे प्रायः निरन्तर पुनरभिरचन करते रहते हैं परन्तु वयस्कों के उदाहरण का दबाव अन्ततः उनकी भाषा को भी सामान्य स्तर पर ले आता है, उन्हें सीखना पड़ता है कि 'Mississippi', Mrs. Sippy नहीं है और equator पशुशाला का 'lion' (शेर) नहीं, परन्तु एक काल्पनिक रेखा है। कभी कभी वयस्कों के पास इतना ज्ञान नहीं होता जितना कि संशोधन के लिए आवश्यक है। न्यू इंग्लैण्ड के कुछ भागों में एक विशेष प्रकार की फारसी बिल्लियाँ हैं जिन्हें 'Coon' कून कैट कहा जाता है। और इस नाम ने इस धारणा को जन्म दिया है कि ये बिल्लियाँ बिल्ली तथा 'रकून' की संकर संतान हैं। प्रायः जीवविज्ञान से अनभिज्ञ लोगों का तो यह दृढ़ विश्वास है क्योंकि भाषाई अभिरचना का प्रभाव (पशु नाम–I पशु नाम II को परिवर्तित करता है) रकून पशु के शारीरिक गुणों को बिल्ली के शरीर में स्थित 'देखने' (या मनोवैज्ञानिक जिसे (प्रोजेक्ट) आरोपण कहते हैं) का कारण बनता है, वे उसकी घनी पूंछ लम्बे बाल आदि की ओर संकेत करते हैं। मुझे एक सच्ची घटना का पता है–एक महिला जिसके पास एक सुन्दर "कून कैट" थी वह प्रायः अपने मित्र का कड़ा विरोध करती हुई अपने मित्र से कहा करती थी, क्यों ? जरा देखो न इसकी ओर ! इसकी पूंछ-इसकी विचित्र आँखें—क्या आप देख नहीं सकते ? "मूर्ख न बनिये", उसके अधिक शिष्ट मित्र ने कहा। "अपने प्राकृतिक इतिहास के विषय में सोचिये", "कून बिल्लियों के साथ प्रजनन नहीं कर सकते। वे दूसरे परिवार से सम्बन्ध रखते हैं। परन्तु उस महिला को क्योंकि पूर्ण विश्वास था, अतः उसने एक प्रसिद्ध जीव-विज्ञानी को बुलाकर अपने विश्वास की पुष्टि करानी चाही। कहते हैं कि उसने सीधी व्यवहार कुशलता से उत्तर दिया कि "यदि आप ऐसा सोचना चाहती हैं तो सोच सकती हैं।" उस महिला ने बड़े रोष के साथ बाद में अपने मित्र को बताया, "ओह ! वह तुमसे भी अधिक क्रूर था," और पूरी तरह विश्वस्त रही कि उसकी पालतू बिल्ली एक आशिक मिजाज रकून तथा एक अवारा बिल्ली के मेल का परिणाम थी। जरा बड़े

पैमाने पर परन्तु ठीक इन्हीं तरीकों से निहित स्वार्थों से उत्पन्न माया के जाल बुने जाते हैं। मुझे किसी ने बताया कि "कून बिल्लियों का नाम किसी कैप्टेन कून के नाम पर पड़ा है जो पहली बार अपने जहाज द्वारा इन बिल्लियों को फारिस से (Maine state) माइने प्रदेश में लाया था।

अधिक सूक्ष्म विषयों में हम सब अनजान में किसी विशिष्ट भाषा के भाषाई सम्बन्धों का समस्त विश्व पर अध्यारोपण कर देते हैं और वे उन्हें वहाँ 'देखते' भी हैं जैसे कि उस भद्र महिला ने भाषाई सम्बन्ध ('Coon'=Raccoon) को अपने पशु में प्रकट होते हुए देखा। हम कहते हैं कि उस 'लहर' को देखिए–ठीक उसी ढंग से जैसे हम "उस घर को देखिए' कहते हैं। परन्तु भाषायी अध्यारोपण के बिना आज तक किसी ने एक लहर को नहीं देखा है। हम केवल तल को सदैव परिवर्तनशील तरंगित गति में देखते हैं। कुछ भाषाएँ 'एक लहर नहीं कह सकतीं वे वास्तविकता के अधिक निकट हैं। होपी लोग **Walalata** (बहु व० तरंगण होता है) कहते हैं, और वे हमारा ध्यान उस तरंगण में एक स्थान पर आकृष्ट करते हैं, क्योंकि एक स्थान पर ही हम देख सकते हैं। परन्तु, क्योंकि वास्तव में एक लहर अकेली विद्यमान नहीं रह सकती–'Wala रूप जो हमारे एक वचन का सम्पाती है, वह अंग्रेजी के 'a wave' का समानार्थक नहीं, परन्तु उसका अर्थ "एक छलक" होता है, ऐसी छलक जो किसी द्रव पदार्थ से भरे घड़े में झटका लगने पर उठती है।

अंग्रेजी की अभिरचना 'I **hold** it को भी ठीक ऐसा ही मानती है जैसा कि I **strike it** को (मैं इस पर वार करता हूँ), या 'I tear it (मैं इसे फाड़ता हूँ) को, तथा असंख्य अन्य विषयों को जो "पदार्थ" परिवर्तन लाने वाली क्रियाओं को द्योतित करते हैं। तथापि 'hold वास्तव में कोई क्रिया नहीं है, अपितु सापेक्ष्य अवस्थाओं की एक स्थिति है। परन्तु हम इसे मानते हैं, और इस क्रिया के रूप में देखते भी हैं, क्योंकि भाषा इस समस्या को भी उसी प्रकार व्यवस्थित करती है जैसे कि एक अधिक साधारण विषयों की गतियों और परिवर्तनों से सम्बन्धित एक अधिक साधारण विषयों की श्रेणी को। हम hold 'पकड़ना' पर क्रिया का आरोप इसलिए करते हैं क्योंकि "संज्ञा+क्रिया=कर्त्ता+उसकी क्रिया (उसका कर्म) यह सूत्र हमारे वाक्यों में प्राथमिक हैं। अतः हम बहुत से विषयों में प्रकृति के अन्दर कृत्रिम क्रियाशील इकाइयों को देखने पर बाध्य हो जाते हैं क्योंकि हमारे वाक्य-अभिरचन क्रिया रूपों से, यदि वे आज्ञार्थ नहीं हैं तो, एक पूर्ववर्ती संज्ञा शब्द की अपेक्षा करते हैं। हमारे लिये यह कहना अनिवार्य हो जाता है It flashed "यह चमका" या a light flashed "एक प्रकाश चमका" जिसमें हमें 'it यह या (a light) एक प्रकाश को flash या चमकना "क्रिया" के कर्त्ता के रूप में स्थापित करना पड़ता है परन्तु flashing "चमकना" और light प्रकाश एक ही चीज़ हैं। यहाँ कोई चीज़ ऐसी नहीं जो कुछ करती हो, न ही कुछ "किया जाता है"। होपी भाषा केवल rehpi कहती है। होपी में बिना कर्त्ता के क्रिया रूप हो सकते हैं और यह विशेषता उस भाषा को तर्कसंगत व्यवस्था की शक्ति प्रदान करती है, जिसके द्वारा वह ब्रह्माण्ड के कुछ पक्षों

को समझ सकती है। वैज्ञानिक भाषा जो पाश्चात्य भारोपीय भाषाओं पर आधारित है न कि होपी पर, प्रायः उन स्थानों पर भी क्रियाओं और शक्तियों को देखती है जहाँ पर केवल "अवस्थाएँ" हैं। क्या आप इसे सम्भव नहीं मानते हैं कि वैज्ञानिक अथवा बिल्ली रखने वाली महिलाएँ—सभी अनजाने में एक विशेष प्रवाह की भाषा की भाषाई अभिरचनाओं का आरोपण ब्राह्माण्ड पर करते हैं और वे उन्हें स्वयं प्रकृति के आनन पर प्रकटित होते हुए भी देखते हैं। भाषा में परिवर्तन हमारी ब्रह्माण्ड संबंधी धारणा को बदल सकता है।

यह सब उस निम्न व्यक्तिगत मन का वैशिष्ट्य है जो उसके मार्गों के लिए भी अबोधगम्य, बृहत्तर जगत् की पकड़ में होने के कारण अपनी भाषा की विचित्र प्रतिभा को माया का जाल बुनने में, वास्तविकता का अन्तिम विश्लेषण करने तथा उसी को अन्तिम मान लेने में प्रयुक्त करता है। इस विषय में पाश्चात्य सभ्यता सबसे आगे जा चुकी है, उस अन्तिम विश्लेषण को सुनिश्चित पूर्णागता मानने में सबसे आगे जा चुकी है तथा इसे अन्तिम मानने के निश्चय में भी सबसे आगे है। पाश्चात्य भारोपीय भाषाओं में इस माया (अथवा भ्रान्ति) के साथ गठजोड़ सीलबन्द हो चुका है और इस माया से बाहर आने का मार्ग भाषा के उस व्यापक ज्ञान में निहित है जो उस ज्ञान से अधिक है जितना कि पाश्चात्य भारोपीय भाषाएँ प्रदान कर सकती हैं। पाश्चात्य चेतना का यह मन्त्र योग है, यह एक नया महान् कदम है जिसे उठाने को वह अब तैयार भी है। सम्भवतः पाश्चात्य मानव के लिए सबसे उपयुक्त मार्ग "चेतना का परिष्कार" प्रारम्भ करना है जो उसे निस्सन्देह एक महान आलोक में ले जा सकता है।

इसके अतिरिक्त इस प्रकार के भाषायी ज्ञान द्वारा मानव-भ्रातृत्व के महान पक्ष की प्राप्ति होती है। बहुत ही भिन्न प्रकार की भाषाओं के वैज्ञानिक ज्ञान के लिए—उन्हें बोलना जरूरी नहीं है अपितु उनकी संरचनाओं का विश्लेषण करना—भ्रातृत्व के पाठ की शिक्षा है, जो सार्वभौमिक मानवीय सिद्धान्त में भ्रातृत्व है—मनस के पुत्रों का भ्रातृत्व। यह हमें स्थानीय संस्कृतियों, राष्ट्रीयताओं, शारीरिक विचित्रताओं जिन्हें जाति ('Race') कहा जाता है, उनसे ऊपर उठाता है, और हमें यह ज्ञान प्रदान करता है कि उनकी भाषायी व्यवस्थाओं में, चाहे व्यवस्थाएं कितनी भी भिन्न क्यों न हों, फिर भी इन व्यवस्थाओं के क्रम, समन्वय और सौन्दर्य में, तथा उनकी अपनी अपनी सूक्ष्मताओं एवं वास्तविकता के विचक्षण विश्लेषण में सभी मनुष्य समान हैं। यह तथ्य भौतिक संस्कृति, बर्बरता, सभ्यता, नैतिक विकास आदि आदि से सम्बन्धित विकास की अवस्था से निरपेक्ष्य एवं स्वतन्त्र है, जो कि आज के सभ्य यूरोपियन के लिए बहुत ही आश्चर्यजनक है, सदमा पहुँचाने वाला है, वास्तव में एक कड़वी गोली है। लेकिन यह सत्य है कि असभ्य से असभ्य जंगली भी अनजाने में प्रयत्न-रहित सुगमता के साथ एक ऐसी भाषायी व्यवस्था का प्रयोग कर सकता है जो इतनी पेचीदा, विविध रूप से व्यवस्थित, तथा बौद्धिकता में कठिन है कि उसकी व्यवस्था का विवरण देने में हमारे सबसे बड़े विद्वान को भी जीवन भर अध्ययन करने की आवश्यकता पड़ सकती है।

मानसिक स्तर तथा उच्चतर अहम् सभी को समान रूप से प्राप्त हुए हैं, और पुरानी से पुरानी सभ्यता–जिसके खण्डहर आज मिट्टी में मिल चुके हैं—उससे भी बहुत पहले मानवी भाषा का विकास पूर्ण होकर अपनी गौरवमयी पूर्णता में पृथ्वी के ऊपर नीचे फैल चुका था।

भाषाई ज्ञान के लिए विविध प्रकार की बहुत सी सुन्दर व्यवस्थाओं के तर्क-संगत विश्लेषण को समझने की आवश्यकता पड़ती है। इसके माध्यम से, अन्य सामाजिक वर्गों के विभिन्न दृष्टिकोणों से देखे जाने वाला संसार, जिसे हमने पराया समझ रखा था, अब नई परिस्थिति में हमें बोधगम्य एवं परिचित लगता है। वह परायापन, संसार को देखने के लिए एक नए तथा प्राय: स्पष्टीकरण करने वाले मार्ग में परिवर्तित हो जाता है। जापानियों पर विचार कीजिए। जापानियों के विषय में हमारी धारणा उनकी सरकारी नीतियों के कारण प्रकट रूप में भी क्यों न हो, भ्रातृत्व को प्रोत्साहन देने वाली नहीं है। परन्तु जापानियों के विषय में यदि उनकी भाषा के सौन्दर्यपरक तथा वैज्ञानिक मूल्याँकन के माध्यम से सोचा जाए तो तस्वीर बिल्कुल बदल जाती है। अर्थात् हम आत्मा के विश्वव्यापी बन्धुत्व का अनुभव करने लगेंगे। इस भाषा की एक बहुत प्यारी अभिरचना यह है, इसके वाक्यों में दो भिन्न स्तरीय 'कर्त्ता' हो सकते हैं। हम अपनी क्रियाओं के 'कर्म' subject के दो वर्गों से तो परिचित हैं, एक निकटवर्ती अथवा तात्कालिक "कर्म" तथा दूसरा दूरवर्ती विषय या ध्येय या जिन्हें सामान्य रूप से "direct" 'उक्त' तथा Indirect "अनुक्त" कर्म कहा जाता है। परन्तु सम्भवत: हमने कभी भी इस विचार के 'कर्त्ता' पर लागू होने की सम्भावना के बारे में नहीं सोचा होगा। इस युक्ति का प्रयोग जापानी में मिलता है। दो कर्त्ता जिन्हें-कर्त्ता$_1$ तथा कर्त्ता$_2$ कहा जा सकता है– 'wa' तथा 'ga' 'निपातों द्वारा निर्दिष्ट किए जाते हैं, और उन्हें एक ऐसे आरेख द्वारा दिखाया जा सकता है, जिससे प्रत्येक कर्त्ता शब्द से निकल कर एक एक रेखा अर्थात् दो रेखाएं एक ही विधेय पर आकर मिलें, जबकि हमारे अंग्रेजी वाक्यों में एक ही कर्त्ता हो सकता है जिसकी एक ही रेखा उद्देश्य से आकर मिलती है। एक दृष्टान्त, "Japan is mountainous" "जापान पहाड़ी प्रदेश है" इसे जापानी में कहने के ढंग से मिल सकता है।

"Japan$_1$ mountain$_2$ (are) many" [5]जापान पहाड़ (हैं) बहुत : या Japan, in regard to its mountains are many "जापान पर्वतों के विषय में 'बहुत' हैं। "John is long-legged" "जान लम्बी टाँग वाला है" जापानी में 'जॉन$_1$ टाँगें$_2$ (हैं) लम्बी "John legs (are) long" यह अभिरचना बहुत अधिक लाघव प्रदान करती है तथा साथ ही सुस्पष्टता भी। हमारे अस्पष्टार्थक शब्द mountainous के स्थान पर, जापानी भाषा 'mountainous' जिसका अर्थ है पर्वत जो बहुत ऊंचे नहीं हैं बहुसंख्यक हैं, और mountainous जिसका अर्थ है 'बहु-संख्यक' नहीं

5. "हैं" कोष्ठक में हैं क्योंकि "बहुत हों" को एक क्रिया जैसे शब्द द्वारा अभिव्यक्त किया गया है। जापानी सामान्यतः बहुवचन का प्रयोग नहीं करते।

(परन्तु) सारे क्षेत्र की अपेक्षा ऊँचे हैं, का प्रभेद सूत्रीकरण की समान सुसंहति के साथ कर सकती है। हमें पता चलता है कि किस प्रकार इस अभिरचना का तर्कसंगत प्रयोग जापानियों को विचारों का संक्षिप्त वैज्ञानिक विवेचन करने की शक्ति प्रदान कर सकता है, यदि इस शक्ति का सही ढंग से विकास कर लिया जाए तो।

जिस क्षण भी हम 'भाषा' में निष्पक्ष वैज्ञानिक खोज आरम्भ करते हैं तो हमें बाह्य रूप से अनाकर्षक जातियों तथा सभ्यताओं में अभिव्यक्ति की उन सुन्दर प्रभावशाली तथा वैज्ञानिक विधियों का पता चलता है जिनसे पाश्चात्य भारोपीय भाषाएँ तथा मनोवृत्तियाँ पूर्णतया अनभिज्ञ हैं। अल्गोन्कियन भाषाएं बहुत ही साधारण, शिकार करने वाली तथा मछली पकड़ने वाले, इन्डियनों द्वारा बोली जाती हैं, परन्तु ये भाषाएं विश्लेषण तथा संश्लेषण में अद्भूत हैं। उनकी एक विशिष्ट व्याकरणिक चातुरी है, जिससे, "Obviative" "ओब्वियेटिव""द्वितीय अन्य पुरुष' कहते हैं, जिसका अर्थ यह हुआ कि उनके सर्वनामों के, "तीन की अपेक्षा, चार पुरूष हैं या हमारे दृष्टिकोण से दो अन्य पुरूष।" इससे जटिल परिस्थितियों का सुस्पष्ट विवरण किया जा सकता है जिसके लिए हमें बोझिल वाक्यीय रचनाओं की शरण लेनी पड़ती है। आइए हम उनके तृतीय एवं चतुर्थ पुरूष को अपने लिखित शब्दों पर 3, और 4 संख्या वाचकों द्वारा चिन्हित करें। एक अल्गोंकियन व्यक्ति विलियम टेल की कथा इस प्रकार सुना सकता है:

"William Tell Called his_3 son and told him_4 to bring him_3 his_3 bow and arrow, $which_4$ he_4 then brought to him_3. He_3 had him_4 stand still and placed an apple on his_4 head, then took his_3 bow and arrow and told him_4 not to fear. Then he_3 shot it_4 off his_4 head without hurting him_4".

"विलियम टेल ने अपने"[3] लड़के को बुलाया, और उससे[4] कहा, कि उसके लिए[3] उसका[3] तीर कमान ले आए, जिसे[4] वह[4] तब उसके[4] पास ले आया। उसने[3] उसे[4] सीधा खड़ा किया और एक सेब उसके[4] सिर पर रखा तब अपना[3] तीर कमान उठाया और उसे[3] कहा डरो मत। तब उसने[3] उसे[4] तीर मारकर उसके सिर से उड़ा दिया उसे[4]—जख्मी किए बिना ही।" इस प्रकार की युक्ति हमारी जटिल कानूनी परिस्थितियों की स्पष्ट अभिव्यक्ति में बहुत सहायक सिद्ध हो सकती है और हमें The party of the first part."पहले भाग के वादी" तथा The aforesaid John Doe shall, on his part etc. "पूर्वकथित जॉन डो अपनी ओर से" आदि आदि से छुटकारा मिल सकता है।

Chichewa (चिचेवा), जुलू से सम्बन्धित एक भाषा, जो पूर्वी अफ्रीका के एक अशिक्षित कबीले द्वारा बोली जाती है, दो भूतकालों से युक्त हैं—एक भूत घटित घटनाओं के वर्तमान परिणाम वाला है, तथा दूसरा ऐसे 'भूत' के लिए प्रयुक्त होता है जिसका वर्तमान पर कोई प्रभाव नहीं है। एक ऐसा भूत, जो बाह्य परिस्थितियों में अंकित है उसका प्रभेद ऐसे भूत से दिखाया गया है जिसका अंकन केवल मन या स्मृति

पर ही है,—अतः काल का एक नया विचार हमारे समक्ष प्रस्फुटित होता है। नं० 1 को पहले काल का तथा नं० 2 को उत्तरवर्ती का प्रतिनिधित्व करने दीजिए। फिर चिचेवा के अर्थभेदों पर चिन्तन कीजिए। I came here मैं यहाँ[1] आया, मैं वहाँ[2] गया, वह बीमार था[2], वह मर गया[2], ईसा क्रास पर मर गया[2], ईश्वर ने संसार को बनाया[1], मैंने खाया[1] का अर्थ है मैं[2] भूखा नहीं हूं, मैंने खाया था[2] का अर्थ है मैं भूखा हूं। यदि आप को भोजन के लिए कहा जाए और आप कहें "नहीं, मैं खा चुका हूं" तो यह ठीक होगा परन्तु यदि आप ने दूसरे भूतकाल का प्रयोग किया वह अपमानजनक हो जाएगा। चिचेवा का थियोसोफी मतानुयायी वक्ता—संसार को वर्तमान स्थिति में रहने के योग्य बनाने वाले चिदणुओं के भूतकालिक Involution प्रत्यावर्तन के विषय में बोलते हुए काल[1] का प्रयोग कर सकता है, जबकि वह काल [2] का प्रयोग उन नक्षत्रीय व्यवस्थाओं के लिए करेगा जो अब विघटित हो चुकी हैं और उनका विकास समाप्त हो चुका है। यदि वह पुनर्जन्म के विषय में बात कर रहा है तो वह [2] का प्रयोग पिछले जन्मों की अपनी विषय परिधि में ही करेगा, परन्तु वह[1] का प्रयोग उनके कर्मों का द्योतन करने के लिए करेगा। यह बहुत सम्भव है कि यदि ये लोग दार्शनिक, या गणितज्ञ बन जाएं तो वे 'काल' के विषय पर हम सब से अग्रगण्य दार्शनिक बन सकते हैं।

या Coeur d' Alene नाम के छोटे से कबीले द्वारा उसी नाम की इदाहो (Idaho) में बोली जाने वाली भाषा का उदाहरण लीजिए। हमारे Cause प्रेरण की साधारण धारणा जिसका आधार "साधारण से" (उसे करने की प्रेरणा देता है) या उससे यह करवाता है, पर आधारित है, इसके स्थान पर Coeur d'Alene व्याकरण उसके बोलने वालों से यह अपेक्षा करता है (जिसका वे आसानी से प्रभेद कर लेते हैं) कि वे तीन प्रेरणार्थक प्रक्रियाओं में प्रभेद करें जिनका द्योतन तीन प्रेरणार्थक क्रिया रूपों द्वारा होता है (1) नैसर्गिक कारण का संवर्धन या संपुष्ट परिपक्वन (2) बाहर से जोड़ना या बढ़ाना (3) सहायक संयोजन अर्थात् प्रक्रिया से प्रभावित चीज़ को जोड़ना। अतः यदि यह कहना हो कि इसे मीठा कर दिया गया है तो वे रूप का प्रयोग उस आलूचे के लिए करेंगे जो पकाकर मीठा किया गया है, रूप [2] का प्रयोग वे कॉफी के कप के लिए करेंगे जिसे शक्कर डाल कर मीठा किया गया है, और रूप [3] का तवे पर बने हुए केक के लिए करेंगे जिन्हें शक्कर की चाशनी में डालकर मीठा किया गया है। यदि उन्हें अधिक परिष्कृत सभ्यता प्राप्त हो जाए तो उनके विचारक उन प्रभेदों को जो अब अचेतन रूप से हैं, त्रिकात्मक कारणवाद के सिद्धान्त में विकसित कर सकते हैं और उनका प्रयोग वैज्ञानिक निरीक्षणों के लिए किए जाने पर वे उनके द्वारा विज्ञान के लिए बहुमूल्य बौद्धिक उपकरण प्रस्तुत कर सकते हैं। हम कृत्रिम रूप से इस प्रकार के सिद्धान्त का अनुकरण कर सकते हैं परन्तु शायद हम इसका प्रयोग नहीं कर सकते क्योंकि हम प्रतिदिन की जीवनचर्या में इस प्रकार के प्रभेद सरलतापूर्वक बिना प्रयत्न करने के अभ्यस्त नहीं हैं। इससे पहले कि वैज्ञानिक उन धारणाओं का प्रयोग अपनी प्रयोगशालाओं में करें उन (धारणाओं

का) आधार नित्य की बोलचाल में निहित होता है। सापेक्षतावाद का आधार भी पाश्चात्य भारोपीय भाषाओं (तथा अन्य भाषाओं) में है—यह एक तथ्य है कि भाषाएं बहुत से (दिक्) स्पेस शब्दों का तथा अभिरचनाओं का प्रयोग काल का विवेचन करने के लिए करते हैं।

भाषा का और अधिक महत्त्व उन मनोवैज्ञानिक घटकों में निहित है जो आधुनिक भाषाई उपगम से भिन्न स्तर पर हैं, परन्तु संगीत, काव्य, साहित्यिक-रीति तथा प्राच्य "मन्त्र" के लिए महत्त्वपूर्ण है। मैं अब तक जो कुछ कहता आया हूं उस का सम्बन्ध अधिक दार्शनिक अर्थों में मनस् से है "उच्चतर चेतना" या आत्मा से (उस अर्थ में) जिसमें इसे "Jung" ने प्रयुक्त किया है। और, अब मैं जो कुछ कहने जा रहा हूं वह Psyche "मन" से सम्बन्धित है, (फ्राइड के द्वारा प्रयुक्त किए गए अर्थ में) निम्नतर अचेतन, मनस् जो विशेष रूप से "सत्य का घातक है", "काम" का स्तर, भावुकता या भावना का स्तर (Gefuhl)। नाम-रूप एवं अरूप के स्तरों से युक्त एक आनुक्रमिक सम्बन्ध में यह अचेतन मन का स्तर अरूप स्तर से दूसरी ओर "नाम रूप" के स्तर पर है तथा "नाम" या शब्दीकरण, एक दृष्टि से इन दोनों के अन्तिम छोरों की मध्यस्थता करता है। अतः Psyche 'मन' भाषा में स्वानिमिक स्तर का मनोवैज्ञानिक सह-सम्बन्धी है, जो उसके साथ संरचनात्मक ढंग से ऐसे सम्बन्धित नहीं है जैसे नाम या लेक्सेशन है, भाषा इसका प्रयोग ऐसे खण्ड बनाने के लिए भी नहीं करती जैसे कि शब्द रचना स्वनिमों का प्रयोग करती है (स्वर, व्यंजन, बलाघात आदि) परन्तु ये इस प्रकार सम्बन्धित हैं जैसे स्वनिमों का "भावात्मक अंश"। अनुभूतियों का सम्बन्ध जोड़ने का एक व्यापक भावनात्मक प्रकार है, जो प्रयोगशाला के अनुसन्धानों में प्रकट होता है तथा भाषा से स्वतन्त्र प्रतीत होता है—और वह मूलतः सभी व्यक्तियों के लिए समान है। इस विश्व में किसी अनुक्रम अथवा आनुपूर्वी क्रम व्यवस्था के बिना यह कहना पड़ सकता था कि ये मनोवैज्ञानिक प्रयोग तथा भाषाई प्रयोग एक दूसरे का प्रतिवाद करते हैं। मनोवैज्ञानिक प्रयोगों में मानव प्रयोग-व्यक्ति एक लम्बी श्रेणी में प्रकाशयुक्त, ठण्डा, तीक्ष्ण, कठोर, उच्च, हल्का (वज़न में) चपल, उच्चस्वर, संकरा आदि की अनुभूतियों का परस्पर सम्बन्ध जोड़ता हुआ प्रतीत होता है और इसके विपरीत एक अन्य लम्बी श्रेणी में (dark) अन्धेरा" (warm), गरम, (yielding) समर्पण-शील, (soft) कोमल, (blunt) कुण्ठित, (low) निम्न, (heavy) भारी, (slow) मन्द, निम्न (स्वर) (wide) चौड़ा, आदि को एक साथ रखता है। ऐसा होता ही है चाहे इस प्रकार से सम्बन्धित अनुभूतियों के शब्द समान हैं अथवा नहीं, परन्तु साधारण व्यक्ति शब्दों का सम्बन्ध केवल उसी समय देख सकता है जब इस प्रकार की श्रेणी में रखे गए शब्दों के स्वर अथवा व्यंजनों में समानता हो तथा जब सम्बन्ध व्यतिरेक अथवा विरोध का हो तो वह इन पर ध्यान दिए बिना ही इन्हें छोड़ देता है। 'समानता' का सम्बन्ध देखने की "क्षमता" साहित्यिक शैली के प्रति भावप्रवणता का एक तत्त्व है, या जिसे प्रायः गल्ती से "शब्दों" का "संगीत" कहा जाता है। विरोध का सम्बन्ध देखना इससे

भी अधिक दुस्साध्य है, अपने आप को माया से बहुत अधिक मात्रा में स्वतन्त्र करना है, और चाहे यह बिल्कुल "अकाव्योचित" अथवा रूखा है, परन्तु यह वास्तव में उच्चतर मनस् की ओर प्रगति है, और भौतिक ध्वनि से बहुत अधिक ऊंची समता की ओर (प्रगति है)।

हमारे निबन्ध के लिए जो महत्त्व की बात है, वह यह है कि भाषा ने 'लेक्सेशन' 'नाम' के द्वारा भाषी को कुछ धुंधले मानसिक संवेदन के प्रति अत्यधिक सचेत कर दिया है। उसने वास्तव में अपने से भी नीचे स्तर पर चेतना (awareness) को उत्पन्न किया : एक ऐसी शक्ति (को) जो 'जादू' के गुणों से युक्त है। भाषा की शक्ति के लिए निम्न चित्तीय तथ्यों से स्वतन्त्र रहने में, उन्हें अभिभूत करने में, कभी उन्हें ऊपर उठाने में, कभी उन्हें क्षेत्र से बाहर फेंक देने में, शब्दों के अर्थ-भेदों को अपने ढंग से मोड़ने में एक यौगिक रहस्य है चाहे ध्वनियों का चित्तीय परिवेश ठीक बैठता हो अथवा नहीं। यदि ध्वनियाँ उपयुक्त हैं तो ध्वनियों का चित्तीय गुण बढ़ जाता है और साधारण व्यक्ति इसे देख लेता है। यदि ध्वनियां ठीक नहीं बैठतीं तो चित्तीय गुण भाषाई अर्थ के साथ अनुकूलता प्राप्त करने के लिए बदल जाता है—चाहे वह ध्वनियों से कितना ही "असंगत या बेतुका" क्यों न हो, और इस तथ्य पर साधारण व्यक्ति ध्यान नहीं देता।

अतः अंग्रेजी का a स्वर (जैसे **father** शब्द में), o, u प्रयोगशालीय परीक्षणों में, dark—warm—soft श्रेणियों के साथ सम्बन्धित है, e, (अंग्रेजी a जैसे dat में), i (अंग्रेजी के be में e) का साहचर्य bright-cold-sharp वर्ग के सा दिखाया जाता है। व्यंजनों का साहचर्य भी इसी प्रकार है जैसाकि इस विषय में साधारण भावना से भी आशा की जा सकती है। होता यह है कि जब किसी शब्द के अर्थ की उसकी ध्वनि के साथ भी समानता होती है तो हमारा ध्यान उस ओर चला जाता है जैसे कि अंग्रेजी में 'सोफ्ट' soft और जर्मन sanft साँफत परन्तु जब इसके विपरीत स्थिति होती है तो किसी का भी ध्यान उस ओर नहीं जाता। अतः जर्मन zart "चार्ट" "कोमल" में इतनी तीक्ष्ण ध्वनि है कि a स्वर के रहते हुए भी जर्मन भाषा से अनभिज्ञ व्यक्ति को इसका अर्थ bright-sharp की कोटि का लगेगा परन्तु जर्मनभाषी को यह कोमल प्रतीत होता है—और सम्भवतः warm, dark भी। इस से अच्छा Deep का मामला है। इसका ध्वनिक साहचार्य PEEP या अन्य निरर्थक शब्दों जैसे VEEP, TREEP, QUEEP आदि के साथ होना चाहिए अर्थात् bright "चमकदार", sharp तीक्ष्ण, quick शीघ्र, झटपट, के साथ। परन्तु अंग्रेजी भाषा में इसका भाषाई अर्थ इस प्रकार के साहचर्य के लिए गलत प्रकार की अनुभूति का संकेत देता है। यह तथ्य इसकी वस्तुनिष्ठ ध्वनि की पूर्णतया उपेक्षा करता है और इसे 'आत्म-निष्ठ' Subjective रूप में dark, warm, heavy soft आदि की तरह बना देता, जैसे कि इसकी ध्वनियां भी वास्तव में उसी प्रकार की हों। यदि यह "अकाव्यात्मक" या नीरस है, तो भाषाई विश्लेषण को, एक शब्द के अन्तर्गत दो संगीतों, का एक अधिक मानसिक और दूसरा अधिक

चित्तीय के विरोध का पता लगाने के लिए अपने आप को माया-मुक्त करना पड़ेगा। मनस् में यह सामर्थ्य है कि वही चित्तीय स्तर के गुणों की उपेक्षा कर सके, ठीक इसी तरह जैसे यह समीकरणात्मक x की उपेक्षा कर सकता है चाहे वह x मोटर का निर्देश करे अथवा भेड़ का। यह अपनी अभिरचनाओं के अंशों का अनुभूति पर इस तरह आरोपण कर सकता है कि वे भ्रान्ति को विकृत एवं परिवर्धित कर दें या इस तरह से कि वे वैज्ञानिक सिद्धान्तों एवं अनुसन्धान के उपकरणों को प्रकाशित कर दें और उन्हें दृढ़ बना दें।

पतंजलि ने योग की परिभाषा इस प्रकार दी है:—"योग बहुमुखी प्रवृत्ति वाले चित्त की सभी वृत्तियों का पूर्ण निरोध है"[6]। यह हम देख चुके हैं कि ये वृत्तियां अधिकतर व्यक्तिगत-सामाजिक प्रतिक्रियाओं से युक्त हैं—उन प्रतिक्रियाओं से जो व्यक्तिगत चेतना के ऊपर या पीछे से कार्य संचालन करने वाले अरूप स्तर द्वारा बिछाए गए अभिरचना के मार्गजालों पर संचरण करती हैं। अरूप स्तर चेतना की 'पकड़' से परे इसलिए नहीं है कि वह तात्विक रूप में भिन्न है (जैसे कि मानो यह गतिहीन तन्त्र हो) परन्तु इसलिए कि व्यक्तित्व, विकास एवं अभ्यास के कारण उपरोक्त बहुमुखी वृत्तियों पर (ध्यान) केन्द्रित रखती है। इस वृत्ति का शमन तथा इस केन्द्रित ध्यान की निवृत्ति; यद्यपि कठिन है और दीर्घ प्रशिक्षण एवं अभ्यास की अपेक्षा रखती है, फिर भी भिन्न एवं पर्याप्त पृथक्, पाश्चात्य एवं प्राच्य, दोनों ही स्त्रोतों से उपलब्ध विश्वसनीय विवरणों के अनुसार यह चेतना का अनन्त विस्तारण, उज्ज्वलीकरण तथा निर्मलीकरण है, जिसमें बुद्धि अकल्पित तीव्रता एवं निश्चितता से कार्य करती है। भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन और भाषाई सिद्धान्त बुद्धि को, कम से कम आंशिक-रूप में ही सही, इस स्तर की ओर उठाने वाले तो हैं।

बृहद् भाषाई अभिरचना के बोध द्वारा बहुमुखी चित्तवृत्ति पर केन्द्रित ध्यान आंशिक रूप से हटाया जा सकता है। ऐसे बोध का एक रोग निवारक उपयोग भी है। बहुत से स्नायविक रोग शब्द व्यवस्था की बार बार विवशकारी आवृत्ति के कारण होते हैं, जिनसे रोगियों को भाषा की प्रक्रिया एवं अभिरचना दिखाकर मुक्त कराया जा सकता है।

यह सब हमें पुन: उस विचार की ओर ले जाता है जिसका विवेचन हमने पहले भाग में किया था कि भाषा में उपलब्ध अभिरचनात्मक सम्बन्धों के प्रकार कारण-संसार की अस्थिर विकृत, सत्वहीन, तथा सारहीन छाया के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है। जैसे भाषा पृथक् (शब्दीकरण-खण्डों) Laxation-Segmentation (नाम-रूप) तथा व्यवस्थित अभिरचनाओं से बनी है, जिसके अन्तर्गत अभिरचनाओं का पृष्ठ भूमिगत वैशिष्ट्य अधिक है, जो कम व्यक्त है परन्तु अधिक

---

6. Bragdon's paraphrase of the Yoga Sutras, An Introduction to Yoga, Claude Bragdon, New York 1933.

अनुल्लंघनीय एवं सार्वभौमिक है। इसी तरह भौतिक संसार भी अर्धस्पष्ट (अणुओं क्रिस्टलों, जीवाणुओं, ग्रहों तथा नक्षत्रों आदि) इकाइयों का समुच्चय हो सकता है जो समुच्चय के रूप में पूरी तरह बुद्धिगम्य नहीं है परन्तु कारणों के उस उद्गामी क्षेत्र के रूप में समझा जा सकता है; जो स्वयं व्यवस्थाओं एवं अभिरचनाओं का वैविध्य है। विज्ञान आज बाड़ के उन खम्बों पर टिका है, जिनके पार वह इस क्षेत्र के इन पात्रों से मिल सकता है। जैसे जैसे भौतिकी अन्तराण्विक तथ्यों में खोज करती जाती है, स्पष्ट भौतिक-रूप एवं शक्तियां शुद्ध अभिरचना सम्बन्धों में अधिकाधिक लीन होती चली, जाती हैं। उदाहरणार्थ एक स्पष्ट इकाई (इलेक्ट्रॉन) 'विद्युदणु' का स्थान अनिश्चित हो जाता है तथा बाधित हो जाता है; यह इकाई एक संरचनात्मक स्थिति से दूसरी संरचनात्मक स्थिति पर प्रकट और लुप्त होती दिखाई देती है और इसकी स्थिति इन दो भिन्न स्थितियों के बीच कहीं भी नहीं कही जा सकती। इसकी "स्थिति", जिसके विषय में पहले सोचा गया था और उसका विश्लेषण एक "निरन्तर परिवर्तनीय" के रूप में किया गया था, अब अधिक सूक्ष्म निरीक्षण के पश्चात् केवल एक (alternation) एकान्तरिक प्रत्यावर्तन मात्र बन जाता है, स्थितियां इसका स्थिरीकरण करती हैं, और एक संरचना जो मापक दण्ड की पहुंच से परे है, इसका नियन्त्रण करती है, जहाँ पर त्रिविमात्मक रूप कोई है ही नहीं, उसके स्थान पर है---अरूप।

विज्ञान अभी तक इस प्रकार की परिस्थिति के पारलौकिक तर्क को नहीं समझ सकता, क्योंकि इसने अभी तक अपने आप को सामान्य तर्क की उन भ्रामक आवश्यकताओं से मुक्त नहीं किया है, जो केवल पाश्चात्य आर्य व्याकरण की व्याकरण अभिरचनाओं की आवश्यकताओं के निम्नतर स्तर हैं, उन पदार्थों की आवश्यकता जो वाक्य की कुछ स्थितियों में, संज्ञाओं के लिए आवश्यक हैं, शक्तियों की आवश्यकताएं आकर्षण आदि, जो अन्य स्थितियों में केवल क्रियाओं की आवश्यकताएँ हैं इत्यादि, इत्यादि। विज्ञान यदि आसन्न अन्धकार से सुरक्षित बच रहा तो अगले कार्यक्रम में भाषाई सिद्धान्तों पर विचार करेगा और अपने आप को इन मायावी भाषाई आवश्यकताओं से मुक्त करेगा, जिन्हे बहुत समय तक स्वयं विवेक का सार समझा जाता रहा है।

(क) ग्रन्थ-सूची

(i) बेंजमिन ली व्होर्फ की प्रकाशित रचनाएँ

1925 "Purpose vs. evolution." Letter to the editors of the *New Republic,* issue of December 19, 1925.

1927 ["On the connection of ideas."] Printed for the first time in this volume, pp. 35-39.

1928 "Toltec history." Twenty-Third International Congress of Americanists, New New, 1928 : *Abstracts of Papers,* no. 109.

1928 "Aztec linguistics." Twenty-Third International Congress of Americanists, New York, 1928 : *Abstracts of Papers,* no. 116.

1928 "An Aztec account of the period of the Toltec decline." *Proceedings of the Twenty-Third International Congress of Americanists,* New York, 1928 pp. 122-129.

1929 "The reign of Huemac," American Anthropologist, 31:667-684 (1929).

1931 "A central Mexican inscription combining Mexican and Maya day signs." *American Anthropologist,* 34:296-302 (1932).

1933 "The Maya manuscript in Dresden." *Art and Archaeology,* 34:270 (1933).

1933 *The phonetic value of certain characters in Maya writing.* Cambridge, Mass.: Harvard University Press, 1933 (*Papers of the Peabody Museum,* vol. XIII, no. 2). With an introduction by Alfred M. Tozzer. *xii,* 48 pp.

1935 Review of A. L. Kroeber, *Uto-Aztecan languages of Mexico. American Anthropologist,* 37:343-345 (1955).

1935 "The comparative linguistics of Uto-Aztecan." *American Anthropologist,* 37:600-608 (1935).

1935 "Maya writing and its decipherment." *Maya Research,* 2:367-382 (1935).

1936 Appendix to J. Alden Mason, "The classification of the Sonoran languages," pp. 197-198 in Robert H. Lowie (editor), *Essays in anthropology in honor of Alfred Louis Kroeber.* Berkeley: University of California Press, 1936.

1936 Notes on the "Glossary," pp. 1198-1326 in Elsie Clews Parsons, *Hopi Journal of Alexander M. Stephens,* Part 2. New York: Columbia University Press, 1936 (*Columbia Contributions to Anthropology,* 23).

1936 "The punctual and segmentative aspects of verbs in Hopi." *Language,* 12:127-131 (1936).

1936 "Notes on the Tübatulabal language." *American Anthropologist,* 38:341-344 (1936).

1936 "Loan-words in ancient Mexican." *Philogical and Documentary Studies (Middle American Research Institute, Tulane University of Louisiana),* 1:1-17 (1943). Also Studies in Linguistics, 5:49-64 (1947).

1936 (?) "An American Indian model of the universe." *International Journal of American Linguistics,* 16:67-72 (1950).

[Reprinted in *Etc., a Review of General Semantics,* 8:27-33 (1950); also in *Collected papers on metalinguistics,* Foreign Service Institute, Department of State, Washington, D.C., 1952.]

1936 (?) "A linguistic consideration of thinking in primitive communities." Printed for the first time in this volume, pp. 65-86.

1937 "The origin of Aztec TL." *American Anthropolo*gist, 39:265-274 (1937).

1937 (with Geoge L. Trager) "The relationship of Uto-Aztecan and Tanoan." *American Anthropologist,* 39:609-624 (1937).

1937 "Grammatical categories." *Language,* 21:1-11 (1945).

1937 ["Discussion of Hopi linguistics."] Printed for the first time in this volume, pp. 102-111.

1938 "Some verbal categories of Hopi." *Language,* 14:275-286 (1938).

1938 Review of K. T. Preuss and Ernst Mengin, *Die Mexikanische Bilderhandschrift Historia Tolteca-Chichimeca: die Manuscripte* 46-58bis *der Nationalbibliothek in Paris,* Teil I, *Die Bilderschrift nebst Ubersetzung* (Berlin, 1937). *American Anthropologist,* 40:729-730 (1938).

1938 "Language: plan and conception of arrangement." Printed for the first time in this volume, pp. 125-133.

1939 "The relation of habitual thought and behaviour to language." Pp. 75-93 in Leslie Spier (editor), *Language, culture and personality* (Menasha, Wis.: Sapir Memorial Publication Fund, 1941).
[Reprinted in *Collected papers on metaliguistics,* Foreign Service Institute, Department of State, Washington, D. C., 1952.]

1939 "The Hopi Language, Toreva dialect." Pp. 158-183 in Harry Hoijer (editor), *Linguistic structures of native America* (New York: Viking Fund, 1946).

1939 "The Milpa Alta dialect of Aztec, with notes on the Classical and the Tepoztlan dialects." Pp. 367-397 in Harry Hoijer (editor), *Linguistic structures of native America* (New York: Viking Fund, 1946).

1939 "Gestalt technique of stem composition in Shawnee." Appendix, pp. 393-406, to C. F. Voegelin, *Shawnee stems and the Jacob P. Dunn Miami Dictionary.* Indianapolis: Indiana Historical Society, 1940 *(Prehistory Research Series,* vol. I, no. 9, April 1940).

1940 "Blazing icicles." [Article on fire prevention] Hartford, Conn.: Hartford Fire Insurance Company, n.d. [Reprinted from the *Hartford Agent.*]

1940 Decipherment of the linguistic portion of the Maya hieroglyphs," pp. 479-502 in *The Smithsonian report for* 1941, Publication 3669 (Washington: U.S. Government Printing Office, 1942). [Also in

Spanish, "Interpretacion de la parte lingüistica de los geroglificos Maya." *Tzunpame, Organo de Publicidad del Museo Nacional y Auexos (San Salvador)*, 5:50-73 (August 1945), and *Supplemento* (Figure 1-4).]

1940 "Phonemic analysis of the English of eastern Massachusetts." *Studies in Linguistics,* 2:21-40 (1943).

1940 "Linguistic factors in the terminology of Hopi architecture." *International Journal of American Linguistics,* 19:141-145 (1953).

1940 "Science and linguistics." *Technology Review (M.I.T.)*, 42:229-231, 247-248 (1940).

[Reprinted in S.I. Hayakawa, *Language in action* (New York: Harcourt-Brace, 1941), pp. 302-321; T. Newcomb and E. Hartley, *Readings in social psychology* (New York: Holt, 1947), pp. 210-218; and *Collected papers on metalinguistics* (Foreign Service Institute, Department of State, Washington, D.C., 1952).]

1940 "Linguistics as an exact science." *Technology Review (M.I.T.)*, 43:61-63, 80-83 (1940).

[Reprinted in *Collected papers on metalinguistics* (Foreign Service Institute, Department of State, Washington, D.C., 1952).]

1941 "Languages and logic." *Technology Review (M.I.T.)*, 43:250-252, 266, 268, 272 (1941).

[Reprinted in *Collected papers on metalingustics* (Foreign Service Institute, Department of State, Washington, D.C., 1952).]

1941 "Language, mind, and reality." *The Theosophist (Madras, India)*, 63:1.281-91) (January, 1942); 63:2.25-37 (April 1942).

[Reprinted in *Etc., a Review of General Semantics,* 9:167-188 (1952).]

1940-41 Articles in the journal *Main Currents in Modern Thought*: 1:1.3-5 (1940): Review of *Living light,* by E. N. Harvey (Princeton University Press, 1940).

1:1.9-10 (1940) : "we may end the war that is within all wars that are waged to end all war."

1:1.12-13 (1940): Digest of review in *American Anthropologist,* October-December 1940, of the *Work of the gods in Tikopia* (Polynesia), by Raymond Firth, as reviewed by E. G. Burrows.

1:1.14 (1940): Digest of "Notes on the demonstration of 'wetter' water," by C. R. Caryl in *Journal of Chemical Education.*

1:1.15 (1940): [Concerning descriptive linguistics at Yale.]

1:3.4 (1941): (with F. Kunz) [Commentary regarding logic and science.]

1:3.6 (1941): "H. G. Wells."

1:3.12-13 (1941): "Interpretations of isotopes."

1:3.15 (1941): "The Hurrians of Old Chaldea."

1:4.10-11 (1941): Review of *The ways of things,* by W. P. Montague (Prentice-Hall, 1940).

1:4.13-14 (1941): "A brotherhood of thought."

1:5.12-14 (1941): "Dr. Reiser's humanism." (Review of *The promise of scientific humanism,* by Oliver L. Reiser, New York, 1940).

1:6.16 (1941): [Note on shrinking glass.]

1:7.14-15 (1941): (with F. Kunz) "Toward a higher mental world."

Unknown ["On psychology."] Printed the first time in this volume, pages 40-42.

(ii) अप्रकाशित पाण्डुलिपियाँ (महत्त्वपूर्ण)

c. 1928 "A contribution to the study of the Aztec language." 43 pp. A detailed linguistic and literary treatment of the second poem found in D.G. Briton's compilation (*Ancient Nahuatl poetry*), with Appendix A, Original text of the poem, and Appendix B, A list of the most common roots in the Aztec language. Manuscript 157, Franz Boas collection (See *Lan-*

guage *Monograph* no. 22, 1945). Another copy in family papers.

1928 "Investigations in Aztec linguistics and Toltec history. Part II. The phenomenon of oligosynthesis in Nahuatl or Aztec." 13 pp. [This paper was given before the Twenty-third International Congress of Americanists, New York. September 1928.] Among family papers.

1928 "Notes on the oligosynthetic comparison of Nahuatl and Piman, with special reference to Tepecano." 23 pp. Among family papers. [This manuscript was submitted as a supporting document when the author applied for an SSRC Research Fellowship, December 1, 1928.]

1930 "Stem series in Maya and certain Maya hieroglyphs." 28 pp. Among family papers. [This is a revision, dated October 30, 1930, of a paper read before the Linguistic Society of America, Cleveland meeting, December 1929. It was further revised and published as *The phonetic value of certain characters in Maya writing.* (1933).]

1930 "Notes on two recent findings from central Mexico." 7 pp. MS in the library of Peabody Museum, Harvard University. [This is the text of a paper read before the American Anthropological Association, Cleveland meeting, December 1930. It is a summary of material later prepared (1) in the article "A central Mexican inscription combining Mexican and Maya day signs" (1931), and (2) in the unpublished manuscript listed below for the year 1931, "Pitch tone and the saltillo in modern and ancient Nahuatl."]

1931 "The problem of American history before Columbus." 55 pp. Among family papers. Annotated in pencil, "Read before Conn. Historical Society, Hartford, Conn., Apr. 7, 1931."

1931 "Pitch tone and the saltillo in modern and ancient Nahuatl." 54 pp. Manuscript 275, Franz Boas collection (See *Language Monograph* no. 22, 1945).

1932-5 (?) "First report on Hopi." 4 pp. MS 276, Franz Boas collection (See *Language Monograph* no. 22, 1945).

1933 "Recent determinations of phonetic characters in Maya writing." 8 pp. Among family papers. [Read before Linguistic Society of America, Washington meeting. December 1933. Amplifies and goes beyond analysis published (1933) in the Peabody Museum papers.]

1935 "The Hopi language." 59 pp. Original among family papers, with note "corrected and corrections rechecked—BLW." Carbon copy is Manuscript 192, Franz Boas collection (See *Language Monograph* no. 22, 1945).

1935 (?) "First steps in the decipherment of Maya writing." 112 pp. Among family papers. [Mentioned in "Maya writing and its decipherment" (1935) as being worked on—"it may be a year before publication."]

1936 "A comparative decipherment of forty-one ancient Maya written words." 10 pp. MS among family papers. [Text of paper read before American Anthropological Association, Washington meeting, December 1936.]

1938 "The reading of Maya glyph C of the Supplementary Series and other glyphs." Abstract and pencil draft of paper. MS among family papers.

1939 "Classification of the languages of North America north of Mexico." Typewritten MS, 3 pp., dated December 1939, among papers of G. L. Trager. [Apparently the basis of a talk, "Linguistic groupings north of Mexico," before American Anthropological Association, Chicago meeting, December 1939.]

1940 "The parts of speech in Hopi." 15 pp., handwritten, MS among family papers. Annotated "finished Oct. 12, 1940."

(iii) व्होर्फ की रचनाओं से सम्बंधित पुस्तकें और लेख (चुनी हुई)

Andrews, E. Wyllys. "The phonetic value of Glyph C of the Maya supplementary series." *American Anthropologist,* 40:755-758 (1938).

Brown, Roger W., and Lenneberg, Eric H. "A study in language and cognition." *Journal of Abnormal and Social* Psychology, 49:454-462 (1954).

Carroll, John B. Foreword to Whorf's "Language, mind and reality." *Etc., a Review of General Semantics,* 9:167-168 (1952).

Carroll, John B. *The study of language.* Cambridge: Harvard University Press. 1953.

Chase, Stuart. "How language shapes our thoughts." *Harper's Magazine,* April 1954, pp. 76-82.

Chase, Stuart. *The power of words.* New York: Harcourt, Brace, 1954.

Doob, L. W. *Social psychology.* New York: Holt, 1952.

Feuer, Lewis S. "Sociological aspects of the relation between language and philosophy." *Philosophy of Science,* 20:85-100 (1953).

Hackett, Herbert. "Bibliography of the writings of Benjamin Lee Whorf." *Etc., a Review of General Semantics,* 9:189-191 (1952). [The present bibliography represents a revision and expansion of Hackett's bibliography.] Hackett, Herbert. "Benjamin Lee Whorf." *Word Study,* 29:3.1-4 (1954).

Hoijer, Harry. "The relation of language to culture." Pp. 554-573 in A.L. Kroeber (editor), *Anthropology today.* Chicago : University of Chicago Press, 1953.

Hoijer, Harry (editor). *Language in culture; conference on the interrelations of language and other aspects of culture* With papers by F. Fearing, J. H. Greenberg, C. F. Hockett, H. Hoijer, N. A. McQuown, S. Newman, C. F. Voegelin, J. F. Yegerlehner, and Florence M. Robinett. Chicago: University of Chicago Press, 1954. (Also published as Memoir 79 of the American Anthropological Association.)

Kluckhohn, Clyde, and Leighton, Dorothea. *The Navaho.* Cambridge: Harvard University Press, 1946.

Kluckhohn, Clyde. "Culture and behavior." Chapter 25, pp. 921-976 in Gardner Lindzey (editor), *Handbook of social psychology.* Cambridge: Addison-Wesley Press, 1954.

Kluckhohn, Clyde, and MacLeish, Kenneth. "Moencopi variations from Whorf's Second Hesa Hopi. *International Journal of American Linguistics,* 21:150-156 (1955).

Lenneberg, Eric H. "Cognition in ethnolinguistics." *Language,* 29:463-471 (1953).

Long, Richard C.E. "Maya and Mexican writing." *Maya Research,* 2:24-32 (1935).

Long, Richard C.E. "Maya writing and its decipherment." *Maya Research,* 3:309-315 (1936).

Mason, J. Alden. "The native languages of Middle America." Pp. 52-87 in *The Maya and their neighbors.* New York: D. Appleton-Century Co., 1940.

Murdock, George P., *et al. Outline of cultural materials.* New Haven: Institute of Human Relations, Yale University, 1938.

Osgood, Charles E., and Sebeok, Thomas A. (editors). *Psycholinguistics: a survey of theory and research problems.* Indiana University Publication in Anthropology and Linguistics, Memoir 10, 1954. (Also issued as a supplement to vol. 49, *Journal of Abnormal and Social Psychology,* 1954.)

Thompson, J. Eric S. "Pitfalls and stimuli in the interpretation of history through loan words." *Philological and Documentary Studies (Middle American Research Institute, Tulane University of Louisiana),* 1:2 (1943).

Thompson, J. Eric S. *Maya hieroglyphic writing: introduction.* Washington, D.C.: Carnegie Institution of Washington (Publication 589), 1950. Appendix III: "Whorf's attempts to decipher the Maya hieroglyphs."

Thompson, Laura M. *Culture in crisis.* New York: Harper, 1950. [Chapter 8, pp. 152-172, includes excerpts from Whorf's writings.]

Tozzer, Alfred M. (editor). *Landa's Relación de las cosas de Yucatan*, Cambridge, Mass., 1941 (*Papers of the Peabody Museum of American Archaeology and Ethnology, Harvard University*).

Trager, George L. "Comments on B.L. Whorf's 'Phonemic analysis of the English of eastern Massachusetts.'" *Studies in Linguistics*, 2:41-45 (1943).

(घ) ग्रन्थ-सूची

(अनुवादक द्वारा तैयार की गई)

Adler, George J., *Wilhelm von Humbodt's Linguistical Studies,* (New York, Wynkop and Hallenbeck, 1966).

Austerlitz, Robert, *Semantic Components of Pronoun Systems: Gilyak,* Word, 15 (1959), 102-109

Barker, George C., *Social Functions of Language in a Mexican-American Community,* Acta American Community, Acta Americana, V (1947), pp. 185-202.

Basilius, Harold, *Neo-Humboldtian Ethnolinguistics.* Word, VII (August, 1952), 95-105.

Beckner, Morton, *The Biological Way of Thought* (New York, Columbia, University Press, 1959).

Bedau, H.A., Review of J.B. Caroll (ed.), *Language, Thought, and Reality in Philosophy of Science,* XXIV (1957), 289-93.

Black, Max., *Linguistic Relativity: The Views of Benjamin Lee Whorf,* Philosophical Review, LXVIII (April, 1959), 228-238.

Boas, Franz (ed.), Introduction, In *Handbook of American Indian Languages,* Part I, Washington, D.C., 1911.

Bright, William, *Sociolinguistics,* Mouton, The Hague, 1966.

Brown, Roger Longham, *Wilhelm Von Humboldt's Conception of Linguistic Relativity,* Mouton, The Hague, 1967.

Brown, Roger and Albert Gilman, *The Pronouns of Power and Solidarity,* in Thomas A. Sebeok, ed., Style in Language (New York); The Technology Press of the Massachusetts Institute of Technology and John Wiley and Sons, 1960, pp. 253-276.

Carroll, John B., *Linguistic Relativity, Constrastive Linguis-*

tics, and Language Learning, International Review of Applied Linguistics in Language Teaching, I (1963), 1-20.

————————*Language and Thought* (Englewood Cliffs, N.J., Prentice-Hall, Inc., 1964).

Chambers, W.W., *Language and Nationality in German Pre-Romantic and Romantic Thought,* Modern Language Review, XLI (October, 1946, 645-671).

Conklin, H.C., *Lexicographical Treatment of Folk texonomies,* Int. J. Amer, Ling., 28 (1962), 119-141.

Feuer, Lewis, S., *Sociological Aspects of the Relation between Language and Philosophy,* Philosophy of Science, XX (April, 1953), 85-100.

Fishman, Joshua, A., *A Systematization of the Whorfian Hypothesis,* Behavioral Science, V (October, 1960), 323-339.

Fishman, Joshua, A., *Readings in the Sociology of Language,* Mouton, The Hague, 1968.

Goodenough, W.H., *Property, kin, and Community on Truk,* Yale Univer. Publ. Anthrop. No. 46 (1951).

Greenberg, Joseph H., *Concerning Inferences from Linguistic to Non-linguistic Data,* in Language in Culture, edited by H. Hoijer (Chicago, University of Chicago Press. 1954), 3-19.

Haas, W., *The Theory of Translation,* Philosophy, XXXVII (July, 1962), 208-28.

Harris, James, *Hermes or a Philosophical Enquiry Concerning Universal.*

Hoijer, H., *Cultural Implications of some Navaho Linguistic Categories,* Language, 27 (1951), 111-120.

————————(ed.) *Language in Culture* (Amer. Anthrop. Assn. Memoir, No. 79), (Chicago Univer. Chicago Press, 1954).

Hoijer, Harry, *Linguistic and Cultural Change,* Language 24, 335-45.

Hoijer, Harry and Others, *Linguistic Structures of Native America,* Viking Fund Publications in Anthropology, No. 6, 1946.

Hoijer, Harry, *The Relation of Language to culture,* Anthropology Today (by A. L. Kroeber and others), pp. 554-73, Chicago, University of Chicago Press.

Hymes, Dell H., *On Typology of Cognitive Styles in Language,* Anthropological Lingustics, III (January, 1961), 22-54.

Hymes, Dell H., *Linguistic Features peculiar to Chinookan Myths,* International Journal of American Linguistics, 24 (1958), 253-57.

Linguistic Aspects of Studying Personality Cross-Culturally, in Studying Personality Cross-Culturally, ed. by Bert Kaplan (Evanston, Row, Peterson, 1961), pp. 313-59 (b).

Landar, H.J., Ervin, S.M., and Horowitz, A.E., *Navaho Color Categories,* Language, 36 (1960), 368-382.

Lee, D.D., *Linguistic reflection of Wintu thought,* Int. J. Amer. Ling., (1944), 181-187.

Lee, DD., *Conceptual Implication of an Indian Language,* Phil. Sci., 5 (1938), 89-102.

Levi-Strauss, Claude, Jakobson, Roman, Voegelin, C.F., and Sebeok, Thomas, *Results of the Conference of Anthropologists and Linguists* (Indian University Publications in Anthropology and Linguistics, Memoir 8), Baltimore, Waverly Press, 1953.

Levi Strauss, Clause, *Language and the Analysis of Social Laws,* American Anthropologist 53: 155-63, 1951.

Lounsbury, F.G., *A Semantic analysis of the Pawnee kinship usage,* Language, 32 (1956), 158-194.

Lounsbury, F.G., *Similarity and contiguity relation in language and in culture,* Inst. Lang. Ling. Monogr., No. 12 (1959), 123-128.

Lounsbury, F.G., *Transitional Probability, linguistic structure, and system of habit-family hierarchies,* in Osgood and T.A. Sebeck (eds.), *Psycholinguistics: a survey of theory and research problems* (Ind. Univ. Publ. Anthrop. Ling., 10 (1954), 93-101.

Mandelbaum, David G. (ed.), *Selected writings of Edward Sapir.* Berkeley and Los Angeles, University of Califor-

nia Press, 1949.

Miller, Robert L., *The Linguistic Relativity Principle and Humboldtian Ethnolinguistics,* Mouton, The Hague, 1968.

Morris, Charles, Signs, *Language and Behavior* (New York. Prentice Hall, 1946).

O'Flaherty, James C., *Unity and Language : A Study in the Philosophy of Johann George Hamann* (Chapel Hill, Univeristy of North Carolina, 1952).

Postman, Neil, *Language and Reality,* Holt Rinehar and Winston, Inc., New York, 1966.

Ryle, Gilbert, *Systematically Misleading Expression,* in Logic and Language, edited by A. Flew, First series (Oxford B. Blackwell, 1952).

Sapir, Edward, and Morris Swadesh, *American Indian Gram-* Science, 74: 578, 1931.

Sapir, Edward, and Morris Swadesh, *Americal Indian Grammatical Categories,* Word, 2 (1946) 103-12. Reprinted in Hymes (1964 a), 100-07.

Schneider, D.M., and Roberts, J.M., *Zuni kin terms,* Lab. Anthrop. Note Book No. 3, (1956), 1-23.

Voegelin, C.F., *Linguistics without Meaning and culture without words,* Word, 5:36-42, 1949.

Vogt, Evon Z., *Navaho Veterans : A Study of Changing Values. Papers of the Peabody Museum of American Archaeology and Ethnology,* Harvard University, 41, No. 1, 1951.

Wallace, A.F.C., and Atkins, J., *The Meaning of Kinship terms,* Amer, Anthrop, 62 (1960), 58-80.

पारिभाषिक-शब्दावली

अंकन notation
अंग theme
अंतराण्विक intra-atomic
अंतर्मुखता intraversion
अंतर्निष्ठ inherent
अंतर्मूलशब्दीय intra radical
अंतर्वाक्यीय शृंखलता intra-sentential linkage
अंशांकन caliberation
अंशसूचक partitive
अक्षर syllable
अघोष unvoiced/voiceless
अचिरस्थाई संघात non durative impact
अदृश्यता invisibility
अधिकरण locative
अधिभाषायी super linguistic
अधीनता सूचक subordinator
अधीनता subordination
अनवरत श्रेढ़ी continual progression
अनुक्रमात्मक पदिम texemes of order
अनुबन्धात्मक सम्बन्ध linkage bond
अनुबन्ध शृंखलता linkage
अनुतान intonation
अनुलिपि mimeograph
अन्विति accord, agreement
अपक्रम variation
अपेशीय non motor
अपृथक्करणीय शब्दिम non-isolatable lexeme
अप्रकट covert
अप्रकट संरचना covert structure
अप्रेरणार्थक incausal
अभिभावी नियम overriding rule
अभिरचना pattern
अभिवर्धन augmentation
अभ्यास extrusion/reduplication
अयोगात्मक isolating
अर्थवाह ध्वनियाँ phonestheme
अर्थविज्ञान semasiology, semantics
अर्थिम semanteme
अल्पतम minimal
अल्पप्राण unaspirated
अवधि duration
अवरोध closure
अविकल्पी अभिरचनाएँ obligatory patterns
असमर्थी impotential
अस्थानिक unspatial
आंतरिक संवहन inter convection
आकृति श्रेणी shape class
आक्षरिक syllabic
आक्षरिक लेखन syllabic writting
आगम augment
आगमनात्मक inductive

आज्ञार्थक imperative
आतानक tensor
आद्य initial, proto
आनुक्रमिक hierarchical
आवर्त्तगति rotative motion
आवृत्ति frequency
आश्रित वाक्य-विन्यास hypotectic
आश्रित उपवाक्य dependent clause
आसवन संयन्त्र distillation plant
इच्छार्थक desiderative/optative
इच्छार्थक वृत्ति optative mood
उच्चारण articulation
उत्तरकालीनीकरण latering
उत्प्रेरण catalysis
उद्घोषक वाक्य declarative sentence
उद्बोधक रूप hortative form
उपपद article
उपभाषायी sub-linguistic
उपरूप allomorph
उपरूपिमिक sub morphemic
उपवाक्य clause
उपवाक्य संयोजन clause linkage
उपविद्युताण्विक sub-electronic
उपशाब्दिक sublexical
उपस्वनिम, संस्वन allophone
ऊष्म sibilant
ऊष्मावरोधी insulated
एकरूपात्मक monomorphous
एकलकरण individuation
एकशब्दीवाक्य monophrastic sentence
कान्तर बलाघात alternating stress
एकाक्षरीय monosyllabic
ओलिगोसिन्थैटिक oligosynthetic
कंठ throat
कंठोष्ठ्य labiovelar
कंपन vibration
कंपनशील quavering
करणतत्व instrumental element
कर्त्ता subject/agent/nominative
कर्तृपदीय subjective
कर्तृप्रेरणार्थक casual active
कर्म object
कलन calculus
कला इतिहासज्ञ art historian
कारक case
कारकरूप case form
कारण वाचक प्रत्यय causal suffixes
काल tense
अपूर्ण कालिक काल progressive tense
तथ्यात्मक काल factual tense
भविष्यकाल future tense
भूतकाल past tense
वर्तमान अपूर्णकालिक काल present progressive tense
वर्तमान काल present tense
सामान्यीकृत काल generalized tense
कालनिर्देशन tension
काल व्यवस्था tense system
काल सूचक temporal
क्रिया verb
—आधिपत्य क्रिया verb of possession
—सकर्मक transitive verb
—सक्रिय करण की verb of activation
—सहायक auxiliary verb

क्रिया उद्देश्य action goal
क्रियाकरण verbation
क्रियात्मक वाक्य verbal sentence
क्रिया निर्देशक action director
क्रियारूप conjugation
क्रिया-विशेषण adverb
क्रिस्टल crystal
केन्द्रक वाक्य nuclear sentence
केन्द्रकीय nuclear
कैलशियम कार्बोनेट calcium carbonate
कोलाइड रसायनशास्त्र collied chemistry
कोटि category
  अप्रकट कोटि covert category
  गूढ़ प्ररूप cryptotype
  परिवर्तक कोटि modulus category
  प्रकट covert
  प्रकट रूप phenotype
  प्रकार्यात्मक कोटि functional covert
  प्रभावी परिवर्तक कोटि affective modulus category
  वरण कोटि selective ,,
  वर्गिक ,, texonomic ,,
  वर्णनात्मक ,, descriptive ,,
  विकल्पी ,, alternative ,,
  विशिष्ट ,, specific ,,
  व्याकरणिक ,, grammatical ,,
  शाब्दिक कोटि lexemic category
  शब्द कोटि word ,,
  सामान्य कोटि generic ,,
क्षेत्रीय भाषाविज्ञानी field linguist
खंड segment
खगोल cosmos
गणना संख्या cardinal
गति motion
घन cube
घनिष्ठता व्यवस्था rapport system
घोष voiced
घोषत्व voicing
चक्रीयता cyclicity
चतुर्विमात्मक सान्तत्यक four dimensional continuum
चिंतन कार्य thinking function
चित्रलिपि Pictography,
चित्रलेख pictogram
छितराव dispersion
छेदन drilling
जीवाश्म fossil
जुगत gadgets
ज्ञानमीमांसा epistemology
तंत्रिकीय neural
तत्त्व element
तत्त्वमीमांसा metaphysics
तत्पुरुष determinative
तर्कसंगत logical
तर्कसंगत अवरोध logical impasse
तद्रूप identical
तान tone
तालव्य palatal
तिर्यक कारक oblique case
तीव्रक tensor
तीव्रता intensity
तुमर्थ infinitive
त्रिकात्मक कारणवाद triadic causality
त्रिविमात्मक three dimensinoal space
त्वरण acceleration

दंत्य dental
दीप्ति तापक glow heater
दीर्घता length
द्विचर-समूहन binray grouping
द्वित्व reduplication
द्वितीय अन्यपुरुष obviative
द्विध्रुवीय विभाजन bipolar division
द्विपद binomial
दृढ़कथन assertion
प्रत्याशी दृढ़कथन expectiv assertion
दोलन oscillation
द्रव्य matter
धातु root/verbal root/base
धातु-केन्द्रक root-nucleas
धातु-निर्धारक root determinative
धातु प्रकृति verb-stem
धारूक bearing
ध्वनिकि, ध्वनि, ध्वनि विज्ञान sound, phonetics
नामनिर्देशक उपपद nominative article
नामिक वाक्य nominal sentence
नामिकीकरण nominalisation
नामीकरण nomination
निगृहीत suppressed
निपात particle
निमित्तवाची तत्त्व directive element
निरपेक्ष-कारक absolute case
निरपेक्षिक प्रत्यय absolute suffix
निर्देश reference
निश्चयार्थक वृत्ति indicative mood
निषेधात्मक negative
निषेधात्मक रूप negative form
निहितार्थ implied meaning
नेति-नेति प्रक्रिया process of elimination
पद term/word
पदिम taxeme
अनुक्रमात्मक पदिम taxeme of order
वरणात्मक पदिम texeme of selection
परप्रत्यय suffix
परप्रत्यययोजन suffixing
परसर्ग post-position
परिणामवाची resultative
परिप्रश्न interrogation
परिमेयकरण rationalization
आश्रित परिवर्त conditional alternation
परिवर्तक alternative
परिवर्त, परिवर्तनीय variable
पक्ष aspect
अतिवाचक पक्ष intensive aspect
अपूर्णतावाचीपक्ष imperfective aspect
अभ्यासी पक्ष usitative ”
आरंभमाण पक्ष inceptive ”
आम्रेड़ित पक्ष interative ”
अवधिबोधक पक्ष durative ”
काल बिन्दुनिष्ठ पक्ष punctual aspect
कालबिंदुनिष्ठ खण्डात्मक पक्ष punctual segmentation aspect
खण्डात्मक पक्ष segmentative ”
पूर्णतावाची पक्ष perfective ”
प्रथापरककाल पक्ष nomic tense ”
पौनःपुनिक frequentative ”
प्रक्षेपी पक्ष projective aspect
वर्धमान पक्ष progression ”
सान्तत्य बोधक पक्ष continuative ”
स्थान बोधक पक्ष spatial ”

पाठ text
पार्थक्य isolation
पार्श्विक lateral
पुंल्लिंग masculine gender
पुनरावृत्ति recurrence
पुरुष person
पूर्ण-शब्द full-word
पूर्वसर्ग preposition prefex
पूर्व प्रत्यययोजन prefixing
पेशीय motor
प्रकट प्ररूप phenotype
प्रकट रूप overt form
प्रकट संरचना overt structure
प्रकारक modalizer
प्रकारता modality
प्रकारता अनिश्चयवाचक indeterminate modality
प्रकारता, अनुमोदनात्मक concessive modality
प्रकारता, अविध्यर्थक impotential modality
प्रकारता, आवश्यकता सूचक necessitative modality
प्रकारता, उद्धरणात्मक quotative modality
प्रकारता, निरोधात्मक inlulative modality
प्रकारता, निश्चयार्थक indicative modality
प्रकारता, परामर्शी advisory modality
प्रकारता, विध्यर्थक potential modality
प्रकार्यात्मक प्रतीकवाद functional symbolism
प्रकृति, अंग base
प्रक्षिप्त अंश interposition
प्रतिघात reactence
प्रतिबिम्ब रूपवाद enation morphism
प्रत्यय suffix
प्रथापरक nomic
प्रभावी अंकन affective marking
प्रभावी प्रवर्धन affective augmentation
प्रभावी लघ्वीकरण affective diminution
प्रमात्रावाद quantum theory
प्रयोग व्यक्ति subject
प्रयोगात्मक काल applicative tense
प्रयोगात्मक काल usitative tense
प्रविधि technique
प्रश्नवाचक वाक्य interrogative sentence
प्रातिपदिक stem
प्रेरणार्थक casual
फलन function (math)
बल emphasis
बलाघात accent
बलाघूर्णन torque
बहिर्मुखता extraversion
बहुवचनीकारक विश्लेषण pluralising adjective
बहुभुज polygon
बहुरूपात्मक polymorphous
बहुश्लिष्ट रचना polysynthetic
बहुसंश्लेषण polysynthesis composition
बिंदु-क्षण point-moment
बीजगणितीय algebraic
बुदबुदाए हुए शब्द mumbled words
ब्रह्माण्डीय cosmic
भभके stills

भाववाच्य mediopassive
भावात्मक affective
भावात्मक अंकन affective marking
भाषायी उपगम linguistic approch
भाषिकी का विज्ञान, भाषा-विज्ञान, भाषिकी science of linguistics
भाषा सार्वभौमिकताएँ language univerisities
भूतलक्षी रूप retrospective forms
मध्यप्रत्यय योजन infixing
मनोग्रन्थियाँ complexes
मनोविश्लेषण psycho-analysis
मनोवृत्यात्मक mentalistic
मान्यतासूचक रूप validity forms
मुखबन्धिनी gap
युग्मन pairing
रासायनिक इन्जीनियरी chemical engineering
रासायनिक मिश्रण chemical mixture
रिक्त शब्द empty word
रूढ़ customary
रूढ़िपरक/पर्यायगत nomic
रूप-विज्ञान morphology
रूपात्मक प्रविधियाँ morphological techniques
रूपावली शब्द paradigm word
रूपिमीय morphemic
रूपस्वनिमिक, मर्षस्वनिमिक morphophonemics
लघुतावाची diminutives
लघु ब्रह्माण्ड microcosm
लिंग gender
लिंग, अचेतन inanimate gender
लिंग, अतर्क सम्मत irrational gender
लिंग, तर्कसम्मत rational gender
लिंग, चेतन animate gender
लिंग, पुरुषवाचक personal gender
समेकित लिंग integral gender
स्त्रीलिंग feminine gender
पुल्लिंग masculine gender
लुप्त-रूप elliptic forms
लेखिम grapheme
वाक्य sentence
वाक्य प्रारम्भक sentence introducers
वाक्यगत अनुरूपता sentence harmony
वाक्य-विन्यास syntax
वाक्यारंभ चिह्न sentence initial marking
वाक्यांत चिह्न sentence and marking
वाक्यों की सन्निधि juxtaposition of sentences
वाच्य, voice
वाच्य, अधिकर्म semipassive voice
वाच्य, कर्म passive voice
वाच्य, निज वाचक reflexive voice
वाच्य, परिणाम वाचक resultative voice
वाच्य, विजातीय भाषा exotic language
वाच्य, विभक्तिपरक inflexional voice
वाच्य, सम्बन्ध-वाचक possessive voice
वाच्य, समर्थक transitive voice
वाच्य, समाप्ति सूचक cessative voice
विद्युत् आवेग electric charge
विद्युत् विभव electric potential
विद्युदणु electron
विद्युदणु-विज्ञान electronics

विद्युदाण्विक electronic
विधेयक predicater
(उद्देश्य) विधेय क्रम subject-predicate order
विधेयन predication
विधेयात्मक predicative
वियोगात्मक isolating
विराम रूप pause forms
विस्तारित कर्मवाच्य extended passive voice
विशेषक modifier
विशेष चिह्न तत्त्व special marking elements
विशेषण attribute/adjetive
विशेषणीकरण adjectivization
विश्लेषण resolution
विषयीकरण objectification
विषिक्तता सम्बन्ध discreteness connections
विस्मय बोधक interjections
विस्मयसूचक रूप exclamative forms
वेग elements
वंश परम्पराविज्ञ geneologist
वनस्पतिशास्त्री botanist
वरण selection
(पदिम) वरणात्मक texeme of selection
वर्गिकी कोटियाँ taxonomic categories
वर्णलोप apostraphe
वृत्ति mode
वृत्ति अनुक्रमणीय segmential mode
वृत्ति अनुज्ञापक permissive mode
वृत्ति अनुमतिवाचक concessive mode
वृत्ति, अनुमिति inferential mode
वृत्ति, इच्छार्थक optative mode
वृत्ति, कर्तृवाची agentive mode
वृत्ति, निश्चयवाचक indicative mode
वृत्ति, परासम्बन्धी transselative mode
वृत्ति, विध्यर्थक potential mode
वृत्ति, विरोधवाचक adversative mode
वृत्ति, संगामी concursive mode
वृत्ति, संभावनार्थक subjunctive mode
वृत्ति, संशयवाचक dubilative mode
वृत्ति, सहसम्बन्धी co-relative mode
वृत्ति, स्वतंत्र independent mode
वृत्ति, हेतुमद् conditional mode
वृत्ति, उपवाक्य mode clause
वृत्तिभाषा jargon language
व्यंजन consonant
व्यवहित क्रम interrupted order
व्युत्पत्ति derivation
शपथवाची शब्द swear words
शब्द-क्रम word-order
शब्दगत अनुक्रम lexical hierchies
शब्दिम् lexeme
शब्दीकरण lexation
शाब्दिक अनुक्रियाएँ verbal response
शाब्दिक मिश्र verbal complex
शून्य-रूप zero-form
श्वासद्वारीय स्पर्श breath-catch
संकेतित-पदार्थ referent
संघनित्र condenser
संचयी cumulative
संचार communication
संज्ञा noun

संज्ञा, उत्पन्न स्थिति की noun ofstate produced
संज्ञा, करण की noun of the instrument
संज्ञा, करणात्मक instrumentive noun
संज्ञा, कर्त्ता की noun of the doer
संज्ञा, कर्तृ agentive noun
संज्ञा, क्रियावाचक action noun
संज्ञा, क्रियार्थक infinitives noun
संज्ञा, क्रियार्थक gerundials noun
संज्ञा, पक्ष Phase noun
संज्ञा, भाववाचक abstract noun
संज्ञा, भावार्थक gerunds noun
संज्ञा, स्थान place noun
(विशेषण) संज्ञाएँ nouns of the affecte
संज्ञा निर्देशन noun designation
संज्ञा समावेशन noun incorporation
संज्ञा, स्थितिवाचक state noun
संतत continual
संन्निकट क्रम adjacent order
संन्निवेशन subsumption
संपाती होना coincide
संप्रेक्षण transmit
संबोधन vocative
संबोधन रूप address forms
संभावनार्थ subjunctive
सम्मानसूचक रूप respect forms
संयन्त्र apparatus
संयुक्त व्यंजन consonant cluster
संयोग combination
संयोजक copulative
संयोजक विघटन copulative resolution
संयोजकहीन वाक्य-विन्यासात्मक paratactic
संरचना structure
संरचनात्मक architectonic
संश्लेषण synthesis
अन्तरायिनत संश्लेषण interrupted synthesis
सक्रियकरण activation
सक्रियात्मक प्रतीकवाद operational symbolism
सदिश vector
समकक्ष corresponding
समन्वयकारक co-ordinating
समशब्दार्थ iso-semantic
समाकृति configuration
समानाधिकरण प्रकार coordinate types
समास compound
समास रचना compounding
समीकरण equation (math)
समुच्चयबोधक conjunctions
समुदाय वाचकता collectivity
समुदिष्ट referent
सर्वनाम pronoun
सर्वनाम, अनिश्चयवाचक indifinite pronoun
सर्वनाम, निमित्तवाची directive "
सर्वनाम, निषेधात्मक negative "
सर्वनाम, पुरुषवाचक personal "
सर्वनाम, प्रश्नवाचक interrogative "
सर्वनाम, सम्बन्धवाचक relative "
सर्वनाम, संश्लिष्ट synthetic "
सर्वनामीय अनुबंध pronominal linkage
सर्वादेश suppletion
सह विस्तारी co-existence

सह-सम्बन्धी corelative
सान्तत्यक continuum
सांस्कृतिक मानवशास्त्र cultural anthropology
साधित रचनाएं derivative formations
सापेक्षतावाद relativity theory
सामग्री apparatus
सामान्य general
सामान्यता generality
सामान्य लिंग common gender
सार्वनामिक pronominal
सार्वनामिक समावेशन pronominal incorporation
सूचकेतर non-reportive
सूचनात्मक दृढ़कथन reportive assertion
सूत्र formula
स्थानपरक प्रसार spatial extension
स्थान श्रेणी locus class
स्थिति status
स्थिति, अनिश्चयवाचक indefinite status
स्थिति, उद्धरणात्मक quotative status
स्थिति, निषेधात्मक indefinite "
स्थिति, प्रश्नसूचक interrogative "
स्थैतिक static
स्पन्दनात्मक गति vibrative motion
स्वनगुणिमिक prosodic
स्वनगुणिमिक जटिलता prosodic complexity
स्वनिम phoneme
स्वनिमिक प्रतीकवाद phonemic symbolism
स्वनिमिक कलन phonemic calculas
स्वनिमों का प्रकट संयोजन overt manipulation of phonemes
स्वर vowel
स्वर-संगति vowel-harmony

भाषा, विचार और वास्तविकता

[LANGUAGE, THOUGHT AND REALITY]